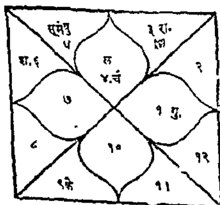
परब्रह्म परमात्मा भगवान श्रीहरिकृष्णनी
कुंडळी

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः

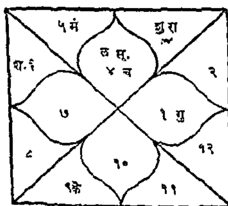
स्वस्ति श्रीविक्रमार्कराज्यसमयातीत

संवत १८८९ आपाढादि संवत १८९० तमे वर्षे श्रीमद्भूपतिशालिवाहनकृत शाके १७५५ तमे प्रवर्तमाने दक्षिणायने वर्षाऋतौ श्रावणमासे कृष्ण पक्षे १४ चतुर्दशी घ. ३७ प. १६ पर अमावास्यां जन्मतिथौ सौम्यवासरे पुष्य घ. ३२ प. २५ पर आश्लेषाख्ये जन्मभे व्यतीपात घ. ३२ प. ४० पर वरीयान जन्मयोगे तात्कालिके चतुष्पद करणे एवं पंचांगशुद्धावत्र दिने श्रीसूर्योदयाद् गतघटिकाः ५८ पलानि ४८ समये श्रीचूडा ग्रामे औदिच्यसहस्रविप्रज्ञाति विभूषण श्री. रावळ भाणजीभाइ भार्योभयकुलशुद्धा सौ.हरिवाकुक्षेः श्रीहरिकृष्णभगवतो जनिरभूत्॥

अथेदं श्रीमतां जन्मलग्नम्



अथेदं भावलग्नम्



भगवाननो जन्म–वि. सं. १८८९ शक १७७१ ना दक्षिणायन वर्षाऋतुमां श्रावण वदि चौदश अमासने बुधवारे चूडा गाममां औदीच्य सहस्र ज्ञातिना श्री रावळ भाणजीभाइनां धर्मपत्नीनी कुखे भगवान श्रीहरिकृष्ण महाराज प्रगट थया. सूर्योदयथी घ. ५८ पल. ४८ समये थयो अने ते दिवसे चतुर्दशी घ. ३७ प. १६ सुधी छे. तेथी जन्म वखते घ. २१ पल ३२ अमास भोगवाइ गइ छे ते वखते जन्म थयो छे. एर्थात ते घडी अमासनी जोडे सम्बन्ध राखनारी छे.

श्री

स्वस्तिश्री बोटादमा हा सुभस्थाने सुभोपमा
जोगबाई आंभवा तथा बाई सोन तथा बाई पु
तली तथा बाई पांन वीगेरे सरवे हरीजन
बाईओनी चरणांम ज्ञी वी घणी हेत
अेतांन श्री सोनीत्रे थी लखीत गमा हारा
जे हरीक्रष्णनी क्रपा वांचजो बीजु भा
ई अवेरने खबर का द वा मोकलो छे तेम
गा जो कोई आवी सको तो घणु सारु तम मारा
जीव दरसन वीना घणो तणा ता हस माटे
वाओ तो आवजो ने ने अवायनो हीवाळी
वी उपर जरुर आवजो ने अवेर भेगो सभा
चार लखी मोकल्या वजो बीजु भगतदु

हांउ पर बोटाद नो धर मा होतु घरावानु
भला मण लखी छे त मा ई अवेरने तेडे
ने आवजो माटे तेने जे अधा होय ते श्र
पजो पवल दुदा त्या अवेर ने आपजो
अेर ले भगतदुदा नी गीलख्यायी मो
कलजो माटे जे बेनेते करजो भुलसो
मा बीजु डो सीत्रु सोने के डे छु केत
मे घरनी घसु थई ने घरमां ने घरमां के
म बेसी रो छो ते तमे केम रहेवाय छे भ
गवांन जाणपछी रेवु तो करण पडे माटे
आलसन का ढी तमा बोनातु सीयुने
लईने सोनीत्रे आवजो सतसंग बहु
पयो छ पाछो पत्र लखजो
लो. माहाराज हरीकृष्ण जेठ वद ३ वार सोम

निवेदन

श्रीहरिकृष्णाय नमोनम·

कर जोडी करुं विनती, कृपासिंधु हरिकृष्ण,
दास तमारो जाणीने, मुज पर थाओ प्रसन्न १

मुज उपर कृपा करो, हृदय थाय प्रकाश,
गुण तमारा गाववाने अंतरे थाय उल्लास २

धर्म धुरंधर धर्मधर, अधर्म-कर्म विनाश,
निज इच्छाए आवीया, कापवा माया-पाश ३

कळि मध्ये करुणा करी, पधार्या प्राण-आधार,
अनंत जीव उद्धारवा, द्विजकुळ धर्यो अवतार ४

ब्रह्मरूप करवा भक्तने, आप्युं आत्यंतिक ज्ञान,
धर्मानंद कहे हरिकृष्णजी, आपो निर्भय दान ५

आ पुस्तकनुं नाम "श्रीहरिकृष्ण श्रीमुखसिद्धांत" छे. श्री कहेतां अनंतकोटि ब्रह्मांडना देव, ब्रह्मादिक ईश्वर तथा अक्षरादिक सर्वे धाम तेने शोभाना आपनारा छो. अने हरि कहेतां सर्व दुःखना हरनारा छो. ते दुःख ते शुं छे ? तो जन्म, मरण, गर्भवास अने चोराशी तेनां अपार दुःख छे. अने वळी जीवना अंतरशत्रु जे काम, क्रोध, लोभ, स्वाद, स्नेह अने मान ए जे छ शत्रु ते जीवने अपार दुःख आपे छे. ते दुःखने तमे हरो छो, माटे ज हरि एवुं तमारुं नाम छे. अने कृष्ण कहेतां पोताने शरणे आव्या एवा जे दैवी अने मुमुक्षु जीव तेनां इन्द्रियो, अंतःकरण अने जीव तेने आकर्षण करीने पोतानी मूर्तिने विषे जोडावीने ब्रह्म-स्थितिने पमाडो छो. माटे हे प्रभु! तमारुं नाम श्रीहरिकृष्ण ते यथार्थ छे. अने एवा जे सर्वे अवतारना अवतारी परब्रह्म पुरुषोत्तम भगवान तेमणे गामोगाम अने देशोदेश फरीने वेदशास्त्र अने पुराणना सार रूप जे आत्यंतिक ज्ञान तेनां श्रीमुखे आपेलां भाषणो आ ग्रंथमां छे. माटे आ ग्रंथनुं नाम "श्रीहरिकृष्ण श्रीमुखसिद्धांत" राखवामां आव्युं छे.

परब्रह्म पुरुषोत्तम प्रगट भगवान श्रीहरिकृष्ण महाराजना सर्वोपरि आत्यंतिक ज्ञाननो लाभ मानव-जगतने मळे ते सारु प्रगट भगवान श्रीहरिकृष्ण महाराजना एकांतिक अक्षररूप साधु श्री धर्मानंद स्वामी तथा श्री अक्षरमुक्तानंद स्वामी तेमणे लखी राखेला श्रीमुखना उपदेशोमांथी भगवानश्रीना प्रागट्य दरम्यानमां संवत् १९२५नी सालमां अठ्ठावीस सिद्धांतोनुं एक पुस्तक प्रगट करेलुं. अने पछी संवत् १९३४नी सालमां प्रथम वार भगवानना एकांतिक भक्तो भगवानजीभाई लक्ष्मीराम ओझा रोहीशाळा अथवा चुडावाळा तथा सरवैना भक्त दुदाभाइ

जीवाभाइ तेमणे चुडाना तथा समस्त हरिभक्तोनी मददथी "श्रीमुखसिद्धांत" नामना त्रण भागना ग्रन्थरूपे पोथी-पानाथी श्रीमुखना उपदेशो छपावी प्रसिद्ध करेला छे.

हालमां आ ग्रंथनी जूज नकलो छूटी छवाइ भक्तो पासे छे अने ते पण घणी जीर्ण थइ गइ होवाथी श्रीहरिकृष्ण भगवानना भक्तोए ता. ९-२-१९४९ना रोज "श्रीमुखसिद्धांत" ग्रंथ तथा संप्रदायनुं बीजुं साहित्य छपाववानो ठराव कर्यो अने ते कार्यनी व्यवस्था करवा सारु परब्रह्म भगवान श्रीहरिकृष्ण महाराजना ज्ञान प्रचारक भक्तमंडळनी स्थापना करी छे.

प्रथम आवृत्तिमां सिद्धांतो तिथि प्रमाणे जोतां आडा अवळा होवाथी तेने क्रमवार तिथि प्रमाणे गोठववामां आव्या छे अने श्रीमुखनी दिव्य वाणीने मूळ स्वरूपमां साचवीने सिद्धांतवार विषय मूक्या छे. वळी त्रण भागना ग्रंथने बे भागमां छपाववानुं नक्की कर्युं छे, तेमांथी "श्रीमुखसिद्धांत भा. १" मानवजगतनी सन्मुख मुकतां अमने परम आनंद थाय छे अने आ आत्मकल्याणी ग्रंथ आध्यात्मिक जगतमां संप्रदायोना परस्परना भेदभावने दूर करी सर्वेनो समन्वय करशे अने जगतमां शांति माटे जरूर उपयोगी थशे.

वळी आ "श्रीमुखसिद्धांत"ने वांचशे अथवा सांभळशे तेने आत्मा-परमात्माना स्वरूपनुं साक्षात्कार ज्ञान थशे अने तेने परमात्माने विषे भक्ति थशे अने ते भक्तिए करीने मोक्ष थशे माटे सर्वे वेद-शास्त्रनो सार एवी जे परमात्मानी वाणी एटले आ श्रीमुखसिद्धांत तेनो जे नित्य पाठ करशे अथवा तेनुं श्रवण करशे तेने धर्म, अर्थ, काम अने मोक्ष ए चारे फळनी प्राप्ति थशे एमां जराय संशय नथी. वळी आ साथे प्रगट भगवाननो टुंक परिचय, प्रस्तावना, संतोना बोल, अभिप्राय वगेरे मूक्या छे.

आ आत्मकल्याणी अने जगतकल्याणी सर्वोत्तम कार्यमां जे जे सद्‌गृहस्थो तरफथी यथा-शक्ति सेवा मळी छे तेमनुं कल्याण करो एवी अमे श्रीहरिकृष्ण परमात्माने प्रार्थना करीए छीए अने आ पुस्तक वांचनार अक्षरधामना अधिकारी वाचकोने विनंती करीए छीए के अमोने 'भगवान श्री हरिकृष्ण महाराजने विषे अखंड वृत्ति रहे' एवो आशीर्वाद आपजो. वळी आ कार्यमां रु. १००) अने तेथी वधु रकम मंडळने भेट आपनार सद्‌गृहस्थोनी नामावली मंडळना नियम प्रमाणे पुस्तकमां मूकवामां आवी छे. अने हवे पछी उपर मुजब भेट आपनार सद्‌गृहस्थोनी नामावली आ पुस्तकना बीजा भागमां मूकवामां आवशे.

अमारा प्रकाशनना कार्यमां भक्त शिरोमणि पा. लक्ष्मणदास विठ्ठलदास भावनगरवाळाए जे अमुल्य सेवा आपी छे ते माटे अमो तेमनो हार्दिक उपकार मानीए छीए.

आ पुस्तकमां बनता प्रयासे कोइ जातनो दोष रही न जाय तेने माटे पुरती काळजी राखवामां आवी छे छतां दृष्टिदोषथी अथवा यंत्रदोषथी कोइ जग्याए भूल रही गइ होय तो तत्त्व-जिज्ञासु दैवी अने मुमुक्षु वाचको सुधारीने वांचशे एवी आशा छे. वळी आ पुस्तक वांचती वखते शुद्धि-पत्रकने ध्यानमां लेवा वाचकोने विनंती करीए छीए.

मंत्रीओ

प्रगटना संतोना बोल

१

श्रीहरिकृष्ण स्वरूपस्तोत्र

प्रातर्नमामि हरिकृष्णमनंतरूपं सर्वास्पदं सकल देवमुनिंद्रभूपम् ।
यत्पादनौ स्थितिमतां भवनिरराशिर्यायाच्च धेनुपदतां सशिवंत नोतु ॥१॥
प्रातर्भजामि हरिकृष्णमुखारविंदं भक्तामर भ्रमरगुञ्जितमुत्प्रफुलम् ।
यत्पश्यतां नयनमानसदोपराशि र्दुरं प्रयाति दीननाथमिव प्रियाढ्यम् ॥२॥
प्रातर्वदामि हरिकृष्णहरेः प्रसारं माधुर्यमोदितमहेश सुरेशशेषम् ।
नामैवनामि गतपापतमः प्रणाशं यद्गायतां जनिमृतिज्वलनं जराहृत् ॥३॥
स्वांतेस्मरे हि करुणार्णसधि प्रपूर्ण वेदोक्तमौक्तिसुमालिकया सुमाल ।
प्रातर्वरेण्य हरिकृष्णमहं स्ववाचा स्वियान् परम् परमहारपदं दिशन्तम् ॥४॥
यन्नाभिपद्मकुहरेभुवनैकशिल्पि वेधाविशादमगमनपदं प्रपश्यन् ।
सोयं हरिर्हि हरिकृष्णतयाप्रजातः प्रातः स्मरामि चरणौ शरणावबन्याम् ॥५॥
श्रीशंकरेण जनता-वृपतां प्रणीता हत्वाजनान् जिनमतानुस्टतानवन्याम् ।
काले पुनः कलियुगेनहते स्वधर्मे योभुत् स्वयं हि हरिकृष्णमहं नमामि ॥६॥
नष्टं वृषं समाधि गम्य पुनः प्रविष्टं यद्रोचिपी सुरगणो मुदितोदिनादौ ।
प्रित्याहि नादनवनैः कुसुमैः सिषेवे तस्मै नमो भगवते हरिकृष्णधाम्ने ॥७॥
जयशंकरमुनिरचितं खचितं हरिकृष्ण किर्तिरत्नौ यैः ।
प्रातः प्रित्या पठते स्तोत्रमिदं वै लभेत् सद्वृपामुक्तिम् ॥८॥
अधिगतं भुवि विप्रकुले मले स्ववचनामततो जनताजनिम् ।
अजनिमादधतं ददतं सुखं भजततां भजतां भजतां हरिम् ॥९॥

इति श्री रेवापारस्थान कल्याणमल्लवीपराम क्षैत्रिय चातुर्विंशति ज्ञातिय गोविंदसूरि धीरण्णात्मज जयशंकर विप्रेण रचितं श्रीहरिकृष्णस्वरूपस्तोत्रं ॥

॥ श्रीरस्तु ॥

२

दस अवतारनी आरती

जय हरिकृष्ण हरि, जय हरिकृष्ण हरि,
प्रगट थया पुरुषोत्तम द्विजकुळ देह धरी.... ....जय
मच्छ थया मनमोहन सत्यव्रतना सारु, प्रभु सत्यव्रतना सारु,
कच्छ स्वरूपे काढ्या, चौद रत्न चारु.... ....जय
वराहरूपे वहाला धरणी मुख धारी, प्रभु धरणी मुखधारी,
हिरणाक्षने हणियो, युद्ध करी भारी.... ....जय
प्रह्लादना प्रतिपाळ नरसिंहरूप धर्युं, प्रभु नरसिंहरूप धर्युं,
हिरण्यकशिपुने मार्यो भक्तनुं काम कर्युं.... ....जय
वामनरूप धरी विश्वरूप कीधुं, प्रभु विश्वरूप कीधुं,
बळिराजाने बांधी, सर्वस्व लीधुं.... ....जय
परशुराम अवतार फरसी लइ फरिया, प्रभु फरसी लइ फरिया,
क्षत्रि हणिया खोळी, कोइथी नव डरिया.... ....जय
रावण रोळ्यो राम–पाग्य प्रभु कीधी, प्रभु पाग्य प्रभु कीधी,
राज्य विभिषण आपी, सीता शुद्ध लीधी.... ....जय
कृष्णरूपे कृपाळ मामाने मार्यो, प्रभु मामाने मार्यो,
गोपीने लाड लडाव्या, गोवर्धन धार्यो.... ....जय
बुद्ध थइ बळवंत बेठा बहु नामी, प्रभु बेठा बहु नामी,
दैत्यने मोह पमाड्यो, छो अंतरजामी.... ....जय
कळि मध्ये अवतार हरिकृष्णरूप धर्युं, प्रभु हरिकृष्णरूप धर्युं,
कळियुगने काढीने, भक्तनुं काम कर्युं.... ....जय
आरती आ अनुपम जे कोइ गाशे, प्रभु जे कोइ गाशे,
धर्ममुनि कहे ते पर, प्रभु प्रसन्न थाशे.... ....जय



३

संध्यावर्णन

हरिकृष्ण महाराज जय जय हरिकृष्ण महाराज,

करुणामृत सागर ॥जय जय॥ द्विजकुळ नलिनी दिनेश ॥जय जय॥

कोटि मनोज रुचे ॥जय जय॥ दीनदयाळ प्रतिपाळ ॥ जय जय॥

वेद प्रगीत कीर्ते ॥ जय जय॥ साधुजन पालक ॥ जय जय ॥

खलजन दर्प हरण ॥ जय जय॥ लक्ष्मीनाथ प्रभु ॥ जय जय ॥

पूर्ण ब्रह्म स्वरूप ॥ जय जय ॥ विविध रूप निधान ॥ जय जय ॥

त्रिविधताप शमन ॥ जय जय॥ पीतांबर धारिन् ॥ जय जय ॥

अद्वैतात्म स्वरूप ॥ जय जय॥ कर्पूरगौर शरीर ॥ जय जय ॥

सर्वांतर्यामी ॥ जय जय॥ अनंत शक्ति सहित ॥ जय जय ॥

अक्षरधामाधीश ॥ जय जय ॥ युग युग प्रकटितरूप ॥ जय जय ॥

धर्ममार्ग प्रेरक ॥ जय जय॥ अगणित गुण निधान ॥ जय जय ॥

जगदुद्यादिकारण ॥जय जय ॥ पंचविषय शमन ॥ जय जय ॥

सत्यधृति संयम सुगम्य ॥ जय जय॥ देवेन्द्रादिकनुत ॥जय जय ॥

दुष्टनिवारण देव ॥ जय जय॥ सत्संगमकारक ॥ जय जय ॥

स्वजन मनोहररूप ॥ जय जय ॥ मुनिजन मानसहंस ॥ जय जय ॥

धर्ममार्गकारक ॥ जय जय ॥ अनंत लीलाकृत ॥ जय जय ॥

यदुरामस्य प्रभु ॥ जय जय ॥ मोक्षफळ दाता ॥ जय जय ॥

॥ जय जय हरिकृष्ण महाराज ॥



४

श्री संध्याष्टक

रमापतिं भक्तजनैः सुसेव्यं ब्रह्मेंद्र रूद्रादिगृहीत कीर्तिम् ।
सदा प्रसन्नास्यमनादिदेवं, प्रेम्णा हरिकृष्णमहं नमामि ॥ १ ॥
उदारलीलं नवकंचनेत्रं सिंहासनस्थं बहुगौरवर्णम् ।
अनेकजन्मार्जितपुण्यगम्यं, प्रेम्णा हरिकृष्णमहं नमामि ॥ २ ॥
अधर्मनाशाय कलौयुगेपि जातं सतां ज्ञानप्रकाशानार्थम् ।
शुभं स्वरूपं दिविदेवगीतं, प्रेम्णा हरिकृष्णमहं नमामि ॥ ३ ॥
प्रफुल्लहृद्पंकजकोशमध्ये स्थित्वा सतां नित्यविशुद्ध भावम् ।
विभूषितं कांचनकुंडलादिभिः, प्रेम्णा हरिकृष्णमहं नमामि ॥४॥
किरिटजुष्टं शुभपुष्पहारमाजानुबाहुं नवकंजमालम् ।
सुनीलकेशाभिविरोचमानं, प्रेम्णा हरिकृष्णमहं नमामि ॥५॥
सुनासिकं कोटिदिनेश कान्ति पितांबरं साधुजनाभियुक्तं ।
दिने दिने दिव्य स्वरूपमाद्यं, प्रेम्णा हरिकृष्णमहं नमामि ॥६॥
स्वभक्त मोक्षैकफलस्यहेतुमद्वैतरूपं नटराजवेशम् ।
अनेक शास्त्रार्थपुराणदक्षं, प्रेम्णा हरिकृष्णमहं नमामि ॥७॥
अखंडमूर्ति भवरोगवैद्यं राजाधिराजं यदुरामनाथम् ।
अगाधबोधं भवमोचनाय, प्रेम्णा हरिकृष्णमहं नमामि ॥८॥
कृतमुदेतत् यदुराम नाम्ना संध्याष्टकं श्रीहरिकृष्ण विष्णोः ।
पठंति ये भूमितले सुभक्त्या संयान्ति तेऽतेहरिकृष्णलोकम् ॥

॥ समाप्त ॥

५ श्रीहरिकृष्णाष्टक

परिब्रह्म नंदन जगत वंदन चरणरज भक्तो तर्या,
चार वेद खट शास्त्र थकी हरिकृष्ण नीरखो रंग भर्या. १
अधुरलाल गुलाबी गाल नेंण जोइ नेंग ठर्या,
पचरंगी पीळी पाघ जोइ हरिकृष्ण नीरखो रंग भर्या. २
प्रमाण पंडीत, पाखंड खंडीत, त्रिविधीनां तापो हर्या,
ज्ञान गुण भंडार छे हरिकृष्ण नीरखो रंग भर्या. ३
वांसल तटमां विशाळ मठमां महाराजे यज्ञो कर्या,
अनंत ऋषिजन करत हरहर हरिकृष्ण निरखो रंग भर्या. ४
जमत ऋषिजन हरख अति-मन, मोहने मनमां धर्या,
रळीयामणां शुभ छंद ते आनंदमां छगने कर्या. ५
आ अष्टक पठत निशदिन स्वर्गमां वासो वसे,
जन्मोजन्मना दुःख जशे एवा हरिकृष्ण हृदये वसे. ६

६ ग्रंथनुं माहात्म्य

प्रथम श्रीहरिकृष्णने प्रीते करुं प्रणाम,
शुक सनकादिक शेषजी जेनुं जपे निरंतर नाम. १
जेनी इच्छा थकी विश्वनी उत्पत्ति स्थिति ते थाय,
क्षर अक्षरथी पर छे श्रीहरिकृष्ण राय. २
मन वाणी पूगे नहीं जेनो महिमा अपरंपार,
दिव्य स्वरूपे शोभे सदा अखिल विश्वना आधार. ३
प्रगट श्रीहरिकृष्णने वंदु नामी शीश,
कृपा करो हरिकृष्णजी राखो सेवामां ईश. ४
तमारी लीला चरित्र सिंधु सर्वे तीर्थनुं धाम,
तेमां नाही नाथ हुं थाउं पूरण काम. ५
लीलासिंधु तीर्थमां जे न्हाये, तेना दोष तत्काळ जाये;
एवुं तीर्थ त्रण लोकमां नथी, जोया वेद पुराण सर्वे कथी. ६
एनो महिमा छे अपरंपारः सर्वोपरि सर्वेनो सार,
धर्म अर्थ काम सहित, मळे मोक्ष प्रभुमां थाय प्रीत. ७
हरिना रसनुं करवुं पान, तेमां थावुं सदा गुलतान;
ए रस योगी मुनिने प्यारो, रात दिवस करे एनो चारो. ८

असुरने तो ए रस झेर, पापीने प्रभु साथे वेर;
माटे दैवी होय ते पीजो, असुरी ए थकी घणां व्हीजो. ९
धर्म ज्ञान वैरागनो भर्यो, पराभक्तिनो रस मांही तर्यो;
अंगे सहित भक्तिनुं धाम, जाणी विवेकी थाय पूरणकाम. १०
हरिकृष्णना स्वरूपनुं ध्यान, मांही भर्युं छे मोक्षनुं दान;
ब्रह्मरस भर्यो भरपुर, पीवे भव-रोग थाये दूर. ११
मोह ममताने करे छे दूर, उरमां प्रगटे छे ज्ञानरूपी शूर;
जीव ईश्वर माया ने ब्रह्म, परब्रह्मनो देखे सर्व मर्म. १२
आत्मा परमात्मामां प्रीति थाये, अंतरमांथी अज्ञान ते जाये;
थाये प्रकाश देखाये हरि, सुख पामे आत्मा सर्वोपरि. १३
काम लोभ स्वाद स्नेह नासे, उरमां प्रभुनुं स्वरूप प्रकाशे;
साधुताना गुण अपार, प्रगटे उरमां ब्रह्म विचार. १४
सर्वे वरणने सुख आपे, आधि व्याधि अंतरनी कापे,
थाये ब्रह्मरूप तत्काळ, देखाय आत्मामांही कृपाळ. १५
सर्वातीत पधार्या प्रभु फर्या ते देशोदेश,
ते लीला कह्यामां न आवे पार न पामे शेष. १६
अधम उद्धारण अढळक ढळ्या करी लीला अपरंपार,
अक्षरमुक्तानंदने वा'ले कर्यो जीवोना उद्धार. १७

७

प्रथम नमुं हरिकृष्णने जेनो महिमा कह्यो नव जाय,
अक्षरपति हरि आप छो वेद पुराण एम गाय. १
प्रगट थया परमात्मा सर्वकारण सुख धाम,
निज इच्छाए आवीया करवा जननां काम. २
मोक्ष देवा सहु जीवोने आप्युं ज्ञान अपार,
तेने जे कोइ अनुभवे पामे भव-जळ पार. ३
'श्रीमुखसिद्धांत' शिरोमणि सुणतां पामे सुख,
अविद्या सरवे परहरे, मटे मरणनुं दुःख. ४
वेद-शास्त्रनो सार छे, मोक्षनुं तत्त्वज्ञान,
ग्रंथ छे चिंतामणि जेथी मळे भगवान. ५
'श्रीमुखसिद्धांत' वांचतां, सुणतां छूटे पाप,
मनन करे सुख उपजे ब्रह्मरूप थाये आप. ६
संशय छेदे सर्वना, जेना मनना जेह,
शुभ गुण आपे अति घणां निजपद पामे तेह. ७

सर्वे धर्मीने सुख करे, मही विद्या ब्रह्म अनेक,
संप्रदाय जे चार छे तेनो शुद्ध विवेक. ८
श्रीमुख बोल्या श्रीहरि जे सभा मध्ये सुखकंद,
तेने लखी प्रगट कर्यु अक्षरमुक्तानंद ९
'श्रीमुखसिद्धांत' नाम छे, सुणतां संकट जाय,
कामादिक शत्रु टळे, ब्रह्ममां स्थिति थाय. १०
ब्रह्म-परब्रह्मने देखे प्रगट प्रमाण,
भक्ति करी हरिकृष्णनी पामे पद निर्वाण. ११
सिद्धांत सुणशे वांचशे भाव करी निष्काम,
'बेचर' कहे ते हरि भजी, पामशे अक्षरधाम. १२

प्रस्तावना

जगतना प्राणीमात्रनी कोइ पण क्रिया ज्ञान सिवाय थइ शकती नथी. जलताडनादि निष्फल क्रियाओमां पण भ्रमात्मक ज्ञान रहेलुं होय छे. ए ज्ञाननो आत्मानी साथे नित्य संबंध छे, एम केटलाक शास्त्रकारो माने छे. अने केटलाक शास्त्रकारो तो आत्माने ज्ञान स्वरूप ज माने छे. ए प्रमाणे ज्ञाननी आवश्यकता दरेक प्राणीमात्रने छे ज. ज्ञानमां पण सत् अने असत् एवा बे विभाग पडे छे. असत् ज्ञान ए निषिद्धाचरण करवानुं हेतु भूत छे. अने सद्ज्ञान पुण्यकारक आचरण करीने परम पुरुषार्थ हेतु भूत छे. तेमां असत् ज्ञाननो त्याग करवो जोइए अने सद्ज्ञानने मेळववाने माटे प्रयत्न करवो जोइए. ए सद्ज्ञान गुरुकृपा सिवाय मळी शकतुं नथी. माटे सद्गुरु पासे नम्रभावथी प्रश्न करीने तेवुं उत्तम ज्ञान प्राप्त करी शकाय छे. अने मनुष्योमां पण जेने पूर्व जन्मना शुभ संस्कार होय छे एवाओने ज सद्गुरुनो समागम थाय छे. अने सद्ज्ञान प्राप्त करी आत्मकल्याण साधी शके छे.

ज्ञानादेवहि कैवल्यम् ॥

'ज्ञानथी ज मोक्ष थाय छे.' ए विषयमां तमाम शास्त्रकारोनो एक ज मत छे. ते ज्ञान अनादि अपौरुषेय वेदनुं ज्ञान प्राप्त थवुं जोइए, तो ज मनुष्यनो पुरुषार्थ सिद्ध थइ शके. प्राचीन काळमां आर्यावर्तना आर्यो उपर प्रमाणे ज्ञान प्राप्त करीने पोतानी अभीष्ट सिद्धि मेळवी शकता हता, परन्तु काळबळे करीने सर्वनो ह्रास थतो गयो तेम मनुष्यानी ज्ञान प्राप्त करवानी शक्तिनो पण ह्रास थतो गयो. तेमां विदेशी अने विधर्मी म्लेच्छ, यवनादिना आक्रमणो पण कारणभूत छे. आवी परिस्थितिमां तिरोभावने पामेला केटलाक वैदिक तात्त्विक सिद्धांतोनो सामान्य ज्ञानशक्तिवाळी प्रजामां पण प्रचार थाय अने लोको सहेलाइथी आत्मकल्याण साधी शके एवा हेतुथी

आ कळिकाळमां ब्राह्मणकुळमां भगवाननो अवतार थयो अने थोडा ज समयमां आवश्यक ज्ञान मार्गनो प्रकाश करीने पोते स्वधाम गमन कर्युं. अने आ पुस्तकमां भगवान श्रीहरिकृष्ण महाराजना वे सिद्धांतोनुं प्रकाशन करवामां आव्युं छे, माटे तेनुं नाम श्रीहरिकृष्ण श्रीमुख-सिद्धांत राख्युं छे.

गुजरात तथा सौराष्ट्रना केटलाक शहेरो तथा गामडाओमां संस्कारी भक्तोनी सभामां घणी ज सादी भाषामां प्रश्नोत्तररूपे जे सिद्धांतो बताववामां आव्या छे ते सिद्धांतो वेद, उपनिषदो, धर्मशास्त्र अने पुराणो वगेरेना साररूपे बताववामां आव्या छे.

आ भारतवर्षमां श्रीकृष्ण भगवानना स्वधाम गया पछी अनेक धर्माचार्यो अने मतपंथो उत्पन्न थया छे, जो के आ सर्वेनुं मोक्ष प्राप्त करवारूपी ध्येय तो एक ज सरखुं होय छे छतां सांप्रदायिक मतभेदो घणा ज होय छे. तेवी रीते **भगवान श्रीहरिकृष्ण महाराजना** सिद्धांतोमां सांप्रदायिक मतभेदने स्थान ज नथी, परन्तु दरेक मतभेदोनुं निराकरण करी आत्म-कल्याण प्राप्त करवानुं उत्तम साधन सहेलाइथी बताववामां आव्युं छे. जीज्ञासु जनो श्रीहरिकृष्ण महाराजना सिद्धांतोनुं ज्ञान मेळवीने मनन करे तथा ते प्रमाणे आचरण करे तो जरूर पोतानुं आत्मकल्याण साधी शके, एमां जरापण संदेह नथी.

आ सिद्धांतोनुं ज्ञान कोइ पण सनातन धर्मावलंबी सांप्रदायिक मतभेदवाळी जनताने विरोध करनारुं नथी, छतां अत्यारसुधी प्रचारना अभावने लीधे अप्रकाशित दशामां रहेलुं हतुं. तेने प्रकाशनमां मूकवाने माटे परब्रह्म भगवान श्रीहरिकृष्ण महाराजना ज्ञान प्रचारक भक्त-मंडळना मंत्रीओए यथाशक्ति प्रयत्न शरु कर्यो छे; जो के आवा उत्तम ज्ञानना प्रकाशनने माटे जेटलुं जोइए तेटलुं साधन तेमनी पासे नथी छतां प्रभु प्रेरणाथी आ ग्रन्थ बहार पाडवानुं साहस कर्युं छे. भारतवर्षनी धर्मप्रिय प्रजा आवा उत्तम ज्ञाननो लाभ मेळववा सद्भाग्यशाली थशे एवी आशा छे.

आगळ उपर प्रकाशनमां आर्थिक साधननी विशेष सहायता मळशे तो भगवान श्रीहरिकृष्ण महाराजे श्रीमुखे कहेला तमाम ज्ञानने प्रकाशित करवानो तेओनो विचार छे.

आ श्रीमुख सिद्धांत ग्रंथमांथी पटेल त्रिभुवनदासना प्रेमथी अने आग्रहथी केटलाक सिद्धांतो वांचवानो प्रसंग प्राप्त थयो जे उपरथी अवतार संबंधमां निश्चय थयो अने जेने शंका होय तेनुं समाधान करवाने साहित्य प्राप्त थयुं.

शास्त्री अनूपराम सदाशिव
वेदशास्त्र संपन्न, विद्यावाचस्पति, देवज्ञमामंड, दर्शनकेसरी
महागुजरात पण्डित सभाना अध्यक्ष
अहमदावाद.

२

"'श्रीमुखसिद्धांत' श्रेयार्थीओ माटे सरळ सुबोध भाषामां लखायेल एक अलभ्य अने अपूर्व ग्रन्थ छे. अहीं जे तत्त्वोनुं निरूपण करवामां आव्युं छे, ते एवी खूबीथी थयुं छेके वाचकने जाणे एम ज लागे के मारी सन्मुख श्रीहरिकृष्ण महाराज उभा छे अने मने बोध आपता रहेला छे. वेद अने दर्शनशास्त्रोना पंडितो माटे आ एक सुन्दर रसप्रद ग्रन्थ छे, सामान्य शुद्ध जीवन गाळनारा प्रभुना प्रेमीओने माटे आ एक मार्गदर्शकनी गरज सारनार अने आत्मदर्शननी प्रेरणा आपनार अमूल्य ग्रन्थ छे.

'भक्ति भवसागरनी तरणी छे,' आ संपूर्ण ग्रन्थनो सारबोध छे. अहीं भ्रांत जीवोने भ्रम दूर करी सत्यदर्शन मेळववा परम प्रेमरूप अने अमृतस्वरूप भक्तिनो आश्रय लेवाने उद्बोधन छे. भक्तिमां अहीं सविकल्प अने निर्विकल्प–बंने प्रकारनुं कथन छे. 'संसारमां सरसो रहे पण मन मारी पास' जे कह्युं छे, ते केवी रीते बने अने गृहस्थ त्यागी केम रही शके तेनुं सुरेख-दर्शन अहीं छे.

आ ग्रन्थनी विशेषता तो ए छे के श्रोता अने वाचकनी समक्ष केवळ सिद्धांतोनो ज रसथाळ नथी पीरस्यो के जेने जोइने ज मात्र प्रसन्न थवानुं होय, पण अहीं तो आ रसथाळ तमे पण बनावी शकशो, ते निर्देश सचोट लोकगम्य दृष्टान्त द्वारा थयो छे. साहित्यनी दृष्टिए आ एक शुद्ध गद्यनी कृति छे. अहींनी भाषा स्वाभाविक छे. ग्रन्थनी भाषाथी परिचित सर्वे भाइ व्हेनोने आ ग्रन्थरूपी घरेणुं पोताना जीवनने शोभाववा माटे वसाववानी भलामण करुं छुं.

ग्रन्थनुं प्रकाशन शिष्ट-साहित्यमां उमेरो करे छे तेथी आवकारदायक छे. जे भाई-व्हेनोने प्रभुए ग्रन्थना प्रकाशन माटे प्रेरणा आपी छे तेओने धन्य छे. ग्रन्थना संकलन कर्ताना परिश्रम माटे तो लखवानी जरूर नथी. वाचकने पाने पाने तेनी प्रतीति थशे. प्रभु तेमनुं कल्याण करे."

पांडुरंग वैजनाथ आठवले.
श्रीमद् भगवद् गीता पाठशाळाना शास्त्री
माधवबाग मुंबई ४. ता. २७-३-१९५६

गुजरातमांही कल्याण करवाने हरिकृष्ण आवीया;
गाम चुडे प्रभुए देह धरी, जीत्या सर्वेने ज्ञाने करीने;
शास्त्रनी वातो करे खरी.... ....गुजरात
पोते विद्या भणवा नथी गया, पंचदेव प्रगट हरिकृष्ण थया,
भरतखंड उपर करी दया.... ....गुजरात
सृष्टिना कर्ता आव्या छे, सचराचर एमनी माया छे,
एवा श्रुति पुराणे गाया छे.... ....गुजरात
वैराट स्वरूपे वालो सही, एमने अंगे सर्वे ब्रह्मांड रही,
सुरज शशी तो नेत्र भइ.... .. ..गुजरात
आप अनेक रूप ने अनेक नाम, ओळखवानुं बहु कठण काम,
पुरुषोत्तम पोते ठामो ठाम ....गुजरात
हरि मारा हृदयमां करजो वास, तमारा चरणकमळनी घणी आश,
जडीयो उजमशी तमारो दास.... ....गुजरात

कळियुगमां परब्रह्म परमात्मा भगवान श्रीहरिकृष्ण

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानि र्भवति भारत ।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम् ।
धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे ॥

अर्थः—" ज्यारे ज्यारे एकांतिक-धर्मनो लोप थाय छे अने अधर्मनी वृद्धि थाय छे त्यारे त्यारे ते एकांतिक-धर्मना स्थापनने अर्थे अने 'परित्राणाय' केहेतां निर्वासनिक अने पंचविषयना त्यागी एवा जे साधु तेनी रक्षाने अर्थे अने दुष्टोने दंड देवाने अर्थे," श्रीमद् भगवद्गीतामां श्रीकृष्ण परमात्मा कहे छे, "हे अर्जुन ! हुं प्रगट थाउं छुं."

पोताना मित्र अने भक्त अर्जुनने कहेलां इत्यादिक वचनने सत्य करी बतावावानो प्रसंग उपस्थित थतां परब्रह्म परमात्मा श्रीकृष्ण भगवान पोतानी स्वइच्छाए करीने आजथी सो वर्ष पूर्वे एटले संवत १८९० ना श्रावण वदि १४ नी रात्री पाछली बे घडी बाकी हती ते समयने विषे सौराष्ट्रनी पवित्र भूमिमां आवेला चुडा शहेरमां उदीच्य सहस्र ब्राह्मण ज्ञातिमां सद्भाग्यशाळी कुळभूषण रावळ भाणजीभाइ रूपजीभाइने त्यां श्रीहरिकृष्ण नाम धारण करी प्रगट थया अने पोताना प्रागट्यनुं कारण आपतां उपरना गीताना श्लोकनुं प्रतिपादन करीने संवत १९२५ना महा सुदि ६ने दिवस गाम सोजीत्रामां पोताना मंदिरमां सर्व सभा प्रत्ये बोलेला छे जे "अमने निर्वासनिक अने पचविषयना त्यागी एवा जे साधु ते अतिशय वहाला छे. अने आलोकमां जे अमारुं स्वरूप देखाय छे ते पण आ धर्मानंदस्वामी अने अक्षरमुक्तानंद स्वामी तेना अर्थे देखाय छे. केमके अमने प्रसन्न करवाने अर्थे घणांक युग सुधी तप करीने निर्वासनिक थया छे अने आ जन्मने विषे पण अमारा दर्शन सारु अढार वर्ष सुधी फक्त लोट अने पाणी पीने मारुं ध्यान कर्या करता हता. माटे आ बे साधुने दर्शन देवाने अर्थे अमारे आ लोकमां आववुं थयुं छे. अने बीजुं कार्य जे आ समाने विषे ज्ञानमां गडबडाट घणो थइ गयो हतो तेने करीने धर्मनी हानी थइ छे तो ज्ञान आपीने धर्मने शुद्ध करवाने अर्थे अमारुं प्रगटपणुं छे. अने ज्यारे ज्यारे हुं प्रगट थउं छुं त्यारे त्यारे ए बे कार्य करवाने अर्थे ज प्रगट थउं छु."

वळी श्रीमद् भागवतना एकादशस्कंधने विषे अध्याय पांच श्लोक अडत्रीस—

कृतादिषु प्रजा राजन् कलाविच्छन्ति संभवम् ।
कलौ खलु भविष्यन्ति नारायणपरायणाः ॥

अर्थः—' हे राजन् ! सत्युगनी आद्ये लइने मोटा देव छे ते कळियुगने विषे जन्मने इच्छे छे. (शा माटे ?) तो जे कळियुगने विषे 'खलु' केहेतां निश्चय घणां जीव नारायण परायण

थशे.' तेमां कहेला भावार्थने आगळ करीने पोताना प्रागट्यनुं प्रतिपादन करतां सं. १९२४
वैशाख सुद ५ ने दिवसे गाम श्री गाडा मध्ये पटेल लल्लुभाइ दाजीभाइने त्यां बोलेला छे
" अमो नाना वार वरसनी उंमरना हता त्यारे चुडाथी वळदाणा जतां रस्तामां वच्चे
रहीने अमे एवो संकल्प कर्यो हतो जे 'अमने पामवाने अर्थे साधन करीने जे मुक्त
मुमुक्षु अक्षरधाम सिवाय बीजा जे जे लोक अगर धाम तेमां रह्या होय ते सर्वे आ सोरठ देश
सो सो गाउ फरता फरता जन्म धरजो.' माटे ते वधाय मुक्त, मुमुक्षुए जन्म धर्यां छे,
जेटला मुक्त, मुमुक्षुए जन्म धर्या छे ते सर्वेने अमारे विषे सहेजमां प्रीति थाय छे अने
अमारा स्वरूपनो निश्चय थाय छे. अने जेटलाने संस्कार ओछो छे तेने अमारा स्वरू
निश्चय थवामां वार लागे छे. माटे तमारे सर्वने अमारे विषे तरत प्रीति थइ अने अम
स्वरूपनो निश्चय थयो ते अमे तमने जन्म धराव्या छे अने तमोने दर्शन देवा सारु अने त
अमारा स्वरूपनो निश्चय करावीने अक्षरधामने पमाडवाने अर्थे हुं पण मारी स्वइच्छाए क
प्रगट थयो छुं. अने अनंत जन्म थयां अमने पामवा सारु जप, तप, साधन कर्यां हता ते स
फळ तमने आज प्राप्त थयुं छे अने तमारा सर्वेना साधन पूरां थइ रह्यां छे, हवे तमारे कांइ
रह्युं नथी. माटे तमारे देह रहे त्यां सुधी अमे आप्या जे वर्तमान तेने द्रढ राखीने अमारुं भ
कर्या करजो एटले तमारो साक्षात्कार मोक्ष थइ रह्यो छे."

अने वळी कहेलुं छे जे " देवताने पण दुर्लभ समो ते आज तमने प्राप्त थयो छे, का
अनंत प्रतापे युक्त जे भगवान ते ज तमने आज प्रत्यक्ष मळ्या छे एम द्रढ निश्चय राख
(पा. २१६) केमके सर्वे अवतारनो अवतारी एवो जे हुं ते आज मारो एवो संकल्प छे जे
मारा संबंधने पामीने मारी सेवा, भक्ति धर्ममां रहीने करशे तेने मारा धाममां लइ जवा छे

(पानुं ६

परब्रह्म परमात्मा भगवान श्री हरिकृष्ण महाराज कोइनी पासे भणवा गया न हता
ज्यारे ज्यारे परब्रह्म पुरुषोत्तम अक्षरातीतनो अवतार थाय छे त्यारे तेओश्रीनी पासे "
शीखव्युं सर्व शास्त्रनुं ज्ञान होय अने ते उपरांत पण अपार ज्ञान होय जे ज्ञानने सांभळवे क
सांभळनाराना संशय मात्र टळी जाय अने पंचविषय अने जगत प्रत्ये अभाव थइ जाय
आत्मा अने परमात्मा विना बीजा कोइ पदार्थनी वासना रहे नहीं एवो वैराग प्रगटे
जीवात्मा ब्रह्मरूप थाय अने परमात्माना ध्यानने विषे द्रढ स्थिति थाय अने तेना आत्म
शान्ति थाय." आवी रीतनुं ज्ञान आपनारा सत्पुरुष पोते ज परमात्मा छे, एम वेद पण
छे जे' अयमात्मा ब्रह्म इति श्रुतिः ।' वळी प्रगटने ओळखवा माटे कहेलुं छे जे—

उत्पत्तिं च विनाशं च लोकानामगतिं गतिं च ।
वेत्ति विद्यामविद्यां च स वाच्यो भगवानिति ॥

अर्थः—' जगतनी उत्पत्ति जेम थइ छे तेम यथार्थ जाणे तथा नित्य, निमित्त, प्राकृत अने आत्यंतिक ए चार प्रकारना प्रलयने पण जाणे तथा गतिने अने अगतिने पण यथार्थ जाणे तथा विद्याने अने अविद्याने पण जेम छे तेम जाणे. ए छ ऐश्वर्यने यथार्थ जेम छे तेम प्रत्यक्ष जाणे अने कही देखाडे ते भगवान कहेवाय छे. कहेतां भगवान विना बीजो कोइ ए छ वानाने जाणतो नथी.'

एम प्रगट भगवान ज्ञानथी ओळखी शकाय छे एम कहीने कहेलुं छे के " उपरथी जोयामां तो बीजा माणस जेवा जणाता होय अने जेम बीजा मनुष्य खाय, पीए, ओढे, पहेरे, तेम सर्वे क्रिया माणसना जेवी ज करे छे पण भगवान पासे जेवुं ज्ञान होय तेवुं ज्ञान बीजा कोइ पासे होय नहीं, माटे ज्ञाने करीने जेने अमारी परीक्षा लेवी होय ते ल्यो. अमारी पासे जे ज्ञान छे ते ज्ञान चौद लोकनी मांहेली कोरे कोइनी पासे नथी. माटे स्वामीनारायण धर्मना बधा साधु, ब्रह्मचारी, शास्त्री, पुराणी, आचार्य आवे अने मने ज्ञाने करीने तेनी नजरमां आवे ते पूछे तो हुं तेने मारा स्वरूपनो निश्चय करावुं अने ते विना बीजा शंकराचार्यवाळा आवे, रामानुजना आवे, वल्लभाचार्यना आवे, जैन मतना आवे, मुसलमान आवे तो ते सर्वेने ज्ञाने करीने मारा स्वरूपने विषे भगवानपणांनो निश्चय करावुं, अने मोटा देव, ब्रह्मा अने प्रकृतिपुरुष सुधीना सर्वे मारी पासे आवीने ज्ञान पूछे तो हुं तेने निश्चय करावुं अने ते पण मारा आश्रित थइने भजन करवा मांडे, अने ज्ञान विना बीजी रीते मारी पासे परीक्षा लइने निश्चय करवा आवे तेने तो हुं कोइ दहाडो ओळखातो नथी अने तेनुं कल्याण थतुं नथी . "

(सं. १९२४ पोष सु. १५ बोचासण)

" ते सारु अमारी परीक्षा तो ज्ञाने करीने छे, अने ज्ञानने विषे तो नव निधि अने अष्ट महासिद्धि रही छे पण नवनिधि अने अष्ट महासिद्धिने विषे ज्ञान नथी. माटे चिंतामणिरूप जे आत्यन्तिक ज्ञान ते एक अमारी पासे छे पण बीजा कोइ पासे आत्यन्तिक ज्ञान नथी."

(पा. ३७४)

एवी रीतनुं वेद, शास्त्र अने पुराणना साररूप जे आत्यन्तिक ज्ञान तेनी वातो बाल्यावस्थामांथी ज नाना बाळकना मूखेथी सांभळी गामना लोको आश्चर्य पामवा लाग्या अने धीमे धीमे आजुबाजुना गामोमांथी लोको तेमनुं ज्ञान सांभळवा आववा लाग्या अने भगवानश्रीने विनंती करी तेमना गाममां पण बोलावता हता. आम गामोगाम ज्यारे तेमनी वातो थवा लागी त्यारे पंडित, विद्वान, साधुओ वगेरेनुं ध्यान खेचायुं अने वखत मळतां तेओ पण भगवानश्रीनी सभाना श्रोता बनी गया अने आश्चर्य पामी पोतपोताना गामोमां जइने भगवानश्री संबन्धी वातो करता.

वखत जतां आजुबाजुना प्रदेशमां ज्यारे 'भगवान प्रगट थया छे' एवी वातो खूब प्रमाणमां थवा लागी त्यारे समय लइने स्वामीनारायण संप्रदायना मुख्य मुख्य साधुओ अने

हरिभक्तो पण भगवानश्री पासे आवी गया अने गुणातीतानंद स्वामी अने तेमनुं मंडळ ज्यारे वडतालथी पाछा जुनागढ जता हता त्यारे बोटादमां श्रीहरिकृष्ण महाराजना परब्रह्म भगवानपणांनो निश्चय करवा संवत १९१३ चैत्र वद अमासना दिने मोटी सभा राखी अने भगवानश्रीने आमंत्रण आप्युं. मायापरनी आत्यन्तिक ज्ञाननी वाणी सांभळतां आखी सभा दिग्मूढ थइ गइ अने ते सभामां पोताना गुरु गुणातीतानंद स्वामी साथे आवेला अनंत जन्मना मुक्त साधु धर्मानंद तथा अक्षरमुक्तानंद तेओ पोताना गुरुनी रजा लइने श्रीहरिकृष्ण महाप्रभुजीना अनन्य दास बन्या.

बोटादथी चुडा पाछा आवता भगवानश्री साथे बे साधुने जोइने गामना लोकोने अत्यन्त आनंद थयो अने लोकोने भगवानश्रीना निश्चयमां दृढता बंधाणी. पछी तो महाप्रभुजी आजुबाजुना प्रदेशमां साधुओ तथा घणां गृहस्थ भक्तो साथे फरवा लाग्या अने एवी रीते उपदेश आपता थका ज्यारे तेओश्री २४ वर्षना थया त्यारे संवत १९१४नी सालमां वसंतपंचमी उपर चुडा मध्ये बे लाख ब्रह्मभोजननो एक मोटो महारुद्र यज्ञ कर्यो अने देश-विदेशथी आवेला हजारो पंडित, पुराणी, साधु, सन्यासी वगेरेनी मोटी सभामां तेमणे भगवानपणांनुं प्रतिपादन कर्युं अने तेमना साधु धर्मानंद स्वामीए छडी पोकारी जे-"हरिकृष्ण अक्षरातित प्रगट पुरषोत्तम धर्म धुरंधर महाराजाधिराज श्रीहरिकृष्ण महाराजने घणी खम्मा" त्यारथी अगियार वरस अने बावन दिवस अनंत जीवोनो उद्धार करवा देशाटनमां फर्या अने चार वेद, छ शास्त्र, अढार पुराण अने भारतादिक इतिहासना मर्म गामडाना भोळा लोको सहेलाइथी समजी शके ते माटे घरगथ्थु दाखला आपीने रोजनी भाषामां नर्म-गद्यना भाषणो आपीने एकांतिक-धर्मनुं स्थापन कर्युं अने पंचविषयरूपी जीवना अनादि शत्रुने दंड आपी अनंत जीवोनो उद्धार कर्यो. अने वेद, गीता अने भागवतना वचनोने सत्य करीने पांत्रीस वर्षनी उंमरे गुजरातमां आवेला सोजीत्रा गाममां संवत १९२५ना फागण वदि १३ ना दिने पोतानी लीलानी समाप्ति करी.

भगवान श्रीहरिकृष्ण महाप्रभुजीए सनातन प्राचिन संप्रदायना परस्परना आंतरिक भेदभाव दूर थाय तेवी रीते संप्रदायना मूळ-भावार्थने बतावी तेमनो समन्वय करी बताव्यो छे. अने ते ते देशकाळ परत्वे वेदोक्त धर्मानुसार थयेला अद्वैत, विशिष्टाद्वैत, शुद्धाद्वैत अने द्वैताद्वैत ए चारे मतनो मूळ सिद्धांत एक करी बताव्यो छे. अने भगवानश्रीए हिंदु, मुसलमान, आदिक सर्वे धर्मनुं पोताना मुखे प्रतिपादन कर्युं छे अने सर्वेने मोक्षनो एक ज सिद्धांत बताव्यो छे. वळी प्रगट भगवाननी भक्तिनुं ज प्रतिपादन कर्युं छे अने पोतानुं ज भजन कराव्युं छे अने मुख्यपणें आत्यंतिक ज्ञान आपवानी प्रवृत्ति करी छे. अने ते साथे वर्णाश्रमधर्म-व्यवस्थानी आवश्यकता देखाडीने पोतपोताना वेदोक्त धर्ममां ज जीवने मोक्षनो मार्ग बताव्यो छे. वळी पंचविषयनी वासनानो त्याग करवा उपर खूब ज भार

मूक्यो छे अने त्यागीओने तो अष्ट प्रकारे स्त्रीनो अने द्रव्यनो तथा तमाम वैषयिक सुखनो त्याग करवानुं कहेलुं छे. तेमज मोक्षनी इच्छावाळा दैवी अने मुमुक्षु जीवोने प्रगट भगवान अने प्रगट भगवानना पंचविषयना त्यागी निर्वासनिक चोसठ लक्षणे युक्त संत तेनो ज आश्रय करवानुं कहेलुं छे, अने प्रगट भगवान पासे जतां जे कोइ रोके ते सर्वेनो त्याग करवानुं कहेलुं छे, अने पंचदेवनी अभेदभावे उपासना करवानुं कहेलुं छे.

ए प्रमाणे तमाम सिद्धांतोनुं तारतम्य अने ते समये ज्ञानमां थयेलो गडबडाट जोतां एकांतिक धर्मना स्थापनने अर्थे अने वर्णाश्रमधर्म मर्यादाना सेतुओनुं रक्षण करवाना हेतुथी अक्षरातित परमात्मानो अवतार थयो छे एम दृढ निश्चय थाय छे. वळी भगवानश्रीना स्वतःसिद्ध अगाध ज्ञाननी प्रतीतिथी तेओ पोताना प्रागट्यमां पण परब्रह्म परमात्मा तरीके पूजायेला छे अने भृगुलांछन, श्रीलांछन आदि रू परब्रह्म भगवानना सोळे चिन्हो हता एटले आ अवतार परब्रह्म पुरुषोत्तम अक्षरातितनो ज छे.

योग्य उम्मरे भगवानश्रीनुं लग्न चुडामां ज सद्भाग्यशाळी व्यास लीलाधर वेचरदासना पुत्री लक्ष्मीजी (वनुवा) साथे थयुं हतुं.

परम पूज्य धर्मानंद स्वामीनो जन्म सौराष्ट्रमां सागर किनारे परब्रह्म परमात्मा श्रीकृष्णचन्द्रना पुनित चरण कमळथी पवित्र थयेली द्वारकापुरीमां लुहाणा ज्ञातिमां श्रीमंत कुळमां थयो हतो. परमपूज्य अक्षरमुक्तानंद स्वामीनो जन्म गढडा पासे आवेला विकरीया गामनी पवित्र भूमिमां ब्राह्मण ज्ञातिमां थयो हतो.

परब्रह्म परमात्मा भगवान श्रीहरिकृष्ण महाराजना सौराष्ट्र अने गुजरातमां चुडा, अमदावाद, सोजीत्रा, खंभात, धोळका, पींपळी अने गोलाणामां मंदिर छे अने छूटा छवाया घणां हरिभक्तो छे—

प्रमुख
त्रिभुवनदास त्रिकमलाल पटेल
श्रीहरिकृष्ण महाराजनुं मंदिर
अहमदवाद.

अभिप्राय

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः

श्रीपतिम् श्रीहरिम् कृष्ण कमळा कांतिम्,
सनक शेष धरत ध्यान शारद नारद करत गान,
शीव न्हाय चरणपान कोटीकाम लजावते,
पूरणब्रह्म प्रगट आप थया जीव हरण ताप,
मुनि नित्यानंद हरिकृष्ण गुण गाय जे.

अमदावादना मंदिरना आद्यसंस्थापक परम पूज्य गोविंदलाल बापुजीना कुटुंबमां जन्म मळवाथी नानपणथी ज भगवान श्रीहरिकृष्ण महाराजनो अवतार अने तेमना ज्ञान संबंधी वातो सांभळवा मळेली अने में मारा हाइस्कुलना अभ्यास दरम्यान थोडा घणां सिद्धांतो अने भजनो सांभळेला अने वांचेला अने उत्सवोमां भाग लीधेलो पण हृदयस्पर्शी लाभ तो में ज्यारे 'श्रीमुखसिद्धांत' ग्रंथनी प्रेसकोपी गुजरातीमां लखवा मांडी त्यारे अनुभव्यो अने ज्यारे 'लीलासिंधु' ग्रंथ वांच्यो त्यारे मारा अंतरना सर्व संशय टळी गया. शरुआतथी ज हुं बे त्रण कलाक सिद्धांत लखवामां अने झीणवटथी समजवा माटे चर्चामां गाळतो अने भगवानश्रीना अनन्य भक्त वडिलश्री लक्ष्मणभाइ वीठ्ठलदासे ज्यारे आध्यात्मिक ज्ञानना गहन विषयो सहेली रीते समजाव्या त्यारे पांच सात सिद्धांतो लखतां ज दुनिया तरफ वैराग्य उत्पन्न थवा लाग्यो. वळी लखवामा अने चर्चामां बे त्रण कलाक जता ते उपरांत तेनुं मनन तो मारा मनमां सतत चाल्या करतुं तेथी मारा कोलेजना अभ्यास उपरथी दील उठवा लाग्युं अने मने अर्थशास्त्रना, राज्यशास्त्रना अने बीजा पुस्तको तद्दन खोटां लागवा मांड्या. पण शुं करुं जमानाने अने संजोगोने लीधे मारे अभ्यास कर्या विना चाले तेम हतुं नहीं तेथी में ज्ञानने परोक्ष रीते ज जाणवानुं नक्की कर्युं. तेम छतां 'श्रीमुखसिद्धांत' ग्रंथमांथी पहेला भागनी प्रेसकोपी लखवानुं अने तेनी प्रुफ तपासवानुं अने पुस्तक बंधाय त्यां सुधीनुं बधुं काम मारा हस्तक आववाथी आखुं पुस्तक दश वखत मारा वांचवामां आव्युं तेना प्रतापे जीवनमां सच्चाइ, निश्चयात्मकपणुं निर्भयता अने दुनिया तरफ वैराग तेनां बीज मारा जीवनमां नंखाया.

आवा जनकल्याणी अने आत्मकल्याणी ग्रंथने वांचता पहेलां लोकोने थोडी मदद मळे ते माटे में आवा ग्रंथना साररूप थोडाक दृष्टिबिन्दुनी तारवणी करीने अहीं आप्यां छे. आशा छे के आ दृष्टिबिंदु वांचकोने जरुर मददरूप थशे.

१ आध्यात्मिक मायापर ज्ञानना गहन प्रश्नो सामान्य मानवी समजी शके तेवी घरगथ्थु वाणीमां वर्णव्या छे.

२ वर्णाश्रमधर्म पाळवा उपर खूबज भार मूक्यो छे अने सर्वने पोतपोताना वेदोक्त–धर्ममां ज मोक्षनो मार्ग बताव्यो छे.

३ पंचविषयनो त्याग करवा सिद्धांते सिद्धांते भार दइने कह्युं छे.

४ सिद्धांते सिद्धांते आत्मा अने परमात्मा जुदा बताव्या छे.

५ सिद्धांतो दर्पण जेवा छे, कहेतां 'मोक्षना मार्गमां हुं क्यां छुं' ए स्पष्ट बतावे छे.

६ सिद्धांते सिद्धान्ते 'प्रत्यक्ष सद्‌गुरुरूप परमात्मानी भक्ति विना आत्यंतिक मोक्ष थतो नथी' एवुं प्रतिपादन कर्युं छे अने भगवान श्रीहरिकृष्ण महाराजे पोतानुं भजन आरती, धून वगेरे कराव्या छे.

७ जेम रामनी साथे सीताजी अने कृष्णनी साथे लक्ष्मीजीने राखीने आरती, पूजन वगेरे थाय छे तेम भगवान श्रीहरिकृष्ण महाराज साथे लक्ष्मीजीने राखीने तेमनुं भजन, आरती, पूजन वगेरे करवामां आवे छे.

प्रवीणचन्द्र त्रिभुवनदास-पटेल बी. ए.

आरती

जय अंतरजामी जय अंतरजामी
हरिकृष्ण सुखदायक प्रभु सर्वेना स्वामी,
अक्षरथी अविनाश आज तमे आव्या, प्रभु आज तमे आव्या,
मुनिमंडळ महाराजा, संगे मुक्त लाव्या जय
द्विजकुळ धर्यो अवतार विप्र वडा जाति, प्रभु विप्र वडा जाति,
कंकणपुर करुणा करी बहु विध बहु भाती जय
अगणित गुण महिमा, वेद वदे वाणी, प्रभु वेद वदे वाणी,
प्रगट थया पुरुषोत्तम जीवनजी जाणी जय
मानव मळीया नाथ, जे दरशन करीयां, प्रभु जे दरशन करीयां,
पाम्या हार प्रसादी ते भवजळ तरीया जय
पूजा पुष्प समर्पण, सेवा सुखराशी, प्रभु सेवा सुखराशी,
जेणे जीवन जमाड्या ए अक्षरवासी . जय
जे घेर वसीया वास जे जळमां नाह्या, प्रभु जे जळमां नाह्या;
पग मांड्यो जे पृथ्वी, तरू तीरथ छाया जय.
वाहन महिषी गाय पय पायु जेनुं, प्रभु पय पायुं जेनुं,
जे आव्या उपयोगे, काम कर्युं तेनुं .. ... जय
मुज मंदिरीये माव महेर करी मळीया, प्रभु महेर करी मळीया;
दास भवानी भेट्या जन्म मरण टळीया.... ....जय

२

हरखे हरिकृष्णजीनी आरती कीजे, प्रगट प्रमाण मूर्ति उरमां धरीजे;
सर्वोपरि सर्वेना कारण, अक्षरातित पधार्या जग तारण.. .. हरखे.
पूरणब्रह्म पुरुषोत्तम पधार्या, अनंत जीवोना वहाले कारज सार्या हरखे.
सर्वे धामना मुक्त संगे लाव्या सर्वे तीरथ आजे चरणे आव्या .हरखे.
महिमा अपरिमित पार नहीं पामे चार वेद नेति नेति कही गावे हरखे,
धर्मानंद कहे जे कोई आरती गावे, सर्वे पाप तेना दूर थइ जावे....हरखे.

भजन

चीतडुं चोरे छे, चीतडुं चोरे छे, चीतडुं चोरे छे,
हो हरिकृष्ण तारी मूर्ति रे मारुं चीतडुं चोरे छे;
मूर्ति मनोहर जोइ गर्व काही रवि शशी छोरे छे,
जे जन जुए तेना तर्त मनने हरे छे... . .. हो हरिकृष्ण
पातळीया तारी मूर्ति प्यारी वर्ण गोरे छे,
भव ब्रह्मा जोइ भूलो पडे एवी वय कीशोर छे.. हो हरिकृष्ण
आंख अणीयाळी ने मुखडुं रूडुं मुंछ फुटते दोरे छे,
कामणगारा कटाक्ष तारा ते काळजुं कोरे छे .. हो हरिकृष्ण
कंठमां पुष्पना हार शोभे तेनी सुगंधी फोरे छे,
जगन्नाथ एवी मूर्तिमां मीते चित्तने जोडे छे . .हो हरिकृष्ण

असद्गुरु विषे

जगतमां गुरु बन्या छे अपार, जगतमां गुरु बन्या छे अपार,
मोक्षनी वातमां लेश न जाणे, उरमां विषय विकार जगतमां
एहो प्रभुना चरणमां प्रीति नहीं लेश, पर त्रियाना जार,
आठो पहोर अंतरमां राखे, द्रव्य हरवानो विचार .जगतमां
एहो घी, साकर, दुध, दहीं, करे मीठा मीठा आहार,
इन्द्रियो विषयमां आकुळ व्याकुळ, भूंडुं ताके दगादार जगतमां
एहो एवा गुरुनो जे संग करे, तेने पुगाडे जमने द्वार,
धर्मानंद कहे जमना दूत, मारे पापोने मार....जगतमां

रूपिया एकसो अने तेथी वधु रकम भेट आपनार सद्‌गृहस्थोनी नामावली

कुल रूपिया ६८८६

अमदावाद

१५००) एक कडवा पाटीदार तरफथी गुप्तदान
५०१) शेठ दुर्गाप्रसाद शंभुप्रसाद लश्करी
२५१) अ. सौ. विजयागौरी डी. लश्करी
२५१) त्रिभुवनदास त्रिकमलाल पटेल
२५१) कृष्णकुमार कान्तीलाल पटेल
१२५) धनवंतराय माणेकलाल पटेल
१०१) लक्ष्मणदास वीठ्ठलदास पटेल
ह: व्रजलाल भावनगरवाळा
१०१) कान्तीलाल जीवणलाल पटेल
१०१) शेठ एम. एम. खंभातवाळा
१०१) नटवरलाल चुनिलाल पटेल

चुडा

१०१) ठाकोरसाहेब धर्मेन्द्रसिंहजी
१०१) मनहरलाल मोहनलाल व्यास

खंभात

२५१) मफतलाल चुनिलाल रंगवाला
१०१) शांतीलाल आशाराम मोदी

सोजीत्रा

१०१) बाबुभाइ आशाभाइ वीन काशीभाइ पटेल
१०१) परषोत्तमदास तळशीभाइ पटेल

सीतापुर

१०१) कानजीभाइ दलछाराम पटेल
१०१) हरगोवनदास वेचरदास ह. प्रहलादजी

मुंबई

२५१) शेठ गीरधरलाल नन्नेलाल
२५१) शेठ नरसी नागसी एन्ड कुां.
२५१) शेठ अरजण खीमजी एन्ड कुां.
१५१) शेठ मणिलाल पटेल एन्ड कुां. अमदावादवाला
१०१) शेठ कीशनलाल सी. मारफतीया
१०१) शेठ हीरजी भारमल
१०१) शेठ मणिलाल एन्ड ब्रधर्स खंभातवाळा

गोलाणा

१०१) मणिलाल त्रिभुवनदास शाह
१०१) उजमशीभाइ परभुदास शाह पींपळीवाळा
१०१) स्व. खीमचंद लालजी धंधुका ह: त्रिभुवनदास
१०१) घेलाभाइ लालजी सोनी कोठ
१०१) मगन लालजी सोनी नडीयाद
१०१) नरसिंहभाइ खीमचंद सोनी पच्छम
१०१) चुडासामा उदेसंग मेरुभाइ पींपळी
१०१) जटाशंकर हरगोविंद पंड्या वडोदरा
१२५) रवजीभाइ लालजीभाइ पटेल पच्छम
१०१) तालुकदार मंगळसिंहजी जसवंतसिंहजी मोटीबोरु
१०१) अंबालाल धरमदास पटेल बावला
१०१) गंगास्वरुप चांदाबा चीतरवाडा
१०१) जटाशंकर शीवशंकर त्रिवेदी वीरमगाम
१०१) रतिलाल महासुखराम व्यास"

परब्रह्म भगवान श्रीहरिकृष्ण महाराजना ज्ञान प्रचारक भक्त मंडळनी कार्यवाहक कमिटी.

मंत्रीयो

रा. रा. त्रिभुवनदास त्रिकमलाल अमदावाद (धर्मभूपण)

,, मफतलाल चुनीलाल खंभात

,, त्रिभुवनदास खीमचंद, धंधुका (पींपळीवाला,)

,, वीठलदास जगजीवनदास, सोजीत्रा

सभ्यो

रा.रा. लक्ष्मणदास वीठलदास अमदावाद (भावनगरवाळा)

,, शांन्तीलाल अमृतलाल अमदावाद

,, नटवरलाल चुनीलाल ,,

,, चुनीलाल जेठालाल ,,

,, परसोत्तमदास भीखाभाई ,,

,, मणीलाल गांडालाल खंभात

रा. रा. गीरधरभाई छगनलाल खंभात

,, शांन्तीलाल आशाराम ,,

,, जटाशंकरभाई हरगोविंद वडोदरा

,, गोविंदभाई भलाभाई सोजीत्रा

,, बाबुभाई आशाभाई मुंबई (सोजीत्रावाळा)

,, परसोतमदास तळशीभाई सोजीत्रा

,, आशाभाई तळशीभाई तारापुर

,, चतुरभाई उमेदभाई गाडा

,, मनहरलाल मोहनलाल चुडा

,, गीरधरलाल चुनीलाल ,,

,, वेचरभाई रामजीभाई धोळका

,, जटाशंकर शिवशंकर विरमगाम

,, नटवरसंग वनाभाई पींपळी

,, तखतसींह गतसंगजी पींपळी

,, मणीलाल त्रिभुवनदास गोलाणा

ज्ञान प्रचारक भक्त मंडळनी ओफीस
श्रीहरिकृष्ण महाराजनुं मंदिर,
रायपुर मर्चंटवाड,
अमदावाद.

अनुक्रमणिका

शुद्धिपत्रक

पानुं	लीटी	अशुद्ध	शुद्ध
२	२	स्वरूपनुं	स्व-स्वरूपनुं
५	१४	परमात्मानो	परमात्माने
६	२	करानाराने	करनाराने
१३	२४	ते ए ठेकाणे	अने ते ए ठेकाणे
३३	१८	तेनो	ते तो
३६	२०	लोभाइने गया	लोभाइने लेवा मंडी गया
४०	१०	ते ते	तेने
४९	८	सर्वेने	सर्वे
६१	७	पुरुष ने	पुरुषने
७२	२२	भगवानना द्रोहना	भगवानना भक्तना द्रोहना
७६	२	भगवान अने भगवानना संत	भगवान
११७	१६	हुं ज परमेश्वरनी	हुं परमेश्वरनी
११९	१९	विषयो	विषयी
१२९	१८	होय ते कोइक	होय अने कोइक
१४२	२२	माटे ते	माटे
१५२	२४	जन्मनो	जन्मना
१६२	१०	जेवा	जेवो
१८०	२४	तो सर्वे	जो सर्वे
१८७	७	संसारी मात्रने	संसारी मात्र
१८९	१४	जगतनी	जगतनां
१९१	२	अक्षरडाह्या	अक्षतरडाह्या
१९१	११	धामने सुखे	धामने लेश सुखे
१९७	८	आपवानुं	आवयानुं
१९८	२२	तपे करीने	तपे अने त्यागे करीने
१९९	१५	तो	ते
२००	२०	संबंध अने	संबंध छे अने
२१९	१४	सुजातिपणुं	सजातिपणुं
२३०	१६	पया	पवो
२३५	२	पिंडी करवापणुं	पिंडीकरण करवापणुं
२४९	२३	अनंतकोटि माया	अनंतकोटि
२६१	१४	तेमने	तेमां जेने
२६५	१६	करवा	करवो
२६६	५	घे ते	घेने
२६४	१४	भगवान तेने	भगवानने

२७७	२४	ब्रह्मादिक अने	ब्रह्मादिकने
२८६	५	हाण्य तेने	हाण्य-वृद्धि तेने
३४८	श्लोक	परं	परमं
३४९	२१	भगवानना द्रोहनुं	भगवानना भक्तना द्रोहनुं
३९०	१२	संत होय	संत न होय
४०२	११	परब्रह्मने	परब्रह्म तेने
४०४	१२	मानता	मानतो
४०९	१०	आने देहे	आने आ देहे
४२३	१०	थकी	थका
४४१	२	देखड्यां छे	देखाड्यां छे
४४९	२०	टींबामां श्री डोशीयोने	श्री टींबामां डोशीयोने
४५४	१९	फरे छे	फेर छे
४७९	११	सांभळे	सांभरे
४८२	१६	नथी	पवा नथी
४९०	५	पटला	पटले
५४३	६	हता	हतो
५४८	श्लोक	वुध्यान	वुध्यान
५७४	१	लेवा	लेवो
५९०	१	मननां	मनमां
५९१	१		अने पवा भक्तथी तो अमे क्षण
५९१	२		अक्षरधाममां
६३५	१८	घरी तेटलुं	घरी रहे तेटलुं

पंचीकरण

१ चोवीस तत्त्वना नाम:–

पंचभूत:–पृथ्वी, जळ, तेज, वायु, अने आकाश.

पंचविषय:–शब्द, स्पर्श, रूप, रस अने गंध.

पंच ज्ञानेन्द्रियो:–कान, चामडी, आंख, जीभ अने नाक.

पंच कर्मेन्द्रियो:–वाणी, हाथ, पग, शीश्नु अने गुदा.

चार अंत:करण:–बुद्धि, मन, चित्त, अने अहंकार.

२ चौद देवता:–दिक्पाळ, वायु, सूर्य, वरुण, अश्वनीकुमार, अग्नि, इन्द्र, विष्णु, प्रजापति, यम, ब्रह्मा, चंद्र, वासुदेव अने रुद्र.

३ चौद लोकनुं एक ब्रह्मांड :-सात नीचे :-अतळ, वितळ, सुतळ, तळातळ, महातळ, रसातळ, सात उपर :-भूर, भवर, जन, स्वर्ग, महर, तप, अने ब्रह्मलोक. [अने पाताळ.

४ नवधा भक्ति :-श्रवण, कीर्तन, स्मरण, अर्चन, वंदन, पादसेवन, दासत्व, सखा अने आत्म-

५ षटकर्म :-स्नान, संध्या, देव पूजा, तर्पण, होम, स्वाध्याय. [निवेदन.

६ छ प्रकारना ब्रह्मना अवतार :-परब्रह्म, ब्रह्म, सबळब्रह्म, अव्याकृतब्रह्म, सुत्रात्माब्रह्म अने

७ षटदर्शन :-बे तर्क दर्शन :-न्यायशास्त्र अने वैशेषिक शास्त्र. [वैराटब्रह्म.
बे मीमांसा :-पूर्व मीमांसा-धर्मशास्त्र अने उत्तर मीमांसा-वेदान्त शास्त्र.
बे योगदर्शन :-सांख्यशास्त्र अने योगशास्त्र.

८ छ दोष :-काम, लोभ, स्वाद, स्नेह, मान अने क्रोध.

९ पंचदेव :-गणपति, शक्ति, सविता, विष्णु अने शीव.

१० पंचकोषात्मक माया:—अन्नमयकोष, प्राणमयकोष, मनोमयकोष, विज्ञानमयकोष अने

११ चार वर्णः— ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य अने शुद्र [आनंदमयकोष

१२ चार आश्रमः—ब्रह्मचारी, गृहस्थ, वानप्रस्थ अने संन्यासी

१३ चार वेदः—ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद अने अथर्ववेद

१४ चार शास्त्रः—सांख्य, योग, वेदान्त अने पांचरात्र

१५ चार देहः—स्थूळ, सूक्ष्म, कारण अने महाकारण

१६ चार अवस्थाः—जागृत, स्वप्न, सुषुप्ति अने तुर्या

१७ चार गुणः—तमस्, रजस्, सत्त्व अने शुद्ध सत्त्व

१८ तपना चार प्रकारः—धर्म, ज्ञान, वैराग अने भक्ति

१९ चार प्रकारना भक्तः—पामर, विषयी, मुमुक्षु अने मुक्त

२० चार प्रकारना प्रलयः—नित्य, निमित्त, प्राकृत अने आत्यंतिक

२१ चार प्रकारना फळः—धर्म, अर्थ, काम अने मोक्ष



સર્વ અવતારના અવતારી અક્ષરાતીત પરબ્રહ્મ પરમાત્મા ભગવાન

શ્રી હરિકૃષ્ણ મહારાજ



જન્મ સ્થળ ચુડા (ઝાલાવાડ) સૌરાષ્ટ્ર સંવત ૧૮૯૦

थायज नहीं एवुं, ने जन्म मृत्युने टाळे एवुं, अने सत्यरूप एवुं, अने प्रकाशरूप एवुं, ज्ञानरूप एवुं अने अजर अमर एवुं, जे अक्षरब्रह्मस्वरूप ते जे ते सर्वे सुखनो सिंधु छे ने ते सुख अपरिमित छे, ने ते सुख मन वाणीथी पर छे, एवुं जे ब्रह्मस्वरूप ते जे ते मारुं स्वरूप छे अने हुं अक्षरब्रह्म छुं एवुं पोताना जीवात्माने जाणीने त्रण देह थकी पृथक् समजीने ब्रह्मने विषे एकत्वपणुं करीने कहेतां 'हुं ब्रह्म छुं' एवुं जे ज्ञान ते प्राप्त थये छते ए जीवात्मा जे ते ब्रह्मना भावने पामे छे. कहेतां ब्रह्मरूप थाय छे."

जेम सत्, चिद् ने आनंद एवुं जे जीवात्मानुं स्वरूप तेने भूलीने जडरूप अने मिथ्यारूप एवो जे देह तेने विषे अज्ञाने करीने जोडाणो छे, तो ते आत्मा देहना भावने पामी गयो छे, कहेतां आत्मा कोइ काळे मरे एवो नथी तोय पण कहेशे जे हुं मरी जाउं छुं अने मने कोइ मारी नाखशे, इत्यादिक देहना भाव आत्माना विषे आवी गया छे. तेम जो हवे जीव जे ते मन द्वारा ब्रह्मनो संग करे तो ते ब्रह्मना भावने पामे छे. माटे एवुं ज्ञान जाणीने सदाय शान्तरूप थइने भगवान पुरुषोत्तमनी उपासना करे तो ते सर्वोपरि सुखने पामे छे.

हवे ते पुरुषोत्तम भगवान केवा छे? तो अक्षरना आधार छे. ते अक्षर केवुं छे ? तो जड–प्रकृति जे स्थावर जंगमरूप सर्व विश्व एवा अनंत कोटी ब्रह्मांड ते अक्षरना एक रोमने विषे अणुनी पेठे उडे छे. एवुं अक्षर तो एक छे, ते एवा एक अक्षर जेवा अनंतकोटी अक्षरना करतां पण भगवान पुरुषोत्तमने विषे अधिक बळ, गुण, रूप ने सामर्थ्य छे. एवा जे पुरुषोत्तम भगवान अने पूर्वे कह्युं जे पोताना आत्मानुं मूळ अनादि ब्रह्म स्वरूप तेने पोतानुं स्वरूप मानीने पछी पुरुषोत्तम नारा-

तेमज पूर्वे कह्या जे मनुष्य तथा देव, ब्रह्मा अने पुरुषादिक सुधी सर्वेने पण ते जे ते पेला सामान्य गृहस्थना विषयनो सामान्य गृहस्थने जेवो आनंद छे तेवो ज ते सर्वेने पण पोतपोताना विषयमां आनंद छे. पण तेथी अधिक नहीं. केम के ते सर्वे पण अपूर्णपणे रहीने बीजा विषयने भजे छे अने दुर्बळ गृहस्थ पण तेमज भजे छे माटे आ वात तपासी जोतां एम मालुम पडशुं जे उत्तरोत्तर सारा विषयनुं सुख मळे तथा ऐश्वर्य प्राप्त थाय तोय पण अशांति ज रहेछे. हवे जे अशांति रहे छे तेनुं कारण ए छे के ए विषय जे छे ते सर्वेने विषे सुख जे ते लेशमात्र नथी. अने ते विषयने विषे जे सुख जेवुं जणाय छे ते तो स्वस्वरूप जे आत्मस्वरूप तेनुं सुख छे. पण तेने अविद्याए करीने पोताना आत्माने विषे जे सुख रह्युं छे तेने जाणतो नथी. अने विषयने विषे सुख माने छे.

ते केनी पेठे? जेम कस्तुरीयो मृग छे तेने पोतानी नाभिने विषे कस्तुरी छे पण तेने न जाणतां ते कस्तुरीनी वास लेवा सारु मृग जे ते तृणने सुंघे छे, अने तेने करीने सुख माने छे, तेम पोताना आत्माने विषे कस्तुरी रूप सुख रह्युं छे पण तेने भूलीने तृणरूप जे पंच विषय तेने भोगवीने मृगनी पेठे सुख माने छे, पण जेम तृणने विषे कस्तुरी जे ते लेश मात्र नथी ने कस्तुरी तो मृगनी नाभिमां छे तेम पंच विषयमां सुख लेश मात्र नथी अने सर्वे सुख तो पोताना आत्माने विषे रह्युं छे.

केम के जिह्वा इन्द्रिय छे ते पृथ्वीनो भाग छे अने खट रसादिक जे सर्वे खाधाना पदार्थ छे ते पण पंचभूतनो भाग छे. ते खाधाना पदार्थनो कोळीयो करीने जिह्वा उपर मुक्यो त्यारे ते जीभ ने कोळीयो ते बे जड छे, अने सुख तो चैतन्य जे आत्मा तेने आव्युं. केम के सुख तो ज्ञानने विषे रह्युं छे. ते ज्ञान चैतन्यमां छे. माटे "सुख मात्रनुं स्थानक ने महा शांति आपे एवुं, अने जेने विषे प्रीति करे तेने फरीने विषयमां प्रीति

थायज नहीं एवुं, ने जन्म मृत्युने टाळे एवुं, अने सत्यरूप एवुं, अने प्रकाशरूप एवुं, ज्ञानरूप एवुं अने अजर अमर एवुं, जे अक्षरब्रह्मस्वरूप ते जे ते सर्वे सुखनो सिंधु छे ने ते सुख अपरिमित छे, ने ते सुख मन वाणीथी पर छे, एवुं जे ब्रह्मस्वरूप ते जे ते मारुं स्वरूप छे अने हुं अक्षरब्रह्म छुं एवुं पोताना जीवात्माने जाणीने त्रण देह थकी पृथक् समजीने ब्रह्मने विषे एकत्वपणुं करीने कहेतां 'हुं ब्रह्म छुं' एवुं जे ज्ञान ते प्राप्त थये छते ए जीवात्मा जे ते ब्रह्मना भावने पामे छे. कहेतां ब्रह्मरूप थाय छे."

जेम सत्, चिद् ने आनंद एवुं जे जीवात्मानुं स्वरूप तेने भूलीने जडरूप अने मिथ्यारूप एवो जे देह तेने विषे अज्ञाने करीने जोडाणो छे, तो ते आत्मा देहना भावने पामी गयो छे, कहेतां आत्मा कोइ काळे मरे एवो नथी तोय पण कहेशे जे हुं मरी जाउं छुं अने मने कोइ मारी नाखशे, इत्यादिक देहना भाव आत्माना विषे आवी गया छे. तेम जो हवे जीव जे ते मन द्वारा ब्रह्मनो संग करे तो ते ब्रह्मना भावने पामे छे. माटे एवुं ज्ञान जाणीने सदाय शान्तरूप थइने भगवान पुरुषोत्तमनी उपासना करे तो ते सर्वोपरि सुखने पामे छे.

हवे ते पुरुषोत्तम भगवान केवा छे? तो अक्षरना आधार छे. ते अक्षर केवुं छे ? तो जड–प्रकृति जे स्थावर जंगमरूप सर्व विश्व एवा अनंत कोटी ब्रह्मांड ते अक्षरना एक रोमने विषे अणुनी पेठे उडे छे. एवुं अक्षर तो एक छे, ते एवा एक अक्षर जेवा अनंतकोटी अक्षरना करतां पण भगवान पुरुषोत्तमने विषे अधिक बळ, गुण, रूप ने सामर्थ्य छे. एवा जे पुरुषोत्तम भगवान अने पूर्वे कह्युं जे पोताना आत्मानुं मूळ अनादि ब्रह्म स्वरूप तेने पोतानुं स्वरूप मानीने पछी पुरुषोत्तम नारा-

यणनो यथार्थ पूर्वे कह्यो एवो महिमा जाणीने परमात्माने भजे छे ते आत्मा परमात्माना सरखा सुखने पामे छे. त्यां श्रुतिः—

निरंजनः परं शांतिमुपैति ।

अर्थः--अंजन जे माया एटले अज्ञान तेणे रहित थयो ते भगवानना तुल्यपणाने पामे छे. वळी कह्युं छे 'मम साधर्ममागताः' अर्थः— परमात्माए पोते कह्युं छे जे "मने जाणनारो मारा साधर्मपणाने पामे छे." कहेतां परमात्मा जेम काळ, कर्म, मायाए रहित छे तेम ते परमात्माने जाणनारो परमात्मानो भक्त ते पण काळ, कर्म, मायाए रहित थाय छे. वळी कह्युं छे 'ब्रह्मविद् ब्रह्मैव भवति'। अर्थः—"ब्रह्म जे परमात्मा तेने जाणनारो ब्रह्मरूप थाय छे." एवी रीते परमात्माने भजनारो, जाणनारो, पामनारो ते परमात्माना सरखा सुखने पामे छे. हवे ते परमात्माने क्यारे पमाय छे? तो ते परमात्मा अनेक जीवोना उद्धार करवा सारु पृथ्वी उपर रामकृष्णादिकरूपे प्रगट थाय छे ते प्रगट परमात्मा भगवानतुं मनुष्यस्वरूप तेनो आश्रय जे जीव करे छे—ते परमात्मानो साक्षात्कार पामे छे. अने तेनी आत्यंतिक मुक्ति थाय छे. माटे ते अतिशय दुर्लभ समय ते आज तमारे सर्वेने आव्यो छे, ते तमारा भाग्यनो पार नथी. केम के प्रगट पुरुषोत्तमनो संग मळवो ते तो जेने अनेक जन्मनां पुन्य होय तेने मळे छे, ते तमारे आज योग बन्यो छे. माटे तमारां बहु मोटां भाग्य छे" एम कहीने घोडीए स्वार थइने गाममां पोताना उतारानी मेडीए पधार्या. ॥ इति श्रीमुख सिद्धांत १ समाप्त।

२ विषय :—शुद्ध उपासना थकी पुरुषोत्तमने पमाय छे

श्री हरिकृष्णाय नमोनमः॥ संवत् १९१४ना महा सुदी २ ने दिवसे सांजने समे महाराज श्रीहरिकृष्णभगवान, गाम श्रीचूडा मध्येथी घोडीए स्वार

थईने पोतानी यज्ञशाळाअे पधार्या हता. ने त्यां आवीने यज्ञशाळामां पाकना करानाराने दर्शन आपीने पछी चोकमां खुरशी उपर विराजमान थया. तेमणे सर्वे श्वेत वस्त्रो धारण कर्यां हतां. पुष्पना हार कंठमां धारण कर्या हता ने पुष्पना बाजुबंध, गजरा, तोरा, गुच्छ शोभी रह्या हता. ललाटने विषे केसरनी अर्चा अने कुंकुनो चांदलो कर्यो हतो, अने पोताना मुखारविंदनी आगळ हजारो विद्वान ब्राह्मणो तथा देशदेशना हरिभक्तो तथा साधु, ब्रह्मचारी, सन्यासी ते सर्वेनी मोटी सभा भराइने बेठी हती.

प्रश्न :—पछी भारदना ब्राह्मण जोषी पुरुषोत्तम नाथाए महाराजने प्रश्न पूछ्युं. जे "हे महाराज ! पुरुषोत्तम भगवानने शे उपाये करीने पमाय छे ? अने शे साधने करीने सर्वोपरि सुख प्राप्त थाय छे ? ते कृपा करीने कहो ".

पछी श्रीहरिकृष्ण भगवान बोल्या, जे "शुद्ध उपासना थकी पुरुषोत्तमने पमाय छे. अने ज्यारे पुरुषोत्तमने पामे छे त्यारेज सर्वोपरि सुखने पाम्यो कहेवाय छे. माटे शुद्ध उपासना राखवी. केम के जीवनुं अपूर्णपणुं छे ते अनंतकोटि ब्रह्मांडना विषयना सुखने भोगवे तोय पण जीवनुं जे अपूर्णपणुं ते टळे नही. अेवुं जे जीवनुं अपूर्णपणुं तेनुं कारण ए छे जे ए जीवे विषय वासनाए करीने भोगव्युं, जे सुख तेथी लाग्युं जे पाप अने ते पापे करीनेज जीवने अपूर्णपणुं छे. अने सुझे एटला विषय मळे तोय पण जीव पोते तृप्त थतो नथी.

हवे ते तृप्त थवातुं नथी तेनुं कारण ए छे के जे सर्वे विषय मळे छे. ते सर्वे पुरुष प्रकृति थकी थयेला छे. माटे ते सर्वे विषयनो जीव द्रष्टा छे. एटले पोतपोताने जे जे विषय मळ्या होय तेनुं परिमाण करे छे, माटे

ते सुखने भोगवतो थको बीजा सुखने भजे छे अने जे सुखने भजे छे ते सुख जो प्राप्त थाय तोय पण ते अपूर्णकाम ज रहे छे. शामाटे ? जे तेनो पण पोते द्रष्टा छे. वास्ते ते सुखनुं पण परिमाण करे छे जे आ ते आवुं ज सुख छे? एम जाणीने वळी तेथी बीजा अधिक विषयसुखने इच्छे छे; पण सूझे एटला विषयने भोगवे तोय पण पोताने इच्छा रूपी जे पाप वळग्युं छे, ते थकी निवृत्तिने नथी पमातुं. त्यां दृष्टांत छे के जेम कोइक ठेकाणे लाय (आग) लागी होय अने तेथी छेटे पतंगीयो होय ते पतंगीयाने त्यां अजवाळुं अने ताप थोडो होय अने जेम जेम ते पतंगीयो प्रकाशनुं सुख लेवा सारु लायनी समीपे आवतो जाय छे ने अग्निनी कोरे (तरफ) दोट करे छे; तेम तेम पोताने ताप घणो लागतो जाय छे अने ते अजवाळाने सुखरूप जाणीने आगमां पडीने पतंगीयो वळी मरे छे. तेटलुं दुःख पडतां पण तेने आगथी छेटे रहेवुं न गमतां पोताना प्राणनो घात करे छे.

ते तो दृष्टांत छे ने एनुं सिद्धांत तो ए छे के आगने ठेकाणे तो पुरुष प्रकृति थकी थयेला जे पंचविषय ते छे. अने पतंगीयाने ठेकाणे वासनिक जीव छे. अने ते जेम पतंगीयाने आग सामुं चालतां विशेष ताप लागे छे, तेम वासनिक जीव छे तेने जेम जेम मोटा मोटा विषय मळता जाय छे; तेम तेम विशेष तापने पामे छे. कहेतां बहु दुःखीयो थाय छे. पण ज्ञान विना कोइने शांति थती ज नथी.

अने वळी एक बीजुं दृष्टांत छे. जेम निद्राने विषे सूतेलो जे पुरुष तेणे जाग्रत अवस्थाने विषे क्षुधा तथा तृषाए करीने कर्या एवा जे पदार्थना संकल्प, ते संकल्पने लीधे पाणी तथा खावाना पदार्थ ते स्वप्नामां देखाइ आवे छे. हवे ते पदार्थ देखाणा तेनुं कारण शुं छे ? के कर्मफळप्रदाता एवा जे ईश्वर ते जे ते जीवने संकल्परूपी

कर्मनुं फळ आपे छे. अने जे वस्तु स्वप्नमां प्राप्त थाय तेने भोगवतो छतो असंतुष्ट रहे छे. त्यारे कोइ एम कहेशो जे ईश्वरे कर्म-फळ आप्युं तेने भोगवते छते असंतुष्ट रह्यो तेनुं कारण शुं हशे ? तो एनुं कारण ए छे के भूख तरस तो स्थूळदेहमां लागी छे. अने ईश्वरनुं आपेलुं फळ तो स्वप्न देहे भोगव्युं. माटे संतोष नथी पामतो. अने ते संतोष-ने क्यारे पामे ? तो एणे जे स्वप्नमां भोग तथा भोगनां स्थानक तथा स्वप्नमां दीठुं एवुं जे जगत्, राजा, रंक पर्यन्त सर्वे ते स्वप्न वखते सत्य भासे छे. अने तेना भोग पण ते वखते तो सत्य मनाय छे. पण तेमां लेशमात्र संशय रहेतो नथी. अने सूझे एवो डाह्यो होय अने तेणे जाग्रत अवस्थामां स्वप्नना पदार्थ मिथ्या छे–एवो निश्चय कर्यो होय तोय पण तेनी स्वप्नामां स्मृति रहेती नथी. एवुं ईश्वरनी माया-ए करीने विपरीत ज्ञान थइ जाय छे. ते विपरीत ज्ञानने लीधे खोटा विषय छे, तेने अज्ञाने करीने सुझे एटला भोगवे तोय पण स्थूळ-देहनी भूख तरस मटे नहीं. अने शांति पण थाय नहीं. पछी अशांतिने लीधे वळी वधु वधु विषयमां तणातो जाय अने तेणे करीने वधु वधु ताप (दुःख) ने पामतो जाय छे. अने महादुःखीयो थाय छे. हवे ए दुःख थकी निवृत्ति ने सुखनी प्राप्ति क्यारे थाय ? के ज्यारे जाग्रत अवस्थाने पामीने अन्न खाय तथा जळ पाए त्यारे क्षुधातृषाना दुःख थकी निवृत्तिने पामे ने सुखीयो थाय. हवे एनुं कारण शुं छे ? तो स्वप्न अवस्थानुं जे भ्रान्तिवत् स्वप्नस्वरूप तेनुं अहंपणुं जईने स्थूळ-देह जे जाग्रत अवस्थानुं जे पोतानुं स्वरूप मान्युं छे तेने विषे स्थिति थाय अने स्थूळ देह संबंधी जे विषय तेना भोगने पामे अने भूख, तरसने निवारण करे एवा जे जाग्रत अवस्थाना विषय तेने भोगवे त्यारे भूख, तरसथी निवृत्तिने पामे छे. अने ज्यारे स्वप्न अवस्थाने पाम्यो

हतो त्यारे जाग्रत अवस्थानो जे देह अने जाग्रत अवस्थानुं मानेलुं जे जगत् एवी जे स्मृति तेनो नाश थाय छे. अने स्वप्न अवस्थानुं ज सत्य भासे छे. अने ज्यारे जाग्रत अवस्थाने पामे छे. त्यारे ते स्वप्न अवस्थानुं जे जगत् देखाणुं हतुं ते सर्वे मिथ्या थई जाय छे. तोय पण जेवुं स्वप्नमां जाग्रतना जगतनी विस्मृति थाय छे. तेवी विस्मृति स्वप्न अवस्थानी जाग्रतमां थती नथी. केम के स्वप्न अवस्थामां तो जाग्रत लेशमात्र सांभरतुं नथी अने जाग्रतने पाम्या पछी जे स्वप्नमां दीठुं होय तेवुं कांइ देखाय तो नहीं, 'ण देख्युं होय तेवुं कहेवाय खरुं. तेनुं कारण ए छे जे जाग्रत अवस्थाने विषे स्वप्न अवस्थाना करतां वधु ज्ञान होय छे. वास्ते करीने स्वप्ननी स्मृति जाग्रतमां रहे छे.

ए तो दृष्टान्त. तेनुं सिद्धांत ए छे के जेम स्वप्न अवस्था छे तेने ठेकाणे तो आ जाग्रत अवस्थाने जाणवी अने जेम जाग्रत अवस्था छे तेने ठेकाणे तुर्या अवस्थाथी पर निर्गुण स्वरूप छे. अने जेम जाग्रतना विषय छे, तेने ज्यारे भोगवे छे, त्यारे भूख तरस जाय छे. अने शांतिने पामे छे. अने ते विना स्वप्नाना सुझे एटला भोग भोगवे तोय पण पोताने शांति थती नथी. ते शा सारु ? के ते विषय खोटा छे. एटले स्थूळ शरीर जे पोतानुं जाग्रत अवस्थानुं शरीर तेना दुःखने नथी टाळता. जेम पाडानी पीडा पखाल डांभे जाय नहीं. तेम ज्यारे मोह-रूपी निद्राने विषे आ जाग्रत अवस्थारूपी पोताने स्वप्न भास्युं छे ते जेम स्वप्नने विषे जे जे शहेर, वजार, माणस, पशु, पक्षि, राजा, देवता अने ते सर्वेना विषय अने तेमां जे सुख अने दुःख, राजीपो, कुराजीपो, हुं अने मारुं, ए सर्वे जाग्रतने विषे लेश नथी रहेतुं. अने तेनां जे सुख अने दुःख ते सर्वे जाग्यो त्यारे जेम मिथ्या थई जाय छे. ते जाणीए जे कांइ ज नथी.

तेम गुणातितपणारूप जे अवस्था तेना आगळ आ जाग्रत अवस्था जे ते स्वप्न जेवी छे. कहेतां आ जाग्रत अवस्थाना जे मनुष्य तथा देवता, वैराटादिक, जे प्रकृति-पुरुष ते सर्वे असत्य छे. कहेतां जाग्रतना दुःखने स्वप्नना विषय जेम नथी टाळता, तेम पूर्वे कह्यां जे मनुष्यनी आद्ये लइने इन्द्र तथा ब्रह्मादिक देव तथा वैराटादिक ईश्वर ए सर्वेना विषयो जे ते जाग्रत अवस्थाने विषे भासे छे. पण ते गुणातीतरूप जे पोतानुं आत्मस्वरूप तेनी शांतिने अर्थे एवा अनंत कोटी ब्रह्मांडनां विषयसुख ते आत्माने शांति करवाना उपयोगमां नथी आवतां. अने सामा अशांति जे असंतोष ते रूपी महादुःखने आपे छे. अने ज्यारे स्वस्वरूप पोतानुं पोताने भासे छे, त्यारे स्वप्नना सुखनो जेम हरख शोक रहेतो नथी, तेम आत्मस्वरूपने पामे त्यारे पुरुष प्रकृति पर्यन्त सर्वेना विषयनुं तुच्छपणुं थई जाय छे. अने अपरिमित एवुं जे पोतानुं ब्रह्मस्वरूप तेने ज्यारे पोते पामे छे त्यारे ते थकी अन्य जे पुरुष प्रकृति आदिकना जे विषय ते सर्वेनो दृष्टा पोते छे. एटले ते सर्वेना विषयनुं प्रमाण करे छे. अने विचारीने ते थकी पाछो वळीने सर्वोपरि सुख जे ब्रह्मानुभव सुख तेने पामे छे; अने ज्यारे ब्रह्मानुभव सुखने पामे छे त्यारे ते पोतानी वृत्ति केवी राखे छे ? के जेम जाग्रत अवस्थाने पामीने स्वप्न अवस्थाना विषयनी मिथ्याभावना थई जाय छे, तेम मायिक विषयने स्वप्नतुल्य जाणीने त्याग करेछे. अने एवुं जे ज्ञानरूप ब्रह्मस्वरूप तेने पोतानुं रूप मानतो थको, भगवान पुरुषोत्तम एवा जे प्रगट हरि परमात्मा तेने उपासे छे. ते केम उपासे छे ? के जेम जाग्रत अवस्थामां जेवा विषय पामवानी इच्छा हती तेवा विषय प्राप्त थया अने ते विषयसुख छे तो प्राकृत, पण तेनो अंत आवतो नथी. केम के जुओने! एवो कोइ नथी जे आथी मोटो नहीं होय ! एवुं ए सुखनुं बहुपणुं

लागे छे. अने एवुं जे मायिक सुख ते जेने आत्मानो अनुभव थाय छे त्यारे तेने एम भासे छे के आत्माना सुख आगळ ए मायिक सुख केवुं छे के जेम दिवस आगळ रात्री; एटले कांइ ज नहीं. तेम ए ब्रह्मस्वरूपना सुखनो छांटो एटले लेशमात्र सुख पंचविषयमां नथी, एवुं जे ब्रह्मस्वरूप ते ज सर्व सुख थकी अधिक सुखरूप छे. अने अपरिमित सुख छे. जेने विषे एवुं जे ब्रह्म तेने पोतानुं स्वरूप जाणीने तेनो विषय जे परब्रह्मस्वरूप तेने पोताना ब्रह्मस्वरूप करतां अति अधिक सुखरूप समजीने तेने भजे छे. ते सर्वोपरि सुखने पामे छे.

जेम जाग्रत अवस्थावाळो जे पुरुष ते पंचविषयनुं वहुपणुं मानीने ते सुखनी उपासना करे छे, तेम ते ज्ञानी जे ब्रह्मस्वरूप ते जे ते पोताना ब्रह्मरूपनो महिमा अनंत अपार छे ने परिमाणमां नथी आवतो, एवो जे पोताना ब्रह्मस्वरूपनो महिमा तेने भोगवतो छतो ए सुखने नथी जाणी रह्यो "जे मारे आटलुं सुख छे!" एम छे तोय पण एकांतिक संत थकी सांभळयो जे भगवान प्रत्यक्ष पुरुषोत्तमनो अपरिमित महिमा, एवुं जे सनातन अनादि परब्रह्म स्वरूप तेने विषे मननी स्थिति राखीने ब्रह्मरूप थयो थको ए परब्रह्मने उपासे छे, ते भक्त परब्रह्मना साधर्मपणाने पामे छे.

ते जेम कोइक पुरुष होय ते भक्ति करतो थको इन्द्र जेवा जो भगवानने जाणे तो ते इन्द्र जेवो थाय छे. अने ब्रह्मा जेवा भगवानने जाणे तो ते ब्रह्मा जेवो थाय छे.तेमज जेम जेम देहरूपे भक्ति करतो जाय तो ते देह संबंधी पदार्थे करीने मोटपने पामे अने ते पदार्थने विषेथी ममत्व मटे नहीं, एवी रीते देहरूप वर्तनारा पुरुषने प्रकृतिनुं कार्य जे जगतथी वहार तेनी दृष्टि पहोंचे नहीं अने भगवाननो महिमा पण ते थकी वधु ते देहरूपवाळा भक्तने सुझे नहीं, केम के तेने आघो

अनुभव नथी. माटे भगवानना भक्त होय पण देहरूपे वर्तता होय (सकामी होय) ते पापे करीने पोताने विषयमांथी वृत्ति उखडे नहीं अने भगवान प्रगट पुरुषोत्तमनो महिमा पण तेने जाणवो घणो कठण छे. एवुं परमेश्वरनी मायाए करीने विपरीत ज्ञान थइ जाय छे.

–अने वळी जेवो जे मनुष्य, देव, ब्रह्मा ने प्रकृति पुरुषादिक ईश्वर ए जे सर्वे छे तेमां कोइ एकसरखो नथी, एटले न्यूनाधिकपणुं घणुं छे. तेनुं कारण ए छे के कोइ जीव इश्वरनी एक सरखी रुचि नथी. वास्ते एम थयुं. माटे जेनी जेवी रुचि ने जे विषयमां जेणे जेवो माल मान्यो ए ठेकाणे ते ते जोडाणां छे, तेम हवे जे पुरुष प्रकृति थकी पर एवुं जे शुद्ध चैतन्य ब्रह्मस्वरूप ते विषे पण अनंत कोटी मुक्त जे ते अनंत प्रकारना छे केम के मुक्तिने तो एकसरखी कही छे अने मुक्तमां अनंतपणुं कहेवाणुं, ते तो उपासनाने भेदे करीने छे.

जेम देहरूप थयो थको भगवानने भजतो हतो अने भगवाननो जेवो महिमा जाणतो हतो तो तेवो ते थयो; तेमां केटलाके तो भगवानने राजा जेवा जाण्या तथा केटलाके तो इन्द्र जेवा जाण्या तथा कोइके तो ब्रह्मादिक देव जेवा जाण्या तथा देहरूपवाळे भक्ते भगवानने अतिशय जाण्या होय तो पुरुषप्रकृति जेवा जाणे, त्यारे ते जाणी रह्यो कहेवाय केम जे देहरूप भक्तनी शुद्ध उपासना पुरुषप्रकृतिना साधर्मपणाने पमाडे छे. तेम अनादि अविनाशी एवुं जे ब्रह्मरूप जे भगवत्‌धाम तेने विषे ब्रह्म जे आत्मा ते रूप थये छते ब्रह्म जे अक्षर तेने विषे स्थिति पामीने भगवान पुरुषोत्तमने जेवा जाणे छे तेवा साधर्मपणाने पामे छे, अने देहरूप भक्तने जेम प्रकृति पुरुषसुधी प्राप्ति थाय त्यारे ते देहरूपवाळाने शुद्ध उपासना कहेवाय छे अने मध्यम उपासना वैराटादिकनी प्राप्ति करावे छे, अने कनिष्ट उपासना राजा तथा इन्द्रादिकनी प्राप्ति करावे छे, अने

उत्तम मध्यम अने कनिष्ट जे उपासना कही ते तो देहरूपवाळा भक्तनी छे अने ए त्रण प्रकारनो सविकल्प निश्चय छे ते देहरूपवाळा भक्तनो छे.

अने हवे आत्मारूपपणे वर्तीने जे उपासना करे छे तेने सर्वोपरि प्राप्ति एवी थाय छे के पोते पुरुषोत्तमने विषे अत्यंत विलक्षणपणे रहीने सर्वोपरि शुद्ध स्वरूप गुण ऐश्वर्य, सामर्थ्य, बळ आदिक अनंत प्रकारना जे महागुण जेनी उपमा कशी नहि एवा भगवान प्रत्यक्ष पुरुषोत्तमने जाणीने ते प्रगट पुरुषोत्तम थकी ज पोते पुरुषोत्तमना उपासक जे सर्वे अक्षरादिक सेवक तेमां अक्षर थकी बीजो कोइ–पुरुषोत्तम भगवान विना समर्थ नथी एवा जे मूळ अनादि अक्षर "तेज अक्षर हुं छुं" एम समजीने हुं थकी पर तो एक प्रगट पुरुषोत्तम विना बीजो कोइ मोटो नथी अने ए अक्षरथी (माया मांहेना) कोइ मोटा थावाने पण समर्थ नथी. एवुं जे अक्षर स्वरूप तेने पोतानुं स्वरूप मानीने पोता थकी पर जे प्रगट पुरुषोत्तम तेने भजे छे त्यारे ते निर्गुण एवी शुद्ध उपासनाने पामीने पुरुषोत्तमने विषे प्रवेश करे छे. कहेतां पुरुषोत्तमना धामने पामे छे. अने पुरुषोत्तम जेवो सुखीयो तथा स्वतंत्र थाय छे. अने महाअद्भूत आनंदने पामे छे. केम के सुझे एवो जीव होय ते पोताने सर्वे करतां अधिक मोटुं थवुं अने सर्वना करतां अधिक सुख लेवुं एवो पोताने अनादि काळनो निश्चय सर्व जीव प्राणिमात्रने छे. ते पोतानी ईच्छा पूरी करवा सारु बहु जुग ने अनंतकाळ थयां अनंत फेरा जन्म मृत्युने पाम्यो, तोय पण पोतानी इच्छा जे धारणा तेने ज्यां सुधी प्राप्त नथी थत्ती त्यां सुधी ए जीव जे ते पोताना निश्चयने छोडतो नथी. त्यारे एवी प्राप्ति तो उपर कही जे सर्वोपरि शुद्ध उपासना तथा अक्षरस्वरूप थवुं, ते विना ए जीवनो निश्चय पूरो पडतो नथी. ते ए ठेकाणे आवे छे त्यारे शांतिने पामे छे. माटे ते उपरथी तपासी

जोतां एम मालुम पडे छे जे जाणी ए जीव जे ते अनादिनो अक्षर होय नहीं शुं ? अने तेने अनादिनी पुरुषोत्तमनी उपासना पण होय नहीं शुं ? एम भासे छे.

ते शाथी ? तो जे अक्षर ने अक्षरातीत-ते जे प्रगट पुरुषोत्तम तेनी प्राप्ति थई एटले सर्वे बीजा सुख पामवाना उपाय तेने मेलीने केवळ प्रत्यक्ष पुरुषोत्तमने भजे छे अने एवी प्राप्ति थया विना तो शांतिने नथी पामतो, केम के एने शांति पामवानो उपाय तो एज छे जे आत्मा-परमात्मानुं ज्ञान थवुं. पण ते ज्ञान विना केवळ अज्ञाने करीने अवळो मार्ग जे विषयासक्तिपणुं ते थकी पोताने पुरण काम थवाने इच्छे छे पण ते कोई कल्पे करीने पुरणकाम थाय नहीं. केम के पुरणकाम थवानो तो पूर्वे कह्यो एवो विचार राखवो. अने ते विचार सिद्ध करवाने अर्थे पांच प्रकारनी शुद्धि करवी जोईए.

ते शुद्धिने कहीए छीए. (१) जे शुद्ध अक्षर स्वरूप उपदेष्टा तथा (२) शुद्ध पुरुषप्रकृतिथी पर अने शुद्ध चैतन्य एवो उपासक थईने (३) स्थानकनी शुद्धि जाणीने (४) अक्षरना उपदेशे करीने सिद्ध थयो जे अक्षरमुक्त तेनी सोवत रूपी संगनी शुद्धि करीने अने (५) अक्षरातीत कहेतां गुण, रूप, ऐश्वर्यादिके करीने अधिक अने अपरिमित छे महिमा ते जेनो; ते महिमाने अक्षर तथा प्रगट पुरुषोत्तम पंडे (पोते) पोताना महिमाने कहेवाने समर्थ नथी एवुं महिमाए सहित परब्रह्म स्वरूप जाणीने ते प्रगट पुरुषोत्तम भगवाननी शुद्ध उपासना करवी, अने एवा स्वरूपने जाणीने जे प्रगट मूर्ति भगवान तेने भजे छे तेने कोई वातनी कसर रहेती नथी."

इति श्रीमुख सिद्धांत २ समाप्त।

३ विषय :—रागात्मक संकल्प टाळवानो उपाय

॥ श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः ॥

संवत् १९१४ ना महासुदी ६ ने दिवसे महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री चूडा मध्ये सांजने समे रावळ भाई जीवराम कसळाने घेर, उगमणे बार मेडीनी आगळ, चोक वच्चे पाट, उपर गादि तकिया बिछावीने ते उपर विराजमान थया हता अने सर्वे जरीयानी वस्त्र धारण कर्यां हतां. कंठने विषे पुष्पना हार धारण कर्यां हता ने बे हाथने विषे फुलना गजरा अने बाजुबंध धारण कर्यां हता. पाघने विषे बे कोरे फुलना तोरा लटकता हता, ने बे कान उपर गुलाबना पुष्पना गुच्छ धारण कर्या हता अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देश-देशना हरिभक्तोनी सभा भराईने बेठी हती.

प्रश्न :—पछी महाराज कृपा करीने ज्ञान उपदेश देता थका बोल्या जे " मूळ पुरुष--जे प्रकृति पुरुष तेने अनादिनो रागात्मक संकल्प छे. माटे ते संकल्पे करीने बद्ध कहेवाय छे. अने ते रागात्मक संकल्प टळे त्यारे ते मुक्त थाय छे. हवे ते रागात्मक संकल्पने कहीए छीए जे ते पुरुषने विषे रागात्मक संकल्प छे अने ते संकल्पने विषे पुरुष छे, एवी रीते अन्योअन्य भाव तेने शुद्ध विचारे करीने जाणवुं ते संकल्प टाळवानुं कारण छे. हवे ते विचारने कहीए छीए. के जेम कोई पुरुषने स्वप्न लाध्युं (आव्युं) होय, अने वळी ते स्वप्नमां बीजुं स्वप्न लाध्युं. एवी रीते घणांक स्वप्नो परस्पर विचित्र भावे तारतम्यतापणे घणी तरेहथी अति घणी विचित्र सृष्टिने पोते एकलो देखे अने पोते कोण छे एनुं भान रहे नहीं, एवी अवस्था थई जाय छे.

तेम ए प्रकृतिपुरुष छे. ते थकी आ विचित्र सृष्टि उत्पन्न करनारो पुरुषनो रागात्मक संकल्प छे. तेमां हरख ने शोक, सुख ने दुःख;

मान ने अपमान, ए छ मोटी दुःखनी नदीयो छे, तेमां पुरुषना संकल्पे करीने सृष्टिमां आव्या एवा जे अनंतकोटि जीव ते नदीयोमां तणाई जाय छे. अने ते नदीयो जे ते अज्ञान, मोह ने दुःख ते रूप जे सागर तेने विषे मळे छे. अने जेम समुद्रनुं जळ अने सूर्यनां किरण ए बेना योगवडे करीने वरसाद थाय छे. अने पृथ्वी उपरनी नदीयो भराई जाय छे. अने वरसादना योगवडे करीने अनंत उत्पत्ति थाय छे. तेम पुरुष प्रकृतिना योगे करीने विषयभोगरूपी वृष्टि थईने अनंत उत्पत्ति थाय छे अने षड् ऊर्मि रूपी छ नदीयो भराई जाय छे. ए ज रीते अनंत जीव मायाने विषे रह्या थका अज्ञान सृष्टि वडे करीने अहं ममत्व थकी महाकष्टने पामे छे.

ते दुःख थकी मुक्त थवानो उपाय तो ए छे जे शुद्ध ज्ञानरूपी जाग्रत अवस्थाने पामवुं, जेम स्वप्ननुं दुःख जागवाथी टळे छे, तेम जीव जे ते प्रकृति अने पुरुष ए बेयने विषे प्रीतिए करीने जोडाणो छे, ते रूपी जीवने स्वप्न छे. ते स्वप्न थकी जागवुं कहेतां प्रकृति अने पुरुष तेनां जे सुख तेनी वासनानो जे संकल्प तेनो त्याग करवो. अने ते संकल्पने टाळवाने अर्थे आत्मारूप पोताने मानीने निष्काम कर्म जे फळनी इच्छाए रहित कर्म करवुं कहेतां फळना संगने छोडीने परमात्मानी नवधा भक्ति अतिशे श्रद्धाये करीने करवी. अने ते ज्ञान भक्तिना विरोधी एवा जे पंच महा दोष जे काम, लोभादिक तेने पोते आत्मा अनात्मानो विचार पामीने जीतवा.

अने ते कामादिकनो संकल्पनो वेग तो रज, तम ने सत्त्व एवा जे त्रण गुण तेने लीधे थाय छे. ते ए गुणमां जो जीव भळी जाय तो जीवने पराणे क्रिया करावे छे, ने अपार दुःखने पमाडे छे. अने जो ते गुणनो पोते द्रष्टा थाय अने ते संकल्पथी पोते जुदो पडे तो ते संकल्पनो

वेग एनी मेळे दूर थई जाय छे ने जीवत्मा पोते निर्विघ्नपणे रहे अने ते संकल्प थवानुं कारण पण मन अने पंच ज्ञानइन्द्रियो तेज छे. केम के जीवने विषे जो रजोगुण वर्ततो होय अने ते समयमां जो इन्द्रिय-गोचर कोई सारा विषय प्राप्त थाय तो ते विषयनो राग जीवमां चोंटी जाय अने ते विषय तेने जीवमांथी काढवो पण घणो ज कठण पडे. अने ज्यारे जीवनेविषे तमोगुण के सत्त्वगुण वर्ततो होय ने ते समे सुझे एवा सारा विषय इन्द्रियगोचर थाय तो पण तेने विषे जीवनी वृत्ति घणी चोंटे नहीं.

जेम तीखी (तीणी) अणीवाळुं वाण होय. तेनो भींतमां घा करे तो तेमां चोंटी जाय ने पाछुं काढयुं पण नीसरे नहीं अने जो ते वाणना फळने काढी लईने थोथानो घा कर्यो होय तो उथकडीने (भटकाईने) पाछुं पडे. तेम फळे सहित वाणनी पेठे तो रजोगुणना वेगनो संकल्प छे, एम जाणवुं अने तम अने सत्त्वनी वृत्ति तो थोथानी पेठे पदार्थमां घणी चोंटे नहीं. त्यारे एम जाणवुं जे सत्त्वगुण के तमोगुणनो वेग वर्ते छे.

माटे संकल्प टाळनारा पुरुषने रज, तम अने सत्त्व एवा जे त्रण गुण तेने ओळखवा अने तेने ओळखीने ते गुणनुं कारण जे अविद्या माया तेनो भोक्ता जे पुरुष अने ए सर्वेथी पर एवुं जे अक्षरब्रह्म तेने पोतानुं स्वरूप मानीने गुण, माया अने पुरुष ते थकी थयो जे संकल्प तेने द्रष्टापणाना ज्ञाने करीने टाळवो. अने ते संकल्प टळे एवो शुद्ध विचार पोताने करवो. अने ते संकल्पने टाळीने पछी ते विचारने पोताना आत्माने विषे लय करवो. कहेतां ज्ञानरूप स्थितिए युक्त थईने आकाश-नी पेठे निर्लेप, निरावरण एवी स्थितिए युक्त ज्ञानरस रूपे रहीने ते ज्ञानरूप रसने मध्ये अखंड, पूर्ण, अने अद्वैत एवुं जे परमात्मानुं स्वरूप तेने ज्ञान स्थितिमां धारण करवुं. तेज परम मोक्षनो अचळ सिद्धांत छे.

ते एवुं ज्ञान क्यारे थाय छे? तो परमात्मा पोते साक्षात्कार जीवने मळे अने कां तेना एकांतिक निर्वासनिक संत ते जीवने मळे, त्यारे ते एवुं ज्ञान आपे छे त्यारे एवुं ज्ञान थाय छे. पण ते विना एवुं ज्ञान शास्त्रमांथी सांभळीने थाय नहीं. केम के एवुं ज्ञान जेनी पासे होय ते थकी ज एवुं ज्ञान थाय छे. माटे ते ज्ञान पामवानो समो आज तमारे आव्यो छे. ते सारु सावधान थईने पंच विषयना पदार्थने झांझवारूप जाणीने पोताना आत्माने त्रण देह जे स्थूळ, सूक्ष्म अने कारण अने त्रण अवस्था जे जाग्रत, स्वप्न अने सुषुप्ति ते थकी जुदो पोताना आत्माने जाणीने ते आत्माने विषे परमात्मा जे पोताने प्रत्यक्ष मळ्या छे तेने धारवा अने तेनी अखंड भक्ति करवी." ॥ इति श्रीमुख सिद्धांत ३ समाप्त ।

---

४ विषयः-जन्म मृत्यु टाळवा विषे

श्रीहरिकृष्णाय नमः ॥ संवत १९१४ ना महा सुदी ७ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान् गाम श्री चूडा मध्ये रावळ भाइ जीवराम कसळाने घेर, उगमणे बार, मेडीनी आगळ, चोक वच्चे, पाट उपर गादीतकीया विछावीने ते उपर विराजमान थया हता. सर्वे जरीयानी वस्त्र धारण कर्यां हतां, कंठमां गुलाब अने मोगराना पुष्पना हार पहेर्या हता. हाथने विषे वाजुबंध अने गजरा धारण कर्या हता. पाघमां फूलना तोरा लटकता हता. बे कान उपर पुष्पना गुच्छ धारण कर्या हता. ललाटने विषे कंकुनो चांदलो कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तोनी मोटी सभा भराइने बेठी हती, अने संतो कीर्तन गाता हता.

प्रश्नः-पछी महाराज बोल्याः-जे कीर्तन बंध राखो, एक वार्ता करवी छे, एम कहीने कीर्तन बंध रखावीने बोल्या, जे, 'मरणे या मतिः

सा गतिः भवेत्'। ए श्रुतिमां एम कह्युं छे के जे "मरण वखते जेवी जीवनी मति होय तेवी गति थाय छे." माटे ज्यां सुधी जीवने पंच-विषयनी वासना छे त्यां सुधी जीवने जन्म मृत्यु टळे नहीं. केम के वासना होय त्यां सुधी विषयमां जरूर मति रह्या विना रहे ज नहीं, ते सारु विषयनी वासनारूप जे महामाया तेने टाळवा वडे करीने मृत्यु तराय छे.

हवे ते मृत्यु तरवानुं कारण ए छे के पंचविषयनी वासना छे ते जीवनुं कारण शरीर छे, अने बीजुं जीवने नवतत्त्वनुं सूक्ष्म शरीर छे, अने त्रीजुं पंदर तत्त्वनुं स्थूळ शरीर छे. ते स्थूळ अने सूक्ष्म ते कारण ने आश्रये रह्या छे, अने कारण जे छे ते रागात्मक रूप छे, ते जीवनी मांही रहेलुं छे. जेम तलमां तेल, फुलमां वास, तेम जीवमां वासना रही छे, अने जीवात्मा जे ते कारण शरीरे युक्त स्थूळ सूक्ष्ममां रह्यो छे, एवी रीते जीवनी मायाए जीवने आवरी (घेरी) लीधो छे; जेम करोळीयो जे ते पोतानी लाळमां अवराय छे तेम जीव जे ते मायाने विषे अवरायो छे, माटे ते माया जीवने विषेथी दूर करवाना त्रण उपाय छे. केम के माया पण स्थूळ, सूक्ष्म अने कारण ए त्रणरूपे थइ छे, माटे त्रण उपाये माया टळे छे.

तेमां प्रथम स्थूळ देहरूप मायाने जीतवानो उपाय कहीए छीए, जे स्थूळ देह जे ते पांच भूत—पृथ्वी, जळ, तेज, वायु ने आकाश अने दश इन्द्रियो (पांच ज्ञानइन्द्रियो ने पांच कर्मेन्द्रियो) श्रोत्र, त्वचा, चक्षु, रसना, घ्राण, वाक्, पाणि, पाद, पायु अने उपस्थ—ए पंदर तत्त्व रूपे छे, तेने तप, नियम अने त्यागे करीने जीताय छे, अने पछी सूक्ष्म देह जे पांच विषय शब्द, स्पर्श, रूप, रस ने गंध अने चार अंतःकरण मन, बुद्धि, चित्त ने अहंकार ए नवतत्त्वनो सूक्ष्म देह छे, तेने आत्मविचारे

करीने जीतवो, अने त्रीजुं जे कारण शरीर छे तेने आत्माने विषे पर-
मात्माने देखवावडे जीताय छे.

हवे ते आत्माने विषे परमात्माने देखवानो विचार कहीए छीए
के पोताना कल्याणने इच्छतो एवो जे मुमुक्षु तेने आत्मविचारे करीने
प्रथम चित्तने स्थिर करवुं अने दृढ आसनथी निवृत्ति पर जग्यामां बेसवुं
अने पछी आकाशनी पेठे पोताना आत्माने ज्ञानप्रकाशरूप स्थिर
जोवो ने ते आत्माने मध्ये अनादि चैतन्यमूर्ति भगवान रह्या छे एम
धारवुं अने ते परमात्मानुं ध्यान करतां करतां मूर्ति न देखाय तोय
पण ध्यान कर्या करवुं, अने तेमां एक ज्ञानरूपी विचार राखवो ते शा
सारु विचार राखवो? तो कोइक मायिक पदार्थनो संकल्प थाय तेने
दूर करवा सारु ते विचार राखवो.

त्यां दृष्टांत छेः—जेम दीवाने ओलवनारा एवा जे झीणी पांखो-
वाळा जंतु तेने जेम दीपकना प्रकाशथी गरोळी जे ते जंतुनो नाश
करे छे, तेम शुद्ध विचारे करीने सूक्ष्म संकल्पने टाळवा अने ते विचारे
करीने टाळ्या न टळे ने घणाक संकल्पनो वेग उठवा लागे तो ध्यानने
पडथुं मुकीने ए विचारने बे प्रकारे करवो.

तेमां एक तो आत्मानो विचार करवो. जे "हुं आत्मा ते अवि-
नाशी छुं, सुखरूप छुं, सत्तारूप छुं, चैतन्य छुं, संकल्पे रहित आका-
शनी पेठे स्थिरायमान छुं अने ते जे ते स्त्री आदिकनो संकल्प थाय
छे ते स्त्रीनो देह तो मळमूत्रना कोथळारूप छे अने हाड, मांस, नाडीयो,
त्वचा, वीर्य, रोमादिक महा अपवित्र वस्तुरूप छे. माटे आत्माने अने
मायिक पदार्थने घणो विरुद्धभाव छे, माटे हे आत्मा! ए तने घटे छे?
के तुं सिंह सरखो थइने खड खाइश?"

एम बे प्रकारनो विचार करीने पोताना आत्माने भोंठो पाडवो. अने लज्जाए युक्त करवो. तो तेने करीने ते विरोधी संकल्प जे ते तत्काळ नाश थइ जाय छे. अने आत्माने शांति थाय छे. अने एवो विवेक जो न आवडे, तो ध्यान करनाराने मोटी खोट पेदा थाय छे.

दृष्टांतः—जेम कोइक पुरुष वळरहित होय ने ते घणुं द्रव्य लइने रणवगडामां जाय तो ते द्रव्यने सहेजे ज चोर लूंटी जाय. अने जो वळवान वळावो भेगो होय तो तेनी रक्षा करे छे. तेम पूर्वे कह्यो जे विचार ते सांख्यरूप वळावो छे, अने अशक्त कहेतां संकल्पयुक्त थइने जो ध्यान करे तो तेने शुं विघ्न आवे ?

तो जाग्रत अवस्थामां यथार्थ ज्ञान छे. अने स्वप्न अवस्थामां अयथार्थ ज्ञान रह्युं छे. तो पण यथार्थ ज्ञानने विषे श्रवण करे अने अ-यथार्थ ज्ञानरूप जे सूक्ष्मदेह तेमां मनन न करे तो यथार्थ ज्ञान थाय नहि. तेनुं कारण ए छे जे सूक्ष्मदेहना समीपे वातनुं प्रमाणनो कर-नारो द्रष्टा जे आत्मा, ते रह्यो छे. माटे जीवमां जे वात दृढ थाय छे. ते वात काढवी घणी कठण छे, तेम ध्याननो करनारो एकाग्र वृत्ति करीने परमात्माने सूक्ष्म देहरूप जे अंतःकरण तेमां धारवा हता ते ध्यानने भूलीने ते एकाग्र वृत्तिए करीने मायिक पंचविषयना पदार्थना संकल्प करे तो तेणे करीने विषयना पदार्थ जीवमां अति दृढ चोंटी जाय छे.

माटे ते तो उलटुं थयुं; केम के विषयवासना टाळवा सारु आत्माने विषे परमात्माने देखवा हता. ते वात न बनतां ध्यानयोगने विषे मोटुं विघ्न थयुं. माटे ध्यानना करनाराने पूर्वे कह्यो जे विचार ते राखवो. ते विचारे करीने संकल्पने स्थिर करीने एकाग्र वृत्तिवडे आत्माने विषे

परमात्मानी प्रत्यक्ष मूर्त्तिनुं ध्यान करवुं अने एवी रीते ध्यान करे त्यारे ज तेने परमात्माना ध्याननुं सुख आवे.

जेम राजा राजगादीए बेठो होय ने तेने शत्रु नडता होय तो तेने राज्यनुं सुख यथार्थ भोगवाय नहीं अने शत्रुनो नाश कर्या पछी सुखेथी राज्यना वैभवने भोगवे छे. तेम मुमुक्षुने पण राज्यसुखने ठेकाणे मुक्त स्थिति छे तेने अखंड सुख लेवा सारु परमात्माना ध्यानमां विरोधी एवा जे विषयना संकल्परूपी शत्रु तेने टाळीने अखंड परमात्माने जोवा, तो तेने पछी सहेजानंदरूप एवुं जे पोतानुं स्वरूप अक्षरब्रह्म, एने विषे परमात्मा प्रगट भगवान तेनुं स्वरूप तेना महिमाए सहित यथार्थ जणाय छे. अने ते परमात्माना दर्शनवडे करीने कारणदेह जे विषय-वासना ते समूळी उखडी जाय छे. त्यां भगवद्‌गीतानो श्लोक छे जेः—

विषयाविनिवर्तन्ते निराहारस्य देहिनः ।
रसवर्ज्यं रसोप्यस्य परं द्रष्ट्वा निवर्तते ॥

एनो अर्थ पूर्वे कह्यो एज छे. ते एवो अर्थ कोना थकी सिद्ध थाय छे? ने ते माया कोना थकी तराय छे? तो क्षर, अक्षरने पार रह्या एवा जे प्रत्यक्ष परमात्मा तेज अर्थने सिद्ध करावे छे. अने मायाने पण तेज दूर करावे छे त्यां गीतानो श्लोक छे जेः—

दैवी ह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया ।
मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते ॥

एमां पण भगवाने एम कह्युं छे जे " त्रिगुणात्मक एवी जे मारी माया ते जीवने दुःखे करीने तरवी घणी कठण छे पण जो हुं मनुष्य-देहने धारण करुं छुं त्यारे जे मारा शरणने पामे, कहेतां मने मायाथी पर जाणीने मारो दृढ आश्रय करे तो ते मायाने तरीने परम मोक्षने

पामे छे " माटे माया तरवानो ए ज उपाय छे जे प्रत्यक्ष भगवान अने भगवानना निर्वासनिक संतनो दृढ आश्रय करवो. अने तेना थकी ज ज्ञान पामवुं ए ज मायाने तरीने मुक्त थवानो उपाय छे. पण ते विना मायाने तरवानो बीजो कोइ उपाय नथी. माटे ते मायाने तरवानो समय आज तमारे आव्यो छे. ए तमारां मोटां भाग्य छे."

॥ इति श्रीमुख सिद्धांत ४ समाप्त ॥

५ विषय :—जीवनुं अपूर्णपणुं टाळवानो उपाय

श्री हरिकृष्णाय नमोनमः ॥ संवत १९१४ना महासुदी ८ ने दिवस महाराज श्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्री चूडा मध्ये भट्ट नारणजी भगवानजीने घेर उगमणे बार, ओरडानी ओसरीमां ढोलिया उपर गादी तकीया नखावीने, रात्रीने समये विराजमान थया हता, हीरकोरी श्वेत धोतीयुं पहेर्युं हतुं अने गुलाबी छींटनुं अंगरखुं धारण कर्युं हतुं. कसुंबल ताराळो (तारवाळो) फेंटो मस्तके बांध्यो हतो. गुलाबी कोरनो खेस खभे धारण कर्यो हतो. अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधुओ तथा घणाक हरिभक्तोनी सभा भराइने बेठी हती.

प्रश्नः—पछी महाराज श्री हरिकृष्ण भगवान बोल्या, जे "जीवने जे वात अजाणी छे ते वात तेने बहु मोटी जणाय छे. अने ते वात करवी पण तेने घणी मुश्केल पडे छे. अने जे वात जाणीती छे. ते वात तेने सुगम लागे छे ने ते करवाने च्हाय छे. अने ते काम करवामां घणुं कष्ट पडे तोय पण ते काम करवाने इच्छे छे. तेम जीव प्राणीमात्रने विषे देह ने आत्मा बे वस्तु छे. तेमां जे देह संबंधी पंच विषय छे तेने अनादि काळनो जीव भोगवतो आवे छे ने ते वात पोतानी जाणीती छे. माटे ते पंचविषयने पामवा सारु जीव जे ते अनादिनो क्रिया करे छे अने तेमां

घणुं कष्ट पडे छे तो पण ते काम कर्या करे छे. ते पोताने सुखीयो थवा करे छे पण तेमांथी कोईने तृप्ति थती नथी.

जेम फुटेलो कुलडो होय तेमां सूझे तेटलुं पाणी रेडीए तो पण ते कुलडो भराय नहीं, तेम देह जे ते फुटेला कुलडा रूप छे, ते देहे करीने सुझे एटला पंच विषयने भोगवे तो पण शांति थाय नहीं. अने सामु वधु वधु दुःखने पामे छे. जेम पतंगीयो तापने सुख रूप जाणीने ताप सामो जाय छे, तो ते पतंगीयो तापमां पडीने वळी मरे छे, ने महाकष्टने पामे छे, तेम जीव जेने पंचविषय पामवा सारु जे जे क्रिया करे छे तेमांथी दुःख ज थाय छे, पण सुख जे ते लेश मात्र थतुं नथी.

वळी जेम कोइक पुरुषने स्वप्न आव्युं होय ने तेने स्वप्नमां राज मळ्युं; पण जाग्या पछी मिथ्या छे. ने लेश मात्र ते राजनुं सुख रहेतुं नथी. तेम पंचविषयनां सुख जीव सुझे तेटलां भोगवे पण खाली ने खाली ज रहे छे. केम के जीभे करीने घणांक घी, गोळ, खांड, साकर आदिक अनंत रस खाधा हशे, तोय जीभ हजी कोरी ने कोरी. पण लेश मात्र तृप्त थइ नथी. अने जो एक दिवस उपवास करे तो जाणे जे कोइ दिवस खाधुं नथी. अने मोर (अगाउ) खाधुं होय तेनुं सुख जराय रहे नहि. तेम ज नेत्रे करीने घणांक रूप जोयां पण आंख तृप्त थइ नथी. काने करीने घणाक शब्द सांभळ्या छे पण कानने तृप्ति थइ नथी. त्वचाए करीने सारा सारा वस्त्रादिक घेरणांना स्पर्श घणाक कर्या पण त्वचा तृप्त थइ नथी. अने नासिकाए करीने घणाक गंध सुंध्या, पण नाक तृप्त थयुं नथी.

एवी रीते जीवे अनंत राजाना तथा देवतांना देह धरीने अनंत फेरा पंचविषय भोगव्या छे पण जीवने हजी लेश मात्र तृप्ति थइ नथी, अने हजी अनंत युग सुधी विषय भोगवीने तृप्ति थशे पण नहीं, माटे

विषयनां सुख पामवानी आशानो त्याग करीने पोते आत्मा शुद्धरूप थइने परमात्माने भजे, त्यारे सुख शांतिने पामे, अने "जे देह अर्थे अन्न वस्त्र अवश्य जोइए ते तो भगवान सहुने आपे छे," एम जाणीने भगवाननुं अखंड भजन करवुं, अने जे भगवान छे, ते महा चतुर छे, माटे ते सर्वे जीवने सरखुं ज सुख आपे छे, पण कोइने अधिक न्यून थावा देता नथी.

—केम के जेवुं कुतराने कुतरीमां सुख छे तेवुं राजाने राणीमां सुख छे, अने तेवुंज इन्द्रने इन्द्राणीमां सुख छे, पण कोइने लेश मात्र ओछुं वधतुं नथी. केम के कीटथी ते देव ब्रह्मा पर्यंत स्त्रीपुरुष सर्वना देह जे ते पंचभूतनो विकार छे, ने वीर्य–रुधिरमांथी बनेला छे. अने हाड, मांस, नाडी, त्वचा, रोम, मळ, मूत्रादिक नकारी वस्तुना भरेला स्त्री-पुरुषना देह सर्वेना सरखा छे, माटे सर्वे स्त्री पुरुष, राजा रंक, देवता, ईश्वर तथा पशु पक्षि आदि सर्वेने सरखुं सुख ज छे अने खाधाना पदार्थ पण सर्वेने सरखा ज छे.

केम के रांक होय तेने शेर अनाज खावा जोइए अने राजाने पण शेर अन्न जोइए; माटे सौने इश्वर आपे छे. रांक होय तेने दिवसमां बे वखत भूख लागे छे ने राजाने पण बे वखत भूख लागे छे, पण भूख एम नथी जाणती जे आ राजा छे तेने थोडी भूख लागुं, ने रांकने वधु लागुं, माटे राजा–रंक बेयने सरखी भूख लागे छे, पण तेमां कांइ लेश मात्र न्यूनाधिक नथी.

अने वळी सूझे एवुं सारुं खावानुं होय तो पण जेने एक शेरनो आहार होय ने ते पांच शेर खाय तो ते महादुःखने पामे; ने वधु खाय तो मरी पण जाय, अने सुझे एवुं सारुं खावानुं होय पण गळेथी हेठु उतरता वेंत नरक थइ जाय छे, अने जीभने सारुं नरसुं लागे छे ते

तो रसना इन्द्रियने अने मनने लागे छे, पण आत्माने लेश मात्र तेनुं सुख दुःख नथी. माटे भगवाने सर्वेने सरखुं ज सुख आप्युं छे, अने जे अधिक न्यून जणाय छे, ते तो मिथ्या भ्रान्ति स्वप्नवत् जणाय छे.

अने वळी देह दुर्बळ थाय तेथी करीने आत्मा दुबळो थतो नथी; देह जाडो थाय तेथी करीने आत्मा जाडो थतो नथी; देहने मरवे करीने आत्मा मरतो नथी; देहने जन्म्ये करीने आत्मा जन्मतो नथी; अग्निए करीने आत्मा बळतो नथी; जळे करीने आत्मा कोवरातो (सडतो) नथी; वायुए करीने आत्मा सूकातो नथी; शस्त्रे करीने आत्मा कपातो नथी; काळनो नाश कर्यो आत्मानो नाश थतो नथी; माया पण आत्माने पोताने विषे लीन करी शकती नथी ने कर्म पण आत्माने नाश करी शकतां नथी. एवो महा चमत्कारी जे आत्मा ते पोतानुं स्वरूप छे, अने एवो चमत्कारी आत्मा तेने विषे परमात्मा भगवान ते अखंड रह्या छे.

ते परमात्मा केवा छे ? तो आ पचास करोड योजन जे पृथ्वी, ते एक लोक कहेवाय; अने एवा चौद लोकनुं एक ब्रह्मांड कहेवाय छे, अने एवां एवां अनंतकोटी ब्रह्मांड छे—तेनो कर्ता एक मूळ पुरुष छे ने एवा एवा अनंतकोटी मूळ पुरुष छे ते परमात्मा पुरुषोत्तमनुं धाम जे अक्षरब्रह्म तेना कोइ एक देशने विषे लीन थइ जाय छे. अने एवुं जे अक्षरब्रह्म तेना कारण अने आधार परमात्मा छे, अने परमात्मा एवा जे भगवान ते अनंत जीवोनो मोक्ष करवा सारु पृथ्वी उपर मनुष्य-देह धारण करे छे. "ते भगवान आज मने प्रत्यक्ष मल्या छे अने ते भगवान मारा आत्माने विषे रह्या छे" एम समजीने पंचविषयने महा-पाप रूप अने दुःख रूप जाणीने तेनो त्याग करीने भगवाननो दृढ आश्रय करवो, अने इन्द्रियो अंतःकरणना सुखने अर्थे विषय पामवा सारु अनंत जन्म धरीने अनंत पाप कर्यां छे, माटे हवे ते पाप थकी मुक्त

थवाने अर्थे पोताना इन्द्रियो, अंतःकरणने भगवाननी सेवामां जोडी देवां.

ते केवी रीते ? तो नेत्रे करीने भगवाननां दर्शन करवां अने ते प्रगट भगवान अने संतनां दर्शन करीने नेत्रनां पाप सर्वे बळीने भस्म थइ जाय छे. काने करीने भगवान अने भगवानना संतना शब्द हेते करीने सांभळवा, तेने करीने काननां पाप नाश थइ जाय छे. त्वचाए करीने भगवानना चरणनो स्पर्श करवो तेने करीने त्वचानां पाप नाश पामी जाय छे, मुखे करीने भगवानना गुण गावा, तेने करीने वाणीनां पाप बळी जाय छे. पगे करीने--चालीने भगवान अने भगवानना संतने दर्शने जावुं तेथी पगनां पाप नाश थइ जाय छे, हाथे करीने भगवान अने भगवानना संतनी सेवा करवी. तेथी हाथनां पाप नाश थइ जाय छे, बुद्धिए करीने भगवानना प्रत्यक्ष स्वरूपनो निश्चय करवो; चित्ते करी भगवाननी मूर्तिनुं चिंतवन करवुं; मने करी भगवानना संकल्प करवा; अने अहंकारे करीने भगवानना दासत्वपणानुं अभिमान धरवुं. "जे हुं भगवाननो दास छुं." एवी रीते इन्द्रियो अंतःकरणने भगवान अने भगवानना संतनी सेवामां जोडी देवां अने ते भगवान अने संतनी सेवाए करीने सर्वे पाप जे ते नाश थइ जाय छे. ने जीवात्मा जे ते ब्रह्मरूप थाय छे. ने भगवानना अक्षरधामने पामे छे अने अखंड भगवाननी सेवामां रहे छे.

माटे प्रत्यक्ष भगवानना जे भक्त होय तेने तो संसारनी जे दुःखरूप क्रिया तेनो त्याग करीने भगवाननुं अखंड भजन करवुं अने पोताने मळ्या जे प्रत्यक्ष भगवान अने भगवानना निर्वासनिक संत तेनी आज्ञामां दृढ वर्तवुं पण तेमां फेर पाडवो नहि. केम के "मोटा ब्रह्मादिक जेनी आज्ञामां तत्पर वर्ते छे." एम जाणीने पोताना कल्याणने अर्थे ते भगवान अने संतनी आज्ञामां वर्त्तवुं. अने देह तथा देह संबंधी पदार्थ तेनुं प्रमाण

करवुं (विचार करवो) जे सो वर्ष उपरना मनुष्य, पशु, पक्षी कोइ नथी. केम के सर्वेने काळ भक्षण करी गयो. अने आजनां पण जे जे मनुष्य, पशु घणांक जणाय छे, ते पण सो वर्ष केडे एकेय नहीं रहे.

अने जीवे अनंत देह धारण करीने घणाक संबंधी कर्यां छे, अने आ जगतमां जेटली जातनी स्त्रीओ (लक्ष चोरासीमां नारीजाति) छे ते सर्वेने पेट जन्म धर्या छे अने जीवे स्त्रीना देह धरी जेटली जातना पुरुष (लक्ष चोरासीमां नरजाति) छे ते सर्वेने पोताना धणी कर्या छे माटे ते सर्वे संबंधी नाश थइ गया छे. तेम आजना सगासंबंधी, धन-माल, ते पण जरूर नहीं ज रहे! माटे सर्वे पदार्थनी वासनानो त्याग करीने पोताना आत्माने ब्रह्मरूप मानीने भगवाननुं भजन करवुं. अने जेम पूर्वना संबंधी अज्ञाने करीने नथी सांभरता, तेम आजना संबंधी-ओने ज्ञाने करीने विसारी देवा.

—अने जे एम नथी समजतो ने केवळ देह अने देहना संबंधीने अर्थे तत्पर थइने मंड्यो छे. अने आत्माना सुखने अर्थे भगवानने नथी भजतो तेने तो महामूर्ख जाणवो. ने तेने कृतघ्न जाणवो. अने तेने अतिशे बुद्धिहीन जाणवो. अने ते भर (भले) जगतमां राजा कहेवातो होय; कामदार कहेवातो होय; मोटो शाहुकार होय; पंडित-पुराणी होय; पण ते जो पंचविषयनी वासना टाळीने भगवानने नथी भजतो तो तेने धिक्कार छे. अने तेनी मोटप तो क्षण मात्रमां नाश पामी जशे. अने तेने पछी यमपुरी, चोराशी गर्भवासनां महादुःख भोगववां पडशे. अने त्यां कोइ राज्य, धन, माल, कुटुंब परिवार, सहाय करता नथी.

माटे मनुष्य देह पामीने विषयवासनानो त्याग करीने, भगवाननुं भजन करवुं. एज पोताना आत्मानो महा लाभ छे. अने ए लाभ ले छे ते ज बुद्धिवाळा छे. केम के मनुष्यदेहे करीने जेने प्रत्यक्ष भगवान-

अने भगवानना निर्वासनिक संत मळे छे तेनो ज मोक्ष थाय छे. माटे ते समो तमारे आजे आव्यो छे. ते तमारां बहु मोटां भाग्य छे."

॥ इति श्रीमुख सिद्धांत ५ समाप्त ॥

६ विषयः—परोक्ष जेवुं प्रगट भगवाननुं माहात्म्य समजवा विषे

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः–संवत् १९१४ना महासुदी ११ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री चूडा मध्ये भट्ट नारायणजी भगवानजीने घेर उगमणे वारना ओरडानी ओसरीमां, पाट उपर गादी तकिया बिछावीने, विराजमान थया हता. सर्वे कसुंबल वस्त्र धारण कर्यां हतां. कंठनेविषे मोगराना पुष्पना तथा गुलावना पुष्पना हार धारण कया हता. हाथने विषे पुष्पना बाजुबंध गजरा पोंचीयो धारण कर्यां हतां. अने हाथनी आंगळीयोमां फुलनी वींटीयो पहेरी हती. कान उपर पुष्पना गुच्छ धारण कर्या हता, पाघमां बे कोरे पुष्पना तोरा लटकता हता. ललाटने विषे केसरनी आड्य ने कुंकुमनो चांदलो कर्यो हतो. अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधुओ तथा देशदेशना हरिभक्तोनी मोटी सभा भराइने बेठी हती.

प्रश्नः–पछी महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान कृपा दृष्टि करीने बोल्या जे–"जीवना कल्याणने अर्थे जे सिद्धांत छे ते कहीए छीए. जे अनंतकोटी ब्रह्मांडनी उत्पत्ति, स्थिति अने प्रलय, तेना कर्ता एक भगवान छे. ने सर्वना स्वामी छे. सर्वना आधार छे. एम जे जीव जाणतो होय पण ते भगवान विना बीजा कोइ काळ, कर्म अने मायादिक तेने कर्ता जाणे नहीं अने "एवा जे भगवान तेज आ प्रत्यक्ष छे" एम जे समज्यो होय अने जेवुं पूर्वे भगवानना अवतार थइ गया तेनुं माहात्म्य समजाय छे ने पूर्वे थया जे भगवानना साधु तेनुं जेवुं माहात्म्य समजाय छे

तेवुं ज जे प्रगट भगवाननुं माहात्म्य समजे तथा ते भगवानना साधुनुं माहात्म्य समजे तो ते जीवनो साक्षात्कार मोक्ष थाय छे. अने एटलो निश्चय जेने थयो तेने कांइ करवुं बाकी रह्युं नथी.

माटे आ वात जे दहाडे ते दहाडे (गमे त्यारे) समजे ज छूटको छे. ते सुझे तो आज समजो अने सुझे तो कोटी युग केडे समजो, अने सुझे तो एक शब्द कहे समजो ने सुझे तो अनंत शब्द कहे समजो पण ए वात समजे ज जीवनो मोक्ष छे. अने ए वात जाण्या विना बीजां अनंत साधन करे तोय पण जीवनुं कल्याण थाय नहीं. माटे प्रगट भगवान अने जीवने मनुष्यनो देह अने ते प्रत्यक्ष भगवाननो माहात्म्य सहित दृढ निश्चय थाय तेज अतिशे दुर्लभ छे. अने एवो समो जेने प्राप्त थाय त्यारे ज ते जीवनुं कल्याण थाय छे. अने पूर्वे पण जेनां जेनां कल्याण थयां छे ते पण प्रगट भगवान थकी ज थयां छे.

माटे मोटा पुरुषोए पण शास्त्रमां अनेक वातो लखीने प्रगट भगवान अने प्रगट भगवानना संत तेने ज कल्याणना कर्ता कह्या छे. अने जेवुं परोक्ष भगवान अने परोक्ष साधुनुं माहात्म्य छे तेवुं ज प्रगट भगवान अने तेना साधु तेनुं माहात्म्य समजवुं. एम ज मोटा पुरुष कही गया छे. माटे प्रगट भगवान तेज एक आत्यंतिक कल्याणना दाता छे. ते सारु एटलो जेने निश्चय थयो तेने कांइ करवुं रह्युं नथी. अने कांइ समजवुं बाकी रह्युं नथी एने तो सर्वोपरि मोक्षनो मार्ग हाथ आव्यो छे. अने तेनुं तो कल्याण थइ ज रह्युं छे. अने ते निर्विघ्न थका भगवानना अक्षरधामने पामे छे.

अने म्होरे (पूर्वे) पण जेने जेने प्रगट भगवान अने प्रगट भगवानना संत मळ्या छे तेनां ज वगर दाखडे (वगर महेनते) कल्याण थयां छे. अने प्रगट भगवान अने संत मळ्या विना तो जप, तप,

साधन करी करीने मरी जाय तो पण जीवनुं कल्याण थाय नहीं अने गोपी, गोवाळ, वांदरा ए आदिक जेने जेने प्रगट भगवान मळ्या ने ते कांइ ए समजता न हता. तो पण तेने प्रगट भगवानने विषे दृढ हेत थयुं तो ते सर्वे साक्षात्कार परमपदने पामी गया अने तेना गुण मोटा ब्रह्मादिक गाय छे. माटे ते समो आज तमारे आव्यो छे तेने जतन करीने राखजो, तो तमारां कल्याण साक्षात्कार थई रह्यां छे. एमां कांइ संशय नथी."

प्रश्न :—पछी रावळ कसळा रूपजीए महाराज ने प्रश्न पूछ्युं जे "हे महाराज ! पूर्वे कृष्णावतारमां ऋषि महा डाह्या ने भणेला हता ने शास्त्र-पुराण वांचता हता. अने आज केटलाक शास्त्र पुराणना भणेला छे पण तेने प्रगट भगवाननुं स्वरूप ओळखातुं नथी तेनुं शुं कारण हशे ? ते कहो."

उत्तर :—पछी महाराज बोल्या जे "शास्त्र पुराण वांचे छे तो खरा पण तेने भगवाननो आशरो नथी. माटे काम, क्रोध, लोभादिके एना जीवने हरवी (थकवी) नाख्यो छे. अने कामादिक शत्रु एने माथुं उपाडवा देता नथी. पछी ते पंडित पण जे ते पोतानी पेठे ज भगवान अने भगवानना भक्तने समजे छे "जे जेम अमारा कामादिक शत्रु निवृत्ति नथी पामता तेम एमना कामादिक शत्रु निवृत्ति नहीं पामता होय." एम समजीने भगवान अने भगवानना भक्तने विषे दोष समजे छे. माटे ते पापे करीने भगवाननुं स्वरूप एने ओळखवामां आवतुं नथी. माटे शास्त्र पुराणने वांचे छे पण एने भगवान अने भगवानना भक्तनो जेम छे तेम (साचो) महिमा समजातो नथी, तेने करीने प्रगट भगवानना स्वरूपनो निश्चय थतो नथी. ए तमारा प्रश्ननो उत्तर छे."

॥ इति श्री मुखसिद्धांत ६ समाप्त ॥

७ विषयः—इन्द्रियो अंतःकरणने जीतवानी रीत

श्री हरिकृष्णाय नमोनमः–संवत् १९१४ना महा सुदी १२ना दिवसे महाराज श्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्री चूडा मध्ये भट नारणजी भगवानजीने घेर उगमणा वारना ओरडानी आगळ चोक वच्चे पाट उपर गादी तकीया बिछावीने विराजमान थया हता. राता किनखाबनो सुरवाल अने डगली धारण कर्यां हतां. मस्तक उपर पाघ बांधी हती. सोनेरी कोरे छेडाळो (छेडावाळो) गूढो रेंटो धारण कर्यो हतो. केडे कसुंबल सेलुं बांध्युं हतुं. एक सेलुं खभे धारण कर्युं हतुं. कंठने विषे मोगरा, जाइ ने गुलाबना हार धारण कर्या हता. बे हाथने विषे बाजु-बंध अने गजरा धारण कर्या हता. पाघमां तोरा लटकता हता. कान उपर गुलाबना पुष्पना गुच्छ धारण कर्या हता. ललाटने विषे कंकुनो चांदलो कर्यो हतो. उगमणे मुखारविंदे विराजमान थया हता अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधुओ तथा घणाक हरिभक्तोनी मोटी सभा भराइने बेठी हती अने दिवसना चार वागे सभा थइ हती.

प्रश्नः—पछी हरिकृष्ण भगवान बोल्या जे–" एकादशी आदिकनुं व्रत करवुं तेनुं शुं कारण छे ? "

उत्तरः—तो आ जीवनी जे वृत्तिओ छे ते पंचविषयमां प्रवर्ती गयेली छे. तेने ते विषय थकी पाछी वाळीने भगवानना स्वरूपमां जोडी देवी, एज सर्वे व्रत उपवास आदिकनुं फळ छे. अने ते इन्द्रियोनी वृत्तिओ विषयमां प्रवर्ते छे. तेने करीने जीवने जन्म मरणनां दुःख भोगववां पडे छे.

हवे ते केवी रीते विषयमां इन्द्रियो प्रवेशे छे ? तो श्रोत्रनी वृत्ति छे ते शब्दमां वसी गइ छे; त्वचानी वृत्ति छे ते स्पर्शमां वसी गइ छे, ने

नेत्रनी वृत्ति छे ते रूपमां वसी गइ छे; नासिकानी वृत्ति छे ते गंधमां वसी गइ छे; एवी रीते दस इन्द्रियो अने चार अंतःकरणनी वृत्ति जे ते पोतपोताना विषयमां एक रसरूप थइ गयेली छे. अने तेने करीने जीव जन्म मृत्युने पामे छे. ते उपर वेदनी श्रुति छे जेः—

" मरणे या मतिः सा गतिर्भवेत् "।

माटे भगवानना भक्त होय तेने तो ए इन्द्रियो अंतःकरणथी नोखो एवो जे शुद्ध चैतन्य ब्रह्म—आत्मा तेने पोतानुं स्वरूप मानवुं, अने शब्द विषयनुं जे सुख दुःख छे ते तो श्रोत्र इन्द्रियने अने एना देव जे दिक्पाळ तेने अने मनने छे. पण आत्माने तेनुं सुख दुःख लेशमात्र नथी. अने स्पर्शनुं जे सुख दुःख ते त्वचा इन्द्रिय, वायुदेवता अने मनने छे पण मारे आत्माने नथी. ने हुं तो सदाय असंगी छुं अने रूप कुरूपनुं जे सुखदुःख ते तो चक्षु इन्द्रिय, सूर्यदेव अने मनने छे अने "हुं तो सदाय सुखरूप छुं" अने खटरसाधिकनुं जे सुख दुःख ते तो रसना इन्द्रिय, वरुणदेवता अने मनने छे. पण मारे आत्माने नथी अने हुं तो सदाय ब्रह्मानंदरूप छुं अने सुगंध दुर्गंधनुं जे सुखदुःख ते तो घ्राण इन्द्रिय, अश्विनीकुमार देवता अने मनने छे. अने हुं तो अरूप एवो आत्मा छुं अने सारा नरसा बोलवानी विगतिए करीने जे सुख दुःख तेनो वाक् ईन्द्रिय, अग्निदेवता अने मनने छे. पण मारे नथी. हुं तो सदाय शांतरूप ने सर्वेनो जाणनारो छुं अने ए तो सर्वे मायाकृत मिथ्या छे अने भ्रांतिरूप छे ने हुं तो सदाय असंगी छुं. ने हुं जे आत्मा ते मारा सुखना उपयोगमां मायिक पंचविषय ते कांइ काममां आवता नथी. अने मायिक विषय तो दुःखरूप छे. अने ब्रह्मरूप एवो जे हुं आत्मा ते मने जड एवा जे पंचविषय ते शुं सुख देनारा छे ? ते नरक-रूप छे अने हुं तो ब्रह्मानंद छु. एवो जे हुं आत्मा ते मने तो परमा-

रमानुं सुख ज शांति उपजावे एम छे. अने तेने करीने ज हुं सुखीयो थाउं एवो छुं. पण मायिक सुखे करीने हुं सुखीयो थाउं एवो नथी, अने हुं तो परमात्मा वते (थी) ज सुखीयो थाउं एवो छुं. माटे ब्रह्मरूप पोताना आत्माने मानीने प्रगट प्रमाण एवा जे भगवान तेनुं भजन करवुं.

(हवे) ते भगवान केवा छे? तो मनुष्य जेवा देखाय छे तोय पण दिव्यरूप छे. ने मायाथी पर छे, अने मनुष्य जेवा छे तो पण जड अने चैतन्य वेना आधार छे, अने "मारा आत्माने विषे पण अखंड विराजमान रह्या छे, अने जेवा प्रगट प्रमाण, प्रत्यक्ष देखाय छे तेवा ने तेवा साक्षात्, मूर्तिमान मारा आत्मामां सदाय विराजमान छे, माटे मारे हवे आववुं जवुं नथी. एटले जन्मवुं मरवुं नथी. हुं तो ब्रह्मरूप छुं ने कृतार्थ छुं." एम समजता होय ते तो भगवानना भक्त, अंतरदृष्टिवाळा छे. अने एवा जे अंतरदृष्टिवाळा भगवानना भक्त छे ते थकी तो भगवान अने भगवाननुं धाम ते अणुमात्र पण छेटे नथी.

अने जे वहारदृष्टिवाळा छे ते थकी तो भगवान घणाज छेटे रह्या छे, ने ते तो तुच्छ बुद्धिवाळा छे, अने तेने मायिक दृष्टिवाळा जाणवा, ने तेने कोइ काळे शांति थाय नहीं. केम के शांति तो अंतरदृष्टिमां छे, ते ए मार्ग तो भूली गयो छे. ते क्यांथी शांति थाय? जे कोइक पुरुपने उगमणे गाम जवुं होय अने चालवा मांडे आथमणुं. ते जेम जेम चाले तेम तेम छेटुं पडतुं जाय–पण ते गाम आवे नहीं. तेम वहार दृष्टिवाळा पुरुप जेम जेम साधन करे तेम तेम तेने भगवानथी उलटुं छेटुं थतुं जाय छे. केम के एणे तो परमेश्वरनी दिशाज दीठी नथी अने परमेश्वरनी दिशा तो अंतरदृष्टिमां छे. ने ए तो वहार दृष्टिवाळा छे.

माटे जे भगवानना भक्त होय तेने तो सदाय अंतरदृष्टि राखीने

पोतानी दश इन्द्रियो अने अगीयारमुं मन तेने भगवानना स्वरूपमां जोडी देवां.

ते काने करीने भगवाननी कथा कीर्तन सांभळवा ने तेने करीने पोताने पूर्णकाम थावुं, त्वचाए करीने भगवानना चरणनो स्पर्श करीने ज आनंद पामवुं. नेत्रे करीने भगवान अने भगवानना संतनां दर्शन करीने ज तृप्त थावुं, रसना ए करीने भगवानना गुण गावा, तेणे करीने परम आनंद मानवो; नासिकाए करीने भगवानने चडयां जे चंदन पुष्प तेनी सुगंधिए करीने ज सुख मानवुं, ने हाथे करीने प्रत्यक्ष भगवान अने भगवानना संतनी सेवा करीने ज सुख पामवुं. एवी रीते दश इन्द्रियो अने चार अंतःकरण तेणे करीने भगवाननी मूर्तिमां जोडावुं. अने तेमां अतिशय आनंद पामवुं. पण मायिक पंचविषयनां सुख तेणे करीने सुख न मानवुं अने ते मायिक विषयने देखीने तो ग्लानि पामवुं.

जेम विष्ठाने देखीने ग्लानि पमाय छे. तेम मायिक विषयने देखीने ग्लानि पामवुं. अने ते मायिक विषय थकी तो दूर ज भागी जावुं. जेम सर्पथी भागीए छीए. तथा हडकाया कूतराथी भागीए छीए तेम मायिक पंचविषय थकी भगवानना भक्ते पाछा भागवुं, केम के विषयनां सुख ते अतिशय दुःखरूप छे. माटे अतिशय पापरूप जाणीने, तेनो त्याग करीने, पोताने ब्रह्मरूप मानीने, अंतरदृष्टि करीने आत्माने विषे शांति पामवुं. अने पोताने मळ्या जे भगवान तेने सुखरूप जाणीने तेनुं भजन करवुं अने एम समजणवाळा जे भगवानना भक्त-बाई अथवा भाई, त्यागी अथवा गृहस्थ-ते सर्वेनी वासना टळी जाय छे ने ते छते देहे ब्रह्मरूप छे. ने एने कांइ करवुं रहेतुं नथी."

॥ इति श्री मुक्तसिद्धांत ७ समाप्त ॥

८ विषय :-भगवानने पामवाना मार्गमां आवनारा अंतराय

श्री हरिकृष्णाय नमोनमः—संवत् १९१४ना महासुदी १३ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री चूडा मध्ये भट्ट नारणजी भगवानजीने घेर उगमणे वार, ओरडानी आगळ, चोक वच्चे, पाट उपर गादी तकीया बिछावीने ते उपर विराजमान थया हता. किनखावनो सुरवाल अने डगली पहेर्यां हतां. कसुंवल पाघ धारण करी हती. केडे (कम्मरे) गुढो रेंटो पहेरीने सोनेरी कसुंवल सेलुं बांध्युं हतुं. अने एक सेलुं खभा उपर धारण कर्युं हतुं. अने सर्वे अंगने विषे सुगंधी पुष्पनां आभूषणो शोभी रह्यां हतां. अने ललाटने विषे कुंकुनो चांदलो कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देशदेशना हरिभक्तोनी सभा भराइने बेठी हती.

प्रश्न :—पछी महाराज बोल्या जे "जीवने भगवान भज्यामां अनंत अंतराय छे. ते अंतरायमां मुमुक्षु अने मुक्त बंधाय नहीं, अने जे अंतरायना रोक्या रोकाय छे ते तो पामर अने विषयी छे, ने तुच्छ बुद्धिवाळा छे. अने जे मायिक पदार्थना रोक्या रोकाय छे ते भगवानना महापदने नथी पामता.

जेम रामचंद्रजी भगवान वनमांथी आवता हता ते समे अयोध्याना मनुष्य दर्शन करवा सर्वे सामा दोड्या. पछी रामचंद्रजी ए खरा खोटा (भक्त) नां पारखां लेवा सारु माया रची. ते गाम बहार आव्या त्यां तो पैसा ना ढगला जणाया. पछी तेमां केटलाक लोभाईने गया अने तेमां केटलाक न लोभाणा ते आघेरा चाल्या. त्यां सोनामहोरना ढगला देखाणा त्यारे तेमां लोभाईने रही गया. अने त्यांथी केटलाक आघा चाल्या त्यां पारसमणीयोना ढगला देखाणा. तेमां केटलाक लोभाईने रोकाई गया. तेमां जे खरेखरा रामचंद्रजीना निर्वासनिक भक्त

हता ते भगवाननी पासे पहोंच्या. अने तेमने भगवाने अभयपद आप्युं अने तेमना उपर भगवान घणा प्रसन्न थया.

तेम जे आज पण भगवान भजता होय तेने आ लोकनां स्त्री, छोकरां, धन, माल, गाम, गरास, लोकनी लाज, मतपंथादिक आ लोकनां पंचविषय संबंधी सर्वे सुख ते पैसाने ठेकाणे छे. अने जे देवलोकनां सुख छे ते तो रुपीयाने ठेकाणे छे अने ब्रह्माना लोकनां सुख छे ते सोना महोरने ठेकाणे छे अने जे वैराटनुं सुख छे ते तो मोती हीराने ठेकाणे छे. अने प्रधान पुरुषना लोकनुं सुख छे ते तो रत्नोने ठेकाणे छे अने प्रकृति पुरुषना लोकनुं जे सुख छे ते तो मणिने ठेकाणे छे. अने अक्षरब्रह्मनुं जे सुख छे ते तो पारसमणिने ठेकाणे छे. अने ए जे सर्वे सुख कह्यां तेमां जे न लोभाय तेज भगवानना चरणारविंदने विषे जइने अभय सुखने पामे छे. अने महासुखीयो थाय छे. ते माटे जे भगवानना खरेखरा एकांतिक भक्त होय तेणे तो मायिक सुखने नाशवंत ने दुःखरूप ने पापरूप जाणीने तेनो त्याग करी देवो. केम के ए सुख तो भगवानना मार्गमां विघ्न करनारां छे. अने वळी एमां सुख जेवुं जणाय छे, पण तेमां सुख जे ते लेशमात्र नथी. पण तेमां जे सुखमाने छे ते तो मायिकदृष्टिवाळा छे. पण जे ज्ञानी छे ते तो ए मायिक सुखने महादुःखरूप अने नाशवंत जाणे छे. माटे मायिकदृष्टिवाळा जीव जे ते भगवानना भक्तनी निंदा करे तेने करीने भगवानना भक्तनी मोटप घटती नथी. ने ते कदापि वखाण करे तेने करीने कांइ भगवानना भक्तनी मोटप वधती नथी. केम के भगवानना भक्तनी मोटप छे ते तो अविनाशी छे. ते तो कोइ काळे वधे घटे एवी नथी.

जेम प्रह्लादनी निंदा हिरण्यकशिपुए घणीक करी पण तेणे करीने प्रह्लादनी मोटप रंच मात्र ओछी थइ नहीं. अने ते हिरण्यकशिपुनो नाश

थयो. अने नरसिंह महेतानी नागरे तथा मंडळीके निंदा करी, तेणे करीने पण महेताजीनी मोटप घटी नथी. एवी रीते पूर्वे घणाक भक्तोनी विमुख जीवोए निंदा करी छे. तो पण भगवानना भक्तनो ज जय थयो छे. अने निंदाना करनाराओनुं भूडुं थयुं छे; त्यां एक साखी छे जेः—

संत संतापे जात है धर्म, राज, अरु वंश।
देख्या न होय तो देख लो रावण कौरव अने कंस॥

माटे विमुख जीवना शब्द सांभळीने भक्तने हरख शोक पामवुं नहीं. अने सदाय आनंदमां रहेवुं. अने प्रत्यक्ष भगवान अने भगवानना नारद, सनकादिक जेवा निर्वासनिक प्रत्यक्षना संत तेना वचननो विश्वास राखीने जेम भगवाननी आज्ञा होय तेमां मन, कर्म वचने सावधान वर्तवुं, पण लोचा पोचा न रहेवुं. अने धर्म संबंधी लाज तथा भगवाननी भक्तिनी जे लाज तेने तो दृढ करीने राखवी. केम के वर्तमान (नियम) चूकीए तो सत्संगमां लाज जाय अने भगवानना भक्तपणामां खोट आवे. अने भगवान कुराजी थाय. ते सारु ए लाज तो शिर साटे राखवी, केम के ए लाज तो पोताना आत्माना कल्याणने अर्थे छे. अने जे लौकिक लाज छे ते तो आत्मानुं भूंडु करे एवी छे. माटे भगवानना भक्त होय तेणे जगतना लोकनी लाजनो त्याग करीने भगवानना सुखनो लोभ राखवो.

ते भगवाननुं सुख केवुं छे ? तो अपरिमित छे. अने भगवाननां एक दर्शन करे तो तेमां पंचविषयनुं सुख भेगुं आवे छे ने ते जीव पूर्णकाम थाय छे. अने मायिक पंचविषय तो सुझे एटला भोगवे तो पण तृष्णा मटे नहीं. माटे भगवानना भक्त होय तेणे तो स्थूळ, सूक्ष्म अने कारण ए जे त्रण शरीर ते थकी पोताना आत्माने जुदो अने शुद्ध चैतन्यब्रह्म मानीने प्रगट प्रमाण जे भगवान तेनो दृढ आश्रय करीने तेना वचनमां वर्तीने, तेनुं भजन करीने, भगवानना अखंडसुखने पामवुं. एज

मनुष्य देहे अवश्य जरूर करवानुं छे. अने प्रगट भगवान अने पोताने मनुष्यनो देह ए समो अतिशय दुर्लभ छे. माटे ते समो वृथा जवा देवो नहीं. अने भगवानने भजी लेवा".

॥ इति श्रीमुख सिद्धांत ८ समाप्त ॥

९ विषय :—भगवाननां दर्शन करवानी रीत

श्रीहरिकृष्णाय नमो नमः--संवत् १९१४ ना महासुदी १४ ने दिवस संध्या आरती थया पछी महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री चूडा मध्ये भट्ट नाराणजी भगवानजीने घेर उगमणे वार ओरडानी आगळ चोक-वच्चे पाट उपर गादी तकीया विछावीने ते उपर विराजमान थया हता सर्वे अंगने विषे जरीयानी वस्त्र धारण कर्यां हतां. कंठने विषे गुलावना हार पहेर्या हता. हाथने विषे पुष्पना बाजुबंध अने गजरा धारण कर्या हता. पुष्पना तोरा अने गुच्छ शोभी रह्या हता. ललाटने विषे केसरनी अर्चा अने कुंकुनो चांदलो कर्यो हतो. अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधुओ तथा घणाक हरिभक्तोनी मोटी सभा भराइने बेठी हती.

प्रश्न :—पछी महाराज बोल्या जे सांभळो, सर्वेने एक वात करवी छे—जे "भगवानने दर्शन आववुं ए तो पोताना आत्मकल्याणने अर्थे आववुं; पण जगत्मां जेम भवाया तथा वेश्याओ जोवा जाय छे तेम भगवाननां दर्शन न करवां. अने भगवाननां दर्शन तो सर्वे इन्द्रियोने नियममां राखीने, एकाग्रवृत्ति करीने करवां. पण फाटेली दृष्टिए भग-वाननां दर्शन न करवां, केम के भगवान पासे जईने तो पापनो त्याग करवो पण त्यां आवीने स्त्रीआदिकनां कुदृष्टिए करीने रूप जुए तो तेने उलटुं महापाप लागे छे. ते पाप कोई काळे छूटे नहीं. ते कह्युं छे जे—

अन्यक्षेत्रे कृतं पापं तीर्थक्षेत्रे विनश्यति ।
तीर्थक्षेत्रे कृतं पापं वज्रलेपो भविष्यति ॥

ए श्लोकमां एम कह्युं छे जे "बीजे ठेकाणे पाप कर्यां होय ते पाप भगवान अने भगवानना संतने दर्शने करीने नाश पामे छे. अने भगवान अने संत पासे जईने, भगवाननी मूर्तिनां दर्शन मूकीने आडी अवळी कुदृष्टिए करीने जोवाय तो ते पाप वज्रलेप थाय छे. कहेतां कोई काळे ते पाप टळे नहीं."

केम के भगवानने दर्शने जे जे आवे छे ते तो मोटा देव जेवा छे. ने बाईओ हरिभक्त छे ते तो राधिका, लक्ष्मी, पार्वती, द्रौपदी, जानकी गोपीओ, मीराबाई ए जेवां छे अने पुरुष छे ते तो उद्धवजी; सुदामा, वृंदावनना गोप, नारद सनकादिक, अर्जुन, प्रह्लाद ए जेवा छे. एम जाणीने इन्द्रियो अंतःकरणनी जे वृत्तिओ छे ते ते नियममां राखीने भगवानना स्वरूपमां जोडी देवी.

—ते काननी वृत्तिने भगवानना शब्द सांभळवामां जोडी देवी; त्वचानी वृत्तिने भगवानना चरणना स्पर्शमां जोडी देवी, नेत्रनी वृत्तिने भगवाननुं स्वरूप जोवामां जोडी देवी. एवी रीते दश इन्द्रियो अने चार अंतःकरणनी जे वृत्तिओ तेने प्रत्यक्ष भगवानना स्वरूपमां जोडी देवी. एम जे प्रत्यक्ष भगवानमां जोडाय छे तेनां सर्वे पाप बळी जाय छे. अने ते भक्त ब्रह्मरूप थाय छे. एवो प्रत्यक्ष भगवान अने संतनो प्रताप छे. माटे अमारी पासे आवीने एक अमारां ज दर्शन करवां पण चपळदृष्टि राखवी नहीं. तो तमारा सर्वेनां कल्याण थशे, एमां कोई वातनो संशय नथी."

॥ इति श्री मुखसिद्धांत ९ समाप्त ॥

---

१० विषय :—जन्म मृत्युनुं कारण

श्री हरिकृष्णाय नमो नमः—संवत् १९१४ना महावदी १ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री चूडा मध्ये झाला भावसिंगजी भाई

डुंगरजी भाईना दरबारमां उगमणे बार ओरडानी ओसरीमां ढोलीया उपर गादी तकिया बिछावीने ते उपर विराजमान थया हता. सोनेरी सुरवाल ने डगली धारण कर्यां हतां. गुठो रेंटो ने सोनेरी शेलुं केडे धारण कर्युं हतुं ने एक शेलुं खभे नाख्युं हतुं. कंठने विषे गुलाब अने जाई पुष्पना हार धारण कर्या हता. हाथने विषे बाजुबंध अने गजरा धारण कर्या हता. कान उपर फुलना गुच्छ शोभी रह्या हता. पाघमां पुष्पना तोरा लटकता हता. अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधुओ तथा घणाक हरिभक्तोनी मोटी सभा भराइने बेठी हती.

प्रश्न :—पछी श्रीहरिकृष्ण महाराज बोल्या जे " आ जीवने वारंवार जन्ममरण थाय छे तेनुं कारण शुं छे ?

तो ए जीवने पोताना मननो अतिशय विश्वास छे. ते मन जे ते जीवने विषयमां प्रीति करावीने जन्ममरणने पमाडे छे. जेम राजा-ने पोताना प्रधान नो विश्वास होय अने शाहुकारने जेम वाणोतरनो विश्वास होय, पछी ते प्रधान तथा वाणोतर दगो करीने राजाने तथा शाहुकारने मरावी नखावे अने तेना राज्य अने धनना धणी थाय छे. तेम जे मन छे ते तो सदाय दगादार छे. ते जीवना महाशत्रु जे पंच-विषय तेनी ज सदाय कल्पना कर्या करे छे अने ते विषयथकी कोई काळे तृप्त थतुं ज नथी. अने भगवानने मार्गे तो मन जे ते चालतुं ज नथी. अने भगवाननो मार्ग तो एने अतिशय अगम्य छे. अने पंचविषयमां चालवुं ते तो मननो अनादिनो ढाळ छे. केम के मन छे ते मायाथकी थयुं छे अने पंचविषय छे ते पण मायामांथी थया छे, माटे ते मनने विषय सन्मुख चालतां अनंत दुःख पडतां होय तो पण ते थकी मन जे ते पाछुं वळतुं नथी. अने तेमांथी मन कायर थतुं नथी. अने जीवने अने मनने तो घणुं ज विलक्षणपणुं छे, तो पण जीव मनने वश थईने पोते आनंदरूप छे तो पण महादुःखने भोगवे छे.

जेम चूला उपर चोखा रांधवा मूक्या होय त्यारे प्रथम चूलाने ताप लागे छे, पछी तपेलीने ताप लागे छे, पछी तेमां पाणी उनुं थाय छे अने पछी चोखाने ताप लागे छे, ते चोखा अग्नि थकी घणा जुदा छे तो पण ते अग्निने संगे करीने तापने पामे छे, तेम आत्मा जे ते पृथ्वी, जळ, तेज, वायु, आकाश, अहंकार, महत्तत्त्व, अने प्रधानपुरुष ए जे अष्टावरण ते थकी पर छे, अने चैतन्य, निराकार, व्यापक छे. तो पण पंचविषयनी आसक्तिए करीने मननो संग कर्यो छे. ते पापे करीने अतिशय क्लेशने पामे छे, पण आत्मा विषयभोगे करीने सुखीयो थाय एवो नथी, अने आत्मा तो सर्व थकी विलक्षण छे, अने असंगी छे, ने सुखरूप छे. तो पण अज्ञान थकी मनने संगे करीने दुःख पामे छे.

जेम घरमां रहेनारो पुरुष घरथी नोखो छे तो पण ते घरना उपर कोइक मोटो पथरो नाखे तो ते पुरुष घरनी आसक्तिए करीने महा दुःखने पामे, तेम आत्मा जे ते देह रूप घरथी जुदो छे. तो पण ते देहनी आसक्तिए करीने अतिशय दुःखने पामे छे, अने देहने जन्मे करीने जन्म माने छे, अने देहने मरवे करीने पोतानुं मृत्यु माने छे. ए सर्वे मनने संगे करीने आत्माने विपरीत ज्ञान थइ गयुं छे, माटे सत्पुरुषनो आश्रय करीने शुद्ध ज्ञानने पामवुं, अने देहने तो दुःखरूप अने नाशवंत जाणीने मनना संगने छोडीने कहेतां विषयनी वासनानो त्याग करीने इन्द्रियो अंतःकरणने पोताना स्वाधीनमां लावीने ए सर्वेने भगवाननी नवधा भक्तिमां जोडी देवां.

जेम राजा जे ते राज्यनीतिने भणीने सर्वे वस्तीने वश करे छे, तेम भगवानना भक्ते पण राज्यनीति रूप ज्ञान सिद्ध करवुं. कहेतां स्थूळ, सूक्ष्म अने कारण एवा जे त्रण देह ते थकी पोताना आत्माने नोखो समजीने ते आत्माने विषे परमात्मा सदाय अखंड रह्या छे. "ते ज

परमात्मा आ प्रत्यक्ष छे." एम जाणीने अंतरदृष्टि करीने निरंतर प्रत्यक्ष-मूर्ति भगवाननुं ध्यान करवुं अने इन्द्रियो अंतःकरणथी सदाय असंगी रहेवुं, अने एम समजवुं जे "इन्द्रियो अंतःकरण तो जड छे अने हुं आत्मा तो चैतन्य छुं ने शुद्ध छुं अने इन्द्रियो अंतःकरणनो हुं प्रकाशक छुं."

जेम गरवामां दीवो मुक्यो होय त्यारे ते गरवो प्रकाशमान थाय छे, तेम देह रूप गरवो छे. तेमां आत्मारूपी दीवो छे, ते आत्मा जे ते देह इन्द्रियो, अंतःकरणरूप गरवाने प्रकाशे छे, अने आत्मा पोते ज सुखरूप छे. जेम कस्तुरीया मृगनी नाभिमां कस्तुरी रही छे तेने भूलीने मृग कस्तुरीनी वास लेवा सारु तृणने सुंघे छे पण तृणने विषे लेश मात्र कस्तुरी नथी, तेम सुख तो पोताना आत्माने विषे रह्युं छे. तेने भूलीने तृणरूप जे पंचविषय तेमां सुख माने छे, पण विषयने विषे सुख जे ते लेश मात्र नथी.

केम के विषयना पदार्थ तो जड छे. ते जड वस्तु चैतन्यने शुं सुख करे ? ए तो आत्माने अनादिकाळनुं अज्ञान छे अने ते अज्ञाने करीने विषयमां सुख माने छे. माटे भगवानना भक्तने तो चौद लोकनां जे विषयनां सुख छे तेने कागविष्टा तुल्य जाणवां जोइए, अने पोताने सुखरूप जाणीने ते आत्माना आत्मा एवा जे परमात्मा प्रत्यक्ष भगवान तेनुं अखंड भजन स्मरण कर्या करवुं, अने पोताने जे प्रत्यक्ष भगवाननी प्राप्ति थइ छे ते पोतानां अतिशय मोटां भाग्य मानवां. केम के मोटा मोटा योगीओ तप करी करीने जेना सारु मरी जाय छे तो पण तेने स्वप्नामां दर्शन थतां नथी.

माटे जेने अनंत जन्मना शुभ संस्कार होय त्यारे तेने प्रगट भगवाननां दर्शन थाय छे, माटे एवा जे अतिशय दुर्लभ भगवान तेने भजतां देहने कदापि सुख दुःख आवे तो तेमां हरख शोक पामवुं नहीं

अने जीव छे तेणे अनंत कूतरा, गधेडाना अवतार धारण कर्या छे अने त्यां अनंत प्रकारनां दुःख पाम्यो छे माटे भगवानना भक्तने भगवान भजवामां कांइ थोडुं घणुं दुःख आवे तो ते दुःखने गणवुं नहीं, अने भगवानना भक्ते तो नित्य नवो रंग (उत्साह) राखवो केम के "सर्वे दुःख मात्र थकी छूटवानो समो आव्यो छे" एम जाणीने पोताने मळ्या जे प्रत्यक्ष भगवान अने भगवानना संत तेने पोतानुं मन अर्पण करवुं, अने एवी रीते जे भगवानना भक्त समजीने प्रत्यक्षमूर्ति भगवान अने भगवानना एकांतिक संत तेना चरणमां मनने अर्पण करे छे, ते भक्त तत्काळ ब्रह्मरूप थाय छे, अने भगवानना अक्षरधामने पामे छे."

॥ इति श्रीमुख सिद्धांत १० समाप्त ॥

(११) विषय :—जीवना अनादि शत्रुने जीतवानी रीत

श्रीहरिकृष्णाय नमो नमः—संवत् १९१४ ना महावदी २ ने दिवस महाराज श्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्री चूडा मध्ये झाला भावसिंगभाई डुंगरजीभाइना दरबारमां उगमणे वार ओरडानी ओसरीमां ढोलीया उपर गादी तकिया बिछावीने ते उपर विराजमान थया हता. सर्वे सोनेरी वस्त्रो धारण कर्यां हतां. कंठने विषे गुलाब अने चमेलीना हार शोभी रह्या हता. पुष्पना गजरा अने बाजुबंध धारण कर्या हता. पाघमां बे कोरे तोरा लटकता हता बे कान उपर गुच्छ धारण कर्या हता. जमणा हस्त कमळने विषे फुलनो दडो फेरवता हता. अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधुओ तथा घणा हरिभक्तोनी सभा भराईने बेठी हती. ते समे भावसिंगभाईए षोडशोपचार वडे महाराजनी पूजा करी.

प्रश्नः—पछी महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान कृपादृष्टि करीने सर्वे सभा प्रत्ये बोल्या जे "आ जीव छे ते देहने विषे एकरसरूप थई

रह्यो छे. अने देहने संबंधे करीने पापकर्मने करे छे. ते पाप कर्म कया ?

–तो चोरी, छीनाळी (व्यभिचार) जीवहिंसा, भुंडुं बोलवुं, मिथ्या अपवाद नाखवो, साधु–ब्राह्मणनो द्रोह करवो, परमेश्वरने निराकार कहेवा, इत्यादिक जे पापकर्म ते देहोऽहंबुद्धिए करीने थाय छे. अने ते दुष्ट कर्म करीने अंत समे अतिशय क्लेशने जीव पामे छे. केम के जीवने ज्यारे अंत समो आवे छे त्यारे जेवां जेवां कर्म कर्यां होय तेवां तेवां ते जीवने फळ ईश्वर पमाडे छे.

तेमां जे परस्त्रीना संगना करनारा छे तेने यमना दूत लोढानी स्त्री लालचोळ बळबळती करीने वारंवार बाथ भरावे छे. अने जेणे चोरी करी छे तेने यमना दूत मुद्गर लईने वारंवार मारे छे. अने जेणे जीवनी हिंसा करी छे तेने तो परू, पाच, लोहीनी नदीओमां डूबकीयो खवरावे छे. अने जे भगवानने निराकारना कहेनारा छे तेना शरीरने यमना दूत कुहाडे करीने कापे छे. अने काळी चीबासु नखावे छे. इत्यादिक जे अधर्मथी तेने ईश्वर जे ते अंत समे अनंत प्रकारनां दुःख उत्पन्न करे छे. अने पछी जेवां जेवां कर्म कर्यां होय तेवा तेवा देह चोराशीमां धरावे छे.

तेमां जे अतिशय कामी होय तेने गधेडाना, कूतराना, पाडाना, बोकडाना, अवतार धरावे छे. अने जेणे जीवने मार्या होय अने मांस खाधुं होय तेने तो गरजुं, समडांओ, कागडा, कूतरा, आदिकना जन्म धरावे छे. अने ते अवतारमां जीव महाकष्टने पामे छे. अने ते कष्टनो पार आवतो नथी. तेवी रीते अधर्मी अने भगवानथी विमुख जीव छे तेने ईश्वर जे ते जेवां जेवां जीवे कर्म कर्यां होय तेवां तेवां दुःख पमाडे छे.

अने जेणे भगवाननो आश्रय कर्यो छे–तेणे तो अधर्म, अनीतिनो त्याग करवो. अने चोरी, छीनाळी, दारू, माटी, वटलवुं, वटलाववुं तेनो

त्याग करवो. तथा जीवहिंसा न करवी. कोईने माथे मिथ्या आळ न नाखवुं अने जुठुं न बोलवुं. ए आदिक अधर्मनो त्याग करवो, अने भगवाननी नवधा भक्ति करवी. अने ते भक्तिना विरोधी एवा जे काम, लोभ, स्वाद, स्नेह अने मान तेने जीतवां.

तेमां ज्यारे पोताने कामनो संकल्प थाय त्यारे ते कामनुं मूळ तपासवुं जे "काम जे ते स्त्रीने विषे रह्यो छे. अने स्त्री होय तेनो काम पुरुषने विषे रह्यो छे." माटे ते स्त्री पुरुष बेयना देहनो विचार करवो जे "ते देहने विषे मारे कामनो संकल्प थाय छे पण देहमां शी वस्तु रही छे ? तो हाड, मांस, नाडीओ, लोही, परु, पाच, विष्ठा, मूत्रआदिक नकारी वस्तुनो भरेलो देह छे. अने ते देह उपरथी रूपवान जणातो होय के कुरूपवान जणातो होय तो पण बेय मळमूत्रना कोथळा छे पण तेमां कांइ सार वस्तु नथी." एवी रीते तपास करीने जुए तो कामनां मूळ उखडी जाय. अने दृढ निष्कामी थाय.

अने पोताने लोभनो स्वभाव होय तो ते लोभनो त्याग करवो, के जेने करीने पोताना आत्मानुं भूंडुं थाय तेवा ठेकाणे लोभ न अने गृहस्थ होय तेने द्रव्य होय ते ज्यां त्यां वेश्याओ, भवाया- मवळे मार्गे नाखी न देवुं. अने अण हके करीने कोईनुं द्रव्य अने हक महेनतथी तृष्णाए रहित पोताना प्रारब्ध प्रमाणे

सारा होय पण ते सर्वे पृथ्वी जळादिक पंचभूतनो विकार छे. अने खाधा पछी पण नरक थई जाय छे. माटे ते खाधाना पदार्थमां सुख लेशमात्र नथी. अने ए तो जीवे मूर्खाईए करीने सुख मानी लीधुं छे. पण पदार्थ आत्माने सुख पमाडे एम नथी. अने खाधाना पदार्थ छे ते तो अग्नि ने प्राणवायुनो आहार छे. पण आत्मानो आहार नथी. अने तेणे करीने आत्माने सुखदुःख लेशमात्र नथी. अने आत्मा तो पोते ज सुखरूप छे अने अविनाशी छे, माटे खाधाना पदार्थ न मळे तेणे करीने आत्मा नाश पामे एवो नथी. अने ए तो मन अने रसना इन्द्रियने भ्रान्तिए करीने सुख जेवुं जणाय छे. अने ते पदार्थ खाधा म्होर सूझे एवा सारा सारा पास्ये पड्या होय पण तेनुं सुख जराय आवे नहीं. अने ते पदार्थ खाई रह्या पछी पण कांइ सारा नरसानो भेद रहेतो नथी. अने कंठथी हेठे उतर्या पछी पण नकारुं थई जाय छे. अने घडीक जीभ उपर रहे त्यां सुधी, भ्रांतिमात्र सुख जेवुं जणाय छे. ते पण आत्मा वते जणाय छे. ते अज्ञाने करीने सारा सारा खाधाना पदार्थने विषे आसक्ति राखे छे. पछी तेने अन्नने विषे कीडो थवुं पडे छे." एम समजीने स्वादने जीतवो अने जेवे तेवे खावे करीने भगवानना भक्तने देहनिर्वाह करवो. कहेतां सारा सारा खावाने विषे प्रीति न राखवी.

अने स्नेहने एम जीतवो जे "आ विश्वमां जेटली जातना जीव छे ते सर्वे जातमां जीवे अनंत फेरा जन्म धर्या छे. अने वळी आ विश्वमां जेटली जातनी स्त्रीओ छे तेने जीवे अनंत अनंत फेरा पोतानी माताओ करी छे अने स्त्रीओ पण करी छे. अने स्त्रीनो देह धरीने जगतमां जेटली जातना पुरुष छे ते सर्वेने पोताना धणी कर्या" छे. एवी रीते जोईए, तो कोण कोनुं सगुं नथी ? सर्वे सगां ज छे. माटे जेम ते

त्याग करवो. तथा जीवहिंसा न करवी. कोईने माथे मिथ्या आळ न नाखवुं अने जुठुं न बोलवुं. ए आदिक अधर्मनो त्याग करवो, अने भगवाननी नवधा भक्ति करवी. अने ते भक्तिना विरोधी एवा जे काम, लोभ, स्वाद, स्नेह अने मान तेने जीतवां.

तेमां ज्यारे पोताने कामनो संकल्प थाय त्यारे ते कामनुं मूळ तपासवुं जे "काम जे ते स्त्रीने विषे रह्यो छे. अने स्त्री होय तेनो काम पुरुषने विषे रह्यो छे." माटे ते स्त्री पुरुष बेयना देहनो विचार करवो जे "ते देहने विषे मारे कामनो संकल्प थाय छे पण देहमां शी वस्तु रही छे? तो हाड, मांस, नाडीओ, लोही, परु, पाच, विष्ठा, मूत्र आदिक नकारी वस्तुनो भरेलो देह छे. अने ते देह उपरथी रूपवान जणातो होय के करूपवान जणातो होय तो पण बेय मळमूत्रना कोथळा छे-पण तेमां कांइ सार वस्तु नथी." एवी रीते तपास करीने जुए तो कामनां मूळ उखडी जाय. अने दृढ निष्कामी थाय.

अने पोताने लोभनो स्वभाव होय तो ते लोभनो त्याग करवो, केम के जेणे करीने पोताना आत्मानुं भूंडुं थाय तेवा ठेकाणे लोभ न राखवो, अने गृहस्थ होय तेने द्रव्य होय ते ज्यां त्यां वेश्याओ, भवाया-ओ, [illegible] मार्गे नाखी न देवुं. अने अण हके करीने कोईनुं द्रव्य

सारु आघो कहेतां क्यांकथी स्त्रीने परणे त्यारे ते जीवने कामरूपी सात्रज खाइ जाय छे, कहेतां कामभोगे करीने तृप्ति थती नथी अने उलटो महादुःखने पामे छे अने वळी देहने पोतानुं रूप माने छे त्यारे ते जीव जे ते द्रव्यनी वासनारूपी लायमां वळवा मांडे छे, पछे ते लायने ओलववा सारु कांइक महेनत करी हेरान थइने पैसा कमाय छे, त्यारे ते जीवने लोभरूपी दीपडा, सर्प, तथा गांडा हाथी ते मारी नाखे छे. एवी रीते देहने पोतानुं रूप मानीने पंच विषयने पामवा सारु जे जे उपाय करे छे तेमांथी जीव जे ते महादुःखने पामे छे. ते सर्वे जीवनी वहारदृष्टि छे, अने ते वहारदृष्टिमां जीवने कोइ काळे सुख थाय नहीं ए सिद्धांतवार्ता छे.

माटे वहारदृष्टिनो त्याग करीने कहेतां देहने पोताना आत्माथी नोखो जाणीने देहनां सुख पामवानी आशा मुकीने अंतरदृष्टि करवी. कहेतां आत्माने पोतानुं स्वरूप जाणीने तेने विषे दृढस्थिति पामवुं, अने ते आत्माने विषे परमात्मा भगवान अखंड रह्या छे तेने विषे प्रीति करवी. ते आत्मा अने परमात्मा विना पिंड, ब्रह्मांड आदिक मायामांथी उत्पन्न थया जे आकारमात्र तेने नाशवंत; दुःखरूप अने पापरूप जाणी तेनो सर्वे प्रकारे त्याग करीने पोताने मळ्या जे प्रत्यक्ष भगवान तेने आत्माने विषे धारीने नवधा भक्ति (श्रवण, कीर्तन, स्मरण, अर्चन, वंदन, पादसेवन, दासत्व, सखा, आत्मनिवेदन अनुक्रमे) करवी. अने "ते भगवान प्रत्यक्ष छे, सर्वे सुखना सिंधु छे, अने कृपाना सागर छे" एम भगवानने सुखना धाम जाणीने तेनी जे जे आज्ञा होय ते प्रमाणे दृढ पणे वर्तवुं, अने ते भगवाननुं भजन, स्मरण, कथा, कीर्तन आदिक जे नवधा भक्ति ते करवी ते सर्वे अंतरदृष्टि छे, अने ते अंतरदृष्टिवाळा पुरुष जे ते महा अलौकिक सुखने पामे छे.

माटे जेने परम सुखीया थवुं होय तेणे पूर्वे कही एवी जे वहार-दृष्टि तेनो त्याग करीने पोताना आत्माने विषे प्रत्यक्ष भगवाननी मूर्त्तिने धारीने अखंड ध्यान करवुं. अने एम समजवुं जे मायिक पंचविषय (शब्द, स्पर्श, रूप, रस अने गंध)मां सुख जे ते लेशमात्र नथी, अने सुख तो पोताना आत्माने विषे रह्युं छे. ते आत्मा केवो छे? तो अच्छेद, अभेद, सुखरूप, चैतन्य, ज्ञानरूप छे. ते ज्ञान केवुं छे? तो जेम महासमुद्रने विषे मगरमच्छ रहेतो होय तेने कोइक मच्छीमार मारवा आवे तो ते मगरमच्छ समुद्रमां डूबकी मारी जाय एटले तेने कोइ मारी शके नहीं. तेम ज्ञानरूपी महासमुद्र छे तेमां अंदरदृष्टि करीने डूबकी मारी जाय तेने काळ, कर्म मायारूप जे मच्छीमार ते मारवाने समर्थ थाय नहीं अने ते अद्‌भुत आनंदमां वर्त्या करे.

माटे जे भगवानना भक्त होय तेने तो निरंतर अंतरदृष्टि ज राखवी अने जे अंतरदृष्टिए युक्त वर्ते छे तेने प्रत्यक्ष भगवान अने भगवानना संतनो महिमा पण अपार ने अपार जणातो जाय छे. अने तेने पंच-विषयनुं अतिशय तुच्छपणुं थइ जाय छे. अने देहने विषे तेने अतिशय वैराग्य थाय छे. अने अज्ञानरूपी अंधकार टळीने ज्ञानरूपी प्रकाश थाय छे. जेम दिवस उगे ने सहेजे ज रात्रीनो अंधकार टळी जाय छे तेम ज्ञानरूपी सूर्य प्रगटे छे त्यारे देहने विषे जे अहंबुद्धि अने देह संबंधी पदार्थने विषे ममत्वबुद्धि ते रूप जे महामायानो अंधकार तेनो नाश थइ जाय छे. अने ज्यारे ज्ञानरूपी प्रकाश थाय छे त्यारे तेने एम जणाय छे जे "मारे विषे माया कोइ काळे हती ज नही" एम तेने जणाय छे, अने एवा जे ज्ञानी ते अखंड पोताना आत्माने देखे छे अने आत्माना प्रकाशक एवा जे परमात्मा प्रत्यक्षमूर्ति ज्ञानदाता भगवान तेने पोताना आत्मामध्ये देखे छे.

ते परमात्मा केवा छे ? तो सर्वेना कारण छे. सर्वेना आधार छे अने अनंतकोटि मुक्ते विंटाणा थका सदाय अक्षरधाममां विराजमान छे. अने ते भगवान प्रत्यक्ष " मने आज साक्षात्कार मळ्या छे ने ते मारा आत्माने विषे अखंड रह्या छे. अने ते भगवान मनुष्यस्वरूप धारण करीने अनंत जीवोनो उद्धार करवा सारू सर्वेने दर्शन आपे छे." एम जाणीने प्रत्यक्ष भगवाननी मूर्तिने अंतरमां धारीने हालतां चालतां, खातां, पीतां उठतां, बेसतां, सर्व क्रियाना विषे अखंड ध्यान करे छे अने एवी रीतना ध्यानयोगवाळा भक्त छे तेने ब्रह्ममय तनु बंधाय छे. अने ते भगवानना साधर्मपणाने पामे छे. कहेतां भगवान जेवा सुखीया छे, तेवो ज ते मुक्त पण सुखीयो थाय छे. माटे परमसुखनुं कारण अंतरदृष्टि छे अने अपार दुःखनुं कारण बहारदृष्टि छे."

॥ इति श्रीमुख सिद्धांत १२ समाप्त ॥

---

१३ विषयः—मोहनुं रूप टाळवानो उपाय

श्री हरिकृष्णाय नमोनमः—संवत १९१४ना महा वदी ५ ने दिवस महाराज श्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्री चूडा मध्ये झाला जसाभाइ डुंगरजीभाइना दरबारमां दक्षणादे बार मेडीनी ओसरीमां ढोलियापर गादी तकीया बिछावीने विराजमान थया हता. हीरकोरी श्वेत धोतीयुं पहेर्युं हतुं ने गुलाबी रंगनुं अंगरखुं धारण कर्युं हतुं. कसुंबल फेंटो मस्तके धारण कर्यो हतो. गुलाबी कोराळो (कोरवाळो) खेस खभा उपर नाख्यो हतो, ने कंठने विषे पुष्पना हार धारण कर्या हता. ने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधुओ तथा घणाक हरिभक्तोनी सभा भराइने बेठी हती.

प्रश्नः—पछी महाराज श्री हरिकृष्ण भगवान कृपादृष्टि करीने सर्वे साधु हरिभक्तो प्रत्ये बोल्या—जे "आज तो अमे मोहनुं रूप विचार्युं छे, जे मोह ते शुं छे ?"

तो भगवानना स्वरूपने यथार्थ न जाणवापणुं ए ज मोह छे अने ते भगवानना स्वरूपनुं साक्षात्कार ज्ञान थाय एज मोह टाळवानो उपाय छे अने ते ज्ञान पामवामां अंतराय छे एज मोह छे, ते मोह पंचविषयनी वासनाए करीने चौद लोक (सात लोक उपरः—भूर्लोक, भुवर्लोक, स्वर्गलोक, महर्लोक, जनलोक, तपलोक, अने सत्यलोक तथा सात लोक नीचेनाः—अतल, वितल, सुतल, तलातल, महातल, रसातल अने पाताळ) नुं एक ब्रह्मांड एवां अनंतकोटि ब्रह्मांडने विषे छे. जेम वडनुं वृक्ष जे ते वडवाइना मूळे करीने पृथ्वीमां छवराइ रहे छे तेम, जीव जे ते वासना-रूपी वडवाइने मूळे करीने पिंड अने ब्रह्मांडने विषे छवराइ रह्यो छे अने पोताना आत्मस्वरूपने भूली गयो छे. अने मोहे करीने अनंतकोटि ब्रह्मांडने विषे जोडाणो छे.

ते केवी रीते जोडाणो छे ? तो नेत्रनी वृत्तिए करीने जीव जे ते सूर्यना लोक सुधी जोडाइ गयो छे; श्रोत्रनी वृत्तिए करीने दिक्पाळना लोक सुधी जोडाइ गयो छे; त्वचानी वृत्तिए करीने वायुना लोक सुधी जोडाइ गयो छे; रसनानी वृत्तिए करी वरुणना लोक सुधी जोडाइ गयो छे; नासिकानी वृत्तिए करीने अश्विनीकुमारना लोक सुधी जोडाइ गयो छे; वाणीनी वृत्तिए करीने अग्निना लोक सुधी जोडाइ गयो छे, हाथनी वृत्तिए करीने इन्द्रना लोक सुधी जोडाइ गयो छे; पगनी वृत्तिए करीने विष्णुना लोक सुधी जोडाइ गयो छे; ने शिष्णनी वृत्तिए करीने प्रजा-पतिना लोक सुधी जोडाइ गयो छे अने गुदानी वृत्तिए करीने यमना लोक सुधी जोडाइ गयो छे.

अने देहमां हाडकादिक जे पृथ्वी छे तेनी वृत्तिए करीने जीव जे ते गंधमां जोडाइ गयो छे; जळनी वृत्तिए करीने जीव जे ते रसमां जोडाइ गयो छे, अग्निनी वृत्तिए करीने रूपमां जोडाइ गयो छे; वायुनी वृत्तिए करीने स्पर्शमां जोडाइ गयो छे; अने आकाशनी वृत्तिए करीने शब्दमां जोडाइ गयो छे.

–अने अहंकारनी वृत्तिए करीने जीव जे ते रुद्रना लोकमां जोडाइ गयो छे; चित्तनी वृत्तिए करीने वासुदेवना लोक सुधी जोडाइ गयो छे; मननी वृत्तिए करीने चंद्रना लोक सुधी जोडाइ गयो छे अने बुद्धिनी वृत्तिए करीने जीव जे ते ब्रह्माना लोक सुधी जोडाइ गयो छे.

–अने अहंकारे करीने जीव वैराटमां जोडाइ गयो छे; चित्ते करी जीव महत्तत्त्वमां जोडाइ गयो छे; मने करी प्रधानपुरुषमां जोडाइ गयो छे; अने बुद्धिए करी जीव प्रकृतिपुरुषमां जोडाइ गयो छे.

एवी रीते जीव जे ते वासना रूपी वडवाइने मूळे करीने पिंड ब्रह्मांडमां एकरस थइ रह्यो छे, अने ए जीवने वासनारूपी वडवाइनो आधार छे. अने तेने करीने जीव जे ते चाले हाले छे, एवी रीते जीवने मोह छे, अने ते मोहे करीने जीव स्वर्ग, मृत्यु अने पाताळने विषे जाय छे, अने जन्ममरण अने गर्भवासनां महादुःख तेने वारंवार भोगवे छे.

हवे ते जीवने वासनारूपी मोह क्यारे टळे? तो जेने विषे कोइ काळे मोह हतो ज नहीं एवा जे सदाय निर्मोही जे परमात्मा भगवान ते भगवानना स्वरूपनो उत्तम निर्विकल्प निश्चय थाय त्यारे जीव निर्मोही थाय, कहेतां मोह टळी जाय.

हवे ते परमात्माना स्वरूपनो निर्विकल्प निश्चय केम थाय? तो 'कर्तुमकर्तुमन्य्थाकर्तुम् समथ' एवा जे परमात्मा भगवान ते जे ते अनंत

जीवोने निर्मोही करी ने पोताना अक्षरधामने पमाडवासारु मनुष्य स्वरूपनुं धारण करीने पृथ्वी उपर आवे छे अने ते प्रत्यक्ष भगवान ज्यारे कृपा करीने पोताना स्वरूपनो निश्चय करावे छे, त्यारे जीवने भगवानना स्वरूपनो निश्चय थाय छे, अने ते निश्चय ज्ञाने करीने करावे छे, अने जीवने ज्यारे ज्ञाने करीने भगवानना स्वरूपनो निश्चय थाय छे त्यारे जीवनी जे कुबुद्धि हती ते टळीने सुबुद्धि थाय छे, अने जीवने जे मोह हतो तेनां मूळ उखडी जाय छे, अने ब्रह्मरूप थइने परब्रह्मने साक्षात्कार प्रत्यक्ष देखे छे.

हवे एवुं ज्ञान केवी रीते करावे छे ? तो तेनी रीत कहीए छीए:— (१) जे प्रथमतो जीव ने सांख्यशास्त्रने ज्ञाने करीने आत्मा ने परमात्मा विना सर्वे मायिक आकार मात्र तेने मिथ्या करी देखाडे छे अने पछी (२) योगशास्त्रने ज्ञाने करीने पोताना आत्माने ब्रह्मने विषे एकत्वपणुं करावीने ते ब्रह्मने विषे परब्रह्मनी स्थिति (साक्षात्कार) करावे छे. (३) त्यार पछी वेदान्त शास्त्रना ज्ञाने करीने ते परमात्मानो अपरिमित महिमा कही देखाडे छे. जे ते परमात्मा केवा छे ? तो सर्वे कर्ता छे. सर्वना आधार छे; सर्वव्यापक छे, निर्गुण छे; अंतरजामी छे, अद्वैत छे; पूर्णब्रह्म छे; सर्वसाक्षी छे, कर्ता थका अकर्ता छे, निर्लेप, असंगी अने 'कर्तुमकर्तुमन्यथा कर्तुंसमर्थ' एवा परमात्मा छे. अने पछी (४) पंचरात्रशास्त्रने ज्ञाने करीने वेदान्तमां कह्या एवा महिमाए युक्त जे परमात्मा भगवान ते ज भगवान मनुष्य स्वरूपनुं धारण करीने जीवोना कल्याण करवाने अर्थे नवधा भक्तिनुं ग्रहण करे छे.

जेवुं जणावे छे; पोताने विषे त्रिकाळमां क्रोध नथी तो पण जीवोना कल्याणने अर्थे क्रोध जणावे छे; ते भगवानने विषे पोतानुं पारकुं नथी तो पण पोतानुं पारकुं जणावे छे, अने पोताने विषे लोभ नथी तो पण लोभ जेवुं जणावे छे.

एवी रीते भगवान पोते तो अखंडानंद, पूर्णकाम छे तोपण जीवोने पोताने विषे हेत थाय तेने अर्थे अने जीवोए विषयनी वासनाए करीने ते विषयने भोगववा सारू अनंत पाप कर्यां छे ते पापने पोतानी सेवा करावीने वाळवाने अर्थे सेवानुं ग्रहण करे छे. अने एवी रीते जीवोना कल्याणने अर्थे प्रत्यक्ष भगवान पोते पोताने विषे काम, क्रोध, लोभ, स्वाद, स्नेह, मान, पारकुं, पोतानुं, पक्षपात, ए सर्वे गुण देखाडे छे. ते सर्वे भगवानना दिव्य गुण छे. अने जीवोना कल्याणने अर्थे जणावे छे अने ते गुणोए करीने अनंत जीवोनो मोक्ष थाय छे. ते सारु भगवान जे ते ए गुणोनुं धारण करे छे.

अने वळी भगवान तो ए सर्वेथी असंगी छे ने गुणातीत छे. पण भगवान ज्यारे जीवोनां कल्याण करवाने अर्थे मनुष्यदेहनुं धारण करे छे त्यारे मनुष्यना जेवी ज चेष्टा करे छे. ते पूर्वे पण भगवानना अवतार थइ गया तेणे चरित्र कर्यां छे. जे रामावतारमां जानकीजीने रावण हरी गयो त्यारे रामचंद्रजी झाड झाड प्रत्ये रोता (रडता) फर्या अने मनुष्य पण कोइ भेगां चाल्यां नहीं. पछी वांदरा भेगा कर्या अने समुद्रने कांठे जइने त्रण दिवस सुधी भूख्या रह्या. अने लक्ष्मणजीने मूर्छा थइ, त्यारे रामचंद्रजी रोया अने वळी राम लक्ष्मण बेयने अहिरावण पाताळमां हरी गयो त्यारे त्यांथी हनुमानजी मुकावी लाव्या. अने रामचंद्रजीने इन्द्रजिते नागपाशथी बांध्या त्यारे ते थकी गरुडजीए मूकाव्या. अने अयोध्यामां धोबीए निंदा करी के "हुं दशरथना राम जेवो नथी जे

कोइक लइ गयेली स्त्री पाछी राखुं." एवुं सांभळीने रामचंद्रजीए सीताजीनो त्याग कर्यो त्यारे वाल्मीकि ऋषि पासे वनमां जइने सीताजी रह्यां. त्यां सीताजीने बे पुत्र थया. तेमणे रामचंद्रजी सामे लडाइ करी. इत्यादि रामचंद्रजीनां मनुष्यचरित्र छे.

अने श्रीकृष्ण भगवान जे ते जन्म धारण करीने मथुरामांथी गोकुळमां गया, अने त्यां छाना (छूपा) रह्या. अने पोतानां मावाप जे वसुदेव अने देवकी ते बंधीखाने रह्यां अने पोते नंदजीनां ढोर चार्यां. गोवाळीयानुं उच्छीष्ट जम्या. अने दहीं दुधनी चोरीयो करी, गोपीयो साथे विहार कर्यो. गोपीयोनां वस्त्र हर्यां अने जरासंध आगळ हार्या ते भागीने समुद्रना बेट (द्वारका)मां वस्या, इत्यादिक श्रीकृष्ण भगवाननां मनुष्यचरित्र छे.

अने भगवाननां दिव्यचरित्र तो अनंत छे. ते दिव्यचरित्रने तो भगवानना एकांतिक भक्त होय ते ज जाणे छे. अने जे मायिक वहारदृष्टिवाळा छे तेमने भगवाननां दिव्यचरित्र जाण्यामां नथी आवतां अने भगवानना मनुष्यचरित्र तो सौना जाण्यामां आवे छे, माटे तेने करीने अज्ञानी जीवोने मोह (शंका) थाय छे. ते कृष्णावतारमां भगवाननां मनुष्यचरित्र जोइने ऋषिओने मोह थयो. माटे तेमना ओळख्यामां भगवान आव्या नहीं अने यादवोना ओळख्यामां पण भगवान न आव्या अने रामावतारमां पण कोइ झाझा (घणा) मनुष्योए न ओळख्या.

—माटे प्रत्यक्ष भगवानने ओळखवा ते तो बहु ज कठण काम छे. केम के जेने वेद नेति नेति कहे छे, ने मोटा योगी ते पण तप अने ध्यान करी करीने सूकाइ जाय छे तो पण जेना स्वप्नामां दर्शन थतां

नथी एवा महादुर्लभ जे भगवान ते मनुष्य जेवा थइने मनुष्यना जेवी क्रिया करता होय ते भगवान जीवोना ओळख्यामां केम आवे ? न ज आवे.

—माटे ते भगवान ओळखवानो एक उपाय छे. जे ते भगवान पृथ्वी उपर प्रगट थया होय अने ते भगवाननी पासे रहेनारा भगवानना एकांतिक संत तेनो जेने विश्वास होय अने तेमनो समागम करे तो ते भगवानना स्वरूपनुं ज्ञान आपे; त्यारे ते जीवने प्रत्यक्ष भगवान ओळखाय छे, पण ते विना प्रगट भगवानने ओळखवानो बीजो उपाय नथी. माटे प्रकट भगवानना संतथकी ज प्रकट भगवान ओळखाय छे.

पछी जेने प्रगट भगवान ओळखाणा; तेना इन्द्रियो अंतःकरण आदिक चोवीसतत्त्वनी वृत्तिओ छे ते पोतपोताना विषयनुं प्रमाण करीने ते थकी पाछी वळीने प्रत्यक्ष भगवाननी मूर्तिमां जोडाय छे. हवे ते केवी रीते जोडाय छे ? तो श्रोत्र जे कान तेनी वृत्ति छे ते शब्दनुं प्रमाण करे छे जे–"कोटि युग थयां शब्द सांभळ्या छे पण हजी कान तृप्त थया नथी" एम जाणीने पोते जीव तेनो द्रष्टा थइने ते शब्दने दिक्पाळ देवमां लय करीने ते काननी वृत्ति जे ते प्रत्यक्ष भगवानना शब्दमां जोडाय छे; त्वचा इन्द्रियनी वृत्ति छे ते स्पर्शनुं प्रमाण करे छे. कहेतां "अनंतकाळ थया सारा सारा स्पर्श कर्या छे तोय पण त्वचा इन्द्रियनी तृप्ति थइ नथी" एम जाणीने ते स्पर्शनुं प्रमाण करीने जीव पोते तेनो द्रष्टा थइने ते स्पर्शनो वायुमां लय करीने ते वृत्ति जे ते भगवान प्रत्यक्ष तेना चरणना स्पर्शमां जोडाय छे; नेत्रनी वृत्ति छे, ते पण उपर कह्युं ते प्रमाणे रूपविषयनुं प्रमाण करिने पोते आत्मा तेनो द्रष्टा थइने ते रूप विषयने सूर्य देवने विषे लय करीने ते नेत्रनी वृत्ति जे ते प्रत्यक्ष भगवानना स्वरूपमां जोडाय छे. रसनानी वृत्ति छे ते रसविषयनुं प्रमाण

करीने पोते तेनो द्रष्टा थइ ते रसने वरुणदेवमां लय करीने ते वृत्ति जे ते भगवानना गुण गावामां जोडाय छे अने नासिकानी वृत्ति छे ते गंधविषयनुं प्रमाण करी पोताने द्रष्टा मानीने गंधने अश्विनीकुमार देवमां लय करीने ते वृत्ति जे ते प्रत्यक्ष भगवानने चड्यां जे पुष्प चंदनादिक तेना सुगंधमां जोडाय छे; वाक् इन्द्रियनी वृत्ति छे ते वाणीनुं प्रमाण करीने पोते द्रष्टारूप थइने ते वाणीने अग्निदेवताने विषे लय करीने भगवानने विषे जोडाय छे. एवी रीते पांच ज्ञानइन्द्रियो अने पांच कर्मइन्द्रियोनी जे वृत्तिओ छे ते जे ते पोतपोताना विषयनुं प्रमाण करीने तेनो पोते द्रष्टा थइने ते विषय जेमांथी जे उपज्या हता तेमां ते विषयने लय करीने ते वृत्तिओ प्रत्यक्ष भगवानमां जोडाय छे.

—अने जे देहमां अस्थि (हाडकां) आदिक पृथ्वीनी वृत्ति छे ते पृथ्वीनुं प्रमाण करीने पोते तेनो द्रष्टा थइने ते पृथ्वीने जळमां लय करीने ते वृत्ति भगवानमां जोडाय छे. अने देहमां जे लोही आदिक जे जळनी वृत्ति छे ते जळनुं प्रमाण करीने तेनो पोते द्रष्टा थइने जळने अग्निमां लय करीने ते वृत्ति भगवानमां जोडाय छे. अने देहमां जठरादिक अग्निनो भाग छे ते अग्निनुं प्रमाण करीने पोते तेनो द्रष्टा थइने तेने वायुमां लय करीने ते वृत्ति जे ते भगवानमां जोडाय छे. अने देहमां जे आकाशनी वृत्ति छे ते आकाशनुं प्रमाण करीने पोते तेनो द्रष्टा थइने ते आकाशने अहंकारमां लय करीने ते वृत्ति जे ते भगवानमां जोडाय छे अने जे अहंकारनी वृत्ति छे ते अहंकारनुं प्रमाण करीने कहेतां "अनंतकाळ थयां हुं करुं छुं, पण तेमांथी कांइ तृप्ति थइ नहीं." एम जाणीने पोते तेना द्रष्टा थइने अहंकारनी वृत्तिने महत्तत्त्वमां लय करीने पोते जे ते प्रत्यक्ष भगवाननी मूर्तिमां जोडाय छे. अने जे चित्त छे ते जे ते चिन्तवनादिक महत्तत्त्वनुं प्रमाण करीने आत्मा पोते तेनो द्रष्टा

थइने ते महत्तत्वने प्रधानपुरुषने विषे लय करीने पोते आत्मा जे ते भगवानमां जोडाय छे अने जे मन छे ते संकल्प विकल्पादिक प्रधान-पुरुषनुं प्रमाण करीने पोते तेनो द्रष्टा थइने ते मने सहित प्रधानपुरुषनो प्रकृति पुरुषने विषे लय करीने पोते आत्मा जे ते प्रत्यक्ष भगवाननी मूर्त्तिमां जोडाय छे, अने जे बुद्धि छे ते संशय निश्चयसहित प्रकृतिपुरुषनुं प्रमाण करीने पोते आत्मा तेनो द्रष्टा थइने ते बुद्धिए सहित प्रकृति-पुरुष ने अक्षरब्रह्म जे भगवानना अंगनो प्रकाश कहेतां आत्यंतिक ज्ञान तेने विषे लय करीने पोते आत्मा शुद्ध चैतन्य, ब्रह्म, निराकार व्यापक थयो थको भगवान पुरुषोत्तमने विषे जोडाइ जाय छे. पछे तेनी दृष्टिमां भगवाननी मूर्ति विना पिंड ब्रह्मांड आदिक मायिक आकार मात्र आवतो नथी.

एवी रीते प्रत्यक्ष भगवान ने भगवानना संतजीवने ज्ञान आपे छे. त्यारे जीवनी जे दश इन्द्रियोनी वृत्तिओ तथा चार अंतःकरणनी वृत्तिओ तथा पांच भूतनी वृत्तियो तथा पंचतन्मात्रानी वृत्तियो ते जे ते पोतपोताना विषयनुं प्रमाण करीने, ते सर्वेनो पोते आत्मा द्रष्टारूप थईने ते ते तत्वो जेमांथी उपज्यां हतां तेमां तेने लय करीने पोते आत्मा जे ते शुद्ध थईने पछी भगवान प्रत्यक्ष मूर्ति तेने विषे अंतरदृष्टि करीने तथा प्रतिलोमपणानुं शुद्ध एवुं जे तत्त्वज्ञान तेने करीने भगवाननी मूर्तिने विषे स्थिति पामे छे. अने एवुं ज्ञान जेने थाय छे तेने प्रत्यक्षमूर्ति भगवानने विषे सर्वोपरि पुरुषोत्तम पणानो उत्तम निर्विकल्प निश्चय थाय छे. अने एवो उत्तम निर्विकल्प निश्चय जेने थयो तेने सर्वे जगत-ने विषेथी वृत्तिओ उठने जाय छे अने ते प्रत्यक्ष भगवाननी मूर्तिने विषेथी सर्व प्रकारे मोह टळी जाय छे. कहेतां गमे तेवां चरित्र भग-वान करे पण ते चरित्रमां तेने लेशमात्र संशय थाय नहीं. अने तेने

नवें चरित्र दिव्य जणाय अने तेने प्रत्यक्ष भगवाननुं स्वरूप अनंत ऐश्वर्ये सहित भासे छे अने तेने ज सर्वोपरि केवळपदप्राप्ति कहे छे; अने एवो जे ज्ञानी छे तेज निर्मोही छे अने तेज साक्षात्कार सिद्ध-दशाने पामी रह्यो छे अने तेने ज तत्त्वदर्शी जाणवो."

॥ इति श्रीमुखसिद्धांत १३ समाप्त ॥

१४ विषय :—दैवी अने आसुरी जीवनां लक्षणो

श्री हरिकृष्णाय नमो नमः—संवत १९१४ ना महा वदी ६ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री चूडा मध्ये व्यास भलुशंकर लीला-धरने घेर, आथमणा वार, ओरडानी ओसरीमां गादी तकीये युक्त ढोलिया उपर विराजमान थया हता किनखावनो सुरवाळ अने डगली धारण कर्यां हतां. गुढो रेंटो पहेरीने कसुंबल शेलुं केडे बाध्युं हतुं. एक शेलुं खभे धारण कर्युं हतुं. मस्तके सोनेरी कसुंबल पाघ बांधी हती. सर्वे अंगने विषे गुलाब, जाई, चमेली पुष्पनां आभूषण धारण कर्यां हतां ललाटने विषे केसरनी अर्चा अने कंकुनो चांदलो कर्यो हतो. अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधुओ तथा देशदेशना हरिभक्तोनी सभा भराइने बेठी हती.

प्रश्नः—पछी श्रीहरिकृष्ण भगवाननी आरती धून करीने सर्वे भक्तजनो महाराजनी स्तुति दंडवत् प्रणाम करीने बेठा पछी भगवान बोल्या जे "सर्वे सांभळो, एक वात करीए छीए. जे आ जगतने विषे दैवी अने असुरी बे प्रकारनी माया छे, तेमां असुरी माया । जे जीव छे तेने तो पोताने पण भगवान भजवा नहीं अने कोइक जो भगवान भजतो होय

तो तेनी निंदा करे छे. अने ते असुरीमायाना जीव होय ते जे ते चोरी, छीनाळी, दारु, माटी, जीवहिंसा, चाडीचूगली, तेमां भरपूर होय अने एवा जीवने जो हुकम हाथ होय तो जेने शिक्षा न करवी घटे तेने शिक्षा करे अने जेने शिक्षा करवी घटे तेने न करे. एवां जेनां लक्षण होय तेने असुरी मायाना जीव जाणवा. अने असुरी मायाना जे जीव छे ते जे ते देहने ज पोतानुं रूप माने छे अने ते देहने पोतानुं रूप मानीने पंचविषयने विषे लोलुप वर्ते छे. अने वळी विषयने विषे लोलुप वर्तता थका पण अतिशय महा अज्ञाने करीने "अहं ब्रह्मास्मि" एवो मिथ्या बकवाद करे छे. एवा मिथ्या, ब्रह्मकोदाळ होय तेने पण आसुरी मायाना जीव जाणवा. अने वळी प्रत्यक्ष भगवानना द्रोहना करनारा तथा सत्शास्त्र-ने खोटा कहेनारा तथा सत्धर्मने मिथ्या माननारा अने ते उपरथी तो धर्मवाळा जेवा जणाता होय तो पण ते सर्वे असुरीमायाना जीव छे एम जाणवुं.

अने हवे जे दैवी संपत्तिना जीव छे तेने तो आस्तिक मति होय माटे ते जीव एम जाणे जे–"जो भगवाननुं भजन करीशुं अने भग-वाननी आज्ञा पाळीशुं तो ज आपणा आत्मानो उद्धार थशे. अने जो भगवाननी आज्ञा प्रमाणे नहीं वर्ताय तो आपणा आत्मानुं अतिशय भूंडु थशे. अने जमपुरीमां जइने जमना मार खावा पडशे. तथा चोरा-शीमां जइने कूतरा, गधेडादिक अवतार धरीने महादुःखने भोगववां पडशे. अने ते दुःख कह्यां जाय एवां नथी, माटे जो भगवानने नहीं भजीए तो ए कह्यां जे सर्वे दुःख ते जरूर भोगववां पडशे" एम पोताना मनमां समजीने जे दैवीमायाना जीव छे ते भगवाननो दृढ आश्रय करीने जेम भगवाननी आज्ञा होय तेम मन, क्रम वचने वर्ते छे.

–ते भगवाननी शी आज्ञा छे? तो चोरी, छीनाळी, दारू, माटी,

वटलवुं, वटलाववुं, जीवहिंसा, असत्यभाषण, चाडी चूगली, दंभ, कपटादिक जे अधर्मनो सर्ग तेनो त्याग करवो, अने धर्म, ज्ञान, वैराग्य, अने माहात्म्ये सहित भगवाननी भक्ति, तेने दृढ करवी, अने तेने प्रत्यक्ष भगवान मळवानी इच्छा वर्त्या करे अने सत्यधर्म, सत्यशास्त्र अने सत्पुरुषनो दृढ विश्वास होय एवे लक्षणे युक्त होय तेने दैवी मायाना जीव जाणवा, अने एवा जीव होय तेने प्रत्यक्ष भगवान मळे छे, पछी एवा दैवी जीव होय ते प्रत्यक्षनो आशरो करीने ते भगवान तथा प्रत्यक्ष भगवानना भक्त संत ते जेम कहे तेम करवाने विषे तत्काळ श्रद्धाए सहित सत्य मानीने तेनां वचन प्रमाणे ज वर्तवा मांडे छे. एवां जेनां लक्षण होय तेने दैवीजीव जाणवा, अने एवा जे दैवी जीव होय तेने ज प्रत्यक्ष भगवान अने भगवानना संतनो अखंड संबंध रहे छे, अने तेने भगवानना स्वरूपनो उत्तम निर्विकल्प निश्चय पण तत्काळ थाय छे, अने ते जन्म मरणना दुःख थकी मुकाइने परमपदने पामे छे.

अने जे आसुरी जीव छे तेने तो जो कदापि प्रत्यक्ष भगवाननो जोग थयो होय तो पण तेने भगवानना स्वरूपनो निश्चय थाय नहीं. केम के शींगडीयो वछनाग होय तेने भगवानना थाळमां मूकीए तोय शींगडीयो वछनाग ते झेरी ज रहे, पण ते पोताना गुणनो त्याग करे नहीं. तेमज जे आसुरी जीव छे ते पण भगवानना संबंधमां आव्यो होय, तो पण पोताना आसुरी संप्रदायना जे गुण तेनो त्याग करता नथी, अने आसुरीजीव छे ते तो नरक चोराशीमां ज जाय छे, अने जन्ममृत्यु अने गर्भवासना महादुःखने पामे छे, अने तेअसुरी मायाना जीवनुं कोइ काळे कल्याण थतुं ज नथी.

—माटे जे मुमुक्षु जीव होय तेणे दैवी अने आसुरी ए बे प्रकारना जीव तेने उपर कह्या एवा लक्षणे करीने—ओळखीने आसुरी जीव थकी

अतिशय दूर रहेवुं अने तेनो संग करवो नहीं. अने जे आसुरी जीवनो संग करे तेना जन्मने खराब करीने पापने मार्गे चलावीने पापनी मूर्ति बनावी मूके छे, अने महा दुःखने पमाडे छे, माटे एवुं समजीने जे मुमुक्षु कहेतां कल्याणना खपवाळा होय तेणे आसुरीना संगने पापरूप जाणीने तेनो त्याग करवो अने भगवान अने भगवानना संत विषयना त्यागी तेने विषे मन क्रम–वचने संग सोवते करीने जोडाइ जवुं, अने ते साथे लेशमात्र अंतराय राखवो नहीं, अने तेने विषे दृढ आत्मबुद्धि करवी, अने ते भगवान अने भगवानना संतना वचनने विषे विश्वास राखीने भगवाननुं भजन स्मरण करे छे, एवो जे मुमुक्षु, ते तो नेत्र मींचीने चाल्यो जाय तोय पण ते कल्याणना मार्ग थकी पडे नहीं, अने आखडे पण नहीं, अने एवो होय ते तो जरूर भगवानना अक्षरधामने ज पामे छे."

॥ इति श्रीमुख सिद्धांत १४ समास ॥

१५ विषयः—मनुष्यदेह पाम्यानुं माहात्म्य.

श्री हरिकृष्णाय नमोनमः—संवत १९१४ ना महा वदी ७ ने दिवस महाराज श्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्री चूडा मध्ये व्यास भलुशंकर लीलाधरने घेर आथमणे बार ओरडानी ओसरीमां ढोलीया उपर गादी तकीया बिछावीने ते उपर विराजमान थया हता. किनखावनो सुरवाल अने जामो धारण कर्यां हतां. सोनेरी पाघ मस्तके बांधी हती. गुठो रेंटो अने कसुंबल शेलुं केडे धारण कर्यां हतां. एक शेलुं खंभे धारण कर्युं हतुं. कंठने विषे पुष्पना हार धारण कर्या हता, अने पुष्पना बाजुबंध, गजरा, तोरा, गुच्छ, अने पहोंचीयो, ते सर्वे अंगमां धारण कर्यां हतां. ललाटने विषे कंकुनो चांदलो कर्यो हतो, अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधुओ तथा घणा हरिभक्तोनी सभा भराइने बेठी हती.

प्रश्नः–पछे महाराज सर्वे भक्तजनो प्रत्ये बोल्या जेः–

दुर्लभो मानुषो देहो, देहिनां क्षणभंगुरः ।
तत्रापि दुर्लभं मन्ये, वैकुण्ठप्रियदर्शनम् ॥

ए श्लोकमां एम कह्युं छे जे–मनुष्यनो देह महा दुर्लभ छे, पण ते देह क्षणमात्रमां नाश थइ जाय एवो छे, तो पण जो ते देहे करीने प्रत्यक्ष भगवान मळे अने कां भगवानना एकान्तिक संत मळे ने तेमनुं दर्शन थाय ते अति दुर्लभ छे, पण ते भगवान अने भगवानना संत मळ्या विना एकलो मनुष्यनो देह ते कांइ दुर्लभ नथी. केम के देह तो मूत्रनो विकार छे, माटे देहमां कांइ सार वस्तु नथी, अने ते देहनो पळ मात्रनो निर्धार पण नथी.

जेम पाणीमां परपोटो थाय छे अने नाश पामी जाय छे, तेम देह पण पाणीना परपोटा रूप छे, माटे जेने कल्याणनो खप होय अने पोताना आत्माने जन्म मरणना दुःख थकी मुकाववो होय तेणे देहनो पळ मात्रनो निर्धार न राखवो अने देह सारो होय तेवामां सावधान थइने प्रत्यक्ष भगवान तथा भगवानना संत तेनो समागम करीने धर्म, ज्ञान, वैराग्य, अने माहात्म्ये सहित भगवाननी भक्ति सिद्ध करीने पोताना आत्माने अनादिकाळनुं–मायानुं बंधन छे ते थकी मुकावीने निर्वासनिक थइने परम मोक्षने पामवुं. ते पण मनुष्य देहे करीने ज मोक्षने पमाय छे, ते सारु मनुष्यदेहने शास्त्रमां दुर्लभ कह्यो छे.

पण ते मनुष्यदेह पामीने जे विषय भोगवे छे अने सत्पुरुषनो समागम नथी करता ते तो महापापी छे. केम के स्त्रीआदिक विषय भोग तो कूतरा गधेडाने पण छे, माटे विषय भोगववा सारु मनुष्यनो देह नथी, अने मनुष्यदेहने तो देवता पण इच्छे छे, ते पण कांइ विषय भोगववा सारु नथी इच्छता. केम के मनुष्यना करतां तो देवताने

कोटि गणा विषय उत्तम छे, अने देवताना विषय आगळ तो मनुष्यना विषयने नरक जेवा कह्या छे. जेम मनुष्यनुं नरक छे ते कूतरा कागडानुं खाणुं छे. तेम मनुष्यना विषय छे ते देवतानुं नरक छे.

माटे विषय भोगववा सारु देव जे ते मनुष्यनो देह नथी इच्छता; मनुष्यनो देह तो एटला सारु इच्छे छे जे ते देहे करीने प्रत्यक्ष भगवान के भगवानना संत पोताने मळे अने तेनो समागम करीने ज्ञान पामवुं अने ते ज्ञाने करीने पंच विषयनी वासनानो त्याग करीने, भगवान भजीने जन्म मरणना दुःख थकी मुकाइने भगवानना धामने पामवुं, एटला सारु देवता जे ते मनुष्य देहने इच्छे छे, अने मनुष्यदेह पाम्या विना देवताना लोकमां जीवनो मोक्ष थतो नथी, तथा पशु पक्षि आदिकना देहे करीने पण भगवान भजाता नथी, अने जीवनो मोक्ष पण थतो नथी, एटला सारु मनुष्यनो देह दुर्लभ कह्यो छे; माटे पोताने मनुष्यनो देह होय अने प्रत्यक्ष भगवान तथा ते भगवानना संत पंच विषयना त्यागी तेनो समागम पोताने मळे त्यारे जीवनो मोक्ष थाय छे, पण ते विना एकला मनुष्यने देहे करीने जीवनो मोक्ष थतो नथी. केम के जीवने चोराशी फरतां फरतां अनंतवार मनुष्यना देह आवी गया छे तो पण ते मनुष्यने देहे करीने जीवनो मोक्ष थयो नथी. केम के जो मोक्ष थयो होत तो चोराशीमां जन्ममृत्युनां दुःख शुं करवा पामे? माटे मनुष्यनो देह अने कल्याणकारीनो संबंध तेनेज अतिशय दुर्लभ कह्यो छे.

ते दुर्लभ समो आज तमारे प्राप्त थयो छे. माटे सावधान थइने पोताना आत्मानुं काम सत्संग करीने सुधारी लेवुं. अने स्त्री छोकरांने अर्थे रात दहाडो महेनत करवी तेनुं तो कांइ फळ नथी. अने ए तो सर्वे कोइ कोइनुं नथी. अने जीवने उलटा बंधनना करनारा छे. अने जे भगवान अने भगवानना संतने प्रसन्न करवाने अर्थे सेवा भक्ति करे छे तेनुं तो

कल्याण थाय छे. अने अंतसमे भगवान तेने मोटा भय थकी रक्षा करीने पोताना धामने पमाडे छे. ते पूर्वे पण जेने जेने भगवान अने भगवानना संतने प्रसन्न करवाने अर्थे भक्ति सेवा करी छे तो ते पण परम पदने पामी गया छे. अने तेमनां नाम शास्त्रमां लखाणां छे.

—माटे आ समे पण जे जे अमने प्रसन्न करवाने अर्थे अमारी आज्ञा प्रमाणे अमारी सेवा भक्ति करशे, तेना भाग्यनो पार नथी. अने ते सेवाभक्तिना करनारा देह छते ज ब्रह्मरूप थइ जशे. अने तेने जन्म मृत्युनो भय देह छते ज टळी जशे अने तेने देहनुं निमित्त आवी रहेशे त्यारे जेम कोइक वस्त्र शरीर उपरथी उतारीने कोरे मुके, तेम वस्त्ररूप देह तेनो त्याग करीने दिव्य एवो जे ब्रह्ममय तनु, तेनुं धारण करीने अक्षरधाममां भगवानी समीपे अखंड निवास करीने रहेशे.

—केम के सर्वे अवतारनो अवतारी एवो जे हुं ते आज मारो एवो संकल्प छे. "जे जे मारा संबंधने पामीने मारी सेवाभक्ति धर्ममां रहीने करशे तेने मारा धाममां लइ जवा छे." माटे आज जेने मनुष्यनो देह आव्यो छे अने ते धर्ममां रहीने अमारी सेवा भक्ति करे छे तेनां बहु ज मोटां भाग्य छे."

॥ इति श्री मुखसिद्धांत १५ समाप्त ॥

१६ विषय :—दर्शन करवानी रीत

श्री हरिकृष्णाय नमो नमः—संवत् १९१४ ना महावदी ८ ने दिवस महाराज श्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्री चूडा मध्ये भट्ट हरिभाई जीवरामने घेर उगमणा चार ओरडानी ओसरीमां ढोलिया उपर गादी तकीया बिछावीने ते उपर विराजमान थया हता. सर्वे जरीयानी वस्त्रो धारण कर्यां हतां. पुष्पना गुंथेला हार, तोरा गजरा, बाजुबंध, पोंचीयो, वींटीओ, छोगलां

ते धारण कर्या हतां ललाटने विषे केसरनी अर्चा अने कंकुनो चांदलो कर्यो हतो. अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देशदेशना हरिभक्तोनी सभा भराइने बेठी हती.

प्रश्न :--पछी भगवान बोल्या जे "सर्वे सांभळो--तमारा हितनी एक वात करुं छुं. जे भगवानने दर्शने आववुं अथवा भगवानना संतने दर्शने जवुं--त्यारे दर्शन अने प्रश्न बे करवां. त्यारे तेने दर्शन पूरूं कर्युं कहेवाय. तेमां दर्शन ते शुं ?

--तो भगवान अने भगवानना संतना स्वरूपने अंगो-अंग निरखीने अंतरमां उतारवुं तेनुं नाम दर्शन कर्युं कहेवाय. अने हवे प्रश्न ते शुं ? तो जीव जे ते पोताना आत्मस्वरूपने नथी जाणतो तथा परमात्माने नथी जाणतो अने तेने करीने देह मिथ्या छे तेने सत्य मानीने झांझवारूप एवा जे पंच-विषय तेने पामवानी वासनाए करीने वारंवार जन्म मृत्युने जीव पामे छे. ते रूपी जीवने मोटो संशय छे. ते संशयने टाळवा सारु सत्पुरुषने प्रश्न पूछवुं पछी ते सत्पुरुष जीवने जन्म मृत्युरूपी संशय टळे तेने अर्थे जे जे वार्ता करे ते वार्ताने एकाग्रवृत्ति करीने पोताने सांभळवी. अने ते वार्ता सांभळीने पोताना अंतरमां धारी राखवी अने ते वार्तानुं मनमां मनन करवुं. अने ते वार्ताने नित्य नवी ने नवी राखवी. अने ते सत्पुरुषे जेवी रीते वर्तवानुं कह्युं होय तेवी रीते वर्तवा मांडवुं. अने एवी रीते जे दर्शन प्रश्न करीने वर्तवा मांडे छे तेने जन्म मृत्यु रूपी महारोग ते टळी जाय छे. अने तेने आत्मा परमात्मानुं साक्षात्कार ज्ञान थाय छे. अने ते जीवनो मोक्ष थाय छे.

माटे एवी रीते समजीने सत्पुरुषनां दर्शन करवां एज मनुष्य देहनो लाभ छे. अने तेने ज दर्शननुं महाफळ थाय छे. अने तेने जन्म मृत्युनो संशय टळे छे. अने जन्म मृत्युने टाळे एवा जे सत्पुरुष तेनुं

जे दर्शन ते पण अतिशय दुर्लभ छे. अने एवा सत्पुरुषनुं दर्शन थाय त्यारे पोतानुं मोटुं भाग्य मानवुं. अने वळी जेने महासुखीया थवुं होय तेणे एम समजवुं जे "मायिक पंचविषय छे ते तो स्वप्नना सुखडा जेवा छे. जेम स्वप्नामां सूझे तेटला पदार्थ भोगवीए पण ते जग्या पछी मिथ्या थइ जाय छे. तेम पंचविषयने सुझे तेटला भोगवे, पण अंत समो आवे छे त्यारे ते एम जाणे जे कोई दहाडे विषय भोगव्या ज नथी. अने ते अंत समो ते सर्वने एक दिवस जरूर आवनारो छे. अने ज्यारे अंतसमो आवशे त्यारे पहेलां सुझे एटला विषय भोगव्या हशे तेनुं सुख जे ते लेशमात्र रहेशे नहीं." एम जाणीने विषयनी वासनानो त्याग करीने पोताने मळ्या जे प्रत्यक्ष भगवान तेने सुखे करीने सुख मानवुं. अने तेनो पोताने केफ राखवो, "जे अनंतकोटी ब्रह्मांडना पति अने सर्वेना कारण जे परमात्मा भगवान जेनी आज्ञामां सूर्य, चंद्र, रात दहाडो फरे छे. अने काळ, कर्म अने माया ते जेनी आज्ञा थकी उत्पत्ति, स्थिति, अने प्रलय करे छे अने जेने अर्थे मोटा मोटा राजा राज्यनो त्याग करीने वनमां तप करे छे एवा जे भगवान ते मने आज प्रगट मळ्या छे माटे मारा भाग्यनो पार नथी" एम महा अलमस्त थइने विषयना सुखने तुच्छ जाणीने तेनो त्याग करवो अने एक भगवान अने भगवानना संतना समागमना सुखे करीने ज महा आनंदमां रहेवुं."

॥ इति श्रीसुख सिद्धांत १६ समाप्त ॥

१७ विषयः—आसुरी अने दैवी जीवनो स्वभाव

श्री हरिकृष्णाय नमोनमः—संवत् १९१४ ना महावदी ९ ने दिवस महाराजे श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री चूडा मध्ये व्यास वेणीराम लीलाधरने घेर आथमणा घार ओरडानी ओसरीमां ढोलिया उपर गादी

तकिया विछावीने विराजमान थया हता. श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां. मस्तक उपर कसुंवल फेंटो वांध्यो हतो सर्वे अंगने विषे पुष्पनां आभूषणो धारण कर्यां हतां. अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधुओ तथा देशदेशना हरिभक्तोनी सभा भराइने वेठी हती, अने ते समे सर्वे हरिभक्तोए भेट सामग्री जे वस्त्राभूषण, द्रव्य, फळ, पुष्प, धूपादिके करीने भगवाननी पूजा करी अने पछे सर्वे वेठा.

प्रश्नः—पछे भगवान सर्वे हरिभक्तो प्रत्ये वोल्या--जे "आ जगतने विषे वे प्रकारना जीव छे. तेमां एक दैवी जीव छे अने एक आसुरी जीव छे.

तेमां जे आसुरी जीव छे ते तो पोते अधर्मने मार्गे चाले छे. अने पोतानां स्त्री-छोकरा कुटुंवी होय तेने पण अधर्मने मार्गे चलावे छे. अने तेमने भूंडी भूंडी क्रियाओ शीखवे छे. अने पोते पण नरसी ज क्रिया करे छे. अने एवा जे अधर्मी होय तेने सत्पुरुषनो समागम करवो गमे ज नहीं. केम के अधर्मे करीने एनी बुद्धि भ्रष्ट थइ गइ छे माटे तेनाथी धर्मने मार्गे चलाय ज नहीं.

जेम अफीणनो वंधाणी होय तेने एम कहीए जे तने साकरना लाडवा आपीए, जो अफीण मुकी दे तो. त्यारे ते वंधाणी अफीणनो त्याग करीने लाडवा लेवानो संकल्प करे ज नहीं. अने ते अफीणे करीने हेरान थतो होय तो पण ते अफीण विना लाडवाने महादुःखरूप जाणे. तेम अधर्मी जीवने सत्पुरुषनो संग करवो गमतो नथी.

—अने हवे जे दैवी जीव छे ते तो पोते पण धर्मने मार्गे ज चाले अने पोतानां स्त्री, छोकरां, सगा, संवंधी, तेमने पण धर्मने मार्गे चलावे अने एवा जे दैवी जीव होय ते ज सत्पुरुषनो समागम करे छे. अने पोतानः स्त्री, छोकरां, सगा, कुंटुंवी होय तेने पण सत्पुरुषनो समागाम करावे छे अने पोतानां स्त्री छोकरां जेम जेम सत्पुरुषनो वधु वधु समागम करे तेम तेम जे दैवी जीव होय ते वधु वधु राजी थाय पण तेमां

सरखा छे.) केम के राजाने एक शेर अन्न खावा जोइए अने रांकने पण शेर अन्न जोइए. अने वधु होय ते तो पड्युं रहेवानुं छे. अने तेने मोहे करीने देखीने राजी थाय छे. केम के सो मण सुखडुं होय तोपण तेमांथी एक शेर सुखडुं खवाय, पण वधु खवाय नहीं. अने जो रसनानी आसक्तिए करीने, रसना इन्द्रियने वश थइने वधु खाय तो उलटुं महादुःख थाय. माटे देहनिर्वाहने अर्थे अवश्य जोइए तेटलुं तो राजा रंक सर्वे ने सरखुं मळे छे. अने बाकी तो मोहे करीने पंचविषयना पदार्थने देखीने दुःखने विषे सुख मनाय छे. पण विषयमां सुख जे ते लेशमात्र नथी.

--माटे भगवानना भक्त होय तेणे तो स्थूळ, सूक्ष्म अने कारण ए त्रण देह अने जाग्रत, स्वप्न, अने सुषुप्ति ए त्रण अवस्था अने रज, तम अने सत्त्व ए त्रण गुण, ते थकी पर एवुं जे गुणातीत अक्षरब्रह्म तेने पोतानुं स्वरूप जाणवुं अने पंचविषयनी जे अशुभ वासना तेनो त्याग करीने भगवान अने भगवानना संतने विषे प्रीति करवी. अने जे एवी रीते समजीने भगवान अने भगवानना संतने विषे प्रीति करे छे; ते तो देह छते ब्रह्मरूप थाय छे अने तेने पंचविषय भोगव्यानी आसक्ति रहेती नथी. केम के एणे तो सर्वेनुं प्रमाण करी राख्युं छे. माटे ते कोइ विषयमां मोह पामे नहीं अने एवी समजणवाळा भगवानना भक्त छे ते तो बीजा घणाक जीवोनो उद्धार करे छे."

॥ इति श्री मुखसिद्धांत १७ समाप्त ॥

---

१८ विषय :—रागरूपी कांटो काढवानो उपाय

श्री हरिकृष्णाय नमोनमः—संवत् १९१४ ना महावदी १० ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री चूडा मध्ये व्यास वेणीराम लीलाधरने घेर आथमणा बारना ओरडानी ओसरीमां ढोलिया उपर

गादी तकिया नखावीने विराजमान थया हता. सर्वे कसुंबल वस्त्रो धारण कर्यां हतां. सर्वे अंगने विषे पुष्पनां आभूषणो शोभी रह्यां हतां. ककुंनो चांदलो कर्यो हतो. अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देशदेशना घणा हरिभक्तोनी सभा भराइने बेठी हती.

प्रश्न :—पछे महाराज बोल्या जे आ जीवे रजोगुणी कर्मे करीने केटलाक विषय भोगव्या छे. अने तमोगुणी कर्मे करीने केटलाक विषय भोगव्या छे अने सत्त्वगुणी कर्मे करीने केटलाक विषय भोगव्या छे. एवी रीते जीवे चोराशीमां विषयवासनाए करीने अनंत भोग भोगव्या छे. ते विषयना रागरूपी जीवमां कांटो वाग्यो छे. अने ते विषयना रागरूपी कांटानी पीडाए करीने जीव जे ते जन्म मृत्यु रूपी महाकष्टने पामे छे. अने ते रागरूपी कांटो कोइ देव ब्रह्मादिक काढवाने समर्थ नथी. केम के जीव जे ते अतिशय सूक्ष्म छे अने ते जीवमां विषयना रागरूपी कांटो वाग्यो छे. माटे ते कांटाने काढवाने कोइ समर्थ नथी. केम के जीव तो सर्वेनो द्रष्टा छे. ते दृश्य-द्रष्टानी पीडाने केम टाळी शके ? न ज टाळी शके. अने द्रष्टा होय ते दृश्यनी पीडाने टाळे छे. तेम पिंड ब्रह्मांड आदिक तथा देव ब्रह्मादिक तथा वैराट, प्रधानपुरुष अने मूळ प्रकृतिपुरुष सुधीना सर्वे आकार मात्र ते सर्वे आत्माना दृश्य पदार्थ छे. अने आत्मा तेनो द्रष्टा छे. माटे देव, ब्रह्मा अने प्रकृति पुरुषना लोक मांहेनो कोइ पुरुष ते जे ते आत्माने रागरूपी जे कांटो तेने काढवाने समर्थ नथी. माटे ते जीवने जे रागरूपी कांटो छे तेने काढवाने तो ते जीवना द्रष्टा एवा जे परमात्मा भगवान तथा भगवानना साधर्मपणाने पाम्या एवा जे निर्वासनिक संत, ब्रह्मरूप मुक्त ते काढवाने समर्थ छे. केम के भगवान ते तो जीवना जीवन छे, अने आत्माना आत्मा छे, अने अक्षरना आधार छे, सर्वे आत्माना अंतर-

जामी छे, अने सर्वेंना आत्माना प्रकाशक छे. तेवा जे भगवान अने भगवानना संत ते जे ते जीवोनी उपर दया करीने मनुष्य स्वरूपनुं धारण करीने पृथ्वी उपर पधारे छे अने जीवने विषयना रागरूपी कांटो चैतन्यमां वाग्यो छे तेने ज्ञानरूपी शस्त्रे करीने काढे छे. अने ज्यारे वासनारूपी कांटो जीवना चैतन्यमांथी निसरी जाय छे त्यारे जीव जे ते महाशान्तिने पामे छे. अने जन्म-मृत्युरूपी जे महा पीडा ते टळी जाय छे.

ते ज्ञानरूपी शस्त्र केवुं छे? तो अतिशय सूक्ष्मथी पण सूक्ष्म छे. अने शुद्ध छे, अने प्रकाशवान छे. अने ते ज्ञानना आधार अने प्रकाशक पण प्रत्यक्ष भगवान अने भगवानना संत छे. पण ते प्रत्यक्ष भगवान अने भगवानना संत विना बीजा कोइ पासे एवुं ज्ञान नथी. माटे आ समे जेने मनुष्यनो देह आव्यो छे. अने जेने आ सत्संगनो जोग मळ्यो छे तेनां बहु मोटां भाग्य छे. केम के पोताने मनुष्यनो देह अने प्रगट भगवान अने भगवानना संतनी प्राप्ति थइ एज अतिशय दुर्लभ लाभ छे. माटे आ लाभने अति जतन करीने राखजो. पण अणसमजणे करीने गाफलाइ (बेदरकारी) न राखवी. अने सत्संगनो जोग अखंड राखवो, ए ज सर्वे जीवनी हितवार्ता छे." एम कहीने भगवान उठ्या अने पोताने उतारे पधार्या.

॥ इति श्री मुखसिद्धांत १८ समाप्त ॥

१९ विषय :—अज्ञानी जीव विषयनी उपासना करे छे

श्री हरिकृष्णाय नमोनमः—संवत् १९१४ना महावदी ११ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री चूडा मध्ये व्यास दयाळजी लीलाधरने घेर् आथमणे वारना ओरडानी ओसरीमां गादी तकीया युक्त

ढोलिया उपर विराजमान थया हता. सर्वे जरीयानी वस्त्रो धारण कर्यां हतां. पुष्पनां आभूषणो सर्वे अंगमां शोभी रह्यां हतां. ललाटने विषे केसरनी अर्चा अने कुंकुंनो चांद्लो कर्यो हतो. अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देशदेशना हरिभक्तोनी सभा भराइने बेठी हती.

प्रश्नः—पछी भगवान श्री बोल्या जे सर्वे सांभळजो, एक वार्ता करीए छीए—"जे आ सर्वे जीव छे तेने पंचविषयनी वासना अनादिनी छे. ते वासनाए करीने जीव आत्मा परमात्माना स्वरूपने भूलीने ते विषयने पामवा सारु विषयनी उपासना करे छे." जेम भगवानना भक्त भगवानने पामवा सारु भगवाननी उपासना करे छे तेम वासनावाळा जीव विषयने पामवा सारु विषयनी उपासना करे छे.

ते केवी रीते उपासना करे छे? तो कामभोगने पामवा सारु वेश्याओ अने भवाया अने सारां सारां वस्त्र घरेणां पहेरीने जे नाना प्रकारनां गान तान करे छे. अने तेने जे जुए छे ते कामने उपजाववा सारु जुए छे. अने जे विवाहमां सारां वस्त्र घरेणां पहेरे छे तथा सारा रस जमे छे तथा फटाणां, गाणां स्त्रीओ गाय छे अने तेने पुरुषो सांभळे छे ते सर्वे कामने उपजाववा सारु सांभळे छे. अने जे सोनी नाना प्रकारनां घरेणां घडे छे ते पण कामने उपजाववा सारु घडे छे. अने जेटला चींचोडा बोले छे तथा कोसनां पैडां फरे छे ते सर्वे कामनी ज उपासना छे. अने ढोल, नगारां, शरणाइ आदिक वाजिंत्रो वागे छे ते पण कामने ज उपजाववा सारु वागे छे. अने लीला पीळादिक चित्र विचित्र भात भातना रंग बनाव्या छे ते पण कामने उपजाववा सारु ज बनाव्या छे. अने खाटा, खारा, तीखा तमतमा, गळ्या, चीकणादिक रस बनाव्या छे ते पण कामनी ज उत्पत्तिनां कारण छे. अने अत्तर, चंदनादिक सुगंध ते सर्वे कामनी ज उत्पत्ति सारु छे. अने नाना प्रकारनी सज्जाओ

(पथारीओ) ढोलियाओ, हींडोळाखाटो, मेडीयो, बंगला, ए आदिक सर्वे पदार्थ ते पण कामनी उत्पत्ति करवा सारु छे, अने घोडा, हाथी, पालखीओ म्हेना, व्हेलो (रथ) आदिक सर्वे कामने उपजाववा सारु छे. एवी रीते आ विश्वमां पंचविषयनी कामनारूपी फांसीओ रची छे. अने ते फांसीओमां अज्ञानी जीव पडे छे अने तेमां विषयी जीव रची पची रहे छे.

जेम बोकडो कसाइना घेर लीली धरो खाइने रची पची रहे छे तेम जीव जे ते काळरूपी कसाइने घेर लीली धरो रूपी पंचविषयना पदार्थने भोगवीने रची-पची रह्यो छे. पण जेम बोकडाने कसाइ हलाल करनारो छे तेनी बोकडाने खबर नथी. तेम कसाइरूपी जे काळ जीवने हलाल करशे, कहेतां काळ अचानक उपाडी जशे पण तेनी बोकडा जेवा अज्ञानी जीव तेने खबर नथी.

अने पंचविषयने भोगववे करीने जीवनी विपरीत भावना थइ गइ छे. अने ते विपरीत भावनाए करीने आत्मा परमात्माने भूलीने विषयरूपी फांसीमां जडाइ रह्यो छे. अने ते जीव जे ते विषयने ज जीवनरूप माने छे. अने जे भगवान अने भगवानना एकांतिक संत प्रगट थाय छे. ते तो जीवने विषय थकी मुकावीने मायापर करवा सारु प्रगट थाय छे. एम भगवान अने भगवानना संत ज्यारे पंचविषयनुं खंडन करीने ते थकी मुकाव्यानुं करे छे त्यारे जे दैवी अने मुमुक्षु जीव होय ते तो घणा खुशी थाय छे अने ते जीव जे ते भगवाननी आज्ञाए करीने अधर्म, अनीति, फेल-फीतुरादिकनो त्याग करीने धर्म, ज्ञान, वैराग्य, भक्ति, शील संतोषादिक जे रूडा गुण तेने दृढ करीने राखे छे. अने पोतानां इन्द्रियो, अंतःकरणने वश करीने परमेश्वर जे प्रत्यक्ष मूर्ति तेने विषे जोडी दे छे. अने तेनो मोक्ष थाय छे.

अने जे आसुरी जीव होय तेने तो ज्यारे भगवान प्रगट थाय त्यारे उलटुं दुःख थाय छे अने ते तो एम जाणे जे अमारो काळ प्रगट थयो छे. ते कृष्णावतारमां कंसने पण एम जणाणुं हतुं. " जे कृष्ण तो मारो काळ प्रगट थयो छे" एम जाणतो. अने भगवान पण आसुरीना तो काळ छे. अने आसुरी जीव कोइ दहाडे परमेश्वरनो भक्त थाय ज नहीं. जेम अफीण ते साकर थाय ज नहीं तेम आसुरी ते भगवानने भजे ज नहीं. अने ते आसुरीजीव तो नरक-चोराशीमां जइने जन्म मृत्युना दुःखने भोगवे.

माटे ज्यारे ज्यारे भगवानना अवतार थाय छे त्यारे आसुरी जीव तो महादुःखने ज पामे छे. केम के परमेश्वर विना बीजो कोइ एवा दुष्टोने दंड देवाने समर्थ नथी. माटे परमेश्वर ज तेने प्रगट थइने दंड आपे छे. अने जे दैवी मुमुक्षु जीव छे तेने तो परमेश्वर प्रगट थइने अतिशय सुख आपे छे. अने एवा असुरोना भय थकी रक्षा करे छे. ते गीतामां कह्युं छेः—

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम् ।
धर्म संस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे ॥

माटे आज तमारे सर्वने सुखीया थवानो समो आव्यो छे, ते तमारा भाग्यनो पार नथी. माटे अधर्म, अनीतिनो त्याग करीने हरिकृष्ण, हरिकृष्ण, भजन करजो, एज अतिशय तमारा हितनी वार्ता छे. अने तमारे आज समो आव्यो छे ते समो चूकवो नहीं, केम के "जे मळे टाणे ते पछे न मळे खरचे नाणे." माटे आ देहनो पळमात्रनो निर्धार नथी ते सारु तत्काळ पोतानुं काम करी लेवुं.

—अने पूर्वे भगवानने पामवा सारु भगवानना भक्त केवा केवा दाखडा (प्रयत्न) करता? अने तप करवाने बेसता त्यारे माथे राफडा चडी जता तथा कानमां सुगरीयो माळा घालती, तथा वनमां आसन वाळीने

बेसता त्यारे साथळमां दर्भनी सळीयो सोंसरी नीसरी जाय तो पण शरीरने चोरता नहीं. एवो परमेश्वर भजवानो आग्रह राखता अने ध्रुव, प्रह्लाद, हरिश्चंद्र, गोपीचंद, अने मोरध्वज आदिक मोटा मोटा राजाओ तेणे पण भगवान भजवा सारु केवां केवां कष्ट सहन कर्यां छे? त्यारे भगवान तेना उपर प्रसन्न थया छे.

अने आज तो एवडो दाखडो करवो पडे एम नथी. केम के आज तो अमारो एवो संकल्प छे जे अधर्म अनीतिनो त्याग करीने, जगतना मान-मोटप थकी निवृत्ति पामीने, अमारो अने अमारा संतनो समागम करे तो तेने अमे ज्ञान आपीने, निर्वासनिक करीने, ब्रह्मने विषे स्थिति करावीने, आत्यन्तिक मुक्ति आपीए छीए. माटे विषय भोगरूपी कामनानी उपासनानो त्याग करीने सत्संग करवो, तो तेनो साक्षात्कार मोक्ष थशे."

॥ इति श्री मुखसिद्धांत १९ समाप्त ॥

---

२० विषय :—निर्बीजसांख्य-योग अने सबीजसांख्य-योग

श्री हरिकृष्णाय नमोनमः—संवत् १९१४ ना महावदी १२ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री चूडामध्ये व्यास दयाळजी लीलाधरने घेर आथमणे वार ओरडानी ओसरीमां पाट उपर गादी तकीया नखावीने विराजमान थया हता. सर्वे कसुंबल वस्त्रो धारण कर्यां हतां. पुष्पना हार कंठमां धारण कर्या हता. पुष्पना बाजुबंध. गजरा, तोरा अने गुच्छ खोसी रह्या हता. कंकुनो चांदलो कर्यो हतो. पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देशदेशना हरिभक्तोनी सभा भराइने बेठी हती.

प्रश्न :—पछी महाराज श्री हरिकृष्ण भगवान बोल्या जे "जीवनी मुक्ति थवी ते ज्ञान विना थाय नहीं.

ते वेदमां कह्युं छे–'ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः'। ए श्रुतिमां पण एम कह्युं छे जे "भगवानना स्वरूपना ज्ञान विना मुक्ति थाय नहीं." हवे ते भगवानना स्वरूपनुं ज्ञान केम थाय? केवी रीते थाय?

तो भगवानना स्वरूपनुं ज्ञान भगवान अने भगवानना संत थकी ज थाय छे. ते ज्ञानने कहीए छीए. जे जेम आ पचास करोड योजन पृथ्वी छे तेनुं ज्ञान कराववुं होय त्यारे ते पृथ्वी, वन, पर्वत, नदीयो, समुद्रो, द्वीप, खंड, शहेर, परगणां सहित पृथ्वीनी आकृति कागळमां लखीने (चीतरीने) देखाडी होय तो पृथ्वीनुं ज्ञान थाय. तेम भगवानना स्वरूपनुं ज्ञान सिद्ध कराववा सारु चार शास्त्रमां भगवानना स्वरूपनी आकृति लखी छे. ते ए चार शास्त्रना ज्ञानने प्रत्यक्ष महात्मापुरुष पासेथी सिद्ध करे तो भगवानना स्वरूपनुं ज्ञान साक्षात्कार थाय छे.

ते चार शास्त्र कयां–तो (१) निर्बीज सांख्य (२) निर्बीज योग (३) सबीज सांख्य अने (४) सबीज योग. ए चार प्रकारना सांख्ययोगे करीने भगवानना स्वरूपनुं यथार्थ ज्ञान थाय छे. अने ते चारे प्रकारना ज्ञानने सत्पुरुष पासेथी सिद्ध करे तो निर्बाधपणे सवळुं ज्ञान समजाय. पण जो असत् पुरुष पासेथी सांभळे तो तेने भगवानना स्वरूपनुं ज्ञान मुद्दल थाय ज नहीं. अने असत् पुरुषना उपदेशे करीने रंच मात्र वासना टळे नहीं. अने वासना टळ्या विना ज्ञान थाय नहीं. माटे पंचविषयनो रोग क्यारे टळे? तो सत्पुरुष थकी शुद्ध संप्रदायनुं ज्ञान लेवुं. ते ज्ञान शुं?

–तो प्रथम मुमुक्षुने एटलुं तो पोतानी मेळे समजवुं जोइए जे जगतने विषे उपदेष्टा कहेवाता होय तेनी परीक्षा करवी. ते शी परीक्षा करवी? तो प्रथम तो जे पंचविषयनो मूळमांथी देहे करीने त्याग करता होय. अने बीजा केटलाक मुमुक्षुने पंचविषयनो त्याग करावता होय अने देह आत्मानो विवेक करीने "आत्माने पोतानुं रूप मनावता होय.

अने आत्माथी जुदा अने आत्माना प्रकाशक अने सर्वे जगतना कर्ता हर्ता एवा परमात्मा छे. ते आत्मा अनंत छे अने परमात्मा एक छे एम समजीने ते परमात्मानी उपासना करता करावता होय, अने तेने धर्म पाळवा पळाववानो ममत्व होय, पण जगतना पदार्थनो ममत्व होय नहीं." एवा लक्षण जेने विषे जणाय, तेनो समागम करवो अने ते थकी ज्ञान पामवुं.

एमां प्रथम तो धर्मे करीने इन्द्रियोना जे रमणिक सारा सारा विषय तेनो त्याग करवो अने ज्यारे इन्द्रियो विषयनो त्याग उपरथी (देहेथी) नियमे करीने दृढपणे करे छे त्यारे अंतःकरणमांथी पण विषय पामवाना संकल्प बंध थइ जाय छे. अने अंतःकरणनी वृत्ति निवृत्तिपर थाय छे. पछी तेने महात्मा पुरूषनुं ज्ञान जीवमां उतरे छे पण ज्यांसुधी इन्द्रियोना विषयनो त्याग करे नहीं त्यां सुधी तेने ज्ञान कोइ काळे थाय नहीं. अने ज्ञान विना आत्यंतिक मुक्ति जे अक्षरधाम तेने न पमाय. माटे ज्ञान पामवाने अर्थे उपरथी तो विषयनो त्याग करवो. अने पछे तेने महात्मा पुरुष जे ते इन्द्रियोनो नियम करावीने निर्बीज सांख्यनुं ज्ञान आपे छे.

(१) ते निर्बीज सांख्यनुं ज्ञान एम छे. जे मायाना चोवीस तत्त्वात्मक जे पिंड अने ब्रह्मांड, तेना आकारमात्र तेथी आत्मा नोखो छे अने चैतन्य छे अने निराकार छे. अने व्यापक छे. अने ते आत्मा पोतानुं स्वरूप छे. अने पिंड ब्रह्मांड ते जड छे. अने मिथ्या छे. अने दुःखरूप छे एम जाणीने आत्माने विषे स्थिति पामवी तेनुं नाम निर्बीज सांख्यनुं ज्ञान छे.

(२) अने पछे निर्बीज योगने ज्ञाने करीने पिंड ब्रह्मांडादिकने चार प्रकारना प्रलयवडे करीने नाश पमाडीने पछे पोताना आत्माने अक्षरने विषे एकत्वपणुं करवुं. कहेतां "हुं अक्षरब्रह्म छुं" एम समजीने

ब्रह्मने विषे स्थिति पामवी अने ज्यारे अक्षरब्रह्मने विषे स्थिति थाय छे त्यारे पिंड ब्रह्मांडादिक मायिक आकारमात्र तेनी दृष्टिमां रहेता नथी तेनुं नाम निर्बीजयोगनुं ज्ञान छे.

(३) अने पछी सबीज सांख्यनुं ज्ञान करावे छे. ते सबीज सांख्यनुं ज्ञान एम छे जे निर्बीज सांख्य अने निर्बीजयोगे करीने अक्षरब्रह्मनी स्थितिने पाम्या एवा अनंतकोटि मुक्त छे ते ए सर्वे मुक्तना आधार अने प्रकाशक अने तेने भजवा-उपासना करवा योग्य एवा परब्रह्म परमात्मा छे अने ते परमात्मा अक्षरधामने विषे दिव्य साकारमूर्ति अखंड विराजमान रह्या छे. एम समजवुं, एनुं नाम सबीज सांख्यनुं ज्ञान छे.

(४) अने हवे सबीज योगनुं ज्ञान एम छे जे 'सबीज सांख्यमां कह्या एवा जे परमात्मा भगवान दिव्यमूर्ति ते जे ते जीवोने ज्ञान आपवा सारू पृथ्वी उपर मनुष्याकृतिनुं धारण करीने पोताना आश्रितोने ज्ञान आपे छे.' एम जाणीने प्रत्यक्षमूर्ति भगवान तेने विषे नवधा भक्तिए करीने जोडाइ जवुं. अने ते प्रत्यक्ष भगवाननी मूर्ति विना क्यांय सत्य देखवुं नहीं, तेनुं नाम सबीज योगनुं ज्ञान छे.

अने एवी रीते जेने प्रत्यक्ष भगवानना स्वरूपनुं ज्ञान थाय छे तेने कारण वासना जे मूळ अज्ञान ते नाश पामी जाय छे. ने भगवानना साधर्म्यपणाने पामे छे. ने कोइने एवी रीते सांख्ययोगनुं ज्ञान तो थयुं न होय पण जो तेने एवा ज्ञानना आपनारा प्रगट भगवान अने एवा ज्ञानने पामीने सिद्ध थया एवा जे भगवानना निर्वासनिक पंचविषयना त्यागी संत तेनो संग मळ्यो छे ने ते देहे करीने पंचविषयनो त्याग राखे छे तो तेने पण तेवुं ज्ञान जरूर थशे, अने तेने कदापि जाडी बुद्धि होय अने देह पर्यन्त एवुं ज्ञान न थयुं तो तेने अंतसमये एवुं ज्ञान भगवान जे ते जरूर करावे छे ने पोताना अक्षरधामने पमाडे

छे. माटे जेने प्रत्यक्ष भगवान अने भगवानना संत मळ्या छे अने जेने भगवान ने भगवानना संतनेविषे प्रीति थइ छे. ने ते भगवाननी आज्ञाए करीने पंचविषयनो त्याग करीने भगवान अने भगवानना संतनी सेवा करे छे अने अखंड समागममां पड्यो रहे छे तेने पण ते ज्ञानीना बरोवर प्राप्ति थाय छे."

॥ इति श्री मुखसिद्धांत २० समाप्त ॥

(२१) विषय :—एकांतिक धर्म पामवानी रीत

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः–संवत् १९१४ना महावदी १३ ने दिवस महाराज श्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्री चूडा मध्ये दवे मोनजी नथुरामने घेर आथमणे वार ओरडानी ओसरीमां ढोलीया उपर गादी तकिया नखावीने विराजमान थया हता. सर्वे जरीयानी वस्त्रो धारण कर्यां हतां. सर्वे अंगने विषे पुष्पनां आभूषणो शोभी रह्यां हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तोनी सभा भराईने बेठी हती.

प्रश्नः–पछे धर्मानंदस्वामीए प्रश्न पूछ्युं जे–" हे महाराज एकान्तिक धर्म केम पमाय ? "

पछे भगवान बोल्या जे–" एकान्तिक धर्मना पमाडनारा एवा जे मायाथी पर परमात्मा भगवान ते जीवने प्रत्यक्ष मळे अने ते भगवाननो मन कर्म वचने दृढ आशरो करे, ने तेनी आज्ञा प्रमाणे वर्ते अने तेने एकान्तिक धर्म पामवाने विषे उत्तम श्रद्धा थाय तो तेने प्रत्यक्ष भगवान एकान्तिक धर्म पमाडे छे.

ते केवी रीते एकान्तिक धर्म पमाडे छे? तो प्रथम तो जीवने चोराशीमां अनंत प्रकारनां विषयवासनाए करीने दुःख भोगववां पडे छे तेनुं इन्द्रियो अंतःकरणमां अनुभवे करीने साक्षात्कार ज्ञान करावे छे, पछे तेने पंचविषयने विषे दुःख देखीने वैराग थाय छे. त्यारे पछे ज्ञानदाता तेने

सुधर्मनुं आचरण करावीने इन्द्रियो अंतःकरणने नियममां रखावीने धर्मने विषे स्थिति करावे छे. जे ते कोइ रीते देशकाळे करीने पण धर्म-थकी ते पडे नहीं. पछे तेने जड चैतन्यनो विवेक करावे छे अने माया-मांथी थयां जे चोवीस तत्त्व ते थकी आत्माने नोखो पाडे छे.

ते आत्मा केवो छे ? तो अच्छेद छे, अभेद छे, अविनाशी छे, सुखरूप छे, ज्ञानरूप छे, चैतन्य छे, व्यापक छे. अने चोवीस तत्त्वनो जे देह छे ते देह जे ते जड छे, दुःखरूप छे, नाशवंत छे, विकारवान छे. एवी रीते जड चैतन्यनो विवेक करावीने देहने विषे वैराग्य पमाडीने आत्माने विषे दृढ स्थिति करावे छे. पछे तेने भगवानना स्वरूपनो महात्म्ये सहित उत्तम निर्विकल्प निश्चय करावे छे. पछे भगवाननी श्रवण कीर्तन, सेवादिक नव प्रकारनी भक्ति करावीने जीवने शुद्ध करे छे. ते भक्ति केवी छे ? तो जीवने पापना समूह छे तेने नाश करीने जीवने तत्काळ ब्रह्मरूप करे एवी छे.

एवी रीते वैराग्य, धर्म, ज्ञान अने भक्ति ए चार साधननी अडग स्थिति करावीने इन्द्रियो, अंतःकरणनी वृत्तिओने प्रतिलोम कहेतां विषय-थकी पाछी वळावीने आत्माने विषे पोतापणानी दृढता करावीने ते आत्मामां परमात्मानी स्थिति करावे छे. अने अखंड, स्हेजसमाधिमां लक्ष बंधावे छे. अने प्रत्यक्ष भगवाननी जे मूर्ति तेनुं जे ध्यान करावे छे. पछे ए ध्यानना करनाराने मायानुं आवरण टळी जाय छे. ने तेने महा ब्रह्मानंद सुख प्राप्त थाय छे. अने ते मुक्त थइने अक्षरना साध-र्म्यपणाने पामे छे अने तेने एकान्तिक धर्मने विषे स्थिति थाय छे अने ते भगवानना अक्षरधाममां अखंड रहे छे. माटे प्रगट भगवान अने तेमना एकान्तिक संत ते थकीज एकान्तिक धर्म पमाय छे. पण प्रगट भगवान अने

जे जे साधन करे छे तेम तेम भगवानथी उलटुं छेटुं पडतुं जाय छे. अने महावनरूप जे जन्म, मरण, गर्भवास, चोराशी ने यमपुरी, तेने विषे महादुःखने भोगवे छे.

—माटे जेने मनुष्यनो देह आव्यो छे तेणे तो ए दुःख थकी छूटवानो उपाय करवो. अने ते दुःख थकी छूटवानो शो उपाय छे? तो मायाथी पर एवा जे सत्पुरुष, तेनो समागम करीने, ते थकी ज्ञान पामीने तेमां जीवने जोडी दीए तो ते जीव जन्म-मृत्यु आदिक दुःख थकी मुकाइने परम सुखने पामे.

जेम माथा फरेला पुरुषने कोइक वगर माथा फरेल पुरुष मळे अने ते पुरुषने वळगी पडे तो ते पुरुष तेने ठेकाणे पुगाडे. अने सुखीयो करे छे. तेम जीव जे ते मायामां भटके छे तेने मायाथी पर एवा जे परमात्मा भगवान तथा भगवानना संत ते जीवने मळे अने तेमने विषे जीव जे ते इन्द्रियो अंतःकरणे करीने जोडाइ जाय तो ते जीव जे ते मायाने तरीने परमपदने पामे.

माटे जेने महासुखीया थवुं होय तेणे प्रत्यक्ष सत्पुरुषने विषे जोडाइ जवुं. ते केवी रीते जोडावुं? तो श्रोत्रनी वृत्तिए करीने प्रत्यक्ष महात्मा-पुरुषना शब्दमां जोडाइ जवुं, कहेतां सत्पुरुष जे जे वचन कहे ते वचनने अंतरमां धारीने ते प्रमाणे दृढपणे समजीने वर्तवा मांडवुं. अने तेवी रीते प्रत्यक्ष भगवान अने तेना संतना शब्दने विषे जोडाय छे तेने आत्मा ने परमात्माना ज्ञानरूपी तथा भगवानना माहात्म्यरूपी इन्द्रियो अंतःकरणमां खटाइ चडी जाय छे. अने तेने पछे देहने पोतानुं रूप मानीने इन्द्रियो अंतःकरणरूप दाढे करीने विषयरूपी चणा चवाता नथी.

जेम सुझे एवो बळवान पुरुष होय ने ते दांते आखी सोपारी भांगी नाखतो होय, तेने आंबानी केरीनां खाटां भडदां (काची केरीनां छोडां) खवडाव्यां होय तो ते पुरुषथी पछे सेकेला चणा पण चवाय नहीं. अने रांधेला चोखा पण मांड मांड खाइ शके. तेम जेने आत्मा अने परमात्माना ज्ञानरूपी माहात्म्यरूपी खटाइ चडे तेने पंचविषयनां सुख ते दुःखरूप थइ जाय छे अने ते विषय भोगववाने समर्थ थाय ज नहीं. माटे एवी रीते जे भगवानना स्वरूपमां जोडाय छे, तेने कांइ करवुं रहेतुं नथी. अने तेना इन्द्रियो अंतःकरण सर्वे दिव्यभावने पामी जाय छे अने एवा भक्तना दर्शने करीने बीजा अनंत जीवोनां कल्याण थाय छे."

॥ इति श्री मुखसिद्धांत २३ समाप्त ॥

२४ विषय :—सत्संग करवानी रीत

श्री हरिकृष्णाय नमोनमः—संवत १९१४ना फागणसुदी १ने दिवस महाराज श्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्री चूडा मध्ये ठाकोर श्री महाराणा वेचरसंगजी रायसंगजीना दरबारमां उगमणे बारनी मेडीओनी ओसरीमां गादी तकीया नखावीने ढोलीया उपर विराजमान थया हता. सर्वे कसुंबल वस्त्रो धारण कर्यां हतां. कंकुनो चांदलो कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देशदेशना हरिभक्तोनी सभाभराइने बेठी हती.

प्रश्न :—पछे भगवान कृपा करीने बोल्या जे-"जेने सत्संग करवो तेने पोताना आत्मा कल्याणने अर्थे करवो. पण नाशवंत पदार्थ जे स्त्री, छोकरां, धन, माल, गाम, गरास इत्यादिक जे मायिक पदार्थ मने मळे एवी इच्छा राखीने सत्संग न करवो. अने सत्संग तो पोताना आत्माने

अविनाशी सुख प्राप्त थाय ते सारु करवो. पण जे पदार्थने काळ नाश करे, एवा पदार्थ सारु सत्संग न करवो.

केम के आ जीव छे तेणे अनंत फेरा देवता थइने देवलोकनां सुख भोगव्यां छे. तथा मृत्युलोकमां पण केटलाक फेरा चक्रवर्ति राजाना देहने धरीने अनंत राणीओ भोगवी छे. तथा बीजा खान-पानादिक पण अनंत भोग भोगव्या छे. तथा ते ने ते जीवे अनंत फेरा स्त्रीना देह धरीने राजा देवादिक अनंत पुरुष कर्या छे. एवी रीते आ जीवे स्वर्ग, मृत्यु अने पाताळ ए त्रणे लोकमां जइने अनंत वार विषयना भोग भोगव्या छे. तो पण ते जीवने विषय थकी जरा पण तृप्ति थइ नथी. केम के विषयथकी कोइ काळे कोइने तृप्ति थती ज नथी.

ते राजा, देवता, इन्द्र, ब्रह्मादिक सुधी कोइने विषयथकी तृप्ति थइ नथी अने जेम जेम झाझा विषयने भोगवे छे तेम तेम झाझा संताःपने पामे छे. एवी रीते चौदलोकमां विषयनी तृष्णारूपी अग्निमां जीव, प्राणी मात्र बळ्या करे छे. पण कोइ जीवने प्रकृतिना कार्यमां शांति नथी. तो हवे आ मनुष्यदेहनी अल्प आयुष्य तेमां वरस के बे वरस के पांच वरस के दश वरस जीववुं तेमां विषय भोगवीने तृप्त थवाय नहीं. केम के विषयमां सुख जे ते लेशमात्र नथी. अने विषय भोगव्या थकी जीवने शांति थाय एम पण नथी.

केम के कोइ पुरुष तरस्यो थयो होय अने तेने भारे भारे वस्त्र पहेरावीए तथा सोना, रूपा, हीरा, मोतीनां घरेणां पहेरावीए तथा जमवाना थाळ भरीने मोढा आगळ मूकीए तो पण तेने जळ विना कोइ पदार्थ शांति करे नहीं. अने तेने तो एकलु जळ मळे तो शान्तिने पामे. तेम जीवने आत्मा अने परमात्माने पामवा रूप तृषा छे. तेने भूलीने बीजा

सुखी थवाना अनंत उपाय करे. पण आत्मा परमात्माना ज्ञान विना कोइ काळे जीवने सुख थवानुं नथी. माटे जीवने प्रत्यक्ष परमात्मा अने तेना संत मळे अने तेनो आशरो करीने ते थकी ज्ञान पामे त्यारे जीवने परम शांति थाय. पण ते विना जीवने विषय भोगे करीने शांति थाय नहीं.

—माटे आज तमारे शांति थवानो समो आव्यो छे. ते नाशवंत ने दुःखरूप एवा जे मायिक पदार्थ तेने भोगववानी वासनानो त्याग करीने अमारो सत्संग करवो अने अमारो जे सत्संग करवो ते तो एक पोताना आत्मानो मोक्ष थाय अने पंचविषयनी वासना टळी जाय तेने अर्थे अमारो सत्संग करवो अने एवी रीते समजीने जे अमारो सत्संग करे छे तेने अलौकिक सुख प्राप्त थाय छे. अने तेनो पायो सत्संगमां अचळ थाय छे, ने एवा निष्कामभाववाळाने ज अमारे विषे दृढ स्नेह थाय छे अने एवी समजणवाळाने कल्याणना मार्गमां कोइ विघ्न आवे ज नहीं. माटे निष्कामभावे भक्ति करवी.

केम के पंचविषयना सुखनी वासनानो त्याग करशे त्यारे ज अक्षरधामने पामशे. माटे जे भगवानना भक्त होय तेने आ लोकना सगा, कुटुंबी, धन माल तेमांथी वासना तोडीने एक भगवान ने भगवानना संतने विषे प्रीति करवी, पण भगवानना भक्तने मायिक पदार्थमां वासना राखवी नहीं. अने जे प्रत्यक्ष भगवान अने भगवानना संतने विषे प्रीति करे छे तेने ज जगतनी वासना तूटे छे अने ते परम शान्तिने पामे छे."

॥ इति श्री मुखसिद्धांत २४ समाप्त ॥

२५ विषय :—सिद्ध दशावाळाने पण विधि निषेध राखवा

श्री हरिकृष्णाय नमोनमः—संवत् १९१६ ना कारतक सुदी ११ ने दिवस महाराज श्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्री रतनपुर मध्ये रजपुत मानसिंगने घेर उगमणे बार ओरडानी आगळ फळीयामां ढोलीया उपर विराजमान थया हता. सर्वे जरीयानी वस्त्रो धारण कर्यां हतां. पाघमां तोरा लटकता हता. कंठमां पुष्पना हार धारण कर्या हता अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणा हरिभक्तोनी सभा भराइने बेठी हती.

प्रश्न :—पछी महाराजश्रीए साधुने प्रश्न पूछ्युं जे "ज्ञानने पामीने अर्धी अवस्थाए सिद्ध दशाने पाम्यो होय अने पोताना आत्मस्वरूपने साक्षात्कार देखतो होय अने इन्द्रियो अंतःकरणना भाव पोताने विषे न मानतो होय एवो जे प्रत्यक्ष भगवाननो भक्त तेने विधि—निषेध राखवो के न राखवो ?"

पछी धर्मानंद स्वामीए कह्युं जे "विधि निषेध तो राखवो."

प्रश्नः—पछी महाराज बोल्या जे "ते सिद्ध दशाने पाम्यो जे मुक्त ते विधि निषेध न राखे तो शुं पाप लागे ?"

उत्तरः—पछी धर्मानंद स्वामीए कह्युं जे "जेम नानो बाळक अणसमजु होय त्यारे तो नरक चुंथतो होय. पछी तेना मावीतर तेने ना पाडे अने नरक चुंथवा न दे. पछी ते बाळक मोटो अने समजु थाय त्यारे तो पोतानी मेळेज नरकने अडे नहीं ने कोइक कहे जे "तुं नरकने चुंथ." तो पण तेनुं कह्युं माने नहीं अने नरकने कोइ काळे चुंथे नहीं. तेम बाळअवस्था जे अज्ञानपणुं होय त्यां सुधी तो बाळकनी पेठे नरकरूप जे पंचविषय तेने भोगवे. पछी तेने ज्यारे ज्ञान थाय अने

वाळपणुं जे अज्ञाने करीने विषय भोगववा ते तो ज्ञाने करीने ब्रह्मदशाने पाम्यो ते तो मायिक पंचविषयने देखीने विष्टानी पेठे ग्लानि पामे. एवी रीते ज्ञानी जे ते विषयने नथी भोगवतो. ने वळी ज्ञानी छे ते विषयने विषे दोषने देखे छे. केम के विषय भोगववामां अनंत क्लेश रह्या छे ने वळी ज्ञानी एम जाणे छे जे "मोटा पुरुष जो विषयने भोगवे तो तेनी केडे बीजा पण जे मोक्षने अर्थे विषयनो त्याग करता होय ते पण सत्पुरुषनां आचरण जोइने जो अवळे मार्गे चाले तो तेनुं पाप पण ते सत्पुरुषने लागे छे." एम जाणीने ज्ञानी विषयने नथी भोगवता.

प्रश्नः—पछी महाराज बोल्या जे "ए तो ज्ञानना पारने पाम्यो छे तेने विषय शुं बंधन करे ?"

उत्तरः—पछी धर्मानंद स्वामीए कह्युं जे "जो ज्ञानना पारने पाम्यो होय तो विषयने भोगवे ज नहीं ने विषयने भोगवे छे तो ते ज्ञानना पारने पाम्यो ज नथी."

पछी महाराज बोल्या जे "ठीक उत्तर कर्यो" एम कहीने बोल्या जे "सिद्धदशाने पामीने जो विधि–निषेधने खोटा मानीने विषयने भोगवे छे तेने तो भ्रष्ट थयो जाणवो अने सिद्धदशाथी पड्यो जाणवो. अने ते विषय भोगवनारो पुरुष दिवसे दिवसे जेम जेम विषयने भोगवे छे तेम तेम तेनुं पराक्रम घटतुं जाय छे ने परमेश्वरनो पण तेना उपर कोप थाय छे. केम के परमेश्वरनो अनादि कायदो जे इन्द्रियोना नियमरूपी धर्मने पाळवो" ते धर्मने तेणे लोप्यो. ने वळी परमेश्वरनो ए ज संकल्प छे जे "जीवने पंचविषय थकी मूकाववा. ने जे पंचविषयने मूके तेनुं ज कल्याण थाय." माटे एणे परमेश्वरनो कायदो जे "विधिनिषेध" ते राखवो ने पंचविषयनो त्याग करवो. एणे विधि निषेधनो त्याग करीने

विषय भोगव्या माटे एणे परमेश्वरनो कायदो लोप्यो, ते सारू परमेश्वर एने दंड करे छे. केम के परमेश्वर तो सर्वोपरि राजाधिराज छे ने न्यावक छे माटे विधिनिषेधनो त्याग करीने विषयने भोगवे छे तेने तो परमेश्वर अतिशय दंड आपे छे. ते शो दंड आपे छे? तो एने विषयमां कोइ काळे शान्ति थती नथी.

—माटे जे सिद्ध दशाने पाम्यो होय अने ते जो विषयने मार्गे चाले तो ते दिवसे दिवसे घटतो जाय छे. ने अन्ते विष्टाना कीडा जेवो थइ जाय छे. ने जो विषयनो त्याग करीने परमेश्वरने भजे छे तो ते दिवसे दिवसे वधतो वधतो अक्षरना भावने पामे छे, माटे जे ज्ञानी होय ते तो विषयनो संबंध पण न राखे ने जे विषयनो संबंध राखे छे ते तो ज्ञानी ज नथी अने ते तो लवाड छे. ने तेनुं ज्ञान कहेणी मात्र छे.

केम के पूर्वे पण नारदे जो त्यागीनो धर्म चूकीने राजानी दिकरीनो हाथ जोयो तो मांकडा जेवुं मोढुं थयुं. सीताजीए जो पतिव्रतानो धर्म चूकीने साधुरूपे आव्यो जे रावण तेने हाथोहाथ भिक्षा आपी तो महा संतापने पाम्या. ब्रह्माने कलंक लाग्युं. शिवजीने मोहिनीरूप जोइ वीर्यपात थयो. एकलशृंगी रसनाने वश थइने योगमार्ग थकी पड्या. भरतजीए मृगलामां स्नेह राख्यो तो मृग थया. माने करीने दुर्वासा घणांक दुःखने पाम्या. लोभे करीने वशिष्ट दुःखने पाम्या. एवा मोटा मोटाने कलंक लाग्यां छे, माटे विषयनो संबंध करीने तो परमेश्वर विना बीजा कोइ उगरवाने समर्थ नथी. अने सिद्ध दशानुं ए ज एधांण छे जे पंचविषयनुं त्यागपणुं. अने जे विधि निषधने तोडीने विषयने भोगवे छे तो तेने परमेश्वरनो अनादि जे "सिद्धांत सर्वोपरि मोक्षनो छे" ते समजाणो ज नथी.

केम के अनादिपणामां अनंत भेद छे. पतंगीयादिक झीणा जीव छे तेनी आगळ मनुष्य अनादि कहेवाय छे. केम के मनुष्यनी आयुष्यमां पतंगीयाना देह अनंत नाश पामे छे. अने मनुष्यथी देवता अनादि छे. केम के देवतानी आयुष्यमां मनुष्य अनंत नाश पामी जाय छे. अने देवताथी ब्रह्मा अनादि छे. केम के ब्रह्माना आयुष्यमां घणाक देवता नाश पामे छे. अने ब्रह्माथी वैराट अनादि छे. अने वैराटथी प्रधान पुरुष अनादि छे. अने प्रधान पुरुषथी प्रकृति पुरुष अनादि छे. अने प्रकृतिपुरुषथी अक्षरब्रह्म अनादि छे. अने ए अक्षरब्रह्मना आधार एवा जे पुरुषोत्तम भगवान ते सर्वना अनादि छे अने ते पुरुषोत्तमनो एक अक्षरब्रह्मने ज अखंड संबंध छे. अने जे जे अक्षरना साधर्मपणाने पामे छे तेने ज पुरुषोत्तमनुं सर्वोपरि अनादिपणुं समजवामां आवे छे. अने तेनो ज आत्यंतिक मोक्ष थाय छे पण ते विना आत्यंतिक मोक्ष थतो नथी. अने बीजा मोक्ष तो कहेवामात्र छे. अने आत्यंतिक मोक्ष तो क्यारे थाय? के ज्यारे मायापर एवा जे सद्गुरु ते प्रत्यक्ष मळे अने तेनो उपदेश ग्रहण करीने ते थकी धर्मे करीने सर्वे इन्द्रियोने नियममां करे अने आत्मज्ञाने करीने देहना अहंकारनो त्याग करे. तथा वर्णनो तथा आश्रमनो तथा नात जातनो इत्यादिक सर्वे अहंकारनो त्याग करीने पोताने ब्रह्मरूप माने अने सत्पुरुष थकी त्रण प्रकारना प्रलयनो विचार करीने वैराग्यने पामीने प्रकृतिना कार्य थकी निर्वासनिक थाय. अने एकांतिक प्रेमलक्षणा भक्तिए करीने भगवानना स्वरूपमां जोडाय त्यारे ज तेनो आत्यंतिक मोक्ष थाय छे अने ते ज कोइ काळे पाछो जन्मने धरतो नथी."

॥ इति श्री मुखसिद्धांत २५ समाप्त ॥

२६ विषय :—परोक्षना जेवी प्रगट भगवानमां प्रीति थाय तो ज मोक्ष थाय

श्री हरिकृष्णाय नमोनमः—संवत् १९१६ना कारतक सुद १२ ने दिवस महाराज श्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्री रोहीशाळा मध्ये भगवानजी लक्ष्मीरामने घेर दक्षिणादे चार ओरडानी ओसरीमां विराजमान थया हता, सर्वे जरीयानी वस्त्रो धारण कर्यां हतां. पुष्पनां आभूषणो सर्वे अंगमां धारण कर्यां हतां ने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देशदेशना हरिभक्तोनी सभा भराइने बेठी हती.

प्रश्नः—पछी महाराज कृपा करीने बोल्या जे "जेवी जीवने परोक्ष भगवान ने भगवानना संतने विषे प्रतीति छे तेवी जो प्रगट भगवान ने भगवानना संतने विषे प्रतीति आवे तो ते जीवनुं साक्षात्कार कल्याण थइ जाय, पण ते वार्ता जाणवी घणी अटपटी छे.

केम के संस्कार विना ते वात समजाती नथी. ए तो ज्यारे अनेक जन्मना शुभसंस्कार होय त्यारे ज ते वात जाण्यामां आवे छे. ते शुभसंस्कार ते शुं ? तो पूर्वजन्मने विषे भगवान तथा भगवानना एकांतिक पंचविषयना त्यागी संत, तेना संबंधे करीने जे कांइ सेवा, स्मरण, नियम, धर्म, तथा ते थकी ज्ञान पाम्या होय तेने ज शुभसंस्कार कहे छे. पण शुभसंस्कार विना पामर के विषयी जीवने प्रत्यक्ष भगवान अने भगवानना संतनां वचन समजवामां आवतां नथी. केम के ए तो मायापर शब्द छे, ते एने कोइ काळे सांभळ्या ज नथी.

जेम कोइक मनुष्य परदेशथी आवे अने तेना देशनी बोली बोले तो ते बोलीने तेना देशना होय ते समजे, पण जेणे कोइ दहाडे ते बोली सांभळी न होय तेने कांइ समजाय नहीं. तेम अनंत जन्मना शुभसंस्कारी मुमुक्षु होय तेने ज प्रत्यक्ष भगवान अने तेना संतनां

वचन समजाय छे अने तेने ज तेनी प्रतीति आवे छे अने एवा मुमुक्षुने ज्यारे प्रतीति आवे छे त्यारे तेना अंतरमां अतिशय आनंद प्रगटे छे. अने ज्ञानरूपी प्रकाश तेने थाय छे अने तेने मायानो अंधकार टळी जाय छे. पछी तेने भगवाननी आज्ञामां कोइ रीते फेर पडतो नथी. अने एवा भक्तने आठे पहोर भगवाननी मूर्ति अखंड अंतरमां स्फुर्या करे छे, कहेतां प्रत्यक्ष भगवानने अखंड संभारे छे. अने ते भक्तने अंत समो थाय छे त्यारे तेने जेवा प्रगट भगवान अने भगवानना संत मळ्या छे तेवाने तेवा ज साक्षात्कार आवीने उभा रहे छे. ने पोताना स्वरूपमां जोडावीने भागवती तनु धरावीने अक्षरधामने पमाडे छे.

माटे प्रत्यक्ष भगवाननो निश्चय राखीने तेना वचनमां जे जे वर्ते छे. तेनो ज मोक्ष थाय छे. अने पूर्वे रामावतारमां वांदराओ तथा गुह-राजा भिल्ल तथा कृष्णावतारमां गोपी, गोवाळ, पांडव, उद्धव आदिक भक्तो जो भगवाननी आज्ञा प्रमाणे वर्त्या तो ते सर्वे मोक्षने पामी गया, माटे प्रत्यक्ष भगवाननी जे आज्ञा पाळवी ते ज मोक्ष पामवानुं मोटुं साधन छे. ते श्री कृष्ण भगवाने अर्जुनने कह्युं छे जे—

सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज ।
अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुच ॥

ए श्लोकनो एम अर्थ छे जे "सर्व अविद्यामय धर्मनो त्याग करीने मारुं शरण जे तेने पाम अने हुं जे ते तने सर्व पाप थकी मुकावीश. तुं शोक करीश नहीं." माटे प्रत्यक्ष भगवानना वचनमां वर्तवुं एज मोक्षनो अचळ सिद्धांत छे.

अने जेने प्रत्यक्ष भगवाननो आशरो नथी ने ते प्रत्यक्षना वचनमां प्रतीति जेने नथी अने तेनो जे उलटो द्रोह करे छे अने परोक्ष भगवानने

अर्थे शास्त्र प्रमाणे धर्म पाळे छे तथा जप, तप, व्रत, दानादिक अनंत साधन करे छे तो पण ते साधने करीने प्रत्यक्ष भगवान अने भगवानना संत विना कल्याण कोइ काळे थतुं नथी. केम के परोक्षपणे जे जे साधन करे छे ते साधनना माने करीने प्रत्यक्ष भगवान अने भगवानना संत न ओळखाय तो उलटी मलीन मति थइ जाय छे. तेने करीने प्रगट भगवान अने संतनो द्रोह करे छे तेने करीने जप, तप, व्रतादिक साधननुं फळ तत्काळ नाश पामी जाय छे.

जेम दुध अने साकर घणुं सारुं छे पण तेमां जो सर्पनी लाळ पडे तो ते सर्वे विखरूप थइ जाय तेम साधन तो सर्वे सुखरूप छे पण तेनां माने करीने प्रगट भगवान अने संत न ओळखाय अने तेनो द्रोह थाय, ते रूप सर्पनी लाळ, तेने करीने उलटुं भुंडुं थाय छे. अने जो साधने करीने कल्याण थतुं होय तो पूर्वे ऋषि घणाय परोक्ष भगवान सारु यज्ञ करता हता पण प्रत्यक्ष श्री कृष्णने न ओळख्या तो ते दुर्भागीया कहेवाया. अने ऋषिपत्नीओ कांइ समजती न हती पण तेने जो प्रगट श्री कृष्णने ओळख्या तो तेना साक्षात्कार मोक्ष थया अने परमपद्ने पामी गइ ने तेना कुळनी स्त्रीओनी सेवा ऋषि हजी सुधी करे छे.

—माटे प्रगट भगवान अने भगवानना निर्वासनिक संत मळ्या विना कोइ काळे कल्याण थाय नहीं ए सिद्धांतवार्त्ता छे. ते सारु जप, तप, आदिक साधन करवां, पण प्रगट भगवान अने भगवानना संत काने संभळाय तो तत्काळ तेनी पासे जवुं ने तेनो समागम करीने तेनो आश्रय करवो पण पछी परोक्षने वाझी रहेवुं नहीं.

अने जे परोक्ष भक्ति करे छे ते भगवान तो एना ए ज छे पण प्रगट

विना ज्ञान कोण आपे ? अने ज्ञान विना मोक्ष थाय नहीं. माटे प्रगट थकी ज मोक्ष थाय छे. ते सारु आज तमारा भाग्यनो पार नथी." एटली वार्ता करीने महाराज उताराना ओरडामां पधार्या.

॥ इति श्री मुखसिद्धांत २६ समाप्त ॥

२७ विषयः—तत्वमसि महावाक्यनी सिद्धि.

श्री हरिकृष्णाय नमोनमः–संवत १९१६ ना कारतक सुद १३ ने दिवस महाराज श्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्री रोहीशाळा मध्ये ओझा भगवानजी लक्ष्मीरामने घेर दक्षिणादे वार ओरडानी ओसरीमां ढोलीया उपर गादी तकीया नखावीने विराजमान थया हता. धोळुं अंगरखुं ने सुरवाल पहेर्यो हतो मस्तके कसुंबल फेंटो बांध्यो हतो. सर्वे अंगमां पुष्पनां आभूषण धारण कर्यां हतां. अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणा हरिभक्तोनी सभा भराइने बेठी हती.

प्रश्नः–पछी महाप्रभुजी साधु प्रत्ये बोल्या जे–"सांभळो, एक वार्ता करवी छे. अने ते वात समजाय तो अंतरमां प्रकाश थाय एवी वार्ता छे, तेने सुरत दइने सांभळजो. जे महामायाने विषे उत्पन्न थया एवा जे जीव, ईश्वर ए मायाने विषे तारतम्य गतिए करीने रह्या छे ते अधोगति कहेवाय छे अने तेने बद्ध कहे छे.

ते बद्धनुं शुं रूप छे ? तो जे रागात्मक विषयनी क्रिया तेने करे छे अने ते क्रियाथकी बंधाणा छे एवा जे बद्ध पुरुष; ते पुरुषने जे मोक्षने मार्गे चालवुं ते ऊर्ध्वगतिने मार्गे चाल्यो कहेवाय छे. ते ऊर्ध्वगति ते शुं ? तो धर्म, ज्ञान वैराग्य अने माहात्म्ये सहित भगवाननी भक्ति, ए चारे साधनने पूरां करे अने ते चारे थकी जे तत्त्व नीकळे अने ते तत्त्वनुं अति दृढ साक्षात्कार ज्ञान पोताने थवुं ते ज मोक्ष छे.

तेने टाळीने निष्काम, निर्लोभ, निःस्वाद् निःस्नेह ने निर्मान, ते गुणने दृढ करीने पछी जगतनुं कारण जे पुरुष, प्रकृति, काळ ने महत्तत्त्वादिक चोवीस तत्त्व तेना स्वरूपने साक्षात्कार जाणवा, जेने करीने चोवीस तत्त्वना बंधन थकी मूकाय अने तत्त्व थकी मुकाय त्यारे ते अन्वय अक्षररूप थयो कहेवाय अने तेने "त्वं" पद्नो अर्थ पूरो थयो जाणवो. अने "असि" एटले क्रिया छे. ते क्रियानुं शुं रूप छे? तो जगतनी कारणउत्पत्ति कारणस्थिति ने कारणप्रलय. तेने जाणीने मायाने शुद्ध अक्षरने विषे लय करीने मायानुं द्रष्टापणुं टाळीने जे सर्वात्मा, जे व्यापक थकुं व्यतिरेक ब्रह्म जे अनादि कारण चैतन्य, तेने अविनाशी अने सत्य, एम मानीने जगतने नाशवंत अने मिथ्या एम माने छे अने तेने विषे वैराग्यने पामीने सत्य एवुं जे पोतानुं कारणरूप अनादि मूळ अक्षर स्वरूप तेने पामवुं, ए "असि" पद्नो अर्थ छे अने एवी रीते उपर कह्या प्रमाणे पोताना आत्माने निर्दोष करीने कहेतां शुद्ध ब्रह्मरूप थइने अखंड परमात्मा एवा जे प्रत्यक्ष भगवान, तेने बाह्या-भ्यन्तर भेदे रहित सर्वव्यापक, सर्व शक्तिमान परमात्मा परब्रह्म, तेने कारणपणे भजे छे तेने सर्व सिद्धांत एवुं जे वेद्नुं पूर्णज्ञान, ते सिद्ध थयुं जाणवुं अने ते ज्ञानने जे पुरुष पाम्यो ते पूर्णज्ञानने पाम्यो छे. अने जो एकलो आत्मारूप थइने बेसी रहे अने जगतना आधार अने अक्षरातीत एवा जे परमात्मा तेनुं ज्ञान जे आत्यंतिक ज्ञान तथा तेनी आज्ञा जे एकान्तिक धर्म, तेने जे आत्मनिष्ठ पुरुष नथी जाणतो तथा नथी पाळतो ते घणो ज अधूरो छे एम जाणवुं."

॥ इति श्री मुखसिद्धांत २७ समास ॥

२८ विषयः–विश्वमां भगवान अने भगवानमां विश्व

श्री हरिकृष्णाय नमोनमः–संवत १९१६ ना कारतक सुद १४ ने दिवस महाराज श्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्री रोहीशाळा मध्ये भक्त ओझा भगवानजी लक्ष्मीरामने घेर दक्षिणादे वार ओरडानी ओसरीमां गादी तकीये युक्त ढोलीया उपर विराजमान थया हता. सर्वे जरीयानी वस्त्रो धारण कर्यां हतां. पुष्पना हार कंठमां शोभी रह्या हता. भालमां केसरनी अर्चा करी हती अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तोनी सभा भराइने बेठी हती.

प्रश्नः–पछी धर्मानंद स्वामीए महाराजने हाथ जोडीने एक प्रश्न पूछ्युं जे “ प्रगट भगवान मनुष्य जेवा जणाता होय अने मनुष्यना जेवी क्रिया करता होय ते केम ओळखाय जे आ भगवान छे? ते कहो.”

पछी महाप्रभुजी बोल्या जे “जेने पूर्वजन्मने विषे अथवा आ जन्मने विषे सत्पुरुषनो संग प्राप्त थयो होय अने ते थकी अनंत शुभ संस्कार जेने लाग्या होय तेने ज प्रगट भगवाननुं स्वरूप ओळखाय छे, केम के आ लोकमां पण मायिक पदार्थ जे द्रव्य, हीरा, मणिओ, मोती, तेना पारखु, कोइक विरला–थोडा छे. तो मायापर एवा जे परमात्मा दिव्यमूर्ति भगवान ते पोतानुं ऐश्वर्य छूपावीने अनंत जीवोना कल्याणने अर्थे मनुष्य जेवा थाय छे, तेने अज्ञानी जीव केम ओळखी शके? माटे जेनुं शुभसंस्कारे करीने अंतःकरण शुद्ध थयुं छे तेनेज प्रगट स्वरूप ओळखाय छे.

हवे तेने ओळखवानी रीत कहीए छीए, जे ते केवी रीते ओळखाय छे? तो आत्यंतिक ज्ञान जेनी पासे होय ते ज्ञानने सांभळीने साक्षात्कार ब्रह्मरूप थइ जवाय कहेतां अक्षरना साधर्मपणाने पामी जवाय

ते ज्ञानने सांभळीने शुभ संस्कारवाळा, एवा जे मुमुक्षु, तेने आ मनुष्याकृतिने विषे सर्वोपरि पुरुषोत्तमपणानो निश्चय थाय छे, केम के एवुं ज्ञान भगवान विना बीजा कोइ मनुष्य पासे होय ज नहीं!

हवे ते ज्ञानने कहीए छीए के ते भगवानना स्वरूपनुं ज्ञान बे प्रकारनुं छे तेमां एक कारणज्ञान छे अने बीजुं कार्यज्ञान छे. तेमां जे कार्यस्वरूप छे ते तो अखंड अने पूर्ण अद्वैत छे अने सदाय मायापर छे अने ते जे भगवान छे तेना स्वरूपना ज्ञानने जे पामे छे तो ते पामनारो जे ज्ञानी ते मायापर थाय छे अने मायापर एवो जे मुक्त ते भगवानने विषे सर्वे विश्वने जुए छे अने सर्वे विश्वने विषे भगवानने जुए छे ते केवी रीते जुए छे? तो उत्पत्ति, स्थिति अने प्रलय, ते प्रणालिकाए जाणे छे.

हवे ते ज्ञान कहीए छीए जे सौना कारण अने परात्पर जे भगवान ते जे ते उत्पत्ति समे अक्षरमां प्रवेश करे छे त्यारे अक्षररूप भगवान देखाय छे, अने पोते नथी देखाता, अने अक्षररूप भगवान ज्यारे पुरुषमां प्रवेश करे छे त्यारेपुरूप रुप भगवान देखाय छे अने त्यारे अक्षर अने पुरुषोत्तम भगवान नथी देखाता. पण एकलो पुरुष ज देखाय छे, अने ते पुरुष जे ते प्रधानपुरुषने विषे प्रवेश करे छे त्यारे एकलो प्रधानपुरुष देखाय छे अने पुरुषादिक भगवाननां स्वरूप देखातां नथी. अने प्रधानपुरुषरूप भगवान जे ते ज्यारे महत्तत्त्वने विषे प्रवेश करे छे त्यारे महत्तत्त्वरूप भगवान देखाय छे अने प्रधानपुरूषादिक नथी देखाता, अने महत्तत्त्व अहंकारने विषे प्रवेश करे छे अने अहंकार आकाशने विषे प्रवेश करे छे, त्यारे अहंकारादिक कोइ देखाता नथी. अने आकाश एकलुं देखाय छे, अने आकाश वायुमां प्रवेश करे छे, त्यारे

वायु एकलो देखाय छे अने आकाशादिक नथी देखाता; अने वायु-थकी अग्नि थाय छे; अने अग्निथकी जळ थाय छे; अने जळ थकी पृथ्वी थाय छे; अने पृथ्वी थकी अनंत प्रकारनी औषधिओ थाय छे; अने ते औषधियो थकी अनंत कोटि पिंड अने ब्रह्मांड थाय छे, एवी रीते उत्पत्तिनी समाप्ति छे.

एवी रीते सर्वेना कारण अने आधारपणे भगवान विश्वमां रह्या छे, अने ते विश्वमां रह्या थका सर्वे विश्वनो लय पोताने विषे करे छे त्यारे भगवानने विषे विश्व कारण पणे रहे छे. जेम माळाना मणकाने विषे दोरो रह्यो छे अने दोराने विषे मणका रह्या छे तेम अन्योन्य भावे करीने विश्वमां अंतर्यामीपणे भगवान रह्या छे अने भगवानमां विश्व कार्यपणे रह्युं छे, एवी रीतनुं जे ज्ञान ते कार्य स्वरुप भगवाननुं छे, अने तेवुं ज्ञान जेने सिद्ध थाय ते जे ते पुरुषना साधर्मपणाने पामे छे, अने ते पुरुष केवो छे ? तो अक्षररूप भगवाननुं कार्यस्वरूप छे अने जगतनुं कारणरूप छे.

अने सर्वे कारणना कारण अने अक्षरातीत एवा जे मायापर पर-मात्मा तेना स्वरूपनुं ज्ञान साक्षात्कार थाय त्यारे निर्गुण अक्षरना भावने पामीने सर्वोपरि कारणरूप एवा जे प्रत्यक्ष पुरुषोत्तम भगवान तेज एक तेने देखाय छे, पण ते विना जगतनुं कार्यकारण कांइ देखातुं नथी, जेम सूर्यवडे झांझवां देखाय छे, ते झांझवां मिथ्या छे अने सूर्य सत्य छे. तेम आत्यंतिक प्रलयनुं जे ज्ञान, तेने जे जाणे छे तेने जगत मिथ्या थइ जाय छे. अने परमेश्वर सत्य देखाय छे अने एवी रीतना ज्ञानने पामीने परम सुखशान्तिने पामे छे.

हवे तेवुं ज्ञान कोण करावे छे, अने ते ज्ञान केवुं छे ? तो जेम हीरे करीने हीरो विंधाय छे तेम भगवानना स्वरूपनुं ज्ञान भगवान

वते ज थाय छे. हवे ते ज्ञान केम करावे छे ? तो सर्वेना कारण एवा जे भगवान ते जे ते प्रथम मुमुक्षुने पृथ्वीनी दृष्टि करावीने सर्व पदार्थने पृथ्वीरूप देखाडे छे; जे पृथ्वी छे ते जळना एक अंश थकी थइ छे. माटे ते पृथ्वी ते जळने विषे लय करीने सर्व पदार्थने जळमय देखवुं; जळ अग्निना एक अंशमांथी उपज्युं छे. ते जळने अग्निने विषे लय करीने अग्निनी दृष्टिने पामीने सर्व पदार्थने अग्निरूप देखवुं; अने आग्नि वायुना एक देशमांथी उपज्यो छे तेने वायुमां लय करीने वायुनी दृष्टिने पामीने सर्व पदार्थने वायुरूप देखवुं; अने वायु आकाश थकी उपज्यो छे तेने आकाशमां लय करीने आकाशनी दृष्टिने पामीने सर्व पदार्थने आकाशरूप देखवुं; अने आकाश अहंकार थकी थयुं छे, तेने अहंकारमां लय करीने सर्व पदार्थने अहंकारमय देखवा; अने अहंकार महत्तत्त्व थकी थयेलो छे माटे तेने महत्तत्त्वने विषे लय करीने सर्व पदार्थने महत्तत्त्व मय देखवुं. अने महत्तत्त्व प्रधान-पुरुष थकी थयेलुं छे तेने प्रधान पुरुषने विषे लय करीने सर्व पदार्थने प्रधान पुरुषरूप देखवुं; अने प्रधानपुरुष मूळ प्रकृतिपुरुष थकी थयेलो छे माटे तेने प्रकृतिपुरुषमां लय करीने सर्व पदार्थने प्रकृतिपुरुषमय देखवुं; अने प्रकृतिपुरुष छे ते जगतना कारण छे. ते कारणरूप एवा जे प्रकृतिपुरुष ते जे ते चिदाकाश, चैतन्यमय एवुं जे अक्षर ब्रह्मरूप भग-वाननुं धाम ते एवा अनंत पुरुषनुं कारण छे. ते पुरुषने अक्षरने विषे लय करीने ते पुरुषने अक्षररूप देखवो; अने एवुं जे अक्षरब्रह्म तेने पोतानुं स्वरूप जाणीने पोताने मळ्या एवा जे प्रत्यक्ष परमात्मा दिव्य-मूर्ति तेना स्वरूपनुं प्रतिलोमदृष्टि करीने निरंतर ध्यान करवुं. पछी ते ध्यान करतां करतां तेना दोषनां बीज बळी जाय छे अने ते दिव्य अवयवने पामे छे.

ते दिव्य अवयवनुं शुं लक्षण छे ? तो बाह्य तथा अभ्यंतर अने अन्वय तथा व्यतिरेक भेद रहित जे दृष्टि ते ज दिव्य अवयवनी दृष्टि जाणवी अने तेवी सिद्ध दृष्टिने जे पुरुष, जेना उपदेशे करीने, पाम्यो छे एवा जे उपदेशदाता पुरुष ते तो स्वयं परमात्मा छे एम सिद्ध दृष्टिवाळा पुरुष देखे छे. एवी रीते परम भक्ति अथवा परम ज्ञान अथवा परम धर्म ते जेने पूरा थया छे ते ज मनुष्य मुक्तिने विषे सर्वोपरि पुरुषोत्तमपणानो निश्चय करे छे अने बीजा जे छे तेने तो जेने जेटली जेटली बुद्धि अने जेटला जेटला धर्म, ज्ञान, वैराग्य सिद्ध थाय छे तेटला *भगवानने जाणे, अने तेने साधन दशावाळो जाणवो.* .

अने प्रथम कह्यो तेने सिद्ध दशावाळो जाणवो. ए प्रत्यक्ष भगवान अने भगवानना संतनो निश्चय थवानी रीत छे अने एवो निश्चय जेने थाय छे तेने पंचविषयनी वासना टळी जाय छे. अने ए अमारो रहस्य छे. अने ए वात जे जाणे छे. तेने जाणवुं कांइ बाकी रहेतुं नथी ए सिद्धांत छे. अने एमां कांइ शंका नथी."

इति श्रीमुख सिद्धांत २८ समाप्त ।



२९ विषय :—जन्म मरणनुं कारण बुद्धि

श्री हरिकृष्णाय नमो नमः--संवत् १९१६ ना कारतकसुद १५ ने दिवस महाराज श्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्री रोहीशाळा मध्ये ओझा भगवानजी लक्ष्मीरामने घेर दक्षिणादे द्वार ओरडानी ओसरीमां गादी तकीया नखावीने ढोलिया उपर विराजमान थया हता. सर्वे जरीयानी वस्त्रो धारण कर्यां हतां. पुष्पना हार कंठमां धारण कर्या हता. अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणा हरिभक्तोनी सभा भराइने बेठी हती.

प्रश्न :–पछी महाप्रभुजी बोल्या जे "मूळ माया छे ते जीवनी बुद्धि-रूपे थइ छे. ते जीव बुद्धि द्वाराए करीने इन्द्रियो, अंतःकरणे करीने आ विश्वना विषयने भोगवे छे. ते विषयवासनाए करीने जन्म-मरणना दुःखने पामे छे. अने एवी रीते देवता पण बुद्धिने विषे जोडाणा थका पंचविषयनी वासानाए करीने जन्म-मृत्युने पामे छे. अने ब्रह्मा पण बुद्धिने विषे जोडाणो थको जन्म-मरणने पामे. अने विराटपुरुष पण बुद्धिने विषे जोडाणो थको प्राकृत प्रलयने विषे नाश पामे छे. अने एवी रीते महत्तत्वादिक चोविसतत्व तथा प्रधानपुरुष ए सर्वे बुद्धिने विषे जोडाणा थका,सर्वे प्राकृत प्रलयमां नाश पामे छे. अने प्रकृतिपुरुष पण ज्यां सुधी बुद्धिने विषे जोडाणो छे त्यां सुधी संतापने पामे छे अने ज्यारे बुद्धि थकी प्रतिलोम दृष्टि करीने पोतानुं स्वरूप जे आत्मा ते रूप थइ-ने परमात्माने विषे जोडाय छे त्यारे जन्म-मरणना दुःख थकी मुकाय छे.

ते परमात्मा आत्माना प्रकाशक छे. तेज पोते परमात्मा कृपा करीने मनुष्यरूपे थइने पोताने मळे तथा प्रगट भगवानना एकांतिक पंचविषयना त्यागी संत, ते मळे अने ते ज्यारे ज्ञान आपीने बुद्धिने निर्गुण भावने पमाडे छे अने बुद्धि ज्यारे निर्गुणभावने पामे छे त्यारे इन्द्रियो अंतःकरणमां प्रकाश थाय छे. अने मायिक जे पंचविषयनी वासना ते टळी जाय छे. अने शुद्ध स्वरूप जे पोतानुं अखंडानंद, ब्रह्मानंद, एवुं जे अक्षरब्रह्म ते पोतानुं पोताने देखाय छे अने तेना प्रकाशक एवा जे परमात्मा ते पोताने जे साक्षात्कार मळीने ज्ञान आप्युं ते ज आत्माने विषे दिव्यरूप मूर्तिमान थका देखाय छे, त्यारे ज जीवनो मोक्ष थाय छे ने जन्म मरणने पामतो नथी."

इति श्रीमुख सिद्धांत २९ समाप्त ।

---

३० विषय :—परोक्षना जेवी प्रत्यक्षमां प्रतीति होय तेनां लक्षण

श्री हरिकृष्णाय नमोनमः—संवत् १९१६ ना कारतक वद १ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्णभगवान गाम श्रीरोहीशाळा मध्ये ओझा भगवानजी लक्ष्मीरामने घेर दक्षिणादे वार ओरडानी ओसरीमां ढोलिया उपर विराजमान थया हता. सर्वे सोनेरी वस्त्रो धारण कर्यां हतां. पुष्पनां आभूषणो शोभी रह्यां हतां. अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणा हरिभक्तोनी सभा भराइने वेठी हती.

प्रश्न :—पछी अक्षर मुक्तानंद स्वामीए प्रश्न पूछ्युं जे "हे महाराज आ जीवने जेवी परोक्ष भगवानने विषे प्रतीति छे तेवी प्रत्यक्ष भगवानने विषे प्रतीति होय तेनां शां लक्षणो होय? ते कृपा करीने कहो"

पछी महाप्रभुजी बोल्या जे—"जेने परोक्षना जेवी प्रतीति प्रत्यक्षने विषे होय तेने पंचविषयनी वासना निर्मूळ थइ जाय छे. अने अंतरमां सदाय तेने शांति वर्ते अने तेने प्रत्यक्ष भगवाननां जे मनुष्य चरित्र तेने विषे कोइ काळे संशय थाय नहीं. केम के भगवाननां चरित्र सर्वे शास्त्रमां लख्यां छे, ते गमे तेवां भगवान चरित्र करे ते सर्वे तेने कल्याणकारी ज भासे, अने ते मनुष्यचरित्रने अलौकिक जाणे. अने एम समजे जे आ भगवान तो सदाय असंगी छे अने मायापर छे. पण ते तो कृपा करीने जीवोना कल्याणने अर्थे भगवान मनुष्यना जेवां चरित्रो करे छे, एवी रीते भगवाननो अतिशय महिमा समजे.

जेम उद्धवजीने परोक्षना जेवी श्रीकृष्णने विषे प्रतीति हती तो भगवान ज्यारे कुवजाने घेर गया त्यारे उद्धवजीने भेगा तेडी गया अने उद्धवजीने वहार वेसाड्या अने पोते कुवजाना घरमां त्रण दिवस सुधी रह्या पण उद्धवजीने लेशमात्र संशय थयो नहीं. अने कुवजानो अतिशय महिमा

जाण्यो जे " अहो ! एनां मोटां भाग्य जे भगवान तेने वश थइने तेने अलौकिक सुख आप्युं " अने ज्यां ज्यां श्रीकृष्ण जता त्यां उद्धवजीने भेगा तेडी जता. अने उद्धवजीने ज्यारे गोकुळ मोकल्या त्यारे गोपीओ संगाथे भगवाने जे जे लीला करी हती ते गोपीओना मुख थकी सांभळीने उद्धवजी गद्गद् कंठे थइ गया. अने गोपीओनो अतिशय महिमा समज्या. अने भगवाननो पण गोपीओनां वचन सांभळीने महिमा घणो समजाणो. अने पोते गोपीओना चरणनी रजने माथे चडावी. पण उद्धवजीने भगवाननां मनुष्यचरित्र जोइने कोइ दिवस संशय थयो नहीं. अने पंचविषयना लीधा पण उद्धवजी लेवाता नहीं. अने श्रीकृष्ण जरासंधथी नाठा अने समुद्रना बेटमां जइने रह्या अने द्वारकामां पण अनंत प्रकारनी लीला करता ते कोइनी दिकरीओ हरण करी लावता तथा कोइनी स्त्रीओने लइ आवता, तेवी रीते घणाक प्रकारनी क्रियाओ लोकना दीठामां अयोग्य जेवी करता तो पण उद्धवजीने लेशमात्र संशय थयो नहीं अने दिवसे दिवसे श्रीकृष्णने विषे अलौकिक महिमा समजता गया. अने ज्यारे यादवास्थळी करी अने श्रीकृष्ण स्वधाम जवाना थया त्यारे पण जे पोतानुं रहस्य ज्ञान हतुं ते (श्रीकृष्णे) उद्धवजीने आप्युं अने श्रीकृष्णे एम कह्युं जे " उद्धवजी छे ते अमारा अनन्य भक्त छे केम के मारा चरित्रने विषे कोइ दिवस संशय थयो नहीं." अने वळी रामावतारमां रामचंद्रजीने विषे शिवजीने परोक्षना जेवी प्रतीति हती तो ज्यारे सीताजीनुं हरण थयुं त्यारे रघुनाथजीने वनमां रोता दीठा तो पण शिवजीने संशय थयो नहीं अने अलौकिक महिमा जाणीने " जय सच्चिदानंद " कहीने शिवजीए दंडवत् कर्या. अने सतीने जो निश्चय न हतो तो संशय थयो अने पारखुं लेवा सारू आगळ जइने बेठां के ते जो बीजा जीव जेवा हशे तो "हुंमां"

मोह पामशे. पण ए तो महा ब्रह्मचारीना पण ब्रह्मचारी छे ते मोह पाम्या नहीं अने एम पूछ्युं जे " हे माताजी ! व्हेन ! तमे एकलां कयांथी ?" पछी तो सती लाज पामीने शिवजी पासे आव्यां, त्यारे शिवजी ए तेनो त्याग कर्यो. पछी सती अतिशय संतापने पाम्यां. अने वळी हनुमानजीने जो परोक्षना जेवी प्रतीति रघुनाथजीने विषे हती तो ज्यारे पोते हनुमानजी लंकामां गया त्यारे सीताजीने खोळवा सारू अनंत प्रकारनी स्त्रीओ जोइ पण कोइ रीते ते स्त्रीओमां मोह पाम्या नहीं अने ज्यारे लक्ष्मणजीने मूर्छा आवी त्यारे रघुनाथजी मनुष्यनी पेठे रोया. पछी ते भेगी सर्वे सेना रोवा लागी त्यारे पण हनुमानजी न रोया अने डुंगरमां जइने औषधि लावीने मूर्छा उतारी तथा अडधी राते अहिरावण आवी ने राम-लक्ष्मण वेयने हरी गयो त्यारे पण सर्व सेना वलोपात करवा लागी अने भयभीत थइ गइ पण हनुमानजी भयभीत थया नहीं. अने विभीषणने पूछ्युं त्यारे तेने कीधुं जे एवो तो अहिरावण गुफामां रहे छे, ते लइ गयो हशे.

पछी हनुमानजी शोधता शोधता गुफामां गया अने तेनी साथे युद्ध करीने राम लक्ष्मण वेयने मुकाव्या. एवी रीतना रघुनाथजीनां अनंत मनुष्यचरित्र दीठां पण हनुमानजीने संशय थयो नहीं. अने सर्वे चरित्र दिव्य जाण्यां अने एम समजता जे "रघुनाथजी तो सदाय असंगी छे, अने मायापर छे, अने कर्ता हर्ता छे, अने एनुं ज कर्युं सर्वे थाय छे तो पण पोताना दिव्यभावने छुपावीने कृपा करीने अनंत जीवोनां कल्याण करवाने अर्थे मनुष्यनी पेठे वर्ते छे," एम जाणीने हनुमानजी सेवा करता हता. अने रघुनाथजी पण हनुमानजी उपर अतिशय प्रसन्न थया. अने वळी जेने जेने परोक्षना जेवी प्रत्यक्षने विषे प्रतीति होय तो तेनुं वचन कोइ रीते लेशमात्र लोपाय नहीं अने तन, मन, धन,

सर्वे भगवान परायण करी राखे अने भगवानना जे जे आश्रित होय तेनो महिमा बहु समजे अने तेनो दास थइने वर्ते. ते पण तुलसीदासे कह्युं छेः—

तुलसी जाके मुखसे, भूलसे निकसे राम।
ताके पगकी पेनीयां, मेरे तनकी चाम ॥

एवी रीतनां लक्षणयुक्त जे होय तेने परोक्षना जेवी प्रत्यक्षने विषे प्रतीति वाळो जाणवो. अने एवी रीते जेने परोक्षना जेवी प्रत्यक्षने विषे प्रतीति आवी ते सर्वे साधनना अंतने पामी रह्यो छे. अने तेना संग थकी अनंत जीवना उद्धार थाय छे."

॥ इति श्री मुखसिद्धांत ३० समाप्त ॥

३१ विषय :—नाशवंत अने अविनाशी सुख

श्री हरिकृष्णाय नमोनमः—संवत् १९१६ना कारतक वद २ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री रोहीशाळामध्ये ओझा भगवानजी लक्ष्मीरामने घेर दक्षिणादे वार ओरडानी ओसरीमां ढोलीया उपर विराजमान थया हता. सर्वे सोनेरी वस्त्रो धारण कर्यां हतां. कंठमां पुष्पना हार शोभी रह्या हता अने मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देशदेशना हरिभक्तोनी सभा भराइने बेठी हती.

प्रश्नः—पछी महाप्रभुजी सर्वे हरिभक्त प्रत्ये बोल्या जे " बे प्रकारनुं सुख छे तेमां एक अविनाशी सुख छे अने बीजुं नाशवंत सुख छे.

हवे अविनाशी सुख ते कयुं ? तो आत्मा अने परमात्मा संबंधी जे सुख छे ते अविनाशी सुख छे अने ते सुख केवुं छे ? तो अखंडानंद, ब्रह्मानंद, एवुं अद्‌भुत अलौकिक सुख छे. अने जे मायिक सुख छे ते तो नाशवंत सुख

नथी जणातो ने विद्या भणवामां घणुं कठण पडतुं हतुं. तेम मुमुक्षुने ज्यां सुधी पोताने भागवतधर्मनुं सुख नथी आव्युं त्यां सुधी तेने कठण जेवुं जणाय छे पण ते ज्यारे सत्पुरुषनो समागम करशे त्यारे तेने दिवसे दिवसे विषयनी वासना घटती जशे अने धर्म, ज्ञान, वैराग्य अने भक्ति वृद्धि पामतां जशे.

एवी रीते पंच विषयना मूळने सद्गुरु रूप प्रगट भगवान के भगवानना संत छे ते उखाडीने ब्रह्म रूप करे छे. जेम अफीणना बंधाणीने अफीण मूकाव्यानुं कहीए जे अफीण रहेवा दे, अने घी, गोळ, खांड, साकर आपीशुं ! पण तेने अफीण मुकवुं घणुं कठण लागे छे केम के तेणे अफीणमां ज सुख मान्युं छे. पण जे बुद्धिवाळा छे ते अफीणने महा दुःखरूप जाणे छे, पछी ते बंधाणीने धीरे धीरे अफीण मुकावे छे. तेम विषयी जीवने सत्पुरुष सुखनी स्थितिए सत्संगमां रहेवाथी अतिशय कठण एवो जे मोक्ष ते सहेजमां प्राप्त करावे छे अने ते महा अद्भुत आनंदने पामे छे, अने तेथी ते स्थितिने पाम्यो एवो जे महामुक्त ते पोताना सुखनी अने पोतानी स्थितिने जाणीने एम माने छे जे "हुंज परमेश्वरनी अने मोटा संतनी कृपा वडे करीने महा सुखीयो थयो छुं अने अविनाशी एवुं जे अलौकिक सुख तेने मेलीने असत्य एवुं जे लौकिक सुख तेने मारे कोइ काळे इच्छवुं नथी." एम जे ज्ञाननी स्थितिने पाम्यो एवो जे ज्ञानी ते पंच विषयना सुखने इच्छतो नथी अने विषयने देखीने ग्लानि पामे छे.

जेम रणवगडामां रहेनारो एवो कोइ भिल्ल के वाघरी होय ते कोठां बोरां खातो होय तथा फाटेलां लुगडां अने ज्यां त्यां पडी रहेवुं, एवा भुंडा हेवाले रहेतो होय, अने तेने कोइक राजा मोजमां आवीने राज्य

आपे, पछी ते राज्यना वैभवने भोगवे अने राज्यने विषे महासुख पामीने आनंद माने, पछी तेने कोठां वोरां आदिक म्होरनां सुख ते दुःखरूप लागे अने तेने संभारे पण नहीं, अने क्यारेक सांभरी जाय अथवा कोइक संभारी दे तो अतिशय ग्लानि पामी जाय, तेम जे जे मुमुक्षु होय ते कोठांवोरां रूप जे मायिक पंच विषय तेने संभारेज नहीं, अने तेने कोइक विषयनो संबंध थाय तो तेने देखीने ग्लानि पामीने अति उदास थइ जाय, अने आत्मारूप थइने पोताने मळ्या जे प्रत्यक्ष परमात्मा भगवान अने संत तेना सुखमांज महागुलतान रहे अने पोताने अलौकिक अने अविनाशी सुखने पमाड्या एवा जे सद्गुरु तेनो महा मोटो उपकार माने, जे मने महादुःखरूप जे पंच विषय ते थकी मुकावीने अभय सुख आप्युं, माटे मारा परम हितकारी छे, एम जाणीने अखंड भक्ति करे छे, अने तेज सत्य सुख छे, अने ते विनानां जे मायिक सुख छे ते तो अतिशय दुःखरूप छे."

इति श्रीमुख सिद्धांत ३१ समाप्त ।

३२ विषयः—पामर जीवनो आत्यंतिक मोक्ष केवी रीते थाय ?

श्री हरिकृष्णाय नमोनमः—संवत् १९१६ ना कारतक वद ६ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री रोहीशाळा मध्ये भक्त कोठारी वनमाळी आणंदजीने घेर उत्तरादे बारना ओरडानी ओसरीमां ढोलिया उपर विराजमान थया हता. सर्वे जरीयानी वस्त्रो धारण कर्यां हतां. पुष्पनां आभूषणो सर्वे अंगमां शोभी रह्यां हतां. अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणा हरिभक्तोनी सभा भराइने बेठी हती.

प्रश्नः—पछी अखंडानंद स्वामीए प्रश्न पूछ्युं जे "हे महाराज ! पामर जीव होय ते आत्यंतिक मोक्षने केम पामे ?"

पछी महाप्रभुजी बोल्या–" जे पामर जीव होय पण तेने प्रत्यक्ष भगवान के भगवानना एकान्तिक पंचविषयना त्यागी संत तेनो संबंध थाय अने तेमां तेनो जीव अति दृढ हेते करीने जोडाइ जाय तो ते पामर जीवनो आने आ देहे करीने आत्यंतिक मोक्ष थाय, अने ते हेत पण केवुं थाय? तो जेम संसारमां देह अने देहना संबंधीमां जीवने जेवुं हेत छे अने तेमां जेवी आत्मबुद्धि छे तेवी आत्मबुद्धि भगवान अने भगवानना साधुने विषे थाय तो ते जीव पामर मटीने मुक्त थाय, अने आत्यंतिक मोक्षने पामे, अने एवुं हेत अने आत्मबुद्धि न थइ होय, तेनुं तो जन्मान्तरे कल्याण थाय छे."

प्रश्नः–पछी अक्षरमुक्तानंद स्वामीए कह्युं जे–" हे महाराज! शास्त्रमां तो एम कह्युं छे जे " ज्ञान विना मोक्ष थाय नहीं." अने तमे तो कह्युं जे " हेते करीने मोक्ष थाय," ते कइ रीते थाय? ते कहो."

पछी महाराज बोल्या जे–"पामरने प्रथम तो ज्ञान थाय एम नथी, अने पामरने तो आहार, मैथुन, निद्रा अने भय, ए चार वानानुं ज ज्ञान होय, पण तेने सत्पुरुषने विषे आत्मबुद्धि थाय अने ते आत्मबुद्धिए करीने सत्पुरुषनी सेवा करे, पछी तेनी सेवाए करीने एनुं अंतःकरण शुद्ध थाय अने शुद्ध अंतःकरणे करीने सद्गुरुनी सेवा करे छे तेने करीने एनो जीव वृद्धिने पामतो जाय छे. पछी एने भगवानना सुख संबंधी लोभ देखाडीने पामरमांथी विषयी करे छे, अने विषयीने आत्मज्ञान आपीने भगवाननो महिमा देखाडीने इन्द्रियोने नियममां करावीने मुमुक्षु करे छे, अने मुमुक्षुने भगवाननो अलौकिक महिमा देखाडीने पछी तेने धर्म, ज्ञान, वैराग्य अने माहात्म्य सहित भक्ति सिद्ध करावीने आत्यंतिक ज्ञानने पमाडीने मोक्ष करे छे. ते केनी पेठे के–जेम वाळकने चिंतामणि आपी होय तो ते वाळक चिंतामणिनो महिमा

जे एक जीवने भगवान सन्मुख कर्यो होय तो कोटि ब्रह्मांडना जीव मरी जता होय अने तेने जीवता राखीए अने तेनुं जेटलुं पुन्य थाय तेटलुं पुन्य एक जीवने भगवानना सन्मुख कर्यानुं थाय छे अने एक जीवने भगवानना मार्गमांथी पाछो पाड्यो होय तो ते पाडनाराने कोटि ब्रह्मांडना जीवने मारी नाखे अने पाप लागे तेटलुं पाप लागे छे. केम के ते जीवने कोटि ब्रह्मांडने विषे जन्मवुं अने मरवुं पडशे अने लखचोरासीमां महाकष्टने पामशे. ते पाप सर्वे ते भगवानना मार्गथी पाडनाराने लागे छे अने भगवानने मार्गे चडाव्यो ते जीवने लखचोराशीमां कोटि ब्रह्मांडने विषे जन्मवुं अने मरवुं पडत ते दुःख सर्वे मटी गयां ते पुन्य तेने थाय छे. माटे एक जीवने भगवान सन्मुख करवामां कोटि ब्रह्मांडना जीव उगार्यानुं पुन्य थाय छे अने एक जीवने भगवानना मार्गथी पाडनाराने कोटि ब्रह्मांडना जीव वधायने मारी नाखे एटलुं पाप लागे.

प्रश्नः–हवे भगवानना मार्गे चडाव्यो ते शुं? अने भगवानना मार्गथी पाड्यो ते शुं?

–तो तेनो उत्तर एम छे जे जीवने संसार भोगववानो ने मायिक पंचविषय भोगववानो उपदेश करीने विषयने भोगवावे छे अने संसार करावे छे, तेने भगवानना मार्गथी पाड्यो जाणवो अने एवा उपदेशना करनाराने महापाप लागे छे अने जे जीवने संसारनो अने पंचविषयनो त्याग करावीने भगवान ने भगवानना संत विषयना त्यागी तेने विषे हेत करावे छे तेने भगवान सन्मुख कर्यो जाणवो. अने एवा उपदेश करीने विषयथकी ने संसारथकी एक जीवने मूकावे छे तेने महा मोटुं पुन्य थाय छे.

प्रश्नः–पछी महाराजे प्रश्न साधुने पूछ्युं जे "कोइ गृहस्थ होय

ने तेने अमारा स्वरूपनो निश्चय होय ने अमारूं भजन करतो होय ने तेनो भाइ के दिकरो ते त्यागी थाय त्यारे तेने घेर लइ जवा सारु दाखडो करे तो पण ते तो वैराग्यने पाम्यो होय ते पाछो घेर जाय नहीं केम के जेने संसारनी उलटी थइ तेनाथी ते ओकेलुं पाछुं खवातुं नथी. माटे ते तो घेर जाय नहीं. पछी ते सारु अमारो तेने (गृहस्थने) अवगुण आवे तथा कोइक पदार्थने लीधा दीधा सारु भगवानना भक्तनो अवगुण आवे तथा पंचविषयनो एने राग होय अने तेने भगवान के भगवानना संत कहे तोय टळे नहीं त्यारे तेनुं कल्याण थाय के न थाय? ते कहो."

—पछी धर्मानंद स्वामी तथा अक्षर मुक्तानंदस्वामीए कह्युं जे "तेनुं तो कल्याण थाय नहीं."

प्रश्नः—पछी महाप्रभुजी बोल्या जे "अमारा स्वरूपनो निश्चय छे ने अमारूं भजन करे छे एना कल्याणनी तमे केम ना पाडो छो?"

—पछी धर्मानंदस्वामीए कह्युं जे "भगवान ने भगवानना भक्तना अवगुणनुं तेने पाप लागे छे अने ते पापे करीने तेनी कुबुद्धि थाय छे माटे कुबुद्धिवाळानुं कल्याण थाय नहीं."

प्रश्नः—पछी वळी महाराज बोल्या जे "एनुं कोइ रीते कल्याण थाय के न थाय?"

—पछी धर्मानंद स्वामीए कह्युं जे "एने कोइक भगवानना भक्तनो विश्वास होय ने तेने संगे करीने जे अवगुण आव्यो होय ते टळी जाय तो तेनुं कल्याण थाय."

प्रश्नः—पछी महाराज बोल्या जे "ए उत्तर तो खरो पण बीजी रीते एनो मोक्ष थाय ते कइ रीते थाय?

—तो एने अमारा स्वरूपनो निश्चय होय अने तेने विषयनी वासनाए

करीने अवगुण आव्या करे छे, अने अंतरमां निश्चय होय तेने करीने परिताप पण थाय छे अने निश्चयने प्रतापे करीने परिताप थता थता एनी अवगुण बुद्धि टळी जाय छे, पछी निर्मानी थइने संगमां आवीने ज्ञानने पामीने मोक्षने पामे छे. एवी रीते निश्चयने प्रतापे एनुं कल्याण थाय छे. माटे निश्चय दृढ राखीने भक्ति करशे तेनुं कल्याण थशे ने निश्चय विना भक्ति सूझे एटली करशे पण तेनुं कल्याण थशे नहीं.

अने "निश्चयनुं शुं लक्षण छे?"

"तो जेने निश्चय होय ते अमारी आज्ञारूपी जे धर्म ते बराबर पाळतो होय तेने एम जाणवुं जे निश्चय छे अने जेने निश्चय न होय तेने अमारी आज्ञारूपी धर्म ते बराबर पळातो नथी त्यारे तेने एम जाणवुं जे एने निश्चयमां कसर छे."

॥ इति श्री मुखसिद्धांत ३३ समाप्त ॥

३४ विषयः—मोक्षनी इच्छा पोतानी मेळे थती नथी

श्री हरिकृष्णाय नमोनमः—संवत् १९१६ना कारतक वद ९ ने दिवस महाराज श्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्री रोहीशाळा मध्ये भक्त कोठारी वनमाळी आणंदजीने घेर उत्तरादे बारना ओरडानी ओसरीमां ढोलिया उपर विराजमान थया हता. अने सर्वे सोनेरी वस्त्रो धारण कर्यां हतां. अने पुष्पनां आभूषणो धारण कर्यां हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा हरिभक्तोनी सभा भराइने बेठी हती.

प्रश्नः—पछी धर्मानंदस्वामीए प्रश्न पूछ्युं जे "हे महाराज! जीवने पोतानी मेळे मोक्षनी इच्छा थाय के न थाय?"

पछी श्री महाराज बोल्या जे "जीवने तो पोतानी मेळे तो कोइ काळे मोक्षनी इच्छा थाय ज नहीं. केम के जीवने तो अनादिनी पंच-

विषयनी ज इच्छा छे. अने कोइ दिवस भगवानने तो जाण्या ज नथी माटे जे वात जाणी न होय तेनी इच्छा केम थाय ? अने जीवने तो पंचविषयनी वासनाए करीने जन्म-मृत्युनां अपार दुःख थया करे छे. माटे जीवने तो सत्पुरुष कृपा करीने मोक्षनी इच्छा उत्पन्न करावे छे, त्यारे इच्छा थाय छे. अने भरतजीनी पेठे जेने पोतानी मेळे मोक्षनी इच्छा थाय ते पण पूर्वे सत्पुरुषे ज करावेली छे.

ते केवी रीते सत्पुरुष मोक्षनी इच्छा करावे छे तो प्रथम जीवने चोवीस तत्त्वना जुदा जुदा विभाग करीने देहने नाशवंत अने दुःखरूप कही देखाडे छे. अने ते देह संबंधी पदार्थ अने देहना जे सगा संबंधी ते सर्वेने ज्ञाने करीने खोटा करी देखाडे छे. अने चोवीस तत्त्वथी जुदो एवो जे जीवात्मा तेना स्वरूपनुं साक्षात्कार ज्ञान करावे छे. अने ते आत्माने विषे परमात्मा रह्या छे तेना स्वरूपनुं ज्ञान करावे छे त्यारे ज जीवने मोक्षनी इच्छा उत्पन्न थाय छे.

अने जीवने तो जेम कोइक मांदो पड्यो होय ते पोतानी मेळे औषध करीने साजो थवाने समर्थ नथी माटे तेने तो कोइक वैद औषध आपीने तेनो रोग मटाडे त्यारे तेने अन्न उपर रुचि थाय छे. अने पछी तो अन्न खातां पण धराय नहीं अने प्रथम मांदो होय त्यारे तो अन्न नजरे दीठुं पण गमतुं न होय ! तेम जीवने पंचविषयनी वासना-रूपी रोग छे तेने करीने मोक्षनी इच्छा थती नथी. अने तेने तो वैद-रूपी सत्पुरुष मळे अने ते जीवने धर्म, ज्ञान, वैराग्य अने भक्तिरूपी औषध आपीने पंचविषयनी वासनारूपी रोगने टळावे छे. पछी तेने भगवान भजवाने विषे अतिशय रुचि थाय छे अने पछी कोइनो रोक्यो रोकातो नथी.

जेम मांदो नीरोग थाय अने पराणे खाधानुं मागी ले केम के

देहनुं जीवन अन्न छे तेम निर्वासनिक थयो एवो जे जीवात्मा तेना तो जीवन परमात्मा छे अने ते परमात्मा विना क्षण मात्र पण तेने रहेवाय नहीं अने एवो जे श्रद्धावाळो थयो ते तो अक्षररूप थइने भगवाननी सेवामां अखंड रहे छे. माटे प्रगट भगवान अने भगवानना एकांतिक पंचविषयना त्यागी संत तेना समागम थकी ज जीवने मोक्षनी इच्छा थाय छे अने ते जीवनो मोक्ष थाय छे."

॥ इति श्री मुखसिद्धांत ३४ समास ॥

३५ विषयः—प्रगट भगवाननो साचो संग

श्री हरिकृष्णाय नमोनमः—संवत् १९१६ ना कारतक वद १० ने दिवस महाराज श्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्री रोहीशाळा मध्ये भक्त कोठारी वनमाळी आणंदजीने घेर उत्तरादे वार ओरडानी ओसरीमां खुरशी उपर विराजमान थया हता. सर्वे श्वेत वस्त्रो धारण कर्यां हतां. पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा हरिभक्तोनी सभा भराइने वेठी हती.

प्रश्नः—पछी त्रवाडी शंभुरामे प्रश्न पूछ्युं जे—"हे महाराज-जीवने प्रगट भगवान मळ्या होय अने तेनो संग थयो होय तो पण भगवान भजवामां श्रद्धा थती नथी अने मोळुं अने मोळुं रहेवाय छे तेनुं शुं कारण हशे?

पछी महाराज बोल्या जे—"जेने मन, कर्म, वचने भगवाननो संग नथी कर्यो अने एकलो इन्द्रियोए करीने संग कर्यो छे, पण ते विषयने रागे करीने अंतःकरणमां असुरभाव रह्यो छे माटे ते विषयने ज्यारे सत्पुरुष मुकावे छे त्यारे तेने असुरभाव आवी जाय छे. जेम भालदेशनो कूवो होय तेमां उपर पाणी मीठुं होय अने जो उंडुं खोदे तो खारुं

पाणी आवी जाय. तेम जेने इन्द्रियोमां भगवाननो संग थयो होय तेने सत्पुरुष जो विषयने मुकावे तो अंतरना असुरभावे करीने इन्द्रियोमां संग थयो होय तेने पण टाळी नाखे छे. माटे इन्द्रियो अंतःकरण अने अनुभव ए त्रणे करीने जे संग थाय ते ज खरेखरो संग कर्यो कहेवाय छे.

प्रश्न :—अने तेमां इन्द्रियो अंतःकरण अने अनुभव अने साक्षात्कार थशो केने कहेवाय ?

३६ विषय :—त्यागी अने गृहस्थनां द्वारे कल्याण विषे

श्री हरिकृष्णाय नमोनमः–संवत् १९१६ ना कारतक वद ११ ने दिवस महाराज श्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्री रोहीशाळा मध्ये भक्त वनमाळी आणंदजीने घेर उत्तरादे वार ओरडानी ओसरीमां ढोलीया उपर विराजमान थया हता. सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां. पाघमां तोरा लटकता हता. एक फूलनो गुच्छ हस्तकमळमां धारण कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा हरिभक्तोनी सभा भराइने वेठी हती.

प्रश्नः–पछी गाम वलदाणाना शाह मूळजी भक्ते महाराजने प्रश्न पूछयुं जे " हे महाराज! एक गृहस्थ हरिभक्त छे तेने भगवानना स्वरूपनो निश्चय तो अडग छे, अने भगवाननी आज्ञा प्रमाणे वर्ते छे अने ते त्यागीनी वरोवर आत्यंतिक कल्याण माने छे ते एनुं त्यागीनी वरोवर कल्याण थशे के नहीं थाय? ते कहो."

पछी महाराज वोल्या जे–" ए गृहस्थाश्रमसां रह्यो छे ते एने कोइक विषयमां राग छे तेने करीने रह्यो छे केम के राग विना तो प्रगट भगवाननो संवंध मेलीने छेटे गृहस्थाश्रममां रहेवाय नहीं अने ते राग तो आत्यंतिक ज्ञान पाम्या विना टळे नहीं, माटे गृहस्थने पण संतनो समागम करीने ज्ञान जरूर पामवुं जोइए अने पंचविषयनी वासना टळी गइ होय ते कोइक प्रारब्धकर्मने जोगे करीने गृहस्थाश्रममां रह्यो होय ते तो स्त्रीआदिक पंच विषयनो त्याग करीने उदास थको रहे पण संसारमां लोपाय नहीं, अने ते तो जेम पूंछलेलुं (अशक्त) ढोर होय तेने शींगडे पूंछडे झालीने ऊभुं करे त्यारे थाय अने पाछुं वेसे त्यारे पोतानी मेळे ऊठे नहीं. तेम जे निर्वासनिक होय ते तो पूंछलेला ढोरनी पेठे सत्संगमांथी पोतानी मेळे तो संसारमां जवानो संकल्प

पण करे ज नहीं, अने कोइक देशकाळने जोगे करीने परमेश्वर अथवा मोटा संत ते संसारमां मोकले तो ते जाय पण तेने संसारमां रहेवाय नहीं.

अने जेने कोइक विषयनी वासना होय तेने ते विषयनी वासना टाळवा सारू संतनो समागम करीने ते विषयना दोष जोवा, तेमां स्त्रीनो राग जेने होय तेणे एम विचार करवो जे "ते स्त्री छे ते क्यांथी बनी छे? अने तेना अंगमां शुं भर्युं छे? तो हाड, मांस, नाडीयो, त्वचा, रोम, मळ, मूत्र, परसेवो, लाळ, लोही, आदिक नकारी वस्तु भरी छे, अने वळी स्त्रीनो देह केवो छे? तो जेम लघुशंका करवानी खाळ होय अने तेमां हजारो मनुष्य लघु करता होय अने ते खाळ अतिशय गंधाती होय अने तेमां लघु करवानी इच्छा थाय अने करवी पडे तो मोढा आडुं लुगडुं दइने अभावे युक्त करे, तेम जेने स्त्रीनो राग होय तेने शमाववा सारु अतिशय पापरूप अने अनंत दोषे युक्त अने नरकमां लइ जवानी बारी रूप जाणीने अभावे सहित ऋतु समे स्त्रीनो संग करे अने अंते देह मुक्या म्होर स्त्रीनो त्याग करवो.

अने तेवीज रीते द्रव्यादिक पदार्थ तेमां पण अनंत दोषने देखे. जे एक पैसो भेगो करे तेमां पण पंदर अनर्थ थाय छे, त्यारे एक पैसो थाय छे, अने ते द्रव्यने साचववुं पडे तेमां पण केटला भय अने कलेश उत्पन्न थाय छे? अने पोताने तो एक शेर अन्न देहरक्षणने अर्थे जोइए छीए माटे "मने धिक्कार छे जे प्रगट भगवाननो जोग मेलीने द्रव्यादिक पदार्थमां बंधाइ रह्यो छुं! अने जो ते द्रव्यमां मारे वासना रही जशे तो सर्पादिकनो मारे देह धरवो पडशे, अने मारा आत्मानुं अतिशय भूंडुं थशे," एम समजीने द्रव्यनी वासनानो त्याग करे.

–अने तेमज सारूं सारूं जे खावानुं तेमां पण अनंत दोषने देखे

जे " आ जीभने गळपण लागे छे तथा खारूं, खाटुं, मीठुं, मोळुं, लागे छे ते जीभ तो मांसनो लोचो छे अने गळ्या, चीकणा, खाटा, खारा, तेना प्रमाणना करनारा अने तेना भोक्ता तो वरुण देव छे, अने जे हुं आत्मा छुं ते तो सदाय असंगी छुं ते सारुं सारुं खावे करीने सुखीयो थाउं एवो नथी, अने जेवुं तेवुं खावे करीने दुःखीयो थाउं एवो नथी. अने देहमां जे प्राणवायु छे तेने तो जेवुं तेवुं आहार मात्र जोइए छीए माटे सारुं सारुं खावा सारु वृथा मारी आयुष्य शा सारु खोउं ? अने कोटि वर्ष सुधी गळ्या, चीकणा, खाउं तो पण जीह्वा इन्द्रिय तृप्त थाय एवी नथी, अने जो मारे सारुं सारुं खावामां वासना रहेशे तो विष्टामां कीडो थवुं पडशे." एवी रीते विचार करीने सारुं सारुं खाधानी वासनानो त्याग करे छे.

अने तेमज स्नेहमां पण बंधन रूपी कोटानकोटि दोषने देखे जे " स्त्री छोकरां, सगां संबंधी, तेमां हुं स्नेहे करीने प्रत्यक्ष भगवाननो संबंध मूकीने बंधाइ रह्यो छुं माटे मने धिकार छे! केम के प्रत्यक्ष भगवाननो संबंध छे ते तो अनंत जन्मनां सुकृत होय त्यारे ज थाय छे, ते मने आज प्राप्त थयो छे माटे मारा जेवो कोइ अणसमजु नहीं जे आ जगतनां स्त्री, छोकरां, सगां, संबंधी, ते कोइ भेगुं आव्युं नथी अने कोइ भेगुं जतुं नथी. ए तो सौसौने स्वार्थे भेगां थयां छेअने सौसौनो स्वार्थ सरी रहे छे त्यारे कोइना राख्यां पण रहेतां नथी, अने आज पण मारामांथी स्वार्थ मटे तो मारुं पण वांकुं बोले अने तिरस्कार करे, माटे मने अज्ञाने करीने तेमां स्नेह रही जशे तो मारे तेना भेगो चोराशीमां जन्म धरवो पडशे. ते कूतरा थशे तो मारे पण कुतरानो अवतार आवशे, ए गधेडा थशे तो मारे पण गधेडानो अवतार आवशे अने ते वांदरा थशे तो मारे पण वांदरानो अवतार आवशे, एवी रीते तेना भेगां

लोकनी तुच्छ जेवी अने अनंत दुःखे युक्त एवी जे मोटप ते क्यां रहेवानी छे? ते तो नाशवंत छे अने मिथ्या भ्रान्ति, मोह अने राग तेने करीने मोटप, लाज, आबरू मानी छे, माटे मिथ्या माने करीने भगवानना संबंधथी छेटे रहीने मारो देह पडशे तो तेने करीने भूत प्रेतनो अवतार धरवो पडशे अने हेरान थइश, अने अति दुःख पामीश."

एवी रीते पंचविषयने दोषेयुक्त विचार करीने ते विषयने पापरूप जाणीने तथा अनादिना जीवना शत्रु जाणीने तेनो सर्व प्रकारे त्याग करवो. अने निर्वासनिक थवुं ए सिद्धांतवार्ता छे. केम के निर्वासनिक थया विना आत्यंतिक मोक्ष थाय नहीं; माटे जरूर निर्वासनिक थवुं.

—ते सारू भगवानना भक्ते जगत थकी सदाय उदास रहेवुं. अने एवी रीतनो जे सत्संगी छे तेनी सर्वे वासना निर्मूळ थाय छे अने जो कोइ जातनी वासना रहे अने देह मुके तो तेने जरूर जन्म धरवो पडशे. ने पूर्वजन्मनी परमेश्वरनी भक्तिनो जे निश्चय छे ते टळतो नथी अने करीने पाछो सावधान थाय छे. अने धर्म, ज्ञान, वैराग्य अने माहात्म्ये त भक्ति तेने सिद्ध करे छे. अने ते योग भ्रष्ट कहेवाय छे. अने एवा ने सहजे एवा देशकाळ रूडामां जन्म होय छे ज्यां देह अने देहना संबं- प्रीति होय ज नहीं ने सत्साधुने विषे तेने सहेजे प्रीति थया करे. एवी ना जे होय तेने योगभ्रष्ट जाणवा. अने ते संसारनो त्याग करीने भगवा- ना संबंधमां अखंड रहे छे, पण एवा योगभ्रष्ट संसारमां देह अने देहना संबंधीना जोडाव्या जोडाता नथी. अने तेने उपदेशना करनारा साधु ते संसारमां जोडावे तो पण एवा योगभ्रष्ट संसारमां जोडाय नहीं. अने भगवान पोते एम आज्ञा करे जे "तुं संसारमां रहे अने तारुं कल्याण करीशुं." तो पण एवा योगभ्रष्ट संस्कारी निर्वासनिक होय तेने संसा- रमां रहेवाय नहीं. केम के जे जे ज्ञाने करीने निषेध कर्यो तेनुं पाछुं ग्रहण

भक्तिनुं, राज्यनुं, द्रव्यनुं, विद्यानुं इत्यादिनुं मान जेने हशे तेने प्रगट भगवान नहीं ओळखाय. अने जे दैवी जीव हशे तेने भगवान ओळखाशे. अने दैवी जीव होय तेने ज प्रगट भगवाननो ज्ञान प्रकाशरूपी अलौकिक प्रताप जाण्यामां आवे छे.

—ते केवी रीते जाणे छे ? तो प्रगट भगवान पासे सर्वोपरि ज्ञान होय तथा सर्वदेशी ज्ञान होय अने ते सर्वेना मतना सिद्धांतने जाणता होय अने जेनी पासे सर्वे शास्त्रनुं संपूर्ण ज्ञान होय अने वळी अपार ज्ञान होय अने ते ज्ञानने जे जे मन, कर्म अने वचने सांभळे तो ते सांभळनाराना अंतरना संशय मात्र टळी जाय अने तेना अंतरमां परमशान्ति थाय अने तेने पंचविषय पामवानी जे तृष्णा ते टळी जाय छे. तेने करीने जे दैवी अने मुमुक्षु जीव होय तेने प्रगट भगवानना स्वरूपनो निश्चय थाय छे अने ज्यारे भगवान प्रगट थाय छे त्यारे केटलाक मुक्त देह धरे छे. ते मुक्त जे ते कामलोभादिक अंतरशत्रुनो त्याग करीने प्रगट भगवानने शरणे आवीने भगवान थकी आत्यंतिक ज्ञान सिद्ध करीने अक्षर—ब्रह्मरूप थइने भगवाननी सेवामां अखंड रहे छे अने एवा ब्रह्मरूप मुक्त तो ज्यां प्रगट भगवान होय त्यां ज होय छे. पण भगवान विना बीजे ठेकाणे एवा पंचविषयना त्यागी अने आत्यंतिक ज्ञानने पामीने सिद्धदशाने पामेला संत ते प्रगट भगवान विना होय नहीं.

जेम मानसरोवर होय त्यां हंस होय अने ज्यां हंस होय त्यां जरूर मानसरोवर होय. तेम ज्यां प्रगट भगवान होय त्यां ज एवा हंसरूप पंचविषयना त्यागी अने ब्रह्मरूप साधु होय. अने ज्यां एवा साधु होय त्यां जरूर भगवान होय.

एवी रीते ज्ञाने करीने प्रगट भगवान ओळखाय छे. अने ते ज्ञानविषे अनंत प्रताप अने अनंत ऐश्वर्य अने अनंत शक्तिओ अने अनंत सिद्धिओ रही छे. अने पूर्वे जे जे भगवानना अवतार थइ गया तेणे पण पोताना भक्तोने ज्ञान ज आप्युं छे. ते श्रीकृष्णे उद्धवजीने तथा अर्जुनने ज्ञान आप्युं छे. ने ज्ञाने करीने पोताना स्वरूपनो निश्चय कराव्यो छे. अने कपिलदेव भगवाने देवहूतिने पण ज्ञाने करीने निश्चय कराव्यो छे. अने रामचंद्रजी भगवाने पण लक्ष्मणने तथा भरतजीने ज्ञान आपीने पोताना स्वरुपनो निश्चय कराव्यो छे. अने ऋषभदेव भगवाने पण पोताना पुत्रोने ज्ञान आप्युं छे. अने वेदमां पण भगवानना स्वरूपने जाणवाने अर्थे ज्ञान ज कह्युं छे. अने शास्त्रमां पण परमात्माने जाणवाने अर्थे ज्ञान ज कह्युं छे. माटे ज्ञाने करीने ज प्रगट भगवान ओळखाय छे.

अने जेणे ज्ञाने करीने भगवानने ओळख्या तेणे ज नक्की ओळख्या छे, अने तेनी ज मुक्ति थाय छे. ते वेदमां पण कह्युं छे जे "ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः" ए श्रुतिनो एम अर्थ छे जे "परमात्माना स्वरूपना ज्ञान विना मुक्ति थाय नहीं." माटे ज्ञाने करीने भगवानने जाणवा एज सर्वे शास्त्रनो तथा चार वेदनो सिद्धांत छे, अने ते ज्ञान विना जे परचा मागे छे ते तो मुरख छे अने ज्ञानहीन छे. केम के परचा छे ते तो मायानो खोटो प्रपंच छे, ते ढोंगी जगतने धूतनारा होय छे ते करे छे, पण खरा सत्-पुरुष एवा ढोंग करे नहीं, अने पूर्वे जे जे सत्पुरुष थइ गया छे तेणे ज्ञान सिवाय बीजो परचा आपवानो ढोंग कर्यो ज नथी. माटे ज्ञाने करीने ज प्रगट भगवान ओळखाय छे, पण बीजे कोइ प्रकारे भगवान ओळखाता नथी.

त्यारे तेमां कोइने एम शंका थाय जे भगवान विना बीजा कोइ

पंथ साचो अने बीजानो धर्म खोटो" एम समजशे तेने कोइ काळे भगवान ओळखाशे नहीं. माटे जे जे अमारा आश्रित होय तेने अमारा पछी एवो खोटो ममत्व राखवो नहीं अने कोइ शुद्ध ज्ञानदाता प्रगट थाय तो तेनी पासे सुखेथी जजो अने ते खरो ज्ञानदाता जणाय तो तेनो शीर साटे आश्रय करजो, अने तेनो आश्रय करशो एज अमारो आश्रय छे केमके सत्पुरूष तो तेना ते छे, माटे जीवोने ज्ञान आपवा सारु वारंवार प्रगट थाय छे, एवी रीते समजे छे तेने कोइक दहाडे प्रगट भगवान ओळखाशे, अने तेनुं कल्याण थशे."

इति श्रीमुख सिद्धांत ४२ समाप्त ।

४३ विषयः—तत्त्वे करीने भगवानने जाणवा विषे

श्री हरिकृष्णाय नमोनमः—संवत् १९१६ ना मागसर सुद ३ ने दिवस महाराज श्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्री बोटाद मध्ये भक्त खेताजीनी स्त्री वा जामबाने घेर उगमणे बार ओरडानी ओसरीमां ढोलिया उपर विराजमान थया हता, सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्या हता. मस्तक उपर गुलाबी रंगनो फेंटो बांध्यो हतो, सर्वे अंगने विषे पुष्पना आभुषण धारण कर्या हता अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणांक हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

प्रश्नः—पछी महाराजे साधुने प्रश्न पुछ्युं जे "तत्त्वे करीने भगवानने जाणे तेने पछी कांइ जाणवुं रहेतुं नथी. तो तत्त्वे करीने केम जाणवा ते कहो ?"

पछी अक्षर मुक्तानंद स्वामीए कह्युं जे क्षर, अक्षर अने अक्षरातीत, ए त्रणने जाणे त्यारे ते जाणी रह्यो कहेवाय. पछी महाराज बोल्यो जे

ए पण उत्तर खरो" एम कहीने रह्या. त्यां मशाल थइ, पछी महाराजनी आरती धुन्य करीने सर्वे सभा बेठी.

प्रश्नः—पछी परम सिद्धानंद स्वामीए प्रश्न पुछ्युं जे "हे महाराज! जीव, इश्वर, माया अने परमेश्वर तेना स्वरूपने जाणे त्यारे जाणी रह्यो कहेवाय के तेने कांइ जाणवुं बाकी रहे छे?"

पछी महाराज बोल्या जे "जीव, इश्वर, माया अने परमेश्वर तेना स्वरूपने तत्त्वे करीने यथार्थ, जेम छे तेम साक्षात्कार, प्रत्यक्ष जाणे त्यारे ते जाणी रह्यो कहेवाय, पण तत्त्वे करीने न जाण्युं होय अने अमथु जाण्युं होय त्यां सुधी यथार्थ न जणायुं कहेवाय.

ते तत्त्व ते शुं? तो जेम छाश करे तेमांथी मांखण नीसरे ते तत्त्व कहेवाय पण अमथी डखोळीने छाश करे अने मांखण न नीसरे तेने छाश तो कहेवाय पण तत्त्व न नीसर्युं! तेम भगवानना स्वरूपने तत्त्वे करीने जाणवुं. तेने जाणवानी रीत कहीए छीए. जे परात्पर अने सर्वेना कारण अने सर्वेना आधार अने अक्षरातीत अने दिव्य मूर्ति परब्रह्म पुरुषोत्तम भगवान ते अनंत ऐश्वर्य अने अनंत शक्तिओ अने अनंत पार्षद तेणे विंटाणा थका सदाय अक्षरधाममां विराजमान छे, अने एवा जे भगवान ते जे ते अक्षरधाममां रह्या थका आ सर्व विश्वरूपे थाय छे. जेम सूर्य पोताना मंडळमां रह्यो थको ब्रह्मांडमां व्याप्यो छे, तेम भगवान अक्षरमां रह्या थका विश्वमां व्याप्या छे. ते केवी रीते विश्वरुपे थाय छे? तो एवा जे परात्पर भगवान ते जे ते उत्पत्ति समे अक्षरमां प्रवेश करीने अक्षररूप भगवान थाय छे, अने पछी अक्षररूप भगवान प्रकृतिपुरुषमां प्रवेश करीने प्रकृतिपुरुषरूप भगवान थाय छे, अने प्रकृतिपुरुषरूप भगवान प्रधानपुरुषमां प्रवेश करीने प्रधानपुरुषरूप

रह्या छे ते विश्व देखाय छे पण विश्वमां रह्या एवा जे भगवान ते नथी देखाता. अने जेम आकाश चारभूतमां आव्यो छे तो पण असंगी छे अने नोखो छे अने चारभूत नाश पामे तो पण आकाश नाश नथी पामतो. तेम भगवान विश्वमां रह्या थका असंगी अने न्यारा छे अने विश्वनो नाश थाय पण भगवाननो नाश नथी थतो. एवी रीते भगवान अनंत कोटि ब्रह्मांडमां रह्या छे, ए भगवानने साक्षात्कार जाणवा.

ते केम जाणवा? तो सर्व व्यापक, सर्वाधार, सर्वकारण, सर्वनियंता, एवा जे अक्षरातीत परब्रह्म पुरुषोत्तम परत्मामा दिव्यमूर्ति सदाय सिद्धस्वरूप जेनी एक लेश सत्ताए करीने अनंतकोटि विश्वने धरी रह्या छे एवा जे भगवान ते जे ते कृपा करीने पोतानुं स्वरूप जणाववा सारू मनुष्यने जाण्यामां आवे एवा मनुष्य जेवा थइने पोताना स्वरूपनुं ज्ञान करावे त्यारे ज जीव भगवानने जाणी शके, पण ते विना कोइ काळे जीव पोतानी मेळे भगवानने। जाणवाने समर्थ नथी. माटे ते भगवान मनुष्य जेवा थइने जीवने पोतानुं स्वरूप तत्त्वे करीने जणावे छे.

ते तत्त्व ते शुं? तो जेवी रीते विश्वमां भगवान जे ते अक्षररूपे करीने रह्या छे. तेवी रीते पिंडमां भगवान रह्या छे. ते पिंड देखाय छे पण तेमां रह्या एवा जे भगवान ते नथी देखाता. ते केवी रीते रह्या छे? तो जेम भेंसनी नानी पाडी होय तेमां घी रह्युं छे. ते घी जोइतुं होय अने पाडीमांथी काढवा जइए तो एक टीपुं घी नीसरे नहीं अने पेट चीरीने मांहीली कोरे (अंदर) जोवा जाय तो पण घी हाथ न आवे अने उलटी पाडी मरी जाय ते पाछुं कोइ दिवस घी पामीए ज नहीं. तेम पिंड अने ब्रह्मांडमां भगवान रह्या छे अने ते अज्ञाने करीने शास्त्रना शब्दना मर्मने जाण्या विना अने असमर्थ अने देहने ज पोतानुं रूप माने छे, अने अज्ञाने करीने मति अवळाइ गइ छे जेनी एवा जे मिथ्या

ब्रह्मज्ञानी ते जे ते एम जाणे जे सर्वमां भगवान रह्या छे एम जाणीने पोताने पण भगवान माने जे "हुं पण भगवान छुं ते मारे हवे कांइ करवुं नथी." एम जे समजे छे तेने तो कोइ काळे भगवान मळता नथी अने तेनुं कल्याण पण कोइ काळे थाय नहीं अने तेना तो जीवनो नाश थइ जाय छे. जेम पाडीमांथी चीरीने घी काढतां पाडी मरी गइ तेम सर्वमां भगवान छे एम जाणीने पोताने भगवान माने तो तेना जीवनो नाश थइ जाय छे कहेतां कोइ काळे तेने फरीने मनुष्यनो देह न आवे अने सदाय पर्वतादिक स्थावरमां पड्यो रहे, पण तेने जंगम जातमां जन्म न आवे.

माटे जे रीते अक्षररूपे करीने सर्वमां भगवान रह्या छे तेने साक्षात्कार जाणवा तेने कहीए छीए जे जेम पाडीमां घी रह्युं छे तेने बुद्धिए करीने काढवुं तो प्रथम ते पाडीने चाकरी करीने मोटी करवी, पछी ते पाडी वियाय. तेने दोहीने दूध काढीने तेमां घटे तेटलुं मेळवण नाखीने तेने चार पहोर राखीने ते दहीं थयुं तेने गोळीमां नाखीने रवैयाथी वलोवीने तेमांथी माखण काढीने तेने तावीने घी करवुं. ते घीने कुडलामां भरवुं त्यारे ते घी तरत जमाय एवुं थयुं. ए दृष्टांतनुं सिद्धांत ए छे जे पाडीने ठेकाणे तो पिंड अने ब्रह्मांड छे अने घीने ठेकाणे भगवान छे. ते भगवानने साक्षात्कार पामवा सारु प्रथम तो इन्द्रियो अंतःकरणादिक चोवीस तत्त्वनी जे वृत्तिओ तेने पंचविषय थकी पाछी वाळीने नियममां करवी. पछी आत्मविचार करवो जे जीव छे ते चोवीस तत्त्वे करीने सर्वे क्रिया करे छे. ते तत्त्व जणाय छे अने जीव जणातो नथी पण जीव विना तत्त्व तो जड छे, ते कांइ करवाने समर्थ नथी.

जेम सोनी हथोडीए करीने घाट घडे छे पण ते हथोडी सोनी विना घाट घडवाने समर्थ नथी तेम तत्त्व तो जड छे, तेमां जीवे प्रवेश कर्यो

छे. तेने करीने क्रिया करवाने समर्थ छे. ते जीव ज सर्वे क्रिया करे छे. जेम गरवामां दीवो मुक्यो होय ते गरवाना फकोरामां प्रकाश नीसरे छे ते दीवानो ज प्रकाश नीसरे छे. पण ते दीवो देखातो नथी अने गरवो देखाय छे. तेम तत्त्व जे ते देहरूप गरवाना फकोरां छे. ते गरवारूप देह देखाय छे, पण जीव देखातो नथी. ते जेम दीवाने गरवानुं आवरण छे त्यां सुधी दीवो साक्षात्कार देखातो नथी. अने गरवानुं आवरण टळी जाय तो दीवो साक्षात्कार देखाय. तेम आत्माने देहाभिमानने विषे आसक्तिरूप आवरण छे त्यां सुधी आत्मा साक्षात्कार देखातो नथी अने देहाभिमाननो नाश थाय तो आत्मा साक्षात्कार ब्रह्मरूप थाय छे. माटे जेम पिंड अने ब्रह्मांडनी उत्पत्ति छे तेम प्रलय करीने पोताना आत्माने विषे दृढ स्थिति पामवुं.

ते आत्मा केवो छे? तो अखंड छे, अविनाशी छे, सुखरुप छे, चैतन्य छे, प्रकाशवान छे, आनंदरूप छे, सत्यरूप छे, अच्छेद अभेद छे अने पोताने सुखे करीने ज सुखीयो थाय एवा छे. पण नाशवंत एवा जे पंच-विषय संबंधी मायिक पदार्थ तेणे करीने सुखीयो थाय एवो आत्मा नथी अने ते मायिक पदार्थने भोगववे करीने तो पोते सुखरूप छे तो पण जन्म मृत्युने पामीने, महाकष्टने पामे छे. माटे ते पिंड ब्रह्मांड आदिक सर्वेने चार प्रकारना प्रलये करीने पोताना आत्माने विषे दृढ स्थिति पामवी कहेतां अक्षरब्रह्मने विषे पोताना आत्माने एकत्वपणुं करवुं जे "अक्षर ते हुं छुं." ऐम समजवुं, ते अक्षर केवुं छे? तो अनंतकोटि ब्रह्मांडनी उत्पत्ति, स्थिति अने प्रलय, ते जेनी लेश सत्ताए करीने अक्षरना कोइक देशने विषे थाय छे, एवुं जे अक्षरब्रह्म तेने पोतानुं स्वरूप जाणीने ते अक्षरना आधार एवा जे अक्षरातीत परब्रह्म पुरुषोत्तम भगवान ते अक्षरने विषे सदाय अखंड

विराजमान छे. "तेज भगवान आ प्रगट छे" एम जाणीने ते भगवानने विषे इन्द्रियो अंतःकरणादिकनी वृत्तिओने नवधा भक्तिए करीने जोडी देवा तो तेनां इन्द्रियो अंतःकरण भगवानने विषे जोडावे करीने भगवानरूप थइ जाय छे. त्यारे तो ते भक्त एक भगवानने ज देखे छे. पछी ते भक्त भगवानना साधर्मपणाने पामे छे. कहेतां जेम भगवान काळ, कर्म, मायाए रहित छे तेम ते भक्त मायिक पंचविषयनो त्याग करीने प्रगट भगवान अने भगवानना एकान्तिक संतना समागममां रहीने अखंड ब्रह्मस्थितिमां वर्ते छे. अने एवा मुक्तदेहमां होय तो पण ब्रह्मनी ज मूर्त्ति छे. जेम कुडलामां घी भर्युं होय ते साक्षात्कार घी कहेवाय तेम जेणे पंचविषयनी वासना टाळीने तत्त्वे करीने भगवानने जाण्या छे तेने विषे तो साक्षात्कार भगवान रह्या छे अने बीजा जीवने विषे जे भगवान रह्या छे ते तो जेम पाडीमां घी रह्युं छे तेम सर्वने विषे भगवान रह्या छे. माटे आवी रीते तत्त्वे करीने जे भगवानना स्वरूपने जाणे ते ज मायाने तरीने महामुक्त थाय छे. अने आ वार्ता सर्व शास्त्रनुं रहस्य छे."

॥ इति श्री मुखसिद्धांत ४३ समाप्त ॥

---

४४ विषय :—भगवानने प्रगट थवानुं कारण

श्री हरिकृष्णाय नमोनमः—संवत् १९१६ ना मागशर सुद ४ ने दिवस महाराज श्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्री बोटाद मध्ये भक्त खेताजीनी स्त्री वा जामवाने घेर उत्तरादे बार ओरडानी ओसरीमां गादी तकीया नखावीने ढोलीया उपर विराजमान थया हता. सर्वे कसुंबल वस्त्र धारण कर्या हतां. गुलाबना पुष्पना हार धारण कर्या हता. ललाटने विषे कंकुनो चांदलो कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तोनी सभा भराइने बेठी हती.

भक्त अतिशय शान्तिने पामे छे. ते सारु तेनां तप, श्रद्धा, भक्ति अने प्रेम जोइने तेनी उपर कृपा करीने तेने सुख आपवा सारु भगवान अक्षरधाममांथी पधारे छे. अने पोताना एकांतिक भक्तने सुख आपे छे. अने धर्म, ज्ञान, वैराग्य अने माहात्म्ये सहित भक्ति तेने सिद्ध करावे छे. अने तेने आत्यंतिक मोक्ष पमाडे छे. अने तेना भेगुं अनंत जीवोनुं कल्याण करे छे. माटे निष्कामभावे पोताना जीवना कल्याणने-अर्थे पंचविषयनो त्याग करीने भगवाननी नवधा भक्ति करे छे तेने भगवानने विषे विरहरुपी प्रेमलक्षणाभक्ति प्रगट थाय छे."

प्रश्न :—पछी जीवराम भाइए प्रश्न पूछ्युं जे—" हे महाराज! गृहस्थ-ने प्रत्यक्ष भगवाननो आशरो थयो होय तेनो भगवाननी कृपाए करीने केटलो मोक्ष थाय छे अने तेने साधन शां शां करवा पडे छे अने ते गृहस्थ कइ रीते निर्वासनिक थइने आत्यंतिक मोक्ष पामे छे?"

पछी महाराज बोल्या जे—"जीवने अनंत जन्मनां पाप छे, ते पाप थकी मुकावीने भगवाने पोतानो आशरो कराव्यो अने अधर्मनो मार्ग मुकावीने धर्मना मार्गे चलाव्यो ते सर्वे भगवाननी कृपा छे, तथा अंत-रना जे ताप तेने ज्ञाने करीने शान्त पमाडे ते भगवाननी कृपा जाणवी. जेम कोइक गुनेगारने काळी टेकरीए मुकता होय अने तेने कोइक पाछो वाळे अने एम कहे "तने पूछवुं छे अने तु हमणां तारे घेर जा." त्यारे ते गुनेगार एम जाणे जे "मारुं तो मोत आव्युं हतुं पण हमणां तो उगर्यो." तेम जीवने तो जो प्रगट भगवान अने भगवानना निर्वासनिक संतनो आश्रय न थाय तो काळी टेकरीरूप नरक चोराशीमां जाय अने जमना मार खाता खाता पार आवत नहीं. माटे जेने प्रगट भगवान मळ्या छे अने ते भगवाननो आशरो जेने कर्यो अने मोक्षनी इच्छा थइ एज भगवाननी कृपा जाणवी, अने भगवाने कृपा करीने जे जे आज्ञा आपी

होय ते आज्ञाने भगवाननी कृपा जाणीने अतिशय दृढ करीने पाळवी अने ते आज्ञामां लेश मात्र पण फेर पडवा देवो नहीं, ते क्रिया साधन कहेवाय छे. अने निर्वासनिक थवुं ते तो पंचविषयनो त्याग करे त्यारे ज निर्वासनिक थाय, पण विषयनो त्याग कर्या विना कोइ काळे निर्वासनिक थाय नहीं. ते ब्राह्मण होय ते पण पंच विषयनो त्याग करे त्यारे निर्वासनिक थाय. तथा क्षत्रिय होय, वैश्य होय के शूद्र होय तथा त्यागी कहेवातो होय के भेख लीधो होय अथवा गमे ते आश्रमी कहेवातो होय पण ते सर्वे ज्ञान पामीने पंचविषयनो त्याग करशे त्यारे ज ते निर्वासनिक थशे. अने जे आत्यंतिक मोक्षने पामवुं ते पण निर्वासनिक थया विना कोइ काळे पमाय नहीं. माटे वासना तो सर्वेने जरूर टाळवी जोइशे. अने गृहस्थ ने त्यागी ते तो श्रद्धाना भेद छे. माटे जेने वहेली श्रद्धा उत्पन्न थाय ते तत्काळ विषयनो त्याग करीने त्यागी थाय अने जेने मंद श्रद्धा छे ते गृहस्थाश्रममां रह्या छे. ते गृहस्थाश्रमवाळा जे स्त्री-पुरुष ते सर्वने पण पंचविषयनी जे वासना तेनो त्याग कर्ये छूटको छे.

जेम तीर्थे जाय छे ते वधारे चालनारा होय ते वहेला पुगे छे अने जे थोडुं थोडुं चालनारा होय ते झाझे दिवसे पुगे छे. पण सौने तीर्थे पुगे छुटको छे. अने सर्वने सरखो ज पंथ पडशे. तेम जे श्रद्धावाळा छे ते तो वहेला पंचविषयनो त्याग करीने निर्वासनिक थइने भगवानना अलौकिक सुखने पामे छे. अने जेने थोडी श्रद्धा छे तेने झाझे दहाडे वासना टळशे अने वासना टळशे त्यारे भगवानना अलौकिक सुखने पामशे. अने ज्यां सुधी काम, लोभ, स्वाद, स्नेह अने मान ए जे पांच शत्रु ते जेने विषे अतिशय होय तेने अंतरमां सुख आववा दे नहीं अने तेने दुःख आपे छे.

केम के जेने जे जे विषयमां आसक्ति होय अने ते विषयनुं कोइ खंडन करे त्यारे तेनाथी तेने जरूर क्रोध थाय छे. अने ज्यारे क्रोध थाय छे त्यारे तेमांथी मोह थाय छे. अने मोह थकी बुद्धिनो नाश थाय छे. अने ज्यारे बुद्धिनो नाश थाय छे त्यारे करवा न करवानो तेने विवेक रहेतो नथी अने ते पशुपणाना भावने पामी जाय छे. माटे पंचविषयनी जे वासना तेने खटको राखीने जरूर टाळवी. अने पंचविषयनी वासना जे जे मुके छे तेने ज अमारा स्वरूपनो निश्चय थाय छे. अने जेने पंचविषयना राग छे तेने तो अमारो पण जरूर अवगुण आवे छे. जे "महाराज ने आ हरिभक्त उपर वधारे हेत छे अने मारा उपर थोडुं हेत राखे छे.' एवी रीते विषयनी वासनावाळा अमारो पण अवगुण ले छे. अने अमारे तो वाइ, भाइ, गृहस्थ, त्यागी, सर्वे उपर समदृष्टि छे. तेने अमारा निर्वासनिक भक्त-संत छे ते जाणे छे जे "महाराजने कोइना उपर पक्षपात नथी. अने जेने जेने महाराज कांइक कहे छे ते तो तेना उपर कृपा करीने कहे छे." एवी रीते निर्वासनिक भक्त समजे छे. अने अमारी जे कृपा ते पण निर्वासनिक भक्त उपर ज थाय छे माटे भगवानना भक्ते तो स्थूळ, सूक्ष्म अने कारण ते जे त्रण देह ते थकी नोखो एवो जे आत्मा तेने पोतानुं स्वरूप मानवुं अने एम समजवुं जे "हुं ब्रह्मरूप छुं, सुखरूप छुं, अच्छेद, अभेद, अविनाशी, चैतन्य अने जाणनारो अमर, अखंड, आत्मा छुं, माटे दुःखरूप अने नाशवंत अने तुच्छ अने जड एवा जे मायिक पंचविषय ते मने शुं सुख करे? ए तो दुःखरूप छे. ए तो मने भ्रांतिए करीने अज्ञान थकी सारप मनाती हती पण हवे मारे साक्षात्कार ज्ञान थयुं माटे मारे हवे पापरूप एवा जे पंच विषय तेने शत्रु जाणीने त्याग करवो छे." अने जेनी एवी समजण छे जे "हुं गृहस्थ छुं अने आ त्यागी छे अने त्यागी होय ते विषयनो

त्याग करे अने गृहस्थने तो त्याग थाय नहीं" एम जे समजे तेनी वासना कोइ काळे टळे नहीं. अने जे आत्मा छे ते गृहस्थ नथी अने त्यागीए पण नथी, अने आत्मा तो अविनाशी छे, अने ब्रह्म छे अने अक्षर छे. माटे भगवानना भक्ते तो वर्णाश्रमनी जे मिथ्या भावना तेनो त्याग करीने, निर्मानी थइने, सत्संग करीने, धर्म, ज्ञान, वैराग्य, अने माहात्म्ये सहित भक्ति सिद्ध करीने, पंचविषयनी जे वासना तेनां मूळ उखेडीने निर्वासनिक थवुं. अने आत्मारूप थइने प्रत्यक्ष एवा जे परमात्मा भगवान तेना स्वरूपमां जोडावुं. अने ज्यारे भगवानना स्वरूपमां जीव जोडाय छे त्यारे तेनी वासना सर्वे बळी जाय छे. अने तेने ब्रह्ममय एवो दिव्य देह बंधाय छे. अने ते आत्यंतिक मोक्षने पामे छे. अने अखंड भगवाननी हजुरमां रहे छे."

इति श्रीमुख सिद्धांत ४४ समाप्त ।

४५ विषय :—मोक्षनो सुलभ मार्ग

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः—संवत १९१६ ना मागसर सुद ५ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्रीबोटादमध्ये भक्त खेताजी नी स्त्री वा जामबाने घेर उगमणे बार ओरडानी ओसरीमां ढोलीया उपर गादी तकीया नखावीने विराजमान थया हता. सर्वे कसुंबल वस्त्रो धारण कर्यां हतां. कंकुनो चांदलो कर्यो हतो, अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तोनी सभा भराइने बेठी हती.

प्रश्न :—पछी धर्मानंद स्वामीए प्रश्न पूछ्युं जे—"हे महाराज! मोक्षने अर्थे शास्त्रमां अनंत साधन कह्यां छे पण एमां एवुं कयुं एक सुलभ साधन छे जेने करीने तत्काळ थोडेक दाखडे जीवनो मोक्ष थाय?"

पछी महारज बोल्या जे "जीवनो मोक्ष थवो ते अतिशय कठण छे. अने जीवने मोक्षने मार्गे चालवुं ते पण घणुं कठण छे. अने अग्निमां वळी मरवुं तेथी पण जीवने मोक्षने मार्गे चालवुं ते कठण छे. केम के जगतमां केटलीक स्त्रीने पुरुषमां हेत होय तो ते पुरुष मरे त्यारे तेनी वांसे स्त्री अग्निमां वळी मरे छे. पण तेने मोक्षने मार्गे नथी चलातुं. अने कूवामां पडवुं तेथी पण मोक्षने मार्गे चालवुं ते अति कठण छे. केम के कूवामां पण घणांय बूडी मरे छे. अने माथुं कपावीने मरवुं तेथी पण मोक्षने मार्गे चालवुं ते कठण छे. केम के पैसाने लोभे करीने घणांय माथां कपावे छे. माटे सर्वे करतां मोक्षने मार्गे चालवुं ए घणुं कठण छे. अने तीर्थ व्रत, गुप्तदान, पुन्य इत्यादिक साधन करीने मोक्ष थवो घणो कठण छे केम के मोक्ष तो पंचविषयनी वासनानो त्याग करे त्यारे ज जीवनो मोक्ष थाय. ए वासना टळवी घणी कठण छे. केम के वासना तो जीवने अनादि काळनी छे. अने त्रण देहमां जीव एकरस थइ रह्यो छे. माटे जीव ते देह तेने संगे करीने जन्म मृत्युना दुःखने वारंवार पाम्या करे छे. माटे जे पंचविषयनी वासना टाळे छे तेनो ज मोक्ष थाय छे.

—अने ते वासना क्यारे टळे छे? तो परमात्माना स्वरूपने साक्षात्कार पामे छे त्यारे वासना टळे छे. ते गीतामां कह्युं छे :—

विषयाविनिवर्तन्ते निराहारस्य देहिनः ।
रसवर्जे रसोप्यस्य परं दृष्ट्वा निवर्तते ॥

अर्थः—जे परमात्माने देखे त्यारे वासना टळे अने ते परमात्मा तो माया पर छे, अने जीव मात्र मायामां छे. माटे तेनां इन्द्रियो, अंतःकरण पण मायिक छे. ते मायिक इंद्रियो, अंतःकरणे करीने माया पर एवा जे परमात्मा भगवान ते एना जाण्यामां आवता नथी ते पण कह्युं छे जे 'यतो वाचो निवर्तन्ते अप्राप्य मनसासह'।

अर्थः–"जीवना इन्द्रियो, अंतःकरणना जाण्यामां परमात्मा नथी आवता." अने ते भगवानने जाण्या विना जीवनो मोक्ष थाय नहीं. ते पण वेदमां कह्युं छे जे–'ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः'।

अर्थः–"भगवानना स्वरूपना ज्ञान विना जीवनी मुक्ति थती नथी." माटे भगवानना स्वरूपनुं साक्षात्कार ज्ञान थाय त्यारे ज जीवनो मोक्ष थाय.

हवे ते भगवानने जीव केम पामे? तो माया पर एवा जे भगवान ते कृपा करीने जीवना इन्द्रियो, अंतःकरणना जाण्यामां आवे एवा मनुष्यरूपे जीवोना कल्याणने अर्थे आ पृथ्वी उपर पधारे त्यारे जीवने काने करीने ते भगवानना शब्द सांभळ्यामां आवे छे, त्वचाए करीने भगवाननो स्पर्श कर्यामां आवे छे; नेत्रे करीने जीवने भगवाननुं रूप जोवामां आवे छे; रसनाए करीने भगवाननो प्रसाद जमाय छे. तथा भगवाननी लीला गवाय छे अने नासिकाए करीने भगवानना हार, चंदनादिकना सुगंध लेवाय छे अने हाथे करीने भगवाननी सेवा कर्यामां आवे छे.

एवी रीते इन्द्रियो अंतःकरणे करीने जाण्यामां आवे एवा मनुष्यस्वरूपे भगवान ज्यारे पृथ्वी उपर प्रगट विराजता होय अने ते भगवानने विषे जेने आत्मबुद्धि थाय तेने आत्मबुद्धिए करीने अतिशय हेत थइ जाय, जेम बापने दिकरा उपर हेत थाय छे तो ते दिकरानो एके अवगुण नजरे आवतो नथी तेम जेने भगवानने विषे आत्मबुद्धि थाय तेने प्रगट भगवानना मनुष्यचरित्रने विषे दोष भासे ज नहीं. अने तेने तो भगवान जे जे चरित्र करे ते अलौकिक अने दिव्य जाणे अने कल्याणकारी जाणे. अने जेने जेने विषे आत्मबुद्धि थाय तेना गुण तेमां

आवे छे माटे जेने भगवानने विषे आत्मबुद्धि थाय छे त्यारे भगवानने विषे रह्या जे कल्याणकारी दिव्यगुण ते सर्वे भगवानना भक्तने विषे आवे छे अने ते भगवानना गुण भक्तमां आवे छे त्यारे ज तेनी वासना टळे छे.

जेम सूर्य उगे छे त्यारे नेत्रने सूर्यनो संबंध थाय छे ते संबंधे करीने सूर्यनो गुण जे प्रकाश ते नेत्रमां आवे छे. अने रात्रीनो जे अंधकार ते नेत्रमांथी नाश पामी जाय छे, तेम जेने प्रगट भगवानने विषे आत्म-बुद्धिए करीने संबंध थयो तेने विषे भगवानना गुण आवे छे त्यारे महा-अंधकाररूप जे पंचविषयनी वासना ते टळी जाय छे अने ते जीवात्मा ब्रह्मरूप थाय छे अने परम मोक्षने पामे छे.

माटे सर्व साधनमां एक साधन मोक्षनुं सुगम ए ज छे जे प्रत्यक्ष भगवान आ जीवने मळे अथवा प्रगट भगवानना एकान्तिक पंचवि-षयना त्यागी संत मळे अने तेने विषे आत्मबुद्धि थाय ए ज सर्वथी मोक्षनो मार्ग सुलभ छे.

जेम वहाणमां बेसीने समुद्र तरवो तेमां कांइए दाखडो पडे नहीं अने बेठां बेठां अने सूतां सूतां समुद्र तरी जवाय तेम प्रत्यक्ष भगवान अने भगवानना संतने विषे आत्मबुद्धिए करीने वगर दाखडे करीने सुगम रीते मोक्ष थाय छे. अने जे साधने करीने मोक्षने पामवुं ए तो जेम तुंबडां बांधीने समुद्र तरवो तेवुं कठण छे, अने मिथ्याज्ञाननी ओथ लइने धर्मे रहित अने प्रत्यक्ष भगवान अने भगवानना संत मळ्या विना अमथी भक्तिए करीने मोक्ष माने छे ते तो जेम कंठमां पथरो बांधीने समुद्र तरवा जाय एवा जाणवा; माटे प्रत्यक्ष भगवान अने भगवानना संत तेने संबंधे करीने ज जीवनो मोक्ष थाय छे, ए सर्वे शास्त्रनो अने सर्वे सत्पुरुषनो सिद्धांत छे."

प्रश्नः—पछी खेतेभाइए प्रश्न पूछ्युं जे "हे महाराज! सर्वना कारण तो तमे एक ज भगवान छो. अने जीवनुं कल्याण पण तमने ओळखे त्यारे ज थाय पण तमे प्रगट मळ्या विना कल्याण थाय नहीं अने एम सर्वे शास्त्र कहे छे भगवान अने भगवानना निर्वासनिक संत मळ्या विना मोक्ष थाय नहीं अने बीजा जे सर्वे मत—पंथ छे तेमां सौ सौना मतमां सर्वे एम कहे छे जे "अमारा गुरु छे ते इश्वर छे अने ते थकी कल्याण माने छे, तेनुं केम समजवुं?"

पछी महाराज बोल्या जे "सर्वे मोढेथी एम कहेता हशे जे अमारुं कल्याण थयुं अने अमारा गुरु इश्वर छे पण एना अंतरमां खरेखरो निश्चय कल्याणनो नथी अने गुरुने पण यथार्थ इश्वर मानता नथी. अने वळी सौ सौना मतना जे गुरु छे ते पण पोल पोताना मतमां राखवा सारु अने पोतानी सेवा कराववा सारु खोटुं खोटुं वहेम बतावीने राजी राखे छे.

जेम कोइक राजाना दीकराने अने ऋषिना दिकराने मित्राइ थइ हती. पछी राजाना दीकरे ऋषिना दिकराने पूछ्युं जे "तमे शुं जम्या? त्यारे ऋषिए कह्युं के "जवनी रोटली अने भाजी जम्या, पण तमे शुं जम्या?" पछी राजाना दीकराए कह्युं के "अमे तो दूध, साकर अने चोखा जम्या." पछी ऋषिना दीकराए घेर जइने एनी माने कह्युं के "मारो भाइबंध राजानो दीकरो दूध, साकर अने चोखा जमे छे. ते मने पण दूध, साकर अने चोखा आप तो जमीश. नकर (नहींतर) नहीं जमुं!" पछी तेनी माए तेनो सनो भांगवा सारु जवनां मींज काढीने बाफ्यां अने जवना लोटनुं धोळुं पाणी कर्युं ने वडागरा मीठाने वाटीने साकर जेवुं कर्युं. पछी ते छोकराने समजाव्यो जे जवना मींज हता तेने

कह्युं के चोखा छे, धोळा पाणीने कह्युं के दूध छे अने मीठाने कह्युं के साकर छे. पछी ते तो दूध, साकर चोखाने ओळखतो नथी ते जमीने राजी थइने राजना दीकरा पासे गयो त्यारे राजाना दीकरे पूछ्युं के "आज शुं जम्या?" त्यारे तेणे कह्युं के "दूध साकर अने चोखा जम्या," एवी रीते पांच सात दिवस सुधी पूछ्युं तो पण ऋषिने दीकरे तेनुं ते ज कह्युं. त्यारे राजाना दीकरे विचार्युं जे एने तो दूध, साकर अने चोखा कोइ काळे मळे एम नथी अने कहे छे जे "दहाडी दूध, साकर अने चोखा जमुं छुं." ए वात मनाती नथी. पछी तेनी परीक्षा लेवा सारु राजाना दीकरे ब्राह्मण पासे रसोइ करावीने तेने जमवा तेडी गयो. पछी तेने दूध, साकर अने चोखा पीरस्या. ते जमवा मांड्युं त्यां तो ऋषिनो दीकरो अतिशय ग्लानि पामीने तेनी मा उपर कोपायमान थइ गयो अने तेनी माने कह्युं जे "मने खोटुं खोटुं कहीने जे ते खवरावती 'ती के!" पछी तेनी माए कह्युं जे "दूध साकर अने चोखा तो आपणने मळे नहीं अने एम तारो सनो न भांगुं तो तुं मारी चाकरी करे नहीं ते सारु एम कर्युं."

तेम ए तो दृष्टांत अने एनुं सिद्धांत तो ए छे जे ज्यां सुधी मायापर एवा जे परमात्मा भगवान अने भगवानना संत ते प्रत्यक्ष मळ्या नथी अने तेना मुखारविंद थकी ज्ञान सांभळ्युं नथी त्यां सुधी जे भगवान नथी तेने विषे भगवानपणुं मानीने मोक्षनी इच्छा राखे छे. पण ज्यारे मायापर एवा जे साचा भगवान अने भगवानना संत जीवने मळे अने तेनी पासेथी ज्ञान सांभळीने अंतरमां उतारे त्यारे तेने ऋषिना दीकरानी पेठे ग्लानि पामीने तेने अतिशय परिताप थाय जे "अमे तो अज्ञाने करीने सौ सौना गुरुने विषे इश्वरभाव ठेराव्यो हतो पण जो

साक्षात्कार भगवान अने भगवानना संतनी प्राप्ति थइ न होत तो जरूर यमपुरीमां जात अने यमनो मार खात." एवी रीते ज्ञान थाय त्यारे सर्वे मतनो अने सर्वे गुरुनो त्याग करीने प्रत्यक्ष भगवान अने भगवानना संत तेने विषे दृढ प्रीति करे छे. माटे अज्ञाने करीने जीव जे ते मत पंथमां बंधाइने रह्या छे अने तेमां मोक्ष नथी तो पण मोक्षनी आशा राखी बेठा छे. केम के जीवने ज्यां सुधी अज्ञान छे त्यां सुधी जीव जे ते त्यां बंधाइ रहे छे. एवो जीवनो ढाळ छे माटे मतपंथमां, नात जातमां, देश गाममां, सगा संबंधी, स्त्री छोकरामां, ज्यां ज्यां स्नेह थाय छे त्यां बंधाइ रहे छे. अने जेने विषे जीव बंधाय छे तेना दोष तेने सुझता नथी. माटे अज्ञाने करीने जीव मत पंथमां बंधाइने रहे छे अने कोइना अंतरमां खरेखरो निश्चय नथी जे "अमारुं कल्याण थयुं." अने जे खरेखरा सत्यस्वरूप भगवान अने भगवानना संत छे तेना स्वरूपनो जेने ज्ञाने करीने निश्चय छे तेने तो पंचविषयनी वासनानां मूळ उखडी जाय छे अने ते धर्ममां पण अतिशय दृढपणे रहे छे अने देहने पोतानुं रूप मानता नथी. अने देह थकी नोखो अने ब्रह्मरूप पोताना आत्माने माने छे, अने जगतमांथी वासना तेने टळी जाय छे. अने तेने तो कामकाज करतां पण भगवाननी मूर्ति अखंड सांभर्या करे छे अने वळी प्रत्यक्ष भगवानना स्वरूपना निश्चयवाळा जे भगवानना भक्त छे ते एम समजे छे जे "मारा अंतरमां सदाय भगवान रह्या छे ते भगवान विना मनमां बीजो भूंडो संकल्प थशे तो मारा उपर भगवाननो अतिशय कुराजीपो थइ जशे अने भगवान विना बीजा अशुभ पदार्थनो बुद्धिमां निश्चय थइ जशे तो मारा उपर भगवाननी प्रसन्नता रहेशे नहीं. अने चित्ते करीने जो भगवान विना बीजा पदार्थनुं चिंतवन करीश तो मारा उपर भगवाननो कुराजीपो थशे एवी रीते दश इन्द्रियो

अने चार अंतःकरणनी वृत्तिओ ते जो भगवान विना मायिक पदार्थमां जशे तो मारा आत्मानुं भूंडुं थशे." एवी रीते जेने प्रत्यक्ष भगवानना स्वरूपनो उत्तम निर्विकल्प निश्चय छे तेने मायिक पंचविषयनी वासना टळी जाय छे. एज प्रत्यक्ष भगवान अने भगवानना संत मळ्यानुं पारखुं छे. अने जे अज्ञाने करीने मत पंथमां बंधाइ रह्या छे. तेने तो विषयनी वासना टळती नथी अने तेनी इन्द्रियो पण वश थती नथी अने तेणे कल्याण मान्युं होय ते पण मिथ्या छे अने जे जगतमां देहाभिमानी जीव छे तेने कोइ वर्तमान पाळवानी पण श्रद्धा नथी तथा धर्म पाळवानी पण श्रद्धा नथी. अने देहाभिमानीने तो केवळ शिष्ण अने उदर परायण वृत्ति होय अने शिष्ण उदर परायण वर्तता एवा जे पामर अने विषयी जीव ते जे ते दंभे करीने एम कहे छे जे "सर्वे भगवान छे भगवान विना बीजुं कांइ नथी." एम कहे छे तेने तो अतिशय नीच अने पापी अने चंडाळ जाणवा. केम के जो सर्वे भगवान होय तो कूतरां, गधेडां. तथा मा, बहेन स्त्री, छोकरां, तथा बळद, घोडी, घोडो, ए सर्वे भगवान ठर्यां. त्यारे बळदने हांकवो पडे तथा घोडी, घोडा उपर चडवुं पडे माटे तेनुं महापाप लागे, अने वेद, शास्त्र, पुराण, तथा तीर्थ व्रतादिक सर्वे खोटां थाय अने कल्याणकारी जे भगवान तेना अवतार राम कृष्णादिक ते पण एवा दुष्टने मते खोटा थइ जाय माटे एवा जे पेटभरा पामर जीव छे ते मोढेथी एम कहेता होय जे "सर्वे भगवान छे" तो तेने नारकी अने पामर अने यमपुरीना अधिकारी जाणवा. अने रामकृष्णादिक भगवानना अवतार थाय छे तेना संबंधे करीने तो जीव मायाना बंधन थकी मुकाइने परमपदने पामे छे ते शास्त्रमां पण लख्या छे. अने भगवानना अवतार विना बीजा सर्व जीवने संबंधे करीने जीव लखचोराशीमां जाय छे, ते तो सर्वे भगवान होय तो एम शुं करवा थाय? माटे बीजा जीवमां अने

भगवानना रामकृष्णादिक अवतारमां तो घणो भेद छे. केम के प्रत्यक्ष भगवानने आश्रये करीने जीवनी वासना टळी जाय छे अने वासना टळे छे त्यारे जीवनो मोक्ष थाय छे."

इति श्रीमुख सिद्धांत ४५ समाप्त ।

---

४६ विषयः—एकने भगवानपणांनो निश्चय थाय अने एकने न थाय तेनुं कारण शुं?

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः—संवत् १९१६ ना मागसर सुद ६ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री बोटाद मध्ये भक्त खेताजीनी स्त्री वा जामवाने घेर उगमणे वार ओरडानी ओसरीमां सांजने समे गादी तकीया बिछावीने ढोलीया उपर विराजमान थया हता. सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्या हता. मस्तके कसुंबल फेंटो बांध्यो हतो. कंठमां गुलाबना पुष्पना हार धारण कर्यां हतां. कंकुनो चांदलो कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तोनी सभा भराइने बेठी हती.

प्रश्नः—पछी धर्मानंद स्वामीए प्रश्न पूछ्युं जे " हे महाराज! बे जणा तमारे दर्शने आव्या होय तेमां एक जणाने वातो सांभळीने तमारा स्वरूपनो निश्चय थाय अने एक जणाने नथी थतो, तेनुं शुं कारण हशे?"

पछी महाराज बोल्या जे "जेने भगवानपणांनो निश्चय थाय छे तेने पूर्वजन्मना शुभसंस्कार छे अने जेने निश्चय नथी थतो तेनुं अंतःकरण विषयने योगे करीने डोळाइ गयेलुं छे, माटे तेणे करीने तेने निश्चय नथी थतो. अने जो एने खरेखरो खप होय अने दैवी जीव होय तो सत्संगे करीने तेने निश्चय थाय. अने जो जीव आसुरी होय तथा कोइ सत्पुरुषनो एणे द्रोह कर्यो होय तो ते पापे करीने तेनी दोषित बुद्धि थइ गइ होय, अने ते भगवानने संगे रह्यो होय अने नित्य ज्ञान वार्ता सांभळतो होय तो पण तेने निश्चय थाय नहीं. जेम सूर्यने राहु आवे

बोले तो तेने हळवे रहीने छानुं राखवुं. अने अमारा दर्शन थतां होय के कथा वार्ता थती होय त्यारे अमारा होय तेणे संगडीए तापवुं नहीं अने वगर प्रयोजने अमारां अने संतनां दर्शन मुकीने आडुं अवळुं जोवुं नहीं तथा ज्यां त्यां फरवुं नहीं अने परस्पर भेगा रहीने सेवा करवानो स्वभाव राखवो पण भगवानना भक्त पासे सेवा करावीने राजी न थवुं अने भगवानना भक्त पासे देहनी सेवा करावीने जे राजी थाय छे तेने तो मोटुं पाप लागे छे. माटे देहनी क्रिया तथा सेवा तो पोताने हाथे ज करवी.

जेम कोइक तीर्थ करवा जाय त्यारे तेने रसोइ करवी पडे, त्यारे कोइक सीधुं लावे, कोइक बळतण छाणां लावे, कोइक पाणी भरी आवे, कोइक रसोइ करे, कोइक वासण उटके, इत्यादिक परस्पर भेगा थइने देहनिर्वाह थवानी क्रिया करे छे. तेमां कोइ कोइने पाड नथी चडावता. तेम सर्वेने खावा जोइए छीए. तो परस्पर हाथो-हाथनी क्रिया करवी पण आळसु थइने बेसी रहेवुं नहीं. केम के आवा ब्रह्मदेवता साधु, ब्रह्मचारी के हरिभक्त तेनी पासे रसोइ करावीने खाशो अने देहाभिमाने करीने बसी रहेशो तो उलटी बुद्धि भ्रष्ट थइ जशे. माटे सर्वेने ए आज्ञा छे जे रसोइ आदिक जे जे सेवा भक्ति होय तेने पोतानुं मोटुं भाग्य मानीने देहे करीने क्रिया करवी. पण बेसी न रहेवुं. अने मोटेरा साधु होय तेने नित्य हाथ जोडीने कहेवुं जे "मने जे जे सेवा भक्ति होय ते कहेजो." अने परस्पर एकबीजाने काम बतावे ते तत्काळ श्रद्धाए सहित करवुं अने तेनी वार न लगाडवी अने तेनी ना पण पाडवी नहीं. एवी रीते भगवानना भक्तनो महिमा समजवो, केम जे आ लोकमां कोइक राजा होय तो तेना माणस ते जेम राजा कहे तेम हाजर उभा रहे छे अने ते राजा तो नाशवंत पदार्थ आपे एवो छे.

अने ते पदार्थ देहने सुख करे, ते देह तो पड्यो रहेवानो छे अने मरीने तो जमपुरीमां लइ जाय एवो छे. तो पण ते राजानी हजुरमां उभा रहे छे. तो आं तो जीवना अतिशय साचा हितकारी एवा जे भगवानना भक्त तेनुं वचन केम लोपाय ! एम जाणीने अतिशय निर्मानी थइने भगवानना भक्त जे जे आज्ञा करे तेने राजी थइने करवुं. अने पोते घेर राज मुकीने आव्यो होय अथवा ब्राह्मण आदिक उच्च कुळना होय तथा शास्त्रना भणेला होय तो पण भगवानना भक्त गरीब होय अने जातिए करीने उतरता होय अने कांइ भणेला पण न होय तो पण जो तेने अमारा स्वरूपनो निश्चय होय अने अमारी आज्ञा दृढपणे पाळता होय तो तेनो महिमा समजीने तेनी आगळ निर्मानी थइने तेनी सेवा करवी. पण भगवानना भक्त आगळ रंच मात्र मान राखवुं नहीं अने "आ जीवे चोराशीमां प्रारब्धवश थइने बळदना अवतार आव्या हशे त्यारे खेडुतनी आज्ञा पाळी हशे, अने गधेडाना अवतारमां कुंभारनी आज्ञा पाळी हशे. एवी रीते अनंत जन्म धरीने निर्मानी थइने अनंत जीवनी सेवा करी छे" एम जाणीने कोइ जातनुं मान भगवानना भक्त आगळ राखवुं नहीं अने कर्मवश थइने अनंतनी सेवा करी छे तो आ तो आवा ब्रह्मवेत्ता प्रगट भगवानना भक्त, संत, तेनी सेवा तो जेने अनंत जन्मना पुन्य होय तेने मळे छे. पण थोडा पुन्यवाळाने प्रगट भगवान अने भगवानना संतनी सेवा मळती नथी. केम के एनी सेवाए करीने पामर जीव होय ते ब्रह्मरूप मुक्त थइ जाय छे. अने प्रगट भगवानना भक्तनो महिमा जो ब्रह्माए जाण्यो तो गोपी, गोवाळ, जे प्रगटना भक्त तेना चरणनी रज माथे चडावी. माटे प्रगट भगवानना भक्तनी सेवा तो अतिशय हेते करीने करवी अने एम समजवुं जे-" अहो ! मारां मोटां भाग्य जे मने प्रत्यक्ष

भगवान अने तेना भक्तनी सेवा मळी छे." एम समजीने अमारी पासे रहेनारा अमारा भक्त तेने देहे करीने जीवन्त पर्यन्त भगवानना भक्तनी सेवा कर्या करवी, एवी रीते समजीने जे सेवा करशे तो तेनो जीव अतिशय वृद्धिने पामशे. अने जेवा साधुना स्वभाव छे तेवा स्वभाव सर्वेने शीखवा; केम के "जेना भेगुं रहेवुं होय त्यारे तेना जेवा गुण होय त्यारे ज तेना भेगुं बने छे पण ते विना भेगुं रहेवाय नहीं." जेम शाहुकार भेगा रहेवुं होय त्यारे शाहुकारना गुण शीखे त्यारे ज ते भेगुं रहेवाय. तेम भगवान अने भगवानना साधु भेगुं रहेवुं होय तेणे तेना जेवा निष्कामी, निर्लोभी, निःस्वादी, निःस्नेही, निर्मानी एवा गुण शीखवा. अने एवा गुण शीखे त्यारे ज तेने निर्विघ्नपणे सत्संगमां रहेवाशे अने ते अतिशय मोटी पदवीने पामशे."

प्रश्नः—पछी गाम चूडाना दवे मोनजीए प्रश्न पूछ्युं जे "हे महाराज! भगवानने भगवान जाणता होय अने तेमां तो कोइ जातनो संशय न होय, तो पण संसारनी वासना अंतरमांथी टळती नथी तेनुं शुं कारण हशे?"

पछी महाराज बोल्या जे—"संसारनो जीवने अनादिनो संबंध छे ते ज्यां ज्यां जीव जन्म धरे छे त्यारथी ज तेने संसारना शब्द सांभळवाने, तेनां रूप जोवाने, तेनो स्पर्श करवो, एवी रीते संसारने भेळी सारे करीने जीव जे ते संसारमां एकरस थइ गयो छे. ते ए संसारमांथी जीवने छूटवुं ते तो अतिशय कठण छे. केम के ते संसारनो जीवमां अतिशय पास लागी रह्यो छे. माटे संसारनी वासना टाळवी ते घणी कठण छे.

तो पण ते वासना टाळवानो एक उपाय छे. ते शो उपाय छे? तो प्रत्यक्ष एवा जे आत्यंतिक ज्ञानना आपनारा परब्रह्म परमात्मा भग-

वान अने तेना एकांतिक निर्वासनिक संत तेना स्वरूपनो माहात्म्य ज्ञाने सहित उत्तम निर्विकल्प निश्चय थाय त्यारे संसारनी वासनानां मूळ उखडी जाय. माटे प्रत्यक्ष भगवान अने तेना संतना स्वरूपनो निश्चय थाय तो तेने संसारनी वासना टळी जाय. केम के भगवान अने संतथी जीवनुं कोण सगुं वधारे छे ! अने कयुं पदार्थ जीवनी भेगुं आवे एवुं छे ? सर्वे पदार्थ पड्या रहेवाना छे अने संसार पण सर्वे स्वार्थीओ छे. केम के संसारी मात्रने ज्यां सुधी पोतपोतानो स्वार्थ सरे त्यां सुधी हेत राखे ने स्वार्थ न सरे तो कोइ कोइने आंगणे पण उभो रहेवा दे नहीं अने जीव ते मूर्ख छे अने अज्ञानी छे, ते संसारमां हेत राखे छे. अने जे भगवान अने भगवानना संत छे ते तो जीवना साचा हीतकारी छे अने जीवने अनादिनी रक्षा भगवान ज करे छे. अने सर्वे सुखना धाम ते तो एक भगवान ज छे अने जीव छे ते तो स्वार्थीया छे अने एक बीजाने दुःखना आपनारा छे. अने भगवान अने संत छे ते तो महापरमार्थी छे अने अनंतकोटि ब्रह्मांडना पति छे. अने जेना सुखउपर अनंत कोटि ब्रह्माडनां जे विषयनां सुख ते वाळीने फेरीने नाखी दइए.

—अने एवा अपरिमित सुखना आपनारा जे भगवान ते भगवाननो महिमा ज्यारे भरत राजाने जणायो तो तेणे सर्वे राज्यवैभव संबंधी सुखनो त्याग करीने वनमां जइने भगवाननुं भजन कर्युं अने गोपीचंद राजाने ज्यारे भगवाननो महिमा जणायो त्यारे सर्वे संसारनो त्याग करीने भगवान भज्या. माटे भगवान अने संतना स्वरूपनो माहात्म्ये सहित उत्तम निर्विकल्प निश्चय थाय तो तेने संसारनी वासना टळी जाय अने संसारनी गणत्री पण रहे नहीं. अने जेम पूर्वे जन्म धर्या हता अने तेना सगा संबंधी, धन माल, ते सर्वेनी वासना आज टळी गइ छे अने ते कोइ दिवसे पूर्वेनो संसार सांभरतो नथी तेम जो भगवान

अने भगवानना संतने महात्म्ये ज्ञाने सहित साचा सगा जाणे तो तेने जेम पूर्वेना संसारनी वासना टळी गइ छे तेम तेने आजना संसारनी वासना पण टळी जाय माटे भगवानना स्वरूपना निश्चयमां कसर छे त्यां सुधी संसारनी वासना रहे छे. अने जो दृढ निश्चय थाय तो वासना टळी जाय. ते सारु संतनो समागम करीने निश्चय करी लेवो. अने निश्चय थवानो उपाय ए छे जे भगवानना संतनो महिमा समजीने तेनी निष्कामभावे सेवा करवी अने तेमां पोताना जीवने जोडी देवो तो तेने संसारनी वासनानां मूळ उखडी जाय अने पामर जेवो जीव होय ते महाभक्त थइ जाय अने तेने अमारा स्वरूपनो निश्चय पण थाय. ए तमारा प्रश्ननो उत्तर छे."

इति श्री मुखसिद्धांत ४७ समास ॥

४८ विषय :—जीवने कल्याणना दाता मळवा दुर्लभ छे

श्री हरिकृष्णाय नमो नमः--संवत् १९१६ना पोषसुद १० ने दिवस महाराज श्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्री उगामेडी मध्ये भक्त शाह पुंजाने घेर गादी तकीये युक्त ढोलिया उपर विराजमान थया हता. सर्वे श्वेत्त वस्त्र धारण कर्यां हतां. गुलाबी रंगनो फेंटो मस्तके बांध्यो हतो. जमणा हाथमां रुमाल धारण कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तोनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी महाराज बोल्या जे "जीवने कल्याणना दाता मळवा ते अतिशय दुर्लभ छे.

अने ज्यारे कल्याणदाता पोताने मळे त्यारे तो पोतानुं अति मोटुं भाग्य मानीने तेनो दृढ आशरो करवो. केम के कोइ दिवस जीवने

कल्याणना दाता प्रगट भगवान अने भगवानना संत, मळ्या नथी अने जो मळ्या होय तो जीव चोराशीमां शुं करवा भटके ! अने बीजां स्त्री छोकरां, सगा संबंधी, नात-जात, धन-माल गाम-गरास, राजपाट आदिक अनंत फेरा चोराशीमां जीवने मळ्या छे अने ते सर्वे नाश पामी गया छे. अने आजना जे छे ते पण सर्वे नाश थइ जशे. अने जीवना साचा सगा अने अविनाशी सुखना आपनारा एवा जे कल्याणना दाता भगवान अने संत ते आज तमने प्रगट मळ्या छे, माटे सावधान थइने प्रत्यक्ष भगवान अने संतनो दृढ आशरो करीने तेनी आज्ञा जे धर्म तेमां रहीने ते भगवान अने भगवानना एकांतिक निर्वासनिक साधु ते थकी ज्ञान पामीने पोताना आत्मानुं काम करी लेवुं. अने अधर्म अनीतिना चालनारा एवा जे असत्पुरुष तेना संगथी छेटे रहेवुं. अने प्रत्यक्ष भगवानना आशरावाळा एवा अने निष्कामी, निर्लोभी, निःस्वादी, निःस्नेही अने निर्मानी, एवा जे साधु तेनो समागम करवो अने तेना वचनमां दृढपणे वर्तवुं. अने जगतनी मिथ्या मोटप मानमां लेवावुं नहीं. अने जगतना अधर्मी जीव वखाणे तेणे करीने पोताने मोटप न मानवी अने ते जगतना जीव नींदा करे तेने करीने पोताने नानप न मानवी अने जगतनी जे नानपमोटप छे ते तो मिथ्या अने नाशवंत छे. माटे प्रत्यक्ष भगवान अने संत मळ्या छे तेज अविनाशी सुखना आपनारा छे. अने सर्वोपरि मोटपना आपनारा छे. अने अंत समाना वेळी अने रक्षाना करनारा ते पण भगवान छे. माटे अतिशय दुर्लभ जे भगवान अने भगवानना संत ते प्रत्यक्ष मळ्या छे ते भगवान अने संतनो दृढ आशरो करीने भगवानना भक्तने महा अलमस्त रहेवुं अने देहथी नोखो पोताना जीवात्माने मानीने ते आत्माने विषे परमात्मा अखंड रह्या छे, तेज परमात्मा भगवान अने संत प्रत्यक्ष

जे मूर्ति आ लोकमां देखाय छे ते पण जीवोना मोक्ष सारु देखाय छे पण अमारे आ लोकमां बीजुं प्रयोजन नथी. अने अमारा जे एकांतिक संत छे ते तो अमने सदाय अक्षरधामने विषे देखे छे. अने जेने जेने अमारो संबंध थाय छे तेनो महीमा पण अमारा साधु जाणे छे पण तमारो महिमा तमे जाणवाने समर्थ नथी.

जेम बाळकने चिंतामणि हाथ आवी होय तो पण ते चिंतामणि नो महिमा बाळकने जणाय नहीं अने तेनो पोताने आनंद पण आवे नहीं. अने चिंतामणिना पारखु छे ए जाणे जे ते बाळकने बहु लाभ मळ्यो छे अने ते बाळकने पण ज्यारे समजण आवशे त्यारे घणो आनंद आपशे. तेम बाळकनी पेठे चिंतामणिरूप जे अमारी मूर्ति मळी छे ते ज्यां सुधी जीवने खरेखरुं ज्ञान थयुं न होय त्यां सुधी तेने अमारो महिमा जाण्यामां आवतो नथी. अने अमारा महिमाना जाणनारा एवा जे साधु तेनो समागम करीने ते थकी जेम जेम ज्ञान थतुं आवशे तेम तेम अमारो महिमा अलौकिक जणातो जशे अने अतिशय आनंदने पामशे. अने तेने चौदलोकनां जे पंचविषयनां जे सुख छे ते सर्वे काग-विष्टा तुल्य थइ जशे.

माटे अमारो महिमा समजाय ते सारु साधुनो समागम करवो ने ज्यारे महिमा समजाशे त्यारे अंतरमां प्रकाश थशे अने तेना उरमां अमे निवास करीने रहीशुं अने तेने मायानुं आवरण टळी जशे अने ते भक्त देह छतां ब्रह्मरूप थशे. अने बीजो कोइ जीव होय अने ते अमारो वाद लइने रंगे रमशे के सारां सारां वस्त्र घरेणां पहेरशे तथा सारां सारां भोजनना थाळ जमशे अने अमारा जेवुं आचरण करशे तो ते घोर नरकमां पडशे अने तेनो जे जे संग करशे तेनुं पण अतिशय भूंडुं थशे."

इति श्रीमुख सिद्धांत ४९ समास ॥

---

९० विषयः—वासना टाळवा विषे; त्यागी अने गृहस्थने निर्वासनिक थवा विषे

श्री हरिकृष्णाय नमोनमः—संवत् १९१६ना पोष सुद १५ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री उगामेडी मध्ये रावळ भाणजी वेचरने घेर उत्तरादे वार ओरडानी ओसरीमां गादी तकिया नखावीने ढोलिया उपर विराजमान थया हता. सर्वे जरीयानी वस्त्र धारण कर्यां हतां. कंठमां पुष्पना हार पहेर्या हता. वे कान उपर गुच्छ धारण कर्या हता. पाघमां तोरा लटकता हता. कंकुनो चांदलो कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तोनी सभा भराइने वेठी हती.

पछी महाराज कृपा करीने वोल्या जे-"जेने भगवानने प्रसन्न करवा होय तेणे तो पंचविषयनी वासनानो त्याग करवो अने पंचविषयनी वासनानो त्याग करे छे तेना उपर ज भगवान अत्यंत राजी थाय छे.

केम के पंचविषयनी जाळमां आखो विश्व वंधाणो छे. अने अधर्म, अनीति आदिक जे जे पाप थाय छे ते पण पंचविषयनी वासनाए करीने थाय छे. अने तेने करीने जीव जे ते जन्म—मृत्यु अने चोराशीनां महादुःख भोगवे छे. माटे ए दुःख थकी जीवने मुकावीने पोताना अक्षरधाममां लइ जवा सारु भगवान कृपा करीने प्रगट थाय छे. ते भगवाननो जे जीव आशरो करीने पंचविषयनी वासना मुके छे ते जन्ममरणना दुःख थकी मुकाय छे. अने तेना उपर भगवान अत्यंत प्रसन्न थाय छे. माटे जेने भगवानने प्रसन्न करवा होय तेने पंचविषयनी वासना जरूर मुकवी, ए सर्वे शास्त्रनो सिद्धांत छे.

हवे ते वासना शुं ? तो काम, लोभ, स्वाद, स्नेह अने मान तेमां जे जीव प्रीतिए करीने वंधाणो छे. ए ज वासना छे. अने ए पंचविषयथी प्रीति जेने टळे छे ते जीव मुक्त थाय छे. अने तेनेज भगवानने विषे

अचळ प्रीति थाय छे. अने सत्पुरुषे शास्त्रमां जे जे जप, तप, व्रत, साधन कह्यां छे ते पण ए पांच दोषने टाळीने निर्वासनिक थइने भगवानमां प्रीति थाय ते सारु कह्यां छे.

माटे आज अमारी आज्ञाए करीने पांच वर्तमान दृढ राखीने जे गृहस्थ होय तेने काम, लोभ अने स्नेह ए त्रणने जतन करीने जीतवा अने त्रणने जीते ते गृहस्थ पण निर्वासनिक थाय अने अक्षरधामने पामे, अने जे त्यागी होय तेने त्यागीना धर्ममां दृढ रहीने स्वाद अने मान ए बेने जतन करीने जीते तो ते त्यागी निर्वासनिक थाय, केम के त्यागीने काम, लोभ अने स्नेह तेनो संबंध थोडो छे अने स्वाद अने माननो संबंध घणो छे. अने गृहस्थने काम, लोभ अने स्नेहनो संबंध घणो छे अने स्वाद अने माननो संबंध गृहस्थने बहु नथी अने जे जे विषयनो बहारथी संबंध थाय छे ते ते विषयनी अंतःकरणमां वधारे वासना बंधाय छे. अने जे जे विषयनो बहारथी त्याग थाय छे ते ते विषयनी अंतःकरणमांथी वासना टळी जाय छे. माटे गृहस्थने स्वाद अने माननो संबंध थोडो छे तो ते तेने बळवान नथी जणाता.

ते केम थोडो संबंध छे? तो कामे करीने गृहस्थ संसारमां रह्यो छे ते गमे तेवो गृहस्थ मोटो होय तोय पण ते त्यागीने नमे अने निर्मानी रहे अने लोभे करीने स्वादरूपी विषय नथी भोगवतो. केम के गृहस्थने तो खावानी पण निवृत्ति (नवराश) आवती नथी, एवो व्यवहारनो फांसलो छे. माटे खेडुत छे ते रात दहाडो महेनत कर्या करे छे तो पण तेने रोटलो होय तो शाक न होय अने शाक होय तो छाश न होय ने छाश होय तो अथाणुं न होय एवी रीते खोयमां रोटला नाखीने लुखा पाखा खाय छे. अने महेनत कर्या करे छे. पण तेने स्वादनुं भान रहेतुं

नथी. अने वळी शाहुकार छे तेने पण वहेपार वणजमां सांज पडी जाय तो पण खाधानी नवराइ आवती नथी अने टाढा उनानो पण मेळ रहेतो नथी. अने लोभे करीने घी, गोळ, खांड, साकर, ते पण झाझुं खाय नहीं. माटे गृहस्थने वे विषय सहेजे थोडा छे, अने अज्ञाने करीने काम, लोभ, अने स्नेहमां गृहस्थ बंधाणो छे. माटे तेने ज्ञान थाय त्यारे ते बंधन थकी मुकाय छे अने ते ज्ञान पण सत्पुरुष थकी ज थाय छे. माटे जेने पोताना आत्मानो मोक्ष करवानी इच्छा होय अने जन्म मरणना दुःख थकी मुकाववुं होय तेने तो प्रत्यक्ष भगवान तथा तेना निर्वासनिक एवा जे साधु तेनो समागम करीने तेनो दृढ आशरो करवो तो ते थकी विषयनो अतिशय कठण फांसलो छे, पण ते सहेजे कपाइ जाय छे.

ते सत्पुरुष केवी रीते विषय थकी मुकावे छे ? तो एम ज्ञान आपे छे जे--"तुं आत्मा छे, ते तो चोवीस तत्त्वनो जे जड देह ते थकी नोखो छे." अने आत्मा छे ते तो अविनाशी छे पण जड एवो जे मायिक देह ते आत्मानुं स्वरूप नथी. अने ते देहने सुखे करीने आत्माने सुख नथी अने देहने दुःखे करीने आत्माने दुःख नथी. अने सुख-दुःख जणाय छे ते तो मोहरूपी निंद्राने विषे अज्ञानरूपी स्वप्नमां भ्रांतिए करीने जणाय छे.

जेम कोइक पुरुष निंद्रामां सूतो होय अने तेने स्वप्नुं आवे अने स्वप्नामां घणुं दुःख थाय अथवा घणुं सुख थाय अने अतिशय आनंद पामे पण ते पुरुष जागे त्यारे ते स्वप्नानुं सुख दुःख सर्वे मिथ्या थइ जाय छे. अने स्वप्नमां पण सुखदुःख लेशमात्र न हतुं अने भ्रांतिए करीने जणातुं हतुं. तेम जे ज्ञानरूपी जाग्रत अवस्थाने पामे अने मोहरूपी निंद्रा टळे त्यारे अज्ञानरूपी स्वप्नामां जे सुखदुःख पामतो हतो ते सर्वे टळी जाय छे. जेम जाग्रत अवस्थाने पाम्यो तेने स्वप्नतुं

सुखदुःख खोटुं थइ जाय छे अने ते स्वप्नना सुखदुःखनो हर्ष शोक लेशमात्र रहेतो नथी–तेम ज्ञानरूपी जाग्रत अवस्थाने जे पामे छे तेने अज्ञानरूपी स्वप्नाना जे पंचविषय संबंधी देहनुं सुखदुःख ते मिथ्या थइ जाय छे.

जेम जनकराजा ज्ञानरूपी जाग्रत अवस्थाने पाम्या हता अने प्रारब्धे करीने राज्यमां रह्या तो पण राज्य संबंधी जे पंचविषयनां सुख तेने भोगव्या नहीं अने सत्पुरुषनो समागम अने भगवानती कथा-वार्ता, कीर्तन, भजन, स्मरण तेनो अतिशय अभ्यास निरंतर राखता अने संसार थकी उदास रहेता, अने पोते कथा सांभळवा बेठा हता ते समे पोतानी मिथिलापुरी बळवा लागी त्यारे जनकराजा एम बोल्या जे "मारुं कांइ बळतुं नथी." एवी रीते ज्ञानरूपी जाग्रत अवस्थाने पाम्या हता त्यारे राजा जनक विदेही कहेवाणा.

तेम ज्ञानी एवा जे गृहस्थाश्रमी भगवानना भक्त तेने विचारीने जोवुं जे "हाड-मांसनो लोचो, जे देह, ते मारुं स्वरूप नथी. अने एम समजवुं जे "मने तो प्रत्यक्ष भगवान अने भगवानना संत मळ्या छे, माटे हवे तो हुं ब्रह्मरूप थयो छुं, ते सारु नरकमांथी बनी एवी जे नरकनी पुतळी स्त्री तेमां हुं लोभाउं एवो नथी ! एमां तो श्वान अने सुकर जेवा जे पामर जीव ते लोभाय छे." अने बाइओ हरिभक्त होय तेने पण पोताने आत्मारूप मानवुं अने वीर्य अने रुधिर थकी बन्यो एवो जे पुरुषनो देह तेमां मोह पामवुं नहीं. अने पोताने मळ्या जे प्रत्यक्ष भगवान अने भग-वानना संत तेना चरणारविंदमां दृढ प्रीति करवी. अने स्त्री पुरुष बेयने कामरूपी वासनानो दिवसे दिवसे, एवी रीते समजीने त्याग करवो, अने पूर्वे पण जेने प्रत्यक्ष भगवान अने संतनो संबंध थयो छे तेने संसार-

मांथी प्रीति टळी गइ छे. ते गोपिओने श्रीकृष्ण भगवाननो संबंध थयो अने संसारमां रही तो पण संसार संबंधी सुख भोगव्यां नहीं अने तेने गमे तेवो रूपाळो पुरुष देखाय तो पण तेने हाड, मांस अने नरक-तुल्य जाणती.

तेम एवी रीते विचारीने अमारा आश्रित एवा जे गृहस्थ हरिभक्त बाइ-भाइ सर्वेने कामनी वासनानो त्याग करवो.

--अने द्रव्यादिक पदार्थनो जे लोभ तेनो एम विचार करवो जे "हुं आव्यो त्यारे शुं लाव्यो हतो अने जइश त्यारे शुं भेगुं आपवानुं छे! सर्वे पडयुं रहेशे. अने द्रव्यादिक पदार्थ पण मिथ्या नाशवंत छे." एम समजीने लोभनो त्याग करीने अधर्म, अनीति, कुडकपट, चोरी, आदिकथी दूर रहीने पोतानो जे धर्म तेने दृढ राखीने जे जे हक महेनतथी कमावुं तेमांथी पण पोताना आत्मानुं रूडुं थाय तेने अर्थे भगवाननो भाग काढवो अने एम समजवुं जे "मारे तो एक शेर अन्न देहरक्षणने अर्थे जोइए छीए तथा जाडुं मोटुं वस्त्र जोइए ते पण भगवान आपनारा छे." एम समजीने लोभनो त्याग करीने गृहस्थने पण संसारमांथी दिवसे दिवसे उदास थवुं.

अने स्नेहने टाळवानो एम विचार करवो जे "मारे आत्माने नात-जात नथी. अने देह अने देहना संबंधी छे, ते तो सर्वे स्वार्थीआ छे, माटे स्वार्थे भेगा थया छे." जेम रात्रे झाडवे पंखी भेगां थाय छे अने सवारे पाछां उठी जाय छे तेम सर्वे देहना संबंधी स्वार्थे भेगा थया छे, अने पाछा सौ सौने मार्गे वया जाय छे. पण कोइ कोइनी भेगुं आव्युं नथी अने कोइ कोइनी भेगुं गतुं नथी. अने जीवे चोराशीमां अनंत सगा संबंधी कर्या छे ते सर्वे नाश पामी गया छे तेम आजना सगा संबंधी पण जरूर नाश पामी जशे. अने जो तेमां स्नेह रहेशे तो तेने विषे जन्म धरवो

पडशे अने महा हेरान थइश !" एम विचारीने देहना सगा संबंधीमांथी स्नेह जे प्रीति तेनो त्याग करीने जीवना साचा सगा जे भगवान तेमां दृढ प्रीति करवी तथा ते प्रत्यक्ष भगवानना पंचविषयना त्यागी संत तेने विषे प्रीति करवी. एवी रीते गृहस्थ समजे तो निर्वासनिक थइने अक्षरधामने पामे.

--अने जेणे संसारनो त्याग कर्यो होय तेने स्वाद अने मान ए बे विषय बळवान रहे छे. अने काम, लोभ अने स्नेह ए त्रण विषय गौणपणे रहे छे. केम के त्यागीने कामनो अष्ट प्रकारे स्त्री संबंधी नियम होय जे त्यागीए आठ प्रकारे स्त्रीनो त्याग करवो. अने द्रव्यनो पण त्यागीए संग्रह न करवो. अने द्रव्यने अडवुं पण नहीं. एवी रीते अष्ट प्रकारे द्रव्यना त्याग संबंधी नियम होय ते ज त्यागी कहेवाय अने देहना संबंधीने घेर त्यागीने न जवुं अने तेनो संग पण न करवो. एवी रीते त्यागीने नीयम होय माटे त्रण विषय त्यागीने नथी. अने स्वाद अने माननो त्यागीने वधु संबंध थाय छे.

केमके जे त्यागी थयो ते तो गृहस्थने पूजवा योग्य थयो माटे तेनुं माहात्म्य जाणीने तेने घी, गोळ, खांड, साकर, दूध, दहीं आदिक अनंत प्रकारना रस ते त्यागीने आपे ते जो त्यागी रसनानो स्वादीयो होय तो रसनाने वश थइने जरूर धर्ममांथी भ्रष्ट थाय. केमके रसना इन्द्रिय छे ते सर्वे इन्द्रियनुं मूळ छे.

जेम झाड सुकाइ जतुं होय अने तेना मूळमां पाणी रेडीए तो ते झाड पाछुं लीलुं छम थाय अने डांळखे डांळखे पालवे. तेम त्यागी जे तपे करीने झाडनी पेठे सुकाइ गयो होय अने इन्द्रियो सर्वे नियममां करी होय तो पण जो रसनाने वश थइने रस खाय तो जेम झाड डाळखे

डाळखे कोंटा मुके छे तेम त्यागीने पण काम, लोभ, स्वाद, स्नेह अने मान, रूपी कोंटा फूटीने इन्द्रियो सर्वे विकार पामीने धर्मसांथी भ्रष्ट थइ जाय छे. अने कोइ एम कहे जे--"पाणीमां मिलावीने रस जमे तो विकार न करे," ए वात खोटी छे केमके वहार पाणीमां मेळावे तेम सर्वे मनुष्य मोढामां भेगुं करीने दाढे चावीने एक रस करीने गळा हेठुं उतारे छे अने पेटमां गया केडे पण कांइ नोखुं रहेतुं नथी तो पण जे वस्तुनो जेवो गुण होय ते जणाया विना रहे नहीं. माटे पाणीमां मेळावीने सारा सारा रस जमे तो रसना इन्द्रियनो स्वाद कांइक ओछो थाय खरो पण बीजी इन्द्रियो सर्वे विकार पामीने भ्रष्ट थइ जाय ए सिद्धांत वार्ता छे.

माटे जेणे संसारनो त्याग कर्यो होय तेणे तो खट्रसनो त्याग ज करवो, ते ज त्यागीनो धर्म छे. केम के जे गृहस्थ रस खाय तेने तो स्त्री होय माटे तेनो धर्म रहे छे. पण त्यागी थइने रस खाय तो तेने वीर्यपात थया विना रहेशे ज नहीं. केमके रसनाने अगे शीष्णने एकता छे. तो रसना ए रस खाय तो शीष्ण इन्द्रियमां जणाया विना रहे ज नहीं, ए सिद्धांतवार्ता छे अने गृहस्थने तो स्त्री होय तेने करीने तेनो धर्म रहे छे. पण त्यागी रस खाय तो तेने ब्रह्मचर्यव्रत न रहे अने काम पण जीताय नहीं अने तेनो सनातन त्यागीनो धर्म पण रहे नहीं ते सारु त्यागीने रस विषयनो विशेष त्याग करवो.

अने त्यागीने माननो घणो संबंध थाय छे माटे माननो पण विशेषे त्याग करवो. केम के जे त्यागी थयो ते तो सर्वेने नमवा योग्य अने पूजवा योग्य थयो. माटे जो मानने वश थाय तो भगवानना मार्ग थकी जरूर पडी जाय अने तेना जप, तप, आदिक साधन पण सर्वे विकाररूप थइ जाय छे. जेम दूध अने साकरमां सर्पनी लाळ पडे तो ते झेर थइ

जाय अने तेने जे पीए तेना प्राण जाय. तेम जप, तप आदिक सर्व साधन तो दूध साकर जेवा छे. तेमां सर्पनी लाळरूप मान भळे तो ते साधन अकल्याणकारी थइ जाय छे. अने ते मानीनो जे जे संग करे तेना जीवनुं पण भूंडुं करे.

केम के जे मानी होय तेने कोइ महात्मापुरुष कल्याणकारी प्रगट थया होय ते ओळखाय नहीं. ते कृष्णावतारमां माने करीने ऋषिने भगवान ओळखाया नहीं. ए आदिक जे जे मानी हता तेने प्रगट श्रीकृष्ण भगवान ओळखाया नहीं. अने जे मानी अने स्वादीओ होय तेने प्रत्यक्ष भगवाननो संबंध थाय ज नहीं. माटे त्यागीने स्वाद अने माननो वधारे संबंध छे, ते सारु ए बेने जतन करीने विशेषे जीतवा.

केम के त्यागीने तो त्रण विषयनो संबंध नथी. अने स्वाद अने माननो समजीने त्याग करे तो निर्वासनिक थाय छे. अने अमने पण निर्वासनिक भक्त वहालां छे. माटे गृहस्थने काम, लोभ अने स्नेहमां प्रीति छे, तेने साधुनो समागम करीने प्रीति टाळी नाखवी अने भगवान अने भगवानना एकांतिक निर्वासनिक साधु तेमां प्रीति करवी. अने एवी रीते समजीने ज्ञानने पामे तो ते गृहस्थ पण निर्वासनिक थइने अमारा अक्षरधामने पामे. अने ते महासुखीया थाय. अने जो गृहस्थने काम लोभ अने स्नेहनुं बंधन छे अने वळी स्वाद अने मान जे अतिशय राखशे ते तो असुर कहेवाय. अने ते साथे अमारे बने ज नहीं अने जो त्यागी थयो होय तेने स्वाद अने माननो संबंध अने वळी कामनी वासना राखे तथा द्रव्यादिक पदार्थमां प्रीति करे अथवा देहना संबंधीमां हेत राखे तो ते त्यागीने पण असुर जाणवो. अने तेनुं कल्याण पण कोइ काळे थाय नहीं. अने जे जे तेनो संग करे तेने पण भ्रष्ट करे.

अने जे पांचे विषयनो त्याग करीने अमारी भक्ति करशे तेज अमारा खरा त्यागी भक्त छे, अने तेने ज अमारो अखंड संबंध रहेशे. अने तेने ज आत्यंतिक ज्ञान थशे. अने अमारा अक्षरधामने पामशे."

इति श्री मुखसिद्धांत ५० समाप्त ॥

५१ विषय : विवेक अविवेकनां रूप

श्री हरिकृष्णाय नमोनमः—संवत् १९१६ ना पोष वद २ ने दिवस महाराज श्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्री उगामेडी मध्ये पटेल वेचर नथुने घेर ओरडानी ओसरीमां गादी तकीये युक्त ढोलीया उपर विराजमान थया हता. सर्वे जरीयानी वस्त्र धारण कर्यां हतां. अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तोनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी महाराज बोल्या जे—"जेने पोताना आत्मानो मोक्ष करवानी इच्छा होय अने अतिशय सुखीया थवुं होय तेने तो अतिशय विवेक राखवो पण अविवेकी न थवुं.

केम के अविवेकी छे तेने सत्पुरुषनो संग सारो लागतो नथी अने भगवाननुं स्वरूप पण तेने नथी ओळखातुं, अने जे विवेकी छे तेने सत्पुरुषनो समागम गमे छे अने तेने ज अमारुं स्वरूप ओळख्यामां आवे छे. अने जे अविवेकी छे तेने तो कोईक फुलावे अने वखाण करे तो तेने वश थइ जाय छे. अने पोताना द्रव्यादिक पदार्थ पण तेने आपी दे छे. अने पोते हेरान थाय छे. अने ते संत असंतने ओळखी शके नहीं. अने पोते मत पंथमां ज्यां ज्यां बंधाणो होय तेने मुकी शके नहीं. माटे अविवेकीनुं कल्याण कोइ काळे थाय नहीं.

अने जे विवेकी होय तेने तो जेवी रीते पोताना आत्मानुं रूडुं थाय तेमज करतां आवडे अने ते संत असंतने पण ओळखे. तेमां जे संत होय तेनो संग करे ने असंत होय तेनो त्याग करे. अने जगतना जीव वखाणे तेने करीने पोतानी मोटप न माने अने जगतना जीव निंदा करे तेने करीने पोतानी नानप न माने. केम के जे विवेकी छे, ते एम समजे छे जे " ए तो सर्वे मायाना जीव छे, अने जमपुरीना अधिकारी छे. अने मने तो भगवान ने भगवानना संत मळ्या छे. माटे हुं तो ब्रह्मरूप थयो छुं, ते मारे अज्ञानी जीवनी पेठे मायाना पुरमां नथी वहेवुं." अने ते सत्पुरुषना आपेला जे नियम तेमां कोइ काळे फेर पडे नहि. अने साधुनो समागम करीने संसारनी वासनाने दिवसे दिवसे घटाडतो जाय अने भगवान ने भगवानना जे एकांतिक साधु तेमां प्रीति करे. एवी रीते जेनी समजण होय तेने विवेकी जाणवो.

अने वळी जेने प्रत्यक्ष भगवान मळ्या होय अने ते भगवाननो आशरो कर्यो होय तेने तो अविनाशी एवुं जे भगवाननुं धाम एनी प्राप्ति थइ रही छे. अने जेने एवुं अखंडानंद सुख मेलीने मायिक अने नाशवंत एवा जे संसारनां सुख तेनी इच्छा रहे छे के तेमां प्रीति राखे छे तेने पण अविवेकी जाणवो.

माटे अमारा जे जे आश्रित होय तेने तो संतनो समागम करीने नाशवंत अने अनंत दुःखे युक्त एवां जे मायिक सुख तेनी इच्छानो त्याग करीने पोताने त्रण देह अने त्रण अवस्था थकी नोखो अच्छेद, अभेद, अमर, अजर, अविनाशी एवो जे आत्मा ते रूप मानवुं अने धर्म, ज्ञान, वैराग्य अने माहात्म्ये सहीत भक्ति तेने सिद्ध करीने, ब्रह्मरूप थइने भगवानना स्वरूपमां जोडावुं. अने एवी रीते समजीने भगवान अने

भगवानना संत तेमां प्रीति करे छे तेने विवेकी जाणवो अने ते विना बीजा सर्वे अविवेकी छे, अने मुरख छे, अने ते अतिशय दुःखने पामे छे. अने जे विवेकी छे ते महासुखीया थाय छे. अने ते भगवानना धामने पामशे. माटे विवेक राखवो अने अविवेकनो त्याग करीने आत्मरूप थइने भगवाननुं भजन करवुं."

इति श्रीमुख सिद्धांत ५१ समाप्त ।

५२ विषय :—त्यागी अने गृहस्थीनुं हारे कल्याण केम थाय ?

श्री हरिकृष्णाय नमोनमः—संवत् १९१६ ना पोष वद ८ ने दिवस महाराज श्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्री खोपाळा मध्ये पटेल धरमशी केशवने घेर ओसरीमां गादी तकीये युक्त ढोलिया उपर विराजमान थया हता अने सर्वे जरीयानी वस्त्र धारण कर्यां हतां. गुलाबना पुष्पना हार कंठमां धारण कर्या हता अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

प्रश्नः—पछी महाराज कृपा करीने बोल्या जे—" आज तो प्रश्न पूछो तो वार्ता करीए. " पछी धर्मानंद स्वामीए प्रश्न पूछयो जे " त्यागीनुं अने गृहस्थनुं हारे कल्याण केम थाय ? "

पछी महाराज बोल्या जे—" आत्मा छे ते तो त्यागीए नथी अने गृहस्थए नथी. अने आत्मा तो चैतन्यब्रह्म छे. अने आकाशनी पेठे निर्लेप छे. अने गृहस्थ अने त्यागीए तो सर्वे देहनो वहेवार छे. अने जे आत्मा देहमां भासे छे ते तो मिथ्या भ्रांतिए करीने, पोताना स्वरूपने भूलीने पंचविषयनी वासनाए करीने जन्ममृत्युना दुःखने पाम्या करे छे. अने जो पोताना स्वरूपने विचारीने जुए तो लेश मात्र दुःख रहे नहीं. अने परम शांतिने पामे.

जेम स्वप्नमां एम जाणे जे कोइए तलवारना घा मार्या अने तेनी पीडा बहु थती होय पण ते स्वप्नमांथी जागे तो लेशमात्र पीडा रहे नहीं. तेम जीवने मोहरूपी निद्राने विषे पंचविषयमां आसक्तिरूपी घा वाग्यो छे, तेने करीने अनंत प्रकारना क्लेशने पामे छे. पण जो जीव ज्ञानरूपी जाग्रत अवस्थाने पामे तो पंचविषयमां आसक्तिरूपी घा वाग्या होय तेनी पीडा टळी जाय छे. अने परम शांतिने पामे, अने ब्रह्मानंद अविनाशी सुखने भोगवे.

पण एवुं ज्ञान क्यां थाय ? तो एवा ज्ञानना आपनारा एवा जे परमात्मा भगवान ते कृपा करीने पोतानो दिव्य भाव छुपावीने मनुष्य जेवा सुजाती थइने जीवने मळे अने ज्ञान आपे त्यारे जीव मोहरूपी निद्रामांथी जागे छे.

ते भगवान केवी रीते ज्ञान आपे छे ? तो जीवने विषे अनादि काळनी माया वळगी छे. ते माया जे ते त्रण देह अने त्रण अवस्थारूपे थइ छे. तेमां स्थूळ, सूक्ष्म अने कारण ए त्रण देह अने जाग्रत, स्वप्न अने सुषुप्ति, ए त्रण अवस्था; ते ए त्रण देह अने त्रण अवस्थाथी जीवने ज्ञाने करीने नोखो पाडे छे. ते ज्ञानने कहीए छीए जे "आ देह छे ते जड छे. अने तुं तो आत्मा छो ते तो चैतन्य छो अने ब्रह्म छो, अने देह तो नाशवंत छे अने दुःखरूप छे. अने तुं आत्मा तो अविनाशी छो अने आनंदरूप छो. अने आ देह अने देहना सगासंबधी तथा देह संबंधी पंचविषयना भोगना पदार्थ ते तो सर्वे मिथ्या छे, अने तुच्छ छे. अने (ते तो) जीवने अज्ञाने करीने साचा जेवा जणाय छे. पण सर्वे भ्रांति मात्र छे, अने असत्य छे; पण कोइ काळे सत्य नथी. अने आ जीवने मोहे करीने उलटा दुःखना देनारा छे, माटे ते सर्वेनुं प्रमाण करीने

देहादिक मायाना प्रपंच थकी असंगीपणे रहे अने तारुं जे ते मानेलुं तन, मन, धन, ते भगवानने अर्पण कर. अने भगवाननी आज्ञा प्रमाणे वर्त." एवी रीतनी समजणने प्रत्यक्ष भगवान आपे तेने ग्रहण करीने ते त्यागी थाय तोय ते ब्रह्मरूप छे अने एवी समजणने पामीने भगवाननी आज्ञाए अथवा प्रारब्धे करीने गृहस्थाश्रममां रह्यो होय तो पण तेने ब्रह्मरूप जाणवो.

केम के पूर्वे पण जनकादिक राजा केटलाक एवी रीतनी समजणने पामीने गृहस्थाश्रममां रह्या हता. अने व्रजनी गोपीयो पण एवी रीतनी समजणने पामीने संसार व्यवहारमां रही पण तेने लेश मात्र संसार व्यवहार अड्यो नहीं. माटे जेने प्रत्यक्ष भगवान मळ्या होय अने ते प्रत्यक्ष भगवानना स्वरूपनो ज्ञाने सहित उत्तम निर्विकल्प निश्चय थाय छे तेना अनंत जन्मना पापना समूह ते सर्वे बळीने भस्म थइ जाय छे पछी ते भक्त भगवाननी इच्छाए करीने त्यागी थाय अथवा गृहस्था-श्रममां रहे पण ते बेनो मोक्ष बराबर छे.

त्यारे तमे कहेशो जे त्यागी थयो तेणे शुं खोट खाधी, जे काम, लोभ, स्वाद, स्नेह अने मान ए जे पांच विषय तेनो त्यागी करीने *अतिशय असंगीपणे वर्ते छे अने कोइ प्रकारनी वासना राखता नथी* अने देह इन्द्रियोने दम्या करे छे? अने गृहस्थ तो कांइ एवो दाखडो करता नथी ते बेनो मोक्ष बराबर केम थाय? एम कहेशो तो त्यां क-हीए छीए जे त्यागी छे ते तो अमारी प्रसन्नताने अर्थे अनंत जीवोना कल्याण करवा सारु एवी रीते वर्ते छे, पण एने कोइ जातनो संशय रह्यो नथी. अने एवा निर्वासनिक साधु छे ते तो देह छतां ब्रह्मनी मूर्तिओ छे अने तेना संबंधे करीने अनंत जीवोनो मोक्ष थाय छे.

अने गृहस्थ छे तेने एना मोक्षमां तो संशय नथी. पण एना थकी घणा जीवनो मोक्ष थतो नथी."

॥ इति श्री मुखसिद्धांत ५२ समास ॥

५३ विषय :—मनने वश करवानी रीत

श्री हरिकृष्णाय नमोनमः—संवत् १९१६ ना श्रावण सुद ३ ने दिवस सांजने समे हरिकृष्ण भगवान गाम श्री भावनगर मध्ये महेता तेज-पाळनी मेडीयोना चोकवच्चे पाट ढळावीने ते उपर गादी तकीया नखावीने विराजमान थया हता. श्वेत सुरवाल पहेर्यो हतो ने गुलावी छींटनुं अंगरखुं धारण कर्युं हतुं. मस्तक उपर सोनेरी गुढा रंगनी पाघ वांधी हती अने केडे कसुंवल सोनेरी शेलुं धारण कर्युं हतुं. एक कसुं-वल शेलुं खंभे नाख्युं हतुं. कंठने विषे पुष्पना हार धारण कर्या हता. वे हाथने विषे पुष्पना वाजुबंध अने गजरा धारण कर्या हता. कान उपर पुष्पना गुच्छ शोभी रह्या हता. एक गुच्छ हस्तकमळमां धारण कर्यो हतो. पाघने विषे वे कोरे (वाजुए) पुष्पना तोरा लटकता हता. उगमणे मुखारविंदे विराजमान थया हता. अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तोनी सभा भराइने वेठी हती. अने सर्वे हरि-भक्तो चकोरनी पेठे भगवानना मुखारविंदनी सामे जोइ रह्या हता.

पछे श्रीहरिकृष्ण भगवान कृपा करीने सर्वे हरिभक्तो प्रत्ये वोल्या जे—'जितं जगत्केन मनो हि येन'। ए श्लोकमां एम कह्युं छे जे—"जेणे पोतानुं मन जीत्युं तेणे सर्व जगत जीत्युं." माटे भगवानना भक्त होय तेणे पोतानुं मन जरूर वश करवुं. अने ते मन वश कर्याथी संसारने विषे सुखदुःख, मान, अपमान, हरख, शोक, हानि, वृद्धि, ते सर्वे सम (सरखा) थइ जाय छे.

हवे मन शा उपाये करीने जीताय छे? तो ज्ञाने करीने मन जीताय छे. ते ज्ञान केवुं छे? तो आत्मा परमात्माना स्वरूपने यथार्थ जाणवुं. तेमां प्रथम आत्मनिष्ठा दृढ करवी. ते आत्मा केवो छे? तो आकाशनी पेठे व्यापक छे. अने निर्लेप छे. ते जेम आकाशना चार भेद छे. (१) घटाकाश (२) मठाकाश (३) महदाकाश अने (४) चिदाकाश. अने ते चिदाकाश थकी त्रण प्रकारनो आकाश थयो छे. अने पाछा ए त्रणे आकाश चिदाकाशमां लय पामे छे. अने तेमां प्रथम चिदाकाश थकी महादाकाश थाय छे, अने महदाकाश थकी मठाकाश थाय छे, अने मठाकाश थकी घटाकाश थाय छे. अने ज्यारे घडो नाश थाय छे त्यारे घडारूप उपाधिनो नाश थयो अने घडामां हतो जे आकाश ते मठाकाशमां लय पामे छे. कहेतां घडानो नाश थयो त्यारे ते आकाश घरमां मळी जाय छे. पण घडाने नाशे करीने आकाशनो नाश थतो नथी. एवी रीते घटाकाश, मठाकाश, महदाकाश ए त्रणे आवरण नाश थाय त्यारे एक चिदाकाश रहे छे. अने त्रणे आवरण होय त्यां सुधी ते घटाकाश आदिक त्रणे आकाश ते चिदाकाशमां भळे नहीं.

तेम जे आत्मा छे ते तो वस्तुगते शुद्ध चैतन्य ब्रह्म छे. पण ते आत्माने विषे स्थूळ, सूक्ष्म अने कारण ए त्रण देहरूपी उपाधि वळगी छे. त्यां सुधी ते आत्मा जन्म-मरण, सुखदुःख, मान, अपमान, हानि वृद्धि, हरख शोकादिक जे द्वंद्व तेने पामे छे. तेमां घटाकाशने ठेकाणे पंदर तत्त्वनुं स्थूळ शरीर छे. ते पंदर तत्त्व कयां छे? तो पंचभूत-पृथ्वी, जळ, तेज, वायु अने आकाश; अने पांच ज्ञानेंद्रियो–श्रोत्र, त्वचा, चक्षु, रसना अने घ्राण; अने पांच कर्मेंद्रियो-वाक्, पाणि, पाद, पायु, उपस्थ. ए पंदर तत्त्वनुं स्थूळ शरीर छे ते घटाकाशने ठेकाणे छे. अने मठाकाशने ठेकाणे नव तत्त्वनुं सूक्ष्म शरीर छे. ते नव तत्त्व कया? तो

पांच विषय–शब्द, स्पर्श, रूप, रस अने गंध. अने चार अंतःकरण–मन, बुद्धि, चित्त अने अहंकार. ए नव तत्त्वनुं सूक्ष्म शरीर ते मठाकाशने ठेकाणे छे. अने महदाकाशने ठेकाणे वासना कहेतां अज्ञानरूप कारणशरीर ते छे. अने चिदाकाशने ठेकाणे शुद्ध चैतन्य जीवात्मा छे अने जेम चिदाकाश छे ते महदाकाश, मठाकाश अने घटाकाशने विषे उपाधिए करीने रह्यो छे तो पण निर्लेप छे. केम के घडो नाश पामे तेणे करीने तेमां रह्यो जे आकाश ते नाश पामतो नथी. अने ज्यां सुधी घडो नाश न पामे त्यां सुधी ते आकाशने आवरण रहे छे अने ज्यारे त्रणे आवरण टळे त्यारे ते आकाश चिदाकाशमां भळे छे. तेम जीवात्माने स्थूळ, सूक्ष्म अने कारण, ए त्रण देहरूप जे आवरण छे. ते आवरणने अज्ञाने करीने पोतानुं रूप माने छे त्यां सुधी जीवात्मा जे ते दीनताना भावने पामतो थको जन्म-मृत्युने पामे छे. जेम कोइ सिंह वनने विषे अजाना (बकरांना) समूहने पामीने तेने संगे करीने पोतानी जातिनुं स्वरूप भूली गयो. अने पछे अजाना संगाते तृण खावा लाग्यो. अने अजानी पेठे सिंहादिक थकी भय पामीने पलायन करतो हतो. पछे केटलाक दिवसे तेने कोइक बीजो सिंह मळ्यो, तेणे कह्युं जे 'अजा तो तारो भक्ष पदार्थ छे.' पछी तेने विश्वासने अर्थे नदीना तट उपर उभो राखीने तेनुं स्वरूप देखाडयुं. त्यारे तेणे करीने तेणे एम जाण्युं ते "हुं तो समर्थ छुं" एम जाणीने सिंहनाद कर्यो त्यारे बकरां भागी गयां. अने पोते महावनने विषे निर्भय थको (थइने) फरवा लाग्यो.

तेम ए तो दृष्टांत, अने एनुं सिद्धांत ए छे जे सिंहनी पेठे जीवात्मा तो महासमर्थ छे. अने इन्द्रियो अंतःकरण तो जड छे. ते बकरांरूप इन्द्रियो अंतःकरणने संगे करीने आत्मा ते (इन्द्रिय अंतःकरण) रूप थइ गयो छे. पण जीवात्मा तो चैतन्य छे. अने भगवानना अंगनो प्रकाश

छे, अने निर्लेप छे, अने आनंदरूप छे, अने शुद्ध छे, अविनाशी छे. अने देहादिक जे पिंड ब्रह्मांड छे, ते तो नाशवंत छे, दुःखरूप अने जड छे, अने नरकरूप छे. माटे एवो महापापरूप जे देह ते थकी पोताना आत्माने जुदो समजीने अक्षरब्रह्मने विषे एकत्वपणुं करवुं. कहेतां महावाक्यने विचारे करीने समजवुं जे अक्षरब्रह्म ते ज हुं छुं. त्यां वेदनुं वाक्य छेः–जे 'तत्त्वमसि'। अर्थः–ते जे ब्रह्म ते तुं छे एवी रीते पोताने अक्षरब्रह्मरूप थवुं.

ते अक्षरब्रह्म केवुं छे ? तो अनंतकोटी ब्रह्मांडनी उत्पत्ति, स्थिति अने नाश ते अक्षरनी लेश (थोडी ज) सत्ताए करीने थाय छे. अने ते अक्षरना सुखनो लेश जरा प्रकृत्ति पुरुषमां आव्यो छे तो तेने करीने प्रकृतिपुरुष अनंतकोटी ब्रह्मांड सर्जवानी शक्तिने पाम्यो छे. अने वळी ते अक्षरना लेश सुखे करीने अनंतकोटी प्रधानपुरुष, अनंतकोटी वैराटादिक ईश्वर तथा अनंतकोटी ब्रह्मादिक, तथा अनंतकोटी इन्द्रादिक देव, ऋषि, प्रजापति, गांधर्व, अपसराओ तथा राजा, प्रजा, पशु, पक्षी, ते सर्वे अक्षरना सुखनो जे लेश तेणे करीने सर्वे सुखीया थया छे. अने एवुं जे अक्षरब्रह्म तेने विषे भगवान पुरुषोत्तम सदाय अखंड रह्या छे.

ते भगवान केवा छे ? तो पिंड ब्रह्मांडादिक क्षर अने तेथी पर एवुं जे अक्षर ए बेना आधार छे. अने अनंतकोटी ब्रह्मांडना पति छे. अने राधिका अने लक्ष्मी आदिक कोटी शक्तिओना स्वामी छे. अने ए भगवानना सुख आगल अनंतकोटी ब्रह्मांडनां जे विषयनां सुख ते तो नरक जेवा छे. अने अनंतकोटी ब्रह्मांडनां विषयसुख भेगां करीए तो पण भगवानना रोम सुखना कोटीमा भागनी बराबर थाय पण नहीं. अने "ए भगवानना सुख उपर तो अनंतकोटी ब्रह्मांडनां जे विषयनां सुख

ते वारी फेरीने नाखी दइए एवा जे भगवान ते मारा आत्माने विषे अखंड रह्या छे. अने वहार पण कृपा करीने अनंतकोटी जीवोना कल्याण करवाने अर्थे मनुष्य जेवा थइने दर्शन आपे छे. अने तेज भगवान मारा जीवात्मामां रह्या छे. अने ते ज सर्वना कर्ता, हर्ता अने पालक छे. अने ते भगवान मने प्रत्यक्ष आज मळ्या छे ते मारे हवे कांइ करवुं रह्युं नथी. केम के सर्वे सुखना धाम, सर्वेना आधार, तेज मने आज प्रत्यक्ष मळ्या छे. माटे एवा जे भगवान तेने मुकीने महादुःखरूप जे संसारना तुच्छ एवा विषयना सुख तेमां हुं शुं प्रीति राखुं ? अने संसारनां सुख तो अनंत दुःखे युक्त अने अनंत क्लेशे युक्त अने अनंत पापे युक्त छे. अने वळी संसारना सुखनी केडे (पाछळ) यमपुरी, चोराशी, गर्भवासादिक अनंत दुःख रह्यां छे."

एम समजीने संसारनां सुखनी वासनानो सर्व प्रकारे त्याग करवो. अने पोताने मळ्या एवा जे प्रत्यक्ष भगवान तेनो दृढ आश्रय करीने तेनी आज्ञा प्रमाणे वर्तवुं. अने एवी रीते समजीने जे भगवानने भजे छे, तेनी वासना टळी जाय छे. अने तेने आत्मा परमात्माने विषे प्रीति थाय छे. अने ते भक्तने अखंड भगवाननी मूर्तिनुं चिंतवन थया करे छे. अने तेनुं ज मन वश थाय छे. माटे जेने पोतानुं मन वश करीने कल्याणने इच्छवुं होय तेणे तो प्रत्यक्ष भगवाननो दृढ आश्रय करीने तेनी आज्ञा प्रमाणे वर्तवुं तो ते थकी एनुं कल्याण साक्षात्कार थाय छे.

माटे प्रथम कह्युं जे आत्मा परमात्मानुं ज्ञान तेने करीने जेणे पोतानुं मन वश कर्युं कहेतां प्रगट भगवाननो दृढ आश्रय जेणे कर्यो तेनुं कल्याण साक्षात्कार थइ रह्युं छे. माटे तेनो देह सूझे तो आज पडे अने सूझे तो सो वर्ष केडे (पछी) पडे; अने सूजे तो बोलतां चालतां देह पडे अने सूझे तो घणीक पीडा थइने पडे, अने सूझे तो तीर्थादिक

सारे ठेकाणे देह पडे अने सूझे तो गमे ते ठेकाणे देह पडे पण जेने ज्ञाने सहित प्रत्यक्ष भगवाननो दृढ आश्रय थयो छे, तेनो जीवात्मा तो भगवानना धामने ज पामे छे, पण तेने कोइ जातनो संशय रह्यो नथी. एम जाणीने आनंदमां रहीने अखंड भगवाननुं भजन कर्या करवुं." एम कहीने श्री हरिकृष्ण भगवाने वार्तानी समाप्ति करी. पछी संत कीर्तन गावा लाग्या.

इति श्रीमुख सिद्धांत ५३ समाप्त।

५४ विषय :—कृतघ्नीपणारूप दोष टाळवानी रीत

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः—संवत् १९१६ ना श्रावण सुद ४ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री भावनगर मध्ये महेता तेजपाळ-नी मेडीयोना चोक वच्चे पाट ढळावीने ते उपर गादी तकीया नखा-वीने ते उपर विराजमान थया हता. गूढा रंगना किनखावनो सुरवाल पहेर्यो हतो. अने लीला किनखावनी डगली धारण करी हती अने कसुंबल सोनेरी पाघ बांधी हती. गूढो सोनेरी कोर (कीनार) वाळो रेंटो पहेर्यो हतो. केडे (कम्मरे) कसुंबल शेलुं बांध्युं हतुं अने एक शेलुं कसुंबल तारवाळुं खंभे नाख्युं हतुं. कंठने विषे पुष्पना हार धारण कर्या हता. हाथने विषे पुष्पना बाजुबंध अने गजरा धारण कर्या हता. पाघने विषे बे कोरे (बाजु) तोरा लटकता हता. कान उपर पुष्पना गुच्छ धारण कर्या हता. हस्तकमळने विषे लींबुनुं एक फळ धारण कर्युं हतुं. एक मोगराना पुष्पनो गुच्छ लइने सुंघता हता. एवी शोभाने धारण करता थका, ने पोताना भक्तोजनोने आनंद उपजावता थका विराजमान थया हता. अने पोताना मुखारविंदनी आगळ परमहंस तथा हजारो हरिभ-क्तोनी सभा भराइने बेठी हती.

प्रश्नः– पछे महाराज श्री हरिकृष्ण भगवान कृपा करीने बोल्या जे–सांभळो सर्वेने एक प्रश्न पुछीए छीए "जे एक दोष छे तेमां सर्वे दोष रह्या छे अने ते दोषनो त्याग करीए तो सर्वे दोष टळी जाय, तेवो दोष ते कयो छे?"

तेनो उत्तर कोइ थकी थयो नहीं. पछे भगवान बोल्या जे "एक कृतघ्नीपणारूप जे दोष छे तेमां सर्वे दोष रह्या छे. अने कृतघ्नीपणारूप एक दोषनो त्याग करे तो सर्वे दोष टळी जाय छे. हवे कृतघ्नीपणुं ते शुं? तो कर्या गुणने न जाणवुं, तेनुं नाम कृतघ्नीपणुं छे. माटे भगवान जे ते जीवने अनादिकाळ थया महा उपकार करे छे. ते उपकारने भूलीने जीव जे ते पोताना मननी खुशी प्रमाणे चाले छे. अने भगवानने नथी भजतो. माटे ते पापे करीने जीवनी बुद्धि भ्रष्ट थइ गइ छे. पछे ते भ्रष्ट बुद्धिए करीने प्रगट प्रमाण जे भगवाननुं स्वरूप ते एने ओळखातुं नथी. अने ते भगवानने विषे हेत पण तेने थतुं नथी.

जेम सूर्य अने चंद्रमानुं ग्रहण थाय त्यारे तेनो प्रकाश ढंकाइ जाय छे. तेम कृतघ्नीपणारूप दोषे करीने जीवने कल्याणनो मार्ग सूझतो नथी. अने ते कल्याणनो मार्ग न सूझवे करीने उलटो प्रत्यक्ष भगवाननो जीव जे ते द्रोह करे छे अने पछे महादुःखरूप जे यमपुरी, चोराशी अने गर्भवासादिक दुःख तेने वारंवार भोगवे छे. अने हेरान थाय छे. ते माटे जेने पोताना आत्मानुं कल्याण करवानी इच्छा होय तेणे तो भगवाननो मोटो उपकार जाणी ते भगवाननुं भजन करवुं.

हवे ते भगवानना क्या उपकार छे? तो श्रीमद् भागवतपुराणमां कह्युं छे. ते ८२मा अध्यायमां दशमस्कंधने विषे श्लोक बीजोः–

बुद्धीद्रिन्य मनः माणान् जनानामसृजत् प्रभुः।
मात्रार्थं च भवार्थं च आत्मने कल्पनाय च॥

एवी रीते भगवान जे ते जीवोना मोक्षने अर्थे इन्द्रियो अंतःकरण जीवने सर्जी आपे छे. अने इन्द्रियो अंतःकरणे करीने जीव जे ते सर्व क्रिया करे छे. अने सर्वे पदार्थनुं ज्ञान थाय छे. अने संतसमागमे करीने निर्गुण भावने पामे तो ए ज इन्द्रियो अंतःकरणे करीने भगवाननुं ज्ञान पण थाय छे. ते भगवाननुं ज्ञान भगवान वते (थकी) ज थाय छे.

जेम सूर्यवते सर्व पदार्थ देखाय छे. अने सूर्य पण सूर्ये करीने ज देखाय छे. केम के सूर्य विना सूर्य देखाय नहीं. तेम भगवानना स्वरूपनुं ज्ञान तो भगवान प्रगट थइने करावे छे त्यारे ज थाय छे. पण ते विना भगवानना स्वरूपनुं ज्ञान थाय ज नहीं. अने वळी अन्न वस्त्र पण सर्वने भगवान ज आपे छे. केम के भगवान मेघ वरसावे छे त्यारे अन्न वस्त्र निपजे छे. अने त्यारे ज सर्व जीवोनो निभाव थाय छे.

ते जेम कोइक काळ पडे अने अन्न खावा क्यांय न मळतुं होय अने ते काळमां कोइ अन्न आपीने काळमां जीवतो राखे तो तेनो केटलो पाड (उपकार) माने ? तेनो तो गुलाम थइने रहे. अने जीवनपर्यन्त तेनो गुण भूले नहीं. तेम भगवाने तो जीवोने अनंतकाळ उतार्या छे. केम के वरसाद न वरसे तो सदाय काळ ज छे. माटे भगवान कृपा करीने वरसाद वरसावे छे. त्यारे सर्वे विश्वना जीवो जीवे छे.

जेम कोइक खेडु उनाळे खेतरमां सांती हांकतो होय तेने गाममांथी भात आवे तो खाय. नीकर (नहींतर) भूखे मरे. तेम आ लोक तो उनाळाना खेतर जेवुं छे. ते भगवान वरसाद न वरसावे तो सर्वे विश्वनो नाश थइ जाय. माटे दया करीने वरसाद वरसावे छे. अने सर्वे विश्वना जीवोने भगवान निभावे छे. एम जाणीने भगवाननो मोटो उपकार मानीने ए भगवाननुं अखंड भजन कर्या करवुं.

ते शा सारु भगवाननुं भजन करवुं ? तो पोताना आत्माना सुख-ने अर्थे करवुं. ते सुख क्यारे थाय ? तो सर्वोपरि सुखने पामे त्यारे थाय. ते सर्वोपरि सुख तो भगवानपासे छे. ते भगवानना सुखने क्यारे पमाय ? तो प्रत्यक्ष भगवानना शरणने पामीने मायिक सुखनो त्याग करे त्यारे सर्वोपरि सुखने जीव पामे. अने ते मायिक सुखनो क्यारे त्याग थाय छे ? तो सर्वे वस्तुनुं प्रमाण करे, पछी जे वस्तु सत्य होय तेनुं ग्रहण थाय छे. अने जे वस्तु असत्य होय तेनो त्याग थाय छे.

माटे देह, आत्मानो विवेक (विचार) करवो. तेमां जे देह छे ते तो नाश थइ जाय एवो छे. अने ते देह संबंधी जे पदार्थ छे ते पण नाश-वंत छे. अने ते पदार्थमां जे सुख जेवुं जणाय छे ते तो आत्मावते ज जणाय छे. अने जो देहमांथी आत्मा निसरी जाय तो सर्व पदार्थ नकारा थइ जाय छे. ते मोटो पृथ्वीपति राजा होय अने तेने हजारो चाकर होय, तथा हजारो राणीओ होय, तथा लाखो गाम, गरास, धन, माल, हाथी, घोडा, पालखीयो आदिक सर्वे पदार्थ होय पण ज्यारे तेना देह-मांथी आत्मा निसरी जाय त्यारे तेने पछे कोइ पदार्थ लेशमात्र काम आवे नहीं. ते सर्वे पदार्थ नकारा थइ जाय छे. माटे पोते आत्मा ज सुख-रूप छे. अने प्रकृतिनुं कार्य जे पिंड अने ब्रह्मांड ते सर्वे नाशवंत छे. अने दुःखरूप छे अने जड छे. अने अंते अपार दुःखनुं कारण छे.

जेम सोमलखार नाखी खांडना मोतीया लाडवा कर्या होय ते लाडवा खातां तो गळ्या लागे पण पछी प्राणने काढे एवा छे. तेम विषय-नां सुख भोगवती वखते तो सारा जेवा जणाय छे खरा पण अंते अपार दुःखनुं कारण छे. अने ते विषयमां जीवने प्रीति होय तेणे करीने जन्म मृत्यु थाय छे एम मायिक पदार्थने पापरूप जाणीने ते पिंड ब्रह्मांड आदिक सर्वे पदार्थनो त्याग करीने सदाय सत्यरूप एवो जे पोतानो

आत्मा तेनुं ग्रहण करीने कहेतां आत्माने पोतानुं स्वरूप जाणीने ते आत्माना साचा हितकारी एवा जे परमात्मा भगवान ते ज सर्वे सुखना सिंधु छे. अने कृपाना सागर छे. एम जाणीने ते भगवाननो महा मोटो उपकार मानीने ते भगवाननुं अखंड भजन करवुं, अने आ जे विचार कह्यो तेने जे समजे तेने कृतघ्नीपणारूप दोष टळी जाय छे. अने तेनी बुद्धिमां प्रकाश थाय छे. अने तेने ज प्रगट भगवाननुं स्वरूप ओळखाय छे. अने तेने प्रत्यक्ष भगवानने विषे दृढ हेत थाय छे. अने जेने प्रगट भगवानने विषे हेत थयुं, तेनुं साक्षात्कार कल्याण थाय छे. अने ते आत्मा परमपदने पामे छे. ते परमपद ते शुं ? तो प्रत्यक्ष भगवाननी प्राप्ति जीवने थाय ते ज परमपद छे. एवी प्राप्ति तो जेने अनेक जन्मना शुभसंस्कार होय तेने ज थाय छे.

माटे आज जेने मनुष्यनो देह आव्यो छे तेना भाग्यनो पार नथी. केम के आज भगवाननुं प्रगटपणुं, पोताने मनुष्यनो देह अने ते भगवानने विषे दृढ हेते सहित तेनुं दर्शन, ते ज अतिशय दुर्लभ छे. ते श्रीमद् भागवतमां दशम स्कंधने विषे श्रीकृष्ण भगवाने बळदेवजी प्रत्ये कह्युं छे. श्लोक :—

अहो अमी देववरामरार्चित, पदांबुजं तेपु मनःफलार्हणम्,
नमंत्युपादाय शिखाभिरात्मनस्तमोपहत्यै तरुजन्म यत् कृतम् ॥

अर्थः—जे हे भाइ ! आ वृंदावनने विषे मृगलां तथा गायो तथा झाडवांतळे आपणे बेसीए छीए ते सर्वे मोटां भाग्यवाळा छे. एवी रीते पोताने मनुष्यदेह अने कल्याणकारीनुं दर्शन एवो समो जीवने आववो घणो ज दुर्लभ छे. अने पूर्वे जेने प्रगट भगवान मळ्या छे तेनां ज साक्षात्कार कल्याण थयां छे. अने तेना गुण मोटा ब्रह्मादिक

खभे नाख्युं हतुं, कंठने विषे गुलाब अने मोगराना गुंथेला हार धारण कर्या हता. हाथने विषे फूलना गजरा, बाजुबंध, पोंचीयो, वींटीयो, धारण कर्यां हतां. कान उपर पुष्पना गुच्छ धारण कर्या हता. पाघमां तोरा लटकता हता. पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तोनी मोटी सभा भराइने बेठी हती.

पछे भगवान बोल्या जे–"जीवनो मोक्ष क्यारे थाय छे ?

–तो साक्षात्कार प्रत्यक्ष भगवान जीवने मळे अने ते भगवानना स्वरूपनो उत्तम निर्विकल्प निश्चय थाय त्यारे मोक्ष थाय. अने मायाने तरीने भगवानना धामने पामे, ते सर्वे शास्त्रनो सिद्धांत छे."

प्रश्नः–पछे महेता त्रिभोवन धनजीए भगवानने हाथ जोडीने प्रश्न पूछ्युं जे "हे महाराज! प्रत्यक्ष भगवानना स्वरूपनो उत्तम निर्विकल्प निश्चय थवानो शो उपाय छे ? ते कृपा करीने कहो."

पछे भगवान बोल्या जे–"भगवानना स्वरूपनो निश्चय तो भगवान थकी ज थाय छे. ते भगवान पृथ्वी उपर प्रगट थाय छे त्यारे ते भगवानने शरणे आव्यो जे जीव तेने आत्यंतिक प्रलयनुं ज्ञान आपीने पोताना स्वरूपनो निश्चय करावे छे. त्यारे निश्चय थाय छे, पछे जेने आत्यंतिक प्रलयनुं ज्ञान सिद्ध थाय छे ते भक्त जे ते प्रत्यक्षमूर्ति ज्ञानदाता भगवान तेने विषे सर्वोपरि पुरुषोत्तमपणानो निश्चय करे छे.

हवे ते ज्ञानने कहीए छीए जे ते भगवान केवा छे ? तो मायापर एवुं जे अक्षरधाम तेने विषे सदाय विराजमान छे. अने ते भगवान दिव्यस्वरूपे छे. अने साकार, द्विभुजमूर्ति छे, अने अतिशय प्रकाशवान छे, मनोहर छेअने अनंत ऐश्वर्ये युक्त अने अनंत शक्तियो अने अनंत पार्षदे विंटाणा थका विराजमान छे. एवा जे भगवान पुरुषोत्तम

ते कृपा करीने जीवोना मोक्षने अर्थे आत्यंतिक प्रलयमां हता जे जीवो तेने उत्पन्न करवासारु सृष्टिं करवाने समे अक्षर सामी दृष्टि करे छे.

—ते अक्षर केवुं छे ? तो सर्वाधार छे अने ए अक्षरना एकदेशने विषे अनंत एवा सबळब्रह्म पुरुष रह्या छे तेमांथी एक पुरुषने अक्षर जे ते प्रकाशे छे. ते पुरुष केवो छे ? तो प्रकृतिनो नियंता छे, अने अखंड छे, अने अनादि छे अने एने सबलब्रह्म कहे छे, अने ते कूटस्थ छे एवो जे पुरुष तेना अंगने विषे प्रकृति रही छे, तेने पुरुष जे ते अक्षरना प्रकाशवडे करीने जाग्रत करे छे. ते पुरुष प्रकृतिना संजोगे करीने अनंत-कोटि प्रधान पुरुष उत्पन्न थाय छे. अने ते प्रधानपुरुषथकी महत्तत्त्व थाय छे अने महत्तत्त्व थकी त्रण प्रकारनो अहंकार थाय छे. तेमां सत्त्व-गुण थकी चार अंतःकरण थाय छे अने चौद इन्द्रियो अंतःकरणना देवता थाय छे. अने रजोगुण थकी दश इन्द्रियो थाय छे. अने तमो-गुण थकी पांचभूत अने पांचविषय थाय छे. एवी रीते चोवीस तत्त्व उत्पन्न थयां, पछी ते तत्त्वे करीने ईश्वर अने जीवना देह जे पिंड ब्रह्मांड सर्जाणा.

एवी रीते भगवान जे ते अक्षररूपे सर्वेमां प्रवेश करीने अंतरजा-मीपणे रह्या छे पण भगवान विना एक अणु खाली नथी, त्यां श्रुतिः— 'सर्व खल्विदं ब्रह्म' अने वळी ते भगवान सर्वमां रह्या थका पण जुदा रह्या छे. ते भगवान जेवा अक्षरमां छे तेवा भगवान पुरुषमां नथी केम के भगवान तो अक्षरमां छे अने अक्षरद्वारा पुरुषमां प्रवेश कर्यो छे, माटे अक्षर-रूपी पिंड आडुं आव्युं अने जेवा प्रकृतिपुरुषमां भगवान छे तेवा प्रधान-पुरुषमां नथी, अने जेवा प्रधानपुरुषमां छे एवा महत्तत्त्वमां नथी अने मह-त्तत्त्वमां जेवा भगवान छे तेवा त्रण प्रकारना अहंकारमां नथी. अने जेवा

अहंकारमां छे तेवा चोवीस तत्त्वमां नथी. अने तत्त्वमां जेवा भगवान छे तेवा वैराटमां नथी. अने वैराटमां जेवा भगवान छे तेवा ब्रह्मादिक देवमां नथी अने ब्रह्मादिक देवमां जेवा भगवान छे तेवा मनुष्यमां नथी अने मनुष्यमां जेवा भगवान छे तेवा पशुपक्षि-आदिकमां नथी. एवी रीते पात्रनी तारतम्यताए अन्वयपणे सर्वमां भगवान रह्या छे. अने व्यतिरेकपणे तो सर्वेथी जुदा रह्या छे.

जेम सूर्य छे ते पोताना मंडळने विषे मूर्तिमान रह्यो छे अने पोताना प्रकाशे करीने सर्वना नेत्रमां रह्यो छे. तेम भगवान जे ते मूर्तिमान तो पोताना अक्षरधामने विषे रह्या छे. अने पोताना अंगनो प्रकाशरूप जे अक्षरब्रह्मरूप ज्ञान ते रूपे करीने सर्वे विश्वमां रह्या छे, ते केवी रीते भगवान सर्वमां रह्या छे ? तो जेम सूर्य जे ते नेत्रमां रह्यो छे. ते नेत्रना चार भेद छे, ते कया ? तो (१) मोटी आंख छे. (२) ते आंखमां रत्न छे. (३) ते रत्नमां मणशीयो छे अने (४) मणशीयामां प्रकाश छे, ते प्रकाशने अने सूर्यना प्रकाशने सुजातिपणुं छे. माटे ते नेत्रना प्रकाशमां सूर्यनो प्रकाश आव्यो त्यारे देखाय छे, अने सूर्यनो प्रकाश न होय अने आंख पोतानी पासे होय तो पण कांइ देखाय नहीं, अने सूर्यनो प्रकाश होय तो पण जो पोतानी आंखमां प्रकाश न होय तो देखाय नहीं.

(१) तेम मोटी आंखने ठेकाणे तो जीवनुं स्थूळ शरीर छे, (२) रत्नने ठेकाणे सूक्ष्म शरीर छे, (३) मणशीयाने ठेकाणे जीवनुं कारणशरीर छे. अने (४) तेमां जे प्रकाश तेने ठेकाणे तो पोते जीवात्मा छे. अने सूर्यना प्रकाशने ठेकाणे भगवानना अंगना तेजरूप जे अक्षरब्रह्म ते छे. अने सूर्यने ठेकाणे परमात्मा भगवान पोते छे. ते सूर्य जेम एक छे तेम भगवान पण एक ज छे. अने तेना अंगनो प्रकाश जे अक्षरब्रह्म

ते पण एक छे. अने जीव अनंत छे. ते जेम सूर्यवडे आंख सर्वे पदार्थने देखे छे अने सूर्यने पण सूर्यवडे देखे छे. तेम भगवाननुं ज्ञान पण भगवान वडे ज थाय छे, जेम हीराथी हीरो विंधाय छे, अने मणीथी मणी विंधाय छे. तेम भगवाननो निश्चय भगवानवतेज थाय छे.

अने वळी जेम देहना दुःखने जीव जाणे छे पण जीवना दुःखने देह जाणी शके नहीं. तेम भगवान जे ते जीवोने जाणे छे पण जीव भगवानने जाणवाने समर्थ नथी, माटे ए तो ज्यारे भगवान कृपा करीने रामकृष्णादिकरूपे मनुष्य जेवा थइने पोताना स्वरूपनुं ज्ञान करावे छे त्यारे जीवने भगवानना स्वरूपनो निश्चय थाय छे. अने जीव जे ते पंचविषय थकी मुकाइने मायापर थाय छे, अने ब्रह्मरूप थइने अक्षरधामने पामे छे.

—हवे ते भगवानना स्वरूपनुं ज्ञान जे ते पोते एम करावे छे ते जेम उत्पत्ति छे तेम ज प्रलय थाय छे, (१) ते प्रथम जेम आकाशमांथी (२) वायु थाय छे, (३) वायु थकी अग्नि थाय छे (४) अग्नि थकी जळ थाय छे अने (५) जळ थकी पृथ्वी थाय छे एवी रीते जेम उत्पत्ति थाय छे तेम प्रलय समे पृथ्वी जळमां लय थाय छे, जळ अग्निमां लय थाय छे, अग्नि वायुमां लय थाय छे, अने वायु आकाशमां लय थाय छे. एवी रीते उत्पत्ति अने प्रलय थाय छे. तेमां जीव जे ते वारंवार जन्ममृत्युना दुःखने पामे छे. माटे ए जीव ज्यारे आत्यंन्तिक प्रलयना ज्ञानने पामे त्यारे ते जीव जे ते जन्ममृत्युना दुःख थकी मुकाइने ब्रह्मरूप थाय छे.

—हवे ते ज्ञानप्रलयनी रीतने कहुं छुं. ते जेम आ मनुष्यनो देह छे, तेम चौद लोकनुं ब्रह्मांड ते वैराजनामे इश्वर तेनो देह छे. ते जेम मनुष्यना देहमां चोवीस तत्त्व छे तेम वैराजना देहमां चोवीस तत्त्व छे

ते वैराजना देहमां महद् छे. अने जीवना देहमां अल्प छे अने जीवने स्थूळ, सूक्ष्म अने कारण ए त्रण देह छे अने वैराज ने वैराट्, सूत्रात्मा अने अव्याकृत ए त्रण देह छे. अने ए थकी जीव तथा ईश्वरनो आत्मा जुदो छे. हवे ते आत्मा जुदो छे तेने समजवानी रीत कहीए छीए जे जीवना देहमां अस्थि जे हाडकादिक पृथ्वीनो भाग छे तेने महद् पृथ्वीमां लय करीने पोताना आत्माने जुदो पाडवो. अने महद् पृथ्वी छे ते महद् जळना एक अंशमांथी उपजी छे. माटे ते पृथ्वीने जळमां लय करीने वैराजना आत्माने जुदो समजवो. अने जळनी दृष्टिए जोइए तो एकलुं जळ देखाय पण पृथ्वी देखाय नहीं. अने जीवना देहमां लोही आदिक जे जळनो भाग छे ते महद् जळमांथी थयो छे तेने महद् जळमां लय करी जळ थकी पोताना आत्माने जुदो पाडवो अने जळ छे ते अग्निना एकदेशमांथी उपज्युं छे. तो तेने अग्निमां लय करीने ते महद् अग्नि थकी वैराजना आत्माने जुदो समजवो अने ज्यारे अग्निनी दृष्टिए जोइए तो जळ पृथ्वी कांइए नथी देखातुं. एकलो अग्नि देखाय छे अने जीवना देहमां जठराग्नि छे ते महद् अग्निमांथी उपज्यो छे. माटे तेने महद् अग्निमां लय करीने पोताना आत्माने जुदो पाडवो अने महद् अग्नि छे ते वायुना एक देशमांथी उपज्यो छे, तेने ते वायुमां लय करीने ते ईश्वरना आत्माने जुदो समजवो ने जीवना देहमां प्राणवायु छे ते महद् वायुमांथी उपज्यो छे. तेने तेमां लय करीने पोताना आत्माने जुदो पाडवो अने जे महद् वायु छे ते महद् आकाशना एकदेशमांथी उपज्यो छे. माटे तेने महद् आकाशमां लय करीने वैराजना आत्माने जुदो समजवो अने ज्यारे आकाशनी दृष्टिए जोइए त्यारे तो पृथ्वी जळादिक चारे भूत नथी देखातां. एकलो आकाश ज देखाय छे. अने जीवना देहने विषे प्राणादिकनी भुंगळीयोनो अवकाश छे ते महद् आकाशमां-

थी उपज्यो छे. तेने तेमां लय करीने तेथी पोताना आत्माने जुदो पाडवो. अने महद् आकाश छे ते अहंकारमांथी उपज्यो छे. तेने अहंकारमां लय करीने ईश्वरना आत्माने जुदो समजवो. अने जीवना देहमां जे अहंकार छे ते महद् अहंकार थकी उपज्यो छे. माटे तेने तेमां लय करीने पोताना आत्माने जुदो पाडवो. अने अहंकार छे ते महत् तत्त्वमांथी उपज्यो छे. तेने तेमां लय करीने महद् अहंकार थकी वैराजना आत्माने जुदो समजवो. अने जीवनुं चित्त छे ते महत्तत्त्वमांथी उपज्युं छे. तेने तेमां लय करीने तेथी पोताना आत्माने जुदो पाडवो. अने जे महत्तत्त्व छे ते प्रधानपुरुषमांथी उपज्युं छे. तेने तेमां लय करीने ते ईश्वरना आत्माने जुदो समजवो. अने जीवनुं मन छे ते प्रधानपुरुषमांथी उत्पन्न थयुं छे तेने प्रधानपुरुषमां लय करीने पोताना आत्माने ते थकी जुदो समजवो. अने जे प्रधानपुरुष छे ते प्रकृतिपुरुष थकी उपज्युं छे. तेने तेमां लय करीने ईश्वरना आत्माने जुदो समजवो. अने जीवनी बुद्धि छे ते मूळ मायामांथी उत्पन्न थइ छे ते बुद्धिने मूळ मायामां लय करीने पोताना आत्माने तेथी जुदो समजवो. अने जे मूळमाया छे ते सवळब्रह्मना एकदेशमांथी उत्पन्न थइ छे ते मायाने सवळने विषे लय करीने ते ईश्वरना आत्माने जुदो समजवो. अने एवी रीते ज्ञानप्रलय करीने पछे पोताना आत्माने अने वैराजनामे ईश्वरना आत्माने अष्टावरणरूप मायाथी जुदा पाडीने, ते मायानुं द्रष्टापणुं टाळीने शुद्ध चैतन्यरूप थइने, अक्षरब्रह्मने विषे एकत्वपणुं करवुं. कहेतां पोताना आत्माने अक्षरब्रह्म मानवो. अने ते अक्षरना आधार अक्षरातीत परमात्मा भगवान छे.

—एवी रीते जेम उत्पत्ति, तेम प्रलय करीने पोताना आत्माने शुद्धरूप एवुं जे अक्षरब्रह्म तेने पोतानुं स्वरूप मानीने प्रतिलोम दृष्टि करीने

प्रत्यक्ष एवा जे ज्ञानदाता भगवान तेनुं आत्माने विषे ध्यान करवुं. एवी रीते समजीने ध्यान करे छे तेने साक्षात्कार दिव्यमूर्ति भगवान देखाय छे अने तेने प्रत्यक्षमूर्ति भगवान तेना स्वरूपनो उत्तम निर्विकल्प निश्चय थाय छे.

जेम सूर्यनो प्रकाश निराकार छे पण तेमां दर्पण राखीए तो तेमां मुर्तिमान सूर्य देखाय छे. तेम पोताना आत्माने अष्टावरणथी पर शुद्ध चैतन्य ब्रह्मरूप मानीने तेने विषे पोताने मळ्या जे प्रत्यक्षमूर्ति भगवान तेनुं ध्यान करवुं. अने एवी रीते जे ध्यान करे तो तेने पोताना आत्माने विषे अनंत ऐश्वर्य, अनंत पार्षद अने अनंत प्रताप युक्त जे भगवान ते मूर्तिमान प्रत्यक्ष देखाय छे. अने एवी रीते ध्यान करते करते भगवाननना भक्तनी दिव्यमूर्ति बंधाय छे. अने तेने भागवतीतनुं कहे छे अने ते भक्त जे ते भगवानना सरखा आकारने पामे छे. अने अपार अद्‌भुत सुखने पामे छे. अने ते भक्त अखंड भगवाननी सेवामां रहे छे. अने तेने कोइ काळे पाछो जन्म धरवो पडतो नथी." एम कहीने भगवान बोल्या, "हवे कीर्तन बोलो" पछे साधु कीर्तन गावा लाग्या.

इति श्री सुखसिद्धांत ५५ समाप्त ॥

---

५६ विषय :—जन्म मृत्यु टाळीने शान्ति थवा विषे

श्री हरिकृष्णाय नमोनमः—संवत् १९१६ ना श्रावण वदि ३ने दिवस महाराज श्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्री भावनगर मध्ये महेता तेजपाळने घेर मेडीयोना चोक वच्चे पाट उपर गादी तकीया बिछावीने ते ऊपर विराजमान थयाहता. अने सर्वे जरीयानी वस्त्र धारण कर्यां हतां. कंठने विषे पुष्पना हार धारण कर्या हता. कर्ण उपर गुच्छ शोभी रह्या हता. पाघमां पुष्पना तोरा अने छोगलां धारण कर्यां हतां. अने मस्तक उपर

ऊंचे फूलनुं मोटुं छत्र बांध्युं हतुं. ललाटने विषे केसरनी आड (अर्चा). अने कंकुनो चांदलो कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी मोटी सभा भराइने बेठी हती. अने साधु भागवत धर्मनी कथा करता हता.

पछे कथानी समाप्ति थइ रही त्यारे महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान बोल्या जे "जीवने अशांति छे ए ज जन्म-मृत्युनुं कारण छे. अने जे शांति छे ते ज मोक्षनो हेतु छे.

हवे ते अशांति ते शुं छे? तो जीव जे ते देहने विषे पोतापणुं मानीने पंचविषयने भोगववानी इच्छा राखे छे. अने ते विषय सूझे एटला भोगवे तो पण तृप्त थवातुं नथी. ए ज अशान्तिनुं कारण छे. अने ते विषयमां प्रीति होय ते देह मुके तो ते प्रीतिए करीने पाछो देह धरवो पडे छे. एवी रीते वारंवार जन्म-मृत्युने पामे छे.

—हवे शान्ति ते शुं छे ? तो पंचविषयनी वासना मूकीने पोते शुद्ध आत्मारूप थइने परमात्मा प्रत्यक्षने साक्षात्कार पामे त्यारे जीव जे ते परम शान्तिने पामे छे. पण ते विना चौद्लोकनां विषयसुख भोगवे तोय लेशमात्र शान्ति थाय नहीं

—अने पंचविषयनां सुख तो केवां छे? तो जेम तपती लोढी उपर पाणीनुं टीपुं नाखे ते "छम्" थइने पाछुं तपवा लागे. तेम भूख्यो होय अने अन्न खाय त्यारे घडीक शान्ति रहे. अने वळी पाछो भूख्यो थाय. अने तृषा लागी होय अने पाणी पीए त्यारे घडीक शान्ति रहे अने पछी वळी तरस लागे. एवी रीते देहमां अनंत व्याधिओ रही छे. माटे पंचविषय, तेने करीने कोइ काळे शान्ति थाय नहीं.

हवे शान्ति क्यारे थाय ? तो मृत्यु टळे त्यारे शान्ति थाय. ते मृत्यु

तो शुं छे ? तो अज्ञाने करीने मिथ्या भ्रान्ति छे तेज मृत्यु छे. केम के देहअने आत्मा बे वस्तु छे, तेमां आत्मा छे ते तो अविनाशी छे अने देह तो जड छे, अने मिथ्या छे. माटे आत्मा अविनाशी छे ते तो कोइ काळे मरतो नथी. अने देह तो जड छे. ते जड वस्तुने तो मृत्यु होय नहीं. केम के जड एवो जे थांभलो तथा पाणानी शल्या ते मरी जाशे एम कहेवाय नहीं. तेम देह तो थांभलावत् जड छे अने जे देह हाले चाले छे ते तो आत्माए मांही प्रवेश कर्यो छे, तेने करीने चाले हाले छे जेम उपानह पगमां पहेर्यां होय अने ते पुरुष वीस गाउ चाले तो ते भेगां पगरखां पण वीस गाउ चाले छे. पण पुरुष विना पगरखां कांइ चालवाने समर्थ नथी. ते पगरखांरूप जे देह ते तो आत्मानी सत्ताए करीने सचेतन थाय छे. अने जो तेमांथी आत्मा नीसरी जाय तो देह थांभलावत् जड थइ जाय छे. अने आत्मा देहमां छे तो पण देह जड छे, माटे जड एवो जे देह ते तो सदाय मरेलो छे. एने कांइ मरवुं (मृत्यु) नथी, अने जे आत्मा छे ते तो कोइ काळे मरतो नथी. अने जे जड होय ते मूवुं (मरेलुं) कहेवाय नहीं माटे "मृत्यु मृत्यु" कहे छे ते मृत्यु ते शुं छे ? तेनो तपास करीने जोइए.

—तो त्रणे काळमां मृत्यु ज नथी. अने ए तो मिथ्या भ्रान्ति मात्र छे. माटे एवी रीते मृत्युनो विचार करे तो मृत्यु टळी जाय छे. त्यारे तमे कहेशो जे मृत्यु कोने छे ? तो आत्मा छे ते पोताना स्वरूपने भूली अने मायाना चोवीस तत्त्वरूप जे देह तेना भावने पामी गयो छे, ते पृथ्वीमां पृथ्वीरूप थइ गयो छे, अने जळमां जळरूप थइ गयो छे, अने अग्निमां अग्निरूप थइ गयो छे. अने वायुमां वायुरूप थइ गयो छे, अने आकाशमां आकाशरूप थइ गयो छे, अने अहंकारमां अहंकाररूप थइ गयो छे. अने चित्तमां चित्तरूप थइ गयो छे. मनमां मनरूप थइ गयो छे, अने

बुद्धिमां बुद्धिरूप आत्मा थइ गयो छे. एवीरीते जीवात्मा जे ते मायानां चोवीस तत्त्वोमां लुब्ध थइ गयो छे, अने जीवने विषे मानीता भाववडे करीने माया रही छे, ते मायाने महाकारण कहे छे, ते मायाए करीने प्रकृतिना कार्यमां उत्पत्ति, स्थिति अने प्रलयवडे करीने जीवात्मा जे ते जन्ममृत्युने पामे छे, माटे तत्त्वोने नाशे करीने पोताने मृत्यु माने छे. अने तत्त्वने उपजवे करीने जन्म माने छे. माटे जीवने ज्यां सुधी अज्ञान छे त्यां सुधी भ्रांतिरूप जन्ममृत्यु टळतुं नथी.

जेम स्वप्नमां वाघे ग्रह्यो होय ते ज्यां सुधी स्वप्नमांथी मूकाय नहीं त्यां सुधी भ्रांति रहे छे. पण ज्यारे जागे त्यारे जाणे वाघज मुद्दल नथी ! तेम अज्ञान छे त्यां सुधी जीवने जन्ममृत्युरूप भ्रान्ति टळती नथी अने ज्यारे ज्ञानरूपी जाग्रत अवस्थाने पामे छे त्यारे जाणे जे मुद्दल जन्म मृत्यु हतुं ज नहीं, अने एम जाणे जे 'ए तो मने अमथी ठाली भ्रान्ति हती,' माटे ज्ञान जरूर पामवुं.

हवे ते ज्ञान थवानी रीत कहुं छुं, जे जड अने चैतन्य ए बेना अधार एवा जे परमात्मा ते जीवने प्रत्यक्ष मळे अने ते परमात्मा जे ते पोताना स्वरूपनुं ज्ञान करावे अने जीवने तेना आत्मानुं ज्ञान करावीने पंचविषयना रागने टळावे, अने स्थूळ, सूक्ष्म अने कारण ए त्रण देहथी जुदो पाडे त्यारे जीवने जन्म मृत्यु टळे अने तेनो मोक्ष थाय. पण ते विना माया तराय नहीं.

जेम सो हाथनो उंडो कूवो होय अने तेमांथी नीकळवानो क्यांय उपाय न होय अने ते कूवामां हजार पुरुष पड्या होय अने ते सूझे एवा बळवान होय तो पण तेमांथी एनी मेळे एके जणो नीकळी शके नहीं अने जो कोइ एक जणो कूवानी बहार होय तो ते पुरुष हजारो जणाने

उपरथी दोरडुं मेलीने काढे तो नीसरे (नीसरी शके) पण ते विना नीसरे नहीं तेम मायारूपी सो हाथनो उंडो कूवो छे. ते कूवामां मनुष्य देव, ब्रह्मादिक सर्वे जीव प्राणिमात्र पड्या छे. ते देव ब्रह्मादिक अने प्रकृतिपुरुष सुधी कोइ पोतानी मेळे नीसरवाने समर्थ नथी. माटे माया रूपी कूवाथी बहार कहेतां मायापर एवा जे परमात्मा ते प्रगट थइने ज्ञानरूपी दोरडे करीने काढे त्यारे मायारूपी कूवामांथी जिव नीसरे. कहेतां मायाने तरीने जीव जे ते ब्रह्मरूप थाय. पण ते विना जीवने माया तरवानो बीजो कोइ उपाय नथी.

हवे ते मायाथी पर थवानी रीत कहीए छीए. जे आ जीव जे ते पोताना स्वरूपना अज्ञाने करीने पृथ्वीमां पृथ्वीरूप थइ गयो छे कहेतां हाड, मांसादिकनो जे स्थूळ देह ते हुं छुं एम माने छे पछी ते जीवने देहथी जुदो पाडवाने अर्थे सत्पुरुष जे ते जळनुं ज्ञान करावे छे. जे पृथ्वी तो जळ थकी थइ छे अने पाछी जळमां लय पामशे. त्यारे जीव जे ते पृथ्वीनो त्याग करीने जळमां प्रवेश करे छे. अने जळने पोतानुं रूप माने छे. अने पृथ्वीनो जळने विषे लय करीने जळाकार दृष्टिने पामे छे. पछी तेने अग्निनुं ज्ञान करावे छे. त्यारे जळ जे ते अग्निमां लय पामे छे. पछी जीव जे ते जळना अभिमानने मुकीने अग्निमां प्रवेश करे छे अने अग्निने पोतानुं रूप माने छे. पछी तेने वायुनुं ज्ञान थाय छे त्यारे अग्नि जे ते वायु-थकी थयो हतो ते पाछो वायुमां लय पामे छे. त्यारे जीव जे ते अग्निनो त्याग करी अने वायुमां प्रवेश करे छे, अने वायुने पोतानुं रूप माने छे. अने पछी तेने आकाशनुं ज्ञान थाय छे जे वायु पण आकाशमां लय पामी जाय छे, अने जीव जे ते आकाशनी दृष्टिने पामे छे त्यारे तेने पृथ्वी आदिक चार भूत दृष्टिमां आवता नथी अने तेनी दृष्टिमां एकलो आकाश ज आवे छे. अने ते आकाशने पोतानुं रूप माने छे.

पछी तेने अहंकारनुं ज्ञान थाय छे त्यारे आकाश जे ते अहंकार थकी थयो हतो ते तेमां लय पामे छे. केम के जेमांथी जे उपज्युं होय तेमां तेनो पाछो लय थाय छे. माटे जीव जे ते आकाशनो त्याग करीने अहंकारमां प्रवेश करे छे, अने ते अहंकारने पोतानुं रूप माने छे. पछी तेने महत्तत्वनुं ज्ञान थाय छे त्यारे अहंकार जे ते महत्तत्वमां लय थइ जाय छे. त्यारे जाणपणारूप जे जीवात्मा ते महत्तत्वमां प्रवेश करे छे अने महत्तत्वने पोतानुं रूप माने छे अने पछी तेने प्रधानपुरुषनुं ज्ञान थाय छे त्यारे महत्तत्व जे ते प्रधानपुरुषने विषे लय पामे छे, अने जीवात्मा जे ते प्रधानपुरुषमां प्रवेश करीने तेने पोतानुं रूप माने छे. अने पछी तेने प्रकृतिपुरुषनुं ज्ञान सत्पुरुष जे ते करावे छे त्यारे प्रधानपुरुष जे ते प्रकृतिपुरुषने विषे लय पामे छे अने जाणपणारूप आत्मा जे ते प्रकृति-पुरुषमां प्रवेश करीने तेने पोतानुं स्वरूप माने छे. अने तेने पछी अश-रीररूप एवुं जे अक्षरब्रह्म तेनुं ज्ञान थाय छे त्यारे अष्टावरण जे प्रकृतिनुं कार्य पिंड, ब्रह्मांड ते सर्वे लय थइ जाय छे. अने एकली चैतन्य, निराकार व्यापक दृष्टि रहे छे, अने ते अक्षरने पोतानुं रूप मानीने अखंड स्थितिने पामे छे. अने जन्म-मरणथी रहित थाय छे. अने एने "सर्वं खल्विदं ब्रह्म नेह नानास्तिकिंचन" ॥ ए श्रुतिनो अर्थ तथा तत्त्वमस्या-दिक महावाक्यनो अर्थ पण पूरो थइ रह्यो छे. अने तेने निर्बीज सां-ख्य अने निर्बीज योगनुं ज्ञान सिद्ध थयुं जाणवुं.

हवे सबीज सांख्य अने सबीज योगनुं ज्ञान कहीए छीए. जे निर्बीज सांख्य अने निर्बीज योगे करीने पिंड ब्रह्मांडादिकना आकार तथा जीव, ईश्वर अने पुरुषादिकना जे आकार ते सर्वेनुं निराकरणपणुं करीने पोताना आत्माने शुद्ध, चैतन्य, निराकार, व्यापक, जाणीने अ-

क्षरब्रह्मने विषे एकत्वपणुं करीने तेमां दृढ स्थिति पामीने पछी ते अक्षर-ब्रह्म निराकार, एकरस, चैतन्य, तेना आधार एवा जे परब्रह्म परमात्मा दिव्यमूर्ति भगवान तेने जाणीने ते मूर्तिनुं अक्षरने विषे ध्यान करवुं. ते ध्यान शा सारू करवुं ? तो साकार मूर्तिना आधार विना चैतन्य, ब्रह्म, निराकार पणे अद्धर पद्धर रहेवातुं नथी. अने अनादि मूळ अक्षर-ब्रह्म छे ते पण दिव्यमूर्ति एवा जे परब्रह्म परमात्मा तेना अंगनो प्रकाश छे. अने जीवमात्रनुं व्यतिरेक मूळस्वरूप अक्षरब्रह्म छे. पण ते जीवने अनादिनुं अज्ञाने करीने मायानुं आवरण छे. तेने करीने अक्षरथी जीव जुदा रह्या छे. अने ज्यारे ज्ञाने करीने मायानुं आवरण टळे छे त्यारे अक्षर ब्रह्मरूप थइने अक्षरातीत परब्रह्म परमात्मा दिव्यमूर्तिने साक्षात्कार देखे छे. पछी तेने तो दिव्यमूर्ति विना बीजुं कांइ भासतुं ज नथी. माटे ते मूर्तिनुं अखंड ध्यान कर्या करे छे. केम के तेनी दृष्टिमां भगवाननी मूर्ति विना पिंड ब्रह्मांड आदिक कोइ आकार रहेतो नथी. अने एक भगवानने ज देखे छे. अने एवा ज्ञानने पामीने सिद्ध थयो एवो जे मुक्त ते देहनो त्याग करीने अक्षरधामने पामे छे. अने ते पाछो कोइ काळे जन्मने धरतो नथी.

ते एवुं ज्ञान क्यारे थाय छे ? तो ए अक्षरना आधार एवा जे अक्षरातीत परमात्मा भगवान ते कृपा करीने अनंत जीवोने महा सुखीया करवा सारु पोताना सत्य संकल्पे करीने आ पृथ्वीउपर मनुष्यदेह धारण करीने जीवने ज्ञान आपे छे त्यारे पूर्वे कह्युं एवुं ज्ञान थाय छे. पण ते विना बीजा कोइ देव, ब्रह्मा अने प्रकृतिपुरुषादिक थकी तथा पोतानी मेळे एवुं ज्ञान थाय नहीं. केम के देव ब्रह्मादिक तो सर्वे मायाना पडदामां रह्या छे अने ब्रह्म अने परब्रह्म तो मायाथी पर छे. माटे

छे. ए पांच ज्ञान इन्द्रियोनां लक्ष कह्यां. हवे कर्मेन्द्रियनां लक्ष कहुं छुं. वाणीए करीने बोलवारूप कर्म थाय छे. हाथे करीने लेवादेवारूप कर्म थाय छे, पगे करीने जवा आववारूप कर्म थाय छे, शीष्ण (उपस्थ) ए करीने वीर्य, मूत्रादिक त्याग करवारूप कर्म थाय छे अने गुदा (पायु) इन्द्रिये करीने मळादिक त्याग करवारूप कर्म थाय छे; ए पांच कर्मेन्द्रियोना लक्षण कह्यां. (९) हवे पांच तन्मात्रानां (विषयनां) लक्षण कहुं छुं. शब्द जे ते अर्थ मात्रनो आश्रय छे अने व्यवहार मात्रनो कारण छे अने बोलनारानी जाति अने स्वरूप तेनो जणावनारो छे अने शब्दने आकाशने विषे रहेवापणुं छे अने आकाशनी तन्मात्रा छे. अने श्रोत्र इन्द्रिये करीने ग्रहण करवामां आवे छे; हवे स्पर्शनुं लक्षण कहुं छुं. स्पर्श जे ते वायुनी तन्मात्रा छे अने तेने विषे कोमळपणुं, कठणपणुं, शीतळपणुं, उष्णपणुं अने त्वचाए करीने ग्रहण करवापणुं, ए स्पर्शनुं लक्षण छे. हवे रूपनुं लक्षण कहुं छुं. रूप जे ते पदार्थ मात्रना आकारने जणावी देवापणुं अने ते पदार्थने विषे गौणपणे रहेवापणुं अने पदार्थनी रचना करीने परिणामपणुं अने "तेज" तत्वनुं तन्मात्रापणुं अने चक्षु-इन्द्रिये करीने ग्रहण करवापणुं, ए रूपनां लक्षण छे, हवे रसनुं लक्षण कहुं छुं—रस जे ते मधुरपणुं, तीखापणुं, खारापणुं, खाटापणुं, कडवापणुं, कसायेलापणुं, (कोवाइ गयापणुं) गळया अने चीकणापणुं, अने जळनुं तन्मात्रापणुं, अने जिह्वा इन्द्रिये करीने ग्रहण करवापणुं, ए रसनां लक्षण छे, हवे गंधनुं लक्षण कहुं छुं—गंध जे ते सुगंधपणुं, दुर्गंधपणुं, पृथ्वीनुं तन्मात्रापणुं, अने नासिका इन्द्रिये करीने ग्रहण करवापणुं, ए गंधनां लक्षण कह्या. (१०) हवे पांच भूतनां लक्षण कहुं छुं—पृथ्वी जे ते जीव मात्रने धारण करवापणुं लोकरूपे करीने स्थानपणुं, अने आकाश आदिक चार भूतनुं विभाग करवापणुं, अने समग्र भूत प्राणी मात्रना शरीरनुं

प्रगट करवापणुं, ए पृथ्वीनां लक्षण कह्यां, हवे जळ ते पृथ्वी आदिक द्रव्यनुं पिंडी करवापणुं, पदार्थनुं कोमळ करवापणुं, भीनुं करवापणुं तृप्त करवापणुं, प्राणी मात्रने जीवाडवापणुं, तापने टाळवापणुं, अने तृषानी निवृत्ति पमाडवापणुं, अने वहुपणुं, ए जळनां लक्षण छे. हवे तेज जे ते प्रकाशपणुं, अन्नादिकने पचाववापणुं, काष्ट अने हुत (अग्नि) द्रव्यादिकनुं ग्रहण करवापणुं, टाढने हरवापणुं, शोषण करवापणुं, क्षुधा अने तृषा, ए तेजना लक्षण छे. हवे वायु जे ते वृक्षादिकने कंपाववापणुं, तृणादिकने भेगा करवापणुं, पांच विषय (शब्द, स्पर्श, रूप, रस अने गंध) तेने श्रोत्रादिक पांच ज्ञानेन्द्रियो प्रत्ये पमाडा देवापणुं, सर्व इन्द्रियोनुं आत्मापणुं ए वायुनां लक्षण छे, हवे आकाश जे ते समग्र जीव मात्रने आकाश देवापणुं, भूत प्राणी मात्रना देहना मांहे (अंदर) अने बहारना वहेवारनुं कारणपणुं, प्राण, इन्द्रियो, अंतःकरण अने जीव ए सर्वेनुं स्थानपणुं, ए आकाशनां लक्षण छे.

एवी रीते चोवीस तत्त्व, प्रकृति, पुरुष अने काळ, तेमना स्वरूपने जाणवा. पछे ते तत्त्वो जे ते परमेश्वरनी इच्छाए पहेर्यां थकां पोतपोताना अंशे करीने ईश्वर अने जीवना देहने सर्जता हवा. तेमां ईश्वरना देह जे वैराट, सूत्रात्मा, अने अव्याकृत; अने जीवना देह जे स्थुळ, सूक्ष्म अने कारण छे अने वैराट नाम जे ईश्वर तेना देहनी द्विपरार्ध काळनी आयुष्य छे. अने ते वैराटपुरुषना एक दिवसमां चौद मन्वन्तर थाय छे. ते जेवडो एनो दिवस छे तेवडी ज एनी रात्री छे. अने ज्यां सुधी एनो दिवस होय त्यां सुधी त्रिलोकनी स्थिति रहे छे. अने ज्यारे एनी रात्री पडे छे त्यारे त्रण लोकनो नाश थाय छे. तेने निमित्तप्रलय कहे छे. अने ज्यारे वैराट पुरुषनो द्विपरार्ध काळ पूरो थाय छे त्यारे वैराट देहनो सत्यादिक लोके सहित नाश थाय छे अने महत् आदिक

जे चोवीस तत्त्व अने प्रधानपुरुष ते सर्वे प्रकृतिने विषे लय थाय छे. तेने प्राकृत प्रलय कहे छे. अने जे प्रकृति छे ते पुरुषना एकदेशने विषे लय थइ जाय अने ते पुरुष जे ते ज्ञान पामीने प्रकृतिनो त्याग करीने अक्षर ब्रह्मरूप थइने पुरुषोत्तम भगवाननी सेवामां रहे तेने आत्यन्तिक प्रलय कहे छे अने तेने ज्ञानप्रलय कहेवाय छे. अने देव, दैत्य अने मनुष्यादिकना देहनो जे क्षण क्षण प्रत्ये नाश थाय छे तेने नित्यप्रलय कहेवाय छे. एवी रीते विश्वनी उत्पत्ति अने प्रलय थाय छे. तेने जे जीव जाणे तो तेने संसारने विषे वैराग थाय छे. अने मायानां बंधन थकी मुकाइने भगवानने विषे तेने भक्ति थाय छे अने तेनो मोक्ष थाय छे.

हवे एवुं ज्ञान क्यारे थाय छे? तो ज्यारे प्रगट भगवान पोते पोताना श्रीमुखे ज्ञान आपे तथा प्रगट भगवान थकी निर्वासनिक थया होय एवा जे एकान्तिक तत्ववेत्ता, पंचविषयना त्यागी संत तेना थकी एवुं ज्ञान थाय छे. पण ते विना विषयनी वासना वाळा थकी तथा एकला शास्त्रने वांचवे सांभळवे करीने एवुं ज्ञान नथी थतुं. अने एवी रीतना ज्ञान विना जीवनो मोक्ष पण थाय नहीं. ए सिद्धांतवार्ता छे."

इति श्रीमुख सिद्धांत ५७ समाप्त।



५८ विषयः— अविनाशी अने नाशवंत लाभ

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः—संवत १९१६ना श्रावण वदि ५ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री भावनगर मध्ये जोषी धनजी जादवजीने घेर आथमणा वारनी मेडी उपर गादी तकिया नखावीने ढोलिया उपर विराजमान थया हता. सर्वे जरीयानी वस्त्र धारण कर्यां हतां पुष्पना आभूषणो सर्वे अंगमां शोभी रह्यां हतां. केसरनी आड्य,

(अर्चा) अने कंकुनो चांदलो कर्या हता. अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देशदेशना हरिभक्तोनी सभाभराइने बेठी हती. पछे ते धनजीनी मातुश्री माणेकबाए भगवाननी पूजा करीने पोते वर्तमान लीधा अने भगवाननो दृढ आशरो कर्यो.

प्रश्नः—पछे महाराज बोल्या जे—"सर्वे सांभळो एक वार्ता करीए छीए जे आ जगतने विषे मनुष्यने बे प्रकारनो लाभ छे.तेमां एक अविनाशी लाभ छे अने एक नाश थइ जाय एवो लाभ छे तेमां अविनाशी लाभ ते कयो ? तो पोताने सत्पुरुषनो समागम थाय अने ते समागमे करीने पोताने आत्मा परमात्माना स्वरूपनुं ज्ञान थाय तथा पोताने महादुःख-नी देनारी, जन्म-मृत्यु, गर्भवास अने चोराशीमां रखडावनारी जे पंच-विषयनी वासना ते थकी निवृत्ति पमाय कहेतां जगतनी वासना टळी जाय. तथा इन्द्रियो पोताने स्वाधीन थाय. तथा मन वश थाय तथा निर्वासनिकपणे रहीने प्रत्यक्ष भगवाननुं भजन, स्मरण, तथा कीर्तन, सेवा करवी तथा प्रत्यक्ष भगवान अने ते भगवानना संत तेनुं दर्शन थाय, ते सर्वे अविनाशी लाभ छे. अने अलौकिक दुर्लभ लाभ छे.

अने हवे असत्य लाभ ते कयो ? तो आ जीवने मायिक पदार्थजे धन, माल, गाम, गरास, स्त्री, छोकरां, सगा, कुटुंबी, घणांक मळे ते सर्वे मिथ्या लाभ छे. अने ते पदार्थने मळवे करीने थयो जे जीवने हरख ते पण मिथ्या हरख छे. अने नाशवंत लाभ छे. अने ते हरख पण नाशवंत छे. केम के ते पदार्थ अंते एक दहाडे जरूर नाश थइ जशे. अने कदापि ते पदार्थ पांच दहाडा रह्या तोपण पोताने तो एक दिवस देह मुकीने जरूर जवुं पडशे त्यारे पण कोइ पदार्थ भेगां नहीं आवे. माटे आ लोकमां मायिक पदार्थनो जेटलो जेटलो लाभ छे ते सर्वे नाशवंत लाभ छे,, अने वळी ते मायिक पदार्थना लाभनी केडे (पाछळ) अपार दुःख

रह्यां छे. केमके ते पदार्थ प्राप्त थाय त्यारे जीव राजी थाय छे, अने ते पदार्थने तो नाश थवानो धर्म छे, ते पाछुं नाश थाय त्यारे ते जीवने तेनुं दुःख थाय छे. तेवी रीते अनंत पदार्थनां अनंत दुःख थया करे छे, अने ते एवी रीते मायिक पदार्थ जीवने घणाक फेरा (घणी वखत) प्राप्त थया छे अने पाछा नाश पामी गया छे. केम के जीवे ज्यां ज्यां चोराशीमां जन्म धर्या छे, त्यां त्यां स्त्री, छोकरां, कुटुंब परिवार, प्राप्त थया छे अने पाछा नाश पामी गया छे अने वळी मनुष्यदेह पामीने प्रभुनी भक्ति नहीं करे तो ते चोराशीमां जे जे योनिमां जाशे त्यां त्यां सहेजे ज वगर महेनते स्त्री छोकरां मळशे. केमके कूतरानो अवतार आवशे त्यारे जेटली कूतरीयो ते सर्वे तेनी ज स्त्रीओ छे, अने जो कुतरीनो अवतार आवशे तो जेटला कुतरा छे तेटला तेना धणी थशे एवी रीते हाथी, घोडा, गधेडा, ऊंट, पाडा बोकडा (बकरा) आदिक सर्वे जातने विषे अनंत स्त्रीपुरुष ते ते जातमां रूपवान, जोबनवान, परस्पर जीवने अनंत मल्या छे अने वळी मळशे, पण तेने करीने जीवने लेश मात्र तृप्ति थइ नथी अने तृप्ति थशे पण नहीं. माटे जेने काळ खाइ जाय तेवो जे लाभ ते सर्वे मिथ्या लाभ छे.

एम समजीने मनुष्यदेहने पाम्यो एवो जे जीव तेणे तो मिथ्या लाभनी आशाने मूकीने अविनाशी एवो जे पोताना आत्माना मोक्षनो लाभ तेने सावधान थइने लेवो, अने नाशवंत लाभने विषेथी वृत्तिओने पाछी वाळीने भगवानना स्वरूपने विषे जोडी देवी. कहेतां काने करीने भगवाननी कथा सांभळवी, आंखे करीने भगवाननुं रूप जोवुं, रसनाए करीने भगवानना गुण गावा. एवी रीते इन्द्रियो, अंतःकरणने भगवानना संबंधने पमाडीने, पोताने दृढ पणे धर्मविषे रहीने परमेश्वरनी निष्काम भक्ति करवी, अने ते निष्काम भक्तिए करीने जीवनो मोक्ष

थाय छे. माटे दुर्लभ एवो जे मनुष्यनो देह ते परमेश्वरे कृपा करीने भगवान भजवासारु आप्यो छे ते मनुष्यदेहने नाशवंत अने असत्य एवा जे आ जगतनां सुख तेमां वृथा खोवा नहीं, अने मनुष्यदेहे करीने तो परमेश्वर भजीने पोताना आत्माने जन्म मरणना दुःख थकी मूकावीने भगवानना अक्षरधामने पामवुं अने एवी रीते जे पोताना आत्माने मायाना बंधन थकी मुकावे छे तेने ज मनुष्यदेह आव्यो प्रमाण छे, अने जे एवी रीते पोताना आत्मानुं सारूं नथी करतो अने केवळ पंचविषयमां लोलुप थइ रहे छे, तेने तो पामर जाणवो अने ते तो केवळ पशुतुल्य छे, माटे पशुपणांनो त्याग करीने मनुष्यदेहे तो भगवाननुं भजन करवुं, अने वळी आ समे तो पोताने मनुष्यनो देह अने कल्याणकारीनो समागम प्राप्त थयो छे ते तो अतिशय दुर्लभ लाभ छे.

माटे सावधान थइने कल्याणना खपवाळाने एवो ठराव करवो जे " आ देहे करीने तो एक भगवानने जे भजवा पण नाशवंत अने दुःखरूप अने जन्म मृत्युने पमाडनारा एवा जे मायिक पंचविषय तेने नथी भोगववा, अने निर्वासनिकपणे रहीने जेवा तेवा अन्नवस्त्रादिके करीने देह निर्वाह करवो छे, पण सारा विषयने तो भोगववा ज नथी. अने भगवानभजीने भगवानना धाममां जवुं छे." एवो ठराव कल्याणना खपवाळाए करवो–अने वळी एम विचार करवो जे " मायिक पंचविषयना पदार्थने भोगववे करीने हुं जे आत्मा ते सुखी थाउं एवो नथी. केम के विषयना पदार्थ तो नाशवंत छे अने हुं आत्मा तो अविनाशी छुं. माटे नाशवंत पदार्थ अविनाशीने शुं सुख करे ? जेम रांक होय ते राजाने शुं सुख करे ? तेम मायिक पदार्थ ते आत्माने शुं सुख करे ? केम के आत्मा तो पोते जे सुखरूप छे, अखंडानंद छे अने ते आत्माज पोतानुं स्वरूप छे.

एम समजीने आत्मा रुप थइने पछे अपरमीत छे महिमा जेनो एवा जे प्रत्यक्ष परमात्मा भगवान तेने अखंड पोताना आत्माने विषे जाणपणांमां मूर्ति जेवी वस्त्र आभूषणादिके सहित देखाय छे तेवीने तेवी ते मूर्तिने धारीने ते भगवाननी अखंड स्मृतिए सहित भजन स्मरण कर्या करवुं. ए ज मनुष्यदेहनो परम लाभ छे. अने ते विनाना बीजा मायिक पदार्थना लाभ छे ते तो केवळ मिथ्या लाभ छे अने जीवनुं उलटुं भूंडु करे एवा अने बंधन करे एवा मायिकलाभ छे. माटे तेने तो उलट्या (उलटीना) अन्ननी पेठे त्याग करीने एक भगवाननुं भजन करवुं, अने भगवाननो महिमा समजीने भगवानना चरणारविंदने विषे पोताना मनने दृढ करीने राखवुं, जेम वज्रनी पृथ्वीमां वज्रनी खीली चोडी होय ते कोइ रीते उखडे नहीं. तेम पोताना मननी वृत्तिने भगवानना चरणारविंदमां चोंटाडी देवी, अने एवी समजणने पाम्यो जे भक्त ते तो सर्वे सुखने पामी रह्यो छे. अने तेने कोइ लाभ पामवो बाकी रह्यो नथी. माटे ते लाभने लेवा सारु संतनो समागम अखंड राखवो."

इति श्री मुखसिद्धांत ५८ समाप्त ॥

---

५९ विषय :—सत्पुरुषने विषे आत्मबुद्धि

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः—संवत् १९१६ ना भादरवा सुदि १० ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री भंडारीया मध्ये भक्त शाह हीरा बोघाने घेर आथमणे बार ओरडानी ओसरीमां सांजने समे गादी तकीया बिछावेला ढोलिया उपर बिराजमान थया हता. सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां. पुष्पनां आभूषणो सर्वे अंगमां धारण कर्या हता. अने कंकुनो चांदलो कर्यो हतो. पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देशदेशनाहरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछे महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान बोल्या जे–"जीवने अतिशय दुर्लभ लाभ ते अतिशय सुलभ केम थाय ?

तो जीवने प्रत्यक्ष भगवान अने भगवानना संत मळे अने ते भगवान अने प्रत्यक्ष भगवानना संत तेने विषे जीवने आत्मबुद्धि थाय, तो ते जीवने अति दुर्लभ जे मोक्षनो लाभ ते अतिशय सुलभ थाय छे. अने ते आत्मबुद्धि केवी करवी ? तो जेवी देहने विषे अने देहना संबंधीमां जीवने आत्मबुद्धि थइ छे तेवी भगवान अने भगवानना संतने विषे आत्म बुद्धि करवी, तो तेने मोक्षना मार्गमां कोइ विघ्न आवे ज नहीं. केम के जीवने जो देह अने देहना संबंधीमां आत्मबुद्धि थइ छे तो ते देहने अनंत रोग थाय तथा देह पोतानो काळो, लुलो, बहेरो बाडो होय तो पण ते देहनो लगारे पण अवगुण आवे नहीं अने बीजानो देह सारो होय पण तेना करतां पोतानो देह पोताने वहालो लागे छे. ते शाने करीने वहालो लागे छे ?

–तो पोताना देहने विषे जीवने आत्मबुद्धि थइ छे माटे वहालो लागे छे. अने वळी देहना संबंधीने विषे जीवने जो आत्मबुद्धि थइ छे तो तेनो पण जीवने अवगुण नथी आवतो. केम के पोतानो दिकरो होय अने ते मुरख होय तथा कुफेली होय तो पण पोतानुं गाम, गरास, धन माल, घर, खोरडां, घरेणां, वस्त्रादिक सर्व पदार्थ तेने आपे छे. तथा पोतानो दिकरो कांइ जारकर्म करी आव्यो होय तो तेना छाना दंड भरे छे अने तेनी फजेती थवा देता नथी. अने तेना अवगुण पण ले नहीं. केम के तेने दिकराने विषे आत्मबुद्धि छे.

तेम कल्याणना खपवाळाने भगवान अने भगवानना संतने विषे आत्मबुद्धि करवी. अने जेने भगवान अने भगवानना संतने विषे

आत्मबुद्धि थइ तेने अतिदुर्लभ जे मोक्षनो लाभ ते अतिशय सुलभ प्रमाणे प्राप्त थाय छे. जेम समुद्र तरवो ते अति कठण छे पण जो वहाणमां बेसी जाय तो सहेजमां समुद्र तरी जाय तेम मोक्ष थवो ते तो जप, तप आदिक अनंत साधन करे तो पण मोक्ष थाय नहीं. एवो मोक्ष महा दुर्लभ छे. पण जो वहाणरूप एवा जे प्रत्यक्ष भगवान अने भगवानना निर्वासनिक संत तेने विषे जीवने आत्मबुद्धि थाय तो ते जीवनो सहेजमां मोक्ष थाय छे.

हवे ते आत्मबुद्धि थवानो शो उपाय छे? तो जेम देह अने देहना संबंधीमां आत्मबुद्धि थइ छे ते तो तेना भेगा अखंड रहेवाने संबंधे करीने तेने विषे आत्मबुद्धि थइ छे तेमज भगवान अने भगवानना संतनो अखंड संबंध राखे तो तेने भगवान अने भगवानना संतने विषे आत्मबुद्धि थाय छे.

--अने ते भगवान अने भगवानना संतनो संबंध केवी रीते राखवो? तो काने करीने भगवान अने भगवानना संतना शब्द हेते करीने सांभळवा, आंखे करीने भगवान अने भगवानना संतना हेते सहित दर्शन करवा, जीभे करीने भगवान अने भगवानना संतना गुण गावा, तथा भगवानने धरावेलो प्रसाद जमवो, हाथे करीने भगवान अने भगवानना संतनी सेवा करवी तथा बे हाथ जोडीने माथुं नमावीने, भगवान अने भगवानना संतने, पगे भावे सहित लागवुं, पगे करीने भगवान अने भगवानना संत पासे चालीने दर्शन करवा जवुं, मने करीने (मनथी) भगवान अने भगवानना संतने प्रसन्न करवाना संकल्प करवा, चित्ते करीने हालता चालता भगवान अने भगवानना संतनुं चिन्तवन करवुं, बुद्धिए करीने प्रत्यक्ष भगवान अने भगवानना संतना स्वरूपनो दृढ पणे निश्चय करवो अने अहंकारे करीने भगवान अने भगवानना संतना

दासपणानुं अभिमान धरवुं, जे "हुं भगवान अने भगवानना संतनो दास छुं." एवी रीते इन्द्रियो अंतःकरणे करीने भगवान अने भगवानना संतनो अखंड संबंध राखे तो तेने भगवान अने भगवानना संतने विषे दृढ पणे आत्मबुद्धि थाय छे. अने जेने भगवान अने भगवानना साधुने विषे आत्मबुद्धि थइ ते जीवनो साक्षात्कार मोक्ष थाय छे. अने तेने पछी मोक्षना मार्गमां कोइ विघ्न आवतुं नथी. ते भागवतमां कह्युं छे:–"महत् सेवां द्वारमाहुर्विमुक्ते, तमो द्वारंयोषितांसंगि संगम्" ॥ अर्थ:–"जेने भगवान अने भगवानना साधुने विषे आत्मबुद्धिए करीने सेवा प्राप्त थइ ते जीवनो मोक्ष थाय छे अने स्त्रीना संगीनो जे संग ते नरकनो मार्ग छे." माटे भगवान अने साधुने विषे जे आत्मबुद्धि करवी एवो कोइ बीजो जीवने लाभ नथी. केम के जेने जेनी साथे आत्मबुद्धि थाय छे तेना गुण तेमां आवे छे. तेम भगवान अने भगवानना संतने विषे जेने आत्मबुद्धि थाय छे ते जीव तो ब्रह्मरूप थाय छे. माटे भगवानना भक्त जेने थवुं होय अने पोताना आत्माने जन्म-मृत्युना दुःख थकी मुकाववो होय तेने तो सर्वे मायिक एवा जे पंचविषयोनां सुख तेनी आशाने मुकीने एक (फक्त) भगवान अने भगवानना संतने विषे दृढपणे सर्व प्रकारे प्रीति करवी पण कोइ लोकलाजमां तथा मिथ्या सुखमां लोभावुं नहीं. केम के लोकनी लाज अने संसारनां सुख तो केवळ मिथ्या छे अने नाशवंत छे. माटे तेमां लोभावुं नहीं. अने अलौकिक लाभ जे भगवान अने भगवानना संतनो संबंध तेने अतिशय जतन करीने राखवो. अने जगतना सुख थकी निर्वासनिक थवुं अने प्रत्यक्ष भगवान अने भगवानना एकान्तिक साधु, जे सर्व प्रकारे पंचविषयना त्यागी तेने विषे कल्याणना खपवाळाए मन, कर्म, वचने जोडाइ जवुं. अने जगतना सुखथी अतिशय वैराग पामीने

पोताना इन्द्रियो अंतःकरणनी वृत्तिओने भगवाननी मूर्तिने विषे जोडी देवी अने जगतना सुखने तो उल्टीना अन्न जेवा जाणवा. एम समजीने जे भगवाननुं भजन करे छे तेना भाग्यनो पार नथी. अने एवा भक्तने अने भगवानने कांइ अंतराय रहेतो नथी. अने एवा भक्तना गुण तो मोटा ब्रह्मादिक पण गाय छे."

इति श्रीमुख सिद्धांत ५९ समाप्त ।

६० विषय :—देहना सुख माटे दाखडा

श्री हरिकृष्णाय नमोनमः—संवत् १९१६ ना भादरवा सुदि ११ ने दिवस महाराज श्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्री भंडारीया मध्ये महेता गांडा वजाने घेर उत्तरादे बार ओरडानी ओसरी आगळ फळीमां ढोलीया उपर गादी तकीया नखावीने ते उपर विराजमान थया हता. सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां. मस्तके सोनेरी मोटी पाघ बांधी हती. गुलाब, मोगरो अने जाइ पुष्पनां आभूषणो धारण कर्यां हतां. ललाटने विषे केसरनी अर्चा अने ककुंनो चांदलो कर्यो हतो. अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देशदेशना हरिभक्तोनी सभा भराइने बेठी हती. अने साधु कीर्तन गाता हता.

पछे भगवान बोल्या जे—"कीर्तन रहेवा दो, अमे वार्ता करीए छीए. जे आ विश्वमां जीव छे ते अवश्य पोतानुं काम—जे भगवान भजवा तेने भूलीने जीव जे ते शुं काम करे छे?

—तो पोतानुं स्वरूप जे आत्मा तेने भूलीने पोतानुं रूप नथी एवो जे पंचभूतनो देह तेने हुं छुं एम मानीने ते देहने पाळवो अने तेना ज उपायमां सर्वे जीव प्राणीमात्र रात दहाडो तत्पर थइने मंड्या छे. अने ते मिथ्या देहना रक्षण सारु केवां केवां घरबार बनावे छे? अने

तेमां केवा केवा दाखडा (प्रयत्नो) करवा पडे छे ? अने ते देहना रक्षण सारु अन्न जोइए ते सारु पण केवा केवा उपाय जीव करे छे? तथा देहना रक्षणने अर्थे वस्त्र जोइए तेना सारु पण केटलीक युक्तिओ करे छे? तथा रसना इन्द्रियना स्वाद सारु गाय, भेंसने राखे छे अने तेनी रक्षा करवा सारु केटला कलेश करवा पडे छे ? अने गोळ, घी, खांड, साकर, आदिक अनंत प्रकारनो रस, तेना सारु पण जीव कोटान-कोटि दाखडा करे छे. अने त्वचाना स्पर्श सारु जीव जे ते स्त्रीनो गुलाम थाय छे. अने स्त्री छे ते त्वचाना स्पर्श सारु पुरुषनी दासी थाय छे. तथा नेत्र इन्द्रियना रूप सारु अनेक प्रकारना चित्र विचित्र, भात-भातना पदार्थना रंग बनावे छे. अने तेमां पण जीव केवा केवा दाखडा करे छे ? एवी रीते जीव जे ते खोटा देहना सुखने पामवा सारु कोटि कोटि उपाय करे छे अने तेने करीने जीव महा कष्टने पामे छे. तो पण तेमां जीव प्राणीमात्र मंड्या छे. पण तेमांथी कोइ जीव कायर थतो नथी. ते कीडीथी ते ब्रह्मा पर्यन्त देहना रक्षण (सुख) सारु ज मंड्या छे. अने अनंत प्रकारनी युक्तिओ करीने पृथ्वीमांथी विषयना पदार्थ रूपी धूळ उत्पन्न करीने जीव जे ते देहरूपी राफडा उपर नाखे छे. अने तेने करीने देहरूपी राफडो वृद्धि पामे छे. अने वळी देहरूपी उकरडो छे. तेमां विषयना पदार्थ-खान पानादिक रूप पुंजो (कचरो) नाख्या करे छे तेने करीने देहरूपी उकरडो वृद्धि पामे छे. अने वळी जीवमात्र छे ते शुं काम (कार्य) करे छे ? ते धूळमांथी धान उपजावे छे. अने पाछुं धानने खाइने धूळ करे छे.

तेवी रीते झांझवाना जळरूप जे सर्वे जगत तेने विषे जीव प्राणी मात्र जे ते महादुःखने भोगवे छे. पण पळमात्र कोइ जीव अंतरमां शान्ति पामता नथी. केम के जीव जे ते पोतानुं स्वरूप जे सुखरूप

तेने भूलीने मिथ्या देहना सुख सारु प्रकृतिना कार्यमां मोह पामीने महादुःखने भोगवे छे. पण तेमां कोइ काळे जीवने सुख थतुं नथी. अने घणुं करीने जीव जे ते तृष्णाए करीने महादुःख भोगवे छे अने देहनुं ज फक्त रक्षण करवुं होय तेने तो देहने जेवुं तेवुं अन्नमात्र जोइए अने जाडुं वस्त्र जोइए. तेने करीने (पण) देह रहे छे. पण जे खाटा खारा गळ्या, चीकणा आदिक रस ते देहने नथी जोइता अने देहने तो आहार मात्र जोइए छीए. अने खट रसे करीने आत्मा छे ते पण सुखी थाय एवो नथी. तथा बीजा हरेक मायिक पंचविषयना पदार्थ-एने करीने पण आत्मा सुखी थाय एवो नथी. अने आत्मा तो पोते ज सुखरूप छे. अने अविनाशी छे. पण आत्मा जे ते पोतानुं स्वरूप, अज्ञाने करीने, भूलीने पोतानुं रूप नथी एवो जे पंचभूतनो देह तेने "हुंपणुं" मानीने झांझवाना जळ जेवा शब्दादिक पंचविषयनां सुख तेने भोगववा जाय छे. पण तेने करीने तृप्ति थती नथी. केम के पंचविषयने विषे तो सुख जे ते लेशमात्र नथी. जेम झांझवाने विषे जळ एक टीपुं पण नथी. तेम विषयमां सुखनो छांटो पण नथी. अने ते विषयना सुखने पामवाना उपाय करे छे. तेमांथी तो उलटो महादुःखने ज पामे छे.

जेम स्वप्नमां कोइक सोनामहोरनुं भर्युं देघडुं देखाणुं. पछी ते देघडाने उपाडवा सारु खाटलानुं पांतर झालीने बहु बळ कर्युं ते बळे करीने झाडे फरी जवाणुं अने आंख पण उघडी गइ. पछी जागीने जोवे त्यां तो देघडुं न मळे अने झाडे फराणुं अने लुगडुं बगडी गयुं ते तो साचुं थयुं. तेम स्वप्नरूप एवो जे संसार तेने विषे देघडारूप पंचविषयनां सुख, ते सुखने जीव पामवानी इच्छा करे छे अने तेने पामवाना अनंत उपाय करे छे पण तेमां सुख तो रंच मात्र पण मळतुं नथी. पण ते विषय वासनाए करीने कर्यां जे पाप ते जीवने साचां थइने

वळगे छे. अने ते पापे करीने जन्म-मृत्यु, चोराशी अने यमपुरीनां महा दुःख भोगववां पडे छे. अने ते दुःखमांथी पाछो छूटको थतो नथी. एवी रीते जीव जे ते पोताना आत्मस्वरूपने भूलीने वहार दृष्टिए करीने देहना सुख सारु त्रिविधिना तापमां संतापने पाम्या करे छे.

माटे जेने प्रत्यक्ष भगवान अने भगवानना संतनो संबंध थयो छे तेने अज्ञानी जीवनी पेठे विषयना सुखसारु कलेशने पामवुं नहीं अने भगवानना भक्तने तो विषय थकी निवृत्ति पामवुं. अने पोताना आत्माना कल्याणने अर्थे तत्पर थवुं. अने सत्समागम करीने धर्म, ज्ञान, अने वैराग्य ने पामीने प्रत्यक्ष भगवानमी माहात्म्येसहीत भक्ति, सेवा, स्मरण, अखंड कर्या करवुं. अने मनुष्य देह पामीने भगवाननी भक्ति निष्काम भावे करवी. एज मनुष्यदेहनो उत्तम लाभ छे. अने जे भगवाननी भक्ति करे छे तेने ज मनुष्यनो अवतार आव्यो जाणवो. पण इन्द्रियोने आधीन थइने विषय भोगववा ते मनुष्यदेहनो लाभ नथी. अने विषय भोगवीने जे सुख माने छे ते तो पामर अने पशु जेवा जीव छे. पण जे भगवानना भक्त होय ते तो विषयने तुच्छ अने नरक जेवा जाणे ते भगवाननो खरो भक्त छे.

केम के भगवाननो भक्त होय ते तो एम जाणे जे–"मने साक्षात्कार भगवान अने भगवानना संत मळ्या छे. ते भगवान अने संत सर्व सुखना धाम छे. अने पोताना भक्तने (माटे) सर्वे सुखना दाता छे. अनंतकोटि ब्रह्मांडना पति छे. अने गौलोक, वैकुंठ, श्वेतद्वीप, ब्रह्मपुर ते सर्वे धामना अधिपति छे. अने जेना सुख आगळ देवादिक लोकना सुखने नरकतुल्य मोक्षधर्मने विषे कह्या छे. माटे एवा जे भगवान अने भगवानना संत तेने पामीने आ लोकनां जे दुःखरूप, नरकरूप अने नाशवंत एवां जे विषयनां सुख तेमां हुं शुं प्रीति राखुं?"

एम जाणीने ते जगतना सुखनी वासनानो त्याग करीने पोताना आत्मा-ने देहथी पृथक् (जुदो) जाणीने पोताना आत्माना साचा सगा एवा जे परमात्मा भगवान अने भगवानना संत पोताने मळ्या तेने विषे निष्काम भाव राखीने तेनी भक्ति करवी अने अविनाशी एवुं जे भग-वानना धामनुं सुख तेने पामवुं. एज मनुष्य देह पाम्यानो, उत्तम लाभ छे."

इति श्रीमुख सिद्धांत ६० समाप्त ॥

---

६१ विषय : जगतनी उत्पत्ति अने परमात्मानुं स्थान

श्री हरिकृष्णाय नमोनमः—संवत् १९१६ना भादरवा सुदी १२ ने दिवस महाराज श्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्री भंडारीया मध्ये दवे. शामजी नरसिंहरामने घेर उगमणे वार ओरडानी ओसरीमां ढोलिया उपर विराजमान थया हता. सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां. मस्तक उपर कसुंबल फेंटो बांध्यो हतो अने कंठने विषे पुष्पना हार धारण कर्या हता. ललाटनेविषे कंकुनो चांदलो कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने वेठी हती.

प्रश्नः—पछे महाराज बोल्या जे—"आ जगतना कर्ता ते कोण हशे?"

पछी ते गामना दरबार अभेसंगजीए कह्युं जे—"हे महाराज! तमे आ सर्वे जगतना कर्ता छो, एम अमे तो जाणीए छीए." पछी महाराज बोल्या जे—"जगतना कर्ता तो मायाथी पर एवा जे परमात्मा ते छे अने अमे तो माणस जेवा छीए" पछी वळी अभेसंगजीए कह्युं जे "जे मायाथी पर परमात्मा छे तेज तमे अनंत जीवोने ज्ञान आपीने माया-पर करवा सारु तमारी इच्छाए करीने मनुष्यना जेवा देखाओ छो पण तमे तो सदाय मायापर दिव्य मूर्ति छो. माटे तमेज जगतकर्ता छो."

प्रश्नः–पछे महाराज बोल्या जे ते " आ जगत केवी रीते थाय छे? ते कहो."

पछी तेनो उत्तर कोइथी थयो नहीं त्यारे पोते महाराज बोल्या जे– "लो अमे कहीए जे भगवान छे तेने अनंत शक्तिओ छे. ते शक्तिओद्वाराए पोतानी इच्छा प्रमाणे जगतनी उत्पत्ति करावे छे. ते उत्पत्तिने कहीए छीएः–

जेम खेडु खेतरमां दाणा वावे छे अने ते थोडाक दाणा वाव्या होय तेमांथी घणाक दाणा थाय छे. ते दाणा खेडु नीपजावतो जणाय छे, पण तेनो कर्ता सूर्य छे, केम के सूर्यना प्रकाशे करीने खेडु खेड करे छे. सूर्यना प्रकाशे करी खेडु बीज वावे छे, सूर्यना किरणे करीने आकाशमां जळ चडे छे, अने सूर्यवडे करी वरसाद थाय छे, अने छ ऋतुना भेद पण सूर्य वते (वडे) थाय छे. अने बीज उगवुं, वृद्धि पामवुं अने तेने फळ पाकवुं ते सर्वे सूर्य वते थाय छे अने तेमज अनंत औषधियो पण सूर्य वते पाके छे अने तेमांथी मनुष्य अन्नरूपी औषधि खाय छे अने ते सूर्यनी अग्निए करीने पेटमां पचे छे अने तेमांथी वीर्य थाय छे ते वीर्य जे ते सूर्ये करीने स्त्रीना उदरमां परिपक्वताने पामीने बाळक थइने जन्मे छे. एवी रीते सर्व सृष्टिना कर्ता सूर्य जणाय छे तो पण सूर्य कांइ करतो नथी. केम के सूर्य तो पोताना मंडळने विषे सदाय रह्यो छे.

तेम अक्षरातीत एवा जे मायाथी पर परमात्मा पुरुषोत्तमभगवान ते तो पोताना अक्षरधामने विषे दिव्यमूर्ति थका अनंत अक्षररूप मुक्ते वींटाणा थका अखंड विराजमान छे. ते भगवानने ज्यारे सृष्टि करवानी इच्छा थाय छे त्यारे अक्षर सामी दृष्टि करे छे. कहेतां पोतानो ज्ञानरूपी प्रकाश करे छे. पछी ते ज्ञानरूपी प्रकाशना कोइक देशने विषे अनंतकोटि माया

सवळ ब्रह्म कहेतां रागात्मक संकल्पेयुक्त एवा जे पुरुष घणाक लीन हता पछी अक्षर ब्रह्मरूप जे ज्ञान तेना प्रकाशवते करीने पुरुष जे ते जाग्रतने पामे छे अने पछी ते पुरुषनी इच्छाए करीने प्रकृति जागे छे. अने ते पुरुषप्रकृतिना संबंध थकी अनन्तकोटि प्रधानपुरुष थाय छे, अने ते प्रधान पुरुषथकी महत्तत्त्व थाय छे अने महत्तत्त्व थकी त्रण प्रकारनो अहंकार थाय छे. अने ते अहंकार थकी चोविस तत्त्व थाय छे. तेमां तामसाहंकार थकी पांच भूत अने पांच विषय थाय छे अने राजसाहंकार थकी दश इन्द्रियो थाय छे. अने सात्त्विक अहंकार थकी चार अंतःकरण अने चौद देवता थाय छे. अने ते चोवीस तत्त्वथकी वैराट थाय छे. अने ते वैराट थकी ब्रह्मा, विष्णु अने शिव थाय छे. अने ब्रह्मा, विष्णु, शिव थकी मरिच्यादिक देव थाय छे अने मरिच्यादिकथकी कश्यपादिक थाय छे अने कश्यपादिक थकी देव, दैत्य, मनुष्य, पशु, पक्षी, झाड, पहाड, वन, अने वेली आदिक सर्वे थाय छे, ते सर्वेना कर्ता एक परमेश्वर कहेवाय छे.

ते केवी रीते कर्ता कहेवाय छे? तो जेम अंग्रेज साहेब छे ते विलायतमां रह्यो थको कोइक चाकर राखीने आज्ञा करे छे. पछे ते चाकर जे ते साहेबनी आज्ञा लइने कलकत्तामां आवे छे पछी ते पण कलकत्तानो साहेब कहेवाय छे अने ते कलकत्तावाळा साहेबनी आज्ञाए करीने तेनो चाकर मुंबइमां आवे छे, अने ते पण साहेब कहेवाय छे अने मुंबइवाळानी आज्ञाए करीने तेनो चाकर अमदावाद आवे छे, ते पण साहेब कहेवाय छेअने त्यांथी राजकोट आवे ते पण साहेब कहेवाय छे अने ते सर्वे पोतपोताना अखत्यारमां हुकम चलावे छे.

तेम पुरुषोत्तम भगवान तो सदाय अक्षरधाममां रह्या छे. ते तो जेम प्रथम कह्यो जे विलायतनो साहेब तेने ठेकाणे छे अने तेमनी पासे अखंड रहेनारा जे अक्षर ब्रह्मरूप मुक्त ते ढोलीयाना चाकरने ठेकाणे

छे. ते अक्षर ब्रह्मरूप मुक्तद्वाराए परमात्मा जे ते पुरुषने प्रेरणा करे छे ते पुरुष जे ते कलकत्ताना साहेबने ठेकाणे छे, ते जेम विलायतना साहेबनी आज्ञा विना बीजो कोइ साहेब कहेवाय नहीं. अने कोइनो हुकम रंच मात्र चाले नहि. तेम पुरुषप्रकृति जे ते अनंतकोटि ब्रह्मांडनी उत्पत्ति, स्थिति अने प्रलय करे छे ते अक्षरब्रह्मना प्रकाशवडे करीने करे छे पण अक्षरना प्रकाश विना पुरुषप्रकृति जे ते कांइ करवाने समर्थ नथी. जेम सूर्यनो प्रकाश थाय छे त्यारे रात्रीमां सूता होय ते सर्वे मनुष्य जागीने पोतपोतानो उद्यम करवा मंडे छे. पण सूर्यना प्रकाश विना कोइ उद्यम करी शकतुं नथी. तेम अक्षरना प्रकाशे करीने अनंतकोटि ब्रह्मांडनी उत्पत्ति एकलो पुरुष जे ते करे छे. जेम एक खेडुत होय ते अनंत कण-सलाने उपजावे छे. तेम एक पुरुष पण अनंतकोटि ब्रह्मांडने उपजावे छे.

ते जेम खेडु सूर्यना अजवाळे कणसला उपजावे छे पण सूर्यना प्रकाश विना खेडु कांइ करवाने समर्थ नथी. तेम पुरुष पण अक्षरना प्रकाश विना कांइ करवाने समर्थ नथी. अने ते अक्षरब्रह्मना प्रकाशक अने आधार ते प्रत्यक्ष परमात्मा छे. माटे सर्वे करता अने सर्वे कारण एक परमेश्वर छे. अने वळी कर्ता थका पोते तो कांइ नथी करता अने पोते तो पोतानुं अक्षर-ब्रह्मरूप धाम तेने विषे अखंड रह्या छे. अने पुरुषद्वाराए उत्पत्ति करावे छे. माटे भगवान अकर्ता छे अने एवा जे परमात्मा पुरुषोत्तम भगवान ते जीवोना कल्याणने अर्थे अने जगतनी उत्पत्तिने अर्थे अने एकांतिक धर्मना स्थापनने अर्थे अने अधर्मनो नाश करवाने अर्थे ब्रह्मांड ब्रह्मांड प्रत्ये अने युग युगने विषे पोतानी इच्छा मात्रे करीने मनुष्यदेहने देखा-डता थका अक्षरमां रह्या थका पृथ्वीमां हंमेश विचरे छे. अने अनंत जीवोने आत्यन्तिक ज्ञान आपीने मायापर करे छे. अने पोताना अक्ष-रधाममां स्थिति करावे छे एवा जे महा उपकार्य (उपकार मानवा) रूप

प्रत्यक्ष भगवान अने तेना संत तेनो जेने संबंध थयो छे अने जेना जीवमां प्रत्यक्ष भगवान अने भगवानना संतना स्वरूपनो निश्चय थयो छे ते तो सर्वाधार अने सर्वव्यापक एवुं जे अक्षरब्रह्म भगवाननुं धाम ते रूप थइ रह्यो छे. केम के अक्षरमां भगवान रह्या छे माटे जेने पंच-विषयनो त्याग करीने पोते देहथी जुदो आत्मा तेने पोतानुं रूप जाणीने प्रत्यक्ष भगवाननो दृढ निश्चय कर्यो छे तेना उरमां पण भगवान निवास करीने रहे छे. केम के ते तो अक्षररूप छे. माटे तेने विषे भगवान अ-खंड रह्या छे. माटे एवा निश्चयवाळा भगवानना भक्त थवुं होय तेणे मायिक सुखनो सर्व प्रकारे त्याग करीने अलौकिक एवुं जे पोताना आत्मानुं सुख तथा परमात्माना स्वरूपनुं जे सुख, तेनुं अतिशय जतन करवुं अने ते सुख पामवानी इच्छा राखवी अने ए आत्मा परमात्माना सुखने पामवुं होय तेणे मायिक सुखने उलटीना अन्न अने विष्टा जेवां जाणवां जोइए. केम के जेने प्रत्यक्ष भगवान अने भगवानना संतनो संबंध थयो छे तेने तो भगवानना सुख विना बीजे क्यांय सारप मनाय ज नहीं. अने जेने बीजे सारप मनाय छे तो ते अतिशय खोट कहेवाय. माटे जेने भगवानना खरा भक्त थवुं हाये तेणे तो भगवान अने भगवानना संत विना सर्व मायिक पदार्थने बळता अग्निरूप देखवुं अने प्रथम कह्यो जे भगवान अने संतनो अपरिमित महिमा तथा पोताना आत्मस्वरूपनो महिमा तेने जाणीने आत्मरूप थइने प्रत्यक्ष एवा जे परमात्मा भगवान अने तेना संतने विषे दृढ प्रीति करवी अने जेने प्रत्यक्ष भगवान अने भगवानना निर्वासनिक पंचविषयना त्यागी संत तेने विषे प्रीति थइ छे तेनां तो सर्वे साधन पुरां थइ रह्यां छे."

इति श्री मुखसिद्धांत ६१ समाप्त ॥

६२ विषय :—अधर्म अने धर्मनो विवेक

श्री हरिकृष्णाय नमोनमः—संवत् १९१६ ना भादरवा सुदि १३ ने दिवस महाराज श्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्री भंडारीया मध्ये भट अंबाशंकर वीरेश्वरने घेर उगमणे वार ओरडानी ओसरीमां ढोलिया उपर गादी तकीया बिछावीने विराजमान थया हता. सर्वे कसुंबल वस्त्र धारण कर्यां हतां. मोगरानां पुष्पना हार कंठमां धारण कर्या हता. गुलाबनां पुष्पना बाजु, गजरा तोरा अने गुच्छ धारण कर्या हता. ककुंनो चांदलो कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देशदेशना हरिभक्तोनी सभा भराइने बेठी हती.

पछे महाराज कृपा करीने सर्वे हरिजन प्रत्ये बोल्या जे—"जे भगवानना भक्त होय तेने तो धर्म अने अधर्मनो तपास करवो.

तेमां अधर्मनो एम तपास करवो जे जे अधर्म करे छे तेने आ लोकमां पण महा दुःख भोगववां पडे छे. केम के जे व्यभिचारनुं अधर्मकर्म करे छे तेने व्यवहारमां पण घर खाली थाय छे. अने तेनी जगतमां अपकीर्ति बहु थाय छे. अने तेने दंड भरवा पडे छे. अने ते परस्त्रीनो धणी भाळे तो नाक कान कापी ले छे तथा माथुं पण कापी नाखे छे. अने ते व्यभिचारी पुरुष तथा व्यभिचारिणी स्त्री होय तेने कोइ सारा माणस आंगणे आववा दे नहीं अने जाणे अजाणे आवे तो कोइ राजी थाय नहीं. अने तेना अंतरमां पण घडी एक शांति रहे नहीं. अने ते रघवाया कूतरांनी पेठे फरता फरे छे. अने तेनो व्यवहारमां पण कोइ इतबार करे नहीं अने ते महादुःखने जीवतां पण पामे छे अने मरीने पण घोर नरकमां पडे छे. अने जे चोरकर्मना करनारा छे ते पण महा संतापने पामे छे. अने तेनुं अंतरीयाळ मोत थाय छे. अने मरीने जमना

मार खाय छे. अने जे दारुना पीनारा छे तेनी बुद्धि पण केफे करीने मलीन थइ जाय छे अने मरीने ते रौरव नरकमां पडे छे. अने जे मांसना खानारा छे तेनी बुद्धि पण भ्रष्ट थइ जाय अने ते पापे करीने आ लोकमां पण महादुःखने पामे छे अने मरीने यमपुरीना कष्टने भोगवे छे. अने ते अधर्मना करनारा जीव जे ते गर्भवास अने चोराशीना महादुःखने पामे छे. अने ते अधर्मना करनारानुं कल्याण कोइ काळे थतुं नथी.

अने जे धर्म वाळा छे ते तो आ लोकमां पण सुखने पामे छे अने देहने मुकीने भगवानना धामने पामे छे. अने जे धर्मवाळा मनुष्य होय तेनी उपर ज भगवाननी पण कृपा थाय छे अने एवा धर्मवाळा होय तेनी व्यवहारमां पण भगवान ज रक्षा करे छे. अने तेने अवश्य देहरक्षणसारु अन्न वस्त्र जोइए ते पण भगवान तेने आपे छे. माटे जे भगवानना भक्त होय तेने तो ज्यारथी पोताने सत्संग थयो होय त्यारथी तपास करवो जे दिवसे दिवसे भगवान भजवामां तथा धर्म पाळवामां वृद्धि पमाय छे के कांइ आळस रहे छे ? एम तपास करीने जोवुं. पछी जो आळस रहेती होय तो तेनो त्याग करवो. अने धर्म, ज्ञान, वैराग्य, भक्ति तेने अतिशय दृढ करवां. अने एवी समजण वाळा प्रत्यक्ष भगवानना भक्त छे ते तो भगवाननी आज्ञाए करीने व्यवहारमां रहीने व्यवहारनुं काम करे छे तो पण तेने व्यवहारमां बंधन थतुं नथी.

—केमके जेम नोळीयो होय ते सर्प साथे लडे छे अने ते नोळीयाने सर्प करडे छे त्यारे नोळीयो पोताना दरमां नोळवेल होय तेने सुंघे छे एटले तेने सर्पनुं झेर चडतुं नथी. तेम भगवानना भक्त छे ते तो नोळीयारूप छे. अने संसारनो व्यवहार छे ते काळा सर्प जेवो छे. ते

संसारमां भगवानना आज्ञा प्रमाणे जेटलो देहनिर्वाहने अर्थे व्यवहार जरूर करवो घटे तेटलो व्यवहार करीने पछी नोळीयानी पेठे नोळवेल-रूप जे प्रत्यक्ष ज्ञानदाता सत्पुरुष तेनो समागम करे छे, तथा भग-वानना मानसिक पूजा तथा नियमनी माळा फेरववी तथा भगवानना मूर्तिनुं ध्यान करवुं, ए रूप जे नोळवेल तेने करीने भगवानना भक्तने संसार व्यवहारनुं झेर चडयुं होय ते उतरी जाय छे अने अंतःकरण शुद्ध थाय छे.

अने एवी रीते समजीने जेणे प्रत्यक्ष भगवाननो आशरो कर्यो छे तो तेनी वासना सर्वे टळी जाय छे अने तेने देह राख्या सारु अवश्य जोइए तेटलां अन्न वस्त्रादिक ग्रहण करे पण तेणे करीने तेने जन्म धरवो पडतो नथी. जेम शेकेला चणा होय ते खाय ते भूख जाय पण वावे तो उगे नहीं. तेम भगवानना भक्तने जन्म धरावे एवी वासना रहेती नथी. अने देह निर्वाहने अर्थे घटे तेटलो व्यवहार करे छे पण देहने मुके त्यारे भगवानना भक्तने भगवानना ध्याने करीने ब्रह्ममय तनु बंधाइने भगवानना धामने पामे छे अने ते भक्त अखंडसुखने पामे छे."

इति श्री मुखसिद्धांत ६२ समाप्त ॥

६३ विषयः—प्रत्यक्ष सत्पुरुष थकीज मोक्ष थाय

श्री हरिकृष्णाय नमोनमः—संवत् १९१६ ना भादरवा सुद १५ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री भंडारीया मध्ये ठाकोर अभेसंगजी कसळाभाइना दरबारमां उगमणा बार ओरडानी ओसरीए ढोलिया उपर गादी तकीया बिछावीने बिराजमान थया हता. सर्वे जरी-

थानी वस्त्र धारण कर्यां हतां. पुष्पना आभूषणो सर्वे अंगने विषे शोभी रह्यां हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देशदशना हरिभक्तोनी मोटी सभा भराइने बेठी हती. पछे अभेसंगजीए महाराजनी पूजा करीने आरती उतारी.

पछी महाराज बोल्या जे "जीवनो मोक्ष थवो अने जन्म–मरण टळवुं ते अतिशय कठण छे.

केम के ज्यां सुधी जीवने भगवान अदृश्य छे त्यां सुधी मोक्ष थाय नहीं अने प्रत्यक्ष भगवान अने भगवानना संतनो जीवने साक्षात्कार संबंध थाय त्यारे ज मोक्ष थाय छे. जेम समुद्र तरवो होय त्यारे नाव मळे अने तेमां बेसे त्यारे समुद्रने तराय छे, पण नाव विना समुद्र तराय नहि. तेम प्रत्यक्ष भगवान अने भगवानना संतनो जीवने संबंध थाय अने तेमनो दृढ आशरो करे त्यारेज जीव मायाने पार थाय अने तेनो मोक्ष थाय पण प्रगट भगवान अने भगवानना संतना संबंध विना बीजो जीवने माया तरवानो उपाय नथी.

–केम के मायानां आठ आवरण छे अने तेथी पर भगवाननुं धाम छे. माटे आठ आवरणने ओळंगाय त्यारे भगवानना धाममां जवाय छे. ते आठ आवरण कयां ? तो (१) पृथ्वीनुं आवरण :–ते पृथ्वी जे ते पचास करोड योजन पहोळी छे अने तेथी दशगणुं (२) जळनुं आवरण छे, (३) जळ थकी दशगणुं अग्निनुं आवरण छे (४) अग्नि थकी दश गणुं वायुनुं आवरण छे (५) वायु थकी दश गणुं आकाशनुं आवरण छे (६) आकाश थकी दशगणुं अहंकारनुं आवरण छे. (७) अहंकार थकी दशगणुं महत्तत्त्वनुं आवरण छे अने (८) महत्तत्त्वथी दशगणुं प्रधान पुरुषनुं आवरण छे अने (९) प्रधानपुरुषथकी अनंतगणुं प्रकृतिपुरुषनुं

आवरण छे अने ते थकी पर थवाय त्यारे भगवानना धाममां जवाय छे, माटे त्यां तो कोइ देव ब्रह्मादिकनी पण गति पुगे (पहोंचे) तेम नथी. तो मनुष्यनी तो गति पुगे ज क्यांथी ! न ज पुगे.

माटे ते आवरणथी पर थवानो तो एज उपाय छे जे ते आवरण थकी पर एवा जे परमात्मा भगवान ते जे ते जीवोनी उपर कृपा करीने जीवोने आवरण पर कराववाने अर्थे पोताना दिव्य भावने छूपावीने पृथ्वी उपर मनुष्याकृतिनुं धारण करे छे त्यारे ते भगवाननो जे जीवने संबंध थाय ते जीवनो मोक्ष थाय छे. केम के मायाथी पर होय ते ज मायाथी पर करे छे. माटे मायाथी पर तो एक परमात्मा ज छे. माटे पोतानी स्वेच्छाए करीने जीवोने मोक्ष आपवासारु मनुष्य देहनुं धारण करे छे. पछे प्रत्यक्ष भगवानने शरणे जे जीव आवे छे ते सर्वेनो मोक्ष थाय छे.

ते पूर्वे रामावतारमां पण वांदरा तथा गुहराजा भील तेने जो रामचंद्रजीनो संबंध थयो तो तेना साक्षात्कार मोक्ष थया छे. अने कृष्णावतारमां पण गायोना चारनारा गोवाळीया तथा छाशनी वेचनारी गोपीयो तेने जो श्रीकृष्णनो संबंध थयो तो ते पण मायापर जे भगवाननुं धाम तेने पामी गया छे. तथा ध्रुव, प्रह्लाद आदिक जे जे भक्तोने भगवान मळ्या छे ते सर्वेनो मोक्ष थयो छे. माटे प्रत्यक्ष भगवान जीवने मळे अने तेनी भक्ति करे त्यारे ज जीव मायापर थाय छे.

पण प्रगट भगवान अने प्रगट भगवानना संत मळ्या विना जीव माया पर थाय नहीं अने प्रत्यक्ष भगवान अने भगवानना निर्वासनिक संत पृथ्वी उपर न होय त्यारे ते भगवान अने संत साक्षात्कार मळवानी इच्छा राखीने पोतपोताना धर्ममां रहीने निष्काम भाव राखीने

ते भगवाननी श्रवण, कीर्तन आदिक भक्ति करे तेने एक जन्मे पण प्रत्यक्ष भगवान अने भगवानना संत मळे छे. अने ज्यारे प्रत्यक्ष भगवान अने संत मळे छे त्यारे जीव मायाने तरीने जन्म-मरण रहित थाय छे.

ते प्रगट भगवान अने भगवानना संत मळ्या पण केने कहेवाय छे ? तो जे माया पर दिव्य साकार मूर्ति भगवान ते ज भगवान आ प्रत्यक्ष छे एवुं जे जीव जाणतो होय अने एम जाणीने पंचविषयनो त्याग करे तेने ज प्रत्यक्ष भगवान अने संत मळ्या छे. अने तेनां जन्म मरण टळी जाय छे. अने ते जीव ब्रह्मरूप थइने अक्षरधामने पामे छे अने जेने एवो निश्चय थयो न होय अने ते प्रत्यक्षना संबंधमां तो आव्यो छे तो तेने जन्म-मरण रहे छे तो खरूं; पण ते जीव नरक चोराशीमां तो जाय नहीं अने तेने एक बे जन्मे एवो निश्चय थाय छे अने पछे ते जीव मोक्षने पामे छे. एवो प्रत्यक्ष भगवान अने भगवानना संतना संबंधने पाम्यानो प्रताप छे. माटे आ समे जेने मनुष्यनो देह आव्यो छे अने जेने अमारो संबंध थाय छे तेना भाग्यनो पार नथी. केम के तमे सर्वे अमने भगवान जाणो छो अने अमारे वचने करीने अधर्म थकी दूर रहीने अमारुं भजन करो छो. माटे तमारे तो महा अलौकिक लाभ प्राप्त थयो छे अने तमारा गुण तो मोटा शिव सनकादिक अने ब्रह्मादिक पण गाशे. माटे आजे अलौकिक लाभ मळ्यो छे तेने अतिशय जतन करीने राखजो पण कोइ रीतना देश काळे करीने तथा गाफलाइए करीने ते लाभने विसारशो नहीं.

केम के जेम बाळकना हाथमां चिंतामणि आपी होय ते बाळक चिंतामणिनो महिमा न जाणे एटले ज्यां त्यां नाखी दे अने जेणे चिंतामणिनो महिमा जाण्यो होय अने तेने चिंतामणि आपी होय तो ते अतिशय जतन करीने चिंतामणिने राखे छे. तेम जेने माहात्म्ये सहित

प्रत्यक्ष भगवान अने भगवानना संतना स्वरूपनो निश्चय थयो होय ते तो भगवाननी मूर्तिने शिर साटे जतन करीने राखे छे. अने तेने प्रत्यक्ष भगवानना भजनमां कोइ अंतराय करवा आवे तो तेने शत्रु जाणीने तेनो त्याग करी दे छे.

जेम कोइक राजाए ब्राह्मणने एम कह्युं के काले सवारमां मारी पासे आवजे अने मारे तने एक परगणुं अने लाख सोनामहोरो ते कृष्णार्पण आपवुं छे अने जो सवारमां दिवस उग्या महोर (पहेलां) नहीं आवे तो पछी बीजा ब्राह्मणने आपी दइश. पछी ते ब्राह्मण सवारमां राजाना दरबारमां जवाने तैयार थयो त्यारे तेने कोइ एक जजमान हशे तेणे कह्युं "जे गोर मारे घेर चालो. मारे तमने पांच रुपीया आपवा छे अने साकरनुं चुरमुं जमाडीश अने जो अत्यारमां मारे घेर नहीं आवो तो तमने अमे गोर नहीं राखीए. अने बीजा ब्राह्मणने गोर करीशुं." त्यारे ते ब्राह्मणने ते जजमान शत्रु जेवो लाग्यो अने तेने एम कह्युं जे–"तारा पांच रूपीया अने साकरनुं चुरमुं नथी जोइतुं." एम कहीने तेनो तत्काळ त्याग करीने चाली नीकळ्यो. अने राजाना दरबारमां दिवस उग्या महोर (पहेलां) जइ पुग्यो. पण ते ब्राह्मणनुं मन तेमां (पांच रूपीयामां अने चुरमामां) लोभाणुं नहीं अने तेने तो ते जजमान उलटो शत्रु जेवो लाग्यो केमके ए ब्राह्मणे एम जाण्युं छे जे पांच रुपीया अने साकरना चुरमा करता लक्ष सोनामहोर अने एक परगणांनुं राज्य ते तो घणो ज अधिक लाभ छे.

तेम जेने भगवाननो संबंध थयो छे तेने तो लक्ष सोनामहोर अने परगणानुं राज्य तो शुं पण कोटि ब्रह्मांडनां सुख पण ए भगवानना सुख आगळ कशी (कांइ पण) गणत्रीमां नथी. एवुं जे महा अद्भुत सुख तेनी

आगळ आ लोकनां सुख तथा देवलोकनां सुख, ते तो नरक जेवां छे माटे जेने प्रत्यक्ष भगवान अने तेमना संत मळ्या छे तेने तो आ लोकना तुच्छ जेवा अने नाशवंत अने अंते अपार दुःखनुं कारण अने भगवानना भजनमां अंतरायना करनारा एवां जे पंचविषयनां सुख तेने तो महा पापरूप अने जीवना शत्रु जाणीने त्याग करवो. अने पोताने मळ्या जे प्रत्यक्ष भगवान तेमनी मूर्तिने विषे पोताना मननी वृत्तिने अखंड राखवी अने ते मूर्तिने खातां, पीतां, हालतां चालतां, उठतां वेसतां, न्हातां, धोतां, सर्वे क्रियामां अखंड संभार्या करवी.

जेम कोइक अतिशय लोभीयो होय अने तेने पोतानुं द्रव्य होय तेने घरमां दाटथुं होय पछी ते लोभीयो पुरुष कामे काजे, गाम गामतरे जाय पण तेनुं मन द्रव्यमां अखंड रह्या करे छे पण तेने घडी एक ते द्रव्य विसरे नहीं, तेम जे भक्तने भगवानने विषे अखंड वृत्ति रहेती होय तेनो तो साक्षात्कार मोक्ष थइ रह्यो छे. अने एने कांइ करवुं वाकी रह्युं नथी. अने एवा भक्तने तो मायानां सर्वे आवरण टळी गयां छे अने ते भक्तना देहमां मायानां आवरण देखाय खरां पण ते निर्जीवपणे देखाय छे. कहेतां ते वासनाए रहित देखाय छे. जेम सींदरी अग्निमां वळी गइ होय तो पण ते सींदरीना वळ देखाय खरा पण ते (वळेली) सींदरीए करीने सावरणी वंधाय नहीं. तेम प्रत्यक्ष भगवानना स्वरूपना निश्चयवाळा भक्तना देहमां मायानां अष्ट आवरण देखाय छे पण तेने करीने पाछो फरीने देह धरवो पडतो नथी. अने ते भगवानना भक्तना देहमां जे निर्जीव आवरण जणाय छे ते भक्तनो देह मुकवा समे देहमां जे पृथ्वीनुं आवरण छे ते महत् पृथ्वीमां लय थइ जाय छे अने महत् पृथ्वी छे ते महत् जळमां लय थइ जाय छे. एवी रीते जेमांथी जे उपज्यां हतां तेमां ते लय पामी जाय छे अने भगवानना भक्तनी भगवाननी मूर्तिने

ध्याने करीने, ब्रह्ममय तनु बंधाय छे. अने ते भगवानना अक्षरधामने पामे छे. अने ते भक्त अखंड भगवाननी हजुरमां रहे छे."

इति श्री मुखसिद्धांत ६३ समाप्त ॥

६४ विषय :—मनुष्यने मनुष्यनो अवतार आवे के बीजो ?

श्री हरिकृष्णाय नमोनमः-संवत् १९१६ना भादरवा वदि १ ने दिवस महाराज श्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्री भंडारीया मध्ये जोशी हतु वीरेश्वरने घेर उगमणे द्वार ओरडानी ओसरीमां गादी तकीया नखावीने ढोलीया उपर बिराजमान थया हता. सर्वे सोनेरी वस्त्र धारण कर्यां हतां. पुष्पना हार, तोरा, गजरा अने गुच्छ सर्वे अंगमां धारण कर्यां हतां. केसरनी अर्चा अने कंकुनो चांदलो कर्यो हतो. पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तोनी सभा भराइने बेठी हती.

पछे महाराज कृपा करीने सर्वे सभाप्रत्ये बोल्या जे—"आ जीव छे ते जे ते चार प्रकारे भगवाननी कृपा माने छे.

(१) तेमांने धर्मने विषेज एक आस्था होय तेने तो वर्णाश्रमनो धर्म पाळवो तथा न्हावुं, धोवुं, चोका, पाटला, अबोटीयां इत्यादिक देहे करीने वर्ताय तेणे करीने भगवाननी कृपा माने छे (२) अने जे कामभोगनी आसक्तिवाळा छे तेने तो स्त्रीओ भोगववी, खावा पीवा, वस्त्र, घरेणां पहेरवां, घोडा पालखीए बेसवुं, इत्यादिक सारा सारा भोग भोगववा तेने करीने भगवाननी कृपा माने छे. (३) अने केटलाकने तो आ लोकमां द्रव्यादिक पदार्थ प्राप्त थाय तेणे करीने भगवाननी कृपा माने छे. एवी रीते जेने जेवी वासना होय तेवी रीते धर्म, अर्थ अने काम तेणे करीने भगवाननी कृपा माने छे. पण ए भगवाननी खरेखरी

विषे पोतापणुं मानीने तेने विषे प्रीति करवी, कहेतां "हुं आत्मा छुं." एम समजीने आत्मानुं जेम रुडुं थाय एम वर्तवुं. अने मायिक पंचविषयना सुखमां तथा मान अपमानमां लेवावुं नहीं, कहेतां मान अपमाने करीने तथा हाण वृद्धिए करीने हरख शोकने पामवुं नहीं. एवी रीते समजीने वर्ते तेने आत्मानो संग थयो जाणवो कहेतां तेने आत्म-निष्टा दृढ थइ जाणवी.

—अने वीजो परमात्मानो संग थयो केम जाणवो? तो जे परमात्मा छे ते सदाय मायाथी पर छे. अने अष्ट प्रकारनी जे जड प्रकृति अने ते जड प्रकृतिने धरी रही (धारण करी) एवी जे चैतन्य प्रकृति ए वेना आधार छे अने ए वेना प्रकाशना करनारा छे अने सर्वे जगतना कारण छे अने सर्वे जगतना कर्ता छे अने कर्ता थका अकर्ता छे अने दिव्यमूर्ति छे. अने अनंत अक्षररूप पार्षदे विंटाणा थका सदाय अक्षरधामने विषे रह्या छे अने एवा जे परमात्मा भगवान ते जे कृपा करीने अनंत जीवोना कल्याण करवाने अर्थे आ पृथ्वीने विषे प्रगट थाय छे. ते परमात्मा आज मने प्रत्यक्ष मळ्या छे. एवी रीते माहात्म्ये सहित प्रत्यक्ष भगवानना स्वरूपनो जेने निश्चय थाय तेने परमात्मानो संग थयो जाणवो.

अने त्रीजो साधुनो (संतनो) संग थयो केम जाणवो? तो जेने धर्म, ज्ञान, वैराग्य अने माहात्म्ये सहित परमात्मानी भक्ति, ए चार वानां जेमां संपूर्ण होय तथा साधुना चोसठ लक्षण जेमां संपूर्ण होय एवा जे साधु तेना वचनमां मन, कर्म—वचने वर्तवुं अने ते साधुने न गमे एवा जे काम लोभादिक दोष तेनो सर्व प्रकारे त्याग करवो, अने श्रद्धाए सहित एवा साधुनी सेवा करवी. अने जेवी देह अने देहना संबंधीने विषे जीवने आत्मबुद्धि अने दृढ प्रीति छे तेवी ते साधुने विषे आत्मबुद्धि

कृपा नथी. केम के ए तो सर्वे मिथ्या सुख वते करीने कृपा माने छे. (४) माटे जेना उपर भगवाननी खरी कृपा थाय छे. ते तो अविनाशी सुखने पामे छे अने ते जीव काळ, कर्म अने मायाथी रहित थइने अभयपदने पामे छे. अने तेने पंचविषयनी वासना टळी जाय छे अने धर्म, अर्थ अने काम तेनो त्याग करीने एक भगवानने विषे दृढ प्रीति थाय तेज भगवाननी कृपा छे."

प्रश्नः—पछे अखंडानंद स्वामीए प्रश्न पुछ्युंः—जे "एवी भगवाननी कृपा केम (केवी रीते) थाय ?"

पछे महाराज बोल्या जे "एवी कृपा तो सत्संगे करीने थाय छे. ते सत्संग ते शुं ? तो सत्यनो संग करवो एनुं नाम सत्संग छे. हवे सत्य ते शुं छे ? तो सत्य एक तो आत्मा छे अने बीजा परमात्मा सत्य छे. अने त्रीजा भगवान प्रत्यक्षना एकान्तिक संत ते सत्य छे अने चोथा भगवानना श्रीमुखनां वचन जे शास्त्रमां होय ते शास्त्र सत्य छे. अने ते आत्मा, परमात्मा, संत अने शास्त्र, ए चार मळीने सत्य कहेवाय. अने तेनो मन, कर्म, वचने संग करवो तेनुं नाम सत्संग छे. अने ते सत्संगे करीने जीवनी उपर भगवाननी खरेखरी कृपा थाय छे अने तेनी मुक्ति जे अक्षरधाम तेने पामे छे.

हवे ते चारनो संग केवी रीते करवो ? तो प्रथम आत्मानो संग एम करवो जे आत्मा छे ते जे ते स्थूळ, सूक्ष्म अने कारण एवा जे मायाना त्रण देह ते थकी नोखो छे. अने ए त्रण देहनो प्रकाशक छे. अने अच्छेद, अभेद अने अमर छे. अने आत्मा अविनाशी छे अने सुखरूप छे. अने देह छे ते नाशवंत छे, जड छे, दुःखनुं मूळ छे. अने नरकरूप छे. एम जाणीने ते देहमांथी प्रीतिनो त्याग करीने पोताना आत्माने

विषे पोतापणुं मानीने तेने विषे प्रीति करवी, कहेतां "हुं आत्मा छुं." एम समजीने आत्मानुं जेम रुडुं थाय एम वर्तवुं. अने मायिक पंचविषयना सुखमां तथा मान अपमानमां लेवावुं नहीं, कहेतां मान अपमाने करीने तथा हाण वृद्धिए करीने हरख शोकने पामवुं नहीं. एवी रीते समजीने वर्ते तेने आत्मानो संग थयो जाणवो कहेतां तेने आत्मनिष्टा द्रढ थइ जाणवी.

–अने बीजो परमात्मानो संग थयो केम जाणवो? तो जे परमात्मा छे ते सदाय मायाथी पर छे. अने अष्ट प्रकारनी जे जड प्रकृति अने ते जड प्रकृतिने धरी रही (धारण करी) एवी जे चैतन्य प्रकृति ए बेना आधार छे अने ए बेना प्रकाशक्ता करनारा छे अने सर्वे जगतना कारण छे अने सर्वे जगतना कर्ता छे अने कर्ता थव ा अकर्ता छे अने दिव्यमूर्ति छे. अने अनंत अक्षररूप पार्षदे विंटाणा थका सदाय अक्षरधामने विषे रह्या छे अने एवा जे परमात्मा भगवान ते जे कृपा करीने अनंत जीवोना कल्याण करवाने अर्थे आ पृथ्वीने विषे प्रगट थाय छे. ते परमात्मा आज मने प्रत्यक्ष मळ्या छे. एवी रीते मा हात्म्ये सहित प्रत्यक्ष भगवानना स्वरूपनो जेने निश्चय थाय तेने परमात्म ानो संग थयो जाणवो.

अने त्रीजो साधुनो (संत नो) संग थयो केम जाणवो? तो जेने धर्म, ज्ञान, वैराग्य अने माहात्म्ये सहित परमात्मानी भक्ति, ए चार वानां जेमां संपूर्ण होय तथा साधुनां चोसठ लक्षण जेमां संपूर्ण होय एवा जे साधु तेना वचनमां मन, कर्म–वचने वर्तवुं अने ते साधुने न गमे एवा जे काम लोभादिक दोष तेनो सर्व प्रकारे त्याग करवो, अने श्रद्धाए सहित एवा साधुनी सेवा करवी. अने जेवी देह अने देहना संबंधीने विषे जीवने आत्मबुद्धि अने द्रढ प्रीति छे तेवी ते साधुने विषे आत्मबुद्धि

अने त्यागी होय ते पण त्यागीना धर्म प्रमाणे निष्काम, निर्लोभ निःस्वाद, निर्मान, निःस्नेह तेने दृढ करे तथा आत्मनिष्ठा अने वैराग्य ते पण शुद्ध दृढ करीने प्रत्यक्ष भगवाननी माहात्म्ये सहित दृढ भक्ति करे तो ते त्यागी पण निर्वासनिक थाय. अने अक्षरधामने पामे. माटे आ वार्ता करी ते प्रमाणे त्यागी अने गृहस्थ बे ते पोतपोताना धर्म कह्या तेने अंतरमां उतारीने तेवी रीते वर्ते तो गृहस्थ पण आ ज भगवानने प्रतापे करीने निर्वासनिक थाय. अने त्यागीना धर्म प्रमाणे त्यागी वर्ते तो ते त्यागी पण आ ज प्रत्यक्ष भगवानना प्रतापे करीने निर्वासनिक थाय. पण प्रत्यक्ष भगवान अने भगवानना संत मळ्या विना त्यागी के गृहस्थ कोइ निर्वासनिक थाय नहीं.

जेम रांक होय अने खोरी जारनी खाटी राब खातो होय पछी तेने एम कहीए जे खाटी राब तो सारी नथी. माटे नाखी दे ? त्यारे ते रांक एम कहे जे "मारे तो ते खाटी राब अमृत जेवी छे केम के ते रावने खाउं नहीं तो मरी जाउं माटे माराथी तो रावने नाखी देवाय नहीं." पण ते रांकने जो मोतीया लाडवानो थाळ भरीने मोढा आगळ मूक्यो होय तो ते रांक जे ते खाटी रावने वगर कह्ये नाखी दे अने कांइक खवाणी होय तेनो पण खरखरो करे "जे एवी नकामी राब क्यांथी खवाणी ?"

तेम रंक जेवा वासना वाळा जीव ते खाटी राबरूप जे पंचविषय तेने भोगवे छे. तेने सूझे एटली विषयना खंडननी वार्ता करीए पण ते विषयने तो जीवनप्राण मान्या होय ते कोइ रीते मुकी शके ज नहीं. पण जो तेने मोतीया लाडवारूप प्रत्यक्ष भगवान अने तेना संतनो माहात्म्ये सहित निश्चय थाय तो तत्काळ पंचविषयनो त्याग करी दे.

अने निर्वासनिक थइने प्रत्यक्ष भगवानमां जीव जोडाइ जाय छे. जेम रांक रावनो त्याग करीने लाडवा जमवा मंडी पडे छे तेम जीव जे ते पंचविषयनो त्याग करीने प्रत्यक्ष भगवान अने भगवानना संतने विषे दृढ प्रीति करे छे. अने ते निर्वासनिक थइने अक्षरधामने पामे छे.

माटे आ समे जेने निर्वासनिक थवुं होय तेने आ कह्युं ते प्रमाणे समजीने वर्तशे तो ते तत्काळ निर्वासनिक थशे. माटे आ वार्ता छे ते सर्वे शास्त्रनो सार छे."

प्रश्न :—पछे वळी पटेल पोला आंवाए प्रश्न पूछ्युं "हे भगवान! *आ माणस मरी जाय छे तेने पाछो माणसनो अने माणसनो अवतार* आवतो हशे के बीजो अवतार आवतो हशे? के अवतार फरीने आवतो ज नहीं होय? ते अमने जेम होय तेम कहो."

पछे भगवान बोल्या जे—"सारुं प्रश्न पूछ्युं माटे सांभळो एनो उत्तर करीए. जे आ जीव छे ते तो अविनाशी छे अने ते जीवने मायाना त्रण देह छे. ते कया त्रण देह? तो स्थूळ, सूक्ष्म अने कारण ए त्रण देह छे. तेमां जे स्थूळ देह छे तेने मुके छे अने सूक्ष्म अने कारण तो जीवनी भेगा ने भेगा रहे छे. पछे स्थूळ देह मुकवा समे जीवने जेवी वासना होय तेवो पाछो देह धरे छे.

जेम आंवलीनो आंवलीयो होय तेने विषे आंवली रही छे. ते जो आंवलीयाने वावे तो मोटुं झाड थाय. ते मोटुं झाड थयुं ते आंवलीयानो स्थूळ देह छे अने आंवलीयो सूक्ष्म देहने ठेकाणे छे अने ते आंवलीया उपर जे फोतरूं छे ते कारण देहने ठेकाणे छे. तेमां ज्यां सुधी *आंवलीया उपर फोतरूं होय त्यां सुधी* तेमांथी झाड थाय छे. अने जो ते आंवलीयाने अग्निमां शेकीने फोतरूं उतारी नाखे तो ते आंवलीया-

मांथी पाछुं झाड थाय नहीं. तेम जीवने आंबलीयाना फोतरां रूप कारणदेहमां वासना होय त्यां सुधी जन्म मरण टळतुं नथी अने ज्यारे फोतरारूप जे वासना तेने ज्ञानरूपी अग्निए करीने बाळी नाखे तेने जन्म मृत्यु टळी जाय छे. अने ते जीव भगवानना धामने पामे छे. पण ते विना जन्म मृत्यु टळतुं नथी. अने जीव छे ते सूक्ष्म अने कारण देहमां रह्यो थको ज्यां ज्यां वासना होय त्यां त्यां स्थूळ देहनुं वारेवारे धारण करे छे.

जेम भरतजीने देह मुकवा समे मृगलाना बच्चामां दयाए करीने वासना रही हती तो ते भरतजीने मृगनो देह धरवो पड्यो हतो. ते एवा मोटाने एम थयुं अने माणसमांथी मृग थया तो बजा जीव जेने अनंत वासना होय तेने तो क्यांथी पाछो फरीने मनुष्यनो अवतार आवे ? न ज आवे. अने ते वासनावाळा जीवने तो स्थूळ देहनो त्याग करीने प्रथम तो यमपुरीमां जइने केटलाक युग सुधी तो छ लाख अने चोराशी हजार नरकना कुंड छे तेमां महा कष्टने भोगववुं पडे छे. अने पछी लख चोराशीमां जाय छे अने तेमां कुतरा, गधेडादिकना अनंत जन्म धरवा पडे छे.

अने जे मनुष्य देहमां पुरुष होय अने तेने देह मुकवा समे स्त्रीमां बहु हेत होय तो ते पुरुष स्त्री थइ जाय छे. अने स्त्रीने पुरुषमां प्रीति बहु होय तो ते स्त्रीनो पुरुष थाय छे. अने जे मनुष्यने प्रत्यक्ष भगवान अने संतनो संबंध थाय छे अने जे प्रत्यक्ष भगवानना भक्त थाय छे अने तेने कांइक वासना रही गइ होय तो तेने पाछो फरीने माणसनो अवतार आवे छे. पण ते नरक चोराशीमां जाय ज नही. अने ते प्रत्यक्ष भगवानना भक्तने थोडी घणी वासना रही गइ होय तेने तो भगवान

देवतामां अने मनुष्यमां जन्म धरावे छे अने ज्यारे ज्ञान आश्रिए करीने वासनारूप कारण देहने बाळी नाखे छे त्यारे जीव जे ते ब्रह्मरूप थइने भगवानना अक्षरधामने पामे छे. ए तमारा प्रश्ननो उत्तर छे."

इति श्री मुखसिद्धांत ६४ समाप्त ॥

६५ विषय :—व्यासजीना वचनोनो मर्म

श्री हरिकृष्णाय नमोनमः—संवत् १९१६ ना भादरवा वदि २ ने दिवस महाराज श्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्री भंडारीया मध्ये भट्ट गला गोविंदजीने घेर उत्तरादे बार ओरडानी ओसरीमां ढोलिया उपर गादी तकीया नखावीने विराजमान थया हता. सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां. मस्तक उपर गुढा रंगनी पाघ वांधी हती. पुष्पना हार कंठमां धारण कर्या हता. ककुंनो चांदलो कर्यो हतो. पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने वेठी हती.

प्रश्न :—पछे दवे शामजीए प्रश्न पूछ्युं जे "महाराज ! श्री भागवतमां वसुदेवे कंस प्रत्ये कह्युं छे जे "तारी बहेनने तुं मारीश खरो, पण जीव मरतो नथी, अने आ देहने मुकवानो समो थाय छे त्यारे (जीव) बीजा देहमां प्रवेश करीने आ देहनो त्याग करे छे जेम खडमांकडी आगला तरणां उपर बे पग मांडीने पछी पाछला पग उपाडे छे. तेम जीव जे ते आगला देहमां प्रवेश करीने आ देहने मुके छे." अने वळी गरूड पुराणमां एम कह्युं छे जे "जीव ज्यारे देह मुके छे त्यारे प्रथम यमना दूत जीवने चार घडीमां धर्मराजा पासे लइ जाय छे. अने ते जीवना पाप पुन्य जोइने पाछो मोकले छे अने ते जीव बार दिवस सुधी त्यां रहीने पछे पाछो यमपुरीमां लइ जाय छे. अने ते यमपुरीमां केटलाक युग सुधी रहीने ते जीवना पापनुं निवारण थाय छे, त्यार पछी आकाश-

मां जाय छे. अने पछी मेघ भेळो वरसीने अन्न-खडमां आवीने ते अन्न खडने मनुष्य पशु खाय ते भेगो पुरुपना पेटमां जइने पछी वीर्यमां आवीने स्त्रीना उदरमां आवीने देह धरे छे. एवी रीते घणा काळे देह धरे छे. अने आ वेय व्यासजीनां-एक धणीनां वचन ते परस्पर विरुद्ध आवे छे. ते एक वचन साचुं करीए तो बीजुं खोटुं थाय छे. माटे तेनुं केम हशे? ते कृपा करीने कहो. "

पछे महाराज बोल्या-" जे लो एनो उत्तर करीए. जे ए वे प्रकारनां वचनने सांभळीने केटलाक जीवने शास्त्रने विषे नास्तिक भाव आवी जाय छे. माटे तेनो उत्तर एम छे जे जीवने त्रण देह छे; स्थूळ, सूक्ष्म अने कारण तेमां कारण अने सूक्ष्म तो अनादिना छे. अने ते वे देह वासनामय छे. ते जे पदार्थनी वासना होय ते ठेकाणे स्थूळ देहनुं धारण करीने ते पदार्थने भोगवे छे. अने पदार्थने भोगवे छे त्यारे जीव जे ते स्थूळ देहमां मुख्यपणे वर्ते छे. अने ते स्थूळ देहनी आवरदा आवी रहे त्यारे वासनालिंग एवो जे नवतत्त्वनो सूक्ष्म देह तेमां जीव प्रवेश करीने स्थूळ देहने मुकीने यमपुरी प्रत्ये जाय छे. अने नित्य निमित प्रलयमां स्थूळ देहनो नाश थाय छे. पण सूक्ष्म अने कारण वे देहनो नाश थतो नथी. अने ज्यारे प्राकृत प्रलय थाय छे त्यारे स्थूळ अने सूक्ष्म ए वे देहनो नाश थाय छे अने कारणदेह एक रहे छे. अने ते कारणदेहनो नाश कोइ काळे थतो नथी. अने प्राकृत प्रलयने अंते पाछी सृष्टि सृजाय छे त्यारे स्थूळ अने सूक्ष्म वे देह उत्पन्न थाय छे अने जीवने जेवी वासना होय तेवा देहनुं धारण करीने स्थूळदेहना भोगने भोगवे छे. अने पाप पुन्य करे छे. अने वळी स्थूळ देहनी आवरदा आवी रहे छे त्यारे सूक्ष्म देहमां प्रवेश करीने पाप पुन्यनुं फळ भोगवे छे. पण देह विना जीव रहेतो नथी. त्यां दृष्टांत छे :-

—जे जेम दिवो घरनी मध्ये मुक्यो होय ते घर बधामां तेनो प्रकाश व्यापी रहे छे. ते घरमां प्रकाश व्याप्यो ते दिवानुं स्थूळ शरीर कहेवाय अने दिवेटने विषे वळगीने रह्यो छे ते दिवानुं सूक्ष्म शरीर छे. अने दीवेल छे ते दिवानी आवरदा छे. अने ज्यारे दीवेल आवी रहे त्यारे घरमां जे प्रकाश होय ते संकोच पामीने कोडीयामां आवे कहेतां स्थूळ देह रूपी घरनो त्याग करीने सूक्ष्म देहरूपी ज्योतिने विषे प्रवेश करे छे. अने ज्यारे दिवो ओलवाइ जाय छे त्यारे कारण देहरूप-वायुरूप धुमाडो तेमां प्रवेश करे छे.

तेम जीवने त्रण देह छे. ते देह विना जीव रही शकतो ज नथी. तेमां जे स्थूळ देहनी दृष्टिवाळा छे तेना देहनो नाश थाय त्यारे कहे जे "मरी गयो." अने वसुदेवे तो ज्ञानदृष्टिए कंसने कह्युं जे—"जीव मरतो नथी अने स्थूळ अने सूक्ष्म ए बे देहमां रहीने जन्म-मृत्यु, यमपुरी अने चोराशी गर्भवास तेने भोगवे छे. माटे जीव मरतो नथी. ते पण सत्य छे अने खडमांकडीनी पेठे सूक्ष्म देहमां प्रवेश करीने स्थूळ देहनो त्याग करीने यमपुरीना दुःखने भोगवे छे ते पण सत्य छे. ए तमारा प्रश्ननो उत्तर छे. अने नित्य निमित्त प्रलयमां स्थूळ देहनो नाश थाय छे अने वळी उत्पत्ति समे उपजे छे. अने ज्यारे प्राकृतप्रलय थाय छे त्यारे सूक्ष्म अने स्थूळ ए बे देहनो नाश थाय छे अने उत्पत्ति समे पाछा उपजे छे. अने त्रीजो कारणदेह छे. ते तो अनादिनो छे. अने तेनो नाश थतो नथी.

अने तेनो नाश क्यारे थाय छे? तो ज्यारे ज्ञान प्रलय थाय छे त्यारे कारणदेहनो नाश थाय छे. ते ज्ञानप्रलय क्यारे थाय छे? तो ज्यारे जीवने मनुष्यनो देह होय अने मायापर एवा जे ब्रह्मना आधार परब्रह्म दिव्यमूर्ति भगवान ए पोतानी स्वइच्छाए जीवोनो मोक्ष

करवा सारु पृथ्वीने विषे भासमान रामकृष्ण, ऋषभ, कपिलादिक रूपे थया होय तथा एना संत ते प्रगट थया होय पछी ते भगवान अने संत तेने शरणे जीव आवे अने तेनी आज्ञा प्रमाणे मन कर्म वचने वर्ते अने तेने विषे सर्वे अंतरायनो त्याग करीने दृढ प्रीति करे तो तेने आत्यंतिक प्रलयनुं ज्ञान थाय छे. कहेतां ते जीवने ज्ञानप्रलय थाय छे. अने ते आत्यंतिक मोक्षने पामे छे. त्यारे तेने कारणदेहनो नाश थाय छे अ जीवनुं जीवपणुं मटी ने ब्रह्मरूप थाय छे अने अक्षरधामने पामे छे पण भगवान अने भगवानना दृढ पंचविषयना त्यागी निर्वासनिक सं मळ्या विना कोटि साधन करे तो पण तेने कारण शरीररूप जे महा माया ते टळती नथी. त्यां भगवत्गीतानो श्लोकः—

दवी एषा गुणमयी मम माया दुरत्यया ।
मामेव ये प्रपद्यंते मायामेतांतरंति ते ॥

अर्थः—श्रीकृष्ण कहे छे जे "दैवी अने गुणमयी एवी जे मारी माया ते दुःखे करीने तरवी कठण छे, पण मारा चरणने जीव पामे तो सुखे करीने ते मायाने तरी जाय."

माटे आ समे जेने मनुष्यनो देह आव्यो छे अने आ सत्संगनो जोग जेने थयो छे तेना भाग्यनो पार नथी. केम के आज देशकाळ बहु सारो छे. सारा देशकाळमां सुखे प्रभु भजाय छे, अने पूर्वे रामकृष्णादिक भगवानना अवतार थया हता त्यारे उपाधि घणी थती हती. ते भक्तजनने प्रभु भजवामां बहु भूंडा देशकाळ हता, अने आज तो सर्व प्रकारे रूडा देशकाळ वर्ते छे. माटे जेने पोताना आत्माना कल्याणने इच्छवुं होय तेने तो दृढ मन करीने भगवान अने भगवानना निर्वासनिक पंचविषयना त्यागी एवा जे संत तेनो आशरो करवो, अने पोताना आत्मानो मोक्ष

करी लेवो. एज मनुष्यदेह पाम्यानो परम लाभ छे, अने आवो समो आव्यो छे अने जे सत्संग नथी करता ते तो महामूर्ख छे अने आत्मघाती छे."

इति श्रीमुख सिद्धांत ६५ समाप्त ।

---

६६ विषयः—आसुरीनुं धन अधर्ममां जाय

श्री हरिकृष्णाय नमोनमः—संवत् १९१६ना भादरवा वदि ३ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री भंडारीया मध्ये पटेल पोला आंबाने घेर उगमणे बार ओरडानी ओसरीमां ढोलिया उपर गादि तकीया नखावीने विराजमान थया हता. सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां. मस्तक उपर कसुंबल फेंटो बांध्यो हतो. सर्वे अंगमां पुष्पनां आभूषणो शोभी रह्यां हतां. अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देश देशना हरिभक्तोनी सभा भराइने बेठी हती.

पछे महाराज कृपा करीने हरिजन प्रत्ये बोल्या जे—"आसुरी जीव होय अने तेने द्रव्य मळ्युं होय तो ते द्रव्य तेने दुःख ज दे छे. अने ते द्रव्यने अधर्मने मार्गे वावरे छे. ते केवी रीते वावरे छे? तो वेश्याओने खवडावे, तथा भवैया रमाडे, दारू—मांस खाय, ए आदिक घणा प्रकारना फेलने मार्गे द्रव्यने वावरे, अने ते पापे करीने पछी ते महा दुःखने पामे छे, पण एवा अधर्मी पासे द्रव्य होय ते सुपात्र ठेकाणे वबराय नहीं, अने एवा असुरी जीव होय ते धर्मवाळा मनुष्यने देखीने वळी मरे छे, अने साधु, अष्ट प्रकारे स्त्रीनो त्याग करावता होय तथा सर्व प्रकारे द्रव्यनो अने रसास्वादनो त्याग राखता होय तेने देखीने आसुरी जीव दाझे बळे छे, पण तेनो आसुरी जीवने महिमा न समजाय.

अने एम न समजे जे आवा मायापर अने पंच विषयना त्यागी साधु तेनां तो दर्शन घणां दुर्लभ छे! अने एवा साधुना दर्शने करीने अनंत जीवनुं कल्याण थाय छे, एम आसुरी जीवने समज्यामां आवे नहीं, अने आसुरी जीव तो पंच विषयना रागी अने वेशधारी एवा जे अधर्मी तेने देखीने राजी थाय छे, पण विषयना त्यागी अने धर्मवाळा साधु, तेने देखीने राजी थाय नहीं, अने उलटा दुःख पामे. केम के जे धर्मवाळा होय ते अधर्मने खोदे अने विषयनुं खंडन करे, माटे अधर्मी अवगुण ले छे, पण एम गुण न लेय जे एने धन्य छे जे स्त्री, द्रव्य, रसादिक पंचविषयनो त्याग करीने वर्ते छे. एवो अधर्मीने गुण न आवे, अने अधर्मीने तो चोर, कपटी, फेली, व्यसनी, एवा भूंडा स्वभाववाळा गमे छे. अने एवा अधर्मीना अंतःकरणमां पण महा क्लेश वर्त्या करे छे. कहेतां तेने शान्ति थाय नहीं. अने देहने मुकीने महाकष्टने पामे छे. माटे जेने पोताना आत्मानुं रूडुं करवुं होय तेने तो एवा अधर्मीना संगनो त्याग करवो. अने धर्मवाळा अने विषयना त्यागी एवा जे भगवान, तेने विषे दृढ स्नेहवाळा जे साधु तेनो मन, कर्म, वचने संग करवो. अने तेमनी आज्ञा प्रमाणे वर्तवुं अने एवी रीते समजीने सत्य साधुनी आज्ञा प्रमाणे वर्ते छे तेनां अनंत जन्मनां पाप सर्वे बळीने भस्म थइ जाय छे अने ते आने आ देहे मायापर थइने भगवानना धामने पामे. माटे अधर्मीना संगने तो हडकाया श्वान अने सर्परूप जाणीने त्याग करवो पण कोइ रीते गाफलाइए करीने अधर्मीनो संग न करवो. अने जो गाफलाइ राखीने कहेतां 'मने ते शुं करशे?' एम जाणीने अधर्मीनो संग राखे तो तेनुं कोइ रीते कल्याण थाय नहीं. अने ते गाफलने आवो अतिशय दुर्लभ मनुष्यनो देह ते पशुना पाडमां जाय अने जे सावधान छे ते तो पोताने भगवाने कृपा करीने आप्यो जे मनुष्यनो देह, ते देहे करीने अधर्मीनो

तथा अधर्मनो त्याग करीने धर्म, ज्ञान, वैराग अने माहात्म्ये सहित भगवाननी भक्ति दृढ करीने पंचविषयना त्यागी संत तेनो समागम करीने विषयनी वासनाने मुकीने भगवानना धामने पामवुं एज मनुष्य-देहनो लाभ छे. अने ते विना तो पशुना पाडमां मनुष्यनो देह जाय छे."

इति श्रीसुख सिद्धांत ६६ समाप्त ।

---

६७ विषय :—वासनिक जीव निर्वासनिक क्यारे थाय ?

श्री हरिकृष्णाय नमोनमः—संवत् १९१६ ना भादरवा वदि ४ने दिवस महाराज श्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्री टाणा मध्ये भट्ट यदुराम जगजीवनने घेर उगमणे बार मेडीनी ओसरीमां ढोलीया उपर विराजमान थया हता. अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां. अने कसुंबल फेंटो मस्तके बांध्यो हतो. गुलाबना पुष्पना हार धारण कर्यां हतां. अने पुष्पना बाजु, गजरा, तोरा अने गुच्छ शोभी रह्या हता. कंकुनो चांदलो कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देशदेशना हरिभक्तोनी सभा भराइने बेठी हती.

पछे महाराज श्री हरिकृष्ण भगवान कृपा करीने बोल्या जे "जीव केवो छे ?"

के जेवो पाणीनो उंडो धरो होय तथा मधनो घडो होय तथा हरणीयो पारो होय ते जेवो जीव छे. ते जीव देहमां हृदयने विषे रह्यो थको अनंत प्रकारनी प्रवृत्तिओ द्वारे करीने आ विश्वना विषयने भोगवे छे. जेम कानखजुरो पोताना सर्वे पगने एक साथे चलावे छे तेम जीव पण हृदयमां रह्यो थको कान इन्द्रियनी वृत्ति द्वाराए करीने अनंत प्रकारना शब्दना विषयने भोगवे छे; नेत्र इन्द्रियनी वृत्तिए करीने अनंत

प्रकारना रूपविषयने भोगवे छे; रसना इन्द्रियनी वृत्तिए करीने अनंत प्रकारना रस विषयने भोगवे छे; अने नासिका इन्द्रियनी वृत्तिए करीने अनंत प्रकारना गंधविषयने भोगवे छे. एवी रीते जीव जे ते हृदयने विषे एक ठेकाणे रह्यो थको दश इन्द्रियो अने चार अंतःकरण अने चौद देवता ए सर्वेने प्रकाशे छे. अने पोते जीव जे ते विषयनी भोक्ता बुद्धिए करीने भोगने भोगवे छे अने ते विषयभोगनी भोक्ता वृत्ति द्वारे अकेकी वृत्तिमां अपारने अपार दुःखने पामे छे. एवी रीते जीव जे ते पोताना आत्मस्वरूपने भूलीने तथा आत्माने सुखना आपनारा एवा जे परमात्मा अने तेना संत तेना स्वरूपने भूलीने महादुःखरूप जे पंचविषय तेमां सुख मानीने विषयने भोगवे छे अने महाक्लेशने पामे छे अने विषयनी वासनाए करीने जन्म-मृत्युने वारंवार पामे छे. एवी रीते जीव जे ते अनादि काळनो अज्ञाने करीने अपार कष्टने भोगवे छे. अने ते दुःख थकी पोतानी मेळे कोइ जीव छूटवाने समर्थ नथी. अने जीवने पोतानी मेळे कल्याणनो मार्ग पण कोइने जडतो नथी. अने विषयनी वासना पण कोइ पोतानी मेळे टाळवाने समर्थ नथी. माटे ते वासना केम टळे ? अने कल्याणनो मार्ग क्यारे सूझे ?

–तो सदाय, अनादि, मायाथी पर एवा जे परमात्मा भगवान ते ज जीवोनी उपर कृपा करीने मनुष्यस्वरूपनुं धारण करीने पोतानो संबंध करावीने पोताना स्वरूपनुं ज्ञान करावे छे त्यारे जीव जे ते पंचविषय थकी मुकाय छे. अने आत्मा परमात्माना स्वरूपने साक्षात्कार जाणे छे. अने जन्म-मरणना दुःखथकी मुकाइने अविनाशी सुखने पामे छे. हवे ते परमात्मा अने तेमना संत ते जीवने केवी रीते ज्ञान आपे छे ?

तो पोताना ज्ञानरूपी प्रकाशे करीने नित्य, निमित्त, प्राकृत अने

आत्यंतिक प्रलयनुं रूप देखाडीने जीवने ब्रह्मसंगाते एकताभाव करावीने ब्रह्मना प्रकाशक एवा जे परब्रह्म तेना स्वरूपनो प्रत्यक्ष निश्चय करावे छे त्यारे तेना श्रोत्रनी वृत्ति छे तेनो मायिकभाव टळीने दिव्य भावने पामे छे. अने तेवी ज रीते ते नेत्र इन्द्रियमांथी मायिक आकार मात्रनो प्रलय करावीने पोतानुं प्रत्यक्ष दर्शन आपीने दिव्य भावने पमाडे छे. रसना इन्द्रियनी वृति छे तेने मायिक रसमात्रनो प्रलय करावीने पछे पोतानी प्रसादी जमाडीने तथा पोतानां चरित्र गवडावीने दिव्यभावने पमाडे छे अने पोताने चड्यां चंदन, पुष्प, आदिक तेनी सुगंधीए करीने नासिका इन्द्रियनी वृत्तिने दिव्यभावने पमाडे छे. एवी रीते दश इन्द्रियो अने चार अंतःकरण तेने भगवान अने भगवानना संत जे ते पोतानो संबंध करावीने तेने ज्ञान आपीने इन्द्रियोना मायिक विषयनो प्रलय करावीने पोताना स्वरूपमां जोडावीने दिव्य भावने पमाडे छे. पछी ते जीवने भगवान अने संतना स्वरूपनो निश्चय थाय छे. जेम हीरे करीने हीरो विंधाय छे अने मणिए करीने मणि विंधाय छे तेम भगवान अने भगवानना संतना स्वरूपनो निश्चय ते भगवान अने भगवानना संत वते ज थाय छे. पण मायिक इन्द्रियो अंतःकरणनी समजणे करीने भगवान अने संतनुं स्वरूप ओळख्यामां आवतुं नथी.

ते माटे दश इन्द्रियो अने चार अंतःकरण तेनी जे वृत्तिओ तेने भगवान अने भगवानना संतना स्वरूपमां जोडी देवी. अने अशुभ पंचविषय तेनो त्याग करवो. अने एवी रीते भगवान अने संतना संबंधने जीव पामे छे तेना अंतरमां प्रकाश थाय छे. अने ते प्रकाशना मध्ये भगवान अने संतनुं स्वरूप अनंत प्रतापे युक्त देखाय छे. अने ते जीवात्मा महाबळने पामे छे. कहेतां मोटा ब्रह्मादिक अने कामादिक

दोष लथडीयां लेवडावे छे ते कामादिकनी गणतरी भगवानना भक्तने रहेती नथी. अने तेने तो तुच्छ करी जाणे छे. अने ब्रह्मानंद सुखने पामे छे. अने स्वतंत्र थाय छे कहेतां मायानुं आवरण अनादिनुं हतुं ते टळी जाय छे. अने मायानुं आवरण टळ्युं त्यारे तो ते आत्मा अक्षर ब्रह्मरूप थाय छे अने ते अक्षरमां तो भगवान अखंड रह्या छे. माटे एवा अद्‌भुत सुखने पामे छे अने ते आत्मा पोताना सुखना पारने पामतो नथी. अने पोताथकी पर एक परमात्मा ते अधिक रहे छे. अने ते परमात्माना सुखे करीने ज परमआनंद पामे छे. ते परमात्मा अने तेना संतनो आज तमारे साक्षात्कार संबंध थयो छे अने जेने भगवान अने भगवानना संतना स्वरूपनो निश्चय थाय छे ते आत्मा तो अक्षर-ब्रह्मना भावने पामे छे."

इति श्रीसुख सिद्धांत ६७ समाप्त।

६८ विषयः—त्रण गुणमां रहीने जीव कर्म करे छे तेथी दुःख पामे छे.

श्री हरिकृष्णाय नमोनमः—संवत् १९१६ना भादरवा वदि ५ ने दिवस महाराज श्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्री टाणा मध्ये भट्ट प्रभुरामने घेर उगमणे वार ओरडानी ओसरीमां ढोलिया उपर गादी तकीया नखावीने ते उपर विराजमान थया हता. श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां. मस्तक उपर गुढा रंगनी पाघ बांधी हती. कंठमां पुष्पना हार धारण कर्या हता. पाघमां तोरा लटकता हता. अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणा हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछे संध्या आरती थया पछी महाराज बोल्या जे—"सर्वे सांभळो एक वार्ता करवी छे जे आ जीव सर्वे छे ते त्रण गुणमां मळीने

मायिक एवा जे पंचविषयना भोग भोगवे छे अने तेना कर्मना फळे करीने सुख दुःखने पामे छे. तेमां रजोगुणनी दश इन्द्रियो छे, तमो-गुणना पांचभूत अने पांच विषय छे. सत्त्वगुणनां चार अंतःकरण अने इन्द्रियो अंतःकरणना देवता छे. अने ते इन्द्रियो अंतःकरणे करीने जीव जे ते त्रिगुणात्मक कर्म करे छे. अने ते कर्मानुसार कर्मनुं फळ आकाश, पाताळ अने मृत्युलोकने विषे रहीने भोगवे छे. अने ते फळ धर्म, अर्थ अने कामरूप छे. तेमां सत्त्वगुणी कर्मनुं फळ स्वर्गादिक छे, रजोगुणनुं फळ मध्यलोक छे अने तमोगुणी कर्मनुं फळ पाताळ लोक छे. एवी रीते विश्वनी उत्पत्ति, स्थिति अने प्रलय तेने विषे जीव जे ते परमेश्वर ने न जाणवारूप मायाए करीने मोहने पामतो थको सुखदुःखने भोगवे छे. अने सर्वे जीव जे ते धर्म, अथ अने कामपर वर्ते छे. पण मोक्षने मार्गे चालवुं घणुं कठण छे अने मोक्षना दाता जीवने मळवा आतिशय दुर्लभ छे. अने मोक्षना दाता भगवान के भगवानना एकां-तिक पंचविषयना त्यागी संत तेनो संबंध अने तेनी आज्ञा पाळवी, तेने करीने जीव कृतार्थ थाय छे.

—अने जेने भगवान अने भगवानना संतनो संबंध थाय अने ते तमोगुणी जीव होय तो पण ते जीवनुं कल्याण थाय छे. अने तेनां जे तमोगुणी कर्म अने तेनुं फळ जे नरकमां जावुं, ते सर्वे भगवान अने संतना संबंधे करीने बळीने भस्म थइ जाय छे. अने सत्त्वगुणी कर्मे करीने स्वर्गमां जवानो होय अने तेने जो कल्याणकारी एवा जे भगवान के भगवानना संतनो अवगुण आवे तो तेने मोटुं पाप लागे छे. अने तेने सत्त्वगुणनुं फळ जे स्वर्गादिकमां जवुं तेनो नाश थइ जाय छे. अने ते महा अधोगतिने पामे छे.

माटे पोताना आत्माना मोक्षने इच्छता होय तेने तो अति—नि-

र्मानी, निष्कामादिक गुण राखीने पोतानुं मननुं गमतुं मुकीने प्रत्यक्ष भगवान अने भगवानना संतना दासानुदास थइने तेनो समागम करवो. अने एम समजे छे तेने ज मनुष्यना देहनो परम लाभ थाय छे. अने तेथी उलटुं चालवुं अने प्रत्यक्ष परमात्मा अने तेना संतनो अवगुण लेवो अने द्रोह करवो ए ज मोटुं पाप छे. केम केः—

अन्यक्षेत्रे कृतंपापं तीर्थक्षेत्रे विनश्यति ।
तीर्थक्षेत्रे कृतंपापं वज्रलेपो भविष्यति ॥

ए श्लोकनो एज अर्थ छे जे—"बीजे ठेकाणे पाप कर्यां होय अने ते जो तीर्थरूप जे प्रत्यक्ष भगवान अने भगवानना संत, तेमनो गुण लइने तेमने शरणे जाय तो तेनां पाप सर्वे नाश थइ जाय छे अने तेनो जो द्रोह करे तो ते पाप कोइ काळे छूटे नहीं." माटे तीर्थरूप जे महात्मापुरुष तेमनो सदाय गुण लेवो-अने अवगुण तो क्यारेय लेवो नहीं. अने पोताना दोष जोवा अने ते दोषनो त्याग करवो. तेवी रीते समजे तेनुं ज कल्याण थाय छे. अने तेज साचो भगवाननो भक्त छे."

इति श्री मुखसिद्धांत ६८ समाप्त ॥

६९ विषयः—प्रत्यक्षना संबंधथी पामर जीवनो पण मोक्ष थाय.

श्री हरिकृष्णाय नमोनमः—संवत् १९१६ना भादरवा वदि ६ ने दिवस महाराज श्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्री टाणा मध्ये भट्ट यदुराम जगजीवनने घेर उगमणे बार ओरडानी ओसरमां ढोलीया—उपर गादी तकीया नखावीने विराजमान थया हता. सर्वे कसुंबल वस्त्र धारण कर्यां हतां. पुष्पना हार धारण कर्या हता. बे हाथने विषे बाजुबंध अने गजरा धारण कर्या हता. बे कान उपर गुच्छ शोभी रह्या हता. पाघमां तोरा

लटकता हता अने हाथमां रूमाल धारण कर्यो हतो. अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तोनी सभा भराइने बेठी हती.

पछे महाराज कृपा करीने बोल्या जे–"आ सर्वे मनुष्यमात्र छे ते पोताना देहना रक्षणने अर्थे ज दाणा भेगा करी राखे छे. ते ज्यारे दुकाळ पडे त्यारे ते दाणाने सुखेथी खाय छे. अने तेने दुःख थतुं नथी.

–तेम पोताना जीवना मोक्षने अर्थे जतन करवुं. केम के अंतसमो छे ते अतिशय कठण छे. ते शेठ शाहुकार, राजा, रंक, हिन्दु, मुसलमान आदिक जीव प्राणीमात्रने काळनो भय छे. केम के देह छे ते तो जरूर नाश पामशे अने ज्यारे देह नाश पामशे त्यारे दुःख पण थया विना रहेशे ज नहीं. माटे ते दुःख थकी उगरवानो उपाय हमणां तत्काळ करवो. केम के देहनो एक पळनो पण निर्धार नथी. माटे हमणां तत्काळ एवो उपाय करवो जे अंत समे काम आवे अने दुःख न थाय. अने आत्मा अविनाशी सुखने पामे.

त्यारे कोइ एम कहेशे जे अतसमो आवशे त्यारे उपाय करीशुं ? तो ते वखते उपाय थतो नथी. जेम घरमां लाह्य लागे अने ते लाह्य ने ओलववासारु कूवो गाळवा मांडे ते कूवाने पाणीए करीने घर ओलाय नहीं. अने जे कूवो, घर सळग्या म्होर गाळी मुकयो होय तेने पाणीए करी लाह्य ओलाय छे. तेम अंतसमो आव्या अगाउ हमणां तत्काळ भगवान के भगवानना एकान्तिक पंचविषयना त्यागी संत तेने खोळी काढीने तेनो आशरो करवो. अने तेनी पासेथी ज्ञान पामीने निर्वासनिक थइने देह छते पोताना आत्माना मोक्षनो निश्चय करी लेवो. पण ते वातमां गाफलाइ राखे नहीं ए ज बुद्धिवाळो छे. अने तेने अंतसमो आवशे त्यारे देहने मुकीने भागवती तनुए करीने भगवानना धामने पामशे.

एवी रीते निर्बीज योगने ज्ञाने करीने आत्माने ब्रह्मना भावने पमाडे छे. अने जेने प्रत्यक्ष भगवान के भगवानना निर्वासनिक संत, तेना मुखथकी निर्बीज सांख्य अने निर्बीज योगनुं ज्ञान सिद्ध थयुं होय ते आत्मा जे ते पंचविषयनो त्याग करीने निर्वासनिक थाय अने अखंड ब्रह्मस्थितिमां वर्ते. कहेतां तेने सुख दुःख, मान अपमान हाण्य तेने विषे समभाव थइ जाय पण सुख दुःखादिके करीने हरख शोकने पामे नहीं.

—अने एवो ब्रह्मभावने पाम्यो जे आत्मा तेने पछी सबीज एवुं जे सांख्य तेनुं ज्ञान करावे कहेतां ब्रह्मना प्रकाशक अने दिव्यमूर्ति अने ब्रह्मने विषे अखंड रह्या छे एवा जे परब्रह्म परमात्मा कर्तुमकर्तुम् अने अन्यथा कर्तुम् समर्थ भगवान तेने प्रत्यक्ष देखाडे अने ते प्रत्यक्ष भगवानना स्वरूपनो उत्तम निर्विकल्प निश्चय करावे अने पछी तेने सबीज योगने ज्ञाने करीने प्रत्यक्ष परमात्मानी मूर्तिने विषे नवधा भक्तिए करीने जोडावे.

एवी रीते जीवने प्रत्यक्ष भगवान के भगवानना निर्वासनिक संत मळे अने तेनो जीव निर्मानी थइने आशरो करे अने तेनी आज्ञामां वर्ते पछी भगवान अने भगवानना संत तेना उपर कृपा करीने निर्बीज सांख्य अने निर्बीज योग तथा सबीज सांख्य अने सबीज योग ए चार प्रकारनुं ज्ञान करावे त्यारे ते जीवने त्रण शरीररूप जे अविद्या, मायानो पास अनादि काळनो छे ते टळी जाय छे अने तेने ब्रह्ममय तनु बंधाय छे. पछी ते मुक्तने एम भासे छे जे मारे विषे कोइ काळे माया हती ज नहीं एवा अखंड अद्‌भूत आनंदने पामे छे. अने भगवानना साधर्मपणाने पामीने स्वतंत्र थाय छे, कहेतां भगवान जेम काळ, कर्म ने मायाए रहित छे तेम ते भक्त पण काळ, कर्म अने मायाए रहित थाय छे.

–माटे एवो जे भगवान अने भगवानना संतना संबंधनो मोटो लाभ तेने जाणीने तेनी आगळ निर्मानीपणे दीन आधीन रहीने सेवा अने समागम करवो, तो तेने एवा अलौकिक सुखनी प्राप्ति थाय छे पण मान तथा कोइ प्रकारनुं अभिमान राखीने सत्संग करे तेने ते सुखनी प्राप्ति थती नथी."

इति श्री मुखसिद्धांत ७० समाप्त ॥

७१ विषयः—पंचविषयरूपी रोग टाळवा विषे

श्री हरिकृष्णाय नमोनमः—संवत् १९१६ ना भादरवा वदि ८ ने दिवस महाराज श्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्री वरल मध्ये भट्ट परजाराम लालजीने घेर उत्तरादे वार ओरडानी ओसरीमां गादी तकीया नखावीने ढोलिया उपर विराजमान थया हता. सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां. मस्तके सोनेरी कसुंबल पाघ बांधी हती. सर्वे अंगने विषे पुष्पनां आभूषणो धारण कर्यां हतां. अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणा हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी महाराज हरिकृष्ण भगवान बोल्या जे "सर्वे सरत दइने सांभळो; एक वार्ता करीए छीए. जेम कोइने महारोग थयो होय अने ते कोइ रीते टळतो न होय पछी तेने कोइ भारे वैद मळे अने ते वैद औषध खवडावे अने तेनी चरी पाळवानी कहे ते प्रमाणे चरी पाळे तेने रोग मटी जाय अने ते महासुखियो थाय अने औषध खाय पण वैदना कह्या प्रमाणे चरी पाळे नहीं तो तेनो रोग मटे नहीं अने उलटो विकार थाय ते निश्चय मरे. केम के एक तो रोग हतो अने बीजुं चरी न पाळी ते विषफूटक थाय. माटे औषध खाय अने तेनी चरी न पाळे तेनो रोग मटे नहीं.

तेम सर्वे जीवने पंचविषयनी वासनाए करीने जन्म मृत्युरूपी महारोग थयो छे. ते रोग कोइ रीते टळे एम नथी. अने कोइ देव ब्रह्मादिक प्रकृतिना कार्य मांहेनो ए रोगने टाळवाने समर्थ नथी. अने ए रोगने टाळवासारु जे जे वैदरूपी गुरु मळे छे ते सर्वे धनधुता तथा कामी, लोभी, स्वादिया मळे छे, ते कोइ ए रोग टाळवाने समर्थ नथी. केम के जेने पोतानो रोग टळ्यो नथी ते बीजानो रोग केम काढी शके ! अने एवा रोगीया वैद्ने औषधरूप उपदेशे करीने तो उलटो रोग वृद्धि पामे छे. केम के पंचविषयनी वासनारूपी रोग छे ते जे जे आ लोकमां गुरु मळे छे तेने पोतानी वासना टळी न होय ते बीजानी वासना शुं टाळे ? माटे ते थकी तो वासना उलटी वृद्धि पामे छे. ते माटे ए रोगने टाळवाने तो मायाथी पर एवा जे परमात्मा ते ज एक समर्थ छे. कां ते परमात्माना ज्ञानने पामीने पंचविषयनो त्याग करीने निर्वासनिक थया होय एवा जे परमात्माना संत ते ए रोग टाळवाने समर्थ छे. पण जे स्त्री, धननां लालचु होय तथा सारा सारा रस, घी, गोळ, दूध, दहीं, खांड, साकर, तेने खावाना लालचु होय एवा गुरु थकी पंचविषयनी वासनारूपी रोग कोइ काळे टळे नहीं अने सत्-गुरु एवा जे प्रगट भगवान के भगवानना संत ते ए रोग टाळवाने समर्थ छे.

ते केवी रीते रोग टाळे छे ? तो जेम वैद् औषध आपीने चरी पळावे छे अने ते वैदना कह्या प्रमाणे चरी पाळे तो तेने महारोग टळे छे. अने ते जीव सुखने पामे छे. तेम प्रत्यक्ष भगवान कां ते भगवानना निर्वासनिक संत ते मळे अने तेनो आशरो करीने ते भगवान अने संत जे जे आज्ञा वतावे ते प्रमाणे वर्तवुं ते रूपी चरी पाळे अने भग-वाननी नव प्रकारनी भक्तिरूपी औषधि खाय कहेतां इन्द्रियोने नियममां

राखीने पंचविषयनो त्याग करीने भगवाननी नव प्रकारनी भक्ति करे तो तेनो जन्म-मृत्युरूपी महारोग ते टळी जाय छे अने ते जीव ब्रह्म रूप थइने भगवानना अक्षरधामने पामे छे. अने भगवाननी भक्तिरूपी औषधि खाय पण विषयना त्यागरूपी चरी न पाळे तथा चोरी, छीनाळी, दारु, माटी, गांजो तमाकु, आदिक जे अधर्मकर्म तेनो त्याग न करे तो तेनो जन्म-मृत्यु रूपी रोग कोइ काळे टळे नहीं. अने सामुं रोग वृद्धि पामे छे. जेम रोगीयो औषध खाय अने चरी न पाळे तेनो रोग वृद्धि पामे छे तेम भगवाननी भक्ति धर्मे रहित करे तेने जन्म मृत्यु रूपी रोग वृद्धि पामे छे. अने जे धर्मे सहित भगवाननी भक्ति करे तेनो जन्म मृत्यु रूपी रोग टळे छे.

माटे जेने जन्म मृत्यु रूपी रोगने टाळीने महासुखीया थवुं होय तेने प्रत्यक्ष अमारो कां अमारा निर्वासनिक संत तेनो दृढ आशरो करीने, सर्वे प्रकारे अधर्मनो त्याग करीने, मन-कर्म वचने आज्ञा प्रमाणे वर्तवुं. अने ज्यारे अधर्मनो त्याग करीने धर्मने मार्गे चाले छे त्यारे ते आत्मानी सद्वासना वृद्धि पामे छे अने असद्वासना जे पंचविषयना रोग ते टळी जाय छे. अने तेने अमारे विषे अने अमारा निर्वासनिक संत तेने विषे अतिशय प्रीति थाय छे अने मारा विना अने मारा संत विना बीजा मायिक पंचविषयना पदार्थमां वैराग थाय छे. माटे जेने जन्म-मृत्युरूपी रोग टाळीने महासुखीया थवुं होय तेने धर्मे सहित मारी भक्ति करवी. अने मारा निर्वासनिक संतनी सेवा अने समागम करवो अने धर्मे सहित भक्ति, सेवा अने समागम करे छे तेना भाग्यनो पार नथी अने ते तो देहने मुकीने भगवानना धामने पामशे. अने जेने धर्म पाळवामां कसर हशे के अमारा अथवा अमारा निर्वासनिक साधुना वचनमां विश्वास जेने नहीं होय तो तेने घणी खोट जशे."

इति श्री मुखसिद्धांत ७१ समाप्त ॥

तेम सर्वे जीवने पंचविषयनी वासनाए करीने जन्म मृत्युरूपी महारोग थयो छे. ते रोग कोइ रीते टळे एम नथी. अने कोइ देव ब्रह्मादिक प्रकृतिना कार्य मांहेनो ए रोगने टाळवाने समर्थ नथी. अने ए रोगने टाळवासारु जे जे वैद्रूपी गुरु मळे छे ते सर्वे धनधुता तथा कामी, लोभी, स्वादिया मळे छे, ते कोइ ए रोग टाळवाने समर्थ नथी. केम के जेने पोतानो रोग टळ्यो नथी ते बीजानो रोग केम काढी शके ! अने एवा रोगीया वैद्ने औषधरूप उपदेशे करीने तो उलटो रोग वृद्धि पामे छे. केम के पंचविषयनी वासनारूपी रोग छे ते जे जे आ लोकमां गुरु मळे छे तेने पोतानी वासना टळी न होय ते बीजानी वासना शुं टाळे ? माटे ते थकी तो वासना उलटी वृद्धि पामे छे. ते माटे ए रोगने टाळवाने तो मायाथी पर एवा जे परमात्मा ते ज एक समर्थ छे. कां ते परमात्माना ज्ञानने पामीने पंचविषयनो त्याग करीने निर्वासनिक थया होय एवा जे परमात्माना संत ते ए रोग टाळवाने समर्थ छे. पण जे स्त्री, धननां लालचु होय तथा सारा सारा रस, घी, गोळ, दूध, दहीं, खांड, साकर, तेने खावाना लालचु होय एवा गुरु थकी पंचविषयनी वासनारूपी रोग कोइ काळे टळे नहीं अने सत्-गुरु एवा जे प्रगट भगवान के भगवानना संत ते ए रोग टाळवाने समर्थ छे.

ते केवी रीते रोग टाळे छे ? तो जेम वैद् औषध आपीने चरी पळावे छे अने ते वैद्ना कह्या प्रमाणे चरी पाळे तो तेने महारोग टळे छे, अने ते जीव सुखने पामे छे. तेम प्रत्यक्ष भगवान कां ते भगवानना निर्वासनिक संत ते मळे अने तेनो आशरो करीने ते भगवान अने संत जे जे आज्ञा वतावे ते प्रमाणे वर्तवुं ते रूपी चरी पाळे अने भग-वाननी नव प्रकारनी भक्तिरूपी औषधि खाय कहेतां इन्द्रियोने नियममां

राखीने पंचविषयनो त्याग करीने भगवानना नव प्रकारनी भक्ति करे तो तेनो जन्म-मृत्युरूपी महारोग ते टळी जाय छे अने ते जीव ब्रह्म रूप थइने भगवानना अक्षरधामने पामे छे. अने भगवाननी भक्तिरूपी औषधि खाय पण विषयना त्यागरूपी चरी न पाळे तथा चोरी, छीनाळी, दारु, माटी, गांजो तमाकु, आदिक जे अधर्मकर्म तेनो त्याग न करे तो तेनो जन्म-मृत्यु रूपी रोग कोइ काळे टळे नहीं. अने सामुं रोग वृद्धि पामे छे. जेम रोगीयो औषध खाय अने चरी न पाळे तेनो रोग वृद्धि पामे छे तेम भगवाननी भक्ति धर्मे रहित करे तेने जन्म मृत्यु रूपी रोग वृद्धि पामे छे. अने जे धर्मे सहित भगवाननी भक्ति करे तेनो जन्म मृत्यु रूपी रोग टळे छे.

माटे जेने जन्म मृत्यु रूपी रोगने टाळीने महासुखीया थवुं होय तेने प्रत्यक्ष अमारो कां अमारा निर्वासनिक संत तेनो दृढ आशरो करीने, सर्वे प्रकारे अधर्मनो त्याग करीने, मन-कर्म वचने आज्ञा प्रमाणे वर्तवुं. अने ज्यारे अधर्मनो त्याग करीने धर्मने मार्गे चाले छे त्यारे ते आत्मानी सद्वासना वृद्धि पामे छे अने असद्वासना जे पंचविषयना रोग ते टळी जाय छे. अने तेने अमारे विषे अने अमारा निर्वासनिक संत तेने विषे अतिशय प्रीति थाय छे अने मारा विना अने मारा संत विना बीजा मायिक पंचविषयना पदार्थमां वैराग थाय छे. माटे जेने जन्म-मृत्युरूपी रोग टाळीने महासुखीया थवुं होय तेने धर्मे सहित मारी भक्ति करवी. अने मारा निर्वासनिक संतनी सेवा अने समागम करवो अने धर्मे सहित भक्ति, सेवा अने समागम करे छे तेना भाग्यनो पार नथी अने ते तो देहने मुकीने भगवानना धामने पामशे. अने जेने धर्म पा[illegible] थइ [illegible] भक्ति [illegible]सर हशे के अमारा अथवा अमारा निर्वासनिक साधुना व[illegible]
तेने नहीं होय तो तेने घणी खोट जशे."

७३ विषयः—जीव, ईश्वर, माया, ब्रह्म अने परब्रह्मनां रूप.

श्रीहरिकृष्णाय नमो नमः–संवत १९१७ ना चैत्र वद ११ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गामश्री टींबा मध्ये पोताना मंदिरमां हींडोळाखाट उपर विराजमान थया हता. सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां. गुलाब अने मोगराना पुष्पना हार धारण कर्या हता. बे कानउपर गुच्छ शोभी रह्या हता. मस्तके गुलाबी रंगना फेंटामां तोरा लटकता हता. ललाटने विषे केसरनी आड अने कंकुनो चांदलो कर्यां हतां, अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तोनी सभा भराइने बेठी हती.

प्रश्नः–पछी गाम अंकेवाळीयाना राणा देवीसिंग अमरसिंगे प्रश्न पूछ्युं जे–"जीवनुं शुं रूप छे? ईश्वरनुं शुं रूप छे? मायानुं शुं रूप छे? ब्रह्मनुं शुं रूप छे? अने परब्रह्मनुं शुं रूप छे? ते हे महाराज कृपा करीने कहो."

पछी महाराज बोल्या जे–"सारा प्रश्न पूछ्या. सांभळो एनो उत्तर करीए जे–जीवनुं रूप तो एवुं छे जे स्थूळ, सूक्ष्म अने कारण, ए त्रण शरीर; अने जाग्रत, स्वप्न अने सुषुप्ति, ए त्रण अवस्था, तेने विषे अहंवृत्तिए करीने रह्यो अने तेना सुख–दुःखनो भोक्ता, तेने जीव कहीए.

–अने ईश्वर केवो छे? तो मायानो नियंता छे. अने माया थकी विजाति अने अनादि, सत्य, स्वयंज्योति, सर्वज्ञ, दिव्यविग्रह अने समग्र आकारमात्रनी प्रवृत्तिना कारण अने क्षेत्रज्ञ एवो ईश्वर छे, अने वळी वैराट्, सूत्रात्मा अने अव्याकृत, ए त्रण शरीर अने उत्पत्ति, स्थिति अने प्रलय, ए त्रण अवस्थाने विषे अहंभावनो धरनारो तेनो भोक्ता, तेने पण इश्वर कहीए.

–अने माया जे ते त्रिगुणात्मक छे, जड चिदात्मक छे, अने नित्य

छे, अने निर्विशेष छे, अने महदादिक समग्र तत्त्व अने जीवमात्र तेनुं क्षेत्र छे, अने भगवानननी अनादि शक्ति छे, तेने माया कहीए.

—अने ब्रह्म जे ते मायाथकी पर छे, अने अखंड छे, सर्वव्यापक छे, अने सर्वाधार छे, अने सर्वना आत्मा छे. अने सर्वमां अन्वय थका व्यतिरेक छे, अने परब्रह्मना अंगनो प्रकाश छे, अने परब्रह्मने रह्यानुं ठेकाणुं छे, तेने ब्रह्म कहीए.

अने परब्रह्म जे ते केवा छे? तो तेजोमय एवुं जे दिव्य सिंहासन तेना उपर सदाय दिव्यमूर्तिमान थका विराजमान् एवा, अने अनंत ऐश्वर्य, अनंत शक्तिओ अने अनंत पार्षदे विंटाणा थका सदाय पोताना एकान्तिक भक्तने अलौकिक अने अखंड सुख आपे छे. अने वेद जेने नेति नेति कहे छे. अने कर्तुमकर्तुम् अने अन्यथाकर्तुम् समर्थ छे, एवा जे परब्रह्म ते जे ते पुरुष, प्रकृति अने काळ, एवी जे पोतानी शक्तिओ तेना वडे करीने अनंतकोटि ब्रह्मांडनी उत्पत्ति, स्थिति अने प्रलय तेने करावे छे. अने पोते तो पोताना अक्षरधामने विषे सदाय विराजमान छे, तेने परब्रह्म कहीए. एवी रीते जीव, ईश्वर, माया, ब्रह्म अने परब्रह्मना स्वरूप छे."

इति श्रीमुख सिद्धांत ७३ समाप्त ।



७४ विषय :—सोळ प्रश्नना अर्थ

श्री हरिकृष्णाय नमोनमः—संवत् १९१७ना चैत्रवद १२ ने दिवस महाराज श्री हरिकृष्ण भगवान गामश्री टींबा मध्ये पोताना मंदिरमां हींडोळाखाट उपर विराजमान हता. सर्वे जरीयानी वस्त्र धारण कर्यां हतां पुष्पना आभूषणो सर्वे अंगमां शोभी रह्यां हतां. कंकुनो चांदलो

कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरि-भक्तोनी सभा भराइने बेठी हती.

प्रश्नः–पछी राणा देवीसिंगे सोळ प्रश्न लखीने पोताना उतारेथी तेना गोर कानजीने तथा खवास वसरामने महाराज पासे मोकल्या. ते तेणे आवीने हाथ जोडीने महाराजने कह्युं जे–“ आ सोळ प्रश्नो खरडो लखीने दरबारे आप्यो छे तेना उत्तर कृपा करीने करो.”

पछी महाराजे ते प्रश्न वांच्या तेना नाम जे–(१) “ परम शक्ति ते केने कहीए? (२) शक्ति केने कहीए? (३) विद्या केने कहीए? (४) अविद्या केने कहीए? (५) ब्रह्म केने कहीए? (६) पुरुषोत्तम केने कहीए? (७) धर्म केने कहीए? (८) अधर्म केने कहीए? (९) गृहस्थ केने कहीए? (१०) त्यागी केने कहीए? (११) मुक्त केने कहीए? (१२) बद्ध केने कहीए? (१३) परमार्थ केने कहीए? (१४) स्वार्थ केने कहीए? (१५) क्षत्रिय केने कहीए? (१६) ब्राह्मण केने कहीए ?

एवी रीते विनंति महाराजाधिराज महाराज श्री ७ हरिकृष्णजी महाप्रभु तमे कृपा करीने आ सोळ प्रश्नो उत्तर करशो, तेथी संशय मटशे अने आप तो दयाळु छो ते मारा उपर कृपा राखजो.”

पछी महाराज कागळ वांचीने हसता थका बोल्या जे–“बहु सारा प्रश्न लख्या छे, ते लो, एना उत्तर करीए ते सर्वे सांभळो. (१) जे परम शक्ति तेने कहीए जे परमेश्वरनुं कर्तुमकर्तुम् अने अन्यथा कर्तारूप जे ऐश्वर्य ते परम शक्ति छे. (२) अने शक्ति तो ए जे मूळमाया, कहेतां त्रिगुणात्मक छे, अने जड चिदात्मक छे, अने नित्य छे, अने निर्विशेष छे, तेने शक्ति कहीए. (३) अने विद्या तो तेने कहीए जेजेने करीने आत्मा –परमात्मानुं ज्ञान थाय. तेमां विद्याओ अढार छे, तेमां केटलीक व्यवहारसाधक छे अने केटलीक मोक्षसाधक छे. तेमां आ लोकमां फळ मळे ते व्यवहारसाधक अने परलोकमां फळ मळे ते मोक्ष-

साधक छे. ते मोक्षसाधकमां पण एक कर्मविद्या छे अने एक ब्रह्मविद्या छे. ते कर्मविद्या पापनो क्षय करे छे अने ब्रह्मविद्या मोक्ष आपे छे. तेने विद्या कहीए. (४) अने अविद्या तो एने कहीए जे पंच-विषयनी प्रवृत्तिनी जे जे कथा वार्ता ते अविद्या कहेतां आत्मा परमात्माना ज्ञानमां विरोधी तेने अविद्या कहीए. (५) अने ब्रह्म तो तेने कहीए जे परब्रह्म पुरुषोत्तमना अंगनो प्रकाश तथा ज्ञानने पामीने निर्वासनिक थया एवा जे मुक्त ते पण ब्रह्म छे. (६) अने पुरुषोत्तम तो तेने कहीए जे अक्षरातीत एवा अने जे अक्षररूप पुरुष ते मध्ये उत्तम एवा जे परमात्मा तेने पुरुषोत्तम कहीए (७) अने धर्म तो तेने कहीए जे इन्द्रियो अंतःकरणनो निग्रह करवो तथा श्रुति, स्मृतिए प्रतिपादन कर्यो ए धर्म छे. (८) अने अधर्म तो ए जे सत्शास्त्रना वचनथी विरुद्ध वर्तवुं तेने अधर्म कहीए. (९) अने गृहस्थ तो ए जे पंचविषयने भोगवतो छतो स्त्री-छोकरांवाळो अने वेदना धर्मने पाळतो तेने गृहस्थ कहीए. (१०) अने त्यागी तो तेने कहीए जे पंचविषयनो त्याग करीने तथा स्त्री छोकरांनो त्याग करीने आत्मारूप थइने परमात्माने भजे तेने त्यागी कहीए (११) अने मुक्त तो तेने कहीए जे पंचविषयनी वासना थकी मुकाइने ब्रह्मरूप थइने परब्रह्मने साक्षात्कार पाम्या तेने मुक्त कहीए. (१२) अने बद्ध तो ए जे पंचविषयने विषे आसक्त कहेतां विषयने भोगवनारा तेने बद्ध कहीए. (१३) अने परमार्थ तो ते जे परने उपकार करवो, तथा पोताना आत्माने मायाना बंधन थकी मूकाववा सारु सत् पुरुषनो समागम करवो तथा जे जे शुभ कर्मरूप साधन करवां ते सर्वे परमार्थ छे. (१४) अने स्वार्थ तो ए जे देह अने देहना संबंधीना पोषणना अर्थे जे जे उपाय करवो तेने स्वार्थ कहीए. (१५) अने क्षत्रिय तो ए जे ब्राह्मण, साधु अने गाय तेनी रक्षा करवी. अने शूरवीरपणुं राखवुं, धीरज राखवी, उदारपणुं

राखवुं, प्रजानुं पालन करवुं, तेने क्षत्रिय कहीए. (१६) अने ब्राह्मण तो ए जे शम, दम, संतोषादिक दश लक्षणे युक्त तथा ब्रह्मरूप थइने परब्रह्मने जाणे तेने ब्राह्मण कहीए.

एवी रीते उत्तर करीने पछे अक्षरमुक्तानंद स्वामीने आज्ञा करी के तमे ए सोळ प्रश्ननो उत्तर लखी आपो." पछी अक्षरमुक्तानंद स्वामीए कह्युं जे "बहु सारुं महाराज ! हुं लखी आपीश."

इति श्री मुखसिद्धांत ७४ समास ॥

७५ विषयः—सांख्यविचार

श्रीहरिकृष्णाय नमो नमः—संवत् १९१८ ना पोष वद ९ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री खोपाळा मध्ये पटेल धरमशी भक्तने घेर उगमणे वार ओरडानी ओशरीमां ढोलिया उपर विराजमान थया हता. सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां. मस्तके कसुंबल फेंटो बांध्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिजननी सभा भराइने बेठी हती.

पछी महाराज बोल्या जे—" भगवानना भक्त होय तेने एम विचार करवो जे 'परमेश्वरे आ जगत बनाव्युं छे ते शा सारु कर्युं हशे ? अने तेमां हुं ते कोण छुं ? अने क्यांथी आव्यो छुं ? अने पाछो क्यां जइश ?' तेनो पोताने तपास करवो. अने वळी 'आ मनुष्यनो देह ते परमेश्वरे शा सारु आप्यो छे ? अने तेने करीने शुं लाभ लेवाय छे ? तथा सर्वे इन्द्रियो अंतःकरणे करीने शुं लाभ लेवाय छे ? अने देह इन्द्रियो आदिकनो कोण प्रकाशक छे ? केम के इन्द्रियो, अंतःकरण तो जड छे अने ए तो गोलक मात्र छे.' एम अंतरदृष्टि करीने जोइए तो पोताने खबर पडे जे 'ए देह, इन्द्रियो, आदिकनो प्रकाशक तो हुं जीवात्मा छुं. अने मारा

प्रकाशक परमात्मा भगवान छे, पण हुं स्वतंत्र प्रकाशक नथी. केम के इन्द्रियो, अंतःकरण भगवान सर्जी आपे छे अने ते इन्द्रियो, अंतःकरणने देवरूपे करीने प्रकाशे छे तेणे करीने हुं जीवात्मा प्रकाशमान थयो छुं. अने इन्द्रियो, अंतःकरणे करीने जे जे करवुं होय ते थाय एम छे.'

—माटे एवो जे भगवाननो उपकार ते भगवानना भक्तने विचारवो अने पोताने भगवान परायण थवुं, पण कृतघ्नी न थवुं. अने जे भगवानना उपकारने नथी विचारतो ते जीवने तो अतिशय मोटुं पाप लागे छे. अने ते जीव चोराशीमां जन्ममरणनां वारंवार दुःख पामे छे. माटे जेने सुखिया थवुं होय तेने अधर्म—अनीतिनो त्याग करीने, धर्मे करीने इन्द्रियोने नियममां करीने, काने करीने भगवानना गुण सांभळवा, नेत्रे करीने भगवान अने भगवानना जनना दर्शन करवां, वाणीए करीने भगवानना गुण गावा; एवी रीते दश इन्द्रियो अने चार अंतःकरणनी वृत्तिओ तेने भगवानना स्वरूपमां जोडी दे तो जीवने अनंत जन्मनां जे पाप वळग्यां छे ते सर्व नाश पामी जाय छे अने तेने अंतरमां ज्ञानरूपी प्रकाश थाय छे. अने आ विश्वना कर्ता जे परमात्मा तेना स्वरूपनो उत्तम निर्विकल्प निश्चय थाय छे. अने ते जीव ब्रह्मरूप थइने भगवानना अक्षरधामने पामे छे.

माटे 'आ जे विश्व परमेश्वरे कर्युं छे ते जीवोना कल्याणने अर्थे कर्युं छे,' ए मर्मने जीव समजे तो तेने पंचविषयनी जे वासना ते सहेजे टळी जाय छे अने भगवानना स्वरूपमां अतिशय स्नेह थाय छे, अने ते भक्त देहने मूके त्यारे भगवानना धामने पामे. अने एवो भक्त होय तेने मायानुं पदार्थ कोइ बंधन करवाने समर्थ नथी."

इति श्री मुखसिद्धांत ७५ समाप्त ।

७६ विषय :-सत्संगमां सुख अने कुसंगमां दुःख

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः-संवत् १९१८ ना पोष वद १० ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री खोपाळा मध्ये पटेल सवजी भक्तने घेर उगमणे बार ओरडानी ओसरीमां गादी तकिया नखावीने ढोलियाउपर विराजमान थया हता. श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने मस्तके कसुंबल फेंटो बांध्यो हतो. अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी महाराज बोल्या जे-" जीवमात्र सुखने इच्छे छे अने दुःखने कोइ इच्छतुं नथी. ते मनुष्य, पशु, पंखी, कीडी, मकोडी, आदिक सर्वे प्राणीमात्र सुखने च्हाय छे अने दुःखने कोइ चाहतुं नथी, तो पण पूर्वने प्रारब्धे करीने सुख अने दुःख बेय आवे छे. ते सुखदुःख आवे छे तेनुं कारण शुं छे ?

-तो जे जे सुख आवे छे ते सत्संगे करीने आवे छे अने जे जे दुःख थाय छे ते कुसंगे करीने थाय छे. माटे पूर्वे जेणे सत्पुरुषनो समागम तथा सेवा करी हशे अने तेनी आज्ञा जेणे पाळी हशे तेने सुख प्राप्त थयुं छे. अने पूर्वे जेणे असत्पुरुषनो संग कर्यो हशे तेने दुःख प्राप्त थयुं छे. अने आज पण जे जे सत्पुरुषनो संग करशे अने जे तेनी सेवा करशे अने आज्ञा पाळशे तेने महासुख प्राप्त थशे. अने जे कुसंग करता हशे तेने महादुःख जरूर प्राप्त थशे. माटे जेने महासुखिया थवुं होय तेने सत्पुरुषनो समागम करवो अने सत्पुरुषनी सेवा करवी अने तेनी आज्ञा पाळवी. अने कुसंगनो संग करवो नहीं अने ते कुसंगीनी सेवा पण न करवी अने तेनी आज्ञा ये पाळवी नहीं. केम के जे भगवाननी आज्ञा पाळता नथी तेनुं नाम कुसंग छे.

-ते भगवाननी शी आज्ञा छे? तो मायिक एवा जे पंचविषय तेनो

त्याग करवो अने निर्वासनिक थवुं एज भगवाननी अनादिनी अचळ आज्ञा छे. ते जे जे पंचविषयनो त्याग करता होय अने त्याग करावता होय अने आत्मारूप पोताने जाणीने परमात्मानी उपासना करता होय ते पुरुषनो जे समागम करवो, तेनुं नाम सत्संग कहेवाय. अने जे पुरुष पंचविषयने विषे आसक्त होय अने पोतानो जे संग करे तेने पंचविषय भोगवावता होय अने त्यागी थइने स्त्रीओने उपदेश करता होय, द्रव्यनो संग्रह करता होय, सारां सारां भोजन करावीने खाता होय अने आत्मारूप थइने परमात्मानी उपासना न करता होय ते सर्वेने कुसंगी जाणवा. अने तेनो जे संग करे तेने आ लोक–परलोकमां महा दुःख थाय छे. अने जे सत्संग करे छे तेने आ लोक–परलोकमां महा सुख थाय छे अने सत्संगे करीने बुद्धिमां प्रकाश थाय छे. अने ते बुद्धिने प्रकाशे करीने आत्माने सुख थाय एवी क्रिया कराय छे. अने कुसंगे करीने बुद्धिमां अंधकार थाय छे. अने ते अंधकारे करीने जीवने दुःख थाय एवी क्रिया कराय छे.

जेम आंधळो चालवा जाय तो ते ज्यां त्यां खाडामां अने कांटामां पडीने दुःख पामे, तेम कुसंगे करीने जे जे काम करे तेमां दुःख ज थाय छे. अने जेम देखतो पुरुष चाले छे ते दुःखने नथी पामतो, तेम सत्संगे करीने जे जे काम करे छे तेने महासुख थाय छे. केम के बुद्धिना प्रकाशे करीने आ लोक–परलोकमां सुख थाय छे अने बुद्धिना अंधकारे करीने आ लोक परलोकमां दुःख थाय छे.

–केम के आ लोकमां पण जे जे बुद्धिना प्रकाशवाळा छे ते टाढे छांये वेठा वेठा कोइक सो रुपियानो महिनो खाय छे, कोइक पांचसो रुपियानो महिनो खाय छे. अने कोइक हजार रुपियानो महिनो खाय छे अने जे बुद्धिहीन छे ते तो दिवस आखो खरे तडके कोदाळी लइने

७६ विषय :-सत्संगमां सुख अने कुसंगमां दुःख

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः—संवत् १९१८ ना पोष वद १० ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री खोपाळा मध्ये पटेल सवजी भक्तने घेर उगमणे वार ओरडानी ओसरीमां गादी तकिया नखावीने ढोलियाउपर विराजमान थया हता. श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने मस्तके कसुंवल फेंटो वांध्यो हतो. अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी महाराज बोल्या जे—" जीवमात्र सुखने इच्छे छे अने दुःखने कोइ इच्छतुं नथी. ते मनुष्य, पशु, पंखी, कीडी, मकोडी, आदिक सर्वे प्राणीमात्र सुखने च्हाय छे अने दुःखने कोइ चाहतुं नथी, तो पण पूर्वने प्रारब्धे करीने सुख अने दुःख बेय आवे छे. ते सुखदुःख आवे छे तेनुं कारण शुं छे ?

—तो जे जे सुख आवे छे ते सत्संगे करीने आवे छे अने जे जे दुःख थाय छे ते कुसंगे करीने थाय छे. माटे पूर्वे जेणे सत्पुरुषनो समागम तथा सेवा करी हशे अने तेनी आज्ञा जेणे पाळी हशे तेने सुख प्राप्त थयुं छे. अने पूर्वे जेणे असत्पुरुषनो संग कर्यो हशे तेने दुःख प्राप्त थयुं छे. अने आज पण जे जे सत्पुरुषनो संग करशे अने जे तेनी सेवा करशे अने आज्ञा पाळशे तेने महासुख प्राप्त थशे. अने जे कुसंग करता हशे तेने महादुःख जरूर प्राप्त थशे. माटे जेने महासुखिया थवुं होय तेने सत्पुरुषनो समागम करवो अने सत्पुरुषनी सेवा करवी अने तेनी आज्ञा पाळवी. अने कुसंगनो संग करवो नहीं अने ते कुसंगीनी सेवा पण न करवी अने तेनी आज्ञा ये पाळवी नहीं. केम के जे भगवाननी आज्ञा पाळता नथी तेनुं नाम कुसंग छे.

—ते भगवाननी शी आज्ञा छे? तो मायिक एवा जे पंचविषय तेनो

फळीयामां गादी तकिया नखावीने ढोलिया उपर उगमणे मुखारविंदे विराजमान थया हता. श्वेत धोतियुं हीरकोरी पहेर्युं हतुं. मस्तके गुलाबी रंगनो फेंटो धारण कर्यो हतो अने बुट्टादार रेशमी अंगरखुं पहेर्युं हतुं गुलाबी रंगनी शाल ओढी हती अने सर्वे अंगमां पुष्पनां आभूषणो धारण कर्यां हतां. कंकुनो चांदलो कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

प्रश्नः–पछी महाराज बोल्या जे–"सर्वे साधुने तथा हरिभक्तोने अमे प्रश्न पूछीए छीए जे सर्वे दोषमां मोटो दोष ते कयो छे ? अने ते दोषथी अतिदोष ते कयो ? अने सर्वे गुण छे तेमां मोटो गुण कयो छे ? अने ते गुणथी पण अतिगुण ते कयो हशे ? ते कहो."

पछी धर्मानंद स्वामीए कह्युं जे–"भगवाननो द्रोह करे एवो कोइ दोष नथी अने भगवाननी सेवा करवी एवो कोइ गुण नथी."

पछी महाराजश्री बोल्या जे–"अमे पूछ्युं ते प्रमाणे उत्तर न थयो." पछी अक्षरमुक्तानंद स्वामीए कह्युं जे–"काम, लोभ, स्वाद अने स्नेह अने मान ए तो मोटा दोष छे. अने प्रत्यक्ष भगवाननो द्रोह करवो ते अतिदोष छे, अने धर्म, ज्ञान, वैराग्य अने भक्ति ते तो मोटा गुण छे. अने प्रत्यक्ष भगवानने विषे माहात्म्य ज्ञाने सहित जे अतिशय प्रीति करवी ते अतिगुण छे."

पछी महाराजश्री बोल्या जे–"ए उत्तर तो खरो; पण हवे हुं ए उत्तरनी पुष्टि करुं छुं. जे आ सर्वे देह देहप्रत्ये आत्मा रह्यो छे ते आत्मा देहथी नोखो छे, ते आत्मा पोतानुं स्वरूप छे. ते पोताना स्वरूपने भूलीने 'आ देह ते ज हुं छुं' एम जे माने छे अने ते देहने सुखे सुख अने देहने दुःखे दुःख माने छे. अने देहने पुष्ट करे एवा जे पंचविषय तेने भोगवीने आनंद पामे छे. अने ते विषयना पदार्थ नाश पामे ते

भेगो पोते पण महादुःखीयो थाय छे, अने वर्णाश्रम, नात जात तेनो ज अहंकार होय पण देहथी नोखो जे आत्मा तेने पोतानुं स्वरूप नथी जाणतो ते ज सर्वेमां मोटो दोष छे.

—अने जे एम समजे जे 'स्त्रीनुं रुधिर अने पुरुषनुं वीर्य ते थकी बन्यो जे देह ते मारुं स्वरूप नथी अने हुं तो देहनो प्रकाशक एवो अने अखंड, अविनाशी अने चैतन्यब्रह्म ते छुं. अने देह तो जड अने पंच-भूतात्मक छे. अने ते देह तो पंचभूतना पोषणथकी रहे छे. अने पंच-भूतमांथी एक भूत जो बंध थाय तो ते देह नाश पामी जाय, केम के अन्न जळादिके करीने देहनुं पोषण थाय छे, एवो जे देह तेथी आत्मा जुदो छे. ए आत्मा केवो छे ? तो चैतन्य छे, जाणनारो छे, व्यापक छे, निराकार छे अने देह, इन्द्रियो अने अंतःकरण तेनो प्रकाशक छे अने अज्ञाने करीने दश इन्द्रियो अने चार अंतःकरण तेना जे विषय तेने भोगवनारो छे, पण ते मायिक एवा जे पंचविषय तेणे करीने आत्माने सुख थाय एम नथी. अने आत्मा तो पोते ज सुखरूप छे अने अविनाशी छे.' एवी रीते देह थकी नोखो अने असंगी एवो जे चैतन्यब्रह्म ज्ञानरूप आत्मा तेने पोतानुं स्वरूप मानवुं तेने गुण कहीए.

—अने सर्वना कारण अने सर्वना आधार एवा जे दिव्य स्वरूप भगवान ते पोताना अक्षरधामने विषे सदाय विराजमान छे ते भगवान उत्पत्ति समे जीवोना कल्याणने अर्थे इन्द्रियो अंतःकरण सर्जी आपे छे त्यां श्लोक जेः—

> बुद्धीन्द्रिय मनः प्राणान् जनानामसृजत् प्रभुः ।
> मात्रार्थं च भावार्थं च आत्मने कल्पनाय च ॥

ए श्लोकमां कह्यो एवो जे भगवाननो उपकार तेने जीव नथी जाणतो अने आज पण सर्व जीवोने भगवान जीवाडे छे; केम के भग-वान वरसाद वरसावे छे त्यारे सर्व जीव जीवे छे अने पांच वर्ष मेघ न

वरसे तो राजा, रंक कोइ जीवे नहीं. अने झाझा वरस वरसाद न थाय तो विश्वनो पण नाश थइ जाय. माटे सर्वे जीवनी निरंतर भगवान ज रक्षा करे छे, एवो जे भगवाननो उपकार तेने जीव नथी जाणतो ते अतिदोष छे.

अने कर्तुमकर्तुम् अने अन्यथा कर्तुम् एवा जे भगवान तेनी जे *अनादि आज्ञा जे वर्णाश्रमधर्म तेमां दृढपणे रहीने, परोपकारी एवा जे* प्रत्यक्ष भगवान ते थकी धर्म जे इन्द्रियोनुं नियमन करवुं, अने ज्ञान जे देहथी नोखो एवो जे आत्मा तेने पोतानुं स्वरूप मानवुं, अने वैराग जे प्रकृतिना कार्यने विषे अरुचि, अने भक्ति जे भगवाननुं साकारपणुं अने निराकारपणुं, सगुणपणुं अने निर्गुणपणुं. कर्तापणुं अने अकर्तापणुं, दिव्यभाव अने मनुष्यभाव, ए आदिक जे भगवानना अनंत ऐश्वर्य तेने ज्ञाने करीने जाणीने भगवानना स्वरूपना उत्तम निर्विकल्प निश्चयने पामवुं. पछी ए भक्तने अने भगवानने कांइ अंतराय रहेतो नथी. अने भगवानना स्वरूपमां अतिशय हेते करीने जोडाइ जाय अने ए भक्त भगवानना साधर्म्यपणाने पामे तेनुं नाम अतिगुण छे. अने आ कह्यो जे अतिगुण ते तो प्रत्यक्ष भगवान होय त्यारेज आ जीवने प्राप्त थाय छे. पण ते विना ए गुण पमाय नहीं."

इति श्रीमुख सिद्धांत ७८ समाप्त।

७९. विषय :—पंचविषयमां दुःख ज रह्युं छे; सुख नथी

श्री हरिकृष्णाय नमोनमः—संवत् १९१८ ना महासुद १० ने दिवस महाराज श्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्री चूडा मध्ये भट्ट नारणजी भक्तने घेर फळीयामां गादी तकीयेयुक्त ढोलिया उपर उत्तरादे मुखार-

विंदे विराजमान थया हता. सर्वे जरीयानी वस्त्र धारण कर्यां हतां. पुष्पना आभूषणो सर्वे अंगमां शोभी रह्यां हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

प्रश्न :–पछी महाराजनी आरती धून करीने सर्वे हरिभक्त पगे लागीने बेठा. पछी महाराजे साधुने प्रश्न पूछ्युं जे " सर्व सुखना धाम अने कृपाना सिंधु एवा जे भगवान तेने जीव नथी भजतो अने अपार दुःखनां मूळ एवा जे पंचविषय तेमां जीव रचिपचि रह्यो छे तेनुं शुं कारण हशे ? ते कहो. "

पछी धर्मानंद स्वामीए कह्युं जे "जीवे भगवाननो मार्ग कोइ काळे दीठो नथी माटे एने भगवान भजवा कठण पडे छे. "

प्रश्न :–पछी महाराज बोल्या जे "पंचविषयमां सुख छे के दुःख छे?"

पछी धर्मानंद स्वामीए कह्युं जे " पंचविषयमां सुख तो छे पण दुःखे सहित छे." पछी महाराज बोल्या जे " पंचविषयमां तो लेशमात्र सुख नथी अने जे सुख जेवुं जणाय छे ते तो अज्ञाने करीने भ्रांतिमात्र जणाय छे. अने सुखरूप तो पोते आत्मा ज छे, ते आत्मा पोताना स्वरूपनुं सुख भूलीने विषयमां सुख माने छे. जेम कस्तूरिया मृगनी नाभिमां *कस्तुरि छे, ते कस्तूरिने भूलीने तरणने सूंघीने सुख माने छे पण तरण* ने विषे कस्तूरि लेशमात्र नथी. तेम कस्तूरिनी पेठे सर्वे सुखना धाम एवा जे परमात्मा ते आत्माने विषे रह्या छे तेने जीव नथी जाणतो. पछी ते परमात्मानुं जे सुख छे ते इन्द्रियो, अंतःकरण द्वाराए चूइ जाय छे तेने भोगवीने जीव सुख माने छे, पण ते विषयमां तो सुख ज नथी. केम के विषय तो जड छे ते चैतन्य एवो जे आत्मा तेने शुं सुख उपजावे ? अने सुख तो ज्ञानने विषे रह्युं छे. अने एवुं ज्ञान तो परमात्मा

पासे छे, पण ते विना बीजा कोइ जीवनी पासे एवुं माया पर ज्ञान नथी. अने जीवने विषे परमात्मा रह्या छे पण जीव पोतानी मेळे परमात्माने जाणवाने समर्थ थतो नथी.

—माटे ए तो परमात्मा पोते कृपा करीने जीवने इन्द्रियो, अंतःकरण अने अनुभवे करीने जाण्यामां आवे एवा मनुष्यरूपे थइने पोतानुं स्वरूप जणावे छे त्यारे जीव जाणी शके छे. पछी परमात्मानुं जे सुख इन्द्रियो, अंतःकरण द्वाराए पृथक पृथक पंचविषयमां रह्युं छे अने तेने विषे भोक्ताबुद्धि मानी छे तेने टाळवा सारु विषयनुं प्रमाण ज्ञाने करीने करावे छे. अने ज्यारे जीवने विषयनुं प्रमाण जेम छे तेम इन्द्रियो, अंतःकरण अने अनुभवे करीने थाय छे त्यारे अनंत दुःख, दोष, कलेश तेने देखे छे पण ते विषयमां लेशमात्र सुख नथी देखतो. पछी ते विषयमांथी जीव वैरागने पामे छे अने इन्द्रियो. अंतःकरणनी जे वृत्तिओ छे ते भगवानना स्वरूपमां जोडाय छे. पछी तेने भगवाननुं अलौकिक सुख अने अपरसीत महिमा ते अधिक अधिक जणातां जाय छे. अने भगवानना जे दिव्यगुण रह्या छे ते जेम जेम महिमा समजतो जाय तेम तेम ते गुण जीवने विषे आवता जाय छे.

—माटे जेणे महा सुखिया थवुं होय तेणे पंचविषयनी वासनानो त्याग करवो अने भगवान अने भगवानना निर्वासनिक संत तेमां जोडावुं. एवी रीते समजीने जे भगवानमां जोडाय छे ते ज सर्व सुखना पारने पामे छे अने ते जीव ब्रह्मदशाने पामे छे."

इति श्री सुखसिद्धांत ७९ समास ।

८० विषयः—मनुष्यदेहे ज भगवानने पमाय छे.

श्री हरिकृष्णाय नमोनमः–संवत् १९१८ ना महा वद ११ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री सरवै मध्ये पटेल दुदा भक्तने घेर उत्तरादे वार ओरडानी ओशरीमां गादि तकीया विछावीने ढोलिया उपर विराजमान थया हता. सर्वे जरीयानी वस्त्र धारण कर्यां हतां. अने जाइ पुष्पना हार धारण कर्या हता. कान उपर गुच्छ खोस्या हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा हरिभक्तोनी सभा भराइने वेठी हती.

पछी महाराजनी आरती धून करीने सर्वे सभा वेठी. पछी महाराज वोल्या जे "मूळ कारणमाया छे तेने विषे अपरिमीत जीव रह्या छे. जेम पृथ्वीमां वीज रह्यां छे ते वरसादने जोगे करीने ऊगी नीसरे छे, तेम मायामां जीव छे ते मूळपुरुषने संवंधे करीने मायामांथी जन्म धरे छे. ते चार प्रकारनी योनिमां जन्म थाय छे. ते चार प्रकारनी योनि कइ ? तो अंडज, उद्भिज्ज, श्वेदज अने जरायुज. ए चार खाणने विषे जीव जे ते महा कष्टने पामे छे. अने ए कष्ट थकी जीव पोतानी मेळे कोइ काळे छूटवाने समर्थ नथी. अने ए दुःख थकी जीव क्यारे छूटे ? तो परमेश्वर कृपा करीने जीवने मनुष्यनो जन्म आपे अने ते मनुष्यदेहे करीने प्रगट कल्याणकारी एवा जे सत्पुरुष तेनो समागम जीव करे तो ते सत्पुरुष एने ज्ञान आपीने जन्म-मरणना कष्ट थकी मुकावे छे. अने जो मनुष्यदेह पामीने अधर्मी पुरुषनो संग करे तो ते अति अमुल्य एवो जे मनुष्यदेह ते खराव थइ जाय छे. माटे अधर्मीनो संग करवो नहीं.

अने मनुष्यदेहे करीने जे जे करे ते थाय एम छे. केम के मनुष्यदेहना इन्द्रियो, अंतःकरण छे तेने करीने भगवानना स्वरूपनुं ज्ञान थाय पण

पशु, पंखीना अवतारे ज्ञान थाय नहीं. ते मनुष्यना कान छे तेने करीने भगवानना गुणनी कथा संभळाय छे, नेत्रे करीने भगवान अने भगवानना संतना दर्शन थाय छे, हाथे करीने भगवाननी सेवा थाय छे, एवी रीते मनुष्यना दश इन्द्रियो अने चार अंतःकरण ते भगवाननी भक्तिना उपयोगमां आवे छे. अने भक्तिए करीने जीवनो मोक्ष थाय छे. अने ते ज इन्द्रियो, अंतःकरणे करीने अधर्मीनो संग करे तो ते पापे करीने जीव जे ते जन्म-मृत्युने पामे छे अने महा दुःखने भोगवे छे. अने अमूल्य एवो जे मनुष्यनो देह ते वृथा खराब थइ जाय छे.

—माटे 'आ मनुष्यनो देह छे ते पंचविषय भोगववा सारु परमेश्वरे नथी आप्यो. अने पंचविषय तो कूतरां, गधेडांना अवतारमां पण मळे छे. ते सारु मनुष्यदेहे करीने तो सत्पुरुषनो समागम करीने पंचविषयनो त्याग करवो अने भगवाननी भक्ति करवी. अने सत्संग करीने ज्ञान पामीने निर्वासनिक थवुं अने पछी देह मूकवो,' एवो आजथी ज मनुष्य मात्रने-बाइ, भाइ सर्वेने-ठराव करवो. अने एम वासना टाळतां टाळतां अंत समे वासना टळी जाय तो ते जीव आत्यंतिक मोक्षने पामे छे. अने जो थोडिक वासना रही जाय अने देह मूके तो तेने जन्म धरवो पडे.

—माटे सावधान थइने सत्संग करीने ज्ञान पामीने निर्वासनिक थवुं अने पोताना आत्माने ब्रह्मरूप जाणीने परब्रह्म जे प्रत्यक्ष भगवान तेनी एकांतिक भक्ति सिद्ध करीने देह मूकवो एज मनुष्यदेहनो लाभ छे."

इति श्री मुखसिद्धांत ८० समाप्त ॥

८१ विषय :—भगवानना भक्ते देहमां प्रीति न राखवी

श्री हरिकृष्णाय नमोनमः—संवत् १९१८ ना फागण सुदि ८ ने दिवस महाराज श्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्री रोजिद मध्ये पटेल जीवा भक्तने घेर उत्तरादे वार ओरडानी ओसरीमां ढोलीया उपर बिराजमान थया हता. श्वेत धोतियुं हीरकोरी पहेर्युं हतुं अने धोळुं अंगरखुं धारण कर्युं हतुं. मस्तके गुलाबी रंगनो फेंटो धारण कर्यो हतो अने गुलाबी कोरवाळो श्वेत खेस खभे नाख्यो हतो. अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तोनी सभा भराइने बेठी हती. अने रात्री छ घडी गइ हती.

पछी महाराज बोल्या जे "जे भगवानना भक्त होय तेणे हाडमांसनो देह तेने पोतानुं स्वरूप मानवुं नहीं अने ते देह थकी नोखो अने चैतन्य-ब्रह्म अविनाशी एवो जे आत्मा तेने पोतानुं स्वरूप मानवुं अने जे देहने पोतानुं रूप माने छे ते तो अतिशय अज्ञानी छे. अने तेने नीच जाणवो अने जे देहने पोतानुं रूप माने तेने जन्ममरणनां दुःख कोइ काळे टळतां नथी. केम के आत्मा अविनाशी छे अने देह नाशवंत छे. ते देहने संगे करीने आत्मा मृत्युने पामे छे, अने आत्मा अविनाशी छे ते पाछो जन्मने पामे छे, केम के आत्मानी घणी आवरदा छे. पण देहने संगे करीने मरी गयो कहेवाय छे अने देहने संगे करीने जीवतो कहेवाय छे एवी रीते देहने संबंधे करीने ककडे ककडे आयुष्यने भोगवे छे अने जीव अपार क्लेशने पामे छे.

—माटे भगवानना भक्ते सत्पुरुषनो आशरो करीने स्वधर्ममां रहीने ज्ञान पामीने दिवसे दिवसे देहमांथी प्रीति टाळीने आत्मारूप थवुं अने ते आत्माना साचा हितकारी एवा जे भगवान अने भगवानना एकां-

तिक पंचविषयना त्यागी निर्वासनिक साधु तेनी संगाते पोताना आत्माने प्रीतिए करीने जोडी देवो. अने तेना वचनमां मनकर्मवचने करीने वर्तवुं अने ते भगवान अने भगवानना साधु थकी ज्ञान पामीने पंच-विषयनी वासना टाळीने देह थकी नोखो एवो जे पोतानो आत्मा तेने साक्षात्कार पामीने ते आत्माने विषे रह्या एवा जे परमात्मा भगवान तेना प्रत्यक्ष स्वरूपमां अखंड स्थिति पामवी एज मनुष्यदेहनो लाभ छे. अने तेने जन्ममरणनां दुःख टळी जाय छे. अने तेज अविनाशी एवुं जे भगवाननुं अक्षरधाम तेने पामे छे."

इति श्री सुखसिद्धांत ८१ समाप्त ॥



८२ विषय :—सुखी थवानो उपाय

श्री हरिकृष्णाय नमोनमः—संवत् १९१८ना फागण सुदि ९ने दिवस महाराजश्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्री रोजीद मध्ये पटेल काळा भक्तने घेर उत्तरादे वार ओरडानी ओसरीमां ढोलिया उपर गादी तकीया नखावीने विराजमान थया हता. किनखावनो सुरवाल अने डगली पहेर्यां हतां. मस्तक उपर कसुंबल सोनेरी पाघ बांधी हती. अने शुढो रेंटो पहेरीने केडे सोनेरी कोरवाळुं कसुंबल शेलुं धारण कर्युं हतुं अने एक कसुंबल शेलुं खभे नाख्युं हतुं. केसरनी अर्चा करीने ककुंनो चांदलो कर्यो हतो. अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी संध्या आरती थया पछी महाराज बोल्या जे "जेने अतिशय सुखिया थवुं होय तेने परमेश्वरनी आज्ञा लेशमात्र लोपवी नहीं. अने जे परमेश्वरनी आज्ञा प्रमाणे वर्तशे ते आलोकमां अने परलोकमां अपार

सुखने पामशे. अने जे परमेश्वरनी आज्ञा लोपे छे ते तो आलोकमां पण महा कष्टने पामे छे अने मरीने यमपुरीमां जइने अपार दुःखने पामशे. जेम आलोकमां राजानो कायदो लोपे छे तेने राजा दंड आपे छे अने ते महा हेरान थाय छे, तेम सर्व कारण अने सर्व आधार एवा जे भगवान तेनी जे आज्ञा लोपे छे ए जीव कोटी कोटी कष्टने पामे छे. माटे परमेश्वरनी आज्ञा जे वर्णाश्रमधर्म तेमां अतिशय दृढपणे वर्तवुं.

–अने भगवाननो अतिशय उपकार मानवो जे 'जळना बिंदुमांथी महा मनोहर देह ते मने सर्जी आप्यो.' ते जे देहे करीने पोतानो जीव अतिशय वृद्धिने पामे छे अने मायाना बंधन थकी छूटीने मुक्त थाय छे. अने मायाना दोष जे काम, लोभ, स्नेह, स्वाद, मान, दंभ, कपटादिक जे अधर्मनो सर्ग ते सर्व नाश पामी जाय छे अने भगवाननी ते जीवनी उपर कृपा थाय छे अने धर्म, ज्ञान, वैराग, शीळ, संतोषादिक जे रूडां गुण तेना उरमां निवास करे छे. माटे भगवानने गमे ते प्रमाणे वर्तता होय अने वर्तावता होय एवा जे सत्पुरुष तेनो मन कर्म वचने समागम करवो अने ते थकी ज्ञान पामवुं, अने भगवानना मार्ग थकी पाडे एवा जे अधर्मी तेना संगथी छेटे रहेवुं.

–अने वळी जगतमां केटलाक इर्षावाळा जीव छे ते पोताने प्रभु भजवा नहीं अने कोइक प्रभु भजता होय तेनी उपर इर्षा करीने तेने भगवानना मार्ग थकी पाडवाना अनंत उपाय करे छे. माटे एवा पापीना शब्द भगवानना भक्ते सांभळवा नहीं. अने अमारे तो कोइना उपर वेर नथी अने पक्षपात पण नथी. अने जे जे अधर्म अनीतिनो त्याग करीने अमारे शरणे आवे छे तेने ज्ञान आपीने मायाना बंधन थकी मुकावीने तेनो मोक्ष करीए छीए. अने ते जीव महा सुखियो थाय छे.

अने एवा धर्मवाळा होय ते अमने भावे करीने तेने घेर तेडी जाय तो त्यां जइए छीए. पछी जेने तेना उपर इर्षा होय ते एम कहे जे 'एने घेर महाराज उतर्या छे ते अमे महाराज पासे नहीं जइए.' एम जाणीने जे अमारी पासे नथी आवता तेने तो बहु ज खोट जशे. अने जे एम समजे तेने तो महा पापी जाणवो. अने ते जीवनुं कोइ काळे कल्याण थाय नहीं. केम के जेना समागमे करीने जीवनुं कल्याण थाय तेनी ज पासे न जवुं त्यारे बीजे कल्याणनुं ठेकाणुं क्यां मळशे! जेम तरस लागी होय अने ते पाणी साथे रूसणुं राखे तो तेनी तरस मटे नहीं, तेम जीवनुं कल्याण करे एवा जे सत्पुरुष तेनी पासे जवुं नहीं अने उल्टो तेनो द्रोह करे तेनुं तो बहु ज भुंडुं थाय छे.

—माटे पोताना जीवना कल्याण सारु एवी इर्षानो त्याग करीने जेने घेर महात्मा पुरुष आव्या होय तेने घेर निर्मानी थइने जवुं. अने इर्षा करवी तो एवी करवी जे जेना उपर इर्षा होय तेना जेवां रूडां गुण शीखवा अने जेम तेणे सत्पुरुषने तेडी आवीने एक दिवस राख्या होय तो पोते पोताने घेर तेडी आवीने बे दिवस राखीए. केम के ते थकी पोताना आत्मानुं कल्याण थाय. पण उलटुं भुंडुं थाय एवी इर्षा ना करवी."

इति श्रीमुख सिद्धांत ८२ समाप्त ॥

---

८३ विषयः—निर्विकल्पनिश्चय थवानी रीत

श्री हरिकृष्णाय नमोनमः—संवत् १९१८ना फागण सुदि १५ ने दिवस महाराज श्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्री बरवाळा मध्ये विप्र वजेराम महेताने घेर उगमणे बार ओरडानी आगळ पाट उपर गादी तकीया

नखावीने विराजमान थया हता. सर्वे सोनेरी वस्त्र धारण ने कर कंठमां हजारी गोटाना पुष्पना हार धारण कर्या हता. कंकुरे कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

प्रश्नः—पछी संध्या आरती थया पछी वजेराम महेताए प्रश्न जे "हे महाराज! प्रगट भगवानना स्वरूपमां जीवने संशय ते संशय मटीने निर्विकल्पनिश्चय केम थाय? ते कहो." पछी बोल्या जे "सत् शास्त्रने समजवे करीने प्रगट भगवानना निर्विकल्पनिश्चय थाय छे. ते कह्युं छे जेः—

यथा यथा हि पुरुषः शास्त्रं संबंधी गच्छति।
तथा तथा विज्ञानाति विज्ञानं चास्यरोचते॥

ए श्लोकमां एम कह्युं छे जे 'जे पुरुष शास्त्रनो अभ्यास जेम क करे छे तेम तेम तेने ज्ञान ज रूचे छे अने ज्ञाने करीने अंतरमां प्रकाश थाय छे. अने ते पछी तेने प्रगट भगवानना स्वरूपनो निर्विकल्पनिश्चय थाय छे.'

—अने जेने शास्त्रनुं ज्ञान नथी तेनी मतिमां संशय थाय छे. केम के शास्त्रमां भगवानने क्यांक 'कर्ता' कह्या होय अने क्यांक 'अकर्ता' कह्या होय, क्यांक 'साकार' कह्या होय अने क्यांक 'निराकार' कह्या होय, क्यांक 'सगुण' कह्या होय अने क्यांक 'निर्गुण' कह्या होय, ते जेने सर्वे शास्त्रमां दृष्टि पहोंचती होय ए तो एम जाणे जे 'कर्ता, अकर्ता, साकार निराकार, सगुण, निर्गुण' ए आदिक एवा अनंत गुण ए सर्वे प्रत्यक्ष भगवानने ज कह्या छे. केम के भगवाननी इच्छा विना कांइ ज थतुं नथी, माटे भगवान 'कर्ता छे.' अने प्रकृतिपुरुष द्वारे अनंत कोटी

ब्रह्मांडनी उत्पत्ति; स्थिति अने प्रलय करावे छे अने पोते तो अखंड अ-क्षरधामने विषे पोताना एकांतिक भक्तने सुख आपे छे पण पोते कांइ कर्ता नथी; माटे 'अकर्ता छे.' अने दिव्य अवयवे करीने भगवान मूर्तिमान छे. माटे 'साकार' छे अने सर्वे जीवोने जेम मायाना आकार बंधाणां छे तेम भगवानने विषे मायानो आकार नथी, माटे भगवानने 'निराकार' कह्या छे. अने भगवानने विषे मायाना गुण जे रज, तम अने सत्त्व ते नथी, माटे भगवानने 'निर्गुण' कह्या छे अने भगवानने विषे अनंत कल्याणकारी गुण रह्या छे, माटे भगवान 'सगुण छे.'

एवी रीते जे मुमुक्षु अने दैवी जीव होय अने जेणे अनंत जन्म थया भगवान मेळववा सारु जप, तप, व्रतादिक साधन निष्कामभावे कर्यां होय तेने ज शास्त्रना अर्थ समजाय छे अने ते ज प्रगट भगवानना स्वरूपनो निश्चय करे छे. पण जेनी मति काम, लोभादिक दोषे करीने अवळाइ गइ होय एवा जे भ्रष्ट मतिवाळा होय अने ते चार वेदना भणेला होय अने खट शास्त्रना पाठ करता होय तो पण तेने शास्त्रना मर्म जेम छे तेम समजाता नथी अने ऊलटा भरमाइ जाय छे. ते पूर्वे पण मोटा मोटाने भ्रम थया छे अने जे दैवी अने मुमुक्षु होय तेने ज प्रगट भगवान ओळख्यामां आव्या छे.

–अने आज पण जे दैवी अने मुमुक्षु हशे तेने ज अमारा स्वरूपनो निश्चय थशे. पण मतवादि तथा भ्रष्टमतिवाळा होय तेने अमारुं स्वरूप नहीं ओळखाय. अने जे सकामी होय अने ते अमारा समीप संबंधमां रह्यो होय तो पण तेने अमारा स्वरूपनो निश्चय थाय नहीं."

इति श्री मुखसिद्धांत ८३ समाप्त ॥

---

८४ विषय :—निर्बीजमुक्ति अने सबीजमुक्ति

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः—संवत् १९१८ ना फागण वद ३ने दिवस महाराज श्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्री बरवाळा मध्ये महेता वजेरामने घेर उगमणें वार ओरडानी ओसरीमां ढोलीया उपर गादी तकीया नखावीने विराजमान थया हता. धोळो सुरवाल अने राती डगली पहेर्यां हतां अने मस्तके मलमलनो तारवाळो फेंटो बांध्यो हतो. गुढा रंगनो रेटो पहेरीने उपर केडे कसुंबल शेलुं धारण कर्युं हतुं. धोळी शाल खभे नाखी हती अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

प्रश्न :—पछी आरती धून थया पछी महाराज पोतानी मेळे बोल्या जे "एक प्रश्न पूछीए छीए जे "एक निर्बीजमुक्ति छे अने एक सबीजमुक्ति छे. ते मुक्तिपक्षे तो अभेद छे पण निर्बीज अने सबीजपक्षे तो भेद छे. माटे तेनां रूप कहो ? अने तेना उपदेष्टा कोण छे ? अने तेनां शा लक्षण छे ? ते कहो."

पछी धर्मानंद स्वामीए कह्युं जे "निर्बीजमुक्ति तो निर्बीजसांख्य अने निर्बीजयोग तेने करीने थाय छे, अने तेना आचार्य शंकराचार्य छे. अने निर्बीजसांख्य अने निर्बीजयोग सिद्ध करीने पछी सबीजसांख्य अने सबीजयोगने सिद्ध करे त्यारे ज सबीजमुक्तिने पामे, अने तेना आचार्य तमे छो." पछी महाराज बोल्या जे "ए वातमां कांइ आश्चर्य जेवुं जणायुं नहीं. हवे निर्बीजमुक्ति बे प्रकारे पमाय छे, तेमां एक तो कर्ममार्गे करीने पमाय छे अने एक निर्बीजसांख्य अने निर्बीजयोग तेने करीने पमाय छे, पण ए सर्वे आत्मानी शुद्धि कही छे. अने देवादिक लोकने पामवुं तेनी आगळ तो निर्बीजमुक्ति उत्तम छे.

जेम कोडी, वदाम अने पैसो तेनी आगळ रूपियो उत्तम छे पण चिंतामणी आगळ तो रूपियो अति तुच्छ छे. तेम कोडी, वदाम अने पैसाने ठेकाणे तो देवादिकना लोक छे अने रूपियाने ठेकाणे निर्बीजमुक्ति छे. अने सबीजमुक्ति छे ते तो चिंतामणीने ठेकाणे छे. अने कपीलदेव, शंकराचार्य अने गौतम तेणे जे निर्बीजमुक्तिनो बोध आप्यो छे ते तो उपासकनी शुद्धि सारु आप्यो छे, पण ते बोधे करीने तेमां आश्चर्य मानीने संतोष पामे छे तेने तो घणी ज खोट रहे छे. केम के ते कांइ गौतम अने शंकराचार्यनो अंतरनो अभिप्राय नथी.

—पण एमनो अभिप्राय तो एम हतो जे "निर्बीजसांख्य अने निर्बीजयोग तेने ज्ञाने करीने जीव जे ते ब्रह्मरूप थाय छे. अने जे ब्रह्मरूप थयो तेने पछी सबीजसांख्य अने सबीजयोग सिद्ध करीने परब्रह्म एवा जे प्रत्यक्ष भगवान तेने साक्षात्कार पामवुं. अने ब्रह्मरूप थयो होय ते ज परब्रह्मने पामे छे, अने ते ज सर्वोपरि सुखने भोगवे छे. अने ते दिव्यमूर्तिमान थयो थको अनादि दिव्यमूर्ति एवा जे परमात्मा परब्रह्म तेनी सेवा अक्षरधामने विषे अखंड करे छे.

—अने निर्बीजमुक्तिने पामीने जे बेसी रहे छे एवा जे शुष्क वेदांति तथा जे कर्मने ज 'कर्ता' कहे छे एवा जे जैनमतना सिद्धांतने न जाणनारा अने अतिशय आळसु अने प्रमादी तेने मोटी खोट जाय छे. जेम महेताजी पासे भणवा बेठो होय ते अडधी विद्या भणीने आळसी बेसे ते मूर्ख कहेवाय. केम के अडधी विद्या कांइ उपयोगमां आवती नथी अने ते हेरान थाय छे. तेम जे निर्बीजसांख्य अने निर्बीजयोग तेने करीने आत्मरूप थइने परमात्मा एवा जे दिव्यमूर्ति भगवान तेने आत्माना आधार जाणीने नथी भजतो ते तो ब्रह्म-सुषुप्तिने विषे लीन

थाय छे अने उलटो महा कलेशने पामे छे. पण तेने परमात्मा परब्रह्मनुं अलौकिक सुख ते आवतुं नथी.

–अने जे रामकृष्णादिक भगवानना अवतार तेने भजी भजीने मोक्षने पाम्या एवा जे प्रह्लाद, नारद, नवयोगेश्वर, अंबरिश, अर्जुनादिक ते तो एम समजता जे 'सर्वना कारण अने सर्वना आधार एवा जे परमात्मा भगवान ते जे ते दिव्यमूर्तिमान छे. अने तेनी इच्छाए करीने अनंतकोटी ब्रह्मांडनी उत्पत्ति थाय छे. अने जेनी शक्ति काळ छे, माया छे, पुरुष छे अने अक्षर छे. एवी अनंत शक्तिए युक्त एवा जे परमात्मा भगवान ते ज आ पृथ्वी उपर कृपा करीने मनुष्याकृतिनुं धारण करे छे अने ते भगवानने जे जे जीव आशरो करीने तेनी आज्ञा प्रमाणे वर्त्या छे ते ज सबीज एवी जे आत्यंतिकमुक्ति तेने पाम्या छे.' माटे सबीजमुक्तिने पामे त्यारे ज जीव ठरीने बेसे, पण ते विना जीवने ठरवानुं ठेकाणुं बीजे क्यांय नथी. ते सारु जेने सुखिया थवुं होय तेने सबीजमुक्तिने जरूर पामवुं.

–ते सबीजमुक्ति केम पमाय छे? तो सबीजमुक्तिना पमाडनारा एवा जे प्रत्यक्ष सद्गुरुरूप हरि तेने शरणे जइने ते थकी निर्बीज-सबीज सांख्य-योगने सिद्ध करवा. तेमां निर्बीजसांख्यने विचारे करीने देह थकी आत्माने नोखो देखाडीने पछी निर्बीजयोगे करीने आत्माने विषे स्थितिने पमाडे छे. अने ज्यारे आत्माने विषे स्थितिने पामे छे त्यारे जीवनुं जीवपणुं मटी जाय छे अने तेने पंचविषयनी पीडा टळी जाय छे अने ते जीव शांतिने पामे छे. अने परमात्माने भजवानो अधिकारी थाय छे. पछी तेने सबीजसांख्ये करीने प्रत्यक्ष भगवानना स्वरूपनो माहात्म्य ज्ञाने सहित उत्तम निर्विकल्पनिश्चय करावे छे. अने पछी सबीजयोगे

करीने आत्मानी जे दिव्यवृत्तिओ छे तेने परमात्माना स्वरूपमां जोडावे छे. अने ए परमात्माने विषे जोडावे करीने मुक्त जे ते अक्षरातीतना साधर्म्यपणाने पामे छे अने पोताथी पर एवा जे परमात्मा तेने साक्षात्कार देखे छे. अने तेनुं सुख मनवाणीना कह्यामां आवे एम नथी. अने ते सुख अलौकिक छे अने अविनाशी छे. अने तेने सबीजमुक्ति कहे छे. अने तेने आत्यंतिक ज्ञान पण कहे छे."

इति श्री मुखसिद्धांत ८४ समाप्त ॥

८५ विषय :—सौथी अधिक शत्रु

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः—संवत् १९१८ ना फागण वद ४ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री लाखेणी मध्ये विप्र आशाराम-ने घेर उत्तरादे बार ओरडानी ओशरीमां गादी तकिया नखावीने ढोलिया उपर विराजमान थया हता. सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पोतानां मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणांक हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी महाराज बोल्या जे "जीवने भगवान भजवामां जे जे अंत-राय करे ते जेवो कोइ शत्रु नथी. ते कोइक पोतानुं धन-माल लइ जाय तथा गाम गरास लइ जाय तथा पोतानुं मांथुं वाढी नाखे ते सर्वे करतां पण भगवान भजवामां अंतराय करे ते वधु शत्रु छे. केम के शरीरादिक अने बीजां पदार्थ तो नाशवंत छे. ते नाशवंतने कोइक नाश करे अथवा लइ जाय तेनो तो कांइ ज खरखरो नहीं. पण अविनाशी एवुं जे भगवान भज्यानुं सुख तेमां जे अंतराय करे ते तो जीवनो मोटो शत्रु छे. माटे जेने पोताना आत्माना मोक्षनो खप होय तेणे तो भगवान

भज्यामां जे जे अंतराय करे तेने महा मोटो शत्रु जाणीने तत्काळ त्याग करवो. ते मावाप अंतराय करे तो तेनो त्याग करवो, तथा सगां संबंधी, नातजात, स्त्री, छोकरां, धन-माल, गाम-गरास आदिक जे जे पदार्थ भगवान भजवामां अंतराय करे तेनो त्याग करवो.

–अने पूर्वे पण भगवानना भक्ते भगवान भजवामां जेणे जेणे अंतराय कर्या छे तेना त्याग करी दीधा छे. ते प्रह्लादजीने तेना बापे अंतराय कर्यो तो तेनो त्याग करी दीधो. तथा भरतजीए पोतानी मातानो त्याग कर्यो. तथा विभिषणे भाइनो त्याग कर्यो. ऋषिपत्नीओ ए पोताना पतिनो त्याग कर्यो अने नारद, सनकादिक, शुकदेव आदिक घणाए भगवान भज्यामां अंतराय करे ते सारु सर्व संसारनो त्याग करीने अभयपदने पाम्या छे. माटे जेने जेने पोताना आत्मानुं रूडुं करवानी इच्छा होय तेने तो संसारना जे सुख तेमां लोभावुं नहीं. अने मनुष्यदेहे करीने तो अविनाशी एवुं जे भगवानना धामनुं सुख तेने पामवुं.

–अने जे पंचविषय संबंधी सुख छे ते तो नाशवंत छे अने दुःखरूप छे. केम के आ जीव छे तेणे राजाना जन्म पामीने घणाक फेरा भारे भारे अनंत भोग भोगव्या छे. अने देवलोकमां जइने देवताना भोग पण जीवे घणाक भोगव्या छे. तथा ब्रह्मा थइने ब्रह्माना लोकना भोग जीवे घणाक भोगव्या छे. तो पण हजु जीवने तृप्ति थइ नथी, तो हवे आ मनुष्यदेहनी जे अल्प आवरदा तेणे करीने क्यां तृप्ति थवानी छे. अने वळी जो जीव मनुष्यदेह पामीने भगवान नहीं भजे तो अतिशय भूंडा भूंडा अवतार-गधेडा, कूतरा, बोकडा, पाडा, वांदराना आवशे अने ते ते अवतारमां सगां संबंधी, स्त्री, छोकरां, घणां थशे पण तेने करीने आत्माने शान्ति थाय एम नथी. अने शान्ति तो सत्पुरुषनो

आशरो करीने काम, लोभ, स्वाद, स्नेह अने मान ए पांच अंतर-शत्रु तेनो त्याग करे त्यारे थाय, पण ते विना विषयना पदार्थे करीने आत्माने शान्ति कोइ काळे थाय नहीं.

—अने वळी एम समजवुं जे "मावाप, सगां-संबंधी, ए सर्व देहना संबंधी छे पण आत्माना सगां कोइ नथी. अने आत्माना सगा तो एक भगवान छे. केम के जीवने गर्भवासमां अतिशय पीडा थाय छे त्यारे पण भगवान ज रक्षा करे छे. अने आज पण भगवान जीवने जीवाडे छे त्यारे जीवे छे पण जो भगवान रक्षा न करे तो एक पळवार पण जीवने सुख रहे नहीं. अने जो एक लघुशंका बंध थाय तो देह न रहे. अने ज्यारे अंत समो थशे त्यारे पण जो भगवान नहीं भज्या होय तो एक एक रूवाटे कोटान कोटी वींछीनी वेदना थशे त्यारे पण ते समे कोइ मावाप, सगां-संबंधी सहाय नहीं करे अने कोइनुं त्यां वळ पण चाले एम नथी. अने ए टांणे तो एक भगवान सहाय करे त्यारे ए दुःख मटे पण बीजो कोइ उपाय नथी.' माटे जीवना साचा हित-कारी अने साचा सगा तो एक भगवान छे. ते शास्त्रमां पण कह्युं छे जे—

त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धु च सखा त्वमेव
त्वमेव विद्या च द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देव देव ॥

माटे जे जन्म-मृत्युना दुःख थकी मुकावे एज आत्माना अतिशय हितकारी छे. अने ते ज माता, पिता, बंधु, सखा, विद्या, द्रव्य अने सर्व देव छे. माटे आत्मानुं रूडुं करे तेने ज हितकारी जाणवा अने ते विनाना सर्व जीवना शत्रु छे."

इति श्री मुखसिद्धांत ८५ समास ॥

८६ विषयः—विद्या अने आव्याणीने तत्काल त्याग

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः—संवत् १९१८ ना फा॰ तथा सगा संवं- महाराज श्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्री लाखेणी मध्ये जे जे पदार्थ घेर उगमणे वार ओरडानी आगळ फळीमां ढोलिया उपर गे नखावीने विराजमान थया हता. सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्या अने कंठमां पुष्पना हार धारण कर्या हता. कंकुनो चांदलो कर्यो हो पाघमां तोरा अने कान उपर गुच्छ धारण कर्या हता. अने पोतान मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणांक हरिभक्तनी सभा भराइ बेठी हती.

पछी संध्या आरती थया पछी महाराज कृपा करीने सर्वे हरिभक्त प्रत्ये बोल्या जे "परमेश्वरे जे दिवसथी सृष्टि करी छे ते दिवसथी वि द्याने अने अविद्याने लडाइ थया ज करे छे. ते शा सारु लडाइ थाय छे ? तो अविद्या मायाए जीवोने अनादिना आवरी लीधा छे अ तेमां जीव जन्ममरणनां दुःखने पाम्या करे छे. ते दुःखने देखीने सत्पुरु कृपा करीने ए दुःख थकी जीवोने मुकाव्यानुं करे छे त्यारे अविद्या माया संतापने पामे छे. केम के ज्यारे सत्पुरुषनो आशरो करे त्यारे जी अविद्या--मायाना बंधन थकी बहार थाय छे अने अविद्यामायानो जी टळी जाय छे. अने ते जीव ब्रह्मरूप थइने भगवानना धामने पामे छे अने ते जीव पाछो कोइ काळे अविद्यामायाना बंधनमां आवतो नथी, ते सारु अविद्याने दाझ थाय छे. माटे विद्याने अने अविद्याने लडाइ थाय छे केम के विद्या-अविद्याने भेगुं कोइ काळे बने ज नहीं. जेम त्री भेगुं बने नहीं अने जेम चोर--शाहुकारने भेगुं तेम बने नहीं.

ते विद्यानुं शुं रूप छे ?

ढोलिया उपर विराजमान थया हता. सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने सर्वे अंगमां पुष्पना आभूषण शोभी रह्यां हतां. कंकुनो चांदलो कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणांक हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

प्रश्नः—पछी महाराजनी आरती धून थया पछी गाम शिहोरना भक्त भीमभाइए महाराजने प्रश्न पूछ्युं जे "परमेश्वर भजवानुं तो जीव-प्राणी मात्रने मनमां छे पण तेमां केटलाक प्रभु भजे छे अने केटलाक तो मुद्दल प्रभु भजता नथी, तेमां कोइ भजे छे अने कोइ नथी भजता तेनुं शुं कारण हशे? अने वळी जीव भगवान भजीने मुक्त थाय तेनुं मुख्य साधन शुं छे ? ते कृपा करीने कहो."

पछी महाराज बोल्या जे "जीवमात्रने भगवान भज्यानुं तो भान ज नथी, अने जीवने तो अनादिनुं पंचविषयनुं ज ज्ञान छे. ते काने करीने स्त्री, आदिकना शब्दमां जीव आसक्त थइ रह्यो छे, नेत्रे करीने स्त्री, आदिकना रूपमां जीव जोडाइ रह्यो छे अने रसनाए करीने सारुं सारुं खावाने विषे जीव आसक्त थइ रह्यो छे, माटे तेने करीने जीव भगवानने नथी भजता, अने भगवान पण तेथी वेगळा रहे छे.
त्यां श्लोक—

परामुखानां गोविंदो विषयासक्तचेतसां ।
तेषां तत् परमं ब्रह्म दुरात् दूरत स्थितं ॥

एमां एम कह्युं छे जे 'परमेश्वरथी विमुख थइने विषयने विषे आसक्त थाय छे ते थकी परमेश्वर घणांज वेगळा रहे छे.' अने जेनाथी परमेश्वर वेगळा रहे छे तेने मोक्षनुं साधन कोइ हाथ आवतुं नथी, अने ते जीव सदाय जन्ममृत्युने पाम्या करे छे.

अने एवा असाधु होय तेनो विश्वास न करवो. अने ब्राह्मणमां एवो आसुरी स्वभाव होय तो तेने ब्राह्मण न जाणवो. तथा पंडित होय, पुराणी होय, तपस्वी होय, त्यागी होय, संन्यासी होय, ब्रह्मचारी होय, तो पण पूर्वे कह्यो जे अधर्मनो सर्ग ते जेमां होय तेनो संग करवो नहीं.

–अने जे अष्ट प्रकारे स्त्रीनो त्याग राखता होय अने सर्व प्रकारे द्रव्यनो पण त्याग करता होय, तथा खट रसनो सर्व प्रकारे त्याग करता होय, तथा देहने पोतानुं रूप मानता न होय, अने कोइ जातनुं मान होय नहीं, एवा जे पंचविषयना त्यागी साधु तेनो मन, कर्म, वचने संग करवो. तथा भगवान जीवो उपर कृपा करीने पोते पृथ्वी उपर पधार्या होय तो तेनो संग करवो. केम के जे निर्वासनिक होय ते ज निर्वासनिक करे छे पण रागीने संगे निर्वासनिक थवाय नहीं ए सिद्धांत वार्ता छे. केम के जेवा गुण गुरुमां होय तेवा गुण शीष्यमां आवे छे.

माटे कल्याणकारी गुणवान एवा जे सत्पुरुष तेनो संग करवो अने अकल्याणकारी-गुणे युक्त एवा जे असत्पुरुष तेनो संग न करवो. अने पूर्वे पण जेनां जेनां मोक्ष थया छे ते पण सत्पुरुषने संगे करीने ज थया छे. ते चार वेद, छ शास्त्र अने जे जे मोटा पुरुष थइ गया ते सर्वनो ए सिद्धांत छे."

इति श्री मुखसिद्धांत ८६ समाप्त ।



८७ विषयः—कोई भगवान भजे छे अने कोई नथी भजता तेनुं कारण.

श्री हरिकृष्णाय नमोनमः–संवत् १९१८ ना फागण वद ८ ने दिवस महाराज श्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्री लाखेणी मध्ये विप्र जेठा रावळने घेर उगमणे चार ओरडानी ओसरीमां गादी तकिये युक्त

ढोलिया उपर विराजमान थया हता. सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्या हतां अने सर्वे अंगमां पुष्पना आभूषण शोभी रह्यां हतां. कंकुनो चांदलो कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणांक हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

प्रश्नः—पछी महाराजनी आरती धून थया पछी गाम शिहोरना भक्त भीमभाइए महाराजने प्रश्न पूछ्युं जे "परमेश्वर भजवानुं तो जीव-प्राणी मात्रने मनमां छे पण तेमां केटलाक प्रभु भजे छे अने केटलाक तो मुद्दल प्रभु भजता नथी, तेमां कोइ भजे छे अने कोइ नथी भजता तेनुं शुं कारण हशे? अने वळी जीव भगवान भजीने मुक्त थाय तेनुं मुख्य साधन शुं छे? ते कृपा करीने कहो."

पछी महाराज बोल्या जे "जीवमात्रने भगवान भज्यानुं तो भान ज नथी, अने जीवने तो अनादिनुं पंचविषयनुं ज ज्ञान छे. ते काने करीने स्त्री, आदिकना शब्दमां जीव आसक्त थइ रह्यो छे, नेत्रे करीने स्त्री, आदिकना रूपमां जीव जोडाइ रह्यो छे अने रसनाए करीने सारुं सारुं खावाने विषे जीव आसक्त थइ रह्यो छे, माटे तेने करीने जीव भगवानने नथी भजता, अने भगवान पण तेथी वेगळा रहे छे. त्यां श्लोक—

परामुखानां गोविंदो विषयासक्तचेतसां ।
तेषां तत् परमं ब्रह्म दुरात् दूरत स्थितं ॥

एमां एम कह्युं छे जे 'परमेश्वरथी विमुख थइने विषयने विषे आसक्त थाय छे ते थकी परमेश्वर घणांज वेगळा रहे छे.' अने जेनाथी परमेश्वर वेगळा रहे छे तेने मोक्षनुं साधन कोइ हाथ आवतुं नथी, अने ते जीव सदाय जन्ममृत्युने पाम्या करे छे.

–अने जे दैवी अने संस्कारी एवा जे भगवानना भक्त छे ते तो चित्तमांथी विषयनो त्याग करीने परमेश्वरने विषे जोडाइ जाय छे. अने तेना समीपे परमेश्वर थाय छे. त्यां श्लोक छे जे–' तन्मयत्वेन गोविंदो ते नरा....।' एमां उपर कह्यो ए भाव छे. माटे एवी रीते विषयनो त्याग करीने परमेश्वरने भजता एवा जे संस्कारी भगवानना भक्त तेनी समीपे थवा सारु परमेश्वर मनुष्याकृतिनुं धारण करे छे. पछी ते संस्कारी एवा जे भक्तजन छे ते तो परमेश्वरने ओळखीने अखंड सेवा–संबंधमां रहे छे अने ते प्रत्यक्ष परमेश्वर थकी ज्ञान पामीने ब्रह्मरूप थइने अक्षरधामने पामे छे. अने ते मुक्तनी वांसे बीजा पूर्वे कह्या जे विषयने विषे आसक्तिवाळा जीव ते पण परमेश्वरने मार्गे चाले छे. जेम गोपीयोने अर्थे श्रीकृष्ण प्रगट थया हता तो ते गोपीयोने संगे करीने ऋषिपत्नीयोनुं पण कल्याण थइ गयुं, अने रामावतारमां लक्ष्मण, जानकी अने हनुमानजी, आदिक संस्कारी भक्त सारु रामचंद्रजी प्रगट थया हता तो तेनी केडे घणांक वांदरादिक जीवोनुं कल्याण थयुं.

एवी रीते संस्कारी भक्त जे जे देशमां अथवा जे जे गाममां रहेता होय ते ते देशना तथा ते ते गामना बीजा जीव तेने पण तेनी वातचीते करीने भगवाननो महिमा कही देखाडीने प्रत्यक्ष भगवाननो संबंध करावे छे. पछी ते प्रत्यक्ष भगवानने संबंधे करीने ते जीवनी मलिनता टळी जाय छे. अने जीवे विषयनी आसक्तिए करीने जे स्त्री, आदिकना रूप जोया होय तेने करीने जे पाप लाग्यां होय ते जीव ज्यारे प्रत्यक्ष भगवान, अने ते भगवानना एकांतिक पंचविषयना त्यागी–निर्वासनिक साधु तेनां दर्शन करे तेणे करीने तेना नेत्रनां पाप नाश पामे छे, भगवान अने साधुना शब्द सांभळवे करीने काननां पाप नाश पामे छे, भगवान अने संतनी पासे चालीने जाय तेणे करीने पगनां पाप

वळी जाय छे; एवी रीते प्रत्यक्ष भगवानने संबंधे करीने पाप नाश पामे छे. ते शास्त्रमां कह्युं छे जे—

अन्यक्षेत्रे कृतं पापं, तीर्थक्षेत्रे विनश्यति ।
तीर्थक्षेत्रे कृतं पापं, वज्रलेपो भविष्यति ॥

ते श्लोकमां एम कह्युं जे 'भगवान अने भगवानना भक्त विना बीजे ठेकाणे जे जे पाप कर्यां होय ते जो प्रत्यक्ष भगवान अने भगवानना संत तेनी पासे जइने तेनो गुण ग्रहण करे तो ते जीवना आगळनां पाप नाश पामी जाय छे. अने जो भगवान अने संतनी पासे जइने तेनो अवगुण ले तो तेनुं एवुं पाप लागे ते कोइ काळे नाश पामतुं नथी.'

—अने आ जगतने विषे बे प्रकारना जीव छे, तेमां एक आसुरी जीव छे अने एक दैवी जीव छे. ते जे दैवी जीव छे ते तो महात्मा पुरुष पासे जइने गुण ले छे. अने एम जाणे छे जे 'महात्मा पुरुष तो कृपा करीने आपणने सुखिया करवा सारु दर्शन आपे छे अने कृपा करीने ज्ञाननी वातो करे छे. अने आपणां कल्याणने अर्थे सेवा अंगीकार करे छे अने महात्मा पुरुष तो सदाय पूरणकाम छे.' एम समजीने दैवी जीव छे ते महात्मा पुरुषनी सेवा करे छे. अने जे आसुरी जीव होय ते तो एम जाणे छे जे 'अमारे जेम विषयनी आसक्ति छे तेम मोटा पुरुषने पण आसक्ति हशे अने ते आसक्तिए करीने सारां वस्त्र पहेरता हशे अने फूलना हार पहेरता हशे. अने गादीतकिये बेसता हशे ते मोटप जणाववा सारु बेसता हशे. अने सारां सारां भोजन करावीने जमे छे ते पण तेमां प्रीति हशे त्यारे ज जमतां हशे. अने मुलकमां फरे छे ते कमावा सारु ज फरता हशे.' एवी रीते आसुरी जीव छे ते महात्मा पुरुषनो अवगुण ले छे अने पोताना आत्मानुं भूंडु करे छे.

अने अमारे तो चौद लोकनां जे पंचविषयना सुख छे. ते काग-

विष्टा तुल्य छे, अने जे सारां वस्त्र छे ते तो अमने बळता अग्नि जेवा लागे छे, अने पुष्पना हार ते तो सर्प जेवा लागे छे, अने सारां सारां भोजन ते तो झेर जेवा लागे छे, अने द्रव्यने तो अमे विष्टा तुल्य जाणीए छीए. त्यारे कोइ एम आशंका करे जे 'जो गमतुं न होय तो एनुं ग्रहण शुं करवा करता हशे ?' तो एनुं एम छे जे अमारुं प्रगट-पणुं छे ते जीवोना कल्याणने अर्थे छे, पण अमारा स्वार्थने अर्थे नथी. अने अमारा स्वार्थने अर्थे जणाय तो तेनो विष्टानी पेठे त्याग करी दइए अने कोइ आसुरी जीव होय अने ते एम जाणे जे 'महाराजने कांइक जोइतुं हशे,' एम जाणीने कांइक पदार्थ लावे अने अमने आपे तो ते अमने गमे नहीं. अने जे एम जाणे जे 'महाराजने तो कांइ नथी जोइतुं पण मारा आत्माना कल्याणने अर्थे महाराज कृपा करीने सेवा अंगीकार करे छे.' एम समजे तेनी सेवा गमे छे. ते कृष्णावतारमां दुर्योधने लोक लाजे करीने श्री कृष्णने जमवानुं नोतरुं आप्युं हतुं तो तेनो त्याग करीने भाविक एवा जे विदुरजी तेनी भाजी जम्या.

—माटे दैवी जीव होय तेनो ज भगवानना भक्तने संगे करीने मोक्ष थाय, पण भगवानना भक्तना संग विना जीवनुं कल्याण थाय नहीं. अने भगवानना भक्तने विषे जे जे जीवने हेत होय ते सर्वे जीवनुं कल्याण थाय छे. केम के भगवानना भक्त साथे जेने हेत होय तो तेने भगवान साथे हेत करावे छे. जेम आ वजेराम महताने विषे जो करसन पटेलने हेत हतुं तो ते वजेरामे करसन पटेलने अमारे विषे हेत कराव्युं अने तेनुं कल्याण थयुं. माटे भगवानना भक्तने विषे जीवने हेत थाय एज कल्याणनुं मुख्य साधन छे. अने जेने भगवानना भक्तमां हेत न होय तेनुं कल्याण कोइ काळे थाय नहीं."

॥ इति श्री मुक्तसिद्धांत ८७ समास ॥

८८ विषयः—परम विवेकनुं रूप

श्री हरिकृष्णाय नमोनमः—संवत् १९१८ ना फागण वद ९ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री लाखेणी मध्ये पटेल नथुने घेर रातनी पाछली घडी चार हती ते समे जागीने दातण करीने स्नान करीने शरीरमां गरमी जेवुं हतुं ते ताढक करवा सारु साकर, दहीं अने भात जम्या. पछी उगमणे वार ओरडानी ओसरीमां ढोलियो विछावीने ते उपर विराजमान थया हता. श्वेत खेस पहेरीने धोळुं अंगरखुं धारण कर्युं हतुं अने गुलावी रंगनो फेंटो मस्तके बांध्यो हतो. श्वेत चादर ओढी हती अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा हरिभक्तोनी सभा भराइने वेठी हती.

प्रश्नः—पछी महाराज वोल्या जे "आज तो भीमभक्तने एक प्रश्न पूछीए छीए जे परम विवेकनुं शुं रूप छे ? तेने शास्त्र प्रमाणे कहो."

पछी भीम भक्ते कह्युं जे "त्रण प्रकारनो विवेक छे. (१) तेमां एक तो विवेक ए जे वर्णाश्रमने विषे अविरुद्धपणे निर्वाध वर्तवुं तेनुं नाम विवेक छे. (२) अने वीजो विवेक सत्शास्त्र प्रमाणे, भागवतधर्म प्रमाणे वर्तवुं अने पोताना आत्मानी शुद्धि सरळ स्वभावे करी होय तो पण तेने विषे तत्पर रहेवुं पण तेमां तृप्ति पामवी नहीं अने नित्य नवी श्रद्धा राखवी. केम के 'ते तो हजु सर्वे साधन छे' एम समजवुं तेनुं नाम बीजो विवेक छे. (३) अने त्रीजो विवेक जे प्रत्यक्ष भगवानने ओळखीने तेनो आशरो करवो अने तेनां वचन प्रमाणे वर्तवुं, अने ते प्रगट भगवान जेम कहे तेम मन, कर्म, वचने करवुं पण तेमां कोइ रीते लेशमात्र संशय थाय नहीं, केम के सत्य-संकल्पी अने जीवना परम हेतु अने आत्यंतिक मोक्षना दाता तो प्रत्यक्ष भगवान छे, माटे तेना वच-

नमां मन, प्राणने आरोप करवा अने पोताना मन गमताने अने मान, ममताने मूकी देवा.' एवी रीते समजवुं तेनुं नाम परम विवेक छे."

पछी महाराज बोल्या जे "ए पण उत्तर खरो. अने एनों उत्तर अमे करीए छीए जे परम विवेक ते शुं ? तो भगवाननो दिव्यभाव अने मनुष्यभाव तेने जेम छे तेम निर्बाधपणें अविरुद्ध यथार्थ जाणवा अने कोइ दहाडे भगवानना मनुष्यचरित्र जोइने लेशमात्र संशय थाय नहीं ते परम विवेकनुं रूप छे."

प्रश्न :–पछी वळी महाराजे बीजुं प्रश्न पूछ्युं जे " भगवान शब्द-नो शो अर्थ छे ? पछी तेनो उत्तर पोते ज कर्यो जे "षड-भग जेने विषे होय तेने भगवान कहीए. ते षड-भग ते शुं? तो त्यां श्लोक छे जे–

उत्पत्तिं च विनाशं च लोकनामागतिं गतिं ।
वेत्ति विद्यामविद्यां च स वाच्यो भगवान् इति ॥

एमां एम कह्युं छे जे 'जगतनी उत्पत्ति जेम थइ छे तेम यथार्थ जाणे, तथा नित्य, निमित्त, प्राकृत अने आत्यंतिक ए चार प्रकारना प्रलयने पण जाणे तथा, गतिने अने अगतिने पण यथार्थ जाणे, तथा विद्याने अने अविद्याने पण जेम छे तेम जाणे; ए छ वानाने यथार्थ जेम छे तेम प्रत्यक्ष जाणे अने कही देखाडे तेने भगवान कहीए.' अने ए छ वाना यथार्थ जाणवाने अने कहेवाने पण भगवान ज समर्थ छे."

इति श्री मुक्तसिद्धांत ८८ समास ॥

८९ विषयः—अरिहंत भगवानने पामवानी रीत

श्रीहरिकृष्णाय नमो नमः—संवत् १९१८ ना फागण वद १० ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री लाखेणी मध्ये फुला

भक्तने घेर जमवा पधर्या हता. सर्वे जरीयानी वस्त्र धारण कर्यां हतां. पुष्पना हार तथा बाजु, गजरा, तोरा अने गुच्छ धारण कर्या हता. अने धर्मशाळामां कूई उपर ढोलियो विछावीने ते उपर विराजमान थया हता. ललाटने विषे कंकुनो चांदलो कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी संध्या आरती थया पछी महाराज बोल्या जे "आ संसार छे ते धूळ जेवो छे अने भगवान छे ते चिंतामणीरूप छे. अने जेम धूळ-मांथी धान निपजे छे तेम संसारमांथी मुमुक्षु जीव थाय छे अने ते मुमुक्षु होय अने तेने चिंतामणीरूप एवा जे अरिहंत परमात्मा ते प्रत्यक्ष मळे तो ते मुक्त थाय छे. केम के संसार न होय तो आ धर्मानंदस्वामी तथा अक्षरमुक्तानंद् स्वामी जेवा महामुक्त क्यांथी थाय ?

अने जे धूळमांथी धान थाय छे ते धान घणुंक आपे त्यारे एक रूपियो आवे, अने घणांक रूपिया आपे त्यारे एक सोना महोर आवे, अने घणीक सोना महोरो आपे त्यारे एक मोती आवे, अने घणांक मोती आपे तो पण एक पारसमणि मळवी घणी कठण छे, अने घणीक पारसमणियो आपीए तो पण एक चिंतमणि मळे नहीं. ते तो दृष्टांत. एनुं सिद्धांत ए छे जे आ लोकनां जे पंचविषयनां सुख छे ते धूळने ठेकाणे छे, अने देवलोकनां सुख ते दाणा तथा रूपियाने ठेकाणे छे, अने ब्रह्मादिकनां सुख सोना महोरने ठेकाणे छे, अने वैराटनां सुख मोती-ने ठेकाणे छे, अने अक्षररूप जे केवळी तेनुं सुख पारसमणिने ठेकाणे छे अने भगवान पुरुषोत्तमनुं जे सुख छे ते तो चिंतामणि तुल्य छे.

एवी रीते प्रमाण करीने जगतनो आदि जे प्रकृतिपुरुष छे तेनी वासनानो अंते त्याग करीने तेथी पर एवुं जे अक्षरब्रह्म तेने पोतानुं

स्वरूप जाणीने तेवा ज्ञानना आपनारा एवा जे अरिहंत परमात्मा भगवान तेनुं अखंड ध्यान करवुं. ते कह्युं छे जे–'ॐ नमो अरिहन्ताणुं, ॐ नमो सिद्धाणुं, ॐ नमो आरियाणुं।' एमां एम कह्युं छे जे 'ॐ कहेतां परमात्मा अने अरि कहेतां जीवना अंतरशत्रु जे काम, लोभ, स्वाद, स्नेह अने मान तेना नाशना करनारा एवा जे अरिहन्त भगवान तेने नमस्कार करवो. अने जेना अरि जे शत्रु नाश पाम्या होय एवा जे सिद्धपुरुष जे केवळी तेने नमस्कार करवो. अने आलोकने विषे अथवा परलोकने विषे जे जे केवळी होय ते सर्वेने नमस्कार करवो.' अने एवा जे महात्मा पुरुष तेनो सत्संग करवो, तो ते थकी जीव जे ते केवळपदने पामे छे.

हवे ते केवळपदने सत्पुरुष केवी रीते पमाडे छे? तो जीवने पंचविषयनी वासना रूपी महा कर्म अनादिनुं वळग्युं छे अने ते थकी जीव जे ते जन्म-मृत्युरूपी कष्टने पाम्या करे छे. ते कष्टने टाळवा सारु भगवाने जीवने इन्द्रियो अंतःकरण सर्जी आप्यां छे. ते इन्द्रियो अंतःकरणे करीने भगवानना स्वरूपने जाणे तो ते जीव मुक्त थाय अने महासुखने पामे. जेम मनुष्य घर करे ते थकी उनाळाना तापनुं दुःख टळे छे अने चोमासामां वरसादनुं दुःख टळे छे. अने शियाळानी टाढनुं दुःख पण टळे छे, अने सुखने पामे छे. तेम देहरूपी घर छे तेने करीने त्रिविधिना तापरूपी जे दुःख ते इन्द्रियो अंतःकरणने भगवान सन्मुख चलावे तो टळी जाय अने जो भगवाननो मार्ग बंध करीने देहमां आसक्त थाय तो ते जीव महा दुःखने पामे छे.

जेम घर बांधीने तेनुं बारणुं बंध करे तो तेने दुःख टळे नहीं तेम जीव जे ते देहरूपी घरमां रहीने स्त्री, आदिकना शब्द सांभळे छे ते पापे करीने श्रवण इन्द्रियनुं बारणुं भगवाननी कोरे बंध थइ जाय छे, नेत्र

करीने स्त्री, आदिकना भूंडा भूंडा रूप जुवे छे ते पापे करीने भगवान नीरखवारूपी वारणुं वंध थइ जाय छे, त्वचाए करीने स्त्री, आदिकना भूंडा भूंडा स्पर्श करे छे ते पापे करीने भगवानना चरणनो स्पर्श करवा रूप वारणुं वंध थइ जाय छे. अने दारू, माटी, गांजादिक भूंडा भूंडा अशुभ रस जमे छे ते पापे करीने भगवानना गुण, चरित्र,गावानी कोरनुं वारणुं वंध थइ जाय छे. एवी रीते अधर्मने मार्गे चालवे करीने इन्द्रियो अंतःकरणादिक चोवीस तत्त्वरूपी वारणां भगवाननी कोरे वंध थइ जाय छे.

पछी ते जीवने सत्पुरुषनो संवंध थाय तो तेने प्रथम सत्पुरुष जे ते नियमरूपी तपे करीने इन्द्रियरूप वारणांमांथी पापरूपी कचराने कढावी नाखे छे, अने ज्ञानरूपी दयाए करीने अंतःकरणरूप वारणांमांथी पापरूपी कादवने कढावी नाखे छे. अने वैरागरूपी शीले करीने कारणरूपी वारणांमांथी पापरूपी कादवने कढावी नखावे छे. त्यारे ए जीव शुद्ध थाय छे अने भगवानने भजवानो अधिकारी थाय छे. पछी एवा जे ज्ञानना आपनारा अरिहंत भगवान तेनुं भावे करीने ध्यान करवुं.

—ते ध्यान करवानी रीत कहीए छीए जे प्रथम कह्युं तेवी रीते सद्गुरुने शरणे जइने ते थकी तप, दया, शील अने भाव तेने सिद्ध करीने पछी एकांत जग्या होय त्यां जइने पृथ्वी उपर धावळीनुं आसन नाखीने ते उपर वेसीने स्थिरायमान थइने ध्यानमां वेसवुं. अने ध्यानमां वेसीने प्रथम तो चोवीस तत्त्वनी जे वृत्तियो छे तेने पिंड, ब्रह्मांडादिक सर्वे पदार्थमांथी पाछी वाळीने ते सर्वेनो पोते द्रष्टारूप थइने ते वृत्तियोने आत्माने विषे लय करीने ते गुरुरूप अरिहंतनुं ध्यान करे छे ते केवळपदने पामे छे. अने तेने सातमीनो सिद्धांत कहे छे. माटे आज पण जेने केवळपदने पामवुं होय तेने सुगम रीते सत्संगमां रहेवा थकी पमाडीए छीए."

इति श्री मुखसिद्धांत ८९ समाप्त ।

१० विषयः—प्रत्यक्ष भगवान मळे तो पण वहेवारमां प्रीति रहे छे तेनुं कारण

श्री हरिकृष्णाय नमोनमः—संवत् १९१८ना फागण वद ११ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री सरवैमध्ये पटेल काळा गीगाने घेर उत्तरादे वारना ओरडानी ओसरीमां सांजने समे गादी तकिया बिछावीने विराजमान थया हता. सर्वे सोनेरी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने कंठने विषे घणांक पुष्पना हार धारण कर्या हता. पाघने विषे तोरा अने कान उपर गुच्छ शोभी रह्या हता. कंकुनो चांदलो कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणांक हरिभक्तोनी सभा भराइने बेठी हती.

प्रश्नः—पछी गाम वळाना विप्र लक्ष्मीरामे महाराजने प्रश्न पूछयुं जे "हे महाराज! तमारा स्वरूपमां तो संशय नथी तो पण तमने मूकीने वहेवारमां वृत्तियो जाय छे तेनुं शुं कारण हशे? अने ते संसार—व्यवहारमांथी वृत्तियो उखडीने तमारी सेवामां अखंड रहे तेनो शो उपाय छे? ते कृपा करीने कहो."

पछी महाराज बोल्या जे "मायानुं स्वरूप ज एवुं छे, ते सत्पुरुषनो समागम मूकीने वहेवारमां जोडाय तो तेमां जीवनी वृत्तियो जरूर चोंटी जाय. जेम जे दारू पीए तो ते ज्ञानी होय के अज्ञानी होय ते बेय गांडा थइ जाय छे, तेम जे वहेवाररूपी मायामां वसे तो तेमां चोंट्या विना रहे ज नहीं. माटे वहेवारना संगनो सर्व प्रकारे त्याग करीने निर्वासनिक एवा जे भगवानना एकांतिक साधु तेना संगमां अखंड रहेवुं. अने जेवी देह अने देहना संबंधीमां जीवने आत्मबुद्धि अने दृढ प्रीति छे तेवी भगवान अने भगवानना साधु तेने विषे आत्मबुद्धि अने दृढ प्रीति करवी. अने एवी रीते करे तो तेने थोडाक काळमां जगतनी वासना टळी जाय छे अने ते ज भगवाननी अखंड सेवानो अधिकारी छे.

—अने मुक्त, मुमुक्षु, विषयी अने पामर ए चार प्रकारना जीव होय तेने भगवानना एकांतिक साधुमां दृढ प्रीति थाय तो ते निर्वासनिक थइने महा मुक्त थाय. अने मुक्त अने मुमुक्षु होय पण तेने प्रत्यक्ष भगवान अने भगवानना संत तेमां प्रीति न थाय तो ते आत्यंतिक मोक्षने न पामे. अने विषयी अने पामर जीव होय तो पण जो तेने भगवान अने भगवानना संत तेने विषे दृढ प्रीति थाय तो ते महा मुक्त थाय छे अने आत्यंतिक मोक्षने पामे छे. माटे तमे पण सर्व उपाधिनो त्याग करीने धर्मानंद स्वामी तथा अक्षरमुक्तानंद स्वामीना मंडळमां रहो तो कोइ वातनी कसर रहेशे नहीं. ए तमारा प्रश्ननो उत्तर छे."

पछी लक्ष्मीरामे कह्युं जे "हे महाराज! मारे पण एम ज करवुं छे अने स्वामीपंथमांथी मारुं मन उदास थयुं छे, माटे कृपा करीने तमारी सेवामां मने अखंड राखो, एज विनंती करुं छुं."

इति श्री मुखसिद्धांत ९० समास ॥

९१ विषयः—निर्बीजसांख्य-योग अने सबीजसांख्य-योग

श्रीहरिकृष्णाय नमो नमः—संवत् १९१८ ना फागण वद १२ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गामश्री सरवै मध्ये पटेल वस्ता देवजीने घेर उत्तरादे बार ओरडानी ओशरीमां गादि तकीये युक्त ढोलिया उपर विराजमान थया हता. सर्वे जरीयानी वस्त्र तथा पुष्पना घणांक हार धारण कर्यां हतां. ककुंनो चांदलो कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणांक हरिभक्तोनी सभा भराइने बेठी हती.

प्रश्नः—पछी महाराज बोल्या जे "आज तो भवानीशंकरने प्रश्न

पूछीए छीए जे निर्वीजसांख्य अने निर्वीजयोग, अने सवीजसांख्य अने सवीजयोग तेनां शा लक्षण छे ? ते कहो."

पछी भवानीशंकर भाई बोल्या जे "चोविस तत्त्वनां रूप यथार्थ जाणीने ते थकी नोखो अने अखंड अने अविनाशी एवो जे पोतानो आत्मा तेना स्वरूपने साक्षात्कार जाणवुं ते निर्वीजसांख्य कहेवाय. अने एवो जे आत्मा तेने अक्षरब्रह्म साथे अभेदपणें समजीने ते अक्षरने पोतानुं स्वरूप मानीने तेलुं निरंतर मनन करवुं अने जे पोताना आत्मानो साक्षात्कार थाय तेने निर्वीजयोग कहीए. अने ए अक्षर थकी पर अने अक्षरना आधार अने सर्वना कारण कर्तुमकर्तुम् अने अन्यथा कर्तुम् एवा जे परमात्मा भगवान तेनुं स्वरूप जेम छे तेम जाणवुं तेने सवीजसांख्य कहीए. अने सवीजयोग एने कहीए के एवा जे परमात्मा तेना अनंत ऐश्वर्य अने अनंत दिव्यगुण छे, एवी रीते भगवाननो अपरिमित अलौकिक महिमा जाणीने अक्षरब्रह्म एवुं जे पोतानुं स्वरूप तेने विषे ध्याने करीने निर्विकल्प स्थिति पामवी तेने सवीजयोग कहीए."

प्रश्न :–पछी महाराज बोल्या "ए उत्तर खरो. हवे तमे अमने प्रश्न पूछो." पछी भवानीशंकर भाइए प्रश्न पूछ्युं जे "आत्यंतिक मोक्ष केम थाय ते कहो ?" पछी महाराज बोल्या जे "तमे कह्यां जे निर्वीजसांख्य –योग अने सवीजसांख्य–योग तेने यथार्थ जेम छे तेम प्रत्यक्ष एवा जे परमात्मा भगवान ते थकी सिद्ध करवा अने तेमां कोइ रीतनो अंतराय न रहे अने जाग्रत, स्वप्न अने सुषुप्ति ए त्रणे अवस्थाने विषे साक्षात्कार परमात्मानुं स्वरूप देखाया करे तेने आत्यंतिक मोक्ष कहीए."

इति श्रीमुख सिद्धांत ९१ समास ।

९२ विषय :—स्वार्थ, परमार्थ अने परम परमार्थना रूप

श्रीहरिक्रिष्णाय नमोनमः—संवत् १९१८ना फागण वद १३ने दिवस महाराज श्रीहरिक्रिष्ण भगवान गाम श्री रतनपुर मध्ये ग्रवाडि रूपजी-ने घेर दाक्षिणे वार ओरडानी ओसरीमां ढोलिया उपर विराजमान थया हता. श्वेत सोनेरी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पुष्पना हार, तोरा अने गुच्छ धारण कर्या हता. कंकुनो चांदलो कर्यो हतो. अने पोताना मुखार-विंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी महाराज बोल्या जे—" परमार्थ ते केने कहीए ? अने स्वार्थ ते केने कहीए ? ए प्रश्न सर्वेने पूछीए छीए." पछी तेनो उत्तर पोते ज कर्यो जे परमार्थ ते शुं ? तो पोताना आत्माना मोक्षने अर्थे जे जे निष्कामभावे दान, पुन्य, सेवा, स्मरण, तप, तीर्थ, व्रत करवां तथा सत्पुरुषनो समागम करवो तथा भगवाननी नवधा भक्ति करवी ए सर्वे परमार्थ छे. अने देहने सारु जे जे करवुं ते सर्वे स्वार्थ छे.

त्यारे कोइ एम आशंका करे जे पोताना आत्मानुं सारुं करे तेमां शुं परमार्थ छे ? तो एनुं एम छे जे जे पोताना आत्मानुं सारुं करे छे ते तो आखा विश्वनुं सारुं करे छे. केम के जे पोताना आत्माने शुद्ध करीने भगवानने साक्षात्कार पाम्यो एवो जे मुक्त तेनी सेवा ए करीने तथा एवा मुक्तने दर्शने करीने तथा समागमे करीने अनंत जीवोनुं सारुं थाय छे. केम के पूर्वे पण प्रह्लाद, नारद, अंबरीश आदिक घणांक भगवानना भक्ते पोताना आत्मानुं रूडुं कर्युं छे तो तेने समागमे करीने पण घणांक जीवोनुं सारुं थयुं छे अने आज पण तेनां वचन सांभळीने केटलाक जीव मोक्षने मार्गे चाले छे.

—माटे मोक्षने अर्थे निष्कामभाव राखीने सत्पुरुषनो आशरो करीने

ते थकी आत्मा-परमात्मानुं शुद्ध एवुं जे आत्यंतिक ज्ञान तेने सिद्ध करवुं अने तेने विषे दृढ स्थिति पामवुं तेनुं नाम परमार्थ छे. अने एवुं ज्ञान सिद्ध करीने पछी बीजा जीवोने ए ज्ञान सिद्ध कराववुं तेनुं नाम परम परमार्थ छे. अने देहने पोतानुं स्वरूप मानीने जे जे दान, पुन्य, तप, तीर्थ, व्रतादिक करवां ते सर्वे स्वार्थ छे. माटे स्वार्थीयो तो सर्वे संसार छे अने स्वार्थीया संसारमांथी परमार्थी थाय छे. जेम धूळमांथी धान नीपजे छे तेम संसारमांथी मुक्त थाय छे. अने जे स्वार्थीया होय तेनुं कल्याण कोइ काळे थाय नहीं अने तेने आसुरी संप्रदायना जीव जाणवा.

–अने अमे तो अनादि परमार्थी छीए अने परम परमार्थने अर्थे अमारुं शरीर अर्पण करी राख्युं छे. अने आ धर्मानंदस्वामी पण परमार्थ सिद्ध करीने परम परमार्थने अर्थे सावधान थइने मंड्या छे. अने अक्षरमुक्तानंद स्वामी पण परमार्थरूप तो थया छे पण परम परमार्थमां कसर राखे छे, माटे एमने एटली खोट छे, तो ए खोट राखवी घटे नहीं. केम के परम परमार्थ करवो एज अमारी खरेखरी सेवा छे. अने ए परम परमार्थ करे तो थाय एम छे."

पछी अक्षरमुक्तानंद स्वामीए कह्युं जे "हे महाराज! एटली हुंमां खोट छे, ते हवे जेम महाराजनी मरजी होय तेम करवुं छे."

पछी महाराज बोल्या जे "परम परमार्थ करवो एज आपणुं काम छे, पण ए काम बीजा कोइथी थाय एम नथी."

इति श्री मुक्तसिद्धांत ९२ समाप्त ।

२३ विषयः—अविवेकी अने विवेकीना रूप

श्री हरिकृष्णाय नमोनमः–संवत् १९१८ ना चैत्र सुद १ ने दिवस महाराज श्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्री रतनपुर मध्ये त्रवाडि भवानीशंकर कुवेरजीने घेर उगमणे वार ओरडानी ओशरीमां ढोलिया उपर गादी तकिया नखावीने विराजमान थया हता. सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने सर्वे अंगने विषे पुष्पना आभूषणो शोभी रह्यां हतां. ललाटने विषे केसरनी अर्चा अने कंकुनो चांदलो कर्यां हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणांक हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी महाराज बोल्या जे "अविवेकी मनुष्य छे ते सुख पामवाना उपाय करे छे पण तेमांथी उलटुं दुःख ज थाय छे. ते केवी रीते सुखना उपाय करे छे? तो देहने पोतानुं रूप मानीने इन्द्रियोने प्रिय लागे एवा जे पंचविषय तेने भोगवीने सुख माने छे. तो पण ते विषयभोगे करीने तृप्ति थती नथी. अने वळी ए विषयनुं सुख छे ते आत्माने अपार सुख जे ब्रह्मसुख तेने नाश करनारुं छे. जेम सोमलखार नाखीने साकरना लाडवा कर्या होय ते लाडवा खातां तो गळ्या लागे पण जे खाय तेना प्राण जाय, तेम मायिक पंचविषयनां सुख भोगवती वखते तो सारा जेवुं लागे छे पण तेनी केडे जन्ममृत्यु, गर्भवास, चोराशी अने यमपुरीनां अपार दुःख भगववां पडे छे. अने ते अविवेकी जीव महा हेरान थाय छे. अने जे विवेकी छे ते मायिक पंचविषयनां सुखनी इच्छा नथी राखता अने अविनाशी एवुं जे भगवानना धाम संबंधी सुख तेनुं जतन करे छे, तो तेने दुःख मात्र टळी जाय छे अने अपार सुखने पामे छे.

माटे जेने अविनाशी सुख पामवुं होय तेने तो अविवेक अने अस-

त्पुरुष तेना संगनो त्याग करवो. अने सत्पुरुष एवा जे प्रत्यक्ष भगवान तथा पंचविषयना त्यागी एवा जे निर्वासनिक प्रगट भगवाननना साधु तेनो समागम करवो अने ते पासेथी ज्ञान पामीने इंद्रियोने पंचविषय थकी पाछी वाळीने अंतःकरणने वश करवुं. अने देह अने देहना जे संबंधी तेमांथी प्रीतिने टाळीने ते देह थकी नोखो एवो जे आत्मा तेने पोतानुं स्वरूप जाणीने पोते सुख रूप थइने मायिक एवा जे जगतना पंचविषयनां मीथ्या सुख तेनी वासनानो त्याग करीने निर्वासनिक थवुं. अने पछी जेणे करीने भगवान प्रसन्न थाय एवा जे शील, संतोष, दया, क्षमा, श्रद्धा, सत्य, शौचादिक जे शुभ गुण तेनुं ग्रहण करवुं. तथा तप जे शास्त्रविहित भोगनो संकोच तथा व्रत जे एकादशी, रामनवमी, जन्माष्टमी, जन्मचतुरदशी आदिक उपवास आस्तिकभाव राखीने आत्माना मोक्षने अर्थे निष्कामभावे करवा.

जेम खेडूत परमेश्वरनो विश्वास राखीने खेतरमां अन्न वावी आवे छे तो ते एक दाणामांथी सहस्र दाणा थाय छे, तेम भगवाननो दृढ विश्वास राखीने पोताना जीवना कल्याणने अर्थे जे जे जप, तप, व्रत, दान, पुण्य, आदिक देहने कष्ट दइने करे छे तेने अपार एवुं जे अविनाशी सुख ते प्राप्त थाय छे. ते उपर एक साखी छे जे—

घर वाळे घर ऊगरे, घर राखे घर जाय;
एक अचंबो में सुण्यो, मडा काळकु खाय.

एमां एम कह्युं छे जे 'देह रूपी घर छे तेने तप अनें ज्ञानरूपी अग्निए करीने वाळे छे तेने आत्मारूपी घर ऊगरे छे अने ते अभयपदने पामे छे. अने देहरूपी घरने जो प्रीतिए करीने राखे छे अने इंद्रियोने खुशी पडे एम चाले छे तेने आत्माना मोक्ष रूपी घर जाय

छे, कहेतां ते आत्मा क्यांय ठरीने बेसतो नथी. अने मडारूप कहेतां वासनाए रहित आत्मारूप थाय छे ते तो काळना पण काळ छे.' माटे अविवेक, अनाचरण अने असत्पुरुष तेनो त्याग करीने सुविवेकअने सदाचरण राखीने सत्पुरुषनो संग करीने परमेश्वरनुं भजन करे छे ते महासुखने पामे छे."

इति श्री मुखसिद्धांत ९३ समाप्त ।

९४ विषयः—बद्ध अने मुक्तनां लक्षण

श्री हरिकृष्णाय नमोनमः—संवत् १९१८ ना चैत्र सुदि २ ने दिवस महाराज श्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्री रतनपुरमध्ये त्रवाडी भवानीशंकर कुबेरजीने घेर उगमणे बार ओरडानी ओसरीमां गादी तकिया बिछावीने ढोलीया उपर विराजमान थया हता. सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पुष्पना आभूषण सर्वे अंगमां शोभी रह्यां हतां ललाटने विषे केसरनी आड करीने कंकुनो चांदलो कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तोनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी महाराज श्री हरिकृष्ण भगवान कृपा करीने पोताना भक्तजन प्रत्ये बोल्या जे—

को वा हि बद्धो विषयानुरागी ।
को वा हि मुक्तो विषये विरक्तः ॥

ए श्लोकमां एम कह्युं छे जे 'विषयने विषे आसक्तिवाळो जिव ते बद्ध छे अने विषयने विषे जेने प्रीति नहीं तेमुक्त छे.' पण तेमां सर्वेने एटलुं पूछीए छीए जे बद्ध अने मुक्त बेय विषयने तो इंद्रियोद्वारे सरखा

भोगवे छे. केम के बद्ध होय ते काने करीने शब्द सांभळे छे तेम ज मुक्त होय ते पण काने करीने शब्द सांभळे छे. एवी रीते आंखे रूप, त्वचाए स्पर्श, रसनाए रस, नासिकाए गंध, ते बद्ध अने मुक्त बेय सरखा ग्रहण करे छे पण तेमां कांइ भेद छे के नहीं ? ते कहो."

पछी तेनो उत्तर पोते ज कर्यो जे "बद्ध अने मुक्त बेय इंद्रियो द्वारे विषयने तो भोगवे छे पण तेमां भेद घणो छे. केम के जे बद्ध छे ते अविवेके करीने विषयने भोगवे छे-अने जे मुक्त छे ते विवेक वडे करीने विषयने भोगवे छे. केम के मुक्त होय तेने पण देह निर्वाह सारु विषय भोगव्या विना देह रहे नहीं. पण तेमां बद्ध जे अज्ञानी जीव छे ते जे ते काने करीने वेश्याओना अने भवायाना शब्द सांभळवामां आसक्त थाय छे तेने करीने आत्माने विषे पापकादव भराय छे अने त्वचाए करीने स्त्री, आदिकनो स्पर्श करवामां आसक्त थाय छे तेने करीने पण आत्माने विषे पापकादव भराय छे. एवी रीते अज्ञानी अने बद्ध जीव जे ते दश इंद्रियो अने चार अंतःकरण तेने विषयने विषे आसक्तिए करीने आत्माने विषे पापकादव भरे छे, ते 'आत्मा' शब्दे करीने आ ठेकाणे 'अंतःकरण'ने जाणवुं. ते मायिक अशुभ विषयने भोगवने करीने अंतःकरण भ्रष्ट थइ जाय छे, अने अंतःकरण भ्रष्टे करीने भगवानने अत्यंत विस्मृति थाय छे अने ते जीवनुं कल्याण थाय नहीं.

–अने जे मुक्त अने ज्ञानी एवा जे भगवानना भक्त छे ते तो एम जाणे छे जे 'भगवानना स्वरूप विना मारी इंद्रियोनी वृत्तियो बीजे जशे तो मारुं अंतःकरण भ्रष्ट थइ जशे अनेकल्याणना मार्गथकी पडी जइश.' एम जाणीने कानेकरीने मायिक स्त्री,आदिकना शब्दनो त्याग करीने भगवाननी कथा वार्ता सांभळीने आनंद पामे छे, अने त्वचाए

करीने भगवाननो स्पर्श करीने आनंद पामे छे, अने नेत्रे करीने भगवान अने भगवानना एकांतिक निर्वासनिक साधु तेना भावे सहित दर्शन करीने परम आनंदने पामे छे, अने रसनाए करीने भगवानजी प्रसादी जमीने आनंद पामे छे. एवी रीते भगवानसंबंधी पंचविषयने भोगवीने देह निर्वाह करे छे, पण पापी अने असत्पुरुषना संबंधने पामेला एवा जे पंचविषय तेने नथी भोगवता.

--अने कोइ जातिए करीने उत्तम होय पण ते विषयने विषे आसक्त होय तो तेनुं एठुं भगवानना भक्ते खावुं नही, केम के पापीनुं एठुं जमवे करीने अंतःकरण भ्रष्ट थइ जाय छे. ते सारु आहार शुद्ध करवो. अने आहारनी शुद्धिए करीने अंतःकरण शुद्ध थाय छे. अने अंतःकरणनी शुद्धिए करीने भगवाननी अखंड स्मृति रहे छे अने तेने कल्याणना मार्गमां कोइ विघ्न आवे नहीं. माटे शुद्ध आहार करवो अने जो कुसंगनो संग करीने विषयने भोगवे तो ते गमे तेवो मोटो कहेवातो होय तो पण ते विषयमां बंधाणा विना रहेज नहीं माटे कुसंगथी छेटे रहीने मायिक विषयनो त्याग करे ते ज मुक्त थाय छे.

--अने अमे तो कुसंगमां जइए तो तेनुं कुसंगीपणुं टळी जाय छे अने विषयमां रहीने निर्लेप रहेवाने तो एक हुं ज समर्थ छुं अने अमारी जे सर्वे क्रिया छे ते भक्तजनना कल्याणने अर्थे छे अने अमने मायिक पदार्थ मोह उपजावे एम नथी. अने अमे तो सदाय माया पर छीए. अने आ जे जरियानी वस्त्र पहेरीए छीए के थाळ करावीने जमीए छीए तथा गादीतकिये बेसीए छीए ते पण भगवानना भक्तने निर्वासनिक करवा सारु ग्रहण करीए छीए पण अमारा सुख सारु नथी ग्रहण करता. अने अमारे तो सारां वस्त्र तथा फाटयां तूटयां चींथरां, तथा भारे भारे पकवान तथा टाढा टुकडा,

गादी तकिये बेसवुं तथा भोंय सूइ रहेवुं, भारे भारे हवेलीयो तथा तरणनी झुंपडी, ए सर्वे अमारे सम वर्ते छे. माटे अमने कोइ पदार्थ बंधन करे एम नथी. अने कोइ अमारी क्रिया जोइने ते प्रमाणे करवा जशे तो ते मोटो मुक्त हशे तो पण ते भ्रष्ट थया विना रहे ज नहीं ए सिद्धांत वार्ता छे.

ते सारु जेने पोताना आत्माना मोक्षनो खप होय तेने अमारी आज्ञा प्रमाणे वर्तवुं अने जे आज्ञा प्रमाणे वर्तशे ते जेवो तेवो जीव हशे तो पण तेने कोइ पदार्थ बंधन करवाने समर्थ नथी. अने तेने भगवाननी अखंड स्मृति रहेशे. माटे भगवानना भक्त होय तेणे अधर्मीना संगनो त्याग करीने साचा साधुनो समागम करवो. अने संतना समागम थकी आहार शुद्ध थाय छे, अने आहारनी शुद्धि थकी ज आत्मानो आत्यंतिक मोक्ष छे."

इति श्री मुखसिद्धांत ९४ समाप्त ।

---

९५. विषयः—निष्काम व्रत दृढ थवाना छ उपाय.

श्री हरिकृष्णाय नमोनमः—संवत् १९१८ ना चैत्र सुद ४ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री रोहीशाळा मध्ये ओझा भगवानजी लक्ष्मीरामने घेर सांजने समे उगमणे बार ओरडानी आगळ फळीमां ढोलिया उपर विराजमान थया हता. सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां. अने सर्वे अंगमां पुष्पना आभूषणो शोभी रह्यां हता. ललाटने विषे कंकुनो चांदलो कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणांक हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

प्रश्नः—पछी महाराजे साधुने प्रश्न पूछ्युं जे "निष्काम व्रत केम दृढ थाय ? ते कहो." पछी धर्मानंद स्वामीए कह्युं के "निष्कामी एवा

जे साधु तेनो समागम अने तेना आपेला जे नियम तेने दृढपणे पाळवा तेने करीने निष्कामव्रत दृढ थाय छे."

पछी महाराज बोल्या जे "निष्कामव्रत दृढ थवाना छ उपाय छे. तेमां एक तो प्रत्यक्ष भगवाननी दृढ उपासना करवी अने प्रत्यक्ष भगवाननी उपासनावाळा एवा जे साधु तेनो संग राखवो. अने पोताना गुरुए जे जे नियम धराव्या होय तेने दृढ करीने पाळवा, अने स्त्रीना देहनो तथा पुरुषना देहनो वस्तु विचार करवो जे 'स्त्रीपुरुषनो देह छे ते वीर्य अने रुधिर थकी बन्यो छे अने हाड, मांस, नाडीयो, त्वचा, रोम, मळ, मूत्र तेनो भरेलो स्त्रीपुरुष बेयनो देह छे. माटे एवी नकारी वस्तुमां हुं शुं मोह पामुं ? अने एवी वस्तुमां तो अतिशय नीच अने चंडाळ होय ते मोह पामे अने तेमां सुख माने, तथा श्वान अने सूकर होय ते मळ, मूत्र, परु, पाच तेमां लोभाय पण मनुष्य तेमां लोभाय नहीं. तेम मळ, मूत्र, परु, पाच रूप जे स्त्रीपुरुषनो देह तेमां भगवानना भक्त होय ते मोह पामे नहीं अने श्वान सूकर जेवा जे आसुरी जीव होय ते मोह पामे छे.' एम दृढ विचार करीने स्त्रीपुरुषना देहनी अरुचि करवी.

—अने आत्मा—अनात्मानो दृढ विवेक करवो कहेतां 'अनात्मा जे देह ते थकी आत्मा जे चैतन्य ते नोखो छे, ते आत्मा पोतानुं स्वरूप छे पण देह पोतानुं स्वरूप नथी.' एम समजीने देहना सुखनो त्याग करवो अने आत्माने सुखे करीने सुख मानवुं. ते आत्मा केवो छे? तो अखंड छे, ब्रह्म छे, सुखरूप छे, पण जड एवो जे देह तथा जड एवा जे मायिक पदार्थ एने करीने आत्मा सुखियो थाय एवो नथी. अने ए तो भगवानने सुखे करीने ज महा सुखियो थाय एवो छे. एम दृढ समजवुं.

—अने आसुरी एवा जे कामी पुरुष तथा कामी स्त्रीयो तेना संगनो सर्व प्रकारे त्याग करवो. तथा कामने उपजावे एवां जे शास्त्र तथा कामने

उपजावे एवां कीर्तन तथा एवी वार्ताओ तेनो पण सर्वे प्रकारे त्याग करवो, तथा कामने उपजावे एवा जे रस तेनो पण त्याग करवो. एवी रीते आ कह्या जे छ उपाय तेने दृढ करे तो ते दृढ निष्कामी थाय छे.

–अने तेमां बे प्रकार छे; ते एक वर्ण अने एक आश्रम तेनां धर्म नोखां नोखां छे. तेमां जे त्यागी थया होय तेने तो अष्ट प्रकारे स्त्रीनो त्याग करवो. त्यां श्लोक छे–

श्रवणं कीर्तनं केलिः पेक्षणं गुह्यभापणं
संकल्पोध्यवसायश्च क्रिया निर्वृत्तिरे वच।
एतन्मैथुनमष्टांगं प्रवदन्तिमनीपिणः
विपरितं ब्रह्मचर्यमेततेवाष्ट लक्षणम् ॥

एवी रीते आठ प्रकारे स्त्रीनो त्याग करे ते त्यागीनुं ब्रह्मचर्यव्रत कहेवाय छे.

–अने अंतरमां वासना छे जेने एवा जे गृहस्थाश्रमी स्त्रीपुरुष तेमने पण ब्रह्मचर्य कह्युं छे. ते जे सधवा स्त्री होय तेणे पोताना पति विना बीजा पुरुष मात्रने भाइ, बाप अने दीकरा जेवा जाणवा, अने जेने स्त्री होय एवा जे पुरुष तेणे पोतानी परणेली स्त्री होय 'ते स्त्री' अने ते विना बीजी स्त्रीयो मात्र तेने मा, व्हेन अने दीकरी तुल्य जाणवी, तो ते गृहस्थनुं ब्रह्मचर्यव्रत कह्युं छे. अने तेने ज भगवाननो संबंध थाय छे. त्यां साखी छे–

पर धन पथ्थर करी जाणे, पर स्त्री मात समान;
ए वा पाळे हरि ना मळे तो तेना तुलसीदास जमान.

माटे जेणे भगवानने पामवुं होय तेणे एवी रीते ब्रह्मचर्यव्रत दृढ राखवुं. अने जे विधवा स्त्री होय तेणे अष्ट प्रकारे पुरुष मात्रनो त्याग करवो.

–अने वळी जीवनी श्रद्धाना पण त्रण भेद छे; उत्तम, मध्यम अने कनिष्ठ. तेमां जेने उत्तम श्रद्धा होय तेणे तो वासना टाळवा सारु स्त्रीना

काममनुं प्रमाण करीने एक के बे पुत्र–पुत्री थाय त्यार पछी स्त्रीनो त्याग करी देवो, अने जे मध्यम श्रद्धावाळा होय तेणे अडधी अवस्था थाय त्यारे स्त्रीनो त्याग जरूर करवो, अने जे कनिष्ठ श्रद्धावाळा होय तेणे पण देह मुक्या मोर स्त्रीनो त्याग करीने निर्वासनिक थवुं.

माटे आवी समजणवाळा जे भगवानना भक्त गृहस्थाश्रमी होय तेने निष्कामव्रत दृढ थाय छे, अने ते देहने मूकीने अक्षरधामने पामे छे. अने जेने ब्रह्मचर्यव्रत दृढ न होय त्यां सुधी ते त्यागी कहेवातो होय अथवा गृहस्थ होय तथा वैरागवान जणातो होय, पंडित होय, तपसी होय तो पण तेनो आत्यंतिक मोक्ष थाय नहीं ए सिद्धांत वार्ता छे."

इति श्री मुख्यसिद्धांत ९५ समाप्त ।



९६ विषय :—अविनाशी पुन्य-पाप अने नाशवंत पुन्य-पाप

श्री हरिकृष्णाय नमोनमः—संवत् १९१८ना चैत्र सुदि ५ने दिवस महाराजश्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्री रोहीशाळा मध्ये ओझा भगवानजी लक्ष्मीरामने घेर उगमणे बार ओरडानी ओसरीमां गादी तकीया नखावीने ढोलिया उपर विराजमान थया हता. सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पुष्पना आभूषणो सर्वे अंगमां शोभी रह्यां हतां. कंकुनो चांदलो कर्यो हतो. अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणांक हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी महाराज बोल्या जे "एक अविनाशी पुन्य छे अने एक नाशवंत पुन्य छे, अने वळी एक अविनाशी पाप छे अने एक नाशवंत पाप छे. तेमां नाशवंत पुन्य ते कयुं ? तो धर्म, अर्थ, काम संबंधी जे जे सकाम पुन्य छे ते नाशवंत छे. केमके सकाम पुन्यनुं फळ देहे करीने

नहीं, तेम जीवने भगवाननो आधार होय त्यां सुधी जीव जीवे छे अने जो भगवान पोतानी सत्ताने हरी ले तो ते जीवनो नाश थइ जाय छे. ते बीजां कोइ पापे करीने जीवनो नाश थतो नथी पण प्रत्यक्ष भगवान अने भगवानना भक्त तेना द्रोहे करीने जीवनो नाश थाय छे?

–ते केवी रीते जीवनो नाश थाय छे? तो जेम देहमां सर्वे अवयवो होय पण तेना देव उठी जाय तो पछी ते अवयवो कांइ उपयोगमां आवे नहीं, तेम प्रत्यक्ष भगवान अने तेना भक्तना द्रोहे करीने आत्माने सुकृत थवाना उपकरण सर्वे नाश पामी जाय छे. अने ते जीव मायाने विषे सदाय लीन थइ रहे छे.

माटे जेने पोताना आत्मानुं रूडुं करवानी इच्छा होय तेणे तो प्रत्यक्ष भगवान अने तेना भक्त तेनो कोइ काळे कोइ रीते द्रोह करवो ज नहीं. केम के तेना द्रोहनुं पाप ते बीजां कोटि उपाय करे तो पण नाश पामतुं नथी. माटे ए पापथी अतिशय बीवुं अने द्रोह न करवो."

इति श्री मुखसिद्धांत ९६ समाप्त।

---

९७ विषय :–प्रभुना शरणमां रहेवानी योग्यतानी प्राप्ति

श्री हरिकृष्णाय नमोनमः–संवत् १९१८ना चैत्र सुद ६ ने दिवस महाराज श्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्री रोहीशाळा मध्ये ओझा भगवानजी लक्ष्मीरामने घेर उगमणे बार ओरडानी आगळ फळीमां ढोलिया उपर विराजमान थया हता. सर्वे जरीयानी वस्त्र धारण कर्यां हतां. अने पुष्पनां हार कंठमां धारण कर्यां हतां. कंकुनो चांदलो कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनिमंडळ तथा हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी गाम रतनपुरना भरवाड रामो तथा रजपुत संघभाई तेणे महाराजने हाथ जोडीने कह्युं जे "हे महाराज ! अमने तमारा शरणमां राखजो." पछी महाराज बोल्या जे "अमे तो शरणमां राखीशुं, पण तमे शरणमां रहो एवा गुण शीखजो. केम के जेना भेगुं रहेवुं होय तेने गमे एवा गुण शीखीए त्यारे ते भेगुं रहेवाय. जेम शाहुकार भेगुं रहेवुं होय त्यारे तेने गमे तेवा गुण शीखवा जोइए तो ते शाहुकार भेगुं रहेवाय, तेम अमने गमे एवा गुण शीखे त्यारे अमारे शरणे रहेवाय.

–ते अमने केवा गुण गमे छे ? तो अमने धर्म गमे छे. ते धर्म ते शुं ? तो अमारी आज्ञा प्रमाणे वर्तवुं तेनुं नाम धर्म छे. जेम राजानो कायदो होय ते प्रमाणे वर्ते ते एने गमे छे अने ते कायदाने लोपे तेने राजा दंड आपे छे, तेम भगवाननो कायदो वेद छे. ते वेद प्रमाणे वर्ते ते अमने गमे छे अने जे वेदने लोपे छे तेने अमारा भेगुं रहेवाय नहीं अने ते अमने गमे पण नहीं.

हवे ते वेदमां शुं कह्युं छे ? तो चार वर्ण अने चार आश्रम तेना जे मनुष्य तेने वर्तवानी रीत कही छे. ते चार वर्ण कया ? तो ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य अने शुद्र ए चार वर्ण. अने ब्रह्मचारी, गृहस्थ, वानप्रस्थ अने संन्यासी ए चार आश्रम तेना मनुष्य पोतपोताना धर्म प्रमाणे वर्ते ते अमने गमे छे. अने ते उतरती जातिनो होय के उत्तम जातिनो होय अने राजा होय के रांक होय पण जे धर्ममां वर्ते अने ते अमारा भेगो रहेतो होय अथवा अमारी आज्ञाए करीने छेटे रहेतो होय तो पण ते अमारे शरणे छे. अने अमारी भेगो रहेतो होय अने जो तेने धर्ममां दृढता न होय तो ते अमारे शरणे नथी. माटे तमे पण धर्ममां दृढ रहेजो.

ते धर्म बे प्रकारनो छे, एक त्यागीनो धर्म छे अने एक गृहस्थनो

धर्म छे. तेमां जे त्यागी छे तेने तो निष्कामीपणुं, निर्लोभीपणुं, निःस्वादीपणुं, निःस्नेहीपणुं अने निर्मानीपणुं ए पांच वर्तमानने दढपणें राखवा ते त्यागीनो धर्म कहेवाय. अने गृहस्थाश्रमी होय ते वेदनी शाखे करीने परणीने स्त्री राखे अने ते विनानी बीजी स्त्रीमात्र तेने मा, बहेन अने दीकरी जेवी जाणवी. अने स्त्री होय तेणे वेदनी शाखे करीने पोताना मावापे परणाव्यो जे पुरुष ए पति अने ते विना बीजा पुरुषमात्रने भाई, बाप अने दीकरा जेवा जाणवा. अने गृहस्थने हक महेनते करीने जे द्रव्य प्राप्त थाय तेने करीने देह निर्वाह करवो तथा तेने करीने दान, पुण्य करवुं पण चोरी न करवी, थापण न ओळवी, लांच न लेवी, कूड, कपट, विश्वासघात न करवा.

—अने रसनाए करीने दारू, माटी, गांजो, भांग, मफर, माजम अफीणादिक जेने करीने बुद्धि भ्रष्ट थइ जाय तेने खावुं नहीं. अने देह अने देहना संबंधीमां अतिशय प्रीति राखवी नहीं, केम के देह अने देहना संबंधी थकी आत्मा नोखो छे. ते आत्मा अविनाशी छे अने देह अने देहना संबंधी नाशवंत छे. माटे नाशवंत पदार्थमां प्रीति न राखवी. अने वर्णनुं, आश्रमनुं, नात-जातनुं, द्रव्यनुं, राज्यनुं, कुळनुं, जोबननुं, विद्यानुं इत्यादिक कोइ जातनुं मान न राखवुं. अने ए सर्वे थकी पोताना आत्माने नोखो जाणीने ए आत्माना आधार एवा जे परमात्मा भगवान तेने विषे दृढ प्रीति करवी. एवी रीते समजीने जे अमारे शरणे आवे छे तेने अमे अ[illegible] चरणमां राखीए छीए. अने एवी रीते समजीने निर्वासनिक थइने ब्रह्मरूप थाय ते ज अमारा अक्षरधामने पामे छे, पण ते विना अक्षरधामने पामे नहीं."

इति श्री सुखसिद्धांत ९७ समास ॥



९८ विषयः—छ प्रकारना गुरुनां लक्षण

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः--संवत् १९१८ ना चैत्र सुद ७ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री शाहपुर मध्ये पटेल सवजी वाघाणीने घेर गाम नवा गामना संघवी राघवजीए महाराजने रसोइ आपी हती ते महाराज थाळ जमीने सांजने समे फळियामां सभा करीने ढोलिया उपर विराजमान थया हता. सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पुष्पना आभूषणो सर्वे अंगमां शोभी रह्यां हतां. अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधुनुं मंडळ तथा घणांक हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

प्रश्नः–पछी गाम भारदना जोषी पुरुषोत्तमभाइए प्रश्न पूछ्युं जे " हे महाराज! केटलाक एम कहे छे जे 'रामचंद्रजीए शिकार कर्यो हतो, ते क्षत्रियए पण शिकार करवो' एम कहे छे, तेनुं केम हशे ?"

पछी महाराज बोल्या जे "भगवाननी क्रिया जोइने ते प्रमाणे करवानुं बीजा जीवने कहे छे तेने तो महा पापी जाणवा. अने भगवाननो वाद लइने जे ते प्रमाणे करे छे तेना आत्मानुं अतिशय भूंडु थाय छे. अने ए तो आ जगतमां छ प्रकारना गुरु छे; तेमां पांच प्रकारना असद्गुरु छे अने एक प्रकारना सद्गुरु छे. तेमां जे असद्गुरु छे ते असतमार्गना प्रवर्तावनारा छे, अने ते असद्गुरुनी कोइ नातजात, वर्णाश्रम नथी, ए तो त्यागीमां पण असद्गुरु होय अने गृहस्थमां पण होय. अने ते असद्गुरु महा ढोंगी अने कपटी होय. अने ते उपरथी तो नाहवुं, धोवुं, तिलक, माळा, ठाकोरजीनी पूजाओ करवी तथा शास्त्रना पाठ इत्यादिक करे अने उपरथी भक्तिनो आटाटोप करीने जगतना भोळा लोकोने धूते छे.

हवे ए पांच प्रकारना असद्गुरु कया? तो एक कामी, बीजो लोभी, त्रीजो स्वादी, चोथो स्नेही अने पांचमो मानी. तेमां जे कामी गुरु छे ते स्त्रीयोना काम भोगवे छे, अने लोभी गुरु छे ते धन धूते छे, अने जे स्वादीया गुरु छे ते नाना प्रकारना रस भोगवे छे, अने जेने देहने विषे स्नेह होय ते देहनी चाकरी करावे छे अने जे मानी गुरु होय ते ढोंग करीने पोतानी कीर्ति वधारे छे तथा मोटप जणावे छे.

(१) हवे कामी गुरु छे ते केवी रीते काम भोगवे छे? तो जेने सत्शास्त्रनुं ज्ञान न होय एवा जे भोळा अने पामर लोक तेने भक्तिनो भाव जणावीने तेने एम कहे जे 'तमे भगवानने जाणो छो'? त्यारे भोळा लोक कहे जे 'अमे तो भगवानने नथी जानता, माटे कृपा करीने जणावो.' त्यारे ते ढोंगी गुरु कहे जे 'ए वात एकांतमां कहेवाय माटे रात्रे आवजो.' पछी ते राते पोते ढोंग करी दिगंबर थइने बेठो होय त्यां भोळा मनुष्य होय ते आवे अने तेने पगे लागीने कहे जे 'महाराज! मने भगवानना दर्शन करावो.' पछी ते असद्गुरु कहे जे 'सांभळो भाइ, आ घटघटमां बोले छे ते ज भगवान छे, पण बीजो कोइ नथी, अने वर्णाश्रम, नातजात कांइ नथी; सर्वेमां भगवान सभर भर्या छे. अने पाप, पुण्य पण कांइ छे नहीं. अने जेने पाप पुण्यनी भ्रांति टळी गइ छे अने निःशंक थइने विषयने भोगवे छे तेनुं कल्याण थइ रह्युं छे.'

पछी ते भोळा लोकने पण संशय थाय ते हाथ जोडीने कहे जे 'शास्त्रमां तो वर्णाश्रमना धर्म कह्या छे अने जे ते धर्मने पाळे छे तेनुं कल्याण थाय छे अने ते भगवानना धाममां जाय. अने जे अधर्मने मार्गे चाले तेना आत्मानुं भूंडु थाय अने ते जीव नरकमां जाय एम सर्वे शास्त्रमां संभळाय छे, तेनुं केम समजवुं?' पछी असद्गुरु कहे जे 'में तमने तत्त्व कह्युं ते तो वेद, शास्त्र अने पुराणथी बहार छे, पण ए तत्त्वनी

वेद, शास्त्रने गम नथी. अने वेद, शास्त्र तो व्यासे ब्राह्मणोने पेट भराइनी कमाणी सारु करी आप्यां छे. माटे ए वातनो संशय राखशो नहीं अने मारा वचननो विश्वास राखो.' पछी असद्गुरुनो शिष्य कहे जे 'हे महाराज! तमे तो मारा उपर कृपा करी अने सर्वे संशय टाळ्या. अने मने तो तमे न्याल कर्यो. हुं तो आटला दहाडा पापथी व्ही व्हीने मरी जतो. माटे हवे हुं निःशंक थयो.' त्यारे असद्गुरु बोल्यो जे 'हवे हुं तारा उपर राजी थयो, माटे हवे तने परमेश्वरनुं स्वरूप साक्षात्कार देखाडुं. पण एक योगमाया जोशे, माटे तारी मा, बहेन, दीकरी, वहु जे होय तेने तेडी आव.' पछी ते मूर्ख शिष्य तेडी आवे त्यारे तेने असद्गुरु उपदेश करे जे 'बाइभाइ सांभळो जे जे पेदा करे तेनुं नाम भगवान छे, माटे स्त्रीपुरुषना संग थकी थयुं जे वीर्य ते थकी सर्वे पेदा थाय छे; माटे तेज भगवान छे.' एवी रीतना अवळा उपदेश आपीने ते स्त्रीयोना संग करीने पुरुषनी इन्द्रिय अने स्त्रीनी योनिओ धोइ तेनुं चरणामृत करीने पाय छे अने सर्वेने भ्रष्ट करे छे.

—अने वळी कामी गुरु केवी रीते स्त्रीयो भोगवे छे? तो एम उपदेश आपे छे जे 'परमार्थ ते शुं? तो स्त्रीयोनुं दान करवुं ते ज परमार्थ छे. अने स्त्रीनो संग करीने तेनुं चरणामृत लेवुं ते मोटुं पुण्य छे.' एवी रीते महा पापी एवा जे कामीगुरु ते विषयने भोगवे छे. अने ए कामीगुरु अने तेना शिष्य नरकमां पडे छे अने महा दुःखने भोगवे छे.

(२) अने हवे जे लोभीया गुरु छे ते महा लोभी एवा जे पामर मनुष्य तेने घेर उतारा करे. पछी तेने धीरवबा सारु एक सोनामहोर झोळीमांथी काढीने आपे. पछी ते लोभी शिष्य घणो गद्गद थइ जाय अने तेनी सेवा करवा मांडे. पछी वळी तेने सारी पेठे पोतानो विश्वास अणाववा सारु एक सोनानी इंट काढीने देखाडे, अने पोते शास्त्रनां

पानां खोटां खोटां फेरवे अने भोळा शिष्यने कहे जे 'आज तो हुं तारा उपर वहु राजी थयो छुं माटे रूपुं लाव तो तेनुं सोनुं करी आपुं अने सोनुं लाव तो तेनुं सोळ घणुं करी आपुं.' पछी ते लोभी शिष्य पोताना घरमां जेटलुं सोनुं–रूपुं होय ते घुतारा गुरुने आपे. तथा आडोशीपाडोशीना घरमां सोनुं–रूपुं होय ते पण तेने आणी आपे. पछी ते ढोंगी गुरु जे ते शिष्य पासे भाठी खडकावे अने खोटी खोटी बुट्टी खंडावीने ते सोना–रूपाने चोपडावे. एवी रीते अनंत प्रकारे कपट करीने तेनुं द्रव्य हाथ करीने ते भोळा शिष्यने कहे जे 'चार दहाडे भाठी पाकशे. एम बतावीने रातमां सर्व द्रव्यनो गोटो वाळीने सवारे कहे जे 'हुं वगडामां एक बुट्टी लेवा जाउं छुं.' एम कहीने सटकावी मूके.

पछी ते लोभी शिष्य सांज सुधी तेनी वाट जुए पण आवे नहीं त्यारे तेने वगडामां शोधवा जाय ते भटकी भटकीने मरे पण हाथ आवे नहीं. पछी घेर आवीने भाठी संभाळे त्यारे तेमांथी तो राख नीसरे पण सोनुं–रूपुं कांइ नीसरे नहीं त्यारे ते लोभीयो एम कहे जे 'हाय हाय! मारुं घर गयुं अने मने बावो कर्यो.' एम कहीने माथुं कूटीने घणो प्रस्तावो करे छे. माटे कीमियो खोटो छे.

–अने वळी लोभी गुरु जे ते जेने दीकरानो लोभ होय तेने कहे जे 'हुं तने दीकरो आपुं अने तारा सारु देवनी आराधना करुं छुं माटे ते देवनी पूजा जोइशे.' पछी पूजानुं नाम लइने केटलाक रूपियानुं खर्च करावीने तेनो लोटो लइने रातमां उठीने नाशी जाय छे, अने दीकरो तो थनारो होय तो थाय अने न थनारो होय तो कोइनो कर्यो थतो नथी माटे जेने परमेश्वरनो विश्वास नथी ते चाळा चूंथे छे.

–अने वळी जेने पारका राज्यनो लोभ होय एवा जे लोभी राजा तेने लोभी एवा जे असत्पुरुष ते एम कहे जे' मारे तो सर्वे देव आधिन

छे माटे तने राज्य अपावुं.' पछी जेने राज्यनो अतिशय लोभ होय तेने एवा पाखंडीनो विश्वास आवे छे ते जेम कहे तेम करे छे. पछी ते पाखंडी एम कहे जे 'तारा सारु मंत्र करुं छुं माटे तारो शत्रु राजा नाश पामशे अने तारे राज्य आवशे. पण देवनी पूजा सारु अने मंत्र जपवामां बे-चार हजार रूपियानुं खर्च थशे.' पछी तेनी पासेथी द्रव्य लइने जेने मारवो होय तेना ढोलियाना चाकर होय तेने केटलुंक द्रव्य आपीने तेने खूटवीने तेने कहे जे 'तुं दरबारने जमवामां छानुं झेर आपजे अने ते काम थशे तो तारा भवनी भावट काढीशुं' एम कहीने तेनो बंदोबस्त करीने जेने राज्यनो लोभ होय तेने एम कहे जे 'हुं तारा (माटे) मंत्र जपुं छुं ते तारा शत्रुने नाश पमाडीश.' पछी पोते दंभी गुरु खोटा खोटा मंत्र जपे अने ओल्या राजानो चाकर लाग पडे त्यारे छानुं झेर आपीने राजाने मारी नाखे. पछी दंभी गुरु कहे जे 'ए तो में मंत्र जप्या तेथी ते मरी गयो.' एम युक्ति करीने मारे छे. पण ए मंत्र जपे मरे नहीं.

—अने जो मंत्र जपे मरता होय तो मोटा मोटा राजा लाखो रूपियाना खर्च करीने लडाइ शुं करवा करे? अने पूर्वे पण रामचंद्रजीए रावणने मार्यो ते पण हथियारे करीने मार्यो छे. अने पांडवोए कौरवोने मार्या ते पण शस्त्रे करीने मार्या छे. पण मंत्रे करीने मार्या नथी. अने मंत्र जपे मरे पण नही ए सिद्धांत वार्ता छे. माटे मंत्र, मूठ अने वीर ते सर्वे खोटां छे अने वेदना मंत्र छे ते ज साचा छे. ते ए मंत्रे करीने आत्मानुं कल्याण थाय पण जीवताने मारवुं के मूआने जीवतुं करवुं ते तो एक भगवानना हाथमां छे पण बीजा कोइ मनुष्यना हाथमां नथी. माटे लोभी एवा जे असत्पुरुष एवा ढोंग करीने धन धूते छे.

--अने वळी द्रव्यना लोभ सारु केटलाक समाधिओ खोटी खोटी करीने साकर काढे छे अने एलची, लवींग, सोपारीओ, नाळियेर युक्तिओ करीने

काढे छे ते सर्वे पडपंच छे, पण सत्य नथी. अने केटलाक कहेशे जे 'अमारे तो अग्निदेव वश छे ते वगर देवताए अग्नि प्रगट करीए छीए.' पण ए सर्वे पडपंच छे. केम के ए तो अंग्रेज सरकार छे ते एवो अर्क काढे छे ते अर्कने तपेलीने तळीये चोपडीने तेमां खीचडी अने पाणी नाखीने अग्नि वगरना चूला उपर तपेलीने मूके तो तत्काळ खीचडी चडी जाय. एवी रीते पाणी छांटीने अग्नि करे छे ते पण युक्ति छे. अने जे एवा पडपंचने माने छे तेने महात्मा पुरुष कोइ काळे ओळखाता नथी अने तेनुं कल्याण पण थाय नहीं.

(३) अने जे स्वादीया गुरु छे ते सारुं सारुं खावा सारु तथा रसना इन्द्रियने वश थइने अनंत युक्तिओ करीने दारू, माटी, गांजो, भांग आदिक केफ करे छे. अने पोते भ्रष्ट थाय छे अने बीजा अनंतने भ्रष्ट करे छे. ते केवी रीते भ्रष्ट करे छे ? तो पोते दारू पीतो होय तथा मांस खातो होय तो बीजा भोळा लोकोने भ्रष्ट करवा सारु धर्मनी ओथ लइने दंभे करीने ते भोळा लोकोने धीरववा सारु भक्तिनो भाव बहु जणावे. पछी तेनो घणांक मनुष्य विश्वास करे छे. पछी ते दंभी गुरु जे ते भोळा मनुष्यने उपदेश करे जे 'तमे कर्ताने जाणो छो ? कर्ता तो जोगमाया आद्यशक्ति छे. माटे तेने प्रसन्न करवा दारू अने माटी जोइशे.' पछी तेमां कोइ संशय करे जे 'तेमां तो पाप लागे.' त्यारे कपटी स्वादीयो कहे जे 'सांभळो भाई ! ए तो आद्यशक्तिनो प्रताप छे ते दारूनुं दूध थइ जाय छे अने मांसना पकवान थाय छे. माटे पाप लागे नहीं.'

पछी तेना पारखां लेवा सारु दारू अने मांस लावे त्यारे ते कपटी पुरुष जे ते प्रथमथी जे एवा ढोंग करवा सारु एक झींणा वस्त्रनुं गरणुं दूध-साकरमां पलाळीने सूकवी राख्युं होय (ते लइने) पछी ते दारू, माटी लावनारने कहे जे 'जुओ, आ दारू केवो छे ? अने पछी आद्य-

शक्तिने नैवेद् धर्या पछी केवो थशे, माटे एक लगारेक चाखी जुओ.' पछी ते चाखी जुए त्यारे तो बीजी जातनो होय. पछी स्वादीयो गुरु जे ते पडदो बंधावीने मांहेनी तरफ पोता जेवी स्त्री होय तेने वेसाडे. पछी दारू अने माटी मांहेनी तरफ लइ जइने दूध-साकरवाळुं गरणुं होय तेने दारूमां बोळीने मांहेनी तरफ निचोवे एटले तेमां दूध-साकरनो पास लागी जाय. अने माटीमां पण धोएली साकर नाखे. अने पछी असद्‌गुरु अने व्यभिचारणी स्त्री ते बेय जणां दारू अने माटीनुं भक्षण करे अने ते व्यभिचार पण करे. पछी ते (वधेला) दारू माटी लइने बहार आवीने कहे जे 'जुओ जोगमायानो प्रताप! दारूनुं दूध थयुं अने मांसना पकवान थयां.' पछी भोळा लोक तेने जुए त्यारे आगळ करतां वान पण धोळो जणाय. पछी वाटको भरीने पाय त्यारे पण आगळना करतां गळ्यो लागे. त्यारे तो राजी थाय अने कहे जे 'आ तो साक्षात्कार पडछो देखाड्यो.' पछी दारू पीवे करीने मति भ्रष्ट थइ माटे मांस पण खवरावे ते खाय.

पछी असद्‌गुरु कहे जे 'जोगमायाना दर्शन करवां छे?' त्यारे ते तो वाट जोइ रह्यो होय. पछी असद्‌गुरु एम जाणे जे दारू पीधो छे अने माटी खाधी छे ते स्त्रीने देखीने रही नहीं शके. पछी ते भोळा शिष्यने कहे जे 'भाई आव! तने एक मंत्र आपु. ते मंत्र कहीश त्यारे जोगमायाना दर्शन थशे. ते मंत्र—

'चडतां पुरुप उतरतां भाई पडदा खोलो सतिमाई.'

पछी ते भ्रष्ट मतिवाळो जे ते एवी रीते कहे त्यारे त्यां तो दारू, माटी भक्षण करीने तैयार थइ रही होय एवी जे व्यभिचारिणी स्त्री तेनी पासे मांहेनी तरफ जइने भ्रष्ट थाय छे, अने एवी रीते स्वादीया जे

असत्पुरुष ते केटलाकने भ्रष्ट करे छे. अने पछी नाकवढाना पंथनी घोडे चाले छे.

जेम एक नाकवढो हतो तेने एम जाण्युं जे 'मारुं ! हुं एक ज नाकवढो छुं. माटे घणांकने नाकवढा करुं.' पछी पोतानो मुलक मूकीने बीजा मुलकमां जइने भक्त बनीने बेशे. पछी भोळा लोक होय तेने कहे 'हुं तो साक्षात्कार भगवानने देखुं छुं.' पछी ते लोक कहे जे 'अमने भगवानना दर्शन करावशो?' त्यारे ते नाकवढो कहे जे 'हुं कहुं एम करो तो दर्शन थाय, पण काम कठण छे.' पछी ते भोळा मनुष्य होय ते कहे जे 'हे महाराज ! तमे जेम कहेशो तेम करी शुं, जो भगवानना दर्शन थाय तो.' पछी ते कपटी एम कहे जे 'भगवानना दर्शन तो थाय पण जराक नाक आडुं आवे छे. अने मारे पण नाक आडुं आवतुं हतुं ते सारु वढाव्युं छे.' पछी भोळा अने विश्वासी होय ते नाक वढावे अने जुए तो पण भगवानना दर्शन थाय नहीं, पछी ते कपटीने कहे जे 'भगवानना दर्शन तो नथी थतां.' त्यारे ते कपटी कहे जे 'बोलीश मा ! नहींतर तारी ठेकडी करशे.' पछी ते पण तेम ज कहे जे 'अहो! साक्षात्कार भगवानना दर्शन थाय छे.' पछी तो केटलाक नाक वढावीने ते पंथमां भळ्या अने नाकवढानो पंथ चाल्यो.

तेम एवी रीते जगतमां एके दारू पीधो अने माटी खाधी, बीजाए दारू पीधो अने माटी खाधी एम पंथ चाल्यो छे. त्यारे कोइक एम आशंका करे जे 'केटलाक बुद्धिवाळा छे ते केम दारू-माटी खाता-पीता हशे ?' तो प्रथम बुद्धिवाळा होय पण तेने एवा दारू-माटीना स्वादी-यानो संग थाय पछी ते दारू-माटीना गुण अने महिमा कही देखाडीने जराक दारु-माटी चखाडे. पछी चाखतां वेंत बुद्धिवाळानी पण बुद्धि

भ्रष्ट थइ जाय छे. अने ज्यारे बुद्धि भ्रष्ट थाय त्यारे करवा न करवानो विवेक रहे नहीं.

त्यां एक वार्ता छे जे एक ब्राह्मण काशीएथी भणीने चाल्यो आवे तेने एवो नियम जे 'ज्यां शीवनुं स्थानक होय त्यां शीवनी पूजा करीने अन्न जमवुं.' पछी मार्गमां उजाड आवी ते त्रण दिवस सुधी शीवनुं स्थानक आव्युं नहीं. पछी चोथे दिवसे एक चार बारणावाळी शीवनी देरी आवी, त्यारे ते ब्राह्मण चोथे उपवासे स्नान करीने शीवनी पूजा करवा गयो त्यां तो एक कसाइ मांस लइने बेठो हतो तेणे कह्युं जे 'आ मांस खाय तेने आ बारीए चालवा दइए छीए.' पछी ते ब्राह्मण बोल्यो जे 'हाय हाय ! मांस ते खवातुं हशे ?.' एम कहीने बीजी बारीए गयो त्यारे त्यां एक स्त्री बेठी हती तेणे कह्युं जे 'मारो संग करे तेने जवा दउं छुं.' पछी ब्राह्मण बोल्यो जे 'अररर! ते वातनुं तो शास्त्रमां घणुं पाप कह्युं छे.' एम कहीने त्रीजी बारीए गयो त्यां एक ब्राह्मण बेठो हतो तेणे कह्युं जे 'मने मारी नाखे तेने जवा देवामां आवे छे.' पछी ते ब्राह्मण बोल्यो जे 'ए तो ब्रह्महत्या लागे, ए केम थाय ?' एम कहीने चोथी बारीए गयो त्यां एक कलाल दारूनो प्यालो भरीने बेठो हतो तेणे कह्युं जे 'दारू पीए तेने जवा देवानो हुकम छे.' पछी ते ब्राह्मण बोल्यो जे 'दारू पीधानुं तो बहु पाप छे माटे ते तो पीवो नहीं.' एम कहीने चाली नीसर्यो.

पण चार उपवास थया ते मनमां विचार थयो जे 'मृत्यु आव्युं होय अने आफतकाळे थोडुंक पाप थये जीवतुं रहेवातुं होय तो ठीक छे. माटे दारू पीवुं.' पछी दारू पीने शीवनी पूजा करवा बेठो त्यां तो क्षुधा व्यापी, अने दारू पीवे करीने मति पण भ्रष्ट थइ गइ, पछी मांस

खाधुं. पछी दारू अने मांसनो केफ चड्यो त्यारे काम व्याप्यो. पछी स्त्रीनो संग करवा गयो त्यारे ब्राह्मण आडो आव्यो. तेने मारी नाखीने स्त्रीनो संग कर्यो. एवी रीते ब्राह्मण महा भणेलो, बुद्धिवाळो अने धर्मवाळो हतो पण जो एक दारू पीधो तो मति भ्रष्ट थइ गइ अने चारे पाप कर्यां.

माटे जगतमां बुद्धिवाळा होय पण एवी रीते प्रथम थोडुंक पाप करे तेथी मति भ्रष्ट थाय. अने पछी ते कोइ पापथी बीए नहीं. पछी एवा स्वादीया गुरु थइने पोते पण दारू, माटी, गांजो, लीलागर खाय-पीए अने तेना संगीने पण दारू, माटी, गांजादिक खवडावे अने पीवडावे. माटे दारू, माटी अने गांजाना खानारा, पीनारा एवा जे स्वादीया गुरु ते जे खोटा खोटा शास्त्रना अर्थ करीने तथा खोटा खोटा श्लोक बनावीने केटलाक मनुष्यने भ्रष्ट करे छे. अने ते पापे करीने एवा गुरु अने तेना शिष्य बेय रौरव नरकमां पडे छे. अने ते स्वादीया गुरु जे ते मोटा मोटा राजाओने अने मोटा मोटा आचार्योने मांसादिक अने केफादिके करीने भ्रष्ट करे छे.

ते केवी रीते भ्रष्ट करे छे ? तो कहेशे जे मृगया करीने मांस खावुं ए क्षत्रियोनो धर्म छे. तथा यज्ञ करीने मांस खावुं ते पण राजानो धर्म छे.' एवी रीते जे अति नीच अने पापी एवा जे रसनाना स्वादीया ब्राह्मण तथा बावा ते कहे छे. अने एवा उपदेशने पण जे आसुरी अने भ्रष्ट मतिवाळा जीव छे ते माने छे, पण दैवी जीव अने शुद्ध क्षत्रिय छे ते एवा उपदेशने नथी मानता. अने मांस तो चंडाळ अने पापीनुं खाणुं छे, तथा ढेड, झांपडा, वाघरी, थोरी तथा सावज, दीपडा, नार, झरख, तथा कूतरा, कागडा आदिक नीच जाति होय तेने मांसनो आहार छे. पण मांस खावुं ते शुद्ध क्षत्रियनो धर्म नथी. अने जे भ्रष्ट मतिवाळा

एवा जे पंडित पुराणी एम कहे छे जे 'रामचंद्रजी मृगया करता ते क्षत्रियने पण मृगया करवी.' एम जे कहे छे ते तो रसनाना स्वादीया अने महा पापी छे ते कहे छे.

केम के रामचंद्र तो भगवान छे अने सर्वेना कर्ता हर्ता छे. ते कोटि ब्रह्मांडना जीवने उपजावे छे अने सर्वेनो नाश करे छे. ते उपजावे छे तेनुं ते भगवानने पुन्य नथी अने नाश करे तेनुं पाप नथी. अने भगवाननुं स्वरूप छे ते तो अविरुद्ध छे. माटे धर्मी कहीए तो 'पापी' साथे विरुद्ध आवे अने 'पापी' कहीए तो 'धर्मी' साथे विरुद्ध आवे. अने 'कर्ता' कहीए तो 'अकर्ता' साथे विरुद्ध आवे अने 'अकर्ता' कहीए तो 'कर्ता' साथे विरुद्ध आवे. अने 'सगुण' कहीए तो 'निर्गुण' साथे विरुद्ध आवे अने 'निर्गुण' कहीए तो 'सगुण' साथे विरुद्ध आवे. अने 'साकार' कहीए तो 'निराकार' साथे विरुद्ध आवे अने 'निराकार' कहीए तो 'साकार' साथे विरुद्ध आवे. माटे भगवान तो 'पापी' ए नथी अने 'पुन्यशाळी' ए नथी, 'कर्ता' नथी अने 'अकर्ता' नथी, अने 'कर्ता' पण छे अने 'अकर्ता' पण छे. भगवान 'निर्गुण' नथी अने 'सगुण' नथी, अने 'निर्गुण' पण छे अने 'सगुण' पण छे. अने 'साकार' नथी अने 'निराकार' नथी. अने 'साकार' पण छे अने 'निराकार' पण छे. एवी रीते भगवान जेवा तो एक भगवान ज छे. पण बीजो कोइ ते जेवो थवाने समर्थ नथी.

अने ते भगवाननी क्रिया जोइने ते प्रमाणे जे क्रिया करे छे ते तो महा पापी छे अने असुर छे. अने जे भगवाननी आज्ञा प्रमाणे वर्ते छे ते तो दैवी अने भगवानना भक्त छे. माटे रामचंद्रजीनो वाद लइने जे मांस खाय छे ते तो असुर अने पापी छे. अने लोकमां पण प्रसिद्ध छे

જે પાપી જીવ હોય તે જ દારૂ-માટીનું ભક્ષણ કરે છે. અને એવો પાપી હોય અને તેને કોઇ સત્પુરુષનો જો સંગ થાય અને ભગવાનનો ભક્ત થાય તો તે તરત દારૂ-માટીનો ત્યાગ કરે છે. માટે જો રામચંદ્રજીને એ વાત ગમતી હોય તો તેના ભક્ત જેટલા જગતમાં છે તે સર્વે દારૂ-માટીનો ત્યાગ કરે છે તે ત્યાગ શું કરવા કરે? અને જો ત્યાગ કરે છે તો એ વાત જરૂર ભગવાનને નહીં જ ગમતી હોય.

ત્યાં કોઇ એમ શંકા કરે જે 'ભગવાનને એ વાત ગમતી નથી ત્યારે પોતે શા સારુ એવું આચરણ કર્યું હશે?' તો તેનું એમ છે જે સર્વે જીવ-માત્ર દોષવાન છે, માટે તેના દોષને ટાળવા સારુ પોતાને વિષે દોષ જણાવીને તે જીવોના દોષના મૂળ ઉખાડી નાખવા સારુ એવું આચરણ કરે છે. જેમ કોઇકના પગમાં કાંટો વાગ્યો હોય ત્યારે તે કાંટાને કાઢવા સારુ બીજો પુરુષ-જેને કાંટો નથી વાગ્યો તે-કાંટાનું ગ્રહણ કરીને તેના કાંટાને કાઢીને પછી બેય કાંટાનો ત્યાગ કરે છે. તેમ ભગવાન પણ કામી જીવનો કામ કાઢવા સારુ કામનું ગ્રહણ કરે છે, અને લોભીનો લોભ કાઢવા સારુ લોભનું ધારણ કરે છે. તે બળિ રાજાનો લોભ કાઢવા સારુ પોતે ભગવાને-અતિથિએ-લોભ કરીને તેનું સર્વસ્વ લઇ લીધું. અને ગોપીયોનો કામ મટાડવા સારુ શ્રીકૃષ્ણ ભગવાને કામનું ગ્રહણ કરીને તેને નિષ્કામી કરી મૂકી અને પોતે ભગવાન પણ વળી બ્રહ્મચારી કહેવાયા. એવી રીતે પોતાના ભક્તને નિર્દોષ કરવા સારુ પોતાને વિષે ભગવાન દોષ જણાવે છે, પણ ભગવાનને વિષે તો કોઇ દોષમાત્ર નથી.

જેમ દર્પણ છે તેને વિષે તો કોઇ વિકાર-મેશ કચરો-નથી પણ તે દર્પણમાં જોનારાના મોઢાને વિષે જે જે વિકાર-મેશ કચરો-વળગ્યો હોય તેને દેખાડવા સારુ દર્પણમાં વિકાર જણાય છે, તેને જે બાળક અણસમજુ

होय ते तो एम जाणे जे 'दर्पणमां मेश-कचरो वळग्यो छे.' अने जे समजु होय ते तो दर्पणमां जोइने ते विकारने पोताना मोढा उपर समजीने जळे करीने धोइने टाळी नाखीने पछी दर्पणमां जुए तो कांइ विकार जणाय नहीं. तेम भगवानने विषे तो कोइ दोष नथी पण बीजा जीवने विषे ज्यां सुधी दोष छे त्यां सुधी ते जीव भगवानने विषे दोषने देखे छे. पण तेमां जे दैवी जीव छे ते तो एम समजे छे जे 'भगवानने विषे जे काम, लोभ, स्वाद, स्नेह, मान आदिक जणाय छे ते तो अमारा कल्याणने अर्थे जणाय छे. पण भगवानने विषे कांइ दोष नथी. अने भगवान तो अनादि सिद्ध स्वरूप छे अने अखंडानंद छे अने पूरणकाम छे.' एम जाणीने भगवाननी आज्ञा प्रमाणे वर्तीने पोताना दोषने टाळीने भगवानना स्वरूपने जुए छे तेने भगवाननुं स्वरूप अति शुद्ध अने निर्दोष अने अविरुद्ध जणाय छे.

—अने जे बाळक जेवा आसुरी अने पापी जीव छे ते भगवानने विषे दोषने देखे छे अने तेमां मोह पामे छे अने पोताना दोषने टाळता नथी. अने वळी भगवाननुं आचरण जोइने तेवुं आचरण करे छे ते तो कोटि रौरव नरकमां पडे छे. माटे आसुरी जीवने भगवानना दिव्यगुण जाणवामां आवता नथी. केम के आसुरी जीवनी मति अशुभ आहारे करीने भ्रष्ट थइ गइ छे. अने जे जे अशुभ आहार करे छे तेने प्रगट भगवान ओळखाता नथी. माटे दारु, माटी गांजादिकनी प्रवृत्ति थइ छे ते तो स्वादीया एवा जे भ्रष्ट पापी गुरु तथा भ्रष्ट एवा जे पंडित पुराणी तेनी करेली छे. पण सत्शास्त्र अने सत्पुरुषनी करेली एवी दारु, माटी, गांजादिकनी प्रवृत्ति नथी.

(४) अने जेने देहने विषे प्रीति होय ते एवा उपदेश करे छे जे

'सर्वमां भगवान बोले छे. अने स्त्री-पुरुषनी जोड छे ते तो राधा-माधवनी जोड छे.' एवी रीते मीथ्या उपदेश आपीने विधि-निषेधने तोडीने निःशंक थइने पोते विषयने भोगवे छे अने भोळा मनुष्यने भ्रष्ट करे छे अने देहनी सेवा करावे छे. अने एवा भ्रष्ट गुरु छे ते पोताना शिष्यने एम समजावे जे 'गुरुने भगवान रूप जाणवा. कामी गुरु होय तेने कृष्ण जेवा जाणवा, अने लोभी गुरु होय तेने वामन जेवा जाणवा, अने क्रोधी गुरु होय तेने नृसिंह जेवा जाणवा. पण गुरुनो कोइ प्रकारे दोष न लेवो.' एवी रीतना अवळा उपदेश आपीने देहनी सेवामां तत्पर रखावे छे. अने देहनी सेवामां फेर पडे तो ते देहाभिमानी गुरु जे ते अतिशय कलेशने पामे छे अने महा दुःखिया थाय छे. एवी जातना जे गुरु तथा पंडित पुराणी तेने देहाभिमानी गुरु जाणवा. अने एवा देहाभिमानी गुरु अने तेना संगी बेय घोर नरकमां पडे छे.

(५) अने जे मानी गुरु छे ते पोतानुं मान वधारवा सारु खोटा खोटा पडछा देखाडीने ढोंग करीने जगतमां पूजाय छे, अने भोळा लोकोने भ्रष्ट करे छे. ते केवी रीते ढोंग करे छे? तो प्रथम भक्तिनी ओथ लइने भक्त बनीने सदाव्रत आपवानो मस लइने तथा ठाकोरजीनुं मंदिर करवानुं नाम तेने करीने भोळा वाणियानुं नामुं करे. पछी बे एक दहाडा तेने उधराणी सारु आंटा खवडावे. पछी एक दिवस पोता जेवो ढोंगी शिष्य होय तेने भेगो लइने राते वाणियाने घेर जइने तेने रूपिया आपीने नामुं वळावी आवे. पछी बीजे दिवस दश-वीश माणस भेगा लइने ते वाणियाने हाटे जइने कहे जे 'शेठ तमारुं नामुं जुओ. केटला रूपिया मागो छो? ते जे मागता होय ते लो.' त्यारे ते वाणियो कहे जे 'भगत तमे अने तमारा सेवक बेय जणां काले आवीने

रूपिया आपीने नामुं वळावी गया छो ने शुं ?' त्यारे मानी एवो जे ढोंगी ते कहे जे ' अमे तो ए वातमां जाणता नथी. अने अमारा सेवक ने पूछो जो आव्या होइए तो.' पछी ते सेवक पण ढोंगीनो ढोंगी होय ते कहे जे ' अमे तो ए वातमां जाणता नथी.' पछी ते वाणियो कहे जे 'अमारा तो रूपिया पहोंची गया छे.' त्यारे ढोंगी अने महामानी गुरु ते पोतानुं मान वधारवा सारु कहे जे ' ए तो मारो वहालो भक्तनी भीड टाळवा सारु भगवान आपी गया, बीजो कोइ नहीं.' त्यारे तो जगतना भोळा लोक आश्चर्य पामीने तेना पगमां पडे अने एम जाणे जे 'ओहो ! आ भगतने तो भगवाने पडछो आप्यो.' एवा ढोंग करीने मानी गुरु जे ते जगतमां पूजाय छे.

—अने वळी मानी गुरु जे ते मान वधारवा सारु कहे जे 'फलाणां शहेरमां एक पाटीदारनो दीकरो मरी गयो हतो तेने जीवतो कर्यो.' एम सो बसो गाउ दूरना गामनुं नाम खोटुं खोटुं लइने भोळा लोकने पडछो मनावे छे. पण ए वात कोइथी बने ज नहीं. केम के श्रीकृष्ण भगवाने पण ना पाडी छे जे 'मुआने जीवतुं तो हुं पण नथी करतो.' ते क्यारे कह्युं छे ? तो पोते श्रीकृष्ण द्वारकामांथी हस्तिनापुर गया हता. अने वांसेथी सतभामानो बाप मरी गयो त्यारे सतभामाए कह्युं जे ' मारो स्वामी भगवान छे, ते आवशे त्यारे मारा बापने जीवतो करशे.' पछी तेने तेलनी कोठीमां राखी मूक्यो, पछी श्रीकृष्ण भगवान घेर आव्या त्यारे दरवाजेथी रोता रोता आव्या ते छाना रहे ज नहीं. त्यारे सतभामाए कह्युं जे ' तमे रोवो मा! मारा बापने तो राखी मूक्या छे, ते जीवता करो.' पछी भगवान बोल्या जे ' झटपट तेने बाळीदो नहीं तो सडी जशे अने मुआने जीवतुं करवानी रीत नथी. केम के अनादिनी

जे रीत बांधी छे तेने हुं फेरवतो नथी.' तो बीजाथी फरे केम ? माटे श्रीकृष्ण भगवाने पण मुआने जीवतुं कर्युं नथी.

–अने बीजा जीव कहे जे 'में मुआने जीवतुं कर्युं.' तेने तो महा मानी अने ढोंगी जाणवा, अने मुउं जीवतुं कोइ काळे थाय नहीं. अने ए वातने माने छे ते पण मूर्ख छे अने पापी छे, अने एवा मूर्खने साचा सत्पुरुष कोइ दहाडे ओळखाय नहीं अने तेनुं कल्याण पण थाय नहीं. केम के तेने तो मानी अने ढोंगी पुरुषनी प्रतीति आवी, माटे ते मानी तो नरकमां जशे ते भेगा तेना शिष्य पण जरूर नरकमां जशे.

–अने वळी मानी गुरु होय ते केवा ढोंग करे छे? तो जगतमां मनावा सारु रातमां छानी छापो करावीने पोताने हाथे आपीने पछी सवारे कहे जे 'मने तो आज भगवाने दर्शन दीधां अने मने छापो आपी गया.' पछी जे भोळा लोक होय ते कहे जे 'ओहो! भगतने भगवाने पडछो आप्यो.' एवा एवा घणाक ढोंग मानी गुरु जे ते करे छे अने जगतमां पूजाय छे, अने भोळा लोकोने भ्रष्ट करे छे.

(१) विस्तारना भयथी झाझा ढोंग कहेतो नथी पण जे कामी गुरु छे ते अनंत प्रकारना ढोंग करीने स्त्रीयो भोगवे छे, अने (२) जे लोभी गुरु छे ते पूर्वे कह्या ए प्रकारना अनंत ढोंग करीने द्रव्यने हरे छे. अने (३) जे स्वादीया गुरु छे ते अनंत प्रकारना ढोंग अने युक्तिओ करीने अनंत प्रकारना रस जे दारू, माटी, गांजो, भांग, मफर, माजम आदिक रसना इन्द्रियने वश थइने खाय छे, अने तेना सेवकोने पण खवडावे छे, अने एवा भ्रष्ट मतिवाळा गुरु छे ते एम कहे छे जे 'क्षत्रियने तो दारू–माटी खावां.' अने जे धर्मवाळा एवा जे सत्पुरुष ते नथी कहेता जे 'क्षत्रियने दारू-माटी खावां.' अने सत्पुरुष अने सत्शास्त्र तो एम कहे छे जे 'ब्राह्मण,

क्षत्रिय अने वैश्य ए त्रण वर्णने तो दारू, माटी, गांजो, मफर, माजम आदिक खावां–पीवांज नहीं. अने जो ब्राह्मण, क्षत्रिय अने वैश्य दारू–माटीनुं एकज वार भक्षण करे तो तेनो जीव दशहजार वर्षसुधी रौरव नामे नरकमां पडे छे.' माटे जेने पोताना आत्मानुं कल्याण इच्छवुं होय तेने एवा स्वादीया गुरुनो संग कोइ काळे करवो नहीं. (४) अने जे देहाभिमानी गुरु छे ते अनंत प्रकारना अधर्म करीने देहनी सेवा करावे छे. (५) अने जे मानी गुरु छे ते अनंत प्रकारना ढोंग करीने पोतानी मोटप वधारवा सारु अनंत प्रकारना पापकर्म करे छे.

एवा पांच प्रकारना गुरु जे ते भगवानना मार्ग थकी विरुद्ध छे अने जीवने भगवान थकी विमुख करनारा छे. केमके काम, लोभ, स्वाद, स्नेह अने मान तेनो त्याग करवो एजभगवानने पामवानो मार्ग छे, ए सिद्धांतवार्ता छे.

(६) हवे छठ्ठा जे साचा सद्‌गुरु छे ते तो निष्कामी छे, निर्लोभी छे, निःस्वादी छे, निःस्नेही छे अने निर्मानी छे. अने जे सद्‌गुरु छे तेनुं तो सत्य–स्वरूप छे. माटे तेने तो सत्य एवो जे सुधर्म ते अतिशय गमे पण जे असत्य मार्ग ते तेने नथी गमता. ते सत्य केने कहीए? अने असत्य केने कहीए? तो धर्म, ज्ञान, वैराग अने माहात्म्ये सहित परमेश्वरनी भक्ति करवी ते सत्य मार्ग छे. अने तेने वेद, शास्त्र अने मोटा पुरुष सत्संग कहे छे. अने तेने करीने जीवनो मोक्ष थाय छे, अने काम, लोभ, स्वाद, स्नेह अने मान ए जे पांच दोष ते असत्यमार्ग छे. अने ते मार्गे करीने जीव जे ते अधोगतिने पामे छे.

–अने जे सद्‌गुरु छे ते ए पांच दोषनो नाश करवा सारु प्रगट थाय छे. अने ए पांच दोषना उपासक एवा जे कामी, लोभी, स्वादी,

स्नेही अने मानी ते एवा सद्‌गुरुने देखीने बळी उठे छे. जेम मेघने वरसवे करीने जवासो सूकाइ जाय छे, तेम सद्‌गुरुना उपदेश रूपी मेघ ते ज्ञानरूपी जळ वरसावे छे त्यारे जवासा रूप जे असद्‌गुरु ते नाश पामे छे. केम के सद्‌गुरु एनी आजीविका जे पंचविषय तेनो त्याग करावे छे. माटे जेनी आजीविका जाय ते सहेजे नाश पामे छे, अने जे मुमुक्षु जीव होय ते तो सद्‌गुरुने देखीने राजी थाय छे.

ते सद्‌गुरु शा लक्षणे करीने ओळखाय छे? तो पांच दोषे रहीत रूप, ते जे पोताने विषे धर्म दृढ होय, अहिंसाने विषे दृढ वर्तता होय, कहेतां कोइ जीवने पीडा थाय एम करे ज नहीं. अने ज्ञान जे देहथी नोखो शुद्धरूप, अखंड, अविनाशी अने आनंदरूप जे आत्मा तेने पोतानुं स्वरूप मानीने निर्वासनिकपणें वर्ते. अने वैराग जे भगवाननी मूर्ति विना अनंत कोटि ब्रह्मांडना जे विषयना सुख तेने काग-विष्टा तुल्य जाणे, कहेतां भगवान विना सर्वे पदार्थने विषे वेरभाव वर्ते. अने माहात्म्ये सहित भक्ति जे पोते ब्रह्मरूप थइने, कहेतां 'अनंतकोटि ब्रह्मांड रह्यां छे जेना एक रोमना छिद्रने विषे एवुं जे अक्षरब्रह्म ते हुं छुं.' एम जाणीने, एवा जे अनंतकोटि अक्षररूप मुक्त तेना स्वामी एवा जे अक्षरातीत परब्रह्म पुरुषोत्तम भगवान जे प्रत्यक्ष मूर्ति तेनी पोताने अत्यंत प्रीतिए सहित अखंड स्मृति रहे तेने माहात्म्ये सहित भक्ति कहीए. अने आ कह्यां जे लक्षण ते जेने विषे होय तेज सद्‌गुरु कहेवाय, अने तेनो समागम करे तेनुं ज कल्याण थाय."

इति श्री मुखसिद्धांत ९८ समाप्त ॥

९९ विषयः—दुर्गति सुगतिना चालनारा अने चलावनारानां लक्षण.

श्री हरिकृष्णाय नमोनमः—संवत् १९१८ ना चैत्र वद १० ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री वळा मध्ये ठाकोर मेघराजजीना दरबारमां उत्तरादे बार मेडी उपर गादी तकिया नखावीने ते उपर विराजमान थया हता. सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां. अने सर्वे अंगमां पुष्पना आभूषणो धारण कर्यां हतां. ललाटने विषे केसरनी आड अने कंकुनो चांदलो कर्यां हतां.अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणांक हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी संध्या आरती थया पछी महाराज बोल्या जे—

" बीन विवेक संसार सब भम भटकत मतिमंद,
सार असार विवेक जेही, सोही साधु जगवंद.

एमां एम कह्युं छे जे ' विना विवेके करीने संसार जे ते लख चोराशीने विषे भटके छे, कहेतां अगतिने पामे छे. अने जे सार—असारने जाणे छे ते सुगतिने पामे छे, कहेतां परमपदने पामे छे.' हवे ते दुर्गति अने सुगतिना चालनारा अने चलावनारानां लक्षण कहीए छीए जे जे पुरुष मनने वश वर्ते छे ते दुर्गतिने मार्गे चाल्यो कहेवाय छे. अने जे मनने पोताने वश करीने वर्ते छे ते सुगतिने मार्गे चाल्यो कहेवाय छे.

तेमां प्रथम दुर्गतिने मार्गे चलावनाराना लक्षण कहीए छीए जे एक तो इन्द्रियो अंतःकरणने वश वर्तता होय अने देहने पोतानुं रूप मानता होय अने पंचविषयमां अतिशे मलिन वासना वर्तती होय अने ते मलिन वासनाए करीने शास्त्रनी पण मरजादा राखे नहीं, एवा लक्षण जेमां होय तेने दुर्गतिना चलावनारा जाणवा. अने आ विश्वना कर्ता एवा जे परमेश्वर तेनुं भान जेने नथी एवा अने वेदशास्त्रनी जे मरजादा

परमेश्वरे बांधी छे तेनी पण खवर जेने नथी एवा जे पामर जीव ते असद्‌गुरुने शरणे जाय छे. तथा जेने धर्म–अधर्म, पाप–पुण्य, सार–असारनी पण खवर नथी अने आहार, मैथुन, निद्रा अने भय परायण वर्तता एवा जे पशु तुल्य मनुष्य तेज असद्‌गुरुने शरणे जाय छे, अने ते जीव दुर्गतिने पामे छे.

अने सुगतिना चालनारा एवा जे मुमुक्षु जीव ते तो सुगतिना चलावनारा एवा जे धर्म, ज्ञान, वैराग अने भक्ति तेने युक्त एवा जे सद्‌गुरु तेने शरणे जाय छे अने ते जीवनुं कल्याण थाय छे. माटे जेने मनुष्यनो देह प्राप्त थयो होय तेने तो विवेक राखीने पोताना आत्माना कल्याणने अर्थे जरूर असत्पुरुषना संगनो त्याग करीने सत्पुरुषनो समागम करवो."

इति श्री मुखसिद्धांत ९९ समाप्त ॥

---

१०० विषयः—ठाकोर मेघराजजीए पूछ्युं ' मारी मुट्ठीमां शी वस्तु छे ? '

श्री हरिकृष्णाय नमोनमः–संवत् १९१८ ना चैत्र वद १२ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री वळा मध्ये ठाकोर मेघराजजी पथुभाना दरवारमां उत्तरादे वारनी मेडी उपर मांहेनी कोरे गादीतकिया उपर विराजमान थया हता. सर्वे सोनेरी वस्त्र धारण कर्यां हतां गुलाब अने चंबेलीना पुष्पना आभूषण सर्वे अंगमां शोभी रह्या हता. ललाटने विषे केसरनी अर्चा अने कंकुनो चांदलो कर्यो हता अने पोताना मुखारविंदनी आगळ संतमंडळ तथा गृहस्थ हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

प्रश्नः—पछी ठाकोर मेघराजजीए कंइक वस्तु मुट्ठीमां राखीने महाराजने हाथ जोडीने कह्यं जे " मारी मुट्ठीमां शी वस्तु छे ? ते कहो."

पछी महाराज बोल्या जे "ते तो हुं कहीश तेमां कांइ आश्चर्य नथी, पण एम कह्वानो मारो धर्म नथी. केम के ए तो जगतमां केटलाक ढोंगी छे ते पण कहे छे तेने करीने तेनी कांइ प्रभुताइ कहेवाती नथी. अने ते काम तो गोडीया, नटडा, पाखंडी तेनां छे, पण कोइ ज्ञानदातानुं ए काम नथी. अने एवुं तो हुं तमने शीखवुं तो तमे पण त्रण काळनुं जाण्तो एवा थाओ अने भूत, भविष्य अने वर्तमाननुं कही देखाडो. पण तेमां शुं पाम्युं ? कांइ तेने करीने आत्मानो मोक्ष थाय नहीं. अने ए तो सर्वे तंत्रख्याल छे, पण साचुं नथी. माटे ते मारो कहेवानो ज धर्म नथी. अने एमां तो उलटी अमारी अति हलकाइ कहेवाय. माटे एवुं काम अमे करता नथी. अने एवी अनंत कळाओने जाणीए छीए पण कही देखाडवा योग्य नथी.

जेम कोइक शाहुकारना घरमां करोड रूपियानी समृद्धि होय अने चिंतामणि पण तेनां घरमां होय. तेने कोइक एम कहे जे 'तमारा घरमां समृद्धि होय तो अमने दश-वीस फुटेलां हांडलां देखाडो तो जाणीए जे शाहुकार तमे खरा ? त्यारे ते शाहुकार जो तेने फुटेलां हांडलां देखाडे तो तेने करीने ते शाहुकारनी समृद्धिनी परीक्षा थाय नहीं अने उलटो ते मूर्ख कहेवाय, केम के फुटेलां हांडलां तो ढेड, झांपडानां घरमां पण होय. माटे एमां कांइ आश्चर्य नहीं. तेम भगवान तो आ ब्रह्मांडमां जेटली कळाओ छे ते सर्वेने जाणे छे अने तेथी पर पण अनंत कळाओने भगवान जाणे छे. तेमां आ लोकनी जेटली कळाओ छे ते तो फुटेलां हांडलां जेवी छे अने देवलोकनी कळाओ छे ते कोडीओने ठेकाणे छे. अने ब्रह्मादिकनी कळाओ छे ते बदाम जेवी छे. अने वैराजपुरुषनी कळाओ छे ते पैसा जेवा छे. अने प्रधानपुरुषनी कळाओ छे ते रूपिया जेवी छे. अने प्रकृतिपुरुषनी कळाओ छे ते सोनामहोर जेवी छे. अने अक्षरनी

कळाओ छे ते पारसमणि जेवी छे. अने भगवान पुरुषोत्तमनी कळाओ छे ते तो चिंतामणि जेवी छे.

—माटे चिंतामणिरूप जे आत्यंतिक ज्ञान ते एक अमारी पासे छे पण बीजा कोइ पासे आत्यंतिक ज्ञान नथी. ते सारु अमारी परीक्षा तो ज्ञाने करीने छे. अने ज्ञानने विषे तो नव निधि अने अष्ट महासिद्धि रही छे, पण नवनिधि अने अष्ट महासिद्धिने विषे ज्ञान नथी. माटे अमारी मोटप तो ज्ञाने करीने छे. ते ज्ञान केवुं छे ? तो जेने पामीने कांइ बाकी पामवुं रहे नहीं. अने सर्वे शास्त्रनो सार अने सर्वे महात्मा पुरुष जे ज्ञानने सांभळीने 'हा पाडे' अने वळी अविरुद्ध अने वेदनुं तत्त्वसार एवुं जे ज्ञान ते एक अमारी पासे ज छे. माटे ज्ञाने करीने अमारी परीक्षा जेने लेवी होय ते सुखेथी लो.

—अने ज्ञाने करीने जे निश्चय थाय ते निश्चय खरो छे. अने ज्ञाने करीने जे निश्चय थाय ते निश्चय कोइनो टाळ्यो टळे नहीं. अने ज्ञान विना बीजी कोइ वाते करीने निश्चय कर्यो होय तो तेनो निश्चय रहेवानो नथी. ते सारु भगवानना स्वरूपनो निश्चय ज्ञाने करीने करवो. अने जीवनुं कल्याण पण ज्ञाने करीने ज थाय छे. ते वेदमां कह्युं छे जे-- 'ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः।' ए श्रुतिमां एम कह्युं छे जे 'भगवानना स्वरूपना ज्ञान विना मुक्ति थाय नहीं.' ते सारु महात्मा पुरुष पासे जइने ज्ञान पामवुं. अने ज्ञान विना जे पडछापडछी मागे छे ते तो मूरख छे. अने तेनुं कल्याण कोइ काळे थतुं नथी. अने जे आसुरी जीव होय ते ज पडछो मागे छे. ते पण सहजानंदस्वामीना साधु मुक्तानंद स्वामी तेणे कीर्तनमां कह्युं छे जे--'पडछो इच्छे तेने पामर जाणवो.....' माटे दैवी जीव होय ते पडछो मागे नहीं.

अने पूर्वे भगवानना अवतार थइ गया तेने पण कोइने पडछो

आप्यो नथी. अने शास्त्रमां रावणादिक मार्या तथा गोवर्धन तोळ्यो, समुद्रमां पाळ बांधी, एम लख्युं छे ते पण ज्ञान ज लख्युं छे. अने देहनी क्रिया तो बीजा मनुष्यना जेटली ज भगवान पण करे अने बीजा मनुष्यने जेम भूख, तरस, टाढ तडको लागे तेम भगवानने पण मनुष्याकृति धारण करी होय तेने भूख, तरस, टाढ, तडको लागे पण एमने विषे ज्ञान छे ते ज्ञान बीजा कोई मनुष्य तथा देव, ब्रह्मादिक पासे नथी. माटे अमारी परीक्षा ते ज्ञाने करीने ज छे."

इति श्री मुखसिद्धांत १०० समाप्त ॥

१०१ विषय :—प्रत्यक्ष भगवानना दर्शन करी गुण ले तेनुं कल्याण थाय.

श्री हरिकृष्णाय नमोनमः—संवत् १९१८ ना चैत्र वद १४ ने दिवस महाराज श्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्री वळा मध्ये दवे लक्ष्मीरामने घेर उगमणे बार ओरडानी आगळ फळीमां ढोलिया उपर गादी तकिया नखावीने विराजमान थया हता. सर्वे सोनेरी कसुंबल वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पुष्पना हार कंठमां धारण कर्या हता. हाथने विषे बाजुबंध अने गजरा धारण कर्या हतां. केसरनी अर्चा अने कंकुनो चांदलो कर्यो हता. अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनिमंडळ तथा घणां हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

प्रश्न :—पछी महाराजनी संध्या आरती, धून, दंडवत करीने पछी दवे लक्ष्मीरामे हाथ जोडीने एक प्रश्न पूछ्युं जे "हे महाराज ! आ सर्वे मनुष्य घणाक प्रकारना आव्यां छे तेमां केटलाक तो तमने भगवान जाणीने दर्शन करवा आव्या छे, केटलाक मोटा पुरुष जाणीने आव्या छे; केटलाक तो यज्ञी-पुरुष जाणीने दर्शने आव्या हशे, केटलाक तो

जेम चोमासुं आवे त्यारे सर्वे वनस्पति नवपल्लव थाय छे, पण एक जवासो सुकाइ जाय छे. तेम भगवान प्रत्यक्ष थाय छे त्यारे दैवी एवा जे पामर, विषयी, मुमुक्षु अने मुक्त तेनुं तो भगवानने संबंधे करीने कल्याण थाय छे, पण एक आसुरीनुं कल्याण थतुं नथी. अने ते आसुरी तो भगवान प्रगट थाय त्यारे उलटा दुःखिया थाय छे. माटे जे जे भावे अमारी पासे आवे अने गुण लइने दर्शन करे छे ते सर्वेनुं कल्याण थशे."

इति श्री मुखसिद्धांत १०१ समाप्त ।

---

१०२ विषयः—निर्वासनिक थवाना उपाय अने परमेश्वरनो महिमा

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः—संवत् १९१८ ना चैत्र वद ३० ने दिवस महाराज श्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्री वळा मध्ये ठाकोर मेघराजजी-ना दरबारमां उत्तरादे बारना बंगलमां उपले माळे गादी तकीया उपर विराजमान थया हता. सर्वे जरियानी कसुंबल वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पुष्पना हार कंठमां धारण कर्या हता. पाघमां फूलना तोरा लट-कता हता अने कुमकुमनो चांदलो कर्यो हतो. अने पोताना मुखार-विंदनी आगळ संतमंडळ तथा हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

प्रश्नः—पछी महाराजे ते हरिभक्तोने घणी ज्ञान-वार्ता कही तेमां ए सिद्धांत आव्यो जे 'निर्वासनिक थाय त्यारे जीवनो आत्यंतिक मोक्ष थाय पण ते विना अक्षरधामने न पामे.' पछी गाम खेराळीना प्रतापसंग-जीए महाराजने प्रश्न पूछ्युं जे "हे महाराज! निर्वासनिक थवानो शो उपाय हशे ते कहो?"

पछी महाराज बोल्या जे "जेम कोइ नानो बाळक होय तेने

अंधारी कोटडीमां पूरी राखे अने त्यां कोइ मनुष्यनो प्रवेश थवा दे नहीं. अने छेटेथी अन्न-जळ आपे. एवी रीते वीस वरसनो वाळक थाय तेने पछी वहार काढे त्यारे तेने मनुष्यना व्यवहारनी खवर कांइ ज पण पडे नहीं अने लुगडां पहेरता पण आवडे नहीं. तेम जगतना जीवने भगवानना मार्गनी खवर ज नथी. अने जेम बीजां वाळकोने जेने जेवो संग थाय तेवा गुण तेमां आवे छे.

–ते ब्राह्मणनो वाळक होय ते नावा-धोवा, विद्याल्यास करवो, संध्या-गायत्री करवां, इत्यादिक गुण तेमां आवे छे. अने वेपारीनो वाळक होय ते वेपार करवा शीखे छे. खेडूतनो वाळक होय ते खेड करवा शीखे छे. सुतारनो वाळक होय ते लाकडां घडवा शीखे छे. सोनीनो वाळक सोनुं–रूपुं घडवा शीखे छे. अने ते सर्वे एक गाममां रहेता होय तो पण ब्राह्मणना छोकरानी वोलचाल नोखी होय, गरासीयानी वोलचाल नोखी होय, कोळीना छोकरानी वोली नोखी होय, चारणना छोकरानी वोलचाल वीजी जातनी होय. मुसलमानना छोकरानी वोली नोखी होय अने ढेडना छोकरानी वोली वीजी रीतनी छे.

तेमां जेम प्रथम कह्युं जे अंधारी कोटडीमां पुरेला वाळकने जेम जगतना कोइ व्यवहारनी खवर नथी, तेम जगतना जीवोने भगवानना मार्गनी खवर नथी माटे तेने खवर करवा सारु भगवान पोते तेना जेवा सजाति थइने पृथ्वी उपर मनुष्याकृतिनुं धारण करे छे त्यारे ते भगवाननी भेगा केटलाक संस्कारी जीव छे ते पण जन्म धरे छे. ते संस्कारी जीवने भगवाननो संवंध थाय ते ते जीव निर्वासनिक थाय छे. पछी जेने निर्वासनिक थवानी इच्छा होय तेणे ते निर्वासनिक पुरुषनो संग करवो, तो ते निर्वासनिकने संगे करीने निर्वासनिक थवाय छे माटे

निर्वासनिक पुरुपनो समागम दृढ करीने करवो ए ज निर्वासनिक थवानो उपाय छे. पण ते विना वीजो उपाय नथी."

एम उत्तर करीने महाराज त्यांथी उठ्या ते ठाकोर मेघराजजीनो हाथ झालीने वंगलेथी हेठा उतरीने लिंबडाना वृक्ष हेठे एक शीवनो ओटो हतो त्यां जइने घडिक उभा रहीने पछी महाराज घोडीए चडीने तेज गाममां नानजी राजगरने घेर पधार्या. अने आथमणां वारनी मेडीनी ओशरीमां गादी तकिया विछावीने ढोलिया उपर विराजमान थया हता. अने पोताना मुखारविंदनी आगळ सभा भराइने वेठी हती.

पछी संध्या आरती थया पछी महाराज वोल्या जे "परमेश्वर छे ते अपार महिमावाळा छे. जेम आ लोकमां एक गामनो धणी होय तेथी पांच गामना धणीनो महिमा वधारे कहेवाय छे. अने पांच गामनाथी पचीस गामना धणीनो वधारे महिमा कहेवाय छे. अने पचीस गामवाळाना करतां सो गामवाळानो वधारे महिमा कहेवाय छे. अने सो गामवाळाना करतां हजार गामना धणीनो वधारे महिमा कहेवाय छे. अने हजार गामवाळाना करतां लाख गामना धणीनो महिमा वधारे कहेवाय छे. अने लाख गामवाळाना करतां करोड गामवाळानो महिमा वधारे कहे-वाय छे. अने करोड गामवाळाना करतां चक्रवर्ती राजानो महिमा वधारे छे अने ते चक्रवर्ती राजानो एक लोक कहेवाय. अने एवा चौद लोकनुं एक ब्रह्मांड कहेवाय छे, अने एवा जे अनंत कोटि ब्रह्मांड तेना कर्ता एक प्रकृतिपुरुप छे. अने एवा अनंत कोटि पुरुप ते अक्षरना एक रोमना खाडाने विषे अणुंनी पेठे देखाय छे. अने एवा जे अक्षरब्रह्म तेना सा-धर्म्यपणांने पाम्या एवा अनंत कोटी मुक्त अक्षरधाममां रह्या थका परमेश्वरनी दृढ उपासना करे छे.

ते परमेश्वर केवा छे? तो अनंत कोटी अक्षररूप मुक्त तेना

स्वामी छे, तेना आधार छे अने ते मुक्तोने अखंड सुखना आपनारा छे. माटे एवा जे परमेश्वर तेना महिमानो अंत आवे एम नथी. अने जे भक्त जेटलो ए परमेश्वरनो महिमा जाणे छे, तेवो ते भक्त पोते थाय छे. अने परमेश्वर तो तेथी पर अने अपार महिमाए युक्त रहे छे.

एवा अपार महिमावाळा एवा जे परमेश्वर तेनुं जे अक्षरधाम तेने पामवाना बे मार्ग छे. तेमां एक सदाचरण अने बीजुं ज्ञान, ए बेय मार्गे करीने अक्षरधाममां जवाय छे. तेमां सदाचरण ते शुं? तो धर्म, ज्ञान, वैराग अने माहात्म्ये सहित भक्ति तेने विषे जेम कह्युं होय ते प्रमाणे मनकर्मवचने दृढपणें वर्तवुं, अने तेमां कोइ दिवस फेर पाडवो नहीं, तेनुं नाम सदाचरण छे. अने ते धर्म, ज्ञान, वैराग अने महात्म्ये सहित प्रत्यक्ष भगवाननी भक्ति तेनां स्वरूपने यथार्थ जेम छे तेम सत्पुरुष थकी जाणवुं अने तेमां कोइ दिवस संशय थाय नहीं, तेनुं नाम ज्ञान छे.

हवे तेमां धर्म शुं? तो इन्द्रियोनी वृत्तियोने मायिक पंचविषय थकी पाछी वाळीने भगवाननी भक्तिमां जोडी देवी तेनुं नाम धर्म छे, अने ज्ञाननुं रूप ए छे जे 'देहथी नोखो जे आत्मा तेने पोतानुं रूप जाणीने भगवाननी उपासना करवी.' अने वैराग जे 'प्रकृतिना कार्यने काग–विष्टा तुल्य जाणीने भगवानने विषे अचळ प्रीति करवी.' अने माहात्म्ये सहित भक्तिनुं ए रूप छे जे 'सर्व जगतना कर्ताहर्ता, पालक अने सर्वना आधार एवा जे परमात्मा भगवान ते प्रत्यक्ष मने मळ्या छे एम जाणीने ते भगवाननी श्रवण, कीर्तन आदिक नवधा भक्तिए सहित प्रत्यक्ष भगवाननी मूर्तिने विषे अनंत प्रीतिए सहित जोडाइ जवुं.' तेने माहात्म्ये सहित भक्ति कहेवाय. एवी रीते समजीने भगवाननी भक्ति करे ते भगवानना अक्षरधामने पामे छे."

इति श्री मुखसिद्धांत १०२ समाप्त ।

१०३ विषयः—कल्याण रूप अने अकल्याण रूप वस्तु.

श्रीहरिकृष्णाय नमो नमः-संवत् १९१८ ना श्रावण सुद ६ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री भुफणीया मध्ये पटेल राणा भक्तने घेरं उगमणे वार ओरडानी ओशरीमां गादितकीये युक्त ढोलिया उपर विराजमान थया हता. सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां. अने पुष्पना आभूषणो सर्वे अंगमां शोभी रह्यां हतां. अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणांक हरिभक्तोनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी श्री हरिकृष्ण भगवान कृपा करीने बोल्या जे " सांभळो एक वार्ता करीए छीए जे आ जगतमां बे वस्तु छे, एक कल्याणरूप छे अने एक अकल्याणरूप वस्तु छे. तेमां ज्ञानादिक वस्तु छे ते कल्याण रूप छे अने अज्ञानादिक छे ते अकल्याण रूप छे. अने ज्ञानादिकने विषे अपार सुख रह्युं छे अने अज्ञानादिकमां अपार दुःख रह्युं छे. माटे एवुं सुख-दायक जे ज्ञान तेनुं ग्रहण करवुं.

—ते एवुं ज्ञान क्यां छे ? तो मायापर एवा जे परमात्मा भगवान तेनी पासे एवुं ज्ञान छे. ते भगवान जीवनी उपर कृपा करीने मनुष्या-कृतिनुं धारण करीने जीवने मळे अने ते भगवाननो जीव आशरो करीने एमनी पासेथी ज्ञान सिद्ध करे त्यारे जीवने विषे जे अनादि अज्ञान रह्युं छे ते टळी जाय छे अने ते जीवनुं कल्याण थाय छे, पण ते विना बीजा अनंत उपाय करे तो पण जीवनुं कल्याण थाय नहीं अने अज्ञान टळे नहीं. अने प्रत्यक्ष भगवान मळ्या विना ज्ञान पण थाय नहीं. माटे जेने कल्याणनो खप होय तेने माया पर एवा जे कल्याणकारी सद्गुरु ते जरूर खोळवा पडशे. ते पण मनुष्यदेहे करीने ज सत्पुरुष ओळखाय एम छे. अने मनुष्यदेहे करीने ज आत्मानुं कल्याण थाय छे.

माटे ते समो आज तमारे सर्वेने आव्यो छे. अने पोताने मनुष्यनो देह अने माया पर एवा जे प्रगट सद्गुरु ज्ञानदाता तेनो संबंध ते तो अतिशय दुर्लभ छे. माटे ते दुर्लभ वस्तु प्राप्त थइ छे तेनुं अतिशय जतन करीने तेनो आशरो राखीने पोताना आत्मानुं काम सुधारी लेवुं अने सावधान थइने मनकर्मवचने सत्संग करवो. अने ते सत्संग थकी ज अज्ञान टळे छे अने आत्मानो मोक्ष थाय छे. माटे जे जे मुमुक्षु होय तेणे पोताना आत्मानुं रूडुं थाय ते सारु अधर्म–अनीतिनो त्याग करीने धर्म, ज्ञान, वैराग अने भक्ति आदिक जे रूडा गुण तेने सत्संग करीने शीखवा, पण आळस अने प्रमाद न राखवो. अने मनुष्यदेहनी आवरदा वृथा जवा देवी नहीं. अने मनुष्यदेहे करीने ज्ञान पामीने अज्ञानने टाळीने पोताना आत्मानुं कल्याण करे छे एज बुद्धिवाळा छे. अने एनेज मोटा मोटा संत अने शास्त्र वखाणे छे."

इति श्री मुखसिद्धांत १०३ समाप्त ।

१०४ विषयः—बुद्धिमान अने मूर्खनां लक्षण

श्री हरिकृष्णाय नमोनमः–संवत् १९१८ना श्रावण सुद ७ने दिवस महाराज श्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्री भुफणीया मध्ये शाह गोपालजी-ने घेर गादीतकिये युक्त ढोलिया उपर बिराजमान थया हता. सर्वे कसुंबळ सोनेरी वस्त्र धारण कर्यां हतां. अने कंठमां पुष्पनां हार शोभी रह्या हता. ललाटने विषे कंकुनो चांदलो कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंद-नी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी मोटी सभा भराइने बेठी हती.

पछी महाराज कृपा करीने बोल्या जे "जेने मनुष्यदेह परमेश्वरे आप्यो छे ते मनुष्यदेहे करीने भगवाननुं भजन, स्मरण, सेवा करे छे

तेना उपर भगवान प्रसन्न थाय छे अने तेनुं कल्याण थाय छे. अने ते बुद्धिमान कहेवाय छे. अने जे मूर्ख छे ते तो मनुष्यदेह पामीने पोताना आत्मानुं रूडुं थाय तेने अर्थे कांइ सुकृत नथी करतो अने तेना उपर भगवाननो कोप थाय छे. अने ते जीवने पछी जन्म-मृत्यु, गर्भवास अने चोराशीनां महादुःख भोगववां पडे छे.

जेम राजा छे ते पोतानी जमीन खेडूतने आपे छे. ते जे बुद्धिवाळा खेडूत छे ते खबरदार थइने खेतर खेडीने घणां दाणा नीपजावे छे अने राजाने वजे-वेरो आपे छे. अने ते राजा तेना उपर घणां राजी थाय छे अने तेने गामनी पटलाई आपे छे. अने पछी पोतानी पासे राखे छे. अने जे खेडूत बुद्धिहीन अने आळसु छे ते तो खेतर खेडतो नथी. अने खेड्या विना मांहे वीज वावे छे तेने नीपज आवती नथी. अने राजानो माणस वजे-वेरो लेवा आवे छे त्यारे घणो पस्तावो थाय छे अने वजे-वेरो आपी शकतो नथी. पछी ते राजा तेना उपर कोपायमान थइने तेनुं घर लूटी ले छे अने ते महादुःखने पामे छे.

तेम ए तो दृष्टांत अने तेनुं सिद्धांत तो ए छे जे राजाने ठेकाणे तो भगवान छे अने खेडूतने ठेकाणे जीवात्मा छे, तेने भगवाने कृपा करीने पोतानी जमीनरूप जे माया तेमांथी खेतररूप मनुष्यदेह आप्यो छे. ते देह आप्यानुं शुं प्रयोजन छे ? तो ते मनुष्यदेहरूप जे खेतर तेने धर्म, ज्ञान, वैरागादिक जे सांती तेने करीने खेडीने देहरूप खेतरने शुद्ध करे, कहेतां निर्वासनिक थइने तेमां भगवाननी भक्तिरूपी अन्न नीपजाववुं. अने पोताना आत्माने मायाना बंधनरूपी करज थकी मुकावीने भगवाननी सेवारूपी वजे-वेरो ते अखंड आपवो, कहेतां भगवाननी सेवामां अखंड रहेवुं ते ज सारु भगवाने मनुष्यनो देह सर्जी आप्यो छे. ते भागवतमां कह्युं छे जे—

बुद्धीन्द्रिय मनः प्राणान् जनानामसृजत् प्रभुः।
मात्रार्थे च भवार्थं च आत्मने कल्पनाय च ॥

ए श्लोकमां एम कह्युं छे जे 'बुद्धि, इन्द्रिय, मन, प्राणादिक देह जीवने भगवाने सर्जी आप्यो छे, ते विषयभोगादिक देहरक्षण करीने ज्ञान पामीने अंते मोक्ष पामवुं ते सारु मनुष्यदेह भगवाने सर्जी आप्यो छे.'

माटे एवो परमेश्वरनो उपकार तेने भूलीने अज्ञाने करीने बुद्धि, इन्द्रियो तेने केवळ विषयने मार्गे प्रवर्तावे छे अने भगवानने पामवा सारु धर्म, ज्ञानादिकमां नथी प्रवर्तावतो तो तेना उपर भगवाननो अतिशे कोप थाय छे अने ते जीव महाकष्टने पामे छे. अने तेने मनुष्य-देह गया पछी क्यांय ठरवानुं ठेकाणुं नहीं रहे. अने ज्यां ज्यां जन्म धरशे त्यां त्यां अपार दुःखने पामशे. केम के परमेश्वर छे ते तो सर्व-कारण, सर्वाधार अने सर्वोपरि राजाधिराज छे. अने एनुं ज सर्वे कर्युं थाय छे. ते एवा कृतघ्नी जीवने क्यांय सुख आववा देता नथी. अने जे मुमुक्षु अने दैवी एवा जे बुद्धिवाळा जीव छे ते तो बुद्धिवाळा खेडूत-नी पेठे जे ज्ञानी साधु तथा गृहस्थ छे ते जे ते पोताना आत्मानो मोक्ष थाय ते सारु इन्द्रियो-अंतःकरणने पंचविषय थकी पाछा वाळीने धर्म-मां दृढ राखे छे अने भगवाननी भक्तिने विषे प्रवर्तावे छे तेना उपर परमेश्वर अतिशय प्रसन्न थाय छे. अने तेने अपार सुख आपे छे. अने ते जीव अतिशय मोटपने पामे छे.

—माटे जेणे अमारो आशरो कर्यो होय तेणे पण सत्संग करीने ज्ञान पामीने दुराचरणनो त्याग करीने देह छतां देहथी नोखो एवो जे जीवात्मा तेने पोतानुं स्वरूप जाणीने देह, इन्द्रियो अने अंतःकरणने भगवान सन्मुख करवा. ते केवी रीते भगवान सन्मुख करवा ? तो काने करीने भगवाननी कथा, वार्ता, कीर्तन सांभळवानो नित्य नियम राखवो; हाथे

बुद्धीन्द्रिय मनः प्राणान् जनानामसृजत् प्रभुः।
मात्रार्थं च भवार्थं च आत्मने कल्पनाय च ॥

ए श्लोकमां एम कह्युं छे जे 'बुद्धि, इन्द्रिय, मन, प्राणादिक देह जीवने भगवाने सर्जी आप्यो छे, ते विषयभोगादिक देहरक्षण करीने ज्ञान पामीने अंते मोक्ष पामवुं ते सारु मनुष्यदेह भगवाने सर्जी आप्यो छे.'

माटे एवो परमेश्वरनो उपकार तेने भूलीने अज्ञाने करीने बुद्धि, इन्द्रियो तेने केवळ विषयने मार्गे प्रवर्तावे छे अने भगवानने पामवा सारु धर्म, ज्ञानादिकमां नथी प्रवर्तावतो तो तेना उपर भगवाननो अतिशे कोप थाय छे अने ते जीव महाकष्टने पामे छे. अने तेने मनुष्य-देह गया पछी क्यांय ठरवानुं ठेकाणुं नहीं रहे. अने ज्यां ज्यां जन्म धरशे त्यां त्यां अपार दुःखने पामशे. केम के परमेश्वर छे ते तो सर्व-कारण, सर्वाधार अने सर्वोपरि राजाधिराज छे. अने एनुं ज सर्वे कर्युं थाय छे. ते एवा कृतघ्नी जीवने क्यांय सुख आववा देता नथी. अने जे मुमुक्षु अने दैवी एवा जे बुद्धिवाळा जीव छे ते तो बुद्धिवाळा खेडूत-नी पेठे जे ज्ञानी साधु तथा गृहस्थ छे ते जे ते पोताना आत्मानो मोक्ष थाय ते सारु इन्द्रियो-अंतःकरणने पंचविषय थकी प [illegible] वाळीने धर्म-मां दृढ राखे छे अने भगवाननी भक्तिने विषे [illegible] छे तेना उपर परमेश्वर अतिशय प्रसन्न थाय छे. अने तेने अपार [illegible] आपे छे. अने

तेना उपर भगवान प्रसन्न थाय छे अने तेनुं कल्याण थाय छे. अने ते बुद्धिमान कहेवाय छे. अने जे मूर्ख छे ते तो मनुष्यदेह पामीने पोताना आत्मानुं रूडुं थाय तेने अर्थे कांइ सुकृत नथी करतो अने तेना उपर भगवाननो कोप थाय छे. अने ते जीवने पछी जन्म-मृत्यु, गर्भवास अने चोराशीनां महादुःख भोगववां पडे छे.

जेम राजा छे ते पोतानी जमीन खेडूतने आपे छे. ते जे बुद्धिवाळा खेडूत छे ते खबरदार थइने खेतर खेडीने घणां दाणा नीपजावे छे अने राजाने वजे-वेरो आपे छे. अने ते राजा तेना उपर घणां राजी थाय छे अने तेने गामनी पटलाई आपे छे. अने पछी पोतानी पासे राखे छे. अने जे खेडूत बुद्धिहीन अने आळसु छे ते तो खेतर खेडतो नथी. अने खेड्या विना मांहे वीज वावे छे तेने नीपज आवती नथी. अने राजानो माणस वजे-वेरो लेवा आवे छे त्यारे घणो पस्तावो थाय छे अने वजे-वेरो आपी शकतो नथी. पछी ते राजा तेना उपर कोपायमान थइने तेनुं घर लूटी ले छे अने ते महादुःखने पामे छे.

तेम ए तो दृष्टांत अने तेनुं सिद्धांत तो ए छे जे राजाने ठेकाणे तो भगवान छे अने खेडूतने ठेकाणे जीवात्मा छे, तेने भगवाने कृपा करीने पोतानी जमीनरूप जे माया तेमांथी खेतररूप मनुष्यदेह आप्यो छे. ते देह आप्यानुं शुं प्रयोजन छे ? तो ते मनुष्यदेहरूप जे खेतर तेने धर्म, ज्ञान, वैरागादिक जे सांती तेने करीने खेडीने देहरूप खेतरने शुद्ध करे, कहेतां निर्वासनिक थइने तेमां भगवाननी भक्तिरूपी अन्न नीपजाववुं. अने पोताना आत्माने मायाना बंधनरूपी करज थकी मुकावीने भगवाननी सेवारूपी वजे-वेरो ते अखंड आपवो, कहेतां भगवाननी सेवामां अखंड रहेवुं ते ज सारु भगवाने मनुष्यनो देह सर्जी आप्यो छे. ते भागवतमां कह्युं छे जे—

बुद्धीन्द्रिय मनः प्राणान् जनानामसृजत् प्रभुः।
मात्रार्थं च भवार्थं च आत्मने कल्पनाय च ॥

ए श्लोकमां एम कह्युं छे जे 'बुद्धि, इन्द्रिय, मन, प्राणादिक देह जीवने भगवाने सर्जी आप्यो छे, ते विषयभोगादिक देहरक्षण करीने ज्ञान पामीने अंते मोक्ष पामवुं ते सारु मनुष्यदेह भगवाने सर्जी आप्यो छे.'

माटे एवो परमेश्वरनो उपकार तेने भूलीने अज्ञाने करीने बुद्धि, इन्द्रियो तेने केवळ विषयने मार्गे प्रवर्तावे छे अने भगवानने पामवा सारु धर्म, ज्ञानादिकमां नथी प्रवर्तावतो तो तेना उपर भगवाननो अतिशे कोप थाय छे अने ते जीव महाकष्टने पामे छे. अने तेने मनुष्य-देह गया पछी क्यांय ठरवानुं ठेकाणुं नहीं रहे. अने ज्यां ज्यां जन्म धरशे त्यां त्यां अपार दुःखने पामशे. केम के परमेश्वर छे ते तो सर्व-कारण, सर्वाधार अने सर्वोपरि राजाधिराज छे. अने एनुं ज सर्वे कर्युं थाय छे. ते एवा कृतघ्नी जीवने क्यांय सुख आववा देता नथी. अने जे मुमुक्षु अने दैवी एवा जे बुद्धिवाळा जीव छे ते तो बुद्धिवाळा खेडूत-नी पेठे जे ज्ञानी साधु तथा गृहस्थ छे ते जे ते पोतानो आत्मानो मोक्ष थाय ते सारु इन्द्रियो-अंतःकरणने पंचविषय थकी पाछां वाळीने धर्म-मां दृढ राखे छे अने भगवाननी भक्तिने विषे प्रवर्तावे छे तेना उपर परमेश्वर अतिशय प्रसन्न थाय छे. अने तेने अपार सुख आपे छे. अने ते जीव अतिशय मोटपने पामे छे.

–माटे जेणे अमारो आशरो कर्यो होय तेणेपण सत्संग करीने ज्ञान पामीने दुराचरणनो त्याग करीने देह छतां देहथी नोखो एवो जे जीवात्मा तेने पोतानुं स्वरूप जाणीने देह, इन्द्रियो अने अंतःकरणने भगवान सन्मुख करवा. ते केवी रीते भगवान सन्मुख करवा ? तो काने करीने भगवाननी कथा, वार्ता, [illegible] सांभळवानो नित्य नियम राखवो; हाथे

करीने भगवान अने भगवानना संत तेनी सेवा तथा माळा फेरववानो नियम राखवो; नेत्रे करीने भगवान अने भगवानना संतना दर्शननो नित्य नियम राखवो; मोढे करीने भगवानना कीर्तन तथा नाम रटण तेनुं पण नित्य नियम प्रमाणे करवुं. एवी रीते दश इन्द्रियो अने चार अंतःकरण तेनी वृत्तियोने भगवानना स्वरूपमां जोडी दे तो ए जीवने अनंत जन्मना पाप वळग्यां छे ते सर्वे नाश पामी जाय छे. अने तेने अंतरमां प्रकाश थाय. अने तेने भगवानना स्वरूपनो उत्तम निर्विकल्प निश्चय थाय. अने ते जीव ब्रह्मरूप थइने भगवानना साधर्म्यपणांने पामे छे.

जेम आ लोकमां बुद्धिवाळो खेडूत होय तेने राजा प्रसन्न थइने गामनी पटलाइ सोंपे छे, अने तेथी वधारे बुद्धिवाळो जणाय तो परगणांनो पटेल करे छे, अने तेथी पण वधारे बुद्धिवाळो जणाय तो तेने पोताना राज्यनुं सर्वे काम सोंपी दे छे. तेम भगवाननो भक्त छे तेने विषे जेम जेम धर्म, ज्ञान, वैराग अने भक्ति आदिक रूडा गुण सत्संगे करीने आवता जाय छे अने पंचविषयनी वासना टळती जाय छे तेम तेम भगवान ए भक्तने मोटप पमाडता जाय छे.

—ते जे भक्त इन्द्रियोना विषयनो त्याग करे छे त्यारे तेने वैराटना साधर्म्यपणांने पमाडे छे. अने अंतःकरणना विषयनो त्याग करे छे त्यारे तेने मूळप्रकृतिपुरुषना साधर्म्यपणांने पमाडे छे. अने ज्यारे कारणमाया जे वासना तेनो त्याग करे छे त्यारे अक्षरब्रह्म जे भगवानना अनन्यदास तेना ?र, कर्हता ंने पमाडे छे. अने भगवान अखंड पोतानी सेवामां राखे छे. ऐवुं. अने ५अनंत ऐश्वर्य अने अनंत शक्तिओ ए ते सर्वे ए भक्तने भगवतानननी सेवे छे. अने पोताना जेवो सुखियो अने स्वतंत्र करे छे."

इ रहेवुं ते श्री मुखसिद्धांत १०४ समाप्त ।

मां कह्युं छे जे—

१०९ विषय :—माळा फेरववानी रीत

श्री हरिकृष्णाय नमोनमः—संवत् १९१९ना कारतक सुद ५ने दिवस महाराज श्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्री पींपळी मध्ये शाह लल्लु व्रजपालने घेर उत्तरादे वारना ओरडानी ओसरीमां गादी तकीये युक्त ढोलिया उपर विराजमान थया हता. सर्वे कसुंबळ वस्त्र धारण कर्यां हतां अने कंकुनो चांदलो कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणांक हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

प्रश्न :—पछी मुल्लुभाईए हाथ जोडीने महाराजने प्रश्न पूछयुं जे "हे महाराज ! केटलाक जीव छे ते भगवानना नामनी माळाओ फेरव्या करे छे तो पण तेनी वासना रंच मात्र टळती नथी अने तृष्णा तो दिवसे दिवसे वधती जाय छे माटे तेनुं अंत समे कल्याण पण नहीं ज थतुं होय. केम के तृष्णा टळ्या विना कल्याण थाय नहीं. माटे भगवानना नामनी माळा फेरवे छे तो पण कल्याण थतुं नथी तेनुं शुं कारण हशे? ते कहो."

पछी महाराज बोल्या जे "ते माळा तो फेरवे छे पण भगवानना आशरा विना बहार दृष्टिए करीने लोकमां भक्त जणाववा सारु माळा फेरवे छे; तेणे करीने तेनुं कल्याण थतुं नथी. जेम सिपाइ रजपूत होय ते धणी पासे लेख मंडाव्या विना ते गामनी चोकी पहेरो कर्या करे पण तेने महिनो पूरो थये लेख विना रूपिया मळे नहीं अने जो साची नीतिए करीने चोकी करे तो तेना सर्वे लोक वखाण करे खरां. पछी एवी रीते घणाक दिवस सुधी साचे दिले चोकी पहेरो कर्या करे तो तेने *गामनो धणी होय ते महेरबानी करीने* लेख करी आपे त्यारे तेने महिनो पूरो थये रूपिया मळे अने जो मनने धारे चोकी करतो करतो लाग पडे

त्यारे कोइकना घरमां खातर पाडे तो ते गामना धणीने हाथ आवे त्यारे तेने पांच मोडीया वांधीने हेडमां नांखे अने तेनुं उलटुं घरवार लूंटी ले.

तेम ए तो दृष्टांत अने एनुं सिद्धांत तो ए छे जे भगवान तथा भगवानना एकांतिक निर्वासनिक संत तेना आशरा विना अने तेनी आज्ञा विना सूझे एटली माळा फेरव्या करे तो पण तेनुं कल्याण थाय नहीं. जेम लेख मंडाव्या विना रूपिया मळे नहीं तेम महात्मा पुरुषनी आज्ञा विना अने तेना आशरा विना माळा फेरवे, जप, तप, करे पण तेनुं कल्याण थाय नहीं. अने तेना तो जगतमां वखाण थाय जे फलाणो भक्त माळाओ बहु फेरवे छे. तथा जप, तप, व्रत, बहु करे छे. एवी रीते वखाण थाय पण कल्याण थाय नहीं.

अने वळी माळा फेरवतो होय पण जो अधर्मने मार्गे चाले तो ते माळा फेरवतो थको पण नरकमां जाय. जेम चोकी करनारो चोरी करे तो हेडमां पडे तेम भक्त कहेवाइने अधर्म करे ते नरकमां जाय छे. अने जो अधर्मनो त्याग करीने पोताना जीवना कल्याणने अर्थे माळा फेरवतो होय तो तेने कोइक दिवस प्रगट भगवान मळे छे अने ते माळानो फेरवनारो ते भगवाननो आशरो करीने तेनी आज्ञा प्रमाणे वर्तीने इन्द्रियो नियममां करीने भगवाननी मूर्ति जे पोताने मळी होय तेने उरमां धारीने जे भक्त एवी रीते समजीने एक बे के पांच माळा फेरवे छे तो तेनी परमेश्वर घणीक माळा मानी ले छे. अने तेनुं कल्याण थाय छे. अने इन्द्रियोने नियममां कर्या विना अने परमेश्वरनी मूर्तिने उरमां धार्या विना घणीक माळा फेरवे तो पण परमेश्वर तेनी एके माळा मानता नथी. अने एवी रीते भगवानना आशरा विना अने इन्द्रियोने नियममां कर्या विना जप, तप, दान, पुन्यादिक जे जे साधन करे छे ते सर्वे साधन

तेना खोटां थइ जाय छे. माटे जगतमां केटलाक माळा फेरवे छे तथा जप, तप, तीर्थ, व्रत करे छे पण कोइनी इन्द्रियो नियममां नथी तेने करीने कोइनुं कल्याण थतुं नथी. अने जेने प्रत्यक्ष भगवान अने भगवानना संत मळे छे तेनी इन्द्रियो नियममां थाय छे अने तेनुं ज कल्याण थाय छे. ते पूर्वे पण जेने जेने प्रगट भगवान अने भगवानना संत मळ्या छे तेना कल्याण शास्त्रमां लखाणां छे.

केम के नामीए सहित नाम ले तो ज काम थाय पण नामी विना एकले नाम लीधे रंच मात्र अर्थ सरे नहीं. जेम अन्न विना अन्ननुं नाम लीधा करे तो पण भूख जाय नहीं. अने सूर्य आथम्या पछी सूर्यनुं नाम लीधा करे पण रात्रीनुं अंधारुं टळे नहीं. तेम सर्वे नामना नामी एवा जे प्रत्यक्ष भगवान तेना स्वरूपने साक्षात्कार जाण्या विना अने तेना चरणनी सेवा विना एकलुं नाम लीधा करे अने माळा फेरव्या करे तो पण तेनुं कल्याण थाय नहीं. माटे नामिए सहित नाम लइने माळा फेरवे तेनुं ज कल्याण थाय छे. पण नामी विना नाम सूझे एटलां लीधां करे तो पण कल्याण थाय नहीं. ते सारू नामीए सहित नाम लेवुं."

प्रश्नः—पछी वळी मुळुभाइए प्रश्न पूछ्युं जे "हे महाराज ! आज तो सर्वे नामना नामी तमे प्रगट भगवान छो माटे आ समे तो जेने भजन करवुं होय तेने ठीक छे अने तेनुं कल्याण पण थाय. पण क्यारेक तमे पृथ्वी उपर प्रगट न हो त्यारे मनुष्यने भजन शी रीते करवुं ते कहो?"

पछी महाराज बोल्या जे "भगवान प्रगट न होय त्यारे प्रगट भगवानना एकांतिक निर्वासनिक पंचविषयना त्यागी संत तेनो आश्रय करीने तेनी आज्ञामां रहीने अमारुं भजन करे तो तेनुं कल्याण थाय छे अने तेवा संत पण न होय त्यारे तो ते प्रगट भगवान अने भगवानना संत पोताने मळे एवी इच्छा राखीने पूर्वे भगवानना अवतार थइ गया

होय तेनी आज्ञा शास्त्रमां लखी गया होय ते आज्ञा प्रमाणे वर्तवुं अने ते भगवान अने संत पोताने मळे एवा साधन करता जवुं अने तेनुं नाम लीधा करवुं. एवी रीते भजन करे तेने प्रगट भगवान के भगवानना संत मळे छे. अने त्यारे तेनुं कल्याण थाय छे.

जेम पोताना घरमां अन्न न होय अने भूख लागी होय त्यारे ते अन्न पोताने मळे एवी इच्छा राखीने अन्ननुं नाम लेता थका ते अन्न जे रीते पोताने प्राप्त थाय तेवा उपाय करवा, ते घरमां पैसा होय तो अन्न वेचातुं लेवुं, अने पैसा न होय तो कोइकनो करज कटारो करवो अने तेम पण न मळे एम होय तो कोइकनी चाकरी करीने पैसा कमाइने तेनुं अन्न लावीने जमवुं त्यारे भूख जाय अने सुख थाय. पण उपाय न करे अने अमथुं अन्ननुं नाम लीधा करे तो भूख जाय नहीं, अने सुख थाय नहीं. तेम ज्यारे प्रगट भगवान अने संत होय त्यारे तो ते भगवान अने भगवानना संतने पामवा सारू तेना उपाय करवा.

ते शो उपाय छे ? तो जेने पूर्व जन्मना घणाक शुभ संस्कार होय तेने तो पंचविषयनो त्याग करीने जप, तप अने व्रत तेने खबरदार थइने दृढपणें करवा, तो तेना सारु भगवान तत्काळ प्रगट थाय छे अने तेने दर्शन आपीने तेनुं कल्याण करे छे. अने जेने पूर्व जन्मना संस्कार न होय तेणे पंचविषयनो त्याग तो थाय नहीं पण एवा पंच-विषयना त्यागी भगवानना भक्त होय तेनी सेवा, मन, कर्म, वचने करवी, तो ते जीवना संस्कार घणा वृद्धि पामीने जीव महा वळने पामे छे. पछी तेने पण भगवान अने भगवानना संत प्रगट मळे छे अने तेनुं कल्याण थाय छे.

अने एवा संस्कारी भक्त पृथ्वी उपर न होय त्यारे तो भगवानना अवतारनी मूर्तिनो आशरो करीने पोत पोताना (वर्णाश्रमना) धर्ममां

रहीने अधर्म–अनीतिनो त्याग करीने पोताना मनमां प्रगट भगवान अने भगवानना संत मळवानी इच्छा राखीने भगवाननुं भजन कर्या करवुं तो तेने पण कोइक दिवस प्रगट भगवान अने संत मळे छे. केमके भगवान तो अंतरजामी छे, ते जेनी जेवी इच्छा होय ते इच्छाने पूरी करे छे, पण जेम भगवाने कह्युं होय तेम करे तो ज तेनी इच्छा पूरी करे छे. माटे घणांक जीवोनी इच्छा भेगी थाय छे त्यारे भगवान अने भगवानना संत प्रगट थाय छे. अने सर्वेनी इच्छा पूरी करे छे अने ते जीवोना कल्याण थाय छे, माटे ते समो आज तमारे सर्वेने आव्यो छे ते तमारा भाग्यनो पार नथी."

इति श्रीमुख सिद्धांत १०५ समाप्त ।

१०६ विषयः—मोक्ष प्राप्तिमां विधि-निषेध.

श्री हरिकृष्णाय नमोनमः–संवत् १९१९ ना कारतक सुद ६ ने दिवस महाराज श्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्री पींपळी मध्ये चुडासामा मुळुभाइ वेचरजीना दरबारमां उगमणां बारना ओरडानी ओसरीमां गादी तकिये युक्त ढोलीया उपर विराजमान थया हता. सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पुष्पना आभूषणो सर्वे अंगमां शोभी रह्यां हतां. कंकुनो चांदलो कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी सर्वे सभा प्रत्ये कृपा करीने महाराज बोल्या जे "मायाने विषे जीव महा दुःखने पामे छे अने सदाय मरेला जेवा पड्या छे, तेने जीवता करवा सारु अने सुखिया करवा सारु परमेश्वर जे ते आ जगतनी उत्पत्ति करे छे. ते परमेश्वर केवा छे? तो सदाय माया पर छे. अने

सर्वेने सुखना दाता छे, सर्वेना आधार छे अने सर्वना नियंता छे. अने परमेश्वर जेवा तो एक परमेश्वर ज छे. अने जीव असंख्य छे, अने ते जीव परमेश्वरथी घणां जुदा छे.

हवे ते जीवने सुखिया करवा सारु अने जीव परमेश्वरने जाणता नथी तेने पोतानुं स्वरुप जणाववा सारु अने पोतानो जे अलौकिक प्रताप तेने प्रगट करवा सारु पोते जगतने उपजावीने तेने विषे नीति करी छे. ते नीतिने जे पाळे छे ते भगवानना स्वरुपने पामे छे, अने तेने भगवाननो अलौकिक महिमा समजाय छे. अने ते जीव ब्रह्मरुप थइने भगवानना अखंड सुखने पामे छे.

हवे ते नीति ते शुं छे? तो वर्ण अने आश्रम तेना धर्म जेने जेम कह्या होय ते प्रमाणे सहु सहुने दृढपणें वर्तवुं तेनुं नाम नीति छे. अने ते प्रमाणे वर्ते तेनी उपर भगवान प्रसन्न थाय छे. जेम स्त्री होय तेने पोताना पुरुषनी आज्ञामां वर्तवुं. अने वस्ती होय तेने पोताना गामनो धणी होय तेनी आज्ञामां वर्तवुं. एवी रीते एक बीजानी आज्ञा पाळवी. अने जे आज्ञा पाळे छे ते सुखिया थाय छे अने जे आज्ञा लोपे छे ते दुःखिया थाय छे. एवी रीतनो विधि–निषेधनो मार्ग करेलो छे. अने तेमां वर्तनारा जे जीव तेने सुख थाय छे, अने ते विधि प्रमाणे जे नथी वर्तता ते जीवने दुःख थाय छे.

ते उपरथी साफ जणाय छे जे विधि ते परमेश्वरनी ज आज्ञा छे अने एवो जे विधि तेने परमेश्वर परोक्षपणें रहीने घणांक काळ सुधी जीवने पळावे छे. अने ते विधिए करीने सिद्ध थयो एवो जे पुरुष ते सिद्धिने पामे छे, कहेतां परमात्माने जाणवानो अधिकारी थाय छे. अने जे परमात्माने पामवानुं अधिकारपणुं थाय छे ते पण परमात्माने जाणनारो एवो कोइक पुरुष मळे त्यारे तेना संग थकी ज थाय छे, पण ते

विना पोतानी मेळे कोइ जीव परमात्माने पामवानो अधिकारी थतो ज नथी. जेम कोइक घरघोडीया गरासियानी दीकरी होय तेनुं मोटा राजाने त्यां सगपण कर्युं होय, पछी ते राजा रीझे एवा गुण शीखवा सारु राजाना गुणने जाणनारी एवी जे ते राजानी दासी तेने संगे रहीने ते गुणने शीखे त्यारे तेमां राजा रीझे एवा गुण आवे छे. पण ते विना पोतानी मेळे राजा रीझे एवा गुण आवे नहीं. तेम परमात्माना स्वरुपने जाणनारा एवा जे एना एकांतिक संत होय तेने संगे करीने ज परमात्मानुं स्वरुप जणाय छे.

हवे ते परमात्माने जाणवानी रीत कहीए छीए जे जेम पतिव्रता स्त्री पोताना स्वामी विना सर्वे पुरुषनो त्याग करे छे, अने जेम वस्ती छे ते पोताना राजाना ज हुकममां वर्ते छे तेम भगवानना भक्तने भगवाननी मूर्ति विना मायामांथी उपज्या जे मायाना आकार मात्र तेनो त्याग करवो. केमके भगवाननी मूर्ति छे तेज एक सत्य स्वरुप अने सुखना धाम छे अने सर्वे जीवोना साचा स्वामी छे. अने भगवाननी मूर्ति विना बीजा जे देव, ब्रह्मा अने प्रकृतिपुरुष सुधीना आकार मात्र छे ते चार प्रकारना प्रलयमां नाश पामी जाय छे. अने भगवाननुं जे स्वरुप छे ते तो अखंड अने अविनाशी छे; अने सर्वेना आदि कर्ता छे.

माटे ते परमात्माने पामवा सारु विधि बतावी छे, अने ते विधि प्रमाणे घणां काळ सुधी जीव वर्ते छे तेने सर्व कारणना कारण एवा जे परब्रह्म परमात्मा भगवान ते प्रत्यक्ष दर्शन आपे छे, पछी जेने प्रत्यक्ष भगवानना दर्शन थया तेने विधि सर्वे पूरो थइ रह्यो छे. अने तेने पछी सर्वे मतपंथ तथा नातजात तथा वर्ण–आश्रम तथा लोकनी लाज, आदिक जे आवरण तेनो त्याग करीने प्रत्यक्ष मनुष्याकृति जे भगवान तेने विषे सर्वे भावे जोडाइ जवुं. पण प्रत्यक्ष भगवाननी मूर्तिने विषे

कोइ जातनो अंतराय तथा विधि–निषेध ते राखवो नहीं.

जेम पतिव्रता स्त्री होय ते पोताना पति विना बीजा सर्वे पुरुषने विषे लाजमरजादा राखे छे. ते शा सारु लाजमरजादा राखे छे? तो पोताना पुरुषने राजी करवा सारु लाजमरजादा राखे छे, अने कोइ पुरुष साथे हसे–बोले नहीं, अने पोतानो पुरुष गाम गयो होय तो पोते सारां वस्त्र घरेणां पहेरे नहीं अने सारा भोग जे खावा–पीवा तेने भोगवे नहीं अने ते सर्वेनो त्याग करे. पछी पतिव्रता स्त्री उपर तेनो पुरुष राजी थाय छे अने ते पुरुषने विषे पतिव्रता स्त्री जे ते लाजमरजादानो त्याग करीने जोडाइ जाय छे, पण पोताना पुरुषने विषे लाजमरजादा राखती नथी, अने जो जेम बीजा पुरुषने विषे लाजमरजादा राखीने छेटे रहे छे तेम पोताना पतिने विषे लाजमरजादा राखीने छेटे रहे तो ते उपर तेनो पुरुष राजी थाय नहीं अने तेने पुत्ररूप फळ पण प्राप्त थाय नहीं, अने तेनुं पतिव्रतापणुं पण खोटुं थइ जाय छे.

तेम भगवानने प्रसन्न करवा सारु विधि–निषेधने पाळवो, अने जे विधि–निषेधने पाळे छे तेनी उपर भगवान प्रसन्न थाय छे, अने ज्यारे भगवान प्रसन्न थइने पोताने प्रगट मळे त्यारे तेने विषे लाज–मरजादानो तथा विधि–निषेधनो त्याग करीने भगवाननी मूर्तिने विषे जोडाइ जवुं, अने प्रगट भगवानने विषे जोडावा सारु तो पूर्वेना कविओए भगवानना रास पंचाध्यायादिक रसिक शास्त्र कर्यां छे. तथा प्रगट भगवानना रसिक कीर्तन कर्यां छे, ते शुकदेवजी जेवा महात्यागी होय तेणे पण ते रसिक चरित्रमां भगवान गाया छे, अने वळी गीतामां पण श्रीकृष्ण भगवाने अर्जुनने कह्युं छे जे—

सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज ।
अहं त्वा सर्व पापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुच ॥

अर्थः–"जे विधि–निषेधनो जे धर्म तेनो त्याग करीने मारे शरणे आव अने हुं जेम कहुं तेम कर, तो हुं तने सर्व पाप थकी मूकावीश." एवी रीते श्रीकृष्ण भगवाने कह्युं त्यारे अर्जुने वचन मानीने विधि–निषेधनो त्याग करीने गुरु, गोर अने कुळनो नाश कर्यो, तो पण ते भगवानना एकांतिक भक्त कहेवाया. अने ऋषिपत्नीयोए लाजमरजादाने मूकीने श्रीकृष्ण भगवानने थाळ जमाडवा गइ तो ते भगवानना धामने पामी गइ, अने ऋषियोए जो लाज–मरजादा अने वीधि–निषेध राख्यो जे 'यज्ञनो हवन पूरो थया अगाउ वीजा मनुष्यने अन्न अपाय नहीं' तेम भगवानने पण अन्न आप्युं नहीं. तो ते ऋषि दुर्भागी कहेवाया, अने गंधारीए पतिव्रतानो धर्म पाळवा सारु आंखे सात पाटा वांध्या हता, तो पण जो तेने प्रगट श्रीकृष्ण साथे अंतराय रह्यो तो ते दुर्भागणी कहेवाणी छे. अने द्रौपदीए पांच पति कर्या, तथा माता कुंताजीए पण पांच देव थकी पांच पुत्र उपजाव्या हता. तो पण जो तेणे प्रगट श्रीकृष्ण भगवानने लाजमरजादा मेलीने भज्या अने भगवाननी सेवा करी तो ते महा सतियो कहेवाणी. अने भगवानना धामने पामी गइ. अने गोपीयोए कुळनो धर्म अने लाजमरजादानो त्याग करीने प्रगट श्रीकृष्णमां जोडाणी तो ते गोपीयो वेदनी श्रुतियो कहेवाणी. अने जरासंघ हतो ते वेद्–धर्म प्रमाणे वर्ततो हतो अने विधि–निषेध यथार्थ पाळतो हतो. अने परोक्ष भगवाननी भक्ति पण करतो हतो अने महा सत्वादी पण हतो अने पोताना राज्यने विषे गामोगाम सदाव्रत वांध्या हता अने साधु के ब्राह्मण आंगणे आवीने जे मोढेथी मागे ते आपतो, तो पण जो तेणे श्रीकृष्ण साथे अंतराय राख्यो तो ते महा असुर कहेवायो छे. केमके जेना सारु विधि–निषेध अने जप, तपादिक साधन करवां अने तेज भगवान प्रगट मळ्या अने ते साथे ज अंतराय

राख्यो तो तेना साधन सर्वे खोटां थइ जाय छे.

जेम पतिव्रता स्त्री बीजा पुरुषनो त्याग करे छे तेम पोताना पुरुषनो पण जो त्याग करे तो ते स्त्री अभागणी कहेवाय अने तेने पुत्ररूप फळ थाय नहीं. तेम जे भगवानना भक्त होय तेने भगवानने साक्षात्कार पामवा सारु पंचविषयनो त्याग करवो अने एवी रीते साधन करतां करतां भगवान प्रसन्न थाय अने पोताने प्रगट थइने मळे पछी ते प्रगट भगवान साथे पण लोकलाजे करीने तथा विधि-निषेधे करीने तथा मत-पंथनी आडे करीने अंतराय राखे तो तेना साधन सर्वे खोटां थइ जाय छे. अने ते जीव दुर्भागीयो कहेवाय अने ते तो महा पापी कहेवाय. केमके जेने पामवा सारु परोक्ष भगवाननी भक्ति करता हता, तथा व-र्णाश्रमनो धर्म पाळता हता अने तेज भगवान तेना साधनना फळने आपवा सारु प्रगट थाय अने कृपा करीने दर्शन आपे त्यारे ते न जाणता एवा जे अज्ञानी मनुष्य ते कहेशे जे 'अमे तो वैष्णव धर्ममां छीए ते बीजा गमे ते मोटा पुरुष होय तोपण तेने मानीए नहीं.' तथा वळी कहेशे, जे 'अमे तो स्वामीपंथमां छीए, तथा जैनधर्ममां छीए, तथा मार्गी छीए.' तथा कहेशे जे 'अमे तो शीवपंथी छीए.' तथा कहेशे के 'अमारे तो ओझल छे. माटे अमे तो अमारो धर्म अने कुळनी रीत मूकीने बीजा कोइ पासे जइए नहीं अने बीजाने मानीए नहीं.' एम जे समजीने प्रगट भगवानना संबंधथी अने तेना आशराथी छेटे रहे छे अने प्रगट भगवान साथे अंतराय राखे छे तथा बीजाने अंतराय रखावे छे ते, जेवो तो कोइ पापी अने अधर्मी नहीं. अने तेना अनंत साधननुं फळ सर्वे, नाश थइ जशे अने ते तो मरीने जरूर यमपुरीमां जशे. केम के सर्वे जगतना कर्ता हर्ता अने सर्वे मत–पंथवाळा जेनुं भजन करे छे एवा जे भगवान ते एक ज छे, पणभगवान कोइना जुदा नथी. माटे ते

भगवान जीवो उपर कृपा करीने प्रगट थाय अने ते भगवानने न माने अने ते प्रगट भगवानथी छेटे रहे ते जेवो तो कोइ दुर्भागीयो नथी.

माटे जेने पोताना आत्मानुं रूडुं करवुं होय तेने ज्यां सुधी प्रगट भगवान मल्या न होय त्यां सुधी वर्णाश्रमना धर्म ते जेने जेम कह्या होय ते प्रमाणे वर्तवुं अने ज्यारे भगवान प्रगट थया एम संभळाय तो तत्काळ सर्वे अंतरायनो त्याग करीने प्रगट भगवानने शरणे जवुं पण भगवान प्रगट थया पछी मतपंथमां तथा लोकलाजमां कोइ ठेकाणे बंधाइ रहेवुं नहीं अने प्रगट भगवान जेम कहे ते प्रमाणे वर्तवुं, अने ते प्रगट भगवाननी मूर्तिने विषे लाजमरजादनो त्याग करीने अतिशय हेते करीने जोडाइ जवुं. अने ते प्रगट भगवाननी ज एक सेवा करवी. अने प्रगट भगवाननी सेवामां जे अंतराय करे तेनो तत्काळ त्याग करी देवो.

जेम ऋषिनी स्त्रीयोए श्री कृष्णनी सेवामां अंतरायना करनारा पोताना पुरुष तथा लोकनी लाज तेनो त्याग करीने प्रगट भगवानने भात लइने जमाडवा गइ पण कोइनी रोकी रोकाणी नहीं. अने बळीराजाने पोताना गुरु शुक्राचार्ये वामनजीने पृथ्वी आपवानी ना पाडी तो पण तेना वचननो त्याग करीने प्रगट वामनजीने पृथ्वी अर्पण करी अने पछी पोतानुं तन, मन, धन सर्वस्व अर्पण कर्युं, तो ते बळीराजा उपर वामनजी भगवान घणां प्रसन्न थया. अने ऋषिपत्नीयो उपर श्रीकृष्ण भगवान पण घणां प्रसन्न थया. अने बळीराजा तथा ऋषिपत्नीयो ते भगवानना एकांतिक भक्त कहेवाणां अने जे लोकलाजमां तथा मतपंथमां बंधाइने प्रगट भगवानथी छेटे रह्या छे ते सर्वे दुर्भागी कहेवाया छे.

माटे चार वेद अने छ शास्त्र अने अढार पुराण अने भारतादिक इतिहास ए सर्वेनो एज सार छे जे 'प्रगट भगवान मळ्या न होय त्यां सुधी अनंत साधन करवा. अने ते साधन करतां करतां प्रगट भगवान मळे

त्यारे ते प्रगटने विषे जोडाइ जवुं.' एटलो सर्वे शास्त्रनो सार छे. अने अमारो पण एज सिद्धांत छे. जे प्रगट भगवाननी भक्तिमां अने तेनी सेवामां अने तेनो समागम करवामां जे जे अंतराय करे कहेतां प्रगट भगवान पासे जतां रोके तेने चंडाल जेवो जाणीने तेनो त्याग करी देवो. पण कोइना रोक्या रोकावुं नहीं. अने प्रगट भगवानने शरणे जवुं, तथा परोक्ष मतपंथना पोताना गुरु होय अथवा आचार्य होय अने ते लोभे करीने प्रगट भगवानने शरणे जतां रोके अने कहे जे 'त्यां जशो तो गुरुद्रोही छो अने वचनद्रोही छो.' एम सेवकने लोभे करीने कहे तो पण तेनुं वचन न मानवुं. अने तेने तो पापी अने आसुरी जाणीने तेनो त्याग करवो.

त्यारे तमे कहेशो जे मा, बाप, गुरु, आचार्य तेनुं वचन लोपीए तो पाप लागे नहीं ? तो तेनुं पाप न लागे. केमके बळीराजाए गुरुअने आचार्य जे शुक्राचार्य तेना वचननो त्याग कर्यो तो पण पाप लाग्युं नहीं अने सामुं भगवान प्रसन्न थइने बळीराजाने वश थया अने ऋषिपत्नीयोए पोताना पुरुषोनो त्याग कर्यो तो पण तेने पाप न लाग्युं अने तेनुं कल्याण थयुं. एवी रीते घणांक भक्तोए परोक्ष मतपंथना गुरु–आचार्यनो त्याग कर्यो छे. तथा माबाप आदिक देहना संबंधीनो त्याग कर्यो छे तो पण ते सर्वे उपर भगवाने प्रसन्न थइने तेने अभयपद आप्यां छे, पण कोइने पाप लाग्युं नथी.

माटे प्रगट भगवान पासे जतां जे जे ना पाडे तेनो त्याग करवो अने त्याग थाय एम न होय अने संसारमां भेगां रहेवुं पडे तो तेनुं वचन मानवुं नहीं. अने ते कोइक भगवानना भक्तने निंदाना वचन कहे जे 'तमारी लाज जशे अने फजेती थशे,' एम कहे तो ते भगवानना भक्तने हैये धरवुं नहीं. अने पूर्वे जे प्रगट भगवानने शरणे

गया छे तेनी आसुरी जीवे निंदा करी छे, तो पण भगवानना भक्तनी कोइनी लाज गइ नथी अने फजेती पण थइ नथी. माटे एवा आसुरी जीवना संगनो अने तेना वचननो त्याग करवो. अने जे प्रगट भगवानने विषे जोडावे तेनो समागम करवो. अने एवी रीते समजीने सर्व अंतरायनो त्याग करीने प्रगट भगवानने विषे जोडाय छे तेना सर्वे साधन पूरां थइ रह्या छे.

अने जीवने प्रगट भगवानने विषे जोडाववा सारु धर्मानंद स्वामीए प्रगट भगवानना रसिक कीर्तन कर्यां छे जे "हरिकृष्ण रंगीले मारुं चीत चोर्युं रे......" एवा कीर्तन गावा थकी दैवी जीवने भगवानने विषे प्रीति थाय छे. अने ज्यारे प्रगट भगवानने विषे जेने प्रीति थइ तेने भगवानने विषे कोइ जातनो अंतराय रहेतो नथी. जेम पतिव्रता स्त्री पोताना पुरुष साथे अंतराय राखती नथी ते सर्व सुखने पामे छे. तेम जे प्रगट भगवानने विषे जोडाइ जाय छे ते भक्त–बाई अथवा भाई जे ते अक्षरधामरूप फळने पामे छे. अने ते भक्त जे ते ब्रह्मरूप थइने महासुखने भोगवे छे. अने प्रगट भगवानने मूकीने परोक्षमां बंधाइ रहे छे अने एम जाणे छे जे 'अमे भक्ति करीए छीए,' ते तो सर्वे कुशका खांडे छे."

इति श्री मुखसिद्धांत १०६ समाप्त ।

---

१०७ विषय :—भगवानना आशरानुं रूप

श्री हरिकृष्णाय नमोनमः—संवत् १९१९ ना कारतक सुद ७ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री पींपळी मध्ये चुडासामा मुळुभाई वेचरजीना दरबारमां उगमणे वार ओरडानी ओसरीमां गादी तकिया नखावीने ढोलिया उपर विराजमान थया हता. सर्वे जरियानी

वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पुष्पना हार कंठमां धारण कर्या हता. ललाटने विषे ककुंनो चांदलो कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणांक हरिभक्तोनी सभा भराइने वेठी हती.

प्रश्न :—पछी अक्षरमुक्तानंद स्वामीए प्रश्न पूछ्युं जे "हे महाराज! आशरानुं शुं रूप छे ?" पछी महाराज वोल्या जे "आशरो ते शुं ? तो आधारनुं नाम आशरो छे. ते जेने भगवाननो आशरो थाय छे तेने भगवान विना वीजे क्यांय प्रीति रहेती नथी अने तेने भगवानना मार्गमां कोइ रोकवाने समर्थ नथी. जेम नदीओने समुद्रनो आशरो छे. तो ते नदीओ कोइनी रोकी रोकाती नथी अने समुद्रमां गये ज रहे छे. तेम जेने भगवाननो दृढ आशरो होय ते पण भगवानना मार्गमां अंतराय रूप जे काम, लोभादिक दोष तथा शव्दादिक पंचविषय तथा देहाभिमान तथा देहना सगां-संवंधी आदिक माया तेनो कोइनो रोक्यो रोकाय नहीं. अने जेने भगवाननो एवो दृढ आशरो होय तेने काळ, कर्म अने मायानो पण भय मटी जाय छे. अने जेने भगवाननो एवो दृढ आशरो न होय ते तो काळ, कर्म अने मायाने वश थइने जन्म-मृत्युने पामे छे. अने महादुःखने भोगवे छे.

जेम घंटीने विषे दाणा दळाय छे. तेमां जे दाणा घंटीना खीलडानो आशरो करीने खीलडानी पासे पड्या रहे छे ते दाणाने घंटी दळी शकती नथी. अने जे ते खीलडानो आशरो मूकीने छेटे जाय छे तेने घंटी दळीने लोट करी नाखे छे. ते जेम घंटीने खीलडानो आधार छे तेने करीने घंटी फरे छे. तेम आ जगतरूप घंटी छे. अने तेना आधार परमात्मा भगवान छे. तेम भगवानना आधारे करीने उत्पत्ति, स्थिति अने प्रलय रूप फेराने विषे अनंत जीव जे ते जन्म-मृत्युरूपी महाकष्टमां पीलाया करे छे. अने जे जीव जगतना आधार एवा जे भगवान तेने आशरे रहे छे

અને ભગવાન વિના બીજે ક્યાંય લોભાતા નથી તે જીવ જે તે કાળ-કર્મરૂપ ઘંટીના પાસમાં આવતા નથી. અને તે ભક્તો નિર્ભય થઇ રહ્યા છે. અને જે જીવ ભગવાનનો આશરો મેલીને પંચવિષયમાં લોભાય છે તે જીવ જગતરૂપી ઘંટીમાં દળાય છે; કહેતાં જન્મ-મૃત્યુને ભોગવે છે.

માટે ભગવાન વિના બીજે ક્યાંય પ્રીતિ ન રહે અને એક ભગવાનને વિષે દૃઢ પ્રીતિ રહે એજ આશરાનું રૂપ છે. માટે જેને મહાસુખિયા થવું હોય તેણે સર્વે માયાના પડપંચનો ત્યાગ કરીને એક પ્રત્યક્ષ ભગવાનનો આશરો રાખવો. એજ જીવની અતિહીત વાર્તા છે."

ઇતિ શ્રી મુખસિદ્ધાંત ૧૦૭ સમાપ્ત ॥



૧૦૮ વિષય :—કુશાગ્ર-બુદ્ધિવાળાનાં લક્ષણ

શ્રીહરિકૃષ્ણાય નમોનમઃ--સંવત્ ૧૯૧૯ ના કારતક સુદ ૮ને દિવસ મહારાજ શ્રીહરિકૃષ્ણ ભગવાન ગામ શ્રી પીંપળી મધ્યે ચુડાસામા મોતીભાઈ વેચરભાઈના દરબારમાં ઉગમણેં વાર ઓરડાની ઓશરીમાં ઢોલિયા ઉપર વિરાજમાન થયા હતા. સર્વે જરિયાની વસ્ત્ર ધારણ કર્યાં હતાં અને પુષ્પના આભૂષણ સર્વે અંગમાં શોભી રહ્યાં હતાં. અને પોતાના મુખારવિંદની આગળ સાધુ તથા ઘણાંક હરિભક્તની સભા ભરાઇને બેઠી હતી.

પ્રશ્ન :—પછી પરમસિદ્ધાનંદ સ્વામીએ પ્રશ્ન પૂછ્યું જે "હે મહારાજ! શાસ્ત્રમાં એમ કહ્યું છે જે 'જેની કુશાગ્ર બુદ્ધિ હોય તેને બ્રહ્મની પ્રાપ્તિ થાય છે.' તે કુશાગ્ર બુદ્ધિ તે ત્યાગી થયો હોય તેની કહેવાય કે ગ્રહસ્થાશ્રમમાં બહુ ડાહ્યો હોય તેની કુશાગ્ર બુદ્ધિ કહેવાય ? અને તે કુશાગ્ર બુદ્ધિ કેમ થાય ? તે કહો."

પછી મહારાજ બોલ્યા જે "બુદ્ધિ બે પ્રકારની છે, તેમાં એક તો

धर्म, अर्थ अने काम पर बुद्धि छे. अने तेमां जेनी बुद्धि बहु जणाती होय अने बुद्धिए करीने आखा विश्वनुं कारखानुं चलावे एवो होय, तथा देवताना जेवी बुद्धि होय, तथा वैराजपुरुषना जेवी बुद्धि होय, तथा अनंत कोटी ब्रह्मांड उपजावे एवो जे मुळ प्रकृतिपुरुष तेना जेवी बुद्धि होय तो पण ते स्थूळ बुद्धिवाळा छे. केम के ए सर्वे सकामभावे करीने बहार दृष्टिये वर्ते छे. ते बहार दृष्टिवाळाने ब्रह्मनी प्राप्ति थती नथी. केम के बहार दृष्टिवाळा जेम जेम मोटपने पामता जाय छे तेम तेम तेने ब्रह्म अने परमात्माथी छेटुं पडतुं जाय छे.

जेम कोइने जवुं होय उगमणुं अने चालवा मांडे आथमणो, ते जेम जेम चालतो जाय तेम तेम वधारे वधारे छेटुं पडतुं जाय तेम अंतरवृत्ति जे आत्मा तेने विषे रह्या जे परमात्मा परब्रह्मने भूलीने 'देह हुं छुं.' एम मानीने बहार दृष्टिये करीने जे जे साधन जप, तप, व्रत, दान, पुन्यादिक करे छे तो पण ते सर्वे स्थूळ बुद्धिवाळा छे. अने ते चार वेद अने खट शास्त्रना अर्थ मोढे करीने कही जतां होय तथा संसारनो त्याग करीने भेख लीधो होय अने पोता पासे धातु पण कांइ न राखतो होय. तथा एकांत पकडीने बेठो होय तो पण ज्यां सुधी पंचविषयनी वासनाए करीने बहार दृष्टिये वर्ते छे तो ते सर्वे जाडी बुद्धिवाळा छे. अने ज्यां सुधी पंचविषयनी वासनाए करीने देहना सुख सारु क्रिया करे छे त्यां सुधी तेने ब्रह्मनी प्राप्ति कोइ काळे थती नथी.

अने जे पोताना आत्माना मोक्षने अर्थे निष्कामभावे करीने सत्पुरुषनो समागम करे छे अने ते सत्पुरुषनो समागम करीने एम समजतो होय जे 'स्थूळ, सूक्ष्म अने कारण ए त्रण देह तथा जाग्रत, स्वप्न ने सुषुप्ति ए त्रण अवस्था तथा रज, तम अने सत्त्व ए त्रण गुण, ते सर्वे थकी विलक्षण कहेतां एथी नोखो एवो जे आत्मा तेने पोतानुं स्वरूप

जाणीने पंचविषयनो त्याग करीने ते आत्माने विषे रह्या एवा जे परमात्मा भगवान् तेने पामवा सारु जप, तप, व्रत, दान, पुन्यादिक जे जे साधन करे छे तेने ब्रह्मनी प्राप्ति थाय छे. अने ते शास्त्रनो भणेलो होय अथवा वगर भणेलो होय, अने तेनी झाझी बुद्धि जणाती होय अथवा थोडी बुद्धि जणाती होय, अने ते त्यागी होय अथवा संसारमां रह्यो होय पण जो ते निष्कामभावे आत्माना मोक्षने अर्थे प्रवर्ते छे ते सर्वे कुशाग्र बुद्धिवाळा छे. अने ते विनाना सूझे एवा मोटा कहेवाता होय तो पण ते जाडी बुद्धिवाळा छे.

जेम कोइक अति उंचो मोटो पहाड होय अने तेना उपर दीपडा के सावज चड्या होय तो पण ते भूचर कहेवाय; कहेतां पृथ्वी उपर रहेनारा छे. अने मांख अथवा मच्छर ते पृथ्वी थकी हाथ उंचे उडे तो पण ते खेचर कहेवाय कहेतां आकाशमां रहेवावाळां छे. तेम जे सकामभावे करीने देहना सुख सारु क्रिया करे छे तेनी घणीक बुद्धि जणाती होय तो पण तेनी जाडी बुद्धि जाणवी अने जे निष्कामभावे आत्माना मोक्षने अर्थे जतन करे छे, तेनी थोडी बुद्धि जणाती होय तोपण तेनी कुशाग्र बुद्धि जाणवी. अने तेने ज ब्रह्मनी प्राप्ति थाय छे.

अने ते कुशाग्र बुद्धि थवानो पण ए ज उपाय छे जे जेनी कुशाग्र बुद्धि छे एवा जे प्रत्यक्ष भगवान अथवा ते भगवानना उपदेशे करीने कुशाग्र बुद्धिने पाम्या एवा जे भगवानना एकांतिक संत तेनी सेवा अने तेने समागमे करीने कुशाग्र बुद्धि थाय छे अने तेने ब्रह्मनी प्राप्ति थाय छे. ए तमारा प्रश्ननो उत्तर छे."

इति श्री मुखसिद्धांत १०८ समाप्त ॥

१०९ विषयः—महामोह, मोह, प्रमाद अने आळस तेने टाळवाना उपाय

श्री हरिकृष्णाय नमोनमः–संवत् १९१९ ना कारतक सुद ९ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री पींपळी मध्येसोनी जेचंद मनजीने घेर उत्तरादे बारना ओरडानी ओसरीमां गादी तकिये युक्त ढोलिया उपर विराजमान थया हता. सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां. अने कंठमां गुलाबना पुष्पना हार, तोरा अने गुच्छ धारण कर्या हता. ललाटने विषे कंकुनो चांदलो कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

प्रश्नः–पछी गाम पींपळीना व्यास शीवलाले महाराजने हाथ जोडीने एक प्रश्न पूछ्युं जे "हे महाराज! जेने प्रगट भगवानना स्वरूपनो अडग निश्चय होय अने तेनुं भजन करतो होय अने पोताने आत्मारूप मानता होय अने पंचविषयनी वासना टळी गइ होय तेने फरीने जन्म धरवो पडे के न धरवो पडे? ते कहो."

पछी महाराज बोल्या जे "तेने तो जन्म धरवो पडे नहीं. जेम बीजने अग्निमां शेक्युं होय ते बीज पाछुं उगे नहीं, तेम बीजरूप जे वासना तेने आत्मा अने प्रत्यक्ष परमात्माना स्वरुपना ज्ञान रूपी अग्निए करीने जेनी वासना शेकाइ गइ होय, कहेतां जेने ज्ञाने करीने वासना टळी गइ होय तेने पाछो फरीने जन्म धरवो पडे नहीं, अने जेने वासना होय तेने जन्म धरवो पडे छे. ए तमारा प्रश्ननो उत्तर छे."

पछी वळी महाराज बोल्या जे "जेने प्रत्यक्ष भगवान मल्या होय अने ते भगवानने भगवान जाणतो होय अने तेनुं ज्ञान सांभळीने एम समजतो होय जे 'देह तथा देह संबंधी पदार्थ ते पण सर्वे मिथ्या छे. अने देह थकी नोखो एवो जे आत्मा अने आत्माने विषे रह्या एवा जे

परमात्मा ते सत्य छे, अने तेमां जे आत्मा छे ते मारुं स्वरूप छे, अने आत्माना साचा हितकारी एवा जे परमात्मा ते मने प्रत्यक्ष मल्या छे.' एम समजतो होय तो पण तेने प्रमाद् रही जाय छे.

हवे प्रमाद् ते शुं ? तो करवानुं न करवुं अने न करवानुं करवुं, तेनुं नाम प्रमाद् कहेवाय छे. ते करवानुं शुं छे? अने न करवानुं शुं छे? तो भगवान अने भगवानना संतनी मन, कर्म, वचने देहे करीने अखंड सेवा करवी ए मनुष्यदेहे करीने अवश्य जरूर करवानुं छे, अने *भगवान अने भगवानना संतनी सेवा विना बीजी जे जे क्रिया थाय* छे, ते सर्वे न करवानुं छे.

माटे केटलाक हरिभक्त छे ते एम जाणे छे जे आत्मा अने परमात्मा ते सत्य छे. अने देह अने देहना संबंधी जे पदार्थ छे ते मिथ्या छे. तो पण तेने प्रमाद् रूपी दोषे करीने असत्यनो त्याग करीने सत्य एवा जे आत्मा अने परमात्मा तेमां जोडावातुं नथी, अने रात दहाडो संसारमां अने संसारमां कुटाणा करे छे. अने वेठे वेळु दळ्या करे छे. केमके कोटान कोटी युग थया जीव मात्र जे ते संसार करता आवे छे, अने तेने विषे गर्भवास, जन्म अने मृत्युना महा कष्टने भोगवता आवे छे, तो पण तेनो पार आव्यो नथी, अने तेमांथी सुख पण कोइ जीवने थयुं नथी. अने कोइ दहाडे संसार भोगव्याथी सुख थाय एम पण नथी. अने प्रत्यक्ष पण एम देखाय छे जे राजा, रंक, शेठ, शाहुकार सर्वे ठाला आव्या छे अने भूला चाल्या जाय छे. पण कोइ कांइ भेगुं लाव्या नथी. अने कोइ कांइ भेगुं लइ जतां नथी, तो पण ते संसारनो त्याग करीने भगवाननी सेवामां रहेवातुं नथी, तेनुं नाम प्रमाद् छे. एवो महा पापरूप जे प्रमाद् तेने टाळवो ते बहु कठण छे. ए तो क्यारे टळे ? तो जेने घणाक जन्मना सुकृत होय तेने संसारनो त्याग करीने प्रत्यक्ष भगवान

अने भगवानना संतनी सेवामां रहेवाय छे. अने ज्यारे प्रत्यक्ष भगवान अने संतनी सेवामां अखंड रहे छे. त्यारे तेने प्रमादरूपी दोष टळी जाय छे.

अने प्रमादरूपी दोषनो त्याग करीने वैरागने पामीने संसारनो त्याग करीने प्रत्यक्ष भगवानना संबंधमां रह्यो होय तो पण ज्यां सुधी आत्यंतिक ज्ञान थयुं न होय त्यां सुधी तेने आळसरूपी दोष रही जाय छे. कहेतां जेम प्रमादे करीने न करवानी क्रिया रात दहाडो करतो हतो तेनो त्याग करीने तेवी ज रीते करवा योग्य जे प्रत्यक्ष भगवाननी नवधाभक्तिरूपी क्रिया तेने त्यागपणांने माने करीने शिथिलपणुं वर्ते तेनुं नाम आळसरूपी महा मोटो दोष कहेवाय, अने जेमां आळसरूपी दोष होय तेना उपर भगवान प्रसन्न थता नथी. माटे जे त्यागी थयो होय तेने आळसरूपी दोष रही जाय छे. अने ज्यां सुधी आळसरूपी दोष होय त्यां सुधी ते आत्यंतिक मोक्ष जे अक्षरधाम तेने पामे नहीं.

अने जीव मात्रने विषे चार दोष रह्या छे. ते चार दोष जेने टळे ते अक्षरधामने पामे छे. ते चार दोष कया ? (१) तो एक मोह, मोह एटले सत्यने असत्य मानवुं अने असत्यने सत्य मानवुं. (२) अने बीजो दोष महामोह छे. महामोह एटले सत्य–असत्य कोइ वातनी जेने खबर नथी. (३) अने त्रीजो दोष प्रमाद, प्रमाद एटले करवानुं न करवुं अने न करवानुं करवुं. (४) अने चोथो दोष आळस छे. आळस एटले न करवानुं तेनो त्याग कर्यो होय तो पण जे करवानुं छे ते नथी थतुं तेने आळस जाणवी.

अने जेने विषे ए चार दोष वर्तता होय ते पामर जीव कहेवाय. अने जेने पापनी के पुन्यनी खबर नथी तेनुं नाम महामोह कहीए. अने

ते महामोहने टाळवानो ए उपाय छे जे कोइ महात्मा पुरुषनो समागम करीने कर्मकांडना आस्तिक ग्रंथ सांभळवा. ते कर्मकांडमां शुं कह्युं छे? तो विधि–निषेध कह्यो छे, तथा स्वर्ग अने नरक कह्युं छे, तथा पाप अने पुन्य कह्युं छे. तेमां जे निषेध–कर्म करे छे, कहेतां न करवानुं करे छे तेने महापाप लागे छे. अने ते जीव नरकमां जाय छे, अने तेने महा दुःख भोगववा पडे छे. अने जे विधि प्रमाणे वर्ते छे, तेने महा पुन्य थाय छे. अने ते जीव स्वर्गमां जाय छे अने महा सुखने पामे छे. पछी जीव मात्रने सुख तो सारुं लागे छे अने दुःख भुंडुं लागे छे. माटे निषेध–कर्मनो त्याग करीने स्वर्गादिकना लोभ सारु विधि प्रमाणे पुन्य–कर्मने करवा मांडे, पछी तेने धर्मने विषे आस्था बेसे छे, अने ते जीवने महामोह टळे छे.

अने महामोह टळ्यो होय तो पण तेने मोह रहे छे. अने ते जीव पामर मटीने विषयी थाय छे. अने जे विषयी जीव होय तेने पंचविषयना सुख असत्य छे पण तेने विषे सत्यता रहे छे अने आत्मा अने परमात्माने विषे असत्यभाव रहे छे. अने विषयी जीव होय ते देहने ज पोतानुं रूप माने छे, तेनुं नाम मोह जाणवो. अने ते मोहने टाळवानो ए उपाय छे जे प्रत्यक्ष भगवान तथा भगवानना एकांतिक पंचविषयना त्यागी संत तेना मुख थकी ज्ञानकांडनुं श्रवण करवुं, कहेतां सांख्यशास्त्रने ज्ञाने करीने देह आत्मानो विवेक जाणीने पींड, ब्रह्मांड आदिक प्रकृतिनुं कार्य सर्वे मिथ्या जाणीने ते सर्वेनो धारण करनारो जे आत्मा ते सत्य छे एम समजीने आत्मारूपे वर्ते कहेतां निर्वासनिकपणे वर्ते तेने मोह टळे छे. अने ज्यारे मोह टळे छे त्यारे ते जीव विषयी मटीने मुमुक्षु थाय छे.

अने मुमुक्षु थयो होय तो पण तेने प्रमाद रहे छे. अने ते प्रमादने टाळवानो ए उपाय छे जे प्रत्यक्ष भगवान अने भगवानना संत तेने

शरणे जइने तेना मुख थकी चार प्रकारना प्रलयनो विचार सांभळीने पींड, ब्रह्मांडादिकने असत्य अने दुःखरूप अने पापरूप जाणीने ते थकी वैरागने पामीने तेनो त्याग करे त्यारे तेने प्रमादरूपी दोष टळी जाय छे अने जेने प्रमाद टळे छे ते मुमुक्षु मटीने मुक्त थाय छे.

अने जे जीव मुक्त थयो ते जे ते देहना सुख संबंधी सर्वे क्रिया थकी उदास थाय छे. पण ते जेम पोताना देहना सुख संबंधी क्रियामां उदास थयो तेम तेने भगवान अने भगवानना संतनी सेवाने विषे पण उदासपणुं रहे छे. ते उदासपणुं शाने करीने रहे छे? तो आळसरूपी दोषे करीने रहे छे. ते आळसरूपी जे महादोष ते क्यारे टळे? तो जेने आत्यंतिक ज्ञाने करीने आळस टळी गइ होय एवा जे एकांतिक संत तेनो समागम करीने ते थकी भगवान अने भगवानना संतनी सेवानो अलौकिक महिमा अने तेनो जे अपरिमित लाभ तेने समजे अने आत्यंतिक ज्ञान पामीने पोताना आत्माने अक्षरब्रह्म जाणीने ए अक्षरना आधार एवा जे परब्रह्म पुरुषोत्तम भगवान 'ते मने प्रत्यक्ष मल्या छे' एम समजीने तेना स्वरूपनो उत्तम निर्विकल्प निश्चय थाय त्यारे तेने आळसरूपी दोष टळे छे. अने तेनी उपर भगवान अत्यंत प्रसन्न थाय छे, अने ते आत्यंतिक मोक्षने पामे छे.

हवे एवा जे चार दोष ते क्यारे टळे छे? तो आत्यंतिक मोक्षना दाता एवा जे सर्वे अवतारना अवतारी परब्रह्म पुरुषोत्तम भगवान ते प्रत्यक्ष मळे तथा भगवानना संत मळे अने ते भगवान अने संतनो दृढ आशरो करे तो तेना दोष सर्वे टळी जाय छे. माटे ते सर्वे दोष टाळवानो समो आज तमारे सर्वेने आव्यो छे ते तमारा मोटा भाग्य छे."

इति श्री मुक्तसिद्धांत १०९ समास ॥

११० विषय :—आने आ देहे आत्यंतिक मोक्ष

श्री हरिकृष्णाय नमोनमः—संवत् १९१९ ना कारतक सुद १० ने दिवस महाराज श्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्री पींपळी मध्ये सोनी लाला मनजीने घेर उत्तरादे घारना ओरडानी ओशरीमां गादी तकिये युक्त ढोलिया उपर विराजमान थया हता. सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पुष्पना आभूषण सर्वे अंगमां शोभी रह्या हता. अने कंकुनो चांदलो कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणांक हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी महाराज कृपा करीने पोताना आश्रित जे सर्वे भक्तजन ते प्रत्ये बोल्या जे "जेने आने देहे करीने आत्यंतिक मोक्ष पामवो होय तेने अमारो दृढ आशरो करीने पंचविषयनो त्याग करवो. अने ते विषय त्याग करवामां कठण पडे तो पण सहनशक्ति राखीने प्रथम तो बळात्कारे देहे करीने पंचविषय भोगववा ज नहीं. अने एवी रीते सहनशक्ति राखीने जे विषयनो त्याग करे छे तेनी उपर भगवाननी कृपा थाय छे. अने पछी तेने भगवाननी कृपाए करीने पंचविषयनो अंतरमांथी अतिशय अभाव थइ जाय छे. अने तेने पछी विषय ग्रहण करवा पण घणां कठण पडे छे. जेम अफीणनुं बंधाण करे त्यारे प्रथम तो कठण पडे. अने पछी तो अफीण विना घडीक पण चाले नहीं. तेम प्रथम तो विषयनो त्याग करे त्यारे कठण जेवुं जणाय पण पछी तो विषयनो त्याग करवो एज तेने परम सुख जणाय अने विषयने भोगववा एज तेने महा दुःख जणाय छे.

जेम वढीयारा गोधलाने प्रथम एना टोळामांथी नोखो पाडे त्यारे तेने बहु वसमु लागे छे अने तेना टोळाना गोधला विना वांघरडा

नाख्या करे अने लीलीचार, गोळ अने कपासीया खवरावे पण तेने मोढा-मां घाले नहीं. अने तेनो धणी होय तेने पण गांठे नहीं अने भडक्या करे. पछी ते सहन करीने थोडा दिवस रहे तो तेने गोठी जाय अने जीव धरफे अने पछी खड, खांण पण खावा मांडे. अने तेना धणीथी प्रथम तो भडकीने नाशी जतो हतो पण पछी तो तेने वांसे फरतो फरे. अने आगळना पोताना टोळाना वाछरडाने संभारे पण नहीं. अने तेना संगने तो पछी महादुःखरूप जाणे. तेम जीवने प्रथम तो पंचविषयनो त्याग करीने संतना समागममां रहेवुं पडे ते कठण जेवुं जणाय छे, पण जो ते सहनशक्ति राखीने समागममां पड्यो रहे तो तेने दिवसे दिवसे अंतरमां आनंद उपजतो जाय. अने तेने विषयने विषे दुःख, दोष, देखातां जाय. अने पछी ज्यारे तेमां दुःख अने दोष जणाया त्यारे तो तेने पंचविषय दीठा पण गमे नहीं. अने एने तो पंचविषयनो त्याग करीने संतना समागममां रहेवुं तेने ज परम आनंद माने छे.

माटे विषयनो त्याग करवो तेमां प्रथम तो कठण जेवुं जणाय खरुं, पण पछी तेने महासुख अने शांति थाय छे अने अद्‌भुत आनंदने पामे छे. पण जो प्रथम सहनशक्ति राखीने वळात्कारे विषयनो त्याग करे त्यारे सुख पामे. जेम आलोकमां कोइने सुख पामवुं होय तो ते पण प्रथम दाखडो करे छे त्यारे तेने ते सुख मळे छे. पण दाखडो कर्या विना तो मायिक सुख पण मळतुं नथी तो अलौकिक अने अविनाशी एवुं जे माया पर सुख ते दाखडा विना क्यां मळे एम छे ?

अने पूर्वे पण जेने जेने देहना सुखनो त्याग करीने भगवानने पामवा सारु महा तप कर्यां छे अने देहना दमन कर्यां छे तेनी उपर ज भगवान प्रसन्न थया छे. पण ते विना वगर दाखडे कोइनी उपर भगवान प्रसन्न थया नथी. ते पण निष्कुलानंद स्वामीना कीर्तनमां कह्युं छे

जे–'तन सुख च्हाय राम रीजाय, ए तो वात है दूर, बंदे क्युं पाये घर दूर.' माटे देहना सुखनो त्याग करे त्यारे ज तेना उपर भगवान राजी थाय छे. पण पंचविषयनी कामनारूपी वासना तेनो त्याग कर्या विना भगवान राजी थाय नहीं. ते पण तुलसीदासे कह्युं छे जे–

काम त्यां राम नहीं, राम त्यां नहीं काम;
तुलसी रवि रजनी, दोनुं नहीं एक ठाम.

माटे एवी रीते पंचविषयनो त्याग कर्या विना भगवानना पदने पमातुं नथी. ते सारु सहनशक्ति राखीने पंचविषयनो त्याग करीने संत-समागममां अखंड रहेवुं. अने ते संतने समागमे करीने जीवने ज्ञान थाय छे. अने ज्ञाने करीने भगवानना धामने पमाय छे."

इति श्री मुखसिद्धांत ११० समाप्त ॥

१११ विषय :—परतंत्रतामां सुख अने स्वतंत्रतामां दुःख

श्रीहरिकृष्णाय नमो नमः–संवत् १९१९ ना कारतक सुद ११ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री पींपळी मध्ये व्यास चतुर हीरजीने घेर उगमणां बारना ओरडानी आगळ फळीमां ढोलिया उपर बिराजमान थया हता. सर्वे सोनेरी वस्त्र धारण कर्यां हतां. अने सर्वे अंगमां पुष्पना आभूषण शोभी रह्यां हतां. अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणांक हरिभक्तोनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी महाराज बोल्या जे "जीवने स्वतंत्रपणुं छे अने एक परतंत्रपणुं छे. तेमां जीव परतंत्र कहेतां आज्ञामां वर्ते छे ते सुखी थाय छे, कहेतां पोताना मननुं गमतुं मूकीने सत्शास्त्र अने सद्‌गुरुनां वचन प्रमाणे वर्ते छे अने धर्ममां दृढपणें रहे छे ते महा-सुखने पामे छे. अने जे सत्शास्त्र अने सद्‌गुरुनां वचननो त्याग करीने पोताना मननी खुशी प्रमाणे स्वतंत्र वर्ते छे ते तो आलोकमां अने परलोकमां महादुःखने पामे छे.

जेम धणीयातुं ढोर होय ते सुखी थाय छे अने नधणीयातुं ढोर होय ते दुःखी थाय छे. केम के नधणीया ढोरने शियाळे, उनाळे अने चोमासे टाढ, तडको, वरसाद तेनुं दुःख भोगववुं पडे छे, अने कोइना खेतरमां पडे तो ते धणीना धोका खाय छे. तेम जे मननी खुशी प्रमाणे स्वतंत्र वर्ते छे ते जीव जे ते जन्ममृत्यु, गर्भवास अने चोराशीना महा–कष्टने भोगवे छे. अने ज्यां सुधी जीव पोताना मननी खुशी प्रमाणे स्वतंत्र वर्ते छे त्यां सुधी ते जीवनुं कल्याण कोइ काळे थतुं नथी. अने जे जीव पोताना मननुं गमतुं मूकीने निर्मानी थइने प्रगट भगवान के ते भगवानना एकांतिक पंचविषयना त्यागी एवा जे साधु तेनी पासेथी वर्तमान लइने तेनी आज्ञामां वर्ते छे कहेतां भगवान अने भगवानना संत तेने आधिन वर्ते छे, तेनुं ज कल्याण थाय छे. अने ते महा–सुखने पामे छे.

अने कोइ एम कहे जे 'अमाराथी तो वर्तमान पळे नहीं.' तो तेने महा–पापी जाणवो. केम के प्रारब्धवश थइने बळदनो अवतार आवशे त्यारे केम वर्तमान पाळवा पडशे? तथा गधेडाना अवतारमां तथा ऊंटियाना अवतारमां कुंभारादिक धणीनी आज्ञा पाळवी पडशे अने महा–हेरान थवुं पडशे अने कर्मवश थइने पराधिनपणें जेम धणी कहेशे तेम वर्तवुं पडशे, तो पण जीवनुं कल्याण नहीं थाय. माटे जेने मनुष्यनो देह आव्यो छे अने ते एम कहेशे जे 'अमाराथी तो वर्तमान पळे नहीं.' तेने महापापी जाणवो. अने तेने तो आसुरी जाणवो. अने जे दैवी जीव होय ते तो वर्तमाननी ना पाडे ज नहीं अने वळी जे दैवी जीव होय ते धर्म तो पाळता ज होय तो पण ते महात्मा पुरुष पासेथी राजी थइने वर्तमान ले छे, अने ते जीवनुं कल्याण थाय छे.

–अने जे महात्मा पुरुष वर्तमान लेवरावे छे तेमां कांइ तेमने स्वार्थ नथी. अने ए तो केवळ परोपकार माटे उपदेश आपे छे, केम के चोरी, छिनाळी, दारू, माटी, वटलवुं, वटलाववुं तेनो त्याग करावे छे तेमां महात्मा–पुरुषने शो स्वार्थ छे ? ए तो केवळ परमार्थ माटे दाखडा करीने अधर्म थकी मुकावे छे. माटे जेने पोताना आत्मानुं रूडुं करवानी इच्छा होय तेने तो सत्पुरुषनो उपकार मानीने पोताना मननुं गमतुं मूकीने सत्पुरुषनी आज्ञामां मन, कर्म, वचने वर्तवुं. एज जीवनी अतिशय हितवार्ता छे."

इति श्री मुखसिद्धांत १११ समाप्त ।

---

११२ विषयः—यज्ञ करवाथी वासना टळे छे

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः–संवत् १९१९ना कारतक सुद १२ने दिवस महाराज श्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्री पींपळी मध्ये व्यास पुरुषोत्तम बोघाना घेर ओरडानी ओशरीमां गादी तकीया नखावीने ढोलिया उपर विराजमान थया हता. सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने सर्वे अंगने विषे पुष्पना आभूषण शोभी रह्या हता. ललाटने विषे कुंकनो चांदलो कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणांक हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

प्रश्न :–पछी गाम पींपळीना व्यास देवकरशन वैदे महाराजने प्रश्न पूछ्युं जे "हे महाराज ! पंचविषयनी वासना टाळ्यानो शो उपाय छे ? ते कहो." पछी महाराज बोल्या जे "वासना टाळवानो मुख्य उपाय तो ए छे जे प्रथम तो आत्माना कल्याणने अर्थे निष्कामभावे करीने भगवान अने भगवानना संतनो दृढ आशरो करवो अने जेने वासना टळी गइ होय एवा जे भगवानना एकांतिक संत तेनो मन, कर्म, वचने

समागम करवो. अने संतना समागममां रहीने यज्ञ करवा. अने यज्ञने विषे वासनारूपी बीजने होमी देवुं. एवी रीते यज्ञ करवा थकी वासना टळी जाय छे.

जेम झाडना बीजने अग्निमां शेकीने वावे तो ते बीज उगे नहीं, तेम यज्ञरूपी अग्निने विषे वासनारूपी बीजने बाळी नाखे तो तेने वासनारूपी बीजमांथी उपन्युं जे पिंड-ब्रह्मांड तेनी सत्यतारूपी झाडनो नाश थइ जाय छे. माटे वासना टाळवी होय तेने यज्ञ जरूर करवा. तेमां यज्ञ बे प्रकारना छे, एक बहार-यज्ञ छे अने बीजो आभ्यंतर-यज्ञ छे. तेमां देहे करीने अधर्म-अनीतिनो त्याग करीने भगवान अने भगवानना निर्वासनिक संत तेनी सेवा करवी, तेने जमाडवा, तथा वस्त्र ओढाडवां, जळ पावुं अने पत्र, फळ, फूल आदिक जे जे पदार्थ अर्पण करवुं ते सर्वे बहार-यज्ञ छे. अने इन्द्रियो-अंतःकरणनी वृत्तियोने पंचविषयना पदार्थमांथी पाछी वाळीने भगवानना स्वरूपमां जोडी देवी, तथा सांख्य-विचारे करीने देह-आत्मानो विवेक करवो, तथा भगवाननी कथा, कीर्तन, भजन, स्मरण, ध्यान, पूजन, जप, तप, व्रतादिक जे जे करवुं ते आभ्यंतर-यज्ञ छे.

—अने एवी रीते निष्कामभावे यज्ञ करता करता पोतानुं स्वरूप जे आत्मा ते साक्षात्कार देखाय छे. अने आत्माने विषे रह्या एवा जे परमात्मा भगवान प्रगट थइने साक्षात्कार दर्शन आपे छे. अने तेने भगवानना स्वरूपनो उत्तम निर्विकल्प निश्चय थाय छे. त्यारे तेनी वासनाना बीज बळी जाय छे. माटे आ कह्या एवा जे यज्ञ ते कर्या थकी वासना टळी जाय छे. ते सारु जेने वासना टाळवी होय तेने यज्ञ जरूर करवा. अने यज्ञ कर्या विना वासना टळे नहीं अने वासना टळ्या विना जीवनुं कल्याण

थाय नहीं. ते सारु भगवान अने भगवानना संतनो दृढ आशरो करीने यज्ञ करवा. एज वासना टाळवानो उपाय छे."

इति श्रीमुख सिद्धांत ११२ समाप्त ।



११३ विषय :—तेत्रीस करोड देवता, नव नाथ अने चोराशी सिद्ध विषे

श्री हरिकृष्णाय नमोनमः—संवत् १९१९ ना कारतक वद् २ ने दिवस महाराजश्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्री पींपळी मध्ये शाह देवशी मेराजने घेर उगमणे वार ओरडानी ओसरीमां गादी तकिये युक्त ढोलीया उपर बिराजमान थया हता. सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पुष्पना हार कंठमां शोभी रह्यां हतां. अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

प्रश्नः—पछी विरजी भक्ते महाराजने प्रश्न पूछ्युं जे "हे महाराज! आ तेत्रीस करोड देवता थया छे ते शुं पुन्ये करीने थया हशे? अने नव नाथ अने चोराशी सिद्ध थया छे ते शुं साधने करीने थया हशे? अने तमारी भक्ति करे छे तेने शुं प्राप्त थशे? ते कहो."

पछी महाराज बोल्या जे "सांभळो एनो उत्तर करीए छीएं जे तेत्रीस करोड देवता थया छे ते तो सकामभाव राखीने धर्म, अर्थ अने कामरूप फळने पामवा सारु अधर्म—अनीतिनो त्याग करीने भगवाननी उपासना करी छे, तेने करीने तेत्रीस करोड देवता थया छे. अने नव-नाथ अने चोराशी सिद्ध थया छे ते तो निष्कामभाव राखीने धर्म, अर्थ, कामरूप फळ तेनो त्याग करीने प्रत्यक्ष एवा जे ऋषभदेव भगवान तेनी भक्ति अने उपासना करी छे, तेने करीने नव नाथ अने चोराशी सिद्ध थया छे. अने अमारी भक्ति करे छे तेने एवी प्राप्ति थाय छे जे अमारो

आशरो करीने जे अमारुं भजन करे छे तेने वेद वेदांतादिक सर्व शास्त्रनो सार एवुं जे आत्यंतिक ज्ञान तेने आपीने ब्रह्मरूप करीने अक्षरधामने पमाडीए छीए.

ते आत्यंतिक ज्ञाननुं शुं रूप छे? तो धर्म, ज्ञान, वैराग अने माहात्म्ये सहित प्रत्यक्ष भगवाननी भक्ति सिद्ध थाय तेनुं नाम आत्यंतिक ज्ञान छे. तेमां धर्म ते शुं? तो श्रुति–स्मृतिमां कह्या जे वर्णाश्रमना धर्म ते प्रमाणे दृढपणें वर्तवुं अने इन्द्रियो-अंतःकरणनी वृत्तियोने विषय थकी पाछी वाळीने भगवाननी नवधाभक्तिने विषे जोडी देवी, तेनुं नाम धर्म कहेवाय. अने ज्ञाननुं शुं रूप छे? तो जे जड-चैतन्य तेनो विवेक करवो, कहेतां जड एवी जे माया ते थकी थयो जे चोविस तत्त्वनो देह तेने मिथ्या जाणीने ते देहने विषे रह्यो एवो जे चैतन्य आत्मा तेने पोतानुं स्वरूप जाणवुं. अने आत्मारूप थइने सुखदुःख, मानअपमान हाणवृद्धि आदिक जे देहना भाव तेने असत्य जाणीने अखंड-अविनाशी एवो जे ब्रह्मरूप आत्मा तेने विषे दृढ स्थिति पामवुं, तेनुं नाम ज्ञान कहीए.

अने वैरागनुं रूप ए छे जे प्रकृतिपुरुष थकी उत्पन्न थयुं जे पिंड-ब्रह्मांडादिक सर्वे पदार्थ तेने नित्य, निमित्त, प्राकृत अने आत्यंतिक ए चार प्रकारना प्रलये करीने नाश पमाडीने तेने दुःखरूप अने पाप-रूप जाणीने तेनी अंतरमां अत्यंत अरुचि करीने पोते केवळ आत्मारूप थइने भगवानने विषे अत्यंत प्रीति करवी. तेने वैराग जाणवो.

अने भक्तिनुं रूप ए छे जे चौद लोकनुं एक ब्रह्मांड छे, एवां एवां अनंत कोटी ब्रह्मांड तेनी उत्पत्ति, स्थिति अने प्रलय ते थाय छे जे थकी एवो एक प्रकृतिपुरुष छे अने एवा अनंत कोटी प्रकृतिपुरुष ते अक्षरब्रह्मना एक रोमना खाडाने विषे लीन थइ जाय छे. अने एवुं

जे अक्षरब्रह्म तेना साधर्म्यपणांने पाम्या एवा जे अनंत कोटी अक्षररूप मुक्त छे, ते सर्वे मुक्तना स्वामी अने आधार अने सर्वे मुक्तने सुखना आपनारा एवा जे परब्रह्म पुरुषोत्तम भगवान दिव्यमूर्ति ते कृपा करीने जीवोना कल्याण करवाने अर्थे पृथ्वी उपर पधारे छे अने मनुष्याकृतिनुं धारण करे छे,—'ते भगवान आज मने प्रत्यक्ष मल्या छे,' एम जाणीने तेने विषे अत्यंत स्नेहे करीने जोडाइ जवुं, तेनुं नाम माहात्म्ये सहित भक्ति छे. अने तेने आत्यंतिक ज्ञान पण कहेवाय छे.

अने एवी रीतना ज्ञाननी प्रवृत्ति छे ते प्रमाणे समजीने जे अमारी भक्ति करे छे तेने अक्षरधामनी प्राप्ति थाय छे. अने जे सकामभाव राखीने धर्ममां रहीने जे अमारी भक्ति करता हशे ते देवादिक लोकने पामशे. अने देवमांथी पाछा मनुष्य थइने ज्ञानने पामीने निर्वासनिक थइने पण अंते तो अक्षरधामने पामशे. अने जे अमारी पासे आवीने ताळीयो पाडता हशे पण जो ते धर्म थकी भ्रष्ट हशे तो ते यमपुरीमां जशे. अने धर्ममां रहीने जे अमारी भक्ति करे छे तेने अक्षरधामनी प्राप्ति थशे."

इति श्री मुखसिद्धांत ११३ समाप्त ॥

---

११४ विषयः—भगवाननां मनुष्यचरित्र

श्री हरिकृष्णाय नमोनमः—संवत् १९१९ना कारतक वद ६ ने दिवस महाराज श्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्री पींपळी मध्ये शाह देवजी मुळजीने घेर उगमणें चार ओरडानी ओसरीमां गादीतकिया नखावीने ढोलिया उपर विराजमान थया हता. सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां. अने सर्वे अंगने विषे पुष्पना आभूषण शोभी रह्या हता. ललाटने

विषे कंकुनो चांदलो कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

प्रश्नः–पछी महाराजे साधुने एक प्रश्न पूछ्युं जे "भगवान छे ते तो पूरणकाम छे, अखंडानंद छे अने सर्वेने सुखना दाता छे, पण भगवानने बीजो कोइ सुख आपे एम नथी, भगवान तो पोते पोताने सुखे करीने ज महा सुखिया छे अने बीजा अनंतने पोते सुखिया करे छे. अने भगवानने कोइ वस्तु जोइती नथी, एवा भगवान छे. तो पण सर्वे शास्त्र तथा सर्वे जे जे महात्मा–पुरुष छे ते एम कहे छे जे 'भगवानने तन, मन, धन अर्पण करो तो तमारुं सारुं थाय.' अने वळी जे जे आपे छे तेनुं भगवान लीये पण छे. अने पोते भगवान पण एम कहे छे जे 'तमारुं सर्वस्व जे जे होय ते मने अर्पण करो.' अने शास्त्रमां पण एम कह्युं छे जे 'दान, पुन्य, व्रत, तप, यज्ञ जे जे करवुं ते सर्वे कृष्णार्पण करवुं.' अने ब्राह्मण तथा साधु ते पण सर्वेने एम उपदेश आपे छे जे 'भगवानने अर्थे आपो तो तमारुं सारुं थाय.' एवी रीते सर्वेनुं भगवान ग्रहण करे छे. त्यारे तो एम जोतां भगवान भूख्या ठर्या, अने सौ करतां तृष्णावाळा भगवान कहेवाय. माटे तेनुं केम हशे? ते कहो."

पछी धर्मानंद स्वामी तथा अक्षरमुक्तानंद स्वामीए उत्तर करवा मांड्यो पण थयो नहीं एटले महाराज बोल्या जे "सांभळो अमे एनो उत्तर करीए जे भगवान तो भूख्या नथी अने तृष्णावाळा पण नथी; भगवान तो पूरण काम छे. अने जे जीव छे ते अपूर्ण छे. माटे ए अपूर्ण एवा जीवोने पूरण करवा सारु पुरणकाम एवा जे प्रत्यक्ष भगवान ते जीवोनी पेठे अपूर्ण जेवा सजाति थइने ते जीवोनी सेवाने ग्रहण करे छे. अने ते प्रत्यक्ष भगवाननी सेवाए करीने अपूर्ण एवा जे जीवो ते पूरणकाम थाय छे. केमके भगवान छे ते जीव मात्रना आदिक कारण छे.

अने भगवान सर्वे जीवना जीवन छे. माटे भगवानने जे जे आपे छे ते आपनारो पोते ज पामे छे.

जेम वृक्षना मूळमां पाणी रेडे तो ते पाणी वृक्षनी डाळे डाळे अने पांदडे पांदडे चडी जाय छे अने ते वृक्ष वृद्धिने पामे छे. तेम वृक्ष रूप जे जीवो तेना मूळ रूप भगवान छे. ते भगवानने जीव जे ते भावे करीने जे जे अर्पण करे छे ते अर्पणनो करनारो जीव पोते ज ते सुखने पामे छे अने ते जीव महा सुखियो थाय छे. वळी जेम खेडूत खेतरमां बीज वावे छे. ते वावनारो खेडूत जे ते एक दाणाना हजारगणा दाणा पामे छे अने तेमां खेतरने कांइ लेवुं देवुं नथी. अने जे जे खरी महेनतथी खेतरमां वावे छे तेने नीपज आवे छे. तेम शुद्धभावे करीने जे जे जीव भगवान अने संतनी सेवा करे छे, तथा जे जे अर्पण करे छे ते जे ते अर्पणनो करनारो अने सेवानो करनारो पोतेज सुखने पामे छे, अने भगवानने तो तेमां लेवा देवा नथी. अने भगवान जे जे ग्रहण करे छे ते तो केवळ दयाए करीने ग्रहण करे छे.

जेम मोटो चक्रवर्ती राजा होय तेने कोइक गरीब शुद्धभावे करीने जमवानुं नोतरुं आपे त्यारे तेने घेर महेर करीने राजा जमवा जाय, अने ते रांकने घेर तो जारना ढोकळां कर्या होय तेने जमे. ते शुं राजा कांइ जारना ढोकळांनो भूख्यो हतो ते जमवा गयो ? ते तो पोताने घेर भारे भारे मेवा हता तेने मेलीने रांकने घेर गयो, माटे राजा भूख्यो तो न हतो. पण ते रांक उपर महेरबानी करीने ते रांकने घेर राजा जमवा जाय छे. अने ते राजाने जारना ढोकळां भावे एम तो नथी तो पण ते रांकनो भाव जोइने तेने मोज आपवा सारु अने तेने सुखियो करवा सारु रांकना ढोकळां जमे छे.

तेम भगवान तो अनंत कोटी ब्रह्मांडना राजाधिराज छे, अने लक्ष्मीना स्वामी छे अने सुखना तो सागर छे, एवा जे भगवान तेने पोताना सुखमांथी एक सळी भरीने सुख प्रकृतिपुरुषने आप्युं छे. ते सुखे करीने प्रकृति पुरुष जे ते अनंत कोटी ब्रह्मांड उपजाववानी शक्तिने पाम्यो छे. अने ते ब्रह्मांड ब्रह्मांड प्रत्ये प्रधानपुरुष, महत्तत्त्व, वैराजपुरुष, तथा ब्रह्मा, विष्णु अने शीव, तथा इन्द्रादिक देव, ऋषि, गांधर्व, राजा, रंक, पशु, पक्षी, आदिक सर्वे भगवानना सुखमांथी जे ते एक सळी भरीने टींपु नाख्युं तेने करीने सुखिया थया छे. अने ते सुख पण अपार जेवुं जणाय छे, तो भगवानना सुखनो तो पार केम आवे? अने भगवानना धामनुं जे सुख छे तेनी आगळ देवादिकना सुखने तो नरक जेवुं कह्युं छे. माटे देवादिकना सुखने नरक जेवुं कह्युं त्यारे मनुष्यना सुखनी तो गणतरी ज शी? एतो भगवानना सुख आगळ कांइ ज नहीं.

एवा जे भगवान ते तो केवळ जीवोना उपर दया करीने सेवानुं ग्रहण करे छे. तथा जे जे अर्पण करे छे तेने दया करीने ग्रहण करे छे अने ते जीवने जे जे इच्छा होय ते ते सुखने पमाडे छे. तेमां जे निष्कामभावे सेवा–भक्ति करे छे तेने तो भगवान जे ते पोताना अक्षरधामने पमाडे छे.अने जे सकामी छे तेने जे जे इच्छा होय ते ते आपे छे. अने एवा जे भगवान ते जे ते सर्वेनी सेवाने ग्रहण करता थका पण कोइमां बंधाता नथी. अने निर्लेप रहे छे.जेम राजा जे ते रांकना जारना ढोकळामां सुख मानीने बंधाय नहीं अनेए तो रांक उपर दया करीने जमवा जाय छे, तेम भगवान जे ते राजा, देव, ब्रह्मा अने प्रकृतिपुरुषना सुख तेने जारना ढोकळां तुल्य देखे छे. माटे केवळ दयाए करीने जीवोनी सेवानुं ग्रहण करे छे. अने ते जीवोनी सेवाने ग्रहण करीने तेने ज सुखिया करे छे. ते सारु जेने महासुखिया थवुं होय तेने शुद्धभावे करीने अति

दीन थइने तन, मन, धनथी भगवाननी सेवा करवी तो ते जीव महासुखने पामशे. अने पूर्वे पण जेणे जेणे भगवाननी सेवा करी छे ते ज महासुखने पाम्या छे. माटे भगवानने जे जे अर्पण करशे ते ज सुखिया थशे अने जे भगवानने अर्पण नहीं करे ते कोइ काळे सुखिया थवाना नथी.

जेम शरीरमां हाथ, पगादिक इन्द्रियो छे ते जे कामकाज करीने रळीने पेटने खवडावे छे, अने पेट तो कांइ कामकाज करे नहीं अने बेठुं बेठुं खाय. त्यारे हाथ, पग आदिके विचार कर्यो जे 'पेट तो कांइ कामकाज करे नहीं अने बेठुं बेठुं खाय छे. माटे आज आपणे पेटने खावा आपवुं नहीं.' पछी पेटने खावा न आप्युं. अने ज्यां बपोर थया त्यारे तो हाथ-पग ढीला पडवा लाग्या, अने सांज पडी त्यारे हाथ-पगमांथी चेतन जतुं रह्युं. त्यारे हाथ-पगे कह्युं जे 'पेटभाइ अमने ते शुं थयुं?' त्यारे पेटे कह्युं जे ' शुं थयुं ते शुं ? मने तमे खावा आप्युं नहीं तेणे करीने तमने दुःख थयुं छे. माटे मने जे तमे खावा आपो छो ते तो तमारा सुख सारु आपो छो. केमके मने जे जे खावा आपो छो तेनो रस सर्वे हाथ-पगादिक इन्द्रियोमां नोखो नोखो चडी जाय छे तेने करीने तमे ज सुखिया थाओ छो, तेमां मारे लेवुं देवुं नथी.'

तेम ए तो दृष्टांत अने एनुं सिद्धांत ए छे जे भगवानने जीव जे जे अर्पण करे छे ते अर्पणनो करनारो पोते ज सुखने पामे छे. तेमां जेटलुं जे जीव भगवानने अर्पण करे छे तेटलुं ते सुख पामे छे. अने जेटलुं जीव लोभे करीने पोते राखे छे तेटलुं तेने दुःख रहे छे. केमके जे जे आपे छे ते दुःख ज आपे छे अने दुःखने साटे भगवान तेने सुख आपे छे. अने जेटलुं जे राखे छे तेटलुं तेने दुःख रहे छे.

त्यारे कोइ कहेशे जे दुःख शुं करवा राखता हशे ? तो ज्यां सुधी

जीवने अज्ञान छे त्यां सुधी जीव दुःखने राखे छे. जेम बाळक होय ते सोमलखारने मोढामां नाखे त्यारे तेना मावतर तेने कहे जे 'मोढामांथी तेने काढी नाख, नहींतर मरी जइश.' एम कहे तो पण ते सोमलखारने मोढामांथी काढी नाखे नहीं. केम के तेने मूआनी खबर नथी. पछी तेनी मा होय ते तेने फोसलावीने एम कहे जे 'सोमलखार तुं मने आप तो हुं तने दूध अने साकर खवडावुं.' पछी ते बाळक वधाय सोमलखारने मोढामांथी काढीने तेनी माने आपी दे तो ते जीवतो रहे अने दूध अने साकर खाय अने सुखने पामे. अने जो अणसमजणे करीने जेटलो सोमलखार पोताना मोढामां राखे तो तेटलुं तेने दुःख थाय छे.

तेम सोमलखाररूप जगतना पंचविषय छे, ते जगतना विषयने बाळक जेवा जे अज्ञानी जीव छे ते वासनाए करीने पंचविषयने भोगवे छे. अने ते विषयने भोगववे करीने जन्म-मृत्यु, गर्भवास अने चोरासीमां महादुःखने भोगवे छे. ते दुःखने भगवान जाणे छे. पण जीव जाणतो नथी. जेम सोमलखारमां दुःख छे तेने बाळक जाणे नहीं अने सुख जाणीने खाय, तेम अज्ञानी जीव पंचविषयमां दुःख छे तेने जाणता नथी अने सुख जाणीने विषयने भोगवे छे. ते पंचविषयने मावतररूप भगवान अने भगवानना संत ते मुकावे छे, तो पण तेने बाळक जेवो जे अज्ञानी जीव छे ते हलाहल विषरूप पंचविषय तेनो त्याग करता नथी.

—पछी ते अज्ञानी जीवोने देवादिकना सुखनो लोभ देखाडीने विषयनो त्याग करावे छे. ते जीवोए पंचविषयना पदार्थमां माल मान्यो छे माटे ज्यां त्यां तो नाखी दीए नहीं. ते सारु तेने भगवान अने संत जे ते एम लोभ देखाडे छे जे 'जो तुं भगवानने अर्पण करे तो तेमांथी तने भगवान महासुख आपशे.' पछी जेटलुं भगवानने अर्पण करे छे तेटलुं तेने सुख थाय छे. अने जेटलुं जे अज्ञाने करीने पासे राखे छे तेटलुं तेने

दुःख रहे छे. अने जे पोतानुं सर्वस्व तन, मन, धन भगवानने अर्पण करे छे ते जीव जे ते निर्वासनिक थइने ब्रह्मरूप थइने भगवानना अक्षर-धामने पामे छे अने जेटली जेने वासना रहे छे तेटलुं तेने जन्ममृत्यु रूपी महादुःख रहे छे. माटे भगवान अनेभगवानना निर्वासनिक संत तेने जे जे अर्पण करे छे ते पोताना सुख सारु करे छे, पण भगवान अने *भगवानना संतने तेमां रंच मात्र स्वार्थ नथी.*

अने ए तो जेम बाळक पासेथी एनी मा सोमलखार मागी ले तेम भगवान जे ते केवळ दयाए करीने सर्वे जीवोनी सेवानुं ग्रहण करे छे. अने ग्रहण करता थका पण तेमां भगवान बंधाता नथी अने निर्लेप थकी वर्ते छे. जेम कमळनुं पान छे ते जळमां रह्युं थकुं जळमां लोपातुं नथी, तेम भगवान छे ते पण मनुष्याकृतिनुं धारण करीने सर्वे मनुष्यनी सेवानुं ग्रहण करता थका पण निर्लेप रहे छे. अने देवमां भगवान देहनुं धारण करे छे त्यारे सर्वे देवनी सेवाने ग्रहण करता थका पण तेनी पर वर्ते छे.

—अने बीजा जीवो जो भगवाननो वाद लइने सेवा करावे अथवा कोइनुं कांइक पदार्थ ग्रहण करे तो ते सेवानो करावनारो अथवा पदार्थनुं ग्रहण करनारो पुरुष जे ते तेमां लोभाइने भ्रष्ट थइ जाय छे. ते भले सुझे एवो मोटो देव, ब्रह्मादिक जेवा होय तो पण ते पंचविषयनुं ग्रहण करीने उगरवाने कोइ समर्थ नथी. जेम बाळकना मोढामांथी सोमल-खार काढी लइने बीजो खावा जाय तो तेना प्राण जाय, तेम ज्यां सुधी जेने पंचविषयनी वासना छे त्यां सुधी ते पंचविषयनी वासनानुं ग्रहण करवा जशे तो ते जरूर भ्रष्ट थया विना रहेशे नहीं.

माटे सेवा करवा योग्य अने सर्वे जीव मात्रने सर्वस्व अर्पण करवा

योग्य एवा तो एक भगवान ज छे. केम के एक भगवान ज कोइ विषयमां लोभाय एवा नथी. जेम बाळकनी मा छे ते बाळकना मोढामांथी सोमलखारने लइने पोते तेने नाखी दे छे, पण तेने खाती नथी, केम के तेनी मा ए सोमलखारमां मृत्यु जाण्युं छे. तेम सोमलखाररूप जे पंचविषयना पदार्थ तेने बालकरूप एवा जे अज्ञानी वासनावाळा जीव तेनी पासेथी लइने भगवान जे ते जीवने निर्वासनिक करीने महासुखने पमाडे छे. अने भगवान पोते माया पर निर्लेप थका असंगी वर्ते छे. पण पोते तेमां कांइ लोभाता नथी. माटे भगवान तो जीवो उपर कृपा करीने मनुष्य जेवा सजाति थइने सर्वे जीवोनी सेवानुं ग्रहण करे छे. अने जे जे जीव सेवा करे छे अने जे पोतानुं सर्वस्व अर्पण करे छे, ते जीव महासुखियो थाय छे माटे भगवान तो पूरणकाम अने अखंडानंद छे. अने पोते पोताने सुखे करीने ज सुखिया छे, पण बीजा जीवोने पोतानुं सुख पमाडवा सारु सर्वे जीवोनुं सर्वस्व ग्रहण करे छे माटे जेने महा सुखिया थवुं होय तेने पोतानुं तन, मन, धन आदिक सर्वस्व भगवानने अर्पण करवुं."

इति श्री मुखसिद्धांत ११४ समाप्त ।

---

११५ विषय :—श्राद्धादिक कर्म सत्य छे.

श्री हरिकृष्णाय नमोनमः—संवत् १९१९ना कारतक वद ८ ने दिवस महाराज श्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्री पींपळी मध्ये शाह त्रिकम झवेरने घेर आथमणें चार ओरडानी ओसरीमां गादीतकीये युक्त ढोलिया उपर विराजमान थया हता. सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हता अने मस्तके गुलाबी रंगनो फेंटो वांध्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणांक हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

प्रश्नः–पछी शाह देवशी मेराजे महाराजने प्रश्न पूछ्युं जे "हे महाराज! आ जगतमां मनुष्य मरी जाय छे तेनी वांसे केटलाक श्राधादिक क्रिया करे छे अने केटलाक नथी करता, माटे ते श्राधादिक क्रिया करे छे ते ए मरनाराना जीव पामतो हशे के नहीं पामतो होय ते कहो?" पछी महाराज बोल्या जे "श्राधादिक क्रिया करवी ते सत्य छे, अने ते मरनाराना जीव पण सर्वे पामे छे ते पण सत्य छे. केमके ए श्राधादिक कर्म सर्वे वेदमां कहेलुं छे अने जे वेद छे ते भगवानना मुखनी वाणी छे. माटे जे जे जीवनी वांसे वेद–विधि प्रमाणे करे छे तेना फळने भगवान पहोंचाडे छे.

केमके भगवान छे ते सर्वे जीवोना कर्म–फळना आपनारा छे. ते जे जीवना जेवा कर्म होय तेने तेवुं फळ पमाडे छे. केमके जो एम फळ आपता न होय तो दान, पुन्य, जप, तप, व्रतादिक साधन शुं करवा करे? माटे दान, पुन्यादिक जे जे करे छे तेनुं फळ मूआ केडे बीजे जन्मे जरूर भगवान पमाडे छे. ते जो न पमाडता होय तो शुं करवा करे? माटे जे जे करे छे ते ते जीव जरूर पामे छे. ते सारु सर्वेना धर्ममां जप, तप, आदिक साधन कह्यां छे. अने ते कह्या प्रमाणे जे जे करे छे तेनुं जरूर कल्याण थाय छे. माटे मूआनी वांसे पण जे जे श्राधादिक करे छे तेना फळने पण भगवान पहोंचाडवाने समर्थ छे.

जेम अंग्रेज सरकारे तार बांध्यो छे ते हजारो गाउनी वात ते जेनी जे प्रमाणे होय तेनी ते प्रमाणे एक पलवारमां तारमां पहोंचाडे छे. तेम भगवान सर्वेना अंतर्यामी छे, ते जे जीव जेवां कर्म करे छे तेने तेवुं फळ आपे छे. माटे जे जीव मरे छे तेनी वासना ज्यांथी मूओ होय त्यां रहे छे अने ते मरनारनो पण ते घरने विषे तथा धनमाल गाम-

गरासने विषे भाग छे. तथा सगां–कुटुम्बीने विषे पण तेनी वासना छे. ते सारु तेने वांसे जे जे करे छे ते ते मरनारो जरूर पामे छे.

अने जे कोइक शास्त्रमां श्राधादिकनी ना पाडी हशे ते तो एम ना पाडी हशे जे कोइक भगवाननो भक्त होय तेणे भगवानने शरणे जइने धर्म, ज्ञान, वैराग अने माहात्म्ये सहित भगवाननी भक्ति सिद्ध करीने पिंड, ब्रह्मांडादिक सर्वे पदार्थने विषेथी वासना टाळीने पोते ब्रह्मरूप थइने सिद्धदशाने पाम्यो होय अने तेनो देह पडे त्यारे तेनो आत्मा तो महा मुक्त छे माटे ते तो भगवानना अक्षरधामने पामे छे, अने तेने कांइ पामवुं वाकी रहेतुं नथी. माटे तेने अर्थे श्राधादिकनी ना पाडी छे, जे एवा मुक्त थया होय तेने कांइ पामवुं रह्युं नथी. केमके वासना-वाळा जीवने पामवानी लालच होय पण जे निर्वासनिक थयो होय तेने आलोकना सुख पामवानी इच्छा होय नहीं. अने एवो जे मुक्त होय तेने वांसे कोइ श्राधादिक कर्म करे एम पण होय नहीं. केमके ए तो वैरागने पामीने सर्वे संबंधीनो अने सर्वे धन–मालनो त्याग करीने भेख लइने बीजा जीवोना कल्याणने अर्थे पृथ्वीने विषे फरता होय, तेने कोण श्राधादिक करे ? अने तेने कराववानुं पण कांइ वाकी रह्युं नथी. माटे एवा मुक्तनी वांसे श्राधादिक करवानी ना पाडी छे.

अने जेने वासना होय तेने वांसे तो श्राधादिक जरूर करवुं. अने ए जीव पामे छे ते वात पण खरी छे. अने जे भगवान भजीने निर्वा-सनिक थयो होय तेने कांइ करवुं रह्युं नथी. माटे शास्त्रना मर्मने जाण्या विना एक कहेशे जे श्राधादिक करवुं अने एक कहेशे जे न करवुं, ते समज्या विना वादविवाद करे छे. पण श्राधादिक करवुं ते ज सत्य छे. अने एवी रीते जे जे विधि–निषेधने पाळे छे तेनुं ज कोइक दहाडे कल्याण थाय छे. अने जे विधि–निषेधने खोटा कहीने तेने पाळता

नथी ते तो महा पापी छे अने नास्तिक छे. अने तेनुं कल्याण पण कोइ काळे थतुं नथी."

इति श्री मुखसिद्धांत ११५ समाप्त ।

११६ विषयः—देह निर्वाह अने कल्याण माटे साचा मार्ग

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः—संवत् १९१९ना कारतक वद १२ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री पींपळी मध्ये व्यास भगवान वालजीने घेर उगमणें वार ओरडानी ओसरीमां हिंडोळाखाट उपर विराजमान थया हता. सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पुष्पना आभूषण सर्वे अंगने विषे शोभी रह्या हता. ललाटने विषे ककुंनो चांदलो कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ संतमंडळ तथा घणांक हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी महाराज बोल्या जे 'जीवमात्रने बे वातनो खप छे; एक तो देह निर्वाहने अर्थे द्रव्य जोइए ते द्रव्यनो मनुष्यमात्रने खप छे. अने बीजुं आत्माने जन्म-मृत्यु अने गर्भवास रूपी महाकष्ट छे तेने टाळवाने अर्थे अने आत्माना कल्याणने अर्थे जीवने भगवाननो खप छे. अने ते द्रव्यने अर्थे अने भगवानने मळवाने अर्थे उद्यम पण जीव सर्वे करे छे. पण तेमां जे रीते द्रव्य मळवानो उपाय छे ते रीते उद्यम करे तो तेनें द्रव्य मळे छे. अने ते उपायने मूकीने बीजी रीते द्रव्यनी इच्छा करे छे तेने कोइ काळे द्रव्य मळतुं नथी.

हवे ते द्रव्यने मेळववानो शो उपाय छे? तो पोताना कुळने घटित कहेतां वाणियाने वेपार करवो, खेडूतने खेड करवी, ब्राह्मणने विद्या भणीने यज्ञादिक कराववुं, क्षत्रियने पोताना गाम-गरास होय तेमांथी अथवा

पण वे त्रण पेढी थयां लाज, आवरू अने वहेवारमां सारुं अने सारुं छे. अने तमे साक्षात्कार मल्या तेथी परलोकमां पण सारुं थयुं. एम जोतां तो जणाय छे जे सारे सारुं ज थाय छे, पण हवे तमे कहो ते खरुं?"

पछी महाराज बोल्या जे "ते वात तो खरी छे. केम के प्रथम जीव ज्यारे मोक्षने मार्गे चाले छे त्यारे तेने पहेलो धर्म दृढ थाय छे अने ते धर्मे करीने अर्थ प्राप्त थाय छे. अने अर्थे करीने काम भोगवे छे कहेतां आलोकमां देह–निर्वाहनो व्यवहार ते सुखेथी तेने चालतो होय छे अने तेने ज मोक्षना दाता ते प्रत्यक्ष मळे छे. माटे धर्म, अर्थ अने कामे करीने आलोकमां पण लाज आवरू अने व्यवहारमां सारुं होय अने तेने प्रत्यक्ष ज्ञानदाता मळे तेणे करीने परलोकमां पण सारुं थाय छे.

अने वळी भगवान छे ते जे रीते जीवनुं सारुं थाय तेम करे एवा छे माटे केटलाकने आलोकनां सारामां नरसुं होय अने केटलाकने आलोकनां नरसामां सारुं होय. ते सारु कोइ जीव मुमुक्षु होय अने तेने धन, स्त्री-यादिक पदार्थ वंधन करे एम होय तो ते पदार्थनो नाश करे छे. त्यारे आलोकमां तो तेनुं भुंडुं कहेवाय पण तेना आत्मानुं अतिशय सारुं छे. माटे एवी रीते भुंडुं ते पण सारुं छे."

प्रश्नः–पछी वळी मुळु पटेले बीजुं प्रश्न पूछ्युं जे 'आत्माने साक्षात्कार देखवो तेमां शुं आडुं आवे छे?"

पछी महाराज बोल्या जे "आत्माने देखवो तेमां प्रथम तो देहाभिमान आडुं आवे छे अने देहाभिमाने करीने पंचविषयनुं आवरण छे. अने विषयनी आसक्तिये करीने काम, लोभ, स्वाद, स्नेह अने मान तेने विषे जीव अटवाइ गयो छे अने तेने करीने अतिशय बहारदृष्टिने

पामीने स्थूळभावने पामी गयो छे. माटे आत्माने देखवो तेमां देहा-भिमाने करीने पंचविषयमां आसक्ति तथा कामादिक दोष ते आडा आवे छे.

जेम कोइक तळावमां अतिशय झीणी वस्तु पडी होय, अने ते तळावने भेंसो तथा पाडाए मांही पडीने डोळी नांख्युं होय तो ते वस्तु देखाय नहीं. तेम अंतःकरणरूप तळाव छे, तेमां अति सूक्ष्मथी पण सूक्ष्म एवो जे आत्मा ते अनादि काळनो पड्यो छे. ते अंतःकरणरूप तळावने पंचविपय रूपी भेंसो तथा काम, लोभादिक दोष रूपी पाडा तेणे डोळी नांख्युं छे. माटे ते डोळे करीने आत्मा देखातो नथी.

हवे ते अंतःकरणनो डोळ मटी जाय अने अंतःकरण निर्मळ थाय त्यारे आत्मा साक्षात् देखाय. जेम तळावमांथी भेंसो तथा पाडाने काढी मूके तो तळाव निर्मळ थाय अने त्यारे तेमां जे वस्तु होय ते देखाय. तेम पंचविषयमां आसक्तिरूप भेंसो तथा काम, लोभादिक दोष रूप पाडा तेनो त्याग करे त्यारे अंतःकरण शुद्ध–निर्मळ थाय. अने ज्यारे अंतःकरण शुद्ध–निर्मळ थाय छे त्यारे तेने पोतानो आत्मा साक्षात्कार देखाय छे अने आत्माने विषे रह्या एवा जे *परमात्मा भगवान* ते *पण* देखाय छे. माटे आत्माने देखवामां देहाभिमाने करीने पंचविषयनी वासना आडी आवे छे. माटे वासना टळे तो *आत्मा* देखाय, ते *तमारा* प्रश्ननो उत्तर छे."

इति श्री मुखसिद्धांत ११७ समाप्त ।

११८ विषय :—भक्तावतार अने पूर्ण अवतार

श्री हरिकृष्णाय नमोनम :—संवत् १९१९ ना पोष सुद २ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री पछम मध्ये कोळीसवजी भक्तने घेर आथमणां वारना ओरडानी ओसरीमां विराजमान थया हता. सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पुष्पना आभूषण सर्वे अंगमां शोभी रह्या हता. अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणांक हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

प्रश्न :—पछी महाराजनी आरती धून थया केडे मुळु पटेले महाराजने प्रश्न पूछयुं जे "हे महाराज ! अमने एम जणाय छे जे पूर्वे भगवानना अवतार थइ गया छे तेनुं ज्ञान शास्त्र द्वाराए सांभळ्युं छे. अने आज पण तमारुं ज्ञान सांभळीए छीए. ते आवुं माया पर शुद्ध आत्यंतिक ज्ञान बहुधा कोइए आप्युं जणातुं नथी. केम के बीजा अवतारमां तो ज्ञान विना बीजां कार्य कर्यां छे अने ज्ञान तो कोइ अवतारमां एक भक्तने आप्युं छे, अने कोइ अवतारमां बे भक्तने ज्ञान आप्युं छे, अने कोइ अवतारमां दश जणांने ज्ञान आप्युं छे. अने आज तो केवळ माया पर शुद्ध-ज्ञाननी बहु प्रवृत्ति छे, तेनुं केम हशे ? ते कहो."

पछी महाराज बोल्या जे "भगवानना अवतार जे जे थाय छे ते जीवोने मुक्ति आपवा सारु थाय छे. ते मुक्ति आपवामां जीवने चोविस तत्त्व आडां आवरण करे छे. ते चोविस तत्त्वना आवरणने टाळवा सारु भगवानना चोविस अवतार थया छे. तेमां जेने चोविसे तत्त्वनुं आवरण होय तेने पहेलुं पृथ्वीनुं आवरण टळाववा सारु पृथ्वीनुं रूप देखाडीने पृथ्वीनुं आवरण टळावे छे; अने ते समे तेवा ज्ञाननी प्रवृत्ति होय छे. ते पछी जळनुं आवरण टळाववा सारु जळनुं रूप देखाडीने तेनुं आवरण टळावे छे; अने ते समे तेवा ज्ञाननी प्रवृत्ति होय छे. ते केडे

अग्निनुं आवरण टळाववा सारु अग्निनुं रूप देखाडीने अग्निनुं आवरण टळावे छे; अने ते समे तेवा ज्ञाननी प्रवृत्ति होय छे. एवी रीते चोविस तत्त्वना आवरणने टळाववा सारु चोविस तत्त्वे करीने ज्ञान आपे छे. अने जेने चोविस तत्त्वनुं आवरण टळी गयुं होय तेने आत्मानुं स्वरूप देखाडीने आत्माए करीने आत्यंतिक ज्ञान आपे छे. त्यारे ते समे आत्यंतिक ज्ञाननी ज प्रवृत्ति बहु होय छे.

तेमां जेने एक आवरण टळ्युं होय ते पण मुक्त कहेवाय छे. अने जेने बे आवरण टळ्यां होय ते पण मुक्त कहेवाय छे. अने जेने चोविसे तत्त्वनुं आवरण टळ्युं होय ते पण मुक्त कहेवाय छे. पण जेने सर्वे आवरण टळीने आत्यंतिक ज्ञानने पामीने अक्षरब्रह्मरूप थइने परब्रह्मने पाम्या ते खरा मुक्त छे. अने तेने जन्म-मरण टळी जाय छे. अने बीजा मुक्त कह्या ते तो जेटलो जीव जे तत्त्वथी मुकायो होय तेटलो ते मुक्त कहेवाय पण बीजां बाकी जे आवरण रह्यां होय तेने करीने जन्म धरवो पडे छे. अने ते मुक्त देह धरे त्यारे तेना देहमां चोविसे तत्त्व तो देखाय खरा पण जेने जे आवरण टळ्युं होय तेनी वासना तेने होय नहीं. अने एवी रीते जेने चोविसे तत्त्वनुं आवरण टळी गयुं होय तो पण ज्यां सुधी आत्यंतिक ज्ञान न थयुं होय त्यां सुधी ते जन्म धरे छे. अने तेने विषे चोविसे तत्त्व देखाय खरां पण तेने तेनी वासना होय नहीं, अने ते तो आत्मरूपे वर्ते छे. अने तेम ज भगवान प्रगट थया होय तेने विषे पण चोविसे तत्त्व देखाय छे, तो पण ते तो कैवल्यमूर्ति छे. अने ते प्रगट भगवाननी पासे तो आत्यंतिक ज्ञान छे. पण जे समे जेवा मुक्तनो समुदाय घणो होय ते समे तेवा ज्ञाननी प्रवृत्ति होय छे.

अने वळी जेने एक तत्त्वनुं आवरण टळ्युं होय तेने बे तत्त्व जेने टळ्या होय ते ज्ञान आपे छे. अने जेने बे तत्त्वनुं आवरण टळ्युं होय

तेने त्रण तत्त्वनुं आवरण जेने टळ्युं होय ते ज्ञान आपे छे अने ते तेनो गुरु कहेवाय छे. अने जेने चोविसे तत्त्वना आवरण टळी गयां होय ते तो सर्वेने ज्ञान आपे छे अने ते सर्वेनो गुरु कहेवाय छे.

माटे क्यारेक भगवान पोते अवतार धारण करीने ज्ञान आपे छे अने क्यारेक भगवाननी आज्ञाए करीने जेने चोविसे तत्त्वनुं आवरण टळी गयुं होय तेने अवतार धरावीने ज्ञान अपावे छे, पण ते भगवान-नो भक्तावतार कहेवाय छे. अने ज्यारे चोविसे तत्त्वनुं आवरण टळी गयेला एवा जे घणांक मुक्त ते पृथ्वी उपर जन्म धरीने आव्या होय ते समे सर्वे अवतारना अवतारी एवा जे अक्षरातित परब्रह्म पुरुषोत्तम भगवान ते प्रगट थाय छे, अने केवळ आत्यंतिक ज्ञाननो ज बोध आपे छे.

माटे बीजा अवतार थइ गया छे तेणे तत्त्वनां आवरण टळाव्यानी प्रवृत्ति बहुधा करी छे. अने आज तो केवळ आत्यंतिक ज्ञाननी ज प्रवृत्ति छे. अने आत्यंतिक ज्ञानने विषे तत्त्वनां आवरण टाळवानो बोध आवी जाय छे पण तत्त्वना आवरण टाळ्यानो बोध होय तेमां आत्यंतिक ज्ञान आवतुं नथी. जेम चिंतामणिमां सर्वे द्रव्य रह्युं छे पण बीजा द्रव्यने विषे चिंतामणि नथी रही. तेम आत्यंतिक ज्ञानने विषे चोविस तत्त्वनुं ज्ञान रह्युं छे पण चोविस तत्त्वना ज्ञानने विषे आत्यंतिक ज्ञान नथी रह्युं.

अने वळी जेम महेताजी छोकराओने भणावे छे त्यारे प्रथम तो सर्वे छोकराओने पोते ज भणावे छे अने पछी जेम जेम छोकरा भणता जाय छे अने वळी बीजा नवां छोकरा भणवा बेसे छे तेम तेम पोते पहेला (उपला) वर्गने भणावे छे अने पहेला (उपला) वर्गना छोकरा बीजा (नीचला) वर्गवाळाने भणावे छे. अने जेने जे भणावे छे ते तेनो महेताजी कहेवाय छे. अने ज्यारे सर्वे छोकरा परिपूर्ण भणी रहे छे त्यारे तो जे सर्वोपरि महेताजी छे ते परीक्षा ले छे. अने त्यारे तेमनी

विद्यानुं प्रमाण थशे. तेम प्रथम तो आत्यंतिक प्रलयने अंते जीवोने चोविस तत्त्वनुं ज्ञान पोते भगवान आपे छे अने आत्यंतिक ज्ञान पण पोते ज आपे छे. अने पछी तो पोता थकी ज्ञानने पाम्या एवा जे मुक्त साधु ते द्वारे चोविस तत्त्वनुं ज्ञान करावे छे. अने ते पण भगवानना भक्तावतार भगवान कहेवाय छे. अने ज्यारे आत्यंतिक ज्ञान आपवुं होय अने आत्यंतिक ज्ञानना अधिकारी घणांक मुक्त जन्म्या होय त्यारे तो ते समे पंडे भगवान ज्ञान आपे छे. अने मुख्यपणें आत्यंतिक ज्ञान-नी प्रवृत्ति करे छे." माटे आ समे आत्यंतिक ज्ञाननी प्रवृत्ति करवा सारु भगवाननो सर्वोपरिपूर्ण अवतार थयो छे.

इति श्री मुखसिद्धांत ११८ समाप्त ।

---

११९ विषय :—तमने भगवान जाणीने के ब्राह्मण जाणीने दर्शने आवे तेने शुं फळ मळे

श्री हरिकृष्णाय नमोनमः—संवत् १९१९ना पोष सुद ३ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री पछम मध्ये शुकल करशनजीने घेर उत्तरादे बार ओरडानी ओसरीमां गादीतकिये युक्त ढोलिया उपर बिराजमान थया हता. सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां. अने पुष्पना हार कंठमां पहेर्या हता. ललाटने विषे कंकुनो चांदलो कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणांक हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

प्रश्नः—पछी महाराजनी आरती धून करीने भक्तजन हाथ जोडीने बेठा हता. पछी अलु गढवीए महाराजने प्रश्न पूछ्युं जे "हे महाराज! केटलाक माणस तो तमने भगवान जाणीने दर्शने आवे छे अने केटलाक

विषे अने सर्वे दिशाओने विषे जाणपणुं रह्युं छे. अने जाणपणांने विषे आत्मा रह्यो छे. माटे तेणे करीने आत्मानुं व्यापक स्वरूप साक्षात्कार देखाय छे. ते छेटे-टुकडा पदार्थ मिथ्या छे अने जाणपणांरूप आत्मा छे ते सत्य छे.

अने त्रीजुं आत्मानुं चैतन्य स्वरूप छे तेने जणाववा सारु परमेश्वरे हालतां, चालतां शरीर आदिक पदार्थ कर्यां छे, ते पदार्थ उपजे छे अने वृद्धि पामे छे ते आत्मा वडे हाले, चाले अने वृद्धि पामे छे. अने आत्मा तेमांथी नीसरी जाय तो ते पदार्थ हाले, चाले अने वृद्धि पामे नहीं. माटे हालवुं, चालवुं अने वृद्धि पामवुं तेणे करीने आत्मानुं चैतन्य स्वरूप साक्षात्कार देखाय छे. ते हालतां, चालतां पदार्थ मिथ्या छे अने तेमां जाणपणुं अने चैतन्यता जे आत्मा ते सत्य छे.

अने चोथो आत्मानो निराकार गुण छे. तेने जणाववा सारु पदार्थना आकार परमेश्वरे बनाव्या छे. तेने करीने जाणपणुं, व्यापकपणुं तथा चैतन्यपणुं ते साक्षात्कार देखाय छे. जेम वायु निराकार छे तेने जाणवा सारु साकार एवा जे वृक्षादिक तेने जोइने वायुनुं स्वरूप साक्षात्कार देखाय छे. केम के झाडवाना डांखडा हाले छे ते वायुए करीने हाले छे पण वायु विना हाले नहीं. एवी रीते नेत्रे करीने वायु देखातो नथी तो पण वायुना स्वरूपनुं साक्षात्कार ज्ञान थाय छे. पण तेमां लेशमात्र संशय रहेतो नथी. तेम आत्मा निराकार अने माया पर छे. ते मायिक एवा जे इन्द्रियो अंतःकरण तेणे करीने देखाय एवो नथी. तो पण इन्द्रियो अंतःकरणे करीने वृक्षादिकरूप जणाया जे पदार्थ तेने विषे जाणपणुं, व्यापकपणुं अने चैतन्यता जणाय छे ते आत्मा वडे ज जणाया छे. एवी रीते अनुभवे करीने आत्मानुं स्वरूप साक्षात्कार देखाय छे.

अने ते आत्माने विषे जाणपणादिक अनंत गुण रह्या छे तेने जणाववा सारु परमेश्वरे अनंत गुणे युक्त अनंत पदार्थ देखाड्यां छे.

जेम पोताना मुखनी शोभा जोवा सारु दर्पण कर्युं छे. ते दर्पणमां जुवे त्यारे मुखनी शोभा तथा कुरूप तथा कांइ विकार, मश्य, कचरो वळग्यां होय ते दर्पणमां सामां देखाय छे. ते सामुं तो कांइ नथी पण दर्पणमां एवो गुण रह्यो छे जे जेवुं पदार्थ दर्पण आगळ राखीए तेवुं ने तेवुं साक्षात्कार सामुं पदार्थ देखाय छे पछी जे समजु मनुष्य होय ते दर्पणमां जोइने एम जाणे जे 'सामुं पदार्थ जणाय छे ते तो मारा मुख उपर जे जे छे ते देखाय छे, पण आगळ दर्पणमां कांइ नथी.' एम जाणीने पोताना मुख उपर जे मश्य, कचरादि विकार होय तेनो त्याग करे छे. अने जे शोभा होय तेने राखे छे. अने जे अणसमजु बाळक होय ते तो दर्पणमां जोइने एम जाणे जे 'दर्पण वांसे कोइक छे.' एम जाणीने तेने लेवा सारु ते लांबा हाथ करीने मुट्ठी भरवा जाय छे. पण कांइ हाथमां आवतुं नथी तो पण आवळां मार्या करे छे.

तेम जीवने विषे पंचविषयनी वासनारूपी विकार भर्यो छे. ते विकारे करीने जीव जे ते जन्म-मृत्युने पामे छे. ते विकारने देखाडवा सारु परमेश्वरे जीवने दर्पणरूप इन्द्रियो, अंतःकरण सर्जी आप्यां छे. ते इन्द्रियो, अंतःकरणरूप दर्पणने विषे अनंतकोटी ब्रह्मांडनी रचना जे जीवमां रही छे ते बहार देखाय छे. पण बहार कांइ वस्तु नथी अने ए तो सर्वे आत्माने विषे देखाय छे. तेने जे ज्ञानी छे ते जे ते धर्म, ज्ञान, वैराग अने माहात्म्ये सहित परमेश्वरनी भक्ति तेने करीने अनंतकोटी ब्रह्मांडनी वासनारूप पोताने विषे विकार होय तेने टाळी नाखे छे. त्यारे ते पछी ज्ञानी पुरुष जे ते एक शुद्ध आत्माने ज देखे छे. पण ते

विना तेनी दृष्टिमां बीजुं पिंड, ब्रह्मांडादिक कांइ आवतुं नथी. अने देखे छे तो पण जेम झांझवा देखाय छे तेम देखे छे. ते झांझवाने जाणतो एवो जे पुरुष ते जळनी इच्छा राखीने जळ भरवा जतो नथी. अने झांझवाने जाणतो न होय ते जळनी इच्छा राखीने जळ भरवा जाय छे, तो पण तेने जळ मळतुं नथी.

तेम जे ज्ञानी पुरुष छे ते जे ते पंचविषयना पदार्थने झांझवारूप जाणीने ते पदार्थ भोगववानी इच्छा नथी राखता. अने ते तो एक आत्माने ज साक्षात्कार देखे छे. अने जे बाळक जेवा अज्ञानी जीव छे ते तो पोताना आत्माने विषे पंचविषयनी वासनारूपी विकार भर्यो छे ते विकार दर्पणरूप इन्द्रियो अंतःकरणे करीने बहार देखाय छे तेने सत्य जाणीने तेने पामवा सारु बाळकनी पेठे आवळा मारे छे. तो पण कांइ हाथमां आवतुं नथी. अने तेमां तृप्ति पण तेने थती नथी. केमके बहार पदार्थ वस्तु गते छे ज नहीं, अने ए तो आत्माने विषे पंचविषयनी वासना छे तेनो आभास बहार जणायो छे. ते वासनानो त्याग करे त्यारे आत्मा साक्षात्कार देखाय छे.

ते केवी रीते आत्मा देखाय छे? तो प्रथम तो जीव जे ते नाना बाळकनी पेठे कांइ समजतो नथी. जेम नाना बाळकने इन्द्रियो, अंतःकरण होय तो पण कोइ मनुष्यने के कोइ पदार्थने ओळखे नहीं. तेम जीव जे ते कोइ आत्माना स्वरूपने जाणतो नथी. ते जेम बाळकने तेना मावतर सर्वे बहार पदार्थनुं ज्ञान करावे छे त्यारे ते बाळक सर्वे पदार्थने ओळखे छे. तेम अज्ञानी जीव जे ते बहार पदार्थने देखे छे पण आत्माने देखतो नथी. हवे तेने सद्गुरुरूप हरि छे ते ज्ञाने करीने आत्माने साक्षात्कार देखाडे छे. ते आत्मा केवो छे? तो जाणपणांरूप छे. माटे

जेटलामां जाणपणुं छे तेटलामां आत्मा रह्यो छे. ते जाणपणुं तो सर्वे ठेकाणे अनंतकोटी ब्रह्मांडने विषे रह्युं छे अने तेथी पर पण अपार जाणपणुं रह्युं छे. ते जाणपणाने जीव जाणतो नथी एज जीवनुं जीवपणुं छे. अने ते जाणपणारूप जे आत्मानुं स्वरूप तेने जीव जाणे तो ते जीवनुं जीवपणुं मटीने अक्षरब्रह्मरूप थाय छे.

हवे जाणपणारूप जे आत्मानुं स्वरूप तेने जणावुं छुं. जे आ देहने विषे नखथी ते शीख सुधी रोम रोम प्रत्ये जे जाणपणुं रह्युं छे ते आत्मानुं स्वरूप छे, अने देह तो जड छे. अने पंचभूतनो विकार छे. पण ते जीवने ज्यां सुधी अज्ञान छे त्यां सुधी जीव जे ते देहने पोतानुं रूप माने छे, पण देह आत्मानुं स्वरूप नथी. केम के देहमांथी जाणपणुं एक उठी जाय छे त्यारे ते मरी गयो कहेवाय छे. ते जो देह आत्मानुं स्वरूप होय तो ते देह तो नख शीख पड्यो रहे छे अने जाणपणुं एक जाय छे त्यारे ते मरी गयो कहेवाय छे. माटे देह जो आत्मानुं स्वरूप होय तो मरी गयो एम कहेवाय नहीं. ते उपरथी प्रत्यक्ष एम देखाय छे जे जाणपणुं छे ते ज आत्मानुं स्वरूप छे.

ते आत्मानुं जाणपणुं जेम देहने विषे रह्युं छे तेम देहथी पांच हाथ छेटे कोइक पदार्थ देखाय तेने विषे पण जाणपणुं रह्युं छे. अने तेम एक गामने विषे पण जाणपणुं रह्युं छे. ते गाम अने पदार्थ ते आत्मानुं जे जाणपणुं तेने विषे देखाय छे. केम के एक ठेकाणे बेठा थका पण एम साक्षात्कार देखाय जे 'आ गाममां ब्राह्मणना घर आटलां छे. अने वाणियाना घर आटलां छे अने कणबीना घर आटलां छे. अने आनुं घर आ ठेकाणे छे अने आनुं घर आ बाहर छे. अने आटलां वरस अगाउ एक गाममां ब्राह्मण के कणबी के वाणियो हतो तेना

आवा गुण हता. अने ते पुरुष नाश पामी गयो तो पण तेने विषे जे आत्मानुं जाणपणुं हतुं ते नाश पाम्युं नहीं. माटे आत्मानुं स्वरूप साक्षात्कार देखाडवा सारु परमेश्वरे पदार्थ जणाव्या छे. ते पदार्थ मिथ्या छे अने ते पदार्थने विषे रह्युं जे जाणपणुं ते सत्य छे. अने ते जाणपणुं आत्मानुं स्वरूप छे.

—अने जेम एक गामने विषे जाणपणुं रह्युं छे. तेम हजार गाउने छेटे फरता फरता चारे कोरे जे जे गाम, शहेर अने मुलक तेने विषे पण जाणपणुं रह्युं छे. ते गाम शहेर अने मुलक ते मिथ्या छे. अने जाणपणांरूप जे आत्मा ते सत्य छे. अने ते जेम हजार हजार गाउ उपर जाणपणुं रह्युं छे तेम ज चार लाख गाउ उंचो सूर्य छे तेने विषे पण जाणपणुं रह्युं छे. ते सूर्य सुधी जे जाणपणुं जणायुं ते सूर्यरूप पदार्थ तेने करीने सिद्ध थयुं. तेम ज तेटलुं अडखे पडखे अने हेठे पण जाणपणांरूप आत्मा रह्यो छे. अने ते सूर्य सुधी जाणपणुं जणायुं ते इन्द्रियोए करीने जणायुं छे. अने तेम ज अंतःकरणे करीने सद्गुरु अने सत्शास्त्रना श्रवण थकी सांभळी जे एक ब्रह्मांडनी रचना एवां एवां अनंत कोटी ब्रह्मांड तेने विषे जे जाणपणुं रह्युं छे ते अंतःकरणे करीने रह्युं छे. अने वळी तेथी बीजां अनंत कोटी ब्रह्मांड तेने विषे पण जाणपणांरूप आत्मा रह्यो छे. अने एवां एवां कोटानकोटी ब्रह्मांड ते तो जाणपणांरूप आत्माना कोइक देशने विषे जणाय छे अने तेथी पण आत्मानुं जाणपणुं अपार अने अपार छे, कहेतां जाणपणांनो पार नथी.

—अने ते जाणपणांने कोइ आवरण नथी. केम के कोटानकोटी ब्रह्मांड ते एक निमिष-मात्रमां जाणपणांने विषे देखाइ जाय छे. जेम अहींथी सो गाउ उपर हजार गाडां केरीयोनो ढगलो पड्यो होय तेमांथी

एक केरी कोइक लावीने देखाडे अने एम कहे जे 'आ एक केरी जेवी हजार गाडां केरीयोनो ढगलो सो गाउ उपर पड्यो छे.' तो ते सांभळता वेंत हजारे गाडां केरीयोनो ढगलो ते जाणपणांने विषे साक्षात्कार देखाइ जाय छे. तेम अनंत कोटी ब्रह्मांड ज्ञाने करीने जाणपणांरूप आत्माने विषे साक्षात्कार देखाइ जाय छे.

जेम हथेलीमां जळनुं टीपु देखाय तेम जाणपणांरूप आत्माने विषे कोटानकोटी ब्रह्मांड देखाय छे. अने एवी रीते अनंत कोटी ब्रह्मांडने विषे जे जाणपणुं रह्युं छे, तथा तेथी पर पण अपार अपार कहेतां जाणपणांनो पार नहीं एवुं जाणपणुं ते आत्मानुं अन्वय स्वरूप छे. अने एवी रीते जे अन्वय स्वरूपना ज्ञानने सिद्ध करे तेनो आत्मा अतिशय महत्ताने पामे छे; कहेतां तेने पंचविषयनुं तुच्छपणुं थइ जाय छे.

जेम चिंतामणि जेने मले छे त्यारे तेने बीजा द्रव्यमात्र सर्वे तुच्छ थइ जाय छे, तेम जाणपणांरूप जे आत्मानुं अन्वय स्वरूप तेने समजवे करीने राजा, देव, ब्रह्मां अने प्रकृतिपुरुष सुधीना जे जे सुख ते सर्वे तुच्छमात्र थइ जाय छे. अने अनंत कोटी ब्रह्मांडने विषे रह्युं जे जाणपणुं तेनो त्याग करीने कहेतां ए ब्रह्मांडने चार प्रकारना प्रलये करीने नाश पमाडीने प्रतिलोम वृत्ति करीने पछी एवा ज्ञानना आपनारा एवा जे प्रत्यक्ष भगवान तेनी मूर्तिनुं आत्माने विषे ध्यान करवुं तेनुं नाम आत्मानुं व्यतिरेक स्वरूप कहेवाय छे. अने एवी रीते ज्ञान-दृष्टिने जे पाम्यो होय ते तो पोताना आत्माने साक्षात्कार देखे छे अने ते आत्माने विषे परमात्माने पण साक्षात्कार देखे छे.

अने एवी रीते ते आत्मा अने परमात्माना स्वरूपने देखवुं ते पण प्रत्यक्ष परमात्मा जीवने मळे छे अने ते थकी ज्ञानने पामे छे त्यारे

आत्मा अने परमात्मा देखाय छे. पण ते परमात्मा प्रत्यक्ष मल्या विना आत्मा देखाय नहीं अने परमात्मा पण देखाय नहीं. माटे आवी रीतना विचारने पंचविषयनो त्याग करीने सिद्ध करे त्यारे तेने पोतानो आत्मा पण साक्षात्कार देखाय छे. अने आत्माने विषे अमारुं स्वरूप पण तेने साक्षात्कार देखाय छे. पण पंचविषयनो त्याग कर्या विना अने प्रत्यक्ष भगवान मल्या विना तो आत्मा देखाय नहीं अने आत्माने विषे रह्या एवा जे परमात्मा ते पण देखाय नहीं.

जेम सूर्य उग्या विना रूप पदार्थ पण देखातुं नथी अने सूर्य विना सूर्य पण देखातो नथी. अने ए तो सूर्य उदय पामीने प्रकाश करे अने पोतानी आंखो उपर लुगडां के गोदडां ओढ्या होय तेने कोरे (दूर) करीने आंख उघाडीने जुवे त्यारे ते बीजां पदार्थने देखे अने सूर्यने पण त्यारे देखे. अने सूर्य उग्यो होय पण आंखो न उघाडे तो पण कांइ भाळे नहीं. अने आंखो उघाडीने जुवे तो पण जो सूर्य उग्यो न होय तो पण कांइ भळाय नहीं. तेम जे आत्माने देखवो ते पण आत्माना आत्मा एवा जे परमात्मा भगवान ते प्रगट थइने ज्ञानरूपी प्रकाश करे अने जीव पण आंखो आडां गोदडारूप जे पंचविषय तेनो त्याग करीने समागम करे त्यारे पोताना आत्माने देखे छे अने आत्माने विषे रह्या एवा जे परमात्मा तेने पण साक्षात्कार देखे छे. अने भगवान प्रगट थइने ज्ञान प्रकाश करता होय तो पण जो जीव आंखो आडां गोदडांनी पेठे पंचविषयमां आसक्त थइ रह्यो होय तो तेने पोतानो आत्मा पण देखाय नहीं. अने पंचविषयनो त्याग कर्यो होय तो पण जो प्रत्यक्ष भगवाननो ज्ञानरूपी प्रकाश थयो न होय त्यां सुधी आत्मा के परमात्मा देखाय नहीं.

—माटे पंचविषयनो त्याग करीने प्रत्यक्ष भगवानना मुख थकी

अथवा प्रत्यक्ष भगवानने पामीने सिद्ध थया एवा जे एकांतिक पंचविषयना त्यागी भगवानना संत तेना मुख थकी पूर्वे कह्यो एवो जे विचार तेने जे सिद्ध करे तो ते पोताना आत्माने साक्षात्कार देखे छे अने आत्माने विषे परमात्माने पण साक्षात्कार देखे छे."

इति श्री मुखसिद्धांत १२० समाप्त ।

१२१ विषय :—प्रगट परमात्मा थकी ज मोह टळे छे.

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः—संवत् १९१९ ना अषाढ सुद २ने दिवस महाराज श्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्री कमळेज मध्ये जोशी जेठाने घेर उगमणे वार ओरडानी ओशरीमां हिंडोळाखाट उपर गादी तकीया बिछावीने विराजमान थया हता. श्वेत खेस पहेर्यो हतो अने मधराशीयानुं अंगरखुं धारण कर्युं हतुं. गुलाबी रंगनो फेंटो मस्तके बांध्यो हतो अने कसुंबल पटको खभे नाख्यो हतो. पुष्पना हार, तोरा अने गुच्छ धारण कर्या हता अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणांक हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

प्रश्नः—पछी धर्मानंद स्वामीए प्रश्न पूछ्युं जे "हे महाराज! पूर्वे रामकृष्णादिक भगवान तथा नारद सनकादिक संत तथा जे जे महात्मा पुरुषो थइ गया तेमणे एम कह्युं छे जे 'देह खोटो छे अने देह संबंधी पदार्थ ते पण नाशवंत छे. अने पंचविषय छे ते हळाहळ विष छे अने तेने भोगववे करीने जीवने जन्म-मृत्यु, चोराशी अने गर्भवास आदिकना अपार कष्ट भोगववां पडे छे.' अने सर्वे प्रत्यक्ष पण देखे छे जे देह पण सर्वेना नाश थइ जाय छे. अने पदार्थ पण नाश पामी जाय छे. तो पण जीवने देहमांथी प्रीति टळती नथी अने पंचविषयनो त्याग थतो

नथी. अने देहने कांइक रोग थयो होय अथवा कोइ एम कहे जे 'तारो देह पांच दिवसमां पडी जशे,' 'तो तेनी घणी चिंता थाय अने तेनां अनंत उपाय करवा मंडी पडे. पण आत्माने पंचविषयनी वासनारूपी महा रोग थयो छे तेने टाळवानो उपाय जीव करतो नथी, तेनुं शुं कारण हशे ? ते कहो."

पछी महाराज बोल्या जे " ए जीवने अनादि काळथी विपरीत भावना थइ छे तेने सत्पुरुष मोह कहे छे. अने माया कहे छे. ते मोह अने माया तेने जीव पोतानी मेळे कोइ काळे टाळवाने समर्थ नथी. माटे ए मोह अने माया टाळवानो तो एक ज उपाय छे जे माया पर एवा जे परमात्मा ते पृथ्वी उपर प्रगट थया होय अने ते परमात्माने शरणे जे जे जीव आवे तेने परमात्मा पोते पोताने श्रीमुखे करीने जीवने देहना मिथ्या-पणांनुं ज्ञान करावे, तथा पंचविषयनां दुःखरूपपणांनुं ज्ञान करावे, तथा आत्माना स्वरूपनुं ज्ञान करावे तथा परमात्मा पोताना स्वरूपनुं ज्ञान करावे त्यारे ज जीवने साक्षात्कार ज्ञान थाय छे. पण ते विना एकलां शास्त्रने सांभळवे करीने तथा वांचवे करीने ज्ञान थाय नहीं. तथा पंच-विषयना रागी एवा जे असत्पुरुष तेने संगे करीने व्हाय एटलां शास्त्र सांभळे, ज्ञान सांभळे, साधन करे पण ज्ञान थाय नहीं.

—अने एम बीजा कोइ थकी ज्ञान थतुं होय तो भगवानने वारं-वार प्रगट थवानुं शुं काम पडे ? अने सत्पुरुषनो समागम पण शास्त्रमां अतिशय दुर्लभ कह्यो छे. अने पूर्वे पण जेने जेने प्रगट परमात्मा मळ्या छे तेनां ज कल्याण थयां छे, माटे एवा मायापर स्थितिवाळा एवा जे महात्मा—पुरुष तेनो समागम करीने ज्ञान पामे त्यारे ए जीवने मोह अने माया टळे अने देहादिक सर्वे पदार्थमां वैराग थाय अने जीवने भगवानमां प्रीति थाय त्यारे ते जीवनो मोक्ष थाय.

हवे प्रगट एवा जे परमात्मा ते केवी रीते जीवने ज्ञान करावे छे? तो प्रथम् मायानो भाग जे चोवीस तत्त्व तेनो विवेक करावीने ते थकी आत्माने नोखो पाडीने देहरूपी माया टळावे छे. अने ज्यारे देहरूपी माया टळे छे त्यारे ज जीव पोताना स्वरूपने जाणवाने समर्थ थाय छे अने परमात्माने पामवानो अधिकारी पण त्यारे ज थाय छे अने ते परमात्मानुं ज्ञान ज्यारे इन्द्रियोमां थाय छे त्यारे स्थूळ शरिरना विषय सर्वे निवृत्ति पामे छे अने तेने धर्म पण दृढ थाय छे. अने ज्यारे अंतःकरणमां परमात्माना स्वरूपनुं ज्ञान थाय छे त्यारे सूक्ष्म शरीरमांथी पंचविषयनी वासनारूपी माया टळे छे. अने अनुभवी जे आत्मा तेने विषे परमात्माना स्वरूपनुं ज्ञान थाय छे त्यारे कारण शरीरनी वासनारूप जे महामाया ते नाश पामे छे. एवी रीते इन्द्रियो, अंतःकरण अने अनुभवमां परमात्माना स्वरूपनुं ज्ञान साक्षात्कार थाय छे त्यारे ज तेने यथार्थ जेम छे तेम पोताना स्वरूपनुं ज्ञान थाय छे अने पंचविषयना राग पण निवृत्ति पामी जाय छे. अने प्रत्यक्ष एवा जे परमात्मा तेनां स्वरूपनो उत्तम निर्विकल्प निश्चय थाय छे.

—ते एवो निश्चय आत्मानंद स्वामीने हतो तथा भाभुने पण एवो निश्चय हतो तो ज्यारे अमारी इच्छाए करीने भूंडो देशकाळ (टींबाना झगडानो प्रसंग) आव्यो तो पण तेनो रंग एवो ने एवो रह्यो, पण तेनो लेश मात्र मनमां शोक न थयो अने अद्‌भुत आनंदमां अखंड रह्यां. अने टींबामां श्री डोशीयोने एवो अडग निश्चय हतो तो तेने ज्यारे शरीर वाए रही गयुं अने शरीरमां पीडा थवा लागी त्यारे अमे कह्युं जे "पीडा केवकि थाय छे?" त्यारे तेमणे कह्युं जे "ए तो देहने पीडा थाय छे, पण हुं जे आत्मा ते मारे रंच मात्र पीडा नथी. केम के देहनुं तो प्रमाण कर्युं छे जे 'देह तो जड, दुःखरूप अने नाश-

वंत छे.' अने समजणमां कोइ रीतनी कसर होय तेनो खरखरो थाय पण ते तो तमे कृपा करीने सर्वे कसर काढी नाखी छे. माटे देहमां रंच मात्र स्वार्थ नथी. ते सारु देह तो गमे त्यारे पडे तेनो हरख-शोक नथी."

–अने पूर्वे पण भगवानना जे जे भक्त थइ गया तेणे जेटलो जेने निश्चय तेटलो तेने देहनो अनादर अने तेटली तेने पंचविषयनी वासना टळी छे, ते सिद्धांत वार्ता छे. अने जेने जेवी स्थिति ते प्रमाणे तेनां वचन पण शास्त्रमां लखाणां छे, ते जे बुद्धिवाळा होय तेने जाण्यामां आवे छे." एटली वार्ता करी पछी संत कीर्तन गावा लाग्या.

इति श्री मुखसिद्धांत १२१ समास ।

---

१२२ विषयः—चार प्रश्नोना उत्तरमां शास्त्रोक्त प्रगटनुं प्रतिपादन

श्री हरिकृष्णाय नमोनमः–संवत् १९१९ ना अषाड सुद ११ ने दिवस महाराज श्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्री कमळेज मध्ये जोशी जेठाने घेर उगमणे वार ओरडानी ओशरीमां हिंडोळाखाट उपर विराजमान थया हता. सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने सर्वे अंगने विषे मोगराना अने जाइना पुष्पना आभूषण शोभी रह्या हता. ललाटने विषे केसर–चंदननी अर्चा अने कुमकुमनो चांदलो कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनिमंडळ तथा घणांक हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

प्रश्नः—पछी महाराजनी संध्या आरती थया पछी भावनगरना हरिभक्त जोशी अमृतलाले हाथ जोडीने कह्युं जे "हे महाराज! एक ब्राह्मणे चार प्रश्न पुछाव्या छे, तेना उत्तर कृपा करीने करो. ते चार

प्रश्ननां नाम जे (१) एक तो एम पूछ्युं छे जे 'भगवाननो अवतार धर्म-स्थापन करवा वास्ते थाय छे, तथा साधुना रक्षणने अर्थे तथा दुष्टने दंड आपवाने अर्थे थाय छे.' एम गीतामां कह्युं छे. ते हजु सुधी धर्म-स्थापन तथा साधु-पीडानी निवृत्ति केम थइ नथी, तेनुं शुं कारण? एक तो ए प्रश्न (२) अने वळी 'भगवाननो अवतार गंगा-यमुनादिक महा नदीने तीरे थशे' एवुं भागवतना द्वादश-स्कंधमां कह्युं छे. अने ते स्थळ विना (बीजे ठेकाणे) अवतार थयो तेनुं शुं कारण? ए बीजो प्रश्न (३) अने 'भगवाननी मूर्ति जेटला अवतार धारण करे छे त्यारे संस्कृतवाणीए चार वेदनो अर्थ प्रकाश करे छे.' अने आ अवतारमां प्राकृतवाणीथी व्याख्यान करो छो, तेनुं शुं कारण? ए त्रीजुं प्रश्न (४) अने 'भगवाननो अवतार थाय छे त्यारे अति मानसिक पराक्रम प्रकाश करे छे.' ते हजु सुधी तमे कर्युं नहीं, तेनुं कारण शुं? ए चोथुं प्रश्न छे.'

(१) ए प्रश्नो सांभळीने महाराज बोल्या जे "सांभळो, एनो उत्तर करीए जे 'धर्म स्थापवा अवतार थाय छे.' ते धर्म कयो? तो एकांतिक एवो जे भागवत-धर्म तेने स्थापवा अवतार थाय छे. ते भागवत-धर्मनुं शुं रूप छे? तो धर्म, ज्ञान, वैराग अने माहात्म्ये सहित भक्ति ए भागवतधर्मनुं रूप छे. हवे तेमां धर्म ते शुं? तो श्रुति-स्मृतिमां कह्या जे वर्णाश्रमना धर्म तेमां दृढपणे रहीने पंचविषय थकी इन्द्रियोने पाछी वाळीने भगवाननी सेवामां राखवी, तेनुं नाम धर्म कहेवाय. अने ज्ञाननुं रूप ए छे जे चावीस तत्त्वरूप जे मायानुं टोळुं तेनां रूप जेम छे तेम यथार्थ जाणीने ते थकी नोखो, शुद्धरूप, प्रकाशमान अने जाणपणे युक्त, अमर, अजर, सुखरूप अने सत्तारूप एवो जे आत्मा तेने विषे दृढ स्थिति पामीने मायाना टोळाने क्षोभ पमाडे एवा जे मायिक-पंचविषय संबंधी सुखदुःख तेमां समभाव अखंड रहे, कहेतां मायिक सुखदुःखे करीने, तथा

गायो चारी छे? त्यारे तेनो एम अर्थ छे जे वरसाद, आदिके करीने पण भगवान रक्षा करे छे. अने वळी गौ कहेतां पोताना शरणे आव्या जे दैवी–मुमुक्षु जीव तेनी कामादिक शत्रु थकी रक्षा करे छे.

अने (२) बीजा प्रश्नो उत्तर जे 'गंगा–जमना तीरे अवतार थशे' ते तो ज्यां भगवान प्रगट थया होय त्यां ज सर्वे तीर्थ आवीने निवास करे छे, एम जाणीने व्यासजीए लख्युं छे. अने शास्त्रना मर्मने पण जाणी शकाय एम नथी. ते पण भागवतमां व्यासजीए कह्युं छे जे–

अहं वेद्मि शुको वेत्ति संजयो वेत्ति वा न वा ।
भक्त्या भागवतं शास्त्रं न सा बुद्धिर्न च टिकया ॥

माटे जे जे अवतार थाय छे तेने एंधाण राखीने कोइए ओळख्या नथी. केमके सर्वेने भगवान–ओळखवानो तो खप छे. ते पण कृष्णावतारमां ऋषि यज्ञ करता हता अने शास्त्रना पण भणेला हता. माटे तेमणे शुं एंधाण नहीं राख्या होय जे श्रीकृष्ण अन्न लेवा गया अने न आप्युं? माटे सो वातनी एक वात जे प्रगट भगवान समागम कर्याथी ओळखाय छे. ते पण जे दैवी अने संस्कारी होय ते ज्ञाने करीने ओळखे छे.

(३) हवे त्रीजा प्रश्नो उत्तर जे 'भगवानना अवतार जे जे थया तेणे चार वेदनो अर्थ संस्कृतवाणीए प्रकाश कर्यो छे अने आ अवतारमां प्राकृतवाणीए व्याख्यान करीए छीए' ते तो समज्या फेर छे. केमके प्रथम तो 'प्राकृत' अने 'संस्कृत' ए शब्दने जाणवा जोइए. ते जे प्रकृतिना कार्यमां मोह पामीने चार वेद कंठथी मुखपाठे कही जाय तो पण ते प्राकृतवाणी छे. अने जे पुरुष माया पर स्थितिमां रह्या थका जीवोना कल्याणने अर्थे ज्ञानबोध आपता होय तो ते संस्कृत वाणीए

बोध आपे अथवा गुजराती वाणीए आपे अथवा गमे तो हिंदुस्तानी-वाणीए बोध आपे अथवा आरबी, मुसलमानी, अंग्रेजी, काठीयावाडी, वालाकी वगेरे गमे ते वाणी बोलीने ज्ञान-उपदेश आपे, पण जो माया पर स्थितिए रहीने माया पर ज्ञान आपे छे तो ते सर्वे संस्कृतवाणी छे. अने वेदनुं ज व्याख्यान करे छे. अने ते विना जे बोले छे ते सर्वे प्राकृतवाणी छे.

-माटे ते पण 'बोत करे सत्संगा, तब होय संशय का भंगा.' अने श्रीकृष्ण भगवाने अर्जुनने तथा उद्धवजीने वात करीने ज ज्ञान आप्युं छे. अने रामचंद्रजीए पण पोताना भक्तोने वात करीने ज ज्ञान आप्युं छे. तथा वृषभदेवे तथा कपिलदेवे पोत पोताना भक्तोने वातो करीने ज ज्ञान आप्युं छे. अने श्लोक बांधीने शास्त्र तो पछी व्यासजीए कर्यां छे. ए त्रीजा प्रश्ननो उत्तर छे.

(४) हवे चोथा प्रश्ननो उत्तर ए छे जे 'भगवान अवतार धारण करीने अति मानसिक पराक्रम करे छे' ते तो जे ए भगवानना भक्तो होय ते जाणे छे, पण बीजाने प्रगट भगवानना अद्भूत पराक्रम जाणवामां आवता नथी. अने भगवाननुं अति मोटुं पराक्रम कयुं छे ? तो जीवने ज्ञान आपीने पंचविषयनी वासना मुकावीने ब्रह्मरूप करीने पोताना धामने पमाडवो, ए काम एकला भगवान विना बीजा कोइथी थाय एम नथी. अने ते विना जे श्रीकृष्णे दैत्य मार्या तथा गोवर्धन तोळ्यो एवां काम करवां ते भगवाननुं काम नथी. केमके एवां काम तो बीजा मनुष्य पण करे छे. ते रामावतारमां हनुमानजी डुंगर लावता हता तेमांथी कटको पडी गयो तेनुं नाम गोवर्धन, तेने ऊंचो कर्यो तेने करीने शुं भगवान कहेवाय ? अने तेने करीने जो भगवान कहेवाता

होय तो हनुमानजी पण भगवान कहेवाय. माटे भगवानना पराक्रमने तो भगवानना एकांतिक संत छे ते ज जाणे छे.

–विस्तारना भयथी आखुं कह्युं नथी, माटे कल्याणनो खप होय तो समागम करवा आवशो तो तमारा मननां संशयमात्र टाळीने निःसंशय करीशुं."

इति श्री मुखसिद्धांत १२२ समाप्त।

१२३ विषयः—तपनां प्रकारना

श्री हरिकृष्णाय नमोनमः–संवत् १९१९ ना श्रावण सुद १३ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री कमळेज मध्ये जोशी जेठाने घेर उगमणे वार ओरडानी ओसरीमां हिंडोळाखाट उपर विराजमान थया हता. सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने मस्तक उपर कसुंवल फेंटो बांध्यो हतो. कंकुनो चांदलो कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ संत तथा घणांक हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

प्रश्नः–पछी महाराजनी आरती धून करीने सर्व सभा बेठी पछी महाराज बोल्या जे "सर्वेने एक प्रश्न पूछीए छीए जे तप करवुं ते देहाभिमानी होय तेने तप करवुं के देहभिमाने रहित होय तेने तप करवुं ते कहो?" पछी धर्मानंदस्वामीए कह्युं जे "जेने कल्याणनो खप होय अने जेने देहाभिमानो त्याग करवो होय तेणे तप करवुं." पछी महाराज बोल्या जे "ते तपमां कांइ भेद छे के नथी?" पछी धर्मानंद स्वामीए कह्युं जे "तपमां त्रण भेद छे. ते भेद कया? तो उत्तम, मध्यम अने कनिष्ठ एवा श्रद्धाना त्रण भेद छे."

पछी महाराज बोल्या जे "हवे ते भेदने कहीए छीए जे प्रथम

जीव सत्पुरुष पासे आवे छे त्यारे तेने अधर्मना त्याग रूपी तप करावे छे. पछी ते नियमरूपी तप जेम जेम करे छे तेम तेम ते जीव बळने पामतो जाय छे अने देहाभिमान पण तेने ओछुं थतुं जाय छे. पण तप कर्या विना देहाभिमान टळतुं नथी. माटे जेने भगवानने प्रसन्न करवा होय अने पोताना आत्माने अविनाश सुख पमाडवुं होय तेणे तो देहने दुःख थाय तो पण तप जरूर करवुं. अने जे जे सद्गुरुनी आज्ञा प्रमाणे वर्ते छे तेनुं तप धर्मे करीने जाणवुं.

–अने ज्ञानी छे तेणे तो देह थकी पोताना आत्माने नोखो मान्यो छे अने देहने दुःखरूप जाणे छे. अने ते देहने तपे करीने सदाय दंड दीधा करे छे. केमके देहनुं तो एणे प्रमाण कर्युं छे जे 'देहनी अंते क्रमी, विष्टा अने भस्म ए त्रण संज्ञा थनारी छे, पण देहमांथी कांइ सार वस्तु नीसरवानी नथी.' अने वळी ज्ञानी एम जाणे छे जे 'देहने जो पुष्ट करीशुं तो तेमांथी काम, क्रोधादिक अंतरशत्रु जागशे.' एम जाणीने ज्ञानी जे ते सावधान थको तप, व्रतादिके करीने देह इन्द्रियोने दम्या करे छे. अने जो ज्ञानने माने करीने भोळप राखीने तप न करे अने पंचविषयमांथी एक विषयनो पण संबंध राखे तो ते ब्रह्मस्थितिमांथी जरूर पडी जाय ते सिद्धांतवार्ता छे. माटे एम जाणीने ज्ञानी छे ते भोळप राखीने विषयनो संबंध राखे ज नहीं अने तप, व्रतादिक नियमने दृढ करीने राखे, अने ते तपने विषे ज अखंड स्थिति रहे. अने ते तपमां ज आनंद पामे, ते तप ज्ञाने करीने जाणवुं. अने एवी रीते ज्ञानीनुं तप धर्मवाळाना करतां घणुं ज श्रेष्ट छे.

–अने त्रीजुं तप जे ते वैरागे करीने छे. अने ते तप ज्ञानीना करतां पण अति उत्तम छे. केमके जे वैरागे करीने पिंड, ब्रह्मांडनो चार

चांदलो कर्यो हता अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देश-देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

प्रश्न–पछी महाराजनी आरती, धून करीने सर्वे हरिभक्तजन बेठा पछी भक्त जेठाए प्रश्न पूछ्युं जे "हे महाराज ! केटलाक जीव भूत, प्रेत आदिक तथा डाकण, वीर आदिकनुं नाम लइने धूणे छे अने जीव हिंसा तथा दारू माटी आदिकनुं भक्षण करे छे अने पापनी प्रवृत्ति जेवुं जणाय छे, माटे ते साचुं हशे के खोटुं हशे ? ते कहो."

पछी महाराज बोल्या जे " ए तो आ विश्वमां बे प्रकारना जीव छे. तेमां एक दैवी जीव छे अने एक आसुरी जीव छे. ते जे आसुरी जीव छे ते तो असद्‌गुरुने शरणे जाय छे. ते असद्‌गुरु केवा छे ? तो कामी, क्रोधी, लोभी, स्वादी अने मानी छे. अने ते असद्‌गुरुना मते 'विश्वना कर्ता भगवान ज नथी अने काळ, कर्म, स्वभाव तेने करीने विश्व एनी मेळे थाय छे.' एम असद्‌गुरु समजे छे. अने वळी पाखंडी एवा जे असद्‌गुरु ते जे ते भोळा लोकोने धूतवा सारु अने पोताने दारू–माटीनुं भक्षण करवुं होय ते सारु शुद्र एवा जे देव तेने विषे भोळा अने विश्वासीने आस्ता बंधावे छे.

ते शुद्रदेव केवा छे ? तो केवळ वहेम मात्र छे, सत्य नथी. जेम नाना बाळकने कहे जे 'घरमां बावड छे' एम कहीने बीवडावे छे, अने ते बाळक पण भयने पामे छे, पण बाघड वस्तुगते ज नथी. तेम पाखंडी एवा जे असद्‌गुरु तेणे ठेरव्या एवा जे सेलडी, शिकोतर, भूत, प्रेत, डाकण, हेण, वीर अने चुडेल आदिक ते सर्वे मिथ्या छे, पण बाळक जेवा भोळा, मूर्ख अने अज्ञानी तेने धूतवा सारु खोटां खोटां वहेम नाख्या छे, पण ए सत्य नथी. तो पण पाखंडी एवा जे असद्‌गुरु ते जे ते भोळा लोकोने तेनी आस्ता बंधावे छे अने तेनी उपासना करावे छे.

त्यारे कोइ एम कहेशे जे "एवा पापरूप पंथ जगतमां केम चालता हशे ? तो कामी एवा जे आसुरी गुरु ते काम भोगववा सारु एवां खोटां वहेमनां नाम लइने एवी जे पापणी स्त्रीयो जेने एक पुरुष थकी धरपत थती न होय ते एवा फेल करीने आसुरी पुरुषना संग करे छे. अने वळी अति लोभी एवा जे असद्‌गुरु ते धन धूतवा सारु विश्वासी अने भोळा लोकोनी आगळ असत् देवोना नाम लइने पापने मार्गे चडावे छे. ते केवी रीते पाप करे छे ? तो पाखंड-मार्गने विषे प्रीतिवाळा एवा जे अज्ञानी जीव तेने पूर्वना पापे करीने कांइक रोग थाय त्यारे ते आसुरी एवा जे असद्‌गुरु तेनी पासे जाय, त्यारे ते लोभी गुरु एम कहे जे 'एने तो वडगाड वळग्यो छे, ते मातानी मानता करो अने भूवा पासे दाणा जोवडावो.' पछी भूवो दाणा खोटा खोटा जोइने कहे जे 'डाकलां मंडाववा जोइशे अने तेनी आवरदा तो आवी रही छे, पण माता एम कहे छे जे "मारा नैवेद् करो अने एना जीवनी साटे एक जीव आपो. अने मारा पोठियाने एक उतार आपो तो तेने सारुं थाय.' पछी ते पापीना पाप भेगां थया होय तेणे करीने असत्पुरुषनी प्रतीति आवे छे. अने एवां पापकर्म करे छे. अने असद्‌गुरु तेनुं द्रव्य सर्वे भेगा थइने धूती जाय छे.

—अने वळी केटलीक पापणी स्त्रीयो होय ते चार प्रकारे वळगाडनुं तथा लोतर, वीर, डाकण, चुडेल आदिकनुं नाम लइने केवळ ढोंग करे छे, तेमां एक तो स्त्री भोळी होय अने तेने कांइ रोग थाय त्यारे ते एम कहे जे 'मने कांइक वळग्युं छे,' एम भोळपणें करीने मानी ले छे. अने बीजी जे स्त्री आळसु होय ते काम कर्यानी आळसे करीने कहे जे 'मने तो वळगाड वळग्यो छे ते मारा जीवने सुवाण रहेवा देतुं नथी' एम पडपंच करीने बेसी रहे. अने कोइ घरना माणस काम करवानुं

कहे तो ढोंग करीने पडी जाय अने बोले-चाले नहीं. अने वळी क्यारेक खोटुं खोटुं धूणे अने घरना माणस सर्वेने बीवरावे, एवी रीते कपट करीने बेठी बेठी खाय. अने त्रीजी स्त्री छे ते शोखे करीने धूणे छे अने चोटला वधारीने बीजा पुरुषोने देखाडे छे. अने केटलांक देवदेवीयोनां खोटां खोटां नाम लइने जगतमां भूवी कहेवाय छे अने पूजाय छे, ते एवो शोख करे छे. अने जे चोथी स्त्री जे तेने कां तो पोतानो पुरुष होय ते गमतो न होय अने कां नानो होय अने पोते मस्तानी होय अने पोताने व्यभिचार करवो होय तेथी वळगाडनुं तथा लोतरनुं नाम लइने व्यभिचारीया एवा जे असद्‌गुरु अने तेना संगी तेनी साथे व्यभिचार करे छे.

—अने ते व्यभिचारीया पुरुषने जो दारू पीवो होय के मांस खावुं होय तो पोते खोटुं खोटुं धूणीने कहे जे 'माताने दारू–माटीनो भोग आपो नहींतर कोइक माणसनो घात थशे.' एम बीक देखाडीने दारू–माटीना भोग धरावीने ते असत्पुरुषने भक्षण करावे छे. अने जो तेने लोभ होय तो पोते एम कहे जे 'आटलो उतार जोइशे ते आपो 'एम कहीने तेना घरना माणसोने हेरान करे छे अने पोते व्यभिचार करे. अने जे व्यभिचारिणी स्त्री होय तेने पोताना घरनी खबना होय नहीं. माटे एवी चार प्रकारनी स्त्रीयो अने आसुरी एवा जे कामी, लोभी, स्वादी अने मानी गुरु अने तेना शिष्य ते भेगा थइने एवा भूत, प्रेतादिकना नाम लइने अधर्म–कर्म करे छे.

माटे एवा कर्मना करनारा अने खोटा भूत, प्रेतादिकने माननारा ते आलोकमां पण महादुःखने पामे छे अने मरीने घोर नरकमां पडे छे अने तेने जमना दूत माथामां मुगदळना मार मारे छे अने तेनो कोइ

काळे छूटको थतो नथी. केमके अधर्म-कर्म करवा सारु केवळ जे वस्तु भूत प्रेतादिक त्रण काळमां सत्य नथी तेनुं नाम लइने जगतमां केटलाक भोळा लोकने हेरान करे छे ते पापे करीने जमना दूत तेने नरकमांथी पाछा काढता नथी.

—माटे जेने पोताना आत्मानुं रूडुं करवानी इच्छा होय तेने एवा अधर्मी पुरुषनो संग करवो नहीं अने दैवी एवा जे धर्म, ज्ञान, वैराग अने भगवाननी भक्तिए युक्त जे संत तेनो समागम मनकर्मवचने करवो अने तेनी आज्ञा प्रमाणे वर्तवुं. ते एवा सद्‌गुरुनी शी आज्ञा छे? तो वेदमां कह्या जे वर्णाश्रमना धर्म ते प्रमाणे दृढपणें वर्तवुं अने अधर्म जे चोरी, छिनाळी, दारू, माटी, वटलवुं, वटलाववुं तेनो त्याग करवो. अने देहथी नोखो एवो जे आत्मा तेने पोतानुं स्वरूप मानवुं अने मायिक एवा जे पंचविषय तेनी वासनानो त्याग करीने प्रत्यक्ष भगवाननी नवधा भक्ति करवी, एज जीवने कल्याण थवानो उपाय छे."

इति श्री मुखसिद्धांत १२४ समाप्त ॥

---

१२५ विषयः—वेद-वेदांत सिद्धांत सार

श्री हरिकृष्णाय नमोनमः—संवत् १९१९ना श्रावण वद २ ने दिवस महाराज श्री हरिकृष्ण परमात्मा गाम श्री कमळेजमध्ये त्रवाडी गगलवा नथुरामने घेर उत्तरद्वार ओरडानी रवेशमां गादीतकिया बिछावीने ढोलिया उपर विराजमान थया हता. सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां. अने पुष्पना आभूषण सर्वे अंगमां शोभी रह्या हता. कंकुनो चांदलो कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा हजारो हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी महाराज बोल्या जे "आज अमे एक वार्ता करीशुं ते चार वेद अने सर्वे शास्त्रनो सार कहेवाशे, माटे तेने जे समजशे तेने परमात्माना स्वरूपनुं ज्ञान यथार्थ थशे अने तेने मोक्षनो मार्ग शुद्ध समजाशे. माटे ते वात कहीए तेने सर्वे चित्त दइने सांभळजो. जे आ जगतने विषे केटलाक मनुष्य छे ते परमात्माने 'निराकार' कहे छे अने केटलाक 'साकार' जाणीने भजे छे. अने केटलाक 'अकर्ता' कहे छे अने केटलाक 'कर्ता' कहे छे. एवी रीते एक भगवानने जुदा जुदा समजे छे.

—अने चार वेद, छ शास्त्र, अढार पुराण अने भारतादिक इतिहास तेने विषे तो एक भगवाननुं ज प्रतिपादन कर्युं छे, तथा जे जे भगवानना अवतार रामकृष्णादिक थइ गया तथा नारदादिक संत तथा व्यास वाल्मीकादिक ऋषियो तेणे पण एक ज परमात्मानुं प्रतिपादन कर्युं छे. तो-पण जे अतिशय अज्ञानी छे ते परमात्माने जुदा जुदा जाणे छे अने एक बीजा वाद विवाद करे छे. जेम आंधळा पुरुषो हाथीने जोइने पछी एक बीजा परस्पर लडाइ करे, तेम जे अज्ञानी छे ते परमात्माना स्वरुपने यथार्थ जाण्या विना परमात्माने जुदा जुदा कहे छे. अने जे ज्ञानी छे ते तो एम समजे छे जे 'साकार, निराकार, कर्ता, अकर्ता,' आदिक अनंत गुण कह्या छे ते सर्वे गुण एक मनुष्याकृतिने धारण कर्ता एवा जे रामकृष्णादिक प्रत्यक्ष भगवान तेना ज गुण कह्या छे. पण रामकृष्णादिक प्रत्यक्ष भगवाननी मूर्ति विना बीजो कोइ भगवान नथी. अने साकार, निराकारादिक जे अनंतगुण ते तो प्रत्यक्ष भगवानना ऐश्वर्य छे. अने ते प्रत्यक्ष भगवान छे ते तो ऐश्वर्यवान छे.

जेम एक राजा छे अने ते राजानुं राज्य होय, तेम राजाने ठेकाणे तो रामकृष्णादिक प्रत्यक्ष भगवान छे, अने जेम राजानुं राज्य जे शहेर, गामडां,

देश, मुलक, परगणां, पटेल, कामदार, दिवान, हाथी, घोडा आदिक राजानुं राज्य छे, तेम परमात्मानुं राज्य जे 'सगुण, निर्गुण, कर्ता, अकर्ता, एकदेशी, सर्वदेशी, साकार, निराकार' आदिक अनंत शक्तियो छे ते सर्वे प्रत्यक्ष भगवानना ऐश्वर्य छे. एम जाणीने जे ज्ञानी छे ते प्रत्यक्ष भगवाननी ज दृढ उपासना करे छे अने जे वेदादिक शास्त्र छे ते पण सर्वे प्रत्यक्ष भगवाननी मूर्तिनुं ज वर्णन करे छे. ते जेम राज्ये करीने राजानुं नाम पडे छे जे जेम गोहेलवाडनो राजा ते गोहेल कहेवाय छे, झालावाडनो राजा ते झालो कहेवाय छे, काठियावाडनो राजा ते काठी कहेवाय छे अने मारवाडनो राजा ते मारू कहेवाय छे. तेम भगवाननी जड, चैतन्यादिक शक्तियो छे. ते शक्तियोए करीने भगवानना घणाक जुदा जुदा नाम पडया छे, तेणे करीने अज्ञानी जीव भरमाय छे.

जेम एक पुरुषना बे नाम होय; ते एक नाम होय गोविंद अने बीजुं नाम होय गीगो. ते बे नामने न जाणता एवा पुरुषने ते गोविंदने सगे कह्युं के 'गोविंदने घेर जइ आ एक पदार्थ तेने आपजे.' त्यारे ते पुरुष गोविंदनुं घर पूछतो पूछतो तेने घेर जइने पूछयुं के 'गोविंद घेर छे?' त्यारे ते गोविंद पोते ज मळ्यो अने तेणे कह्युं के 'मारुं नाम गोविंद छे,' एम कहीने तेने आसन बेसवा आप्युं. ते बेठो तेटलामां कोइ बीजो पुरुष आव्यो. तेणे कह्युं के 'गीगा मारा घर सुधी चालने घडीकनुं तारुं काम छे,' पछी ते त्यां गयो. त्यारे पेला पुरुषने संशय थयो जे 'आ पुरुषनुं नाम तो गोविंद नहीं अने आनुं नाम तो गीगो छे, माटे चालो आपणे घेर नहींतर आपणने छेतरीने आ पदार्थ लइ लेशे.' एम समजीने ते तो चालतो थयो.

तेम भगवानना अनंत नाम अने अनंत गुण छे, तेमांथी एक नाम–साकार के निराकारादिक–समजाइ गयुं होय तेने पकडी राखे.

पछी बीजुं नाम के बीजो गुण कोइ कहे तो तेमां तेने भ्रम थाय अने ते साथे लडाइ करे. अने जे भगवानना स्वरूपने यथार्थ जाणनारा छे ते तो एम जाणे छे जे 'रामकृष्णादिक प्रत्यक्ष भगवान छे ते ज सर्वे नामना नामी छे अने सर्वे गुणना गुणी छे. ते श्रीकृष्ण भगवाने गोवर्धन तोळ्यो तेणे करीने भगवाननुं नाम 'गिरधारी' पड्युं छे. अने मुर नामनो दैत्य भगवाने मार्यो तेणे करीने 'मुरारि' पड्युं छे.

वळी तेम भगवाननी जड, चैतन्य एवी बे प्रकारनी शक्तियो छे. तेमां जड शक्ति जे माया ते साकार, सगुणादिक छे. अने चैतन्य शक्ति जे आत्मा ते निर्गुण, निराकार छे. ते ए बे शक्तियोए करीने भगवानने सगुण, निर्गुण, साकार, निराकार आदिक अनंतरूपे वेद्मां कह्या छे. जेम राजाना वखाण राज्ये करीने कराय छे. तेम भगवाननो महिमा पोतानी जीव, ईश्वर रूप चैतन्य शक्ति तथा पिंड, ब्रह्मांडादिक जड शक्ति तेनी उपमा दइने प्रत्यक्ष भगवानने 'साकार, निराकार, सगुण, निर्गुण, कर्ता, अकर्ता आदिक अनंतरूपे' वेद् गाय छे. जेम राज्य-समृद्धिए करीने राजाना वखाण चारण, भाट करे छे, तेम भगवाननो महिमा पण भगवाननी जड, चैतन्यादिक शक्तियोए करीने कहेवाय छे. माटे वेद्मां परमात्मानो महिमा संपूर्ण कह्यो छे अने ते वेद् अनादिना छे. एटले परमात्माना स्वरूपनुं जे ज्ञान तेनुं नाम वेद् छे. माटे ते वेद् परमात्मा पासे छे. केमके परमात्मा पोते पोताने अनादिना जाणे छे. माटे वेद् अनादिना छे.

ते वेद् आ पृथ्वी उपर क्यारे प्रगट थया छे? अने कोणे प्रगट कर्या छे? तो आत्यंतिक प्रलयने अंते परमात्माए पोते जगतनी उत्पत्ति करीने जीवोने पोताना स्वरूपनुं ज्ञान आपवा सारु प्रथम पोते लक्ष्मीनारायणनामे अवतार धारण करीने वेद्रूप पोताना स्वरूपनुं ज्ञान ते

जीवोने आपवा सारु प्रथम ब्रह्माना हृदयने विषे परमात्माए वेद प्रेर्या; एटले ज्ञान आप्युं. पछी ते ज्ञान ब्रह्माए मरीच्यादिक ऋषियोने आप्युं. एवी रीते वेदरूप जे परमात्माना स्वरूपनुं ज्ञान ते जगतमां प्रवर्त्युं छे. माटे वेदमां परमात्मानो महिमा संपूर्ण कह्यो छे. केमके पोताना स्वरूपना ज्ञानने यथार्थ कहेवाने तो पोते परमात्मा ज समर्थ छे; पण बीजो कोइ देव, ब्रह्मादिक पण परमात्माना महिमाने कहेवाने समर्थ नथी तो मनुष्यनी शी गणतरी ? ते पण भगवद् गीताना अध्याय १५मां श्लोक १५—

वेदैश्च सर्वैरहमेव वेद्यो, वेदांतकृन् वेदविदेव चाहम् ।

अर्थः—श्रीकृष्ण भगवान कहे छे "सर्वे वेदे करीने जाणवा योग्य ते हुं. अने वेदनो कर्ता अने वेदनो 'वेत्ता' एटले वेदनो जाणनारो ते हुं ज छुं." एवी रीते परमात्मा पोते पोताना जाणनारा अने वेदना कर्ता छे. अने पोते परमात्मा कृपा करीने पोतानुं स्वरूप जणावे छे त्यारे एना एकांतिक भक्त ते जाणी शके छे. ते आ वार्ता पण एम ज छे; पण एमां कांइ संशय नथी. केमके जेनी वात जेम होय तेनी वात ते ज जाणे छे. माटे वेद पण वेदना कर्ता थकी ज सवळा समजाय छे.

ते सारु वेदमां जेवी रीतनुं निर्बाधपणें शुद्ध ज्ञान कह्युं छे. तेने हुं कहुं छुं. शा माटे ? तो ज्यारे ज्यारे वेदना ज्ञानरूप जे एकांतिकधर्म तेनो लोप थाय छे त्यारे ते वेदधर्मना स्थापनने अर्थे परमात्मा जे ते पृथ्वी उपर प्रगट थाय छे. ते पण भगवद् गीताना अध्याय चोथाना श्लोक सात आठमां कह्युं छे—

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत ।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥७॥
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम् ।
धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे ॥८॥

अर्थ :—"जे जे समयने विषे धर्मनी ग्लानी थाय छे अने अधर्मनुं प्राबल्य थाय छे ते समयने विषे" श्रीकृष्ण कहे छे "हुं आ जगतमां प्रगट थाऊं छुं. एवो हुं युगने युगने विषे एटले वारेवारे साधुना रक्षण-ने अर्थे अने 'दुष्कृत' एटले मारा अवतार अने मारा बांधेला धर्म तेने न माननारा एवा जे असुर तेना मतनो नाश करवाने अर्थे अने धर्मना स्थापनने अर्थे अवतारने धरुं छुं." एवी रीते परमात्मा पोते वेदना ज्ञान-ने आपवाने अर्थे प्रगट थइने ज्ञान आपे छे त्यारे जीवोने ज्ञान थाय छे.

माटे ते वेदना ज्ञानने यथार्थ हुं कहुं छुं. जे परमात्मानुं अनादि स्वतःसिद्ध स्वरूप केवुं छे ? तो द्विभुज छे अने मनुष्याकारे छे, मनोहर छे, पुरुषाकार छे अने दिव्यमूर्ति छे. अने ते परमात्मा सत्य-संकल्पी छे; ते जे जे संकल्प धारे छे तेम ज तत्काळ थाय छे. ते परमात्मा प्रथम पोते एकला ज हता; बीजो कोइ आकार न हतो. अने पोताना अंगनो प्रकाश एटले पोतानुं ज्ञान जेने ब्रह्म कहे छे, ते प्रकाश चिदाकाशरूप जे आकाश तेने विषे सर्वे ठेकाणे व्यापी रह्यो हतो. अने ते परमात्माने कोइ जाणतुं न हतुं. त्यां श्लोक :—'स वेत्ति वेद्यं न च तस्य वेत्ता।' अर्थ :—"परमात्मा सर्वने जाणे छे पण परमात्माने कोइ जाणतुं नथी."

तेनो सारांश जेम अन्नादिक वृक्षादिकमां अनेक जीवो छे, ते सर्वे जीवोने मनुष्य जाणे छे. पण मनुष्यने वृक्षादिकना आत्मा ते कोइ जाणता नथी. तेम चिदाकाशरूप जे आकाश तेने विषे चार भूतना परमाणुंओ रह्या छे. ते परमाणुओमां अनेक जीव रह्या छे, ते जीव अना-दिना रह्या छे; ते सर्वे जीवने परमात्मा जाणे छे, पण ते जीव कोइ परमात्माने जाणता नथी. एवी रीते परमात्मा सर्वने अगम्य अने अगोचर छे.

—एवा जे परमात्मा तेणे ते जीवो उपर दया करीने तेने पोताना स्वरूपनुं ज्ञान आपीने पोताना जेवा सुखिया करवाने अर्थे पोते प्रथम संकल्प कर्यो के 'एकोऽहं वहु स्याम् इति श्रुतिः।'

अर्थः—परमात्मा कहे छे 'एक हुं छुं, ते मारा साधर्म्यपणांने पामे एवा वहु थाओ.' पछी पोताना सत्य संकल्पे करीने तत्काळ जगतनी उत्पत्ति थइ. त्यां श्रुति—'स ऐक्षत इमान् लोकान् सृजेति।'

अर्थः—'स ऐक्षत एटले परमात्मा जे ते जोता हवा कहेतां परमात्माए इच्छारूप दृष्टि करी एटले जगतनी उत्पत्ति थती हवी.'

ते उत्पत्ति शी रीते करी? तो चिदाकाशने विषे चार भूतना परमाणुओए सहित अनेक आत्मा अनादि काळना अज्ञानरूप रह्या हता, ते आत्माओने परमात्माए पंचभूतना देह सर्जी आप्या. ते शा सारु देह सर्जी आप्या? तो ते देहे करीने धर्म, अर्थ, काम अने मोक्ष ए चार पुरुषार्थनी सिद्धिने पामवाने अर्थे परमात्माए जीवोने देह सर्जी आप्या छे. त्यां श्रीमद्‌-भागवतना दशम स्कंधना ८७ मा अध्यायमां कह्युं छे जे श्लोक—

बुद्धीन्द्रियमनः प्राणान् जनानामसृजत् प्रभुः।
मात्रार्थं च भावार्थं च आत्मने कल्पनाय च॥ २॥

अर्थः—"प्रभु जे हरि ते जे ते जन जे जीव तेमनां बुद्धि, इन्द्रियो मन अने प्राण तेमने सृजता हवा.

शा माटे? के विषयादिकना भोग भोगववाने अर्थे अने वारेवारे जन्म लेवाने अर्थे अने जन्म लइने कर्म करवाने अर्थे अने परलोकने विषे जवाने अर्थे, एटले परलोकमां जइने भोग करवाने अर्थे. वीजुं अंते जे पोताना मननी कल्पना तेनो नाश थवाने अर्थे एटले मोक्षने काजे परमात्मा सर्जे छे."

—एवी रीते जीवोना अज्ञानने टाळीने मोक्ष करवाने अर्थे परमात्माए जगत सर्ज्युं छे. माटे आत्माने अनादिनुं अज्ञान छे ए ज जगत उपजवानुं कारण छे. ते पण वेदमां कह्युं छे. श्रुति 'आत्माज्ञानात् जगत भाति ।'

अर्थः—'आत्मा जे ते पोताना अज्ञाने करीने जगतरूप शोभे छे.' कहेतां जन्ममरणने पामे छे. वळी—

तस्मादात्मन आकाश संभूत, आकाशाद् वायु, वायोरग्नि,
अग्नेराप, अदभ्यः पृथिवी, पृथिव्या औषधय,
औषधिभ्योऽन्नमन्नात् पुरुषः ।

अर्थः—"परमात्मानी इच्छाए करीने चैतन्यरूप आत्मा थकी आकाशरूपी अंतःकरणनी कल्पना थइ छे. अंतःकरणरूप आकाश थकी वायु उत्पन्न थतो हवो, वायु थकी अग्नि थतो हवो, अग्नि थकी जळ थतुं हतुं, जळ थकी पृथ्वी थइ, पृथ्वी थकी औषधिओ थती हवी. औषधियो थकी अन्न थयुं छे अने अन्न थकी देह थया छे."

एवी रीते परमात्माए पोतानी जड, चैतन्यादिक शक्ति वडे करीने जगतनी उत्पत्ति करी छे. ते ए बे शक्तियोना आधार, प्रेरक, कारण अने प्रकाशक परमात्मा छे. अने जगत परमात्मानुं कार्य छे. माटे कार्यने नामे नाम कारणनुं पडे छे. जेम घोडे चड्यो होय ते 'अश्वार' कहेवाय छे, जे बंधूक बांधे ते 'बंधूकीयो' कहेवाय छे अने जे तरवार बांधे ते 'तरवारीयो' कहेवाय छे. तेम परमात्मा जे ते जड, चैतन्यादिक शक्तियोना कारण छे. माटे तेनी उपमा दइने वेदमां परमात्माने गाया छे. पण ते शक्तियो विना परमात्मा कहेवा-जाणवामां आवता नथी. ते पण वेदमां कह्युं छे—

यतो वाचो निवर्तन्ते अप्राप्य मनसा सह इति श्रुतिः ।'

अर्थः–"मन संगाथे वाणी जे ते परमात्माना स्वरूपनुं प्रतिपादन करतां स्वरूपने पाम्या विना पाछी वळे छे," एटले मन, आदिक इन्द्रिय अंतःकरणथी परमात्मा पर छे. कहेतां जड, चैतन्यादिक शक्तियोनुं वर्णन थाय छे. पण परमात्मा वर्णन कर्यामां आवता नथी, परमात्मानो महिमा तो अनंत अपार छे, पण ते कोइना कह्यामां आवतो नथी. माटे वेद पण परमात्मानो महिमा कहेतां कहेतां पछी 'नेति नेति' कहे छे.

एटले जे जे मन, वाणी आदिक इन्द्रियो अंतःकरणे करीने वर्णन करवामां आवे ते परमात्मा नहीं. कहेतां वेदे प्रथम परमात्मानुं विश्वरूपे वर्णन कर्युं के 'विश्वरूप परमात्मा छे.' पछी वळी कह्युं के नेति. एटले विश्व परमात्मा नहीं; परमात्मा तो विश्वना आधार छे, कारण छे अने विश्वथी पर छे. पछी जीव, ईश्वर, आदिकना चैतन्य रूपे परमात्मानुं वर्णन कर्युं के 'जीव, ईश्वरना आत्मा ते परमात्मा छे.' पछी वळी कह्युं के नेति. एटले जीव, ईश्वरना आत्मा ते परमात्मा नहीं; परमात्मा तो जीव, ईश्वरना प्रकाशक छे अने जीव, ईश्वरथी पर छे. पछी ब्रह्म रूपे परमात्मानुं वर्णन कर्युं के 'ब्रह्म परमात्मा छे.' पछी वळी कह्युं के नेति. एटले ब्रह्म परमात्मा नहीं; परमात्मा तो ब्रह्मना प्रकाशक छे अने ब्रह्मथी पर छे. एवा सर्वना कारण, सर्वना आधार, सर्वना प्रकाशक अने सर्वथी पर दिव्यमूर्ति परमात्मा छे. ते परमात्मा कोइना कह्यामां आवता नथी. माटे वेद 'नेति नेति' कहे छे.

जेम चिंतामणिने हीरा, मोती आदिक द्रव्यनी उपमा आपीने

चिंतामणिनो महिमा कहीए पण चिंतामणिमां जे द्रव्य रहेलुं छे तेना करोडमां भागनुं द्रव्य पण कहेवाय नहीं. केमके चिंतामणिमांथी तो जेटलुं जेटलुं द्रव्य चिंतवीए तेटलुं द्रव्य तो एक फेरे प्रगट थाय. ते एवुं अनेक वार चिंतवीए तो अनेक वार प्रगट थाय तो पण चिंतामणिमांथी द्रव्य खूटे नहीं. एवी अपार द्रव्यरूप चिंतामणि छे. ते द्रव्यनुं प्रमाण थाय नहीं जे 'चिंतामणिमां आटलुं द्रव्य छे.' तेम परमात्मानो महिमा पण अनंत अपार छे. ते पोतानी इच्छा मात्रे करीने परमात्मा जे ते अनंत कोटी विश्वने एक क्षण मात्रमां प्रगट करे छे. अने एवां अनेक विश्वने अनेक वार उत्पन्न करे तो पण जेना सामर्थ्यनो पार आवे नहीं एवा अपार महिमावाळा परमात्मा छे, ते जेनो महिमा कह्यामां आवतो नथी. माटे परमात्माने वेद 'नेति नेति' कहे छे.

–तो पण जीवोने परमात्माना स्वरूपनुं ज्ञान कराववा सारु परमात्माने जड चैतन्यादिक शक्तियोनी उपमा दइने परमात्मानुं वर्णन करे छे. पण परमात्मा तो ए सर्वथी पर छे, पण ते कह्यामां आवता नथी. माटे जेम चिंतामणिनुं ज्ञान कराववा तेने हीरा, मोतीनी उपमा आपे छे तेम चिंतामणिरूप एवा जे परमात्मा ते जीवोने पोतानुं स्वरूप जणाववा सारु रामकृष्णादिक पंचदेवरूपे पृथ्वी उपर प्रगट थाय छे. ते परमात्मा उपरथी बाह्यदृष्टिए जोवामां तो बीजा मनुष्य जेवा जणाता होय, माटे तेनो महिमा देखाडवा सारु ते प्रत्यक्ष परमात्माने जड, चैतन्यादिक शक्तियोनी उपमा वेद-शास्त्र आपे छे. तेणे करीने प्रत्यक्ष परमात्माने विषे जीवोने प्रीति थाय छे अने प्रत्यक्ष रामकृष्णादिकने विषे जे जीवने प्रीति थइ ते जीव परमात्माना धामने पामे छे. ते पण वेदमां कह्युं छेः–

मरणे या मतिः सा गतिर्भवेत् इति श्रुतिः॥

अर्थः–'जेनी मति जेने विषे होय त्यां तेनी गति थाय छे;' एटले

ते त्यां जाय छे. ते जीवने ज्यां सुधी पिंड, ब्रह्मांडादिक मायाना पदार्थमां मति होय, कहेतां मायिक पदार्थमां वासना होय त्यां सुधी तेने मायामां गति थाय छे; कहेतां जगतमां जन्म, मरण, गर्भवास अने चोराशीमां जाय छे. अने जेने मायिक पदार्थमांथी प्रीति टळीने मायाथी पर एवा जे प्रत्यक्ष रामकृष्णादिक ज्ञानदाता मनुष्य स्वरूप परमात्मा तेने विषे मति कहेता प्रीति थइ ते आत्मा परमात्माना धामने पामे छे अने तेनी मुक्ति थाय छे. केमके आत्मा जे ते परमात्माना स्वस्वरूपना अज्ञाने करीने जन्म-मरणने पामतो हतो, ते परमात्माने जाणीने तेने विषे प्रीति करी एटले तेनी मुक्ति थाय छे.

—माटे चार वेद अने सर्व शास्त्रना ज्ञाने करीने ते ज्ञानना आपनारा एवा जे सद्गुरुरूप रामकृष्णादिक परमात्मा, जे पोताने मळ्या होय, तेना स्वरूपनो निश्चय करीने तेने विषे प्रीति करवी, एटलो ज सर्व शास्त्रनो सार छे. माटे वेद—शास्त्रनुं ज्ञान सद्गुरु पासेथी पामवुं. हवे ते वेद शास्त्रमां जेवी रीते परमात्माना स्वरूपने जाणवा सारु ज्ञान कह्युं छे तेने कहुं छुंः—'सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म इति श्रुतिः'। अर्थः—परमात्मा केवा छे ? तो सत्य छे; एटले असत्य जे पिंड, ब्रह्मांडादिक माया तेथी पर छे; ज्ञानरूप छे एटले द्रष्टा—दृश्य भेदे रहित छे. अने अनंतरूप एटले जीव, ईश्वर, माया, ब्रह्म, ए सर्वेना प्रकाशक, आधार, कारण, प्रेरक अने ए सर्वेथी पर अने जेना महिमानो अंत नथी एवा ब्रह्म एटले परमात्मा छे.

तेमां कोइने शंका थाय जे 'ब्रह्मना प्रकाशक परमात्मा छे,' पहेलुं एम कह्युं अने वळी कह्युं के 'ब्रह्म एटले परमात्मा,' तेनुं केम समजवुं? तो एनुं एम समजवुं जे 'परमात्मा तो नाम रूपथी पर छे. पण तेना जे नाम पड्यां छे ते पोतानी जड, चैतन्यादिक शक्तियो छे. ते शक्तियोना

कारण परमात्मा छे. माटे कार्यने नामे नाम कारणनुं कहेवाय छे. ते ब्रह्मना कारण परमात्मा छे; माटे ब्रह्मने नामे करीने परमात्माने ब्रह्म कह्या छे,' एम समजवुं. पण परमात्मा तो ब्रह्मना आधार अने ब्रह्मथी पर छे.

ते परमात्मा प्रत्यक्ष छे एम वेदे प्रथम प्रतिज्ञा करी छे. ते वेदनुं महावाक्य 'ॐ सोऽहम्!' अर्थः—प्रत्यक्ष परमात्मा ज्ञानदाता कहे छे 'ॐ एटले देहचतुष्टयातीत कहेतां जीव, ईश्वर, माया, ब्रह्मथी पर एवा परमात्मा ते 'सोऽहम्' एटले 'ते हुं छुं,' एवी रीते प्रत्यक्ष परमात्माए कह्युं. पछी ते वातनी सिद्धि करी आपवाने अर्थे 'सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म' तेना अर्थने प्रकाश करे छे जे सत्य, ज्ञान, अनंत अने ब्रह्म एवा चार पदे करीने परमात्माने कह्या. पण तेणे करीने परमात्माना स्वरूपनुं ज्ञान यथार्थ थयुं नहीं. पछी ते चार पदना चार भाग जुदा जुदा करीने तेना चार वेद कर्या; एटले चार प्रकारे परमात्माना स्वरूपनुं ज्ञान कह्युं छे. ते चार वेदमां चार प्रकारे परमात्माने कह्या छे. ते चार वेदना नाम—ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद अने अथर्ववेद.

—ए चार वेदनुं पोते परमात्माए लक्ष्मीनारायण नामे अवतार धारण करीने प्रथम ब्रह्माने ज्ञान आप्युं छे. पछी ब्रह्माए ते प्रत्यक्ष परमात्माना स्वरूपनो ज्ञाने करीने निश्चय करीने ते प्रत्यक्ष मूर्तिने पोताना आत्माने विषे ध्यानमां राखीने ते चार वेदनुं ज्ञान ब्रह्माए मरिच्यादिक ऋषियोने आप्युं. पछी ऋषियोए पण एवी रीते प्रत्यक्ष परमात्माना स्वरूपनो निश्चय करीने तेनी भक्तिए सहित थइने ते प्रत्यक्ष परमात्माना स्वरूपनुं ज्ञान सर्वेने सहेली रीते थाय तेने अर्थे चार वेदनी सिद्धि करी आपवा सारु छ शास्त्र कर्या छे. ते उपर शास्त्र प्रकारनो श्लोकः—

द्वौ तर्कौ चैव मीमांसौ द्वौ योगाविति षड् बुधः ।
वेदार्थदर्शकत्वेन दर्शनानि प्रपच्यते ॥

अर्थः–"बे तर्क दर्शन, एक न्यायशास्त्र अने बीजुं वैशेषिक शास्त्र अने बे मीमांसा; एक पूर्वमीमांसा अने बीजुं उत्तरमीमासां; पूर्वमीमासां एटले धर्मशास्त्र अने उत्तरमीमासां एटले वेदांतशास्त्र. अने बे योग, एक सांख्यशास्त्र अने बीजुं पातांजलिशास्त्र. ए छ शास्त्र वेदना अर्थने देखाडे छे माटे तेने पंडित एटले ज्ञानी पुरुष षट्दर्शन कहे छे."अने ए छ शास्त्रे करीने वेदनुं ज्ञान साक्षात्कार थाय छे; कहेतां प्रत्यक्ष परमाना स्वरूपनो निश्चय थाय छे.

–अने ए छ शास्त्रमांथी सार काढीने तेना कपिल, नारदादिक मुनियोए परमात्माना स्वरूपनुं ज्ञान सहेली रीते सर्वेने थाय तेने अर्थे बीजां चार वेद उपर चार शास्त्र कर्यां छे. ते शास्त्रनां नाम–सांख्यशास्त्र, योगशास्त्र, वेदांतशास्त्र अने पांचरात्रशास्त्र ए चार शास्त्रे करीने चार वेदनी सिद्धि करी आपी छे. तेमां सांख्ये ऋग्वेदनी सिद्धि करी आपी छे, योगे यजुर्वेदनी सिद्धि करी आपी छे; वेदांते सामवेदनी सिद्धि करी आपी छे अने पांचरात्रे अथर्ववेदनी सिद्धि करी आपी छे. एवी रीते चार वेदनी सिद्धि करी आपी छे.

–माटे चार शास्त्रने जाणवे करीने चार वेदनुं ज्ञान थाय छे, कहेतां परमात्माना स्वरूपमां जीव जोडाय छे. अने ए चार शास्त्रे करीने चार वेदना ज्ञानने सिद्ध करीने ते ज्ञान एकने विषे समजवुं तेनुं नाम आत्यंतिक ज्ञान कहेवाय छे. कहेतां चार वेद अने चार शास्त्रे करीने प्रत्यक्ष ज्ञानदाता रामकृष्णादिकनुं स्वरूप तेने विषे परमात्मापणांनो निश्चय करवो तेनुं नाम आत्यंतिक ज्ञान छे, अने तेने एकांतिकभक्ति कहे छे.

तथा तेने भागवतधर्म पण कहे छे. अने ते आत्यंतिक ज्ञाने करीने जीवनी आत्यंतिक मुक्ति थाय छे. पण प्रत्यक्ष परमात्मा मळ्या विना अने चार वेदे करीने तेना स्वरूपनो निश्चय कर्या विना आत्यंतिक मुक्ति थती नथी.

केम के चार वेदे करीने जाणवा योग्य एवा जे परमात्मा तेने जीव भूले छे तेने करीने जीवने महादाकाशरूप अंतःकरण ते उत्पन्न थयुं छे अने ऋग्वेदे करीने जाणवा योग्य एवुं जे आत्मानुं व्यतिरेक स्वरूप–ब्रह्म तेने जीव भूल्यो छे तेथी जीवने मन उत्पन्न थयुं छे अने यजुर्वेदे करीने जाणवा योग्य एवुं जे परमात्मानुं अन्वय स्वरूप जे जीव, ईश्वर मायारूप जड, चैतन्यादिक शक्तियोए करीने कोटि ब्रह्मांडनी उत्पत्ति स्थितिए करीने सर्वना आधार, कारण, प्रकाशक, प्रेरक अने कर्मफळ प्रदाता एवा जे वैराटरूप ईश्वर जे परमात्मा तेने जीव भूल्यो छे, कहेतां नथी जाणतो तेथी जीवने चित्त उत्पन्न थयुं छे अने सामवेदे करीने जाणवा योग्य एवा जे द्रष्टादृश्य भेदे रहित ब्रह्मना प्रकाशक दिव्य-मूर्ति परमात्मा तेने जीव भूल्यो छे. कहेतां नथी जाणतो तेथी जीवने बुद्धि उत्पन्न थइ छे. अने अथर्ववेदे करीने जाणवा योग्य एवा जे ज्ञान-दाता प्रत्यक्ष भगवान परमात्मा तेने जीव भूल्यो छे, कहेतां प्रत्यक्ष भग-वान जीवने नथी मळ्या तेथी जीवने अहंकार उत्पन्न थयो छे. एवी रीते परमात्माना स्वरूपना अज्ञाने करीने जीवने अंतःकरण, मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार ते रूप माया उत्पन्न थइ छे.

–माटे हवे चार वेदना ज्ञानने सिद्ध करे तो ते माया टळी जाय छे. तेमां प्रथम ऋग्वेद अने सांख्यने ज्ञाने करीने मननी माया टळे छे; यजुर्वेद अने योगने ज्ञाने करीने चित्तनी माया टळे छे. सामवेद अने

वेदांतने ज्ञाने करीने बुद्धिनी माया टळे छे, अथर्ववेद अने पांचरात्रने जाणवे करीने अहंकारनी माया टळे छे. अने चार वेदनुं एकपणुं एवुं जे आत्यंतिक ज्ञान कहेतां प्रत्यक्ष भगवान पोताने मळे अने तेना स्वरूपनो उत्तम निर्विकल्प निश्चय थाय त्यारे पांचमुं अंतःकरणरूप जे मूळ अज्ञान जे महदाकाशरूप वासना ते नाश पामे छे अने जीवात्मा ब्रह्मरूप थइने परमपदने साक्षात्कार पामे छे.

हवे ते परमपदने पामवुं अने चार वेदनुं ज्ञान सिद्ध करवुं तेने अर्थे चार साधन सिद्ध करवां जोइए छीए, ते चार साधन कया ? तो एक धर्म एटले इन्द्रियोनो नियम राखवो कहेतां वर्णाश्रमना धर्म जेने जेम वेदमां कह्या होय तेमां दृढपणें रहेवुं अने देह–निर्वाहथी अधिक एवा जे इन्द्रियोने प्रिय रमणिक विषयभोग ते थकी इन्द्रियोने पाछी वाळवी, कहेतां उत्तम विषयनो त्याग करवो, तेनुं नाम धर्म कहेवाय छे अने बीजुं साधन ज्ञान. ते ज्ञान एटले शुं? तो स्थूळ, सूक्ष्म अने कारण ए जे त्रण देह ते थकी पोताना आत्माने जुदो जाणवो, अने 'त्रण देह अने त्रण देहना विषयभोग ते मारा नथी' एम समजीने ते विषयभोगनो त्याग करवो, अने सुख-दुःख, मानअपमान, हाण्यवृद्धि तेने करीने हरखशोकने पामवुं नहीं, तेनुं नाम ज्ञान छे.

हवे त्रीजुं साधन वैराग. ते वैराग एटले शुं? तो चार प्रकारना प्रलयनो विचार करीने पिंड, ब्रह्मांड आदिक अनंतकोटी विश्व तेने नाशवंत दुःखरूप अने स्वप्नवत् जाणीने तेनो ते लोक, भोगादिकनो अभाव करवो, तेनुं नाम वैराग छे. अने चोथुं साधन भक्ति, भक्ति एटले धर्म ज्ञान, वैरागादिक शुभ गुण आपीने विषयनी वासना तजावीने ब्रह्म–स्थितिने पमाडनारा एवा जे प्रत्यक्ष ज्ञानदाता महात्मा पुरुष सद्गुरुरूप परमात्मा तेनी प्रेम पूर्वक नव प्रकारे सेवा करवी अने तेनी आज्ञा पाळवी तेनुं नाम भक्ति छे.

एवी रीते धर्म, ज्ञान, वैराग अने भक्ति ए चार साधन सद्‌गुरुरूप प्रत्यक्ष परमात्मा थकी सिद्ध करे छे तेने धर्म, अर्थ, काम अने मोक्ष ए चार फळनी प्राप्ति थाय छे. त्यां वेदनी श्रुतिः—

यस्य देवे परा भक्तिः यथा देवे तथा गुरौ ।
तस्यैते कथिता ह्यर्थाः प्रकाशन्ते महात्मनः ॥

अर्थः—'जे देवनी उत्तम प्रकारे भक्ति करता हैये तेवी ज रीते सद्‌गुरुने विषे भक्ति राखे छे तेने गुरु जे ते वेदमां कहेला धर्म, अर्थ, काम अने मोक्ष ते रूपी सर्व अर्थ तेने प्रकाश करे छे एटले आपे छे.' माटे एवा जे पूरण ज्ञानदाता सद्‌गुरु ते थकी चार साधने सहित चार वेदने सिद्ध करवा.

—अने चार वेदे करी चार साधन सिद्ध थाय छे. तेमां ऋग्वेद अने सांख्ये करीने ज्ञान सिद्ध थाय छे, कहेतां पिंड, ब्रह्माडादिक माया थकी पोतानो आत्मा जुदो जणाय छे. ते आत्मा सत्य छे अने अविनाशी छे. अने पिंड, ब्रह्मांडादिक माया ते असत्य छे अने नाशवंत छे. एवुं ज्ञान ऋग्वेद अने सांख्यशास्त्र थकी थाय छे. अने यजुर्वेद अने योगशास्त्र थकी धर्म सिद्ध थाय छे, कहेतां यजुर्वेद अने योगशास्त्रे आत्मारूप थइने परमात्मानी मूर्तिनुं ध्यान करवानुं कह्युं छे. माटे ध्यान करतां जे जे पदार्थ आडा आवे तेनो त्याग करीने ते थकी इन्द्रियोने पाछां वाळे त्यारे तेने परमात्मानुं अखंड ध्यान थाय छे, पण विषयनो त्याग कर्या विना ध्यान थतुं नथी. माटे ध्यानना करनाराने धर्म जरूर राखवो जोइए छीए. माटे यजुर्वेद अने योगशास्त्र थकी धर्म सिद्ध थाय छे.

—अने सामवेद अने वेदांतशास्त्रे करीने वैरागरूपी साधन सिद्ध थाय छे, कहेतां सामवेद अने वेदांतशास्त्रमां एम कह्युं छे जे—

'सर्वं खल्विदं ब्रह्म, नेह नानास्ति किंचन, इति श्रुतिः'।

अर्थः—'सर्वं खल्विदं ब्रह्म' एटले प्रत्यक्ष परमात्मानी मूर्ति छे ते सर्व ब्रह्म छे, कहेतां प्रत्यक्ष सद्गुरुनी मूर्ति साकरना नाळियेरनी पेठे परमात्मा छे. अने ते परमात्मानी मूर्ति विना बीजुं नाना प्रकारनुं कांइ नथी; कहेतां पिंड, ब्रह्मांडादिक मायाना आकार मात्र ते नाशवंत, एटले जेम झांझवानुं जळ तथा स्वप्ननी सृष्टि छे, तेम मिथ्या छे.' एम जाणीने पिंड, ब्रह्मांडादिक आकार मात्रना आत्यंताभावे करीने, ते थकी वृत्तियोने प्रतिलोभ कहेतां पाछी वाळीने पोते आत्मा शुद्ध ब्रह्मरूप थइने प्रत्यक्ष परमात्मानी मूर्तिने विषे जोडाइ जाय, कहेतां नेत्र, श्रोत्रादिक इन्द्रियो, अंतःकरणमां एक प्रत्यक्ष भगवाननी मूर्तिनुं ध्यान अखंड थया करे पण ते विना बीजुं कांइ सांभळे ज नहीं एवी रीते जेने वर्ते, तेने सामवेद अने वेदांतशास्त्रमां कह्या प्रमाणे 'सर्वं खल्विदं ब्रह्म, नेह नानास्ति किंचन' ए श्रुतिनो अर्थ सिद्ध थयो जाणवो. माटे सामवेद अने वेदांत-शास्त्रनुं ज्ञान पामवा थकी वैराग रूपी साधन सिद्ध थाय छे.

—अने अथर्ववेद अने पांचरात्र शास्त्रे करीने भक्ति सिद्ध थाय छे. ते भक्ति एटले शुं? तो ब्रह्मरूप थइने प्रत्यक्ष भगवानने विषे प्रीति करवी, कहेतां धर्म, ज्ञान, वैराग तेने करीने ब्रह्मरूप थइने प्रत्यक्ष ज्ञानदाता सद्गुरुरूप परमात्मा तेनी प्रेमे सहित नवधा प्रकारे सेवा करवी, तेनुं नाम भक्ति छे. अने एवी भक्ति तो जेने अनेक जन्मना शुभ संस्कार होय तेने प्राप्त थाय छे. ते पण भगवद्गीतामां अध्याय १८ मां श्लोक ५४ मां कह्युं छेः—

ब्रह्मभूतः प्रसन्नात्मा न शोचति न कांक्षति।
समः सर्वेषु भूतेषु मद्भक्तिं लभते पराम्॥

अर्थः—श्रीकृष्ण परमात्मा कहे छे के 'ब्रह्म रूपने प्रसन्न छे आत्मा कहेतां मनादिक अंतःकरण ते जेनुं, अने हरख अने शोक ते गया छे जेना, अने भूत प्राणी मात्रने विषे समान छे दृष्टि ते जेनी, ते उत्कृष्ट एवी जे मारी भक्ति तेने पामे छे; एटले तेने ज मारा स्वरूपनो निश्चय यथार्थ थाय छे अने मारे विषे प्रीति थाय छे.' माटे एवी जे भक्ति ते अथर्ववेद अने पांचरात्र शास्त्र थकी सिद्ध थाय छे.

अने चार वेद अने सर्वे शास्त्रनो सार एटलो ज छे के 'क्षर, अक्षरथी पर एवा जे परमात्मा ते रामकृष्णादिक रूपे प्रगट थाय छे, तेनी मूर्तिनुं प्रेमे सहित ध्यान करवुं.' ए सर्वे शास्त्रनो सार छे. तेना उपर अथर्ववेदना उपनिषद्मां भक्ति प्रकरणनो श्लोकः—

आलोक्य सर्वशास्त्राणि विचार्य च पुनः पुनः ।
इदमेकं सुनिष्पन्नं ध्येयो नारायणः सदा ॥

अर्थ—'सर्वे शास्त्र जोइने तथा वारे वारे विचार करीने आ एक ज सिद्धांत नीकळ्यो छे के प्रत्यक्ष सद्गुरुरूप परमात्मानी मूर्तिनुं भक्तिए सहित ध्यान करवुं.' एवी रीते अथर्ववेद अने पांचरात्रशास्त्रे प्रत्यक्ष भगवाननी भक्ति रूपी साधन सिद्ध करी आप्युं छे. अने धर्म, ज्ञान, वैरागे सहित प्रत्यक्ष परमात्मानी भक्ति जेने सिद्ध थइ ते आत्मानो आत्यंतिक मोक्ष थाय छे. अने चारे साधने सहित चार वेद जाणवामां कांइ पण अधुरुं होय त्यां सुधी तेनो आत्यंतिक मोक्ष थतो नथी; कहेतां जन्ममरण टळतुं नथी.

—अने चार साधने सहित चार वेदने जाणवा ते जीवे पोतानी मेळे कोइ दहाडो जाणी शकातुं नथी. जेम अभण छोकराओ महेताजी विना पोतानी मेळे चोपडीओ भणी शक्ता नथी, तेम जीव प्रत्यक्ष माया

पर सद्गुरुना आश्रय विना पोतानी मेळे परमात्माना ज्ञानरूप जे वेद-शास्त्रनां पुस्तक तेने वांचवे-सांभळवे करीने ज्ञान थतुं नथी. माटे महे-ताजीरूप एवा जे परमात्मा कर्तुमकर्तुम् अने अन्यथा कर्तुम् समर्थ ते जीवोने पोताना स्वरूपनुं ज्ञान आपवा सारु प्रगट थइने ज्ञान आपे छे त्यारे जीवोने ज्ञान थाय छे, अने तेनो मोक्ष थाय छे. पण ते विना पोतानी मेळे आपोआप कोइ दहाडे मोक्ष थतो ज नथी. माटे मोक्षना खपवाळाने प्रत्यक्ष ज्ञानदाता पासे जइने ज्ञान सांभळवुं.

–पण तेमां प्रथम ज्ञानदातानी परीक्षा करवी जे 'ते ज्ञाननोआप-नारो ते पोताना शिष्योने धर्म, ज्ञान, वैराग अने परमेश्वरनी भक्तिए सहित ज्ञान आपे छे के धर्म, ज्ञान, वैराग अने भक्ति विना विषय-भोगनी छूट मूकीने ज्ञान आपे छे ?' एटलो विचार जीवे पोतानी मेळे करवो. पछी जे धर्म, ज्ञान, वैराग अने भक्तिए सहित विषय-भोगनो त्याग करावीने ज्ञान आपता होय तो दृढ विश्वास आणीने तेनो समागम करवो. अने धर्म, ज्ञानादिक साधन कराव्या विना विषय-भोगनी मोक-ळप मूकीने ज्ञान आपता होय, अने ते सर्व शास्त्रना भणेला होय अने लोकमां मोटा कहेवाता होय, तो पण तेनुं ज्ञान सांभळवुं नहीं. एवी रीतनो विवेक जाणीने जे ठेकाणे धर्म, ज्ञान, वैराग अने भक्तिए सहित इन्द्रियोने विषय-भोग थकी पाछां वळावीने ज्ञान आपता होय ते ठेकाणे जइने तेनुं ज्ञान श्रद्धाए सहित सांभळवुं.

–अने एवी रीतना शुद्ध-ज्ञानना आपनारा तो आ जगतमां मळवा घणां ज दुर्लभ छे, ए तो जेने घणांक जन्मनां सुकृत होय तेने मळे छे अने तेने ज तेनो विश्वास आवे छे. एवी रीते तपास करीने ज्यां शुद्ध ज्ञानदाता जणाय तेनी पासे जइने वेदादिक शास्त्रनुं ज्ञान सांभळवुं तो

तेने परमात्माना स्वरूपनुं ज्ञान साक्षात्कार थाय छे अने ते आत्मा मोक्षने पामे छे.

हवे ते वेदनुं जे शुद्ध ज्ञान तेने कहुं छुं. तेमां प्रथम ऋग्वेद अने सांख्यशास्त्रनुं ज्ञान कहेवाशे जे ऋग्वेदमां परमात्माने माया पर कह्या छे. तेनी श्रुति :—

'यतो वाचो निवर्तन्ते अप्राप्य मनसा सह ।'

अर्थः—'मन संघाते वाणी ते जेना स्वरूपनुं प्रतिपादन करतां स्वरूपने पाम्या विना पाछी वळे छे, एटले मन, आदिक इन्द्रियो, अंतःकरणना ग्रहण कर्यामां आवे एवा परमात्मा नथी' एवी रीते ऋग्वेदमां आठ शाखाए करीने परमात्मानुं वर्णन कर्युं छे.

जे परमात्मा केवा छे ? तो कानना सांभळ्यामां आवे एवा नथी, त्वचना स्पर्शमां आवे एवा नथी, नेत्रना जोवामां आवे एवा नथी, रसनाना वर्णनमां आवे एवा नथी, नासिकाना सुंघवामां आवे एवा नथी, मनना संकल्पमां आवे एवा नथी, चित्तना चिंतवनमां आवे एवा नथी, बुद्धिना निश्चयमां आवे एवा नथी अने अहंकारना अभिमानमां आवे नथी. एवी रीते ऋग्वेदमां 'सत्य' पदे करीने माया पर परमात्मानुं वर्णन कर्युं छे.

—तेमां ऋग्वेद अने सांख्यशास्त्रनो सार एटलो ज छे के 'ज्यां सुधी जीवने इन्द्रियो, अंतःकरणरूप मायानुं आवरण होय त्यां सुधी तेने प्रत्यक्ष परमात्माना स्वरूपनो निश्चय थतो नथी, कहेतां इन्द्रियो, अंतःकरणमां मायिक पंचविषय भोगववानी वासना होय त्यां सुधी तेने प्रत्यक्ष भगवाननुं स्वरूप ओळखातुं नथी.' अने ज्यारे ऋग्वेद अने सांख्यशास्त्रने ज्ञाने करीने पिंड, ब्रह्मांडादिक मायानुं निराकरण करीने,

कहेतां नित्य, निमित्त, प्राकृत अने आत्यंतिक प्रलये करीने, पिंड, ब्रह्मांडने नाशवंत जाणीने, तेनी वासनानो त्याग करीने, पोते आत्मा शुद्ध ब्रह्मरूप थाय छे तेने प्रत्यक्ष परमात्माना स्वरूपनो निश्चय थाय छे.

केमके माया पर एवुं जे निर्गुण-ब्रह्म तेने विषे परमात्मा अखंड रह्या थका पोताना संकल्प मात्रे करीने मनुष्य स्वरूपे प्रगट थाय छे. माटे बाह्यदृष्टिवाळाने परमात्मा प्रगट ते मनुष्य जेवा जणाय छे. अने जे ज्ञाने करीने मायिक भाव मिथ्या करीने निरावरणरूप ब्रह्मदृष्टिने पामे छे तेने प्रत्यक्ष परमात्मा दिव्यरूपे देखाय छे. केमके 'जेना ज्ञानें करीने पोतानी जीवदशा टळीने ब्रह्मदशा प्राप्त थइ तो ते ज्ञानदाता मनुष्य केम होय ? ए तो मारा ब्रह्मस्वरूपना प्रकाशक परब्रह्म छे.' एम तेने ज्ञानदाताने विषे परब्रह्म परमात्माना स्वरूपनो निश्चय थाय छे. पण ते विना प्रत्यक्ष परमात्माना स्वरूपनो निर्विकल्प निश्चय थतो नथी.

—अने एवो निश्चय थयो नथी अने ते प्रत्यक्ष भगवाननो समागम करवा आवे छे तेने तो प्रथम एम विश्वास होय जे 'कोइक मोटा पुरुष तो छे खरा' एम जाणीने तेनुं ज्ञान सांभळे छे अने तेनी आज्ञारूपी धर्म पाळे छे तो धर्मे करीने तेनुं अंतःकरण शुद्ध थाय छे. अने अंतःकरण शुद्ध थाय छे त्यारे तेने ज्ञान समजाय छे. पछी जेटलुं तेने ज्ञान थाय छे तेटलो ते ज्ञानदाताने जाणे छे. ते प्रथम पोते जीवदशामां वर्ततो होय त्यारे ते सद्‌गुरुने देव जेवा जाणे छे. अने पोते ज्यारे तेना ज्ञाने करीने देवना जेवी स्थितिने पामे छे. त्यारे सद्‌गुरुने ब्रह्म जेवा जाणे छे. अने पोते ज्यारे ब्रह्मरूप थाय छे त्यारे तेने सद्‌गुरु परब्रह्म जणाय छे. तेना उपर शंकरस्वामीनुं वचन—

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरुरेकं परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥

अर्थः–' प्रथम जीव देहरूप वर्ततो होय त्यारे ते सद्‌गुरुने ब्रह्मा, विष्णु, शिव जेवा जाणीने तेनी उपासना, भक्ति, सेवा, समागम करे छे अने ज्यारे ते सद्‌गुरुनो समागम करीने ज्ञान सांभळतां सांभळतां पोते आत्मा ब्रह्मरूप थाय छे, त्यारे तेने प्रत्यक्ष सद्‌गुरुने विषे पर-ब्रह्मपणांनो निश्चय थाय छे.'

–माटे प्रथम जीवने ब्रह्मरूप करवा सारु ऋग्वेद अने सांख्यशास्त्र परमात्मानुं ब्रह्मरूपे वर्णन करे छे. केम के परमात्माने जेवा जाणे छे तेवो ते जाणनारो थाय छे. ते वेदमां कह्युं छे. श्रुतिः–' ब्रह्मविद् ब्रह्मैव भवति !' अर्थः–'ब्रह्मने जाणनारो ब्रह्मरूप थाय छे.' अने ब्रह्मरूप थाय छे तेने परब्रह्मना स्वरूपनो साक्षात्कार अनुभवे सहित निश्चय थाय छे. माटे जीवने ब्रह्मरूप करवा सारु ऋग्वेद अने सांख्यशास्त्रमां परमात्मानुं ब्रह्मरूपे वर्णन कर्युं छे. तेनो प्रत्यक्ष अनुभव कहुं छुंः–जे ब्रह्म एटले ज्ञान; ज्ञान विना ब्रह्मनो बीजो अर्थ नथी माटे ज्ञान जेने थाय तेने ज्ञानदाता ओळखाय. ते सारु प्रथम ज्ञानदाताना वखाण न करवा, प्रथम तो ते सद्‌गुरुना ज्ञाननो महिमा कहेवो. केमके ज्ञाननुं माहात्म्य जाणीने ज्ञान सांभळशे अने ज्ञानने समजशे तो पछी ते सद्‌गुरु जेवा छे तेवा तेने वगर कहे जणाशे.

माटे परमात्माए ब्रह्माने प्रथम कह्युं के 'ॐ सोऽहम्'। कहेतां 'हुं ब्रह्मरूप छुं,' त्यारे ब्रह्माने संशय थयो के 'हुं केम जाणुं जे तमे ब्रह्मरूपे छो ?' त्यारे परमात्माए कह्युं के 'तुं मारुं ज्ञान सांभळ; एटले ज्ञाने करीने मारुं स्वरूप तने साक्षात्कार जणाशे.' पछी ब्रह्माने परमात्माए ज्ञान आप्युं. तेमां प्रथम ब्रह्मरूपे परमात्मानुं वर्णन ऋग्वेदमां कह्युं छे. ते ब्रह्म केवुं छे ? तो सत्य छे, माया पर छे अने निर्गुण छे, एटले

रज, तम अने सत्त्व ए त्रण गुण जेमां नथी; निराकार छे, एटले मायानो आकार नथी; अकर्ता छे, एटले पोते जगत कर्युं छे अने एमने कोइए कर्या नथी; अने सर्व व्यापक छे, एटले पोताना प्रकाशे करीने सर्व ठेकाणे रह्या छे; एवा ब्रह्म छे. ते ब्रह्मनी उपमा दइने परमात्माने निर्गुण कहे छे, निराकार कहे छे, सर्व व्यापक कहे छे, अकर्ता कहे छे, एम ऋग्वेद अने सांख्यशास्त्र परमात्माने ब्रह्मरूपे कहे छे. पण परमात्मा तो ब्रह्मथी पर छे, ब्रह्मना आधार छे अने ब्रह्मना प्रकाशक छे.

जेम अग्नि छे ते अग्नि प्रकाशनो आधार छे. ते अग्निनां वखाण करवां होय त्यारे तेना प्रकाशना वखाण कराय छे जे 'अग्निनो प्रकाश बहु सारो छे जे घरना अंधाराने दूर कर्युं,' एवो प्रकाश छे. ते प्रकाश ते ज अग्नि छे एम कहेवाय. केमके अग्नि अने अग्निनो प्रकाश ए कांइ बे नथी; एक ज छे. केमके अग्नि विना प्रकाश एकलो होय नहीं. माटे अग्नि ते प्रकाश अने प्रकाश ते अग्नि एम कहेवाय खरुं; तो पण अंते अग्नि प्रकाशनो आधार छे. तेम परमात्माना अंगनो प्रकाश जे ब्रह्म कहेतां ज्ञान; ते ज्ञान जीवोना अंतःकरणरूपी घरमांथी अज्ञानरूपी अंधारानो नाश करे छे; एवो प्रत्यक्ष परमात्मानो ब्रह्मरूपी ज्ञानप्रकाश छे. ते ब्रह्मनी उपमा परमात्माने ऋग्वेद तथा सांख्यशास्त्र आपे छे. पण परमात्मा तो ब्रह्मना आधार छे अने मूर्तिमान छे.

—ते मूर्ति मायिक नथी; दिव्यमूर्ति परमात्मा छे. ते परमात्मा एकदेशी थका पोताना ब्रह्मरूपी ज्ञानप्रकाशे करीने सर्व देशमां प्रकाश करे छे. कहेतां कोटी ब्रह्मांडने विषे जीव, ईश्वर, देव, ब्रह्मादिक सर्वेने प्रकाश करे छे. माटे पोताना ब्रह्मरूपी ज्ञानप्रकाशे करीने परमात्मा सर्वदेशी कहेवाय छे अने तेथी ज परमात्माने निर्गुण, निराकार, व्यापक कह्या छे. माटे ऋग्वेद अने सांख्यशास्त्रमां एकला ब्रह्मरूपी ज्ञानप्रकाश-

रूपे परमात्माने कह्या छे, पण दिव्यमूर्तिमान परमात्मा छे ते मूर्ति ऋग्वेद्मां कही नथी.

केमके जीवने मायिक आकारने विषे वासना छे. ते वासना तजाववा सारु आकार मात्रनो निषेध करीने जीवने ब्रह्मरूप करवो छे. माटे ब्रह्मरूपनी स्थिति पाम्या मोर (पहेलां) जो जीवने 'मूर्तिमान परमात्मा छे' एम कहे तो ते जीवने मायिक आकारमांथी वासना टळे नहीं. अने वासना टळ्या विना ब्रह्मरूप थाय नहीं. अने ब्रह्मरूप थया विना परमात्मानी मूर्तिनो निश्चय पण थतो नथी. अने प्रत्यक्ष परमात्मानो निश्चय थया विना परमात्माने पमातुं नथी. केमके परमात्मा तो ब्रह्मथी पर छे. माटे ब्रह्मरूप थाय छे ते ज परब्रह्मने पामे छे. ते सारु जीवने ब्रह्मरूप करवाने अर्थे ऋग्वेद अने सांख्यशास्त्रने विषे ब्रह्मरूपे परमात्माने निर्गुण, निराकार कह्या छे. पण परमात्मा तो ब्रह्मना आधार छे अने दिव्य मूर्तिमान छे, अने कर्तुमकर्तुम् अने अन्यथाकर्तुम् समर्थ छे.

हवे ए ब्रह्मना आधार एवा जे परब्रह्म परमात्मा ते जीवोने पोताना स्वरूपनुं ज्ञान आपवा सारु पोते प्रगट थइने चार वेदनुं ज्ञान आपे छे तेने चारे वेद सवळा समजाय छे अने ते जीव परमात्माना स्वरूपने पामे छे. अने जे प्रगट परमात्माना सत्संग विना अथवा ते प्रगट थकी ज्ञान पामीने ब्रह्मरूप थया एवा जे संत, तेना सत्संग विना पोतानी मेळे व्याकरण भणीने पछी एकलां ऋग्वेद अने सांख्यशास्त्रना पुस्तको वांचे अथवा सांभळे तो तेने परमात्मानुं स्वरूप उलटुं अवळुं समजाय छे अने नास्तिक थइ जाय छे.

–ते केवी रीते अवळुं समजे छे ? तो तेने परमात्मानुं स्वरूप एकलुं निर्गुण–निराकार समजाय छे अने तेने कोइ एम कहे जे

'परमात्मा तो मूर्तिमान छे,' तो तेने माने नहीं. अने ते एम कहे जे 'चार वेदमां पहेलो ऋग्वेद थयो छे अने ते ऋग्वेदमां परमात्माने निर्गुण–निराकार कह्या छे, माटे ते वात खरी छे. अने यजुर्वेद, सामवेद अने अथर्ववेद तो पछी थया छे माटे तेमां मूर्तिमान परमात्मा कह्या हशे, पण तेनुं प्रमाण नहीं अने ऋग्वेदमां कह्युं ते खरुं छे.' एम समजीने आंधळा पुरुषना हाथीनी पेठे एक वात निर्गुण–निराकार पकडी राखेछे.

–ते आ समये एवा निर्गुण–निराकार कहेनारा बहु थया छे. शा माटे ? तो निर्गुण–निराकार कहेवामां ठीक पडे छे. केम के 'जेम परमात्मा निर्गुण–निराकार छे तेम आत्मा पण निर्गुण–निराकार छे; माटे आत्मा एज परमात्मा छे. पण जीव पोताने एम निर्गुण–निराकार जाणतो नथी; माटे जीव कहेवाय छे. अने जो जीवने एवुं ज्ञान थाय तो ते जीव ज परमात्मा छे.' एम अवळुं समजीने मिथ्या ब्रह्मवादी थइने पोताने परमात्मा खोटुं खोटुं मानीने पछी वेदमां कह्या जे वर्णाश्रमना धर्म जे विधि अने निषेध तेनो त्याग करीने निःशंक थइने कामादिक विषयने भोगवे छे अने भ्रष्ट थाय छे. एवी रीते सत्पुरुषना समागम विना ऋग्वेद अने सांख्यशास्त्र अवळुं समजीने पापने मार्गे चाले छे.

अने वळी ऋग्वेदमांथी केटलाक एम समज्या छे जे 'हजी आपणने एवुं ज्ञान थयुं नथी त्यां सुधी तो आपणे धर्म, नियम, अहिंसा, ब्रह्मचर्यादिक साधन करवां खरां, अने साधन करतां करतां एवुं ज्ञान प्रगट थशे त्यारे आपणे पण परमेश्वर थइशुं. पछी धर्म–नियम पाळवानी अने विधि–निषेध राखवानी कांइ जरूर नथी.' एम समजीने धर्म–नियम उपरथी पाळे छे. पण अंतरमां एम समजनारा नास्तिक छे अने भूला पड्या छे. अने तेनी मुक्ति कोइ काळे थवानी नथी.

केम के परमेश्वरने निराकार समजे छे पण ते एटलो विचार नथी करता जे ' निराकार एकलुं साकारना आधार विना शी रीते अद्धर रही शके?' न ज रही शके. जेम निराकार जीवात्मा छे, तो ते जीव जे ते स्थूळ, सूक्ष्म अने कारण ए त्रण देहरूपी आकार विना अद्धर रही शकतो नथी. वळी जेम सूर्यनो प्रकाश निराकार छे तो ते प्रकाश सूर्य-गोळाना आधार विना एक क्षण मात्र पण अद्धर रहेतो नथी. वळी दीवा-मशालनो प्रकाश निराकार छे, तो ते दीवा-मशालरूपी मूर्तिने आधारे रहे छे, पण ते विना एक क्षण मात्र अद्धर रहेतो नथी. माटे निराकार आकारना आधार विना अद्धरपद्धर होय नहीं ए सिद्धांतवार्ता छे. ते माटे निर्गुण, निराकार, व्यापक एवुं जे ब्रह्म ते परमात्मानी मूर्तिनो प्रकाश छे. पण मूर्ति विना निर्गुण, निराकार अद्धरपद्धर होय नहीं. माटे परमात्मा दिव्य मूर्तिमान छे अने तेना अंगनो प्रकाश जे ज्ञान ते निराकार छे, तेनुं नाम ब्रह्म छे. ते ब्रह्म सर्व व्यापक छे.

—माटे ते ब्रह्मनुं ज्ञान जीवोने आपवा सारु दिव्यमूर्ति एवा जे परमात्मा ते रामकृष्णादिक पंचदेवरूपे प्रगट थाय छे अने जीवोने ज्ञान आपे छे, त्यारे जीव परमात्माना ज्ञाने करीने ज्ञानरूपे थाय छे; कहेतां ब्रह्मरूप थाय छे. अने ब्रह्मरूप थइने प्रत्यक्ष परमात्मानी मूर्तिने विषे जोडाय छे त्यारे ते आत्मानी आत्यंतिक मुक्ति थाय छे. अने ते मुक्तनी परमात्मानी मूर्तिना ध्याने करीने, दिव्यमूर्ति बंधाय छे. ते मूर्तिने भागवती-तनू कहे छे. अने ज्यारे भागवती-तनू बंधाय छे त्यारे ते जीव मायाना त्रण देहरूपी आधार तेनो त्याग करे छे, पण दिव्यमूर्ति बंधाया विना जीवने मायिक आकार टळतो नथी.

—माटे प्रथम ऋग्वेद अने सांख्यने ज्ञाने करीने मायानो निषेध

करीने जीवने निर्वासनिक करीने ब्रह्मरूपे करवा सारु परमात्मानुं ब्रह्मरूपे ज्ञान आप्युं छे. पण 'परमात्मा दिव्यमूर्तिमान छे' एम समजे तेने ऋग्वेद अने सांख्यशास्त्र सवळुं समजायुं जाणवुं. अने ते प्रत्यक्ष परमात्माना मुख थकी ज सवळुं समजाय छे, पण ते विना तो अवळुं समजाय छे.

—ते जैनमतवाळा श्रावक लोको एकला ऋग्वेदना ज्ञानमांथी पोतानी मेळे अवळुं समज्या छे, ते शुं अवळुं समज्या छे? तो ऋग्वेदमां जीवनी माया टाळवाने अर्थे आकारनो निषेध करीने परमात्माने ब्रह्मरूपे निर्गुण, निराकार, अकर्ता कह्या छे. ते वातने समज्या विना जैनमतवाळाए तेने पकडी राख्युं 'परमात्मा तो निर्गुण, निराकार, अकर्ता छे; माटे कांइ करता नथी. अने आ जगत तो कर्मे अने मायाए करीने एनी मेळे थाय छे. पण एनो कर्ता परमेश्वर नथी. माटे साधन करीने कर्म क्षयावसुं त्यारे आपणे परमेश्वर थाशुं.' एवी रीते जैनमतवाळा अनेक परमेश्वर माने छे. पण तेनी समजणमां कोइ अनादि जगतकर्ता परमेश्वर नथी. अने कर्मे करीने मोक्षने माने छे. पण एकले कर्मे करीने मोक्ष थतो नथी. माटे तेना शास्त्रमां एम लख्युं छे जे 'मोक्षनुं बारुं तो हमणां बंध छे, माटे मोक्ष थतो नथी.'

एवी रीते दिव्यमूर्ति एवा जे रामकृष्णादिक जगतकर्ता परमेश्वर तेना आश्रयने भूल्या छे माटे ऋग्वेद तेने अवळो समजाणो छे. अने पोतानी मेळे एम समज्या छे जे 'चार वेदमां पहेलो ऋग्वेद गणाय छे, माटे ते ऋग्वेद अनादिनो छे. अने बीजा त्रण वेद तो पछी वांसेथी माणसे कर्या हशे. माटे तेनुं प्रमाण नहीं. अने एक ऋग्वेदमां कह्युं छे ते खरुं छे.' एम जाणीने एक वात पकडी राखे छे, पण तेमां तो घणी खोट छे. केमके चार वेद एक वखते ज परमेश्वरे पोते ज कर्या छे. केम-

के परमेश्वरे पोते प्रथम ब्रह्माने पोताना स्वरूपनुं ज्ञान आप्युं त्यारे ब्रह्माने कह्युं के–

'सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म इति श्रुतिः ।'

परमात्मा परमेश्वर केवा छे? तो सत्य छे; एटले माया पर छे. अने ज्ञानरूप छे; एटला द्रष्टा-दृश्य भेद जे जीव, ईश्वर, माया, तेथी पर दिव्य-मूर्ति छे. अने अनंत एटले जीव, ईश्वर, मायाना कारण, आधार अने प्रकाशक छे अने जेना गुण, महिमा अने सामर्थ्यनो अंत नथी, एवा जे परमेश्वर छे. एवी रीते चार वेदनुं बीज एक श्रुतिमां कह्युं छे. अने तेनो विस्तार कर्यो त्यारे सत्य-पदनो ऋग्वेद थयो, ज्ञान-पदनो सामवेद थयो, अनंत-पदनो यजुर्वेद थयो अने ब्रह्म-पदनो अथर्ववेद थयो.

–एवी रीते एक श्रुतिना चार भाग कर्या तेनुं नाम चार वेद कहेवाय छे. पण चारे वेद एक ज छे अने ते एक हारे ज थया छे, कोइ मोर के वांसे थया नथी. अने ए तो एक वेदना चार अंग छे, तेनुं नाम चार वेद कहेवाय छे; ते चारे अंगने जाणे त्यारे पूरो वेद जाण्यो कहेवाय. अने एकने जाणे तो पा वेद जाण्यो कहेवा, अने बेने जाणे त्यारे अडधो वेद जाण्यो कहेवाय छे. अने त्रणने जाणे त्यारे पोंणो वेद जाण्यो कहेवाय. अने चार वेदने सत्पुरुष थकी जाणे त्यारे पूरो वेद जाण्यो कहेवाय छे. अने चार वेदे करीने सत्पुरुष थकी परमात्मानुं स्वरूप जाणे छे त्यारे तेनो मोक्ष थाय छे. पण एक वेदने जाणे मोक्ष थतो नथी.

माटे जैन मतवाळाए खरुं कह्युं छे जे 'अमारे मोक्षनुं चारुं बंध छे. केमके अमारे एक ऋग्वेदना ज ज्ञाननी थोडी घणी गम छे, अने बीजा त्रण वेदना ज्ञानने तो अमे जाणता नथी, अने अमारा पूर्वजो

कोइ कही गया नथी; माटे बीजा त्रण वेदनुं ज्ञान अमारामां नथी. माटे अमारे मोक्षनुं बारुं बंध छे.' एम जैनमतवाळाए कह्युं छे ते खरुं कह्युं छे. पण तेमां तपास करीने कोइ जोता नथी अने गाडरिया प्रवाहनी पेठे चाल्या जाय छे.

—अने एक वेदनुं ज्ञान केवुं छे? तो जेम ढोलियो करावचो होय त्यारे तेने अर्थे ढोलियानो एक पायो क्यांकथी लावे तो ते एक पाये ढोलियो थाय नहीं. अने कदापि चारे पाया अने चारे उपळां लाव्यो होय पण जो ते सुतार पासे लइ जइने तेनी मेळवणी करावी न होय त्यां सुधी पण ते ढोलियो कांइ काममां आवे नहीं. तेम आत्यंतिक ज्ञानरूपी ढोलियो छे, अने चार वेद ते ज्ञाननां चार पाया छे, अने चार शास्त्र छे ते ज्ञाननां चार उपळां छे, अने सद्गुरु तेना कारीगर—सुतार छे. माटे ते सद्गुरु पासे जइने चार वेद अने चार शास्त्र तेनी मेळवणी करावीने आत्यंतिक ज्ञानने पाम्यो न होय त्यां सुधी ते आत्मानी मुक्ति थती नथी. जेम ढोलियानो एक पायो कांइ काममां आवतो नथी, तेम एक वेदे करीने आत्यंतिक ज्ञान थतुं नथी.

—अने तेम ज चारे वेद अने चारे शास्त्रने जाण्यां होय पण जो तेनी सिद्धिना करावनारा एवा जे सद्गुरु परमात्मा ते मळ्या न होय त्यां सुधी पण सर्वे जाण्युं ते वृथा छे. अने प्रत्यक्ष रामकृष्णादिक ज्ञान-दाता परमात्मा तेनो आश्रय करीने तेना श्रीमुख थकी जे वेदादिक शास्त्रना ज्ञानने सिद्ध करे छे तेने सर्वे वातनी सिद्धि थाय छे. पण प्रत्यक्ष परमात्माना चरणना आश्रय विना वेदादिक शास्त्रने भणे, सांभळे तथा जप, तपादिक साधन करे, पण ते सर्वे साधन तेना वृथा छे. ते पण शंकर—स्वामीए गुरु—अष्टकमां कह्युं छे; श्लोक—

षडंगादिवेदो मुखे शास्त्रविद्या
कवित्वादि गद्यं सुपद्यं करोति।
गुरोरंघ्रिपद्मे मनश्चेन्न लग्नं
ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम् ॥

अर्थः—'छ अंगे सहित वेद–शास्त्रनी विद्या मुखपाठ करी जाणतो होय, तथा कवित्वादिक गुणे करीने रूडां गद्य अने पद्ये युक्त श्लोक बांधी जाणता होय, पण तेने जो सद्गुरुरूप परमात्माना चरणने विषे मन अर्पण न कर्युं होय तो तेणे वेद जाण्या तोय शुं? अने शास्त्र जाण्यां तोय शुं? अने कवि थइने गद्य, पद्यादिके करीने रूडा ग्रंथ बांधतां आवड्यां तोय शुं? तेणे करीने तेना आत्मानुं कांइ श्रेय थतुं नथी.'

माटे वेद–शास्त्रने भणवा, सांभळवा, विचारवा अने तेमां कह्युं होय ते प्रमाणे जप, तप, साधन करवा अने तेणे करीने आत्मानी शुद्धि करवी, कहेतां विषय थकी निवृत्ति पामवुं. पण तेने करीने प्रत्यक्ष परमात्मा मळ्या विना एकले साधने करीने पूर्णपणुं न मानवुं; अने प्रत्यक्ष परमात्मा मळ्या विना पूर्ण थवातुं पण नथी. केम के आत्यंतिक ज्ञान पाम्या विना पूर्ण थवाय नहीं अने प्रत्यक्ष परमात्मा विना बीजा कोइनी पासे आत्यंतिक ज्ञान पण नथी. माटे प्रथम वेद–शास्त्रना ज्ञाने करीने जे शुद्ध निर्वासनिक थाय छे तेने पछी परमात्मा प्रगट थइने जरूर दर्शन आपे छे. जेम पूर्वे ध्रुवने तथा प्रह्लादने दर्शन आप्यां हतां तेम दर्शन आपे छे. माटे प्रथम वेदशास्त्रना ज्ञाने करीने निर्वासनिक थवा सारु वेद–शास्त्रने भणवां, सांभळवा अने प्रत्यक्ष परमात्मा पोताने मळवानी मनमां घणी इच्छा राखवी. एम समजीने जे वेदशास्त्रने समजशे तेने जेटलो वेद समजायो हशे तेटलो तेने उपयोगमां आवशे. अने जे एम नहीं समजे तेने वेदशास्त्र निष्फळ छे.

जेम खेडु खेतरने शुद्ध करे पण जो तेमां बीज न वावे तो तेने

नीपज थाय नहीं, तेम वेदशास्त्रने ज्ञाने करीने मायाना आकारनुं निराकरण करीने चैतन्यदृष्टिने पामे, तथा अहिंसा अने ब्रह्मचर्यादिक धर्में करीने इन्द्रियो नियममां करे तथा श्रवण, मननादिक साधने करीने ब्रह्मना स्वरूपनो लक्ष करे पण जो तेणे पोताना आत्माने विषे प्रत्यक्ष परमात्मा रामकृष्णादिक तेना स्वरूपनो निश्चय न कर्यो होय तो तेनां साधन सर्वे वृथा छे. अने प्रत्यक्ष भगवानना स्वरूपनो निश्चय पण ब्रह्मरूप थया विना थतो नथी. जेम खेतरने शुद्ध कर्या विना तेमां बीज वावे तो ते बीज पण फळे नहीं, तेम सांख्य–विचारादिक साधने करीने शुद्ध थया विना प्रत्यक्ष भगवानने ओळखवा जाय तो पण तेने प्रत्यक्षनो निश्चय थतो नथी.

–माटे बे साधन सिद्ध करे तेने सर्व वातनी सिद्धि थाय छे; एक आत्मानी शुद्धि करवी, अने बीजुं प्रत्यक्ष परमात्माना स्वरूपनो निश्चय करवो. ए बे साधन पूरां थाय छे त्यारे ज आत्मानी मुक्ति थाय छे. अने ए बे साधनमां एकेय अधुरुं होय त्यां सुधी जीवने जन्म–मरण टळतुं नथी. माटे मोक्षना खपवाळाने ए बे साधन जरूर सिद्ध करवा अने ए साधन पण जीवने पोतानी मेळे सिद्ध थतां नथी जेम एक रात्रिनुं अंधारुं टाळवुं होय अने बीजुं सूर्यनुं दर्शन करवुं होय तो ए बेय काम एक सूर्यना दर्शन थकी थाय छे, पण सूर्यना दर्शन थया विना आंख पोतानी मेळे अंधाराने टाळवाने समर्थ नथी, अने सूर्य विना सूर्यने पण देखवाने समर्थ नथी. माटे सूर्य उदय थइने प्रकाश करे त्यारे अंधारुं पण नाश थइ जाय छे अने सूर्यनुं दर्शन पण त्यारेज थाय छे. तेम आत्माने दुःखनी देनारी एवी अंधकाररूप वासना छे. तेने टाळीने शुद्ध थवुं अने परमात्माना स्वरूपनो निश्चय करवो ते परमात्मा पोते प्रगट थइने सूर्यनी पेठे ज्ञान प्रकाश करे त्यारे अज्ञानरूपी अंधकारनो पण नाश थइने आत्मा शुद्ध थाय

छे. अने तेने पछी ज्ञानदाता प्रत्यक्ष परमात्माना स्वरूपनो निश्चय पण थाय छे. माटे प्रत्यक्ष परमात्माना आश्रय विना जीवनो मोक्ष थतो नथी.

—ते सारु चार वेदने विषे त्रण त्रण कांड कह्या छे, एक कर्मकांड बीजो उपासना कांड अने त्रीजो ज्ञानकांड ए त्रण कांड चार वेदने विषे कह्या छे; माटे वेदत्रयी कहेवाय छे. हवे कर्मकांड एटले शुं? तो आत्मानी शुद्धिने अर्थे प्रत्यक्ष सद्गुरु परमात्मा जे ते इन्द्रियोने वश कराववा सारु अहिंसा अने ब्रह्मचर्यादिक जे जे धर्म पाळवानुं बतावे ते प्रमाणे तेनी आज्ञा पाळवी, तेनुं नाम कर्मकांड छे. अने उपासना एटले धर्म पळावीने आत्माने शुद्ध करनारा जे सद्गुरु तेनी प्रेमे सहित सेवा करवी तेनुं नाम उपासना छे. अने ज्ञान एटले सद्गुरु जेवी रीते आत्मा-परमात्मानुं स्वरूप बतावे तेवी रीते समजीने तेना स्वरूपनो निश्चय करवो तेनुं नाम ज्ञानकांड छे.

एवी रीते चार वेदने विषे कर्म, उपासना अने ज्ञान ए त्रण साधन कह्यां छे. ते त्रण साधन एक प्रत्यक्ष सद्गुरुरूप परमात्मा ते थकी सिद्ध थाय छे. माटे त्रणे साधने सहित वेदनुं ज्ञान सांभळे छे तेने ज शुद्ध ज्ञान थाय छे पण ए त्रण साधनमां एके साधन अधुरुं होय त्यां सुधी तेने वेदनां पुस्तको भणे, सांभळे परिपूर्ण ज्ञान थतुं नथी. अने ए त्रणे साधन क्यारे पूरां थाय छे? तो उपासना करवा योग्य एवा जे परमात्मा ते ज सद्गुरुरूपे पृथ्वी पर प्रगट थया होय त्यारे तेनी पासे त्रणे साधन संपूर्ण वर्तता होय छे; माटे तेना आश्रय थकी ज त्रणे साधन सिद्ध थाय छे.

माटे आ समयने विषे त्रणे साधने सहित चारे वेदनुं आत्यंतिक ज्ञान ते प्रगट वर्ते छे, ते सारु चारे वेदनुं ज्ञान सर्वेने सहेली रीते थाय

कहेतां सर्वने समजवामां आवे तेने अर्थे नर्मगद्यनुं भाषण करीने सर्वने समजावीए छीए.

तेमां ऋग्वेद अने सांख्यशास्त्रनो एटलो ज सार समजवानो छे जे 'सांख्यविचारे करीने मायानो निषेध करीने आत्माने ब्रह्म संघाते एक करवाने अर्थे ऋग्वेदमां अने सांख्यमां मायानुं निराकरण कर्युं छे. अने ब्रह्मने अने परमात्मा परब्रह्मने एक कह्या छे. माटे जीवने प्रथम शुद्ध करवाने अर्थे ब्रह्मनुं ज्ञान आप्युं छे; ते ब्रह्मनुं ज्ञान सिद्ध थाय त्यार पछी परब्रह्मनुं ज्ञान थाय छे.

—ते परब्रह्मनुं ज्ञान करावबा सारु बीजो यजुर्वेद छे; ते पहेला वेद्थी बीजा वेद्मां ज्ञान वधारे समजवानुं छे, बीजा वेद्थी त्रीजा वेद्मां ज्ञान वधारे समजवानुं छे अने त्रीजा वेद्थी चोथा वेद्मां ज्ञान वधारे समजवानुं छे. जेम सरकारी निशाळोमां सात चोपडीओ भणवानी छे; तेमां पहेली चोपडी करतां बीजी चोपडीमां वधारे समजण छे, बीजीना करतां त्रीजी चोपडीमां समजण वधु होय छे, त्रीजीना करतां चोथीमां वधारे समजण होय छे अने सातमी चोपडीमां तो सर्वेथी वधारे समजण होय छे. पण पहेली, बीजी, त्रीजी, एम छए चोपडीओ प्रथम भणे छे त्यार पछी तेने सातमी चोपडीनुं ज्ञान थाय छे, पण पहेली, बीजी, त्रीजा चोपडी भण्या विना सातमी चोपडीनुं ज्ञान थाय नहीं. अने पहेली, बीजी, त्रीजी एम छ चोपडीओ भण्यो होय पण सातमी चोपडीने जोइ न होय तो ते पूरी विद्या भण्यो कहेवाय नहीं. तेम सात चोपडीओने ठेकाणे चार वेद छे. तेमां पहेली चोपडीने ठेकाणे ऋग्वेदनुं ज्ञान छे, बीजी चोपडीने ठेकाणे यजुर्वेदनुं ज्ञान छे, त्रीजी, चोथी चोपडीने ठेकाणे सामवेदनुं ज्ञान छे अने पांचमी, छट्ठी अने सातमी ए त्रण

चोपडीओने ठेकाणे अथर्ववेदनुं ज्ञान छे. माटे अथर्ववेद तो त्रण वेदनो सार छे. केमके अथर्ववेदमां प्रत्यक्ष परमात्माने देखाडीने तेने विषे भक्तिए करीने आत्माने साक्षात्कार छेल्ली स्थिति पमाडी छे. माटे अथर्ववेद तो सर्वनो सार छे.

पण जेम पहेली चोपडी भण्या विना सातमी चोपडी भणतां आवडती नथी, तेम ऋग्वेदादिक त्रण वेदने जाण्या विना अथर्ववेदे करीने जाणवा योग्य एवा जे प्रत्यक्ष परमात्मा तेना स्वरूपनो निश्चय थतो नथी. अने प्रत्यक्ष परमात्माना स्वरूपनो निश्चय थया विना आत्मानी मुक्ति थती नथी. माटे सद्गुरुनो आश्रय करीने ते थकी चारे वेदने सिद्ध करे छे तेनो मोक्ष थाय छे.

माटे सद्गुरु जे ते प्रथम ऋग्वेदनुं ज्ञान आपीने आत्माने शुद्ध करीने पछी परमात्माना स्वरूपनुं ज्ञान कराववा सारु बीजो यजुर्वेद अने योग शास्त्र तेनुं ज्ञान करावे छे. ते यजुर्वेदमां शुं कह्युं छे? तो परमात्मा जे ते जीव, ईश्वर, माया अने ब्रह्म ए सर्वेना प्रकाशक छे, सर्वेना आधार छे, सर्वेना प्रेरक छे अने मूर्तिमान छे, सर्वेना कर्ता छे, सर्वेना अंतर्यामी छे, सर्वेने कर्मफळदाता छे अने सर्वेने ध्यान करवा योग्य छे; एवा परब्रह्म परमात्मा छे. श्लोक–

द्वौ सुपर्णौ सयुजौ, सखायौ समाने वृक्षे च तिष्टतौ।

अर्थः–'देहरूपी वृक्ष छे, तेने विषे बे पक्षी छे; एटले एक जीव अने बीजो ईश्वर ए बेय रह्या छे. ए बेय 'सयुजौ' एटले अनादि छे अने 'सखायौ' एटले मित्र छे. तेमां जीव कर्म करीने तेना फळने इच्छे छे अने ईश्वर कर्म करता नथी अने जीवने फळ आपे छे.'

एवी रीते देहरूपी वृक्षने विषे बे पक्षीरूप जीव अने ईश्वर रह्या छे.

तेमां जीव देहने विषे अहंवृत्तिए करीने रह्यो छे; कहेतां 'देह हुं छुं' एम माने छे. अने ईश्वर अंतर्यामीपणें रह्या छे. ते जीव देह देह प्रत्ये जुदा जुदा अनेक छे अने ईश्वर सर्वेना अंतर्यामी एक छे. जेम जीवनी आंखो सर्वेनी जुदी जुदी अनेक छे अने ईश्वरनी आंख-सूर्य ते एक छे, ते सर्वे जीवोनी आंखोने प्रकाश करे छे. तेम जीव देह देह प्रत्ये अनेक छे अने ईश्वर सर्वेना प्रकाशक एवा वैराट रूपे एक छे; ते एक थको अनंतने प्रकाशे छे. एवी रीते परमात्मा एक थका बहु रूपे छे. त्यां श्रुति-'एकोऽहं बहु स्याम्'। अर्थ-ईश्वर कहे छे 'हुं एक छुं ते बहु रूपे थयो छुं; बहु रूपे एटले सर्वेना कारण, आधार, प्रकाशक, परमात्मा छे.' एम परमात्माने जोशे तेने परमात्माना स्वरूपनुं ज्ञान थशे.

एवी रीते यजुर्वेदमां परमात्मा ईश्वरने बहु रूपे कह्या छे. पण बहु रूपे कह्या ते 'सर्व जीव परमात्मा छे' एम न समजवुं. सर्वे रूपे ईश्वर छे एम कह्युं त्यां एम समजवुं जे 'ईश्वर सर्वेना प्रकाशक छे सर्वेने ध्यान करवा योग्य छे, सर्वेथी पर छे अने मूर्तिमान छे.' ते परमात्मा जे ते पोतानुं अनवय स्वरूप जे सबळब्रह्म, एटले पोताने जगत करवानी इच्छा रूप जे सबळपणुं, ते इच्छाए करीने जीव, ईश्वर, माया सर्वे प्रकाशमान थयां छे. माटे परमात्माने अनंत रूपे कह्यां छे, एम समजवुं. एवी रीते अजुर्वेदमां छयाशी शाखाए करीने परमात्मानुं वर्णन कर्युं छे.

जे परमात्मा केवा छे ? तो सर्वने कर्ण इन्द्रिये करीने शब्द संभळावे छे, सर्वने त्वचाए करीने स्पर्श करावे छे, सर्वने नेत्र इन्द्रिये करीने रूप जोवरावे छे, सर्वने जीह्वा इन्द्रिये करीने रस चखाडे छे, सर्वने नासिका इन्द्रिये करीने गंध लेवरावे छे, मन अने चंद्रदेवे करीने सर्वने संकल्प करावे छे, सर्वने बुद्धि अने ब्रह्मादेव वडे करीने निश्चय करावे छे, सर्वने चित्त अने वासुदेव देव वडे करीने चिंतवन करावे छे अने

सर्वने अहंकार अने रुद्रदेव वडे करीने अभिमान धरावे छे. एवी रीते परमात्मा जे ते ईश्वर रूपे एटले वैराट रूपे करीने व्यष्टि–समष्टि रूप सर्व जगतने प्रकाशे छे. माटे यजुर्वेद अने योगशास्त्र जे ते परमात्माने अनंत रूपे गाय छे; तथा साकार कहे छे, सगुण कहे छे, कर्ता कहे छे, एकदेशी कहे छे, इत्यादिक उपमा आपे छे. पण परमात्मा तो जीव, ईश्वर, मायाथी पर छे.

जेम दिवाना प्रकाशे करीने घरना पदार्थ प्रकाशमान थाय, तेने दिवारूप कहेवाय. केमके दिवाना प्रकाश विना रात्रिमां एके पदार्थ देखातो नथी अने दिवाने प्रकाशे प्रकाशमान थया, माटे दिवारूप कहेवाय; पण दिवो ते पदार्थ थकी नोखो छे. तेम परमात्मा जीव, ईश्वर, माया, आदिक व्यष्टि–समष्टि रूप सर्वे जगतना प्रकाशक छे, माटे तेने परमात्मा रूप कहे छे; पण परमात्मा तो जीव, ईश्वर, मायाथी पर छे अने जुदा छे. एवी रीते यजुर्वेद अने योगशास्त्रने विषे परमात्माने सर्वरूप, सर्वना प्रकाश, सर्वना कर्ता, आधार, प्रेरक, कर्मफळना आपनारा, मूर्तिमान, अंतर्यामी, सर्वना साक्षी अने सर्वने ध्यान करवा योग्य एवा कह्या छे.

हवे ऋग्वेदमां निर्गुण, निराकार, व्यापक रूपे परमात्माने गाया अने यजुर्वेदमां सगुण, साकार, कर्ता, कहीने परमात्माने गाया; पण तेणे करीने परमात्माना स्वरूपनुं ज्ञान साक्षात्कार थयुं नहीं. पण ते बे वेदे करीने एटलुं ज्ञान थयुं जे 'परमात्मा जगत कर्ता, सर्वना आधार, कर्मफळना आपनार, जेनी अनंत शक्तियो छे एवा समर्थ परमात्मा छे खरा,' एटलो निश्चय थाय छे. पण ते परमात्मा केवे रूपे छे? अने क्यां छे? एम निश्चय थयो नहीं. केमके एक वेदमां सगुण–साकार कह्या

अने एक वेदमां निर्गुण–निराकार कह्या, माटे परमात्मा सगुण–साकार छे के निर्गुण–निराकार छे एम कांइ निश्चय थयो नहीं.

तेमां आ जगतमां जे ऋग्वेद अने यजुर्वेद ए बेने ज जाणनारा छे ते तो एम कहे छे जे 'परमात्मा साकार छे के निराकार छे, एम तो एके वातनो निश्चय थतो नथी पण परमात्मा जगत कर्ता छे खरा अने ते जगतथी पर छे; एटलो निश्चय छे.' एम कहे छे. अने जे एक ऋग्वेदने जाणनारा छे ते एम कहे छे जे 'परमात्मा तो निर्गुण, निराकार, अकर्ता छे' एटले ए तो कांइ करता नथी, माटे जगत परमात्माए नथी कर्युं अने परमात्मा तो जगतथी पर छे.' अने जे एक यजुर्वेदने जाणनारा छे ते परमात्माने 'साकार, सगुण, कर्ता, एकदेशी,' कहे छे. माटे पछी एक बीजा ज्ञान समज्या विना वाद विवाद करे छे, पण ए वाद विवाद अणसमजणनो छे. माटे बुद्धिमाने पूरुं ज्ञान शीखवा सारु महात्मा पुरुषनो सत्संग करवो.

–ते महात्मा पुरुष प्रथम बे वेदनुं ज्ञान सिद्ध करावीने पछी त्रीजा सामवेदनुं ज्ञान करावे छे. ते सामवेद अने वेदांतशास्त्रमां परमात्माने केवा कह्या छे ? तो

'सर्वं खल्विदं ब्रह्म इति श्रुतिः ।'

अर्थः–'सर्वं ब्रह्म' एटले ऋग्वेदमां परमात्माने निर्गुण, निराकार कह्या अने यजुर्वेदमां सगुण-साकार कह्या; ए बे प्रकारना ज्ञाननी सिद्धि करावीने जीवने ब्रह्मरूप करनारा एवा जे प्रत्यक्ष सद्‌गुरु ते ब्रह्म छे, एटले साक्षात् परमात्मा छे, अखंड मूर्ति छे, दिव्यमूर्ति छे.

अने ते मूर्तिने ऋग्वेदमां निर्गुण कही छे; केमके तेने विषे मायाना रज, तम अने सत्त्व एवा जे त्रण गुण ते नथी, माटे ते मूर्ति निर्गुण

छे. तेनुं प्रमाण शुं ? तो पोताना आश्रित छे तेने विषे त्रण गुणरूप जे जगत छे तेनो निषेध करावीने निर्गुण ब्रह्मरूप निर्वासनिक करे छे, तो पोते निर्गुण होय एमां शुं कहेवुं ? अने तेने विषे कल्याणकारी–जीवने ब्रह्मरूप करवाने अर्थे ब्रह्मविद्याना–अनंत गुण रह्या छे. अने ते मूर्तिने विषे पंचभूतात्मक मायिक-आकार नथी, माटे निराकार कह्या छे. अने यजुर्वेदमां साकार कह्या छे, ते दिव्यमूर्ति छे माटे साकार कह्या छे अने वळी निर्गुण ब्रह्मरूप जे आत्यंतिक ज्ञान ते जेनी शक्ति छे अने सगुण शक्ति जे जगत सर्जवारूप अन्वय स्वरूप जे प्रकृतिपुरुषादिक सबळब्रह्म ते पण जेनी शक्ति छे, एवा जे शक्तीश्वर परमात्मा सद्गुरु ते दिव्यमूर्ति छे.

अने ते मूर्तिने विषे अन्वय-व्यतिरेक भेद नथी; कहेतां प्रत्यक्ष परमात्मानी मूर्तिने विषे देह-देही एवो भेद नथी. माटे परमात्मानी मूर्ति एक छे, ते ब्रह्म छे अने प्रत्यक्ष सद्गुरुनी मूर्ति विना बीजा आकारमात्र जे देव, ब्रह्मा अने प्रकृतिपुरुष सुधीना आकार सर्वे मिथ्या छे, एटले माया छे; कहेतां परमात्माने न जाणवारूप अज्ञान छे, माटे मिथ्या छे. अने एक प्रत्यक्ष परमात्मा ज्ञानदातानी मूर्ति ते सर्व ब्रह्म छे, एटले सत्य छे.

ते परमात्मानुं सामवेदने विषे एक सहस्र शाखाए करीने वर्णन कर्युं छे जे परमात्मा केवा छे ? तो सर्व शब्दरूप छे, सर्व स्पर्शरूप छे, सर्व रूप रूप छे, सर्व रसरूप छे, सर्व गंधरूप छे, सर्व मनरूप छे, सर्व बुद्धिरूप छे, सर्व चित्तरूप छे अने सर्व अहंकाररूप छे. एवी रीते अन्वय व्यतिरेक भेदे रहित अने अन्वय-व्यतिरेकना कारण, आधार, प्रेरक, प्रकाशक, सर्व शक्तिमान, सर्वत्रपूर्ण, अद्वैत एटले ए जेवो बीजो कोइ नथी, अने अखंड अनादि एवा दिव्यमूर्तिमान परमात्मा छे.

जेम आकाश थकी चार भूत उपजे छे अने पाछां चार भूत आकाशमां लीन थाय छे. तेम परमात्मानी इच्छाए करीने व्यष्टि-समष्टि, आदिक अनंत कोटी ब्रह्मांड उत्पन्न थाय छे अने वळी पाछा परमात्मानी इच्छाए करीने सर्वेनो लय थइ जाय छे. ते जेम आकाशनी दृष्टिए जोइए तो चार भूत दृष्टिमां आवता नथी अने एकलुं आकाश ज देखाय छे. तेम परमात्मानी दृष्टिए जोइए तो व्यष्टि-समष्टि आदिक कांइ देखातुं नथी अने एक परमात्मा ज देखाय छे.

केमके परमात्मानी सगुण, निर्गुण, आदिक शक्ति छे तेने करीने परमात्मा सगुण, निर्गुण कहेवाय छे; पण परमात्मानी मूर्तिने विषे सगुण निर्गुणपणुं कांइ नथी. केमके साकार-सगुण तो पिंड, ब्रह्मांड आदिक माया छे; ते माया परमात्मानी मूर्तिने विषे नथी. अने निर्गुण-निराकार तो आत्मा छे; ते आत्माथी पण परमात्मा पर छे. माटे परमात्मानी मूर्तिने विषेथी मायानो निषेध करवाने अर्थे वेदमां कह्युं छे के 'परमात्मा साकार नथी, सगुण नथी, कर्ता नथी.' ते परमात्मा साकार, सगुण नथी त्यारे, आत्मा जेवा निर्गुण, निराकार, समजाय; ते माटे आत्मा जेवा निर्गुण, निराकार, पण नथी. माटे परमात्मानी मूर्तिने विषेथी निर्गुण, निराकार, आदिक भाव निषेध करवाने अर्थे 'परमात्मा निर्गुण नथी, निराकार नथी,' इत्यादिक वेदमां कह्युं छे.

पण परमात्मानी मूर्तिने विषे पिंड, ब्रह्मांड आदिक माया तथा जीव, ईश्वरना चैतन्यरूप निर्गुण, निराकार ब्रह्म ते एकेय नथी. अने परमात्मा तो ए बेयना आधार छे, तेना प्रकाशक छे, ए बेयथी जुदा छे, दिव्यमूर्तिमान छे अने कर्तुमकर्तुम् अने अन्यथाकर्तुम् समर्थ छे. माटे परमात्मानी दृष्टिए जोइए तो परमात्मानी मूर्ति विना बीजुं पिंड, ब्रह्मांड तथा जीव, ईश्वर कांइ नथी; एक परमात्मा ज छे, एम कहेवाय. पण

परमात्मा तो जीव, ईश्वर तथा पिंड, ब्रह्मांड तेथी जुदा छे अने 'परमात्मा जेवा तो एक परमात्मा ज छे;' पण परमात्मा जेवो तो कोइ थतो ज नथी.

माटे परमात्मानी मूर्तिने विषेथी पिंड, ब्रह्मांडादिक मायानो भाव टाळीने तथा जीव, ईश्वरादिक आत्मानो भाव निषेध करीने पछी सामवेद अने वेदांतशास्त्र जे ते परमात्मा प्रत्यक्षनी मूर्तिने सगुण कहे छे; एटले कल्याणकारी गुणेयुक्त परमात्मा छे अने निर्गुण कहे छे; एटले मायाना जे रज, तम अने सत्त्व एवा जे त्रण गुण ते परमात्मानी मूर्तिने विषे नथी. अने साकार कहे छे; एटले दिव्यमूर्ति परमात्मा छे. अने निराकार कहे छे; एटले परमात्मानी मूर्तिने विषे मायानो आकार नथी. अने कर्ता कहे छे; एटले परमात्मानी इच्छाए करीने अनंतकोटी ब्रह्मांडनी उत्पत्ति थाय छे. अने अकर्ता कहे छे एटले उत्पत्ति, स्थिति अने प्रलय ते प्रकृतिपुरुष, काळ, मायादिक पासे करावे छे, पण पोते कांइ नथी करता. एवी रीते सामवेद अने वेदांतशास्त्रने विषे परमात्मानी दिव्यमूर्ति सिद्ध करी आपी छे.

हवे त्रण वेदे करीने महिमाए सहित दिव्यमूर्तिमान परमात्माने सिद्ध कर्या अने प्रत्यक्ष ज्ञानदाता ज परमात्मा छे एम निश्चय थयो; पण ते तो जगतमां केटलाक गुरु कहेवाय छे अने ज्ञान आपे छे, माटे तेमांथी केने परमात्मा कहेवा अने केने न कहेवा? एम कांइ निश्चय थयो नहीं. पछी ते प्रत्यक्ष परमात्माना स्वरूपनुं साक्षात्कार ज्ञान कराववा सारु चोथो अथर्ववेद अने पांचरात्रशास्त्र छे. ते अथर्ववेद अने पांचरात्रशास्त्रने विषे परमात्मा प्रत्यक्षने ओळखाववा सारु कह्युं छे केः—
'अयमात्मा ब्रह्म इति श्रुतिः ।'

अर्थः–'आ ज्ञानदाता प्रत्यक्ष परमात्मा छे; कहेतां सत्, चित अने आनंद तेनी पूर्णता जेने विषे छे, एटले आत्यंतिक ज्ञान सिद्धतारूप गुण साक्षात्कार जेने विषे छे एवा जे ज्ञानदाता ते परमात्मा छे, जे जेना मुख थकी ज्ञानने मन कर्म वचने सांभळे तो ते सांभळनारानी अपूर्णता टळीने ब्रह्मरूप थइ जाय छे. माटे एवुं ज्ञान जेना थकी थाय ते परमात्मा छे. अने ते विना बीजा सर्वे जीव छे.' एम प्रत्यक्ष परमात्माने ओळखवा.

हवे एवा जे प्रत्यक्ष परमात्मा तेनुं अथर्ववेदने विषे नव शाखाए करीने वर्णन कर्युं छे, जे परमात्मा केवा छे ? तो जेनो पूर्ण शब्द छे, एटले जेना शब्दने सांभळवे करीने सांभळनारो जीवात्मा ते पूर्णकाम थइ जाय छे; जेनो पूर्ण स्पर्श छे, एटले जेना चरणने स्पर्शे करीने अपूर्ण जीव ते पूर्णकाम थइ जाय छे; एवी रीते जेनुं पूर्ण रूप छे, एटले जेनां दर्शन करवाथी पूर्णकाम थाय छे; जेनो पूर्ण रस छे; जेनो पूर्ण गंध छे; जेनो पूर्ण अहंकार छे, जेनुं पूर्ण मन छे, जेनुं पूर्ण चित्त छे अने जेनी पूर्ण बुद्धि छे, कहेतां प्रत्यक्ष ज्ञानदाता परमात्माना अंग अवयवो सर्वे साकरना नाळियेरनी पेठे परमात्मारूप छे.

जेम साकरनुं नाळियेर होय, तेनां काचली, चोटली अने गोळो सर्वे साकरनुं छे पण तेमांथी कांइ त्याग करवा जेवुं नथी. तेम प्रत्यक्ष ज्ञानदाता परमात्मा तेनी मूर्तिने विषे त्याग भाग करवा योग्य नथी; परमात्मानी मूर्ति तो परमात्मा ज छे. अने तेना संबंधने जे जे जीव पामे ते जीव ब्रह्मरूप थाय छे, एवा रामकृष्णादिक प्रत्यक्ष परमात्मा छे. माटे तेना संबंधे करीने ब्रह्मरूप थया एवा जे नारद, सनकादिक अने शुकजी जेवा महामुक्त तेणे पोताना देह अने देह संबंधी पदार्थ

तेनो निषेध करीने प्रत्यक्ष परमात्मा रामकृष्णादिक ज्ञानदाता तेनी मूर्तिनुं गान कर्युं छे अने ते मूर्तिनुं ध्यान कर्युं छे. अने तेनां लीला-चरित्र जे बोलवुं, बेसवुं, रमवुं, हारवुं, जीतवुं, शुभ-क्रिया, अशुभ-क्रिया आदिक सर्वेने परमात्मारूप जाणीने गान कर्युं छे. अने तेना चरित्रने गाने करीने अधर्मी जीव होय तेनो उद्धार थाय छे; एवा आत्यंतिक ज्ञानना आपनारा ते परमात्मा छे. एवी रीते चार वेदे करीने परमात्मानुं स्वरूप इन्द्रियो, अंतःकरण अने अनुभवमां साक्षात्कार कराव्युं छे. अने तेणे करीने आत्मानी मुक्ति थाय छे.

अने ए चारे वेद अने चारे शास्त्रने जो नोखां पाडीने सांभळशे तो ते चारेमां एक एक गुण छे अने एक एक दोष छे. ते एक एक गुण समजाशे अने एक एक दोष समजाशे. माटे ते गुण–दोषने जाण्या विना जो असत्पुरुष एवा जे नास्तिक, एटले परमात्माना अवतारने न माननारा जे पाखंडी, तेनी पासेथी सांभळशे तो ते चार वेदमां जे चार दोष छे ते दोषे करीने चार गुण छे तेने दोषरूप करीने परमात्माना स्वरुपने विषे नास्तिकभाव करावीने भ्रष्ट करशे. ते आ समामां जगतमां केटलाक एक एक वेद अने एक एक शास्त्रने असत्पुरुष पासेथी सांभळीने नास्तिक थइ गया छे माटे वेदशास्त्रने सत्पुरुष पासेथी सांभळीने सिद्ध करे छे तो ते आत्मा ब्रह्मरूप थइने प्रत्यक्ष परमात्माने साक्षात्कार पामे छे.

हवे तेमां जे गुण–दोष छे तेने समजवानी रीत कहुं छुं, तेमां प्रथम ऋग्वेद अने सांख्यमां जे गुणदोष छे तेने कहुं छुं, जे ते ऋग्वेद अने सांख्ये करीने पिंड, ब्रह्मांडादिक मायानुं निराकरण करीने पोताना आत्माने तेथी नोखो पाडीने तेने चैतन्य, निराकार, व्यापक, ज्ञानरूप

जाणवो, अने ते आत्माए करीने आत्मामां परमात्माने जोवा; कहेतां ध्यान करवुं. ए तो ऋग्वेद अने सांख्यमां गुण छे. पण पिंड, ब्रह्मांड आदिक मायाना आकार तेनुं निराकरण करवुं, कहेतां मिथ्या जाणवा तेम माया पर एवा जे ज्ञानदाता सद्गुरुरूप परमात्मा दिव्यमूर्ति राम-कृष्णादिक प्रत्यक्ष भगवान, तेनी मूर्तिनुं निराकरणपणुं समजाय; कहेतां 'मारो देह जेम मिथ्या छे तेम तेनो देह पण मिथ्या छे" एम समजाय ए ऋग्वेद अने सांख्यमां मोटो दोष छे. हवे तेमां जे गुण छे तेनुं ग्रहण करीने; कहेतां पिंड ब्रह्मांड आदिक आकारनो निषेध करीने पोते आत्मा शुद्ध थइने एटले पंचविषयनी वासनानो त्याग करीने, पछी ते ऋग्वेदमां अने सांख्यमां जे दोष आवे छे ते दोषने टाळवाने अर्थे यजुर्वेद अने योग-शास्त्रमां जे गुण छे ते गुणने ऋग्वेद अने सांख्यमां मेळवीने तेमां दोष छे तेने टाळी नाखवो.

हवे यजुर्वेद अने योगशास्त्रमां गुण कयो छे? तो यजुर्वेद अने योगशास्त्रमां छव्वीस तत्त्व कह्यां छे; तेमां चोवीस तत्त्व मायाना छे ते कह्यां छे. ते चोवीस तत्त्वना नामः—पंचभूत—पृथ्वी, जळ, अग्नि, वायु अने आकाश; पांच ज्ञानेन्द्रियो—कान, चामडी, आंख, जीभ अने नासिका; पांच कर्मेन्द्रियो—वाणी, हाथ, पग, शिष्नु अने गुदा; पांच विषय—शब्द स्पर्श, रूप, रस अने गंध अने चार अंतःकरण—मन, बुद्धि, चित्त अने अहंकार. ए चोवीस तत्त्व मायाना छे. अने पंचवीसमो आत्मा छे. अने छव्वीसमा परमात्मा छे. ते जे आत्मा छे ते मायाना तत्त्वनो त्याग करीने शुद्ध निर्गुण निराकार थइने छव्वीसमा परमात्मा दिव्यमूर्तिने पामे छे; एम योगशास्त्र अने यजुर्वेदमां कह्युं छे ते गुण छे. ते गुणने सांख्यमां समजवो एटले सांख्यमां जे दोष छे ते टळी जाय छे.

—पण सदाय माया पर अने दिव्यमूर्ति एवा परमात्मा प्रत्यक्ष ज्ञानदाता रामकृष्णादिक भगवानना अवतारनी मूर्ति तेनुं निराकरण न करवुं. अने ते मूर्तिने तो मायानो निषेध करीने पोते आत्मा शुद्ध ब्रह्मरूप थइने तेने विषे परमात्मानी मूर्तिने धारीने तेनुं ध्यान करवुं. अने जो मायानो निषेध करीने केवळ आत्मा रूपे पोताने मानशे पण तेमां प्रत्यक्ष परमात्मा रामकृष्णादिकनी मूर्तिनुं ध्यान नहीं करे तो तेने माया कोइ काळे छूटती नथी. ते पण गीताना अध्याय २ नो श्लोक ५९ मां कह्युं छे—

विषया विनिवर्तन्ते निराहारस्य देहिनः ।
रसवर्जं रसोऽप्यस्य परं दृष्ट्वा निवर्तते ॥

अर्थः—' केवळ विषयनो त्याग करवा थकी इन्द्रियो विषय थकी निवृत्ति पामे छे, पण राग जे वासना ते नथी निवृत्ति पामती. ते क्यारे निवृत्ति पामे ? तो ते प्रत्यक्ष परमात्माना स्वरूपने देखे; कहेता प्रत्यक्ष परमात्मा रामकृष्णादिक तेना स्वरूपनो निश्चय थाय त्यारे ते मूळ-वासना जे जन्ममृत्युनुं बीज ते नाश पामे छे.'

अने जो मायाने तजीने केवळ आत्मारूपे मानीने प्रत्यक्ष परमात्मानी मूर्तिनुं ध्यान करशे नहीं तो ते शुष्क-ज्ञानी छे, कहेतां तेने मिथ्या ज्ञानी जाणवो. अने मिथ्या ज्ञाने करीने जन्म-मरण टळतुं नथी. केमके परमात्मानी मूर्तिना आधार विना निराकारपणें आकाशमां अध्धर रहेवातुं नथी. माटे प्रत्यक्ष भगवाननी मूर्तिना आधार विना पिंड, ब्रह्मांडनुं आधारपणुं अने तेने विषे वासना ते कोइने टळती ज नथी.

माटे सांख्ये करीने पिंड, ब्रह्मांडनुं निराकरण करवुं. पण तेमां एक सद्गुरु ज्ञानदाता प्रत्यक्ष परमात्मा रामकृष्णादिक भगवाननी मूर्ति तेनुं निराकरण न करवुं अने ते मूर्तिने तो दिव्यरूप जाणीने तेनुंपोताना

आत्मामां ध्यान करवुं. एम समजे तेने ऋग्वेद अने सांख्यशास्त्र शुद्ध समजाणुं जाणवुं. अने एम समजीने जे प्रत्यक्ष भगवाननी भक्ति करे छे तेनो ज मोक्ष थाय छे. अने ऋग्वेद अने सांख्यनी मूळ मतलब पण ए ज छे जे 'इन्द्रियो अंतःकरणना ग्रहण कर्यामां आवे तेने मिथ्या जाणीने तेनो त्याग करवो. अने ए मायानो त्याग करावीने अनुभव-ज्ञानना आपनारा अनुभवी सद्गुरु तेनुं ध्यान करवुं.

माटे जीवने ज्यां सुधी मायिक इन्द्रियोनी समजण होय, कहेतां मायिक पंचविषयमां इन्द्रियो अंतःकरणने वासना होय त्यां सुधी तेने माया पर एवा जे सद्गुरु परमात्मा प्रत्यक्ष भगवान तेना स्वरूपनो निश्चय थतो नथी. अने ज्यारे अनुभवरूप कहेतां निर्वासनिक आत्मा थाय छे तेने प्रत्यक्ष रामकृष्णादिक भगवानना स्वरूपनो निश्चय थाय छे. ते उपर गीतानुं अढारमां अध्यायमां वचन—

श्लोक :—ब्रह्मभूतः प्रसन्नात्मा न शोचति न कांक्षति ।
समः सर्वेषु भूतेषु मद्भक्तिं लभते पराम् ॥ ४ ॥

अर्थ :—श्रीकृष्ण परमात्मा कहे छे 'ब्रह्मरूप ने प्रसन्न छे आत्मा कहेतां मन ते जेनुं, अने हरख ने शोक ते गया छे जेना, अने सर्वे भूतने विषे समान छे दृष्टि ते जेनी, एवा जे आत्मा ते मारी भक्तिने पामे छे; कहेतां तेने मारा स्वरूपनो निश्चय थाय छे.' एवी रीते ब्रह्मरूप थइने प्रत्यक्ष परमात्मानी मूर्तिनुं ध्यान करवुं, एम ऋग्वेद अने सांख्यनो अंतर भेद गलितार्थ छे.

हवे योगशास्त्रमां जे गुण दोष छे तेने समजवानी रीत कहीए छीए जे 'योगमां परमात्माने सगुण कह्या छे, साकार कह्या छे, कर्ता कह्या छे, एकदेशी कह्या छे; एवी रीते दिव्यमूर्ति परमात्मा छे अने ते मूर्ति

ध्यान करवा योग्य छे. अने सर्वेना अंतर्यामी छे; सर्वेना प्रकाशक छे; जीव, ईश्वरथी पर छे; सर्वेने कर्मफळना आपनारा छे अने जीव-ईश्वरने ध्यान करवा योग्य छे. अने ते परमात्मा प्रत्यक्ष छे.' एम कह्युं ते तो योगमां गुण छे. पण जो मायिक आकारनो निषेध करीने आत्मा शुद्ध थया विना इन्द्रियो अंतःकरणे सहित प्रत्यक्ष परमात्मानुं ध्यान करे तो तेने भगवाननी मूर्तिने विषे प्रकृतिपुरुषादिकनो भाव रहे छे, तथा भगवानने विषे एकदेशीपणुं समजाय छे, ए योगमां दोष छे.

ते दोषने टाळवाने अर्थे योगमां सांख्यनो गुण लइने योगने निर्दोष करवुं. माटे सांख्यमां जेवी रीते पिंड, ब्रह्मांडादिकनुं निराकरण करवानुं कह्युं छे, तेवी रीते निराकरण करवुं; एटले मिथ्या जाणीने पोताना आत्माने शुद्ध, निर्गुण, अखंड, अविनाशी, ब्रह्मरूप जाणीने तेमां स्थिति पामवुं. पछी योगमां कह्या जे साकार, सगुण, कर्ता, एवा प्रत्यक्ष रामकृष्णादिक भगवाननी मूर्ति तेने ब्रह्मना आधार अने ब्रह्मना प्रकाशक जाणीने तेनुं ध्यान करवुं. त्यां श्रुति—

'घटवत् स्वर्गादि विनश्यति ।१। सर्वं खल्विदं ब्रह्म '।२।

अर्थः—"घटवत् एटले घडो जेम नाश थाय छे तेम पिंडथी ते स्वर्गादिक अनंत कोटि ब्रह्मांड ते सर्वेनो नाश छे." एम सांख्यमां कह्या प्रमाणे समजीने पछी योगमां कह्या प्रमाणे प्रत्यक्ष भगवाननी मूर्तिने 'सर्वं खल्विदं ब्रह्म एटले प्रत्यक्ष परमात्मानी मूर्ति ब्रह्म छे, कहेतां परमात्मा छे;' एम जाणीने ते मूर्तिनुं पोताना आत्मामां ध्यान करवुं. पण जेम जीव, ईश्वरनो आत्मा छे अने पिंड, ब्रह्मांडरूप तेनो देह छे, अने ए बे जुदा जुदा छे, अने आत्मा सत्य छे अने तेना देह मिथ्या छे; तेम प्रत्यक्ष भगवान रामकृष्णादिकनी मूर्तिने विषे त्याग-भाग करवा

योग्य नथी, कहेतां तेने विषे देह-जीव एवो भेद नथी; परमात्मानी मूर्ति तो ए बेयथी नोखी छे अने ए बेयने प्रकाशनी करनारी छे. माटे 'परमात्मानी मूर्ति ज एक परमात्मा छे,' एम समजीने पोताना आत्माने निर्गुण, ब्रह्मरूप जाणीने परब्रह्म एवा जे ज्ञानदाता प्रत्यक्ष भगवाननी मूर्ति तेनुं ध्यान करवुं. एम समजवुं ते योगनो सिद्धांत शुद्ध छे. अने एम समजे तेनो ज मोक्ष थाय छे, एटले जन्म-मरणनां दुःख निवृत्ति पामे छे.

हवे सामवेद अने वेदांतशास्त्रमां जे गुण दोष छे तेने समजवानी रीत कहीए छीए जे सामवेद अने वेदांतशास्त्र एम कहे छे जे 'परमात्मा सगुण छे, निर्गुण छे, साकार छे, निराकार छे, कर्ता छे, अकर्ता छे, एकदेशी छे, सर्वदेशी छे; अने सर्वकारण, सर्वकर्ता, सर्वना आधार, सर्वव्यापक, सर्वरूप, संपूर्ण, निर्लेप, असंगी, सर्वथी पर, एवा परमात्मा प्रत्यक्ष ज्ञानदाता रामकृष्णादिक छे.' एम कह्युं ए तो सामवेद अने वेदांतशास्त्रमां गुण छे, पण तेमां एम समजाय जे 'सर्वरूप कह्या माटे पिंड, ब्रह्मांड तथा जीव, ईश्वर सर्वे परमात्मा छे.' एम समजीने पछी पोताना जीवने परमात्मा मनाय जे 'हुं परमात्मा छुं.' ए वेदान्तमां मोटो दोष छे.

माटे ते दोषने टाळवाने अर्थे वेदांतने विषे सांख्य अने योग ए बेय शास्त्रनी समजण लेवी. ते केवी रीते समजवुं ? तो प्रथम प्रत्यक्ष भगवान रामकृष्णादिकनी मूर्तिने विषे मायिकभाव समजाय तेने टाळवाने अर्थे अने जीव, ईश्वरना आत्माने विषेथी पण पिंड ब्रह्मांडरूप माया टाळवाने अर्थे सांख्यमां कह्या प्रमाणे 'घटवत् स्वर्गादि विनश्यति । कहेतां पुरुषप्रकृतिथी उत्पन्न थयुं जे नामरूप पिंड, ब्रह्मांड ते मिथ्या छे.' एम जाणीने पोतानो आत्मा तेथी जुदो समजीने शुद्ध, निराकार, व्यापक, निर्गुण, अकर्ता, असंगी, ब्रह्मरूप मानीने पछी यो-

गमां कह्या जे परब्रह्म परमात्मा, ब्रह्मना आधार अने ब्रह्मना प्रकाशक एवा दिव्यमूर्ति छे ते परमात्मा प्रत्यक्ष वसुदेव देवकीना पुत्र जे श्रीकृष्ण भगवान तेने ज कह्या छे.

माटे वेदांतमां एम समजवुं जे वेदान्ते निर्गुण, निराकार कह्या ते तो सांख्ये मायानो निषेध करवाने अर्थे परमात्माने पोताना अंगना प्रकाशरूप जे निर्गुण, निराकार, व्यापक, ब्रह्म ते रूप कह्या छे, माटे तेना ते भगवानने वेदांतमां निर्गुण, निराकार, व्यापक कह्या छे; एम समजवुं अने मायाना नामरूपने मिथ्या करीने आत्मा–ब्रह्मरूप थइने पछी योगमां प्रत्यक्ष भगवानना दिव्यमूर्ति–ब्रह्मरूपने ध्यान करवा योग्य तेनी सिद्धि करी आपी छे. कहेतां प्रत्यक्ष भगवाननी दिव्यमूर्तिने योगमां साकार, सगुण, कर्ता, एकदेशी कह्या छे. माटे योगमां कह्या तेना ते प्रत्यक्ष परमात्माने वेदांतमां सगुण, साकार, कर्ता, एकदेशी कह्या छे एम समजवुं.

माटे सांख्ये परमात्माने ब्रह्मरूपे निर्गुण निराकार, कह्या अने योगे परमात्माने दिव्यमूर्तिरूपे सगुण, साकार, कह्या अने ए सांख्य अने योग ए बे शास्त्रना ज्ञानने एक करीने परमात्मानुं वर्णन करीए त्यारे एम वर्णन थाय जे 'परमात्मा सगुण छे, निर्गुण, साकार छे, निराकार छे, कर्ता छे, अकर्ता छे, एकदेशी छे, इत्यादिक परमात्मा प्रत्यक्ष दिव्यमूर्तिनुं वर्णन थाय छे.' माटे सांख्य अने योग ए बेय भेगां करीने परमात्मा प्रत्यक्ष दिव्यमूर्तिनुं वर्णन करवुं, तेनुं नाम ज सामवेद अने वेदांतशास्त्र छे, माटे सामवेद अने वेदांतमां कह्युं छे जे—

'सर्वं खल्विदं ब्रह्म, नेह नानास्ति किंचन।'

अर्थः–"एक प्रत्यक्ष परमात्मानी मूर्ति ते सर्वे ब्रह्म छे अने ते विना नाना प्रकारनुं कांइ नथी, कहेतां परमात्मानी मूर्ति विना बीजुं नामरूप पिंड, ब्रह्मांड मिथ्या छे. जेम झांझवाना जळ अने स्वप्ननी

सृष्टि मिथ्या छे, तेम प्रकृतिपुरुष थकी उत्पन्न थयुं जे नामरूप पिंड, ब्रह्मांड ते मिथ्या छे. अने प्रकृतिपुरुषथी पर एवा जे ब्रह्म अने परब्रह्म ते सत्य छे." अने ते ब्रह्म जे परमात्मानो प्रकाश एटले परमात्मानुं ज्ञान अने परब्रह्म एटले ते ज्ञाने सहित परमात्मानी मूर्ति एवी जे परमात्मानी मूर्ति ते रामकृष्णादिकरूपे पोताना स्वरूपनुं ज्ञान आपवा सारु प्रगट थाय छे. माटे ते मूर्ति सत्य छे अने ते विना बीजुं मिथ्या छे. एम समजवुं तेनुं नाम वेदांत अने सामवेद शुद्ध समजायां जाणवां.

माटे सांख्य, योग अने वेदान्त ए त्रणे शास्त्रने विषे, जे एक प्रत्यक्ष मूर्ति रामकृष्णादिक भगवान तेने ज कह्या छे. एवी रीते समजवुं तेनुं नाम त्रणे शास्त्र अने त्रणे वेद शुद्ध समजायां जाणवां अने एम समजीने जे प्रत्यक्ष भगवाननी भक्ति करे छे तेने जन्ममरण टळी जाय छे अने तेनुं कल्याण थाय छे.

हवे अथर्ववेद अने पांचरात्रशास्त्रमां जे गुण दोष छे तेने समजवानी रीत कहुं छुं जे पांचरात्र अने अथर्ववेदमां परमात्माने केवा कह्या छे? तो परमात्मा सगुण छे, निर्गुण छे, कर्ता छे, अकर्ता छे, साकार छे, निराकार छे, एकदेशी छे, सर्वदेशी छे; वळी सगुण नथी, निर्गुण नथी, कर्ता नथी, अकर्ता नथी, साकार नथी, निराकार नथी; वळी साकार थका निराकार छे अने निराकार थका साकार छे, निर्गुण थका सगुण छे अने सगुण थका निर्गुण छे; कर्ता थका अकर्ता छे अने अकर्ता थका कर्ता छे, एकदेशी थका सर्वदेशी छे अने सर्वदेशी थका एकदेशी छे; एवा प्रत्यक्ष परमात्मा छे. ते उपर श्लोकः—

अपाणिपादो जवनो ग्रहीता पश्यत्यचक्षुः सशृणोत्यकर्णः ।
स वेत्ति वेद्यं न च तस्य वेत्ता तमाहुरग्र्यं पुरुषं पुराणम् ॥

अर्थः—'परमात्मा केवा छे? तो पग नथी अने पगे करीने चाले छे,

हाथ नथी अने हाथे करीने ग्रहण करे छे, आंख नथी अने जुए छे, कान नथी अने काने करीने सांभळे छे. अने परमात्मा सर्वने जाणे छे; तेने कोइ जाणतुं नथी. ते परमात्मा माया पर छे; एटले अज्ञानथी पर छे अने पुराण एटले अनादि छे.' एवी रीते परमात्माने मायाना इन्द्रियो-अंतःकरण नथी पण दिव्यमूर्तिमान परमात्मा छे.

एवी रीते प्रत्यक्ष परमात्मा थकी ज्ञान पामीने सिद्ध दशाने पाम्यो एवो जे ब्रह्मरूप मुक्त ते बोल्यो छे के 'आ प्रत्यक्ष ज्ञानदाता रामकृष्णादिक भगवाननी मूर्ति ते ज परब्रह्म छे, परमात्मा छे, परमेश्वर छे, पुरुषोत्तम छे, सर्वना आधार छे, सर्वेना कारण छे, सर्व शक्तिमान छे, सर्वेना प्रकाशक छे, सर्वेने कर्मफळना आपनारा छे, सर्वथी पर छे पण तेथी पर कोइ नथी; एटले एना उपर कोइ बीजो समर्थ ईश्वर नथी.' एवी रीते सर्वत्रपूर्ण अने अद्वैत, कहेतां 'ए जेवा तो एज छे; पण ते जेवो कोइ थतो ज नथी.' एवा परम उपकार रूप प्रत्यक्ष रामकृष्णादिक छे, एम अथर्ववेद अने पांचरात्रमां कह्युं छे ए तो तेमां गुण छे.

पण ते प्रत्यक्ष भगवाननी नव प्रकारनी भक्ति करवानुं कह्युं छे; तेमां प्रत्यक्ष भगवान भूख्या थाय, तरस्या थाय, टाढ वाय, तडको लागे, मांदा थाय, बाळक थाय, जुवान थाय, वृद्ध थाय, काम जणाय, क्रोध जणाय, लोभ जणाय, स्वाद जणाय, स्नेह जणाय, मान जणाय, हारवुं जणाय, जीतवुं जणाय, पारकुं जणाय, पोतानुं जणाय, हसता जणाय, रोता जणाय,इत्यादि अनंत प्रकारनां प्रत्यक्ष परमात्मानां लीला-चरित्रने जोइने तेप्रत्यक्ष भगवानने विषे मनुष्यभावआवे, एकदेशीपणुं समजाय तथा मायिकभाव परठाय ए अथर्ववेद अने पांचरात्रमां मोटो दोष छे.

ते दोषने टाळवाने अर्थे पांचरात्रने विषे सांख्य, योग अने वेदांत ए त्रणे शास्त्रनो गुण मेळववो त्यारे ते पांचरात्र शुद्ध थाय छे. हवे सांख्यनो गुण एम लेवो जे सांख्यमां परमात्माने व्यतिरेकपणें चैतन्यशक्ति ज्ञानरूपे निर्गुण, निराकारादिक कह्या छे. अने साकार, सगुण नथी एम कह्युं छे. अने योगमां परमात्माने अन्वयरूपे सगुण, साकारादिक कह्या छे. अने निर्गुण, निराकार नथी एम कह्युं छे. अने वेदांतमां अन्वय-व्यतिरेक भेदे रहित कह्युं के 'परमात्मा सगुण छे, निर्गुण छे, साकार छे, निराकार छे, कर्ता छे, अकर्ता छे.' एवी रीते सांख्य, योग अने वेदांत ए त्रणेमां कह्या जे परमात्मा तेना ते ज परमात्माने अथर्ववेदमां कह्या छे.

—ते अथर्ववेदमां प्रत्यक्ष परमात्माने कह्युं के निर्गुण छे; सगुण नथी. एटले ते सांख्यमां कह्या जे मायाना गुण ते परमात्मानी मूर्तिने विषे नथी. माटे सगुण नथी अने निर्गुण छे. वळी अथर्ववेदमां कह्युं के परमात्मा प्रत्यक्ष सगुण छे; निर्गुण नथी एम कह्युं ते योगमां कह्या जे अन्वयरूपे प्रकृतिपुरुषादिक सर्वना प्रकाशक, आधार, कर्ता अने सर्वेने ध्यान करवा योग्य मूर्तिमान छे एटले साकार छे; निराकार नथी. अने सगुण छे; निर्गुण नथी एम योगमां कह्या तेना ते अथर्ववेद अने पांचरात्रमां समजवा जे परमात्मा सगुण छे एटले अनंत कल्याणकारी दिव्यगुणे युक्त प्रत्यक्ष परमात्मा छे. अने निर्गुण नथी एटले आत्मा जेवो निर्गुण छे तेवा निर्गुण प्रत्यक्ष परमात्मा नथी माटे दिव्यगुणेयुक्त परमात्मा छे. अने वेदांतमां द्रष्टा-दृश्य भेदे रहित दिव्यमूर्ति परमात्मानुं वर्णन कर्युं छे. जे परमात्मा सगुण छे, निर्गुण छे. सगुण एटले कल्याणकारी गुणेयुक्त छे. अने निर्गुण छे, एटले मायाना गुणे रहित छे. साकार छे, एटले दिव्यमूर्ति छे. अने निराकार छे, एटले मायिक-आकारे रहित छे. एवी रीते प्रकाशे सहित दिव्यमूर्तिनुं वर्णन वेदांतमां कर्युं छे. अने तेना ते परमात्माने पांचरात्रमां

प्रत्यक्ष कह्या छे. माटे पांचरात्रमां कह्युं छे के प्रत्यक्ष परमात्मा सगुण छे, निर्गुण छे, कर्ता छे, अकर्ता छे, साकार छे, निराकार छे; एवी रीते प्रकाशमान दिव्यमूर्ति प्रत्यक्ष परमात्मा छे, एम अथर्ववेद अने पांचरात्रमां कह्युं छे.

हवे ए त्रणे शास्त्रे करीने प्रत्यक्ष मूर्ति सिद्ध करी, त्यारे ते केवा थया? तो प्रत्यक्ष भगवान सगुण थका निर्गुण छे अने निर्गुण थका सगुण छे, सगुण थका निर्गुण छे एटले कल्याकारी गुणे युक्त थका मायाना गुणे रहित छे. साकार थका निराकार छे अने निराकार थका साकार छे, एटले दिव्यमूर्तिए युक्त थका मायिक-आकारे रहित छे. कर्ता थका अकर्ता छे अने अकर्ता थका कर्ता छे, एटले पोतानी इच्छाए करीने अनंतकोटी ब्रह्मांडने कर्ता थका पोते कांइ नथी करता; प्रकृतिपुरुष पासे करावे छे. एवा अनंत गुणे युक्त जे परमात्मा ते पोताना चैतन्यरूप जे अक्षरधाम तेने विषे अखंड रह्या थका अनंत जीवोने पोताना स्वरूपनुं ज्ञान करावीने मायाना बंधन थकी मुकावीने पोताना अक्षरधामने पमाडवाने अर्थे पोताना सत्य संकल्पे करीने सर्व मनुष्यने प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर थाय छे; कहेतां प्रत्यक्ष मनुष्याकृतिने धारण करे छे. अने ते प्रत्यक्ष भगवानने शरणे जे जीव आवे छे तेने पोतानी भक्ति करावीने तेनां अनंत जन्मना पाप तेने नाश करवाने अर्थे तेनी सेवानुं ग्रहण करवा सारु पोते दिव्यरूप थका मनुष्यनी पेठे वर्ते छे.

—माटे पोते प्रत्यक्ष परमात्मा परिपूर्ण अने सुखना धाम छे तो पण पोताना भक्तने परिपूर्ण अने सुखरूप करवाने अर्थे कृपा करीने भक्तनी सेवानुं ग्रहण करे छे. ते पोते भूख्या थाय एवा नथी तो पण भोजनना थाळ जमे छे, तरस्या थाय एवा नथी पण जळ पीये छे, जेने निद्रा नथी

तो पण निद्रा करे छे, पोते सर्वे शोभारूप छे तो पण भक्तना भाव प्रमाणे वस्त्र, घरेणां, पुष्प धारण करे छे; पोते प्रत्यक्ष परमात्मा सर्वना आधार छे तो पण घोडे, गाडीये, पालखीये बेसे छे. अने पोते लक्ष्मीना पति छे तो पण पोताना भक्त जनोनां तन, मन धनादिक सर्व पदार्थ पोताने शरणे अर्पण करावे छे. ते वामनजी भगवाने बळीराजानुं तन, मन, धनादिक सर्व पदार्थ लइ लीधुं. एवी रीते दिव्यमूर्ति थका मनुष्यनी पेठे वर्ते छे. अने तेने करीने अनंत जीवनो मोक्ष छे. केमके परमात्मा पोते पूर्णकाम छे, माटे तेना संबंधने जे जे जीव पामे छे ते जीव पण पूर्णकाम थाय छे.

माटे प्रत्यक्ष परमात्मा मनुष्य थका दिव्यरूप छे. कहेतां जेनो पूर्ण शब्द छे, जेनो पूर्ण स्पर्श छे, जेनुं पूर्ण रूप छे, जेनो पूर्ण रस छे, जेनो पूर्ण गंध छे; इत्यादिक प्रत्यक्ष परमात्मानी मूर्ति सर्वत्रपूर्ण छे. माटे ते प्रत्यक्ष रामकृष्णादिक परमात्माना शब्दादिकने जे जे जीव पोताना आत्मामां धारे छे तो ते धारनारा जीवनी अपूर्णता टळीने पूर्णकाम थाय छे. अने ते प्रत्यक्ष परमात्माने कोइए पूर्ण कर्या नथी; ए तो पोते पोतानी मेळे सेज अनादि पूर्णकाम छे. अने तेनां जन्म, कर्म, चरित्र, सर्वे दिव्य छे, एटले कल्याणकारी छे. माटे तेनां जन्म, कर्म अने चरित्रने जे दिव्य जाणे छे, तो ते जाणनारानां पण जन्म, कर्म दिव्यभावने पामी जाय छे. अने ते आत्मा परमात्माना साधर्म्यपणांने पामे छे.

एवी रीते चारे वेद अने चारे शास्त्रना ज्ञाने करीने प्रत्यक्ष भगवानने जाणे छे, तेने अथर्ववेद अने पांचरात्र शास्त्र शुद्ध समजायुं जाणवुं. अने तेने प्रत्यक्ष भगवाननी मूर्तिने विषे कोइ दिवस मनुष्यभाव आवे ज नहीं. केमके भगवानना ज्ञाने करीने भगवानने जाण्या माटे प्रत्यक्ष

मूर्तिने विषे अखंड दिव्यभाव रहे छे, अने ते भक्त पछी प्रत्यक्ष परमात्माने दिव्यरूप जाणीने तेना गुण गाय छे. अने तेने सगुण, निर्गुण, साकार, निराकार, कर्ता, अकर्ता, एकदेशी, सर्वदेशी आदिक अनंत गुण रूप ऐश्वर्य ते प्रत्यक्ष ज्ञानदाता सद्गुरुरूप रामकृष्णादिक मनुष्याकृति भगवाननी मूर्ति तेने विषे सर्वे देखाय छे. अने तेने सर्वे शास्त्र, चार वेद तथा सर्वे पुराण ते सत्य अने सवळां समजाय छे.

माटे आवी रीते प्रत्यक्ष भगवान लक्ष्मीनारायणना मुखथी ज्ञान सांभळीने तेना स्वरूपनो निश्चय करीने, प्रत्यक्ष भगवानना गुण दिव्यरूप जाणीने, पछी ब्रह्माए चार वेदे करीने गुण गाया छे. अने गौतमादिक ऋषियोए पण प्रत्यक्ष भगवानना श्रीमुख थकी एवी रीते ज्ञान पामीने प्रत्यक्षना स्वरूपने दिव्यरूप जाणीने तेना गुण छ शास्त्रे करीने गाया छे. अने तेवी ज रीते प्रत्यक्ष परमात्मा श्रीकृष्ण भगवानना मुख थकी ज्ञान सांभळीने, तेना स्वरूपनो निश्चय करीने तेना गुण व्यासजीए चार वेद, अठार पुराण तथा भारतादिक इतिहास तेने करीने गाया छे. माटे चार वेद, छ शास्त्र, अठार पुराण अने ते विना वीजां ऋषियोनी स्मृतिओ, उपनिषदो ए सर्वमां प्रत्यक्ष परमात्मा पंचदेवरूपे प्रगट रामकृष्णादिक भगवान तेना ज गुण गाया छे. पण ते विना वीजो कोइ परमात्मा नथी. एम समजीने जे प्रत्यक्षनी भक्ति करशे तेनो ज मोक्ष तत्काळ थाय छे. अने तेनो जगतना पदार्थ उपरथी मोह टळी जाय छे. अने तेनी दृष्टि निवारण थइने एक प्रत्यक्ष भगवाननी मूर्तिने ज अखंड देखे छे. माटे ज्ञान चक्षुवाळा एवा जे प्रगट महात्मा पुरुष तेनो जेने सत्संग थाय छे तेने ज शुद्ध स्वरूप एवा जे परमात्मा तेना स्वरूपनुं यथार्थ ज्ञान थाय छे.

पछी जेने ज्ञान थयुं एवो जे प्रगट भगवाननो भक्त ते जे ते प्रत्यक्ष

परमात्मानी प्रार्थना करे छे–'हे प्रभु ! तमारो मारा उपर अनुग्रह न हतो, कहेतां तमे मने प्रगट न होता ओळखाया त्यां सुधी तमने पामवा सारु में ऋग्वेदमां तमारा स्वरूपनुं ज्ञान सांभळ्युं तेमांथी मने एम समजायुं जे 'पिंड, ब्रह्मांडादिक नामरूप मिथ्या छे; कहेतां पिंड, ब्रह्मांडना आकार माया अने मिथ्या छे, तेम प्रगट भगवाननी मूर्तिना आकार पण मायानो अने मिथ्या छे.' एम तमारा अनुग्रह विना समजतो हतो, ए मारो मोटो अपराध छे. माटे हे प्रभु ! मारा ए अपराधने माफ करो. अने एवी रीते ऋग्वेदना ज्ञाने करीने तमने निराकार जाणीने घणाक युग सुधी पिंड, ब्रह्मांडनुं निराकरण करीने तेथी वैराग पामीने तमने पामवा सारु 'ॐ सोऽहं, ॐ सोऽहं' एम जप कर्या. पण हे प्रभु ! तमारा अनुग्रह विना कहेतां तमे प्रगट मळ्या विना, तेमां मने लेश मात्र शान्ति थइ नहीं.

"पछी वळी बीजो यजुर्वेद, तमने पामवा सारु में सांभळ्यो त्यारे तेमांथी तमारा अनुग्रह विना एम समजायुं जे 'भगवान मूर्तिमान छे अने तेनुं ज कर्युं सर्वे थाय छे. अने तेना हलाव्या विना पांदडुं पण हालतुं नथी. माटे हुं जे जे करुं छुं ते भगवान करावे छे तेटलुं करुं छुं,' एम जाणीने विषयभोग करवा आसक्त थइ गयो; ए तमारो मोटो गुन्हो थयो छे. केमके कामादिक विकार तो जीवना घरनां छे, ते विकारने टाळवा ए तमारी आज्ञा छे. पण तमारा अनुग्रह विना ते माराथी समजायुं नहीं अने विषयभोग अनियमितपणें भोगव्या; ए मोटो अपराध थयो छे. माटे हे प्रभु ! ए अपराधने माफ करो.

–"अने वळी तमारो एक बीजो गुन्हो थयो छे जे तमारा अनुग्रहने पामेला अने तमारा विना सर्व मायिक पदार्थनो त्याग करीने

वैरागने पामेला एवा तमारा भक्त संत तेनो में उलटो अवगुण लीधो जे 'ए तो कांइ समजता नथी. अने भगवान जगतना कर्ता छे अने प्रेरक छे. माटे भगवाने जे जे पदार्थ उत्पन्न कर्या छे ते सर्वे भोगववा सारु कर्या छे. अने तेनो त्याग करे छे तेणे तो भगवाननी आज्ञा लोपी छे.' एम समजीने तमारा संतनो अवगुण लीधो छे. अने में निःशंक थइने विषय भोगव्या छे. माटे ए बे मोटा गुन्हा माराथी तमारा थया छे, तेने हे प्रभु ! माफ करो. एवी रीते तमारा प्रत्यक्ष स्वरूपनी प्राप्ति विना यजुर्वेदमां अवळुं समजीने घणां युग सुधी विषय भोगव्या. अने ते विषय भोगनी वासनाए करीने जन्म, मरण, गर्भवास अने चोराशीमां महा दुःख पाम्यो. पण तमारा अनुग्रह विना, एटले हे प्रभु ! तमे प्रगट मळ्या विना क्यांय शान्ति थइ नहीं अने ठरीने बेठो नहीं.

"पछी वळी तमने पामवा सारु त्रीजो सामवेद तेनुं ज्ञान सांभळ्युं. त्यारे तेमां एम कह्युं छे जे 'सर्वे परमात्मा प्रत्यक्ष छे.' तेनी श्रुति– 'सर्वं खल्विदं ब्रह्म ।' अर्थः–'आ प्रत्यक्ष सर्व ब्रह्म एटले परमात्मा छे.' ते वेदमां तो एम कह्युं छे जे 'एक प्रत्यक्ष रामकृष्णादिकनी मूर्तियो छे ते सर्वे परमात्मा छे.' पण तमारी कृपा विना अवळुं समजाणुं जे 'सर्व ब्रह्म एटले पिंड, ब्रह्मांड तथा जीव, प्राणी, पशु, पक्षी, सर्वे परमात्मा छे.' एम समज्यो हतो ते तमारो महा मोटो अपराध थयो छे. माटे ते अपराधने माफ करो. अने वळी ते सामवेदने अवळो समजीने में एम जाण्युं हतुं जे 'सर्वे परमात्मा छे ते भेगो हुं पण परमात्मा छुं.' एम समज्यो हतो ते पाप हतुं.

"माटे हे प्रभु ! मारा उपर तमारो हवे खरेखरो अनुग्रह अने कृपा थइ छे जे मारा सर्वे अपराध अने कष्ट गयां, कहेतां तमारा स्वरूपनी मने प्राप्ति थइ; एटले जाणे मारे कोइ दहाडो दुःख हतुं ज नहीं. माटे हे

प्रभु ! मारा उपर तमे घणी कृपा करी, घणी महेर करी मने कृतार्थ, कृतार्थ कर्यो."

एवी रीते जेने परमात्मा प्रत्यक्षना स्वरूपनो निश्चय थाय छे ते महा आनंदने पामीने परमात्मानी प्रार्थना अने स्तुति करे छे. पछी तेना उपर परमात्मा घणां घणां प्रसन्न थइने तेने दिव्यतनू आपे छे अने पोताना अक्षरधामने पमाडे छे."

इति श्रीमुख सिद्धांत १२५ समाप्त ।

---

१२६ विषयः—सांख्यनिष्ठा अने योगनिष्ठा

श्री हरिकृष्णाय नमो नमः–संवत् १९१९ना भादरवा सुद २ ने दिवस महाराज श्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्री सरवै मध्ये पटेल वस्ता देवजीने घेर उत्तरादे वार ओरडानी ओसरीमां हिंडोळाखाट उपर विराजमान थया हता. सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने गुलाबी रंगनो फेंटो मस्तके बांध्यो हतो. कंठमां पुष्पना हार शोभी रह्या हता अने कंकुनो चांदलो कर्यो हतो. अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

प्रश्नः–पछी महाराज बोल्या जे "सर्वेने एक प्रश्न पूछीए छीए जे भगवानना भक्तने लाभनो दिवस ते कयो छे? अने नकामो दिवस ते कयो छे? ते कहो." पछी कोइथी उत्तर थयो नहीं त्यारे महाराज बोल्या जे "लो एनो उत्तर अमे करीए जे एक योगनिष्ठा छे अने एक सांख्यनिष्ठा छे, ते ए बे निष्ठाने परिपूर्ण करी राखे छे ते भगवाननो भक्त पूरो छे. अने ते भक्तने आठे पहोर लाभनो दिवस छे. अने बे निष्ठामांथी एक निष्ठा जेने होय तेने अडधो दिवस लाभनो अने अडधो दिवस नकामो छे.

–तेमां जेने एकली सांख्यनिष्ठा होय ते शून्यभावने पामी जाय छे अने जे भगवाननी प्रत्यक्ष मूर्ति तेने विषे शुष्कभाव आवी जाय छे केम के सांख्ये करीने पिंड, ब्रह्मांडादिक आकार मात्रनुं निराकरणपणुं करे ते भेगुं प्रत्यक्ष भगवाननी मूर्तिनुं पण निराकरणपणुं समजाय. माटे प्रत्यक्ष मूर्तिने विषे एकली सांख्यनिष्ठावाळाने शुष्कभाव रहे छे. अने पोताने पण अपूर्णता रही जाय तेने करीने शून्यभाव वर्ते. अने जेने एकली योगनिष्ठा होय तेने भगवाननी मूर्तिने विषे मनुष्यभाव आवी जाय अने एकदेशीपणुं समजाय, पण दिव्यभाव न रहे. माटे योग अने सांख्य बेयने सिद्ध करे तेने ज कोइ वातनी कसर रहेती नथी. अने जेने सांख्य अने योग सिद्ध थयां ते तो अक्षरब्रह्मरूप थाय छे अने ते भक्त तो भगवानने रह्यानुं धामरूप थयो.

–केम के सांख्ये करीने पिंड, ब्रह्मांडादिक मायिक आकार मात्रनुं निराकरणपणुं करीने पोते ब्रह्मरूप थाय छे. अने पछी योगे करीने पोताने मळ्या एवा ज ज्ञानदाता प्रत्यक्ष परमात्मा तेना स्वरूपने पोताना आत्माने विषे धारीने अखंड ध्यान करे छे तेनुं नाम सांख्ये सहित योग कहीए, अने एवो सांख्ये सहित योग जेने सिद्ध थयो ते तो पूरो ज्ञानी छे. अने सांख्य–योगने अभेदपणें समजवुं तेनुं नाम वेदांत छे. अने सांख्य, योग अने वेदांत ए त्रणे सहित प्रत्यक्ष मूर्ति भगवान तेनी नवधा भक्तिए करीने सेवा करवी तेनुं नाम पांचरात्र छे.

–माटे अमारा आश्रित होय तेने अभ्यास करीने सांख्ये सहित योग सिद्ध करवो. अने जे एवी रीते योग सिद्ध करशे ते अपार सुखने पामशे. अने तेमां जेटला प्रमाद के आळस रहेशे तेटली तेने खोट रही जशे, माटे आळस के प्रमाद राखवा नहीं अने भगवानना भक्तने

निवृत्ति पामीने योग जरूर सिद्ध करवो. अने कदापि कोइ भक्तने प्रारब्धने जोगे करीने अनंत प्रकारनी प्रवृत्ति होय तो पण रात्रीने विषे एकांतमां बेसीने एकाग्रवृत्ति करीने सांख्य–विचारे करीने पिंड, ब्रह्मांडादिकनुं निराकरण करीने शुद्ध चैतन्य आत्मारूप थइने पछी योग–विचारे करीने पोताने प्राप्त थयुं एवुं जे प्रत्यक्ष भगवाननुं स्वरूप तेने आत्मा जे जाणपणुं तेमां धारीने ध्यान करवुं. अथवा प्रत्यक्ष भगवाननी मूर्तिना चरणारविंदनी पूजा करवाने समये पूर्वे कह्यो एवो विचार करीने ध्यान करवुं. अने एवी रीते जे ध्याननो अभ्यास करशे तेने भगवाननी मूर्तिनो साक्षात्कार थशे अने तेने पंचविषयनी वासना सहेजे ओछी थइ जशे अने मायानुं आवरण तेनी दृष्टिमांथी टळी जशे.

–अने एवो भक्त होय तेनो देह पडे त्यारे तेने एक भगवाननी मूर्ति अखंड देखाया करे. अने तेने तो जेम अंग उपरथी वस्त्र पडी जाय तेम एवा भक्तनो देह पडे तेनी तेने खबर पडती नथी. अने ते तो एम जाणे छे जे 'हुं आत्मा अने परमात्मा भगवान ते अनादिना अखंड आमने आम छीए,' एवुं वर्ते छे. पण तेने पिंड, ब्रह्मांडादिक कांइ सांभळतुं नथी. केम के तेने देह छतां पण एवो ज निश्चय कर्यो हतो जे आत्मा अने परमात्मा विना पिंड ब्रह्मांडादिक स्वप्नतुल्य अने झांझवा रूप छे. अने एक प्रत्यक्ष मूर्ति भगवान तेने विषे ज दृढ प्रीति हती. माटे वेदमां कह्युं छे जे ' या मतिः सा गति र्भवेत् ।'

अर्थः–' देह छतां ज्यां मति होय त्यां देह मूकीने गति कहेतां त्यां तेनो निवास थाय छे.' माटे जेनी मतिमां आत्मा अने परमात्मा बे ज छे तो ते देह मूकीने तेने ज पामे छे.

–अने जेने एवी रीते ध्यान करवानो अभ्यास नहीं होय तेने

मोटी खोट रही जशे. केम के जे ध्याने करीने भगवानना मूर्तिमां जो-डाणो नहीं होय तेने अंतसमानी वखत आवे छे त्यारे सर्वे दिशाओ ते पण भयंकर लागे छे अने अनंत प्रकारना भय प्राप्त थाय छे. अने भगवाननी मूर्ति सांभळ्या विना तेने देह मुकवा समये ब्रह्मांड फाटे एवा कडाका थाय छे माटे जेणे भगवानना स्वरूपनो अभ्यास नथी कर्यो तेने अंत समये भगवान क्यांथी सांभळशे ? तेने तो नहींज सांभळे. अने जेणे आळस अने प्रमादनो त्याग करीने अभ्यासे करीने प्रत्यक्ष भगवाननी मूर्तिनुं ध्यान सिद्ध कर्युं हशे तेने अंत समये पण भगवाननी मूर्ति साक्षात्कार देखाशे अने अंत समयनी जे व्याधिनी पीडा ते एने लेश मात्र जणाशे नहीं. माटे भगवानना भक्त होय तेने तो सांख्यविचारे ज्ञानसिद्ध करीने योगे करीने ध्याननो अभ्यास नित्य जरूर करवो.

—अने ते ध्यान पण समय विना थतुं नथी, माटे आज तमारे समय आव्यो छे. ते लोकमां पण कहेवत छे जे ' जे मळे टाणें ते पछी न मळे खरचे नाणें.' माटे आज तमारे टाणुं आव्युं छे ते वगर दाखडे साक्षात्कार ध्यानमां मूर्तिं आवे एम छे. अने प्रत्यक्ष मूर्ति भगवान न होय त्यारे तो ध्यान करी करीने सुकाइ जाय तो पण स्वप्नमां क्यारेय पण भगवाननी मूर्ति देखाय नहीं. केमके जे वस्तु दीठी न होय ते क्यांथी ध्यानमां आवे ? ते तो न ज आवे. माटे प्रत्यक्ष भगवान होय त्यारे ज ते ध्यान सिद्ध थाय छे.

ते सारु जे जे प्रगट भगवानना भक्त वाइ—भाइ होय तेणे तो पोताने मळ्या जे भगवान तेना दर्शन करीने अंगो अंगमां वृत्ति परोवीने पोताना अंतःकरणमां धारी राखीने पछी कामकाज करतां, हालतां-चालतां उठतां—बेसतां, सर्वे क्रियाने विषे पोताना मननी वृत्तिने भगवानना

स्वरूपमां अखंड राखवी. अने जे सावध थइने एवी रीते अभ्यास राखशे तेने पंचविषयनी वासनाना मूळ उखडी जशे अने आत्माने विषे परमात्माना स्वरूपनो उत्तम निर्विकल्प निश्चय थशे. अने ते ब्रह्मरूप थइने आत्यंतिक मोक्ष जे अक्षरधाम तेने पामशे."

प्रश्नः—पछी भक्त जेठाए प्रश्न पूछ्युं जे "हे महाराज ! ए ध्याननो अभ्यास अखंड रहे तेनो शो उपाय छे? ते कहो." पछी महाराज बोल्या जे "एवा अभ्यासनो उपाय तो ए छे जे जेने एवो अभ्यास दृढ थयो होय तेवा जे संत तेनो मन कर्म वचने समागम करे त्यारे पोताने पण एवो ध्याननो अभ्यास दृढ थाय छे. अने पांच दहाडा अभ्यास राखे अने पछी वळी पांच दहाडा न राखे तो तेने ध्यान सिद्ध थाय नहीं. जेम विद्या भणवा बेसे ते पांच दिवस अभ्यास करे अने पांच दिवस न करे तो तेने विद्या आवडे नहीं अने पांच दिवस शीख्यो होय तेटलुं पण भूली जाय. तेम जे ध्यानीना संगमां रहीने ध्याननो अभ्यास निरंतर राखे तो ज तेने अखंड ध्यान सिद्ध थाय छे."

इति श्रीमुख सिद्धांत १२६ समाप्त ।

१२७ विषयः—वेद, वेदांतादिक सर्वे शास्त्रनो सिद्धांत एटले कला-कौशल्य

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः—संवत् १९१९ ना भादरवा वद ६ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री सरवै मध्ये पटेल दुदा भक्तने घेर उत्तरादे बारना ओरडानी ओशरीमां गादी तकिये युक्त ढोलिया उपर विराजमान थया हता. सर्वे कसुंबल वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पुष्पना हार कंठमां धारण कर्या हता. ककुंनो चांदलो कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ संतमंडळ तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी महाराज बोल्या जे "आज तो वेद्-वेदांतादिक सर्वे शास्त्रनो सिद्धांत कहीए छीए तेने सुरत देइने सांभळजो, जे द्रष्टा-दृश्यथी पर एवा जे परमात्मा तेना स्वरूपनुं जे ज्ञान पामवुं एज मोक्षनो हेतुं छे. अने ते परमात्मा जे ते मायिक एवा जे इन्द्रियो, अंतःकरण तेने करीने जणाय एवा नथी तेने जाणवा. हवे तेने जाणवामां मुख्य कारणो एटले कारणोए करीने समजायो एवो जे ते ज्ञाननो प्रकार तेने कहीए छीए जे प्रथम कारण पांच छे. तेनां नाम अने तेनो अर्थ :–(१) जे एक तो सत्य, (२) बीजुं असत्य, (३) त्रीजुं सत्यासत्य, (४) चोथुं असत्यासत्य, (५) अने उपर कह्यां जे चार कारणो तेना आधार अने तेना आत्मा अने ते चारथी पर जे कर्तुंमकर्तुम् अने अन्यथाकर्तुम् जे परमात्मा ते परम-सत्य पांचमुं कारण छे.

तेमां प्रथम कह्यां जे चार कारण तेने अर्थे सहित पांचमुं कारण जे परमात्मा तेने जाणवा. अने बाकी कारण चार सत्यादिक छे तेनो अर्थ ए छे जे (१) सत्य एटले प्रकृतिपुरुषथी पर जे अक्षरब्रह्म ते सत्य छे. (२) अने असत्य एटले सत्यथी उलटी एवी त्रिगुणात्मक माया ते असत्यनो अर्थ छे. (३) अने असत्यरूप जे माया ते पोते विकार पामीने समष्टिरूप शरीरे थइने ते शरीरनो धारणनो करनारो ईश्वर आत्मा महत् उपाधिए युक्त ते सत्यासत्यनुं रूप छे. (४) अने ते जे सत्यासत्य रूप जे समष्टि तेना विकाररूप जे कार्य जे व्यष्टि एटले स्थूळ, सूक्ष्म–देहादिकने विषे कारण जे वासना तेने करीने रह्यो एवो जे अल्प-बुद्धि आत्मा तेने पोतानी स्थूळादिक उपाधिए युक्त एवुं जे जीव-चैतन्य ते असत्यासत्यनुं रूप छे.

हवे कारणो थकी जाणवा योग्य एवो जे ज्ञाननो प्रकार तेने कहीए छीए जे मूळ-कारणोथी थयो जे ज्ञाननो प्रकार तेमां मुख्य त्रण कारणो

छे, तेना नाम जे श्रोता, वक्ता अने वेदादिक शास्त्र ए त्रण वडे करीने जाणवा योग्य तेने जाणीने ते तत्त्वने साक्षात्कार पामे छे ते सनातन अने सत्य सिद्धांत छे. हवे तेने पामवानो प्रकार कहीए छीए, तेमां श्रोता, वक्तादिक त्रण कारणे संयुक्त ते प्रकार छे. अने तेनी सिद्धांते एम छे जे शास्त्र अने सिद्ध वक्ता तेणे करीने श्रोतानी सिद्धता थाय छे. अने सिद्ध श्रोता अने शास्त्र तेणे करीने वक्ता सिद्ध थाय छे. अने सिद्ध वक्ता अने सिद्ध श्रोता तेणे करीने शास्त्र सिद्ध थाय छे. माटे सत्पुरुषना सत्संगे करीने श्रोता, वक्ता अने शास्त्रनी सिद्धता तेने सिद्ध करवी तेनुं नाम सिद्धांत छे, एटले परमात्मानो पूर्ण बोध छे. ते बोधे सहित परमात्मानुं तत्त्वरूप जे साक्षात्कार ज्ञान उपासनाए करीने जेने सिद्धांत सिद्ध कर्यो ते सिद्ध छे, कहेतां ते पूर्ण तत्त्व ज्ञानदाता शुद्ध उपदेष्टा छे. अने तेनाथी शास्त्रनो अर्थ जाणवो ते ज शुद्ध शास्त्र छे. अने एवी रीते शुद्ध उपदेष्टा थकी सिद्धांतरूप एवुं जे परम-तत्त्व तेने सिद्ध कर्युं ते सिद्ध छे, अने तत्त्वने नथी जाणतो ते असिद्ध छे.

हवे असिद्धने सिद्ध करवो तेनी रीतने कहीए छीए जे असिद्धने सिद्ध करवो तेनी सिद्धतामां सिद्धांत, साधक, साधन अने साध्य तेने करीने सिद्ध स्थितिने पामे छे, अने एवी स्थितिने पाम्यो ते सर्व सिद्धांतने पाम्यो छे. हवे ते सिद्धांतरूप जाणवा-पामवा योग्य जे परमात्मा तेने शब्द ब्रह्मे करीने पूरण ऐश्वर्यनी सिद्धताए करीने सिद्ध करे छे तेने विज्ञान कहीए, विद्या कहीए; कहेतां अधो अने उर्ध्व एवुं जे जीव तथा ईश्वर चैतन्य जेनो परमात्माथी विरुद्ध व्यवहार छे, ते व्यवहारमां वर्त-नारा पुरुषनुं रूप ज्ञान विरुद्ध छे. अने एवो अधो अने उर्ध्व भेद नथी जेने विषे अने सर्व व्यापक अने एक रस चैतन्य जे ज्ञानरूप तेजनो समुह, ते समुहनी मध्ये ते प्रकाशना आधार जे प्रकाशमान परमात्मा

तेनुं तेजमां तेजे करीने तेजरूप थइने कहेतां तेज जे अक्षरब्रह्म आत्मा ते आत्मामां आत्माए करीने आत्मारूप थइने हृदयाकाशनी मध्ये जाण-पणांरूप द्वार ते द्वाराए जे परमात्मा परब्रह्म प्रत्यक्ष भगवान तेनुं दर्शन थाय छे. अने तेने जन्म-मरणनुं कारण जे पंचविषयने विषे राग जे प्रीति ते रूप अविद्यामाया ते नाश पामी जाय छे. ते गीतामां कह्युं छे जे—

विषया विनिवर्तन्ते निराहारस्य देहिनः ।
रसवर्जं रसोप्यस्य परं दृष्ट्वा निवर्तन्ते ॥

अर्थः—'आहारे रहित प्राणी जे तेना विषय निवृत्ति पामे छे. रागने वर्जीने राग जे ते पण परमात्माने जोइने निवृति पामे छे. कहेतां आत्माने विषे परमात्मानुं दर्शन थाय त्यारे अविद्यारूप मायानी निवृत्ति थाय.' माटे एवी रीते आत्माने विषे परमात्माने अन्वय-व्यतिरेकने जाणीने व्यतिरेक थइने तेमां तत्त्व जे परमात्मा तेनुं अखंड सहेज समाधिरूप ज्ञान निर्विकल्पपणें पामवुं ते ज वेद, वेदांत, सर्वे शास्त्र अने सर्व महात्मा पुरुषनो पूर्ण मत छे.

हवे ते पूर्ण ज्ञान जे व्यतिरेक-आत्मा तेमां तत्त्व—सिद्धांतने स्थिति अने बुद्धिमां आपवा तेनी रीतने कहीए छीए जे परमात्मा केवा छे ? तो अमायारूप छे, तेने माया जे बुद्धि तेमां जुदी जुदी शाखाए करीने गुणात्मक बुद्धिमां निर्गुणनुं कळा-कौशल्ये करीने मायाथी मुक्त थइने, पूर्ण विद्या-मय एवा जे परमात्मा तेने परम-सत्यना आधार अने आत्मा तेने देखे छे. अने ते सुखने बुद्धि पर आत्मा तेनुं ज्ञान जे अनुभव तेमां परमात्माने अखंड अनुभवे छे.

हवे ते शाखाओने कहीए छीए. तेमां चार शाखानी कळा-कौशल्ये करीने सिद्धि देखाडीए छीए जे ते परमात्मा केवा छे ? तो काने करीने

शब्दना सांभळ्यामां आवे एवा नथी, त्वचाना स्पर्शमां आवे एवा नथी नेत्रना जोयामां आवे एवा नथी; रसनाना वर्णनमां आवे एवा नथी, नासिकाना गंधमां आवे एवा नथी मनना संकल्पमां आवे एवा नथी, बुद्धिना निश्चयमां आवे एवा नथी, चित्तना चिंतवनमां आवे एवा नथी, अने अहंकारे करीने अभिमानमां आवे एवा नथी. एवी रीते सांख्यनी शाखा कहेवाणी अने ते व्यतिरेक आत्मा जे अक्षरब्रह्म तेणे करीने परमात्मानुं वर्णन थयुं एम जाणवुं.

–अने हवे बीजी योगनी शाखा कहीए छीए जे परमात्मा केवा छे? तो जे काने करीने शब्द संभळावे छे, त्वचाए करीने स्पर्श करावे छे. नेत्रे करीने रूप देखाडे छे, रसनाए करीने रस चखाडे छे. नासिकाए करीने गंध लेवडावे छे, मने करीने संकल्प करावे छे, बुध्धिए निश्चय करावे छे, चित्ते करीने चिंतवन करावे छे अने अहंकारे अभिमान धरावे छे, एवा परमात्मा छे. आ योगमां अन्वयरूपे परमात्मानुं वर्णन कर्युं एम जाणवुं.

हवे त्रीजी शाखा वेदांतनी कहीए छीए जे परमेश्वर केवा छे? तो सर्व शब्दरूप छे, सर्व स्पर्शरूप छे, सर्व रूपमय छे, सर्व रसरूप छे. सर्व गंधरूप छे, सर्व मनरूप छे, सर्व बुद्धिरूप छे, सर्व चित्तरूप छे अने सर्व अहंकाररूप छे, एवा परमात्मा छे. आ शाखामां सांख्य अने योग ते जेना ऐश्वर्य छे एवा जे ऐश्वर्यवान ते रूप परमात्मानुं वर्णन कर्युं. कहेतां अद्वैत एटले 'ए जेवा तो एज एक' अने इन्द्रियो अंतःकरण अने अनुभवमां आवे एवा जेना ऐश्वर्य तेने करीने जाणवा योग्य एवा जे परमात्मा तेनुं वर्णन वेदांतमां कर्युं छे, एम जाणवुं.

हवे पांचरात्रनी चोथी शाखा कहेवाशे जे परमेश्वर केवा छे? तो जेनो पूर्ण शब्द छे, जेनो पूर्ण स्पर्श, जेनुं पूर्ण रूप छे, जेनो पूर्ण रस छे, जेनो पूर्ण गंध छे, जेनुं पूर्ण मन छे, जेनी पूर्ण बुद्धि छे, जेनुं पूर्ण

चित्त छे अने जेनो पूर्ण अहंकार छे, इति शाखा संपूर्ण. आ शाखामां वेदांतमां कह्या जे अद्वैत अने अक्षरातीत परब्रह्म पुरुषोत्तम परमात्मा तेज प्रत्यक्ष रामकृष्णादिक ज्ञानदाता उपकार्यरूप तेनुं वर्णन कर्युं छे, एम जाणवुं. एवी रीते चार शाखारूप कळाओ छे.

हवे ते चार शाखानी मूळ मतलब प्रथम कहेली छे तेने दर्शाववा सारु सांख्य, योगादिक कही जे चार शाखाओ तेनी सोळ कळाओ करवी अने पछी ते सोळ कळाओनुं कौशल्य थशे त्यारे परमात्माना स्वरूपनुं पूर्ण ज्ञान ते असिद्धनी बुद्धिमां उतरशे अने त्यारे ते पण सिद्धताने पामशे. हवे प्रथम कही ते चार शाखाओ तेनी सोळ कळाओ थाय छे, अने ते सोळ कळाओ एकने विषे समजवी तेनुं नाम कौशल्य छेअथवा शास्त्रनो पूर्ण बोध छे.

हवे ते सोळ कळाओने तेना नाम सहित कहीए छीए जे (१) ते परमात्मा केवा छे ? तो एक छे, अद्वैत छे, अनादि छे, अनंत छे कहेतां जेनो अंत नथी अने सर्वव्यापि थका व्यतिरेक छे अने सर्व शक्तिमान छे; तेनी कळा पहेली सांख्य अने योग तेनी छे, जे परमात्मा केवा छे? तो जे शब्दना सांभळ्यामां आवे एवा नथी पण ते ज सर्वने शब्द संभळावे छे, त्वचाना स्पर्शमां आवे एवा नथी पण ते ज सर्वने स्पर्श करावे छे, नेत्रना जोयामां आवे एवा नथी पण ते ज सर्वने रूप जोवडावे छे, जे रसनाना वर्णनमां आवे एवा नथी पण तेज सर्वने रस चखाडे छे, जे नासिकाना गंधमां आवे एवा नथी पण ते ज गंध लेवडावे छे, जे मनना संकल्पमां आवे एवा नथी पण तेज सर्वने संकल्प करावे छे, जे बुद्धिना निश्चयमां आवे एवा नथी पण ते ज सर्वने निश्चय करावे छे, जे चित्तना चिंतवनमां आवे एवा नथी पण तेज सर्वने चिंतवन

करावे छे. अने जे अहंकारना अभिमानमां आवे एवा नथी पण ते ज सर्वने अभिमान धरावे छे. एवी रीते जे योग-माया पर छे ते ज सर्वने शब्दादिकना दाता छे, इति पहेली कळा.

(२) हवे सांख्य-वेदांतनी कळा कहेवाशे जे परमात्मा केवा छे ? तो जे शब्दना सांभळ्यामां आवे एवा नथी ते ज सर्व शब्दरूप छे, जे त्वचाना स्पर्शमां आवे एवा नथी ते ज सर्व स्पर्शरूप छे, इत्यादिक सांख्य-वेदांतनी बीजी कळा. (३) हवे सांख्य अने पांचरात्रनी कळा कहेवाशे जे परमात्मा केवा छे ? तो जे शब्दना सांभळ्यामां आवे एवा नथी तेनो ज पूर्ण शब्द छे, जे स्पर्शमां आवे एवा नथी तेनो ज पूर्ण स्पर्श छे, जे नेत्रना जोयामां आवे एवा नथी तेनुं ज पूर्णरूप छे, इत्यादिक त्रीजी कळा छे. (४) हवे सांख्यमां सांख्यनुं वर्णन थशे जे परमात्मा केवा छे ? तो जे शब्दना सांभळ्यामां आवे एवा नथी तेनो शब्द ते बीजाना जेवो नथी, इत्यादिक सांख्यमां सांख्यनी चोथी कळा.

(५) हवे योगमां सांख्यनुं वर्णन थशे जे परमात्मा केवा छे ? तो जे सर्वने शब्द संभाळावे छे ते ज शब्दना सांभळ्यामां आवे एवा नथी, इत्यादिक पांचमी कळा. (६) हवे योगमां वेदांतनी कळा जे परमात्मा केवा छे ?तो जे शब्द संभळावे छे ते ज सर्व शब्दरूप छे, इत्यादिक छठ्ठी कळा. (७) हवे योग अने पांचरात्रनी कळा जे परमात्मा केवा छे ? तो जे शब्द संभळावे छे तेनो ज पूर्ण शब्द छे, इत्यादिक सातमी कळा. (८) हवे योगमां योगनी कळानुं वर्णन जे परमात्मा केवा छे ? तो जे शब्दने संभळावे छे तेने कोइ शब्द नथी संभळाववुं, कहेतां तेने कोइना शब्दनी अपेक्षा नथी, इत्यादिक आठमी कळा.

(९) हवे वेदांत अने सांख्यनी कळानुं वर्णन थशे जे परमात्मा केवा छे ? तो जे सर्व शब्दरूप छे ते ज शब्द पर छे, इत्यादिक नवमी

कळा. (१०) हवे वेदांत अने योगनी कळा जे परमात्मा केवा छे ? तो जे सर्व शब्दरूप छे ते ज सर्वने शब्द संभळावे छे, इत्यादिक दशमी कळा. (११) हवे वेदांत अने पांचरात्रनी कळा जे परमात्मा केवा छे? तो जे सर्व शब्दरूप छे तेनो ज शब्द पूर्ण छे, तेनो ज स्पर्शपूर्ण छे, तेनुं ज रूप पूर्ण छे, तेनो ज रस पूर्ण छे इत्यादिक अगियारमी कळा. (१२) हवे वेदांतमां वेदांतनी कळा जे परमात्मा केवा छे ? तो जे सर्व शब्दरूप छे तेज पूर्ण शब्द छे, तेज पूर्ण स्पर्श छे, ते ज पूर्णरूप छे, तेज पूर्ण रस छे, ते ज पूर्ण गंध छे, तेजपूर्ण मन छे, ते ज पूर्ण बुद्धि छे, तेज पूर्ण चित्त छे अने ते ज पूर्ण अहंकार छे; कहेतां परमात्माना शब्द, स्पर्शादिक साकारना नाळियेरनी पेठे त्याग करवा जोग नथी अने सर्व परमात्मारूप परिपूर्ण छे. अने 'ते जेवा ते एक ज छे,' इत्यादिक बारमी कळा.

(१३) हवे पांचरात्र अने सांख्यमां वर्णन जे परमात्मा केवा छे ? तो जेनो पूर्ण शब्द छे ते शब्द वर्जीत छे, कहेतां जेना स्वरूपने विषे शब्दादिक मायानो भाग लेशमात्र नथी, एवा रामकृष्णादिक प्रत्यक्ष परमात्मा छे, इत्यादिक तेरमी कळा. (१४) हवे पांचरात्र अने योगमां वर्णन जे परमात्मा केवा छे? तो जेनो पूर्ण शब्द छे ते ज शब्द संभळावे छे, कहेतां परमात्माना मुखनी वाणी जे वेद ते थकी ज व्यष्टि, समष्टि रूप ब्रह्मांडमां शब्दादिक सर्व व्यवहारनी प्रवृत्ति थइ छे, इत्यादिक चौदमी कळा. (१५) हवे पांचरात्र अने वेदांतमां वर्णन जे परमात्मा केवा छे ? तो जेनो पूर्ण शब्द छे तेज शब्दरूप छे, इत्यादिक पंदरमी कळा. (१६) हवे पांचरात्रमां पांचरात्र वर्णन जे परमात्मा केवा छे ? तो जेनो पूर्ण शब्द छे अने ते सर्वने संभळावे छे कहेतां आत्यंतिक ज्ञान आपे छे, इत्यादिक सोळमी कळा.

हवे ते सोळे कळाओनी मेळवणी करी तेनुं कौशल्य करवुं. ते

परमात्मा केवा छे? तो जे शब्दना सांभळ्यामां आवे एवा नथी ते ज शब्द संभळावे छे, तेज शब्दरूप छे अने तेनो ज शब्द पूर्ण छे, तेने करीने अपूर्णने पूर्ण करे छे, इत्यादिक सांख्यनुं कौशल्य थयुं त्यारे सांख्यनी शुद्धि थइ जाणवी, कहेतां सांख्य पण प्रत्यक्ष भगवानने ज गाय छे.

हवे योगनी शुद्धि जे परमात्मा केवा छे? तो जे शब्द संभळावे छे ते शब्दना सांभळ्यामां आवे एवा नथी, तेज पूर्ण शब्दरूप छे अने तेनो ज शब्द पूर्ण छे, तेने करीने अपूर्णने पूर्ण करे छे, इत्यादिक योगनुं कौशल्य थयुं त्यारे योगनी शुद्धि थइ, कहेतां योग पण प्रत्यक्ष मनुष्याकृति भगवानने ज गाय छे.

हवे वेदांतनी शुद्धि जे परमात्मा केवा छे? तो जे सर्व शब्द रूप छे ते शब्दना सांभळ्यामां आवे एवा नथी, तेज शब्दने सांभळावे छे अने तेनो ज शब्द पूर्ण छे अने तेज अपूर्णने पूर्ण करे छे, इत्यादिक वेदांतनुं कौशल्य थयुं त्यारे वेदांतनी शुद्धि थइ कहेतां वेदांतमां पण प्रगट परमात्मानुं वर्णन कर्युं छे.

हवे पांचरात्रनी शुद्धि जे परमात्मा केवा छे? तो जेनो शब्द पूर्ण छे ते ज शब्दना सांभळ्यामां आवे एवा नथी, कहेतां शब्दादिक मायानो भाग जेने विषे होय त्यां सुधी तेने प्रत्यक्ष स्वरूप जाण्यामां आवतुं नथी. एवी रीते शब्दना सांभळ्यामां आवता नथी. अने ते ज सर्व शब्दने संभळावे छे अने ते ज पूर्ण शब्द छे अने तेना शब्दादिकने जे जे धारे तेनी अपूर्णता टळीने पूर्णकाम थाय छे.

माटे प्रगट भगवान ते ज सर्व कारण, ते ज सर्वाधार अने मोक्षना दाता छे. अने सर्व शास्त्र पण प्रगट भगवानने ज गाय छे. माटे आज अथवा अनंत युगे पण प्रगट भगवान मळशे अने तेनो आशरो करशे त्यारे ज जीवनो मोक्ष थशे."

इति श्रीमुख सिद्धांत १२७ समाप्त ।

१२८ विषयः–सत्य–असत्य वेषधारीना भेद अने त्यागी, विधवा, सधवा अने गृहस्थना धर्म.

श्रीहरिकृष्णाय नमो नमः–संवत १९१९ ना भादरवा वद १२ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गामश्री पींपळी मध्ये चुडासामा मुळुभाइ वेचरजीना दरबारमां उगमणें वारओरडानी ओशरीमां ढोलिया उपर गादीतकिया बिछावीने विराजमान थया हता. सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पुष्पना आभूषणो सर्वे अंगमां शोभी रह्यां हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ संतमंडळ तथा देशदेशना हरिभक्तोनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी संध्या आरती थया केडे महाराज बोल्या जे "आ जगतने विषे बे प्रकारना वेषधारी छे, तेमां एक सत्य वेष छे अने एक असत्य वेष छे, तेने जाणवा जोइए. पण ते जाणवुं बहु कठण छे. केमके उपरथी तो बेय वेष सरखा जणाता होय पण तेना अंतरना आशयमां घणो भेद छे. हवे तेने ओळखवानी रीत ए छे जे जे असत्य वेषधारी छे ते उपरथी धर्मनी ओथ लइने साधुना वेष बनावीने पंचविषयने भोगवे छे अने अज्ञानी लोकोमां पूजाय छे. एवा जे असत्य वेषधारी तेना उपर भगवानने अतिशय कोप थाय छे. अने तेना जीवने चोराशीमां जन्ममरणनां अपार कष्ट थाय छे. केमके एणे धर्मनी ओथ लइने अधर्मने मार्गे प्रवृत्ति करी, कहेतां साधुने तो पंचविषयनो त्याग करवो जोइए, ते ज साधु कहेवाय पण तेणे उलटा विषयने निःशंक थइने भोगव्या, माटे ते जेवो कोइ पापी नहीं. ते सारु जेने पोतानुं कल्याण इच्छवुं होय तेने एवा असत्य वेषधारीना संगनो त्याग करीने वेदमां कह्या जे सौ सौना वर्णाश्रमना धर्म तेने दृढ करीने पाळवा.

तेमां जे त्यागी थया होय तेणे तो पंचविषयनो त्याग अतिशय

दृढपणें देह पर्यंत राखवो, पण तेमां कोइ रीते विषयनो संबंध न करवो. अने जो त्यागी थइने गाफलाइ राखे तो तेनो धर्म कोइ रीते रहे नहीं. अने ते गाफलने खरेखरा देशकाळे पंचविषयनो जोग थाय तो ते जरूर भ्रष्ट थया विना रहे नहीं. ते पूर्वे पण गाफलाइए करीने मोटा मोटाने कलंक लाग्या छे. माटे सत्पुरुषना आपेला जे नियम तेने शीर साटे करीने राखवा.

—अने जे गृहस्थाश्रमी होय तेणे ब्राह्मणना धर्मवेद्मां कह्या होय ते प्रमाणे ब्राह्मणने वर्तवुं, क्षत्रियना धर्म प्रमाणे क्षत्रियने वर्तवुं अने वैश्यना धर्म प्रमाणे वैश्यने वर्तवुं. एवी रीते जेने जेम आज्ञा होय ते प्रमाणे तेनो वेष पण तेवो ज राखवो. अने जो ते वेषने बदलावे तो तेने दोष लागे छे. जेम भवाया छे ते पुरुषनो वेष बदलीने स्त्रीनो वेष धारण करे छे तो ते जोवानुं शास्त्रमां घणुं पाप कह्युं छे. ते माटे सौ सौना धर्म प्रमाणे पोतानो वेष राखवो.

—अने जे विधवा स्त्री होय तेणे तो जेम साधु पंचविषयनो त्याग राखे तेम विधवा स्त्रीने पण पंचविषयनो त्याग दृढपणें राखवो, तो ज तेनो धर्म रहेशे अने तेनुं कल्याण थशे. अने जो विषयनो त्याग नहीं राखे अने सारा सारा वस्त्र पहेरशे अने षट् रसादिक रस जमशे अने पोताना भाइ, बाप अने दीकरा विना बीजा पुरुषने अडशे के ते साथे बोलशे तथा विवाहमां जशे के फटाणां—गाणां गाशे तथा होळी रमशे तो ते विधवा स्त्रीनो धर्म नहीं रहे अने ते जरूर भ्रष्ट थशे. अने तेनुं कल्याण कोइ काळे थशे नहीं. माटे जे विधवा स्त्री होय तेणे तो कोइ पुरुषने नेत्र भरीने जोवो पण नहीं. अने परमेश्वरनी कथा, कीर्तन, सेवा स्मरण आदिक जे नवधाभक्ति ते परायण वर्तवुं. अने जेने प्रत्यक्ष-भग-

वान मळ्या होय तेने ते मूर्तिनुं अखंड ध्यान करवुं. एवी रीतनी समजणवाळी जे विधवा स्त्रीयो छे तेनो साक्षात्कार मोक्ष थाय छे.

–अने जे सुवासणी स्त्रीयो होय तेणे पोताना पति विना बीजा कोइ पुरुष सामुं जोवुं नहीं अने हांसी मश्करी पण कोइ पुरुष साथे न करवी. अने कोइ सूझे तेवा मोटा साधु पुरुषकहेवाता होय पण पोतानो धर्म चूकीने ते साथे भ्रष्ट थवुं नहीं. अने पोताना धर्मथी चूकी जवाय एवो उपदेश कोइ करे तो तेने चंडाळ तुल्य जाणीने तेने आंगणे पण उभो रहेवा देवो नहीं. अने जे सत्पुरुषे पोताने जे जे नियम आप्यां होय तेने दृढ करीने पाळवा. तेवी रीते समजीने भगवाननुं भजन करशे तो ते सुवासणी बाइयोना कल्याण थशे.

–अने जे गृहस्थाश्रमी पुरुष होय तेणे पोतानी परणेली स्त्री होय ते विना बीजी स्त्री मात्रने विषे मा, बहेन, दीकरीनो भाव राखवो अने पोतानी मा, बहेन साथे पण आफत काळ विना एकांतमां न रहेवुं. अने चोरी न करवी तथा दारु, माटी, गांजो, तमाकु आदिक अधर्म तेनो त्याग करीने परमेश्वरनो दृढ आशरो राखीने तेनुं भजन स्मरण कामकाज करतां पण कर्या करवुं. अने आ संसारना जे सुख छे ते तो सर्वे स्वप्न तुल्य मिथ्या छे. केम के अनंत कोटी युग थया जीव जे ते सुख भोगवतो आवे छे तो पण हजी कोइ जीवने ए सुखमां तृप्ति थइ नथी, माटे जरूर स्वप्न तुल्य अने मिथ्या छे. पण सत्य अने अविनाशी सुख तो परमात्माना चरणारविंदने विषे रह्युं छे. एवी रीते समजीने संसारना सुखनी वासनानो त्याग करीने पोताने पोताना देहथी नोखो आत्मा जाणीने ते आत्माना आधार जे परमात्मा तेनी भक्ति करवी. अने एवी समजणवाळा जे गृहस्थ हरिभक्त होय तेनो परम मोक्ष थाय छे.

अने वळी एमां कोइने एवी आशंका थाय जे ' महाराज बीजाने तो विषय मुकाव्यानी वातो करे छे अने नियम रखावे छे पण पोते तो सारां सारां वस्त्र, पुष्पना आभूषण, भोजन तेनुं ग्रहण करे छे तथा स्त्रीयो साथे बोले छे, सामुं जुए छे, पगे लगाडे छे, ते शुं करवा करता हशे ? ' एम कोइने दोष जणाय तो तेनुं एम छे जे ए वात तो अतिशय समजवी अटपटी छे अने ए वातना मर्मने तो अमारा एकांतिक संत छे ते जाणे छे. अने अमारुं स्वरूप तो एवुं छे जे सारां वस्त्र पहेरीए तेने करीने अमारी मोटप वधे एम नथी अने जेवां तेवां फाटेलां तुटेलां लुगडां पहेरीए तेने करीने अमारी मोटप घटे तेम नथी, अने सारां भोजन जमीने राजी थइए अने टाढा टुकडा जमीने कुराजी थइए एम नथी, अने रूपवान स्त्री देखीने तेमां मोह पामीए एम नथी. अने हुं तो देव, ब्रह्मादिकनी स्त्रीयोने पण विष्टामांहे पडी होय तेवत् ज देखुं छुं, पण मने प्रकृति जे माया तेना कार्यमां क्यांय मोह थाय एम नथी.

—अने अमारुं भजन करीने सिद्ध दशाने पाम्या एवा जे निर्वासनिक अमारा एकांतिक संत ते पण प्रकृतिना कार्यने काग-विष्टा तुल्य जाणे छे अने एवा भक्तजन संत छे ते एम जाणे छे जे 'एक महाराजने कोइ बंधन करे एम नथी. ' एम जाणीने जीवोना मोक्षने अर्थे वस्त्र तथा पुष्पना हार पहेरावे छे. अने ते एम जाणे छे जे 'कोइ पापी हशे तथा कामी, क्रोध, लोभी, स्वादी, मानी हशे अने ते महाराजना दर्शन करीने वस्त्र, पुष्पादिकने जोइने राजी थइने मूर्तिमां वृत्ति राखीने काने करीने प्रत्यक्षना शब्द जो प्रीतिए करीने सांभळशे तो तेने श्रोत्र इन्द्रियनी वृत्तियो शुद्धताने पामशे, कहेतां ते शब्दने सांभळवे करीने प्रत्यक्ष भगवानने विषे दोष-बुद्धिना शब्द सांभळ्या होय ते निर्दोषताने पामे छे. अने नेत्रे करीने मूर्तिमां जोडाय तो तेने करीने नेत्र इन्द्रियना पाप

सर्वे नाश पामे छे. एवी रीते इन्द्रियो-अंतःकरणे करीने जे जे जीव-स्त्री तथा पुरुष–ते प्रत्यक्ष भगवानना स्वरूपमां जोडाय तो तेने मायानुं आवरण टळी जाय छे. अने देह छतां ते जीव ब्रह्मरूप थइने अभय-पदने पामे.' एम महा मोटो उपकार जे थकी थाय छे एम जाणीने अमारा एकांतिक भक्त संत छे ते अमारी सेवा करे छे अने तेने परोपकार माटे अमे पण ग्रहण करीएं छीए.

–अने अमारा विना वीजो सिद्धदशाने पाम्यो होय तो पण ते पोतानो धर्म चूकीने, कहेतां साधु होय ते साधुनो वेष मूकीने अमारुं आचरण जोइने ते प्रमाणे आचरण करे तो तेने सिद्धदशा थकी पड्यो जाणवो अने तेने धर्म भ्रष्ट थयो जाणवो. माटे साधुने साधुनो वेष अने देश राखीने भगवान भजवा अने गृहस्थने गृहस्थनो वेष राखीने भगवाननुं भजन करवुं, पण पोताना वर्णाश्रमना धर्मनो जे वेष ते थकी भ्रष्ट थवुं नहीं. अने एवी रीते समजीने जे दृढपणें आज्ञामां वर्ते छे तेना उपर भगवान अतिशय प्रसन्न थाय छे अने तेनुं कल्याण थाय छे."

इति श्रीमुख सिद्धांत १२८ समाप्त ।

---

१२९ विषयः—सज्जन-दुरिजननां लक्षण

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः—संवत् १९१९ ना भादरवा वद १३ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री पींपळी मध्ये तरवाडी पितांवर गोविंदजीने घेर आथमणां वारना ओरडानी ओशरीमां गादी तकिया नखावीने ढोलिया उपर विराजमान थया हता. सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने कंठमां पुष्पना हार पहेर्या हता. पाघमां तोरा धारण कर्या हता अने बे कान उपर गुच्छ खोस्या हता. हाथने

विषे बाजुबंध अने गजरा धारण कर्या हता. ललाटने विषे केसरनी अर्चा अने कंकुनो चांदलो कर्या हता अने पोताना मुखारविंदनी आगळ संत-मंडळ तथा घणांक हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी महाराज बोल्या जे 'आ जगतने विषे जीवोमां एक सज्जन छे अने एक दुरिजन, तेमां जे दुरिजन छे ते तो जीवने दुःख उपजावे तेवा छे अने पोते पण दुष्ट मनुष्य जे चोरटा, छिनालवा तथा भूंडा भूंडा व्यसनी तेनो संग करीने भ्रष्ट थाय छे अने महादुःखने पामे छे. अने तेना घरना मनुष्य जे स्त्री, छोकरां तथा तेना जे जे सोवती होय तेने पण भ्रष्ट करे छे. अने पछी तेने खावा अन्न पण रहेतुं नथी. अने मरीने पण जमपुरीमां तथा चोराशीलाख योनिमां जाय छे अने त्यां अपार दुःखने भोगवे छे.

—अने जे सज्जन मनुष्य छे ते तो जीवने सुख थाय तेम पोते पण वर्ते छे अने तेना घरना मनुष्यने पण सुख थाय एवा मार्गे चलावे छे. अने पोते सत्पुरुष एवा जे *कल्याणदाता भगवान* अने *भगवानना* संत तेनो समागम करीने धर्म, ज्ञान, वैराग, भक्ति, शील, संतोषादिक जे रूडा गुण तेने शीखे छे अने पोते महा सुखियो थाय छे. अने तेना जे जे संबंधी तथा तेना जे सोवती होय तेने पण रूडे मार्गे चडावे छे अने तेने पण महा सुखिया करे. अने आलोकमां पण तेनी आबरू, कीर्ति वृद्धि पामे अने वहेवारमां पण ते घणुं सुख पामे. अने देहने मूकीने पण तेने भगवानना धामनी प्राप्ति थाय छे.

माटे जेने अतिशय सुखिया थवुं होय तेने तो पोताने विषे कांइ दुरिजनपणुं होय तो तेनो त्याग करीने बीजा एवा दुरिजन मनुष्य होय तेना संगथी छेटे रहीने सज्जन एवा जे भगवान तथा भगवानना एकांतिक

भक्त संत तेनो दृढपणें मन, कर्म, वचने समागम करवो. अने जेने करीने आत्मानो मोक्ष थाय एवां धर्म, ज्ञानादिक रूडा गुण ते शीखवा. अने पोताना सगां-संबंधी होय तेने पण तेवी ज रीते उपदेश आपवो जे भगवान अने भगवानना संत तेनो आशरो करशो तो ज सुखिया थशो. पण ते विना बीजे क्यांय सुख नथी. अने पूर्वे पण जे जे मोटी-पदवीने पाम्या छे ते पण अधर्म अने दुरिजन मनुष्य तेना संगनो त्याग करीने सज्जन एवा जे सत्पुरुष भगवान अने भगवानना संत तेना आश्रय थकी ज पाम्या छे.'

माटे मनुष्यदेहे करीने जे जे आत्माना मोक्षनुं साधन करशे तेनो मोक्ष थशे, पण पछी मनुष्यदेह गया केडे चोराशीमां बीजा कोइ अवतारमां आत्मानुं रूडुं थाय एम नथी."

इति श्रीमुख सिद्धांत १२९ समाप्त ।

---

१३० विषय :–मनुष्यदेहे ज धर्म-नियम पळाय छे

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः–संवत् १९१९ ना भादरवा वद १४ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री पीपळी मध्ये चुडासामा नारणजी खेमाभाईना दरबारमां आथमणां बारना ओरडानी ओशरीमां ढोलिया उपर विराजमान थया हता. सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पुष्पना आभूषणो सर्वे अंगमां शोभी रह्यां हतां. अने पोताना मुखारविंदनी आगळ संत-मंडळ तथा घणांक हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी संध्या आरती थया पछी महाराज बोल्या जे "जेने मनुष्य-देह आव्यो छे अने तेमां कोइ एम कहे जे 'अमारे तो धर्म-नियम पळे

नहीं' तो तेने तो पाप जाणवुं. केमके मनुष्यदेहे करीने ज धर्म-नियम पळे एम छे पण पछी पशु-पक्षीना अवतारमां पळे एम नथी. ते कूतरा छे ते आठे पहोर नवरा बेठा रहे छे पण तेने परमेश्वर भजवानुं अने वर्तमान पाळवानुं भान नथी; तेने मनुष्यदेहे भगवान भज्या नथी अने वर्तमान पाळ्या नथी ते हवे चोराशीमां प्रारब्धवश थइने वर्तमान पाळवा पडे छे. ते कूतराने ककडा ककडा रोटला सारु घरोघर भटकवुं पडे छे तो पण पूरुं पेट भरातुं नथी. अने बळदना अवतारमां गोधला करी नाखे छे त्यारे सहेजे निष्कामीव्रत पाळवुं पडे छे, अने खाधा-पीधानुं पण नियम प्रमाणे धणी खवरावे-पीवरावे त्यारे खवाय-पीवाय पण पोतानी मेळे खवाय-पीवाय नहीं. अने वळी भार पण अण तोळ्यो तणावे तेटलो ताणवो पडे, पण तेमां हा के ना कहेवाय ज नहीं. अने झाडना अवतारमां पण टाढ-तडकानुं सहन करे छे अने कुहाडो लइने कोइ कापे छे तो पण तेने ना पाडी शकता नथी. एवी रीते मुनि-व्रत पाळे छे. तथा बीजा घणाक जीव कर्मवश थइने अपार कष्ट भोगवे छे. एवी रीते प्रारब्धवश थइने नियम पाळवा पडे छे, पण तेने करीने जीवनुं कल्याण थतुं नथी.

केमके परमेश्वरे कृपा करीने जन्म-मरणना दुःख थकी मुकाववा सारु अने पोतानुं अविनाशी धाम अने अविनाशी सुख तेने पमाडवा सारु जीवने मनुष्यनो देह आप्यो हतो, पण ते अमूल्य एवो जे मनुष्यदेह तेने करीने भगवान के भगवानना निर्वासनिक एकांतिक संत तेना (आपेला) वर्तमान पाळ्या नहीं अने भगवाननुं भजन कर्युं नहीं अने नाशवंत अने स्वप्न तुल्य एवां जे संसारना खोटां सुख तेमां रची-पची रहीने मिथ्या एवी जे लोक-लाज तेमां बंधाइने मनुष्यदेह वृथा खोयो. पछी परमेश्वर तेना उपर कोपायमान थइने तेने चोराशीलाख जातना

अवतार धरावे छे. अने ते ते अवतारमां जीवने अपार अपार कष्ट भोगववा पडे छे. ते सारु जेने मनुष्यनो देह आव्यो होय तेने तो सावधान थइने महात्मा पुरुषने शरणे जवुं अने ते पोताने जे जे आज्ञा करे तेने अंतरमां उतारीने ते प्रमाणे दृढपणें वर्तवुं. अने मनुष्यदेहे करीने जे जे करवानुं धारे ते थइ शके एम छे.

ते पण आजथी चेतीने सावधान थइने पोतानुं तन, मन, धन भगवान अने भगवानना संत तेने अर्पण करे त्यारे काम थाय, पण गाफलाई राखे अने एम जाणे जे 'हमणां तो वर्तमान पाळवानी नवराई नथी अने चे एक दिवस पछी वर्तमान पाळीशुं अने भगवाननुं भजन करीशुं,' एम कहे अने एम समजे ते तो महा मूरख छे अने पापी छे. केमके मनुष्यदेहनो तो पळमात्रनो क्यां निर्धार छे? ते पण जनक राजाए भागवतमां कह्युं छे जे–

दुर्लभो मानुषो देहो देहिनां क्षणभंगुर।
तत्रापि दुर्लभं मन्ये वैकुंठप्रियदर्शनम्॥

अर्थः–'मनुष्यनो देह दुर्लभ पण क्षण भंगुर कहेतां पळवारमां नाश पामी जाय एवो छे, तो पण ते देह छतां प्रगट भगवान के भगवानना निर्वासनिक संत तेनुं दर्शन अने तेनो समागम थाय ते अतिशय दुर्लभ छे.'

माटे एवो समो आव्यो होय तेने तो तत्काळ भगवान परायण थवुं अने सत्संग करीने पंचविषयनी वासना टाळीने ज्ञान पामवुं. अने पोताने देहेथी नोखो अखंड अविनाशी अच्छेद अने अभेद एवो आत्मा जाणीने ब्रह्मरूप थइने प्रत्यक्ष भगवाननी भक्ति करवी एज जीवने अतिशय मोटो लाभ छे अने सर्वे शास्त्रनो पण एटलो ज सार छे.

इति श्रीसुख सिद्धांत १३० समाप्त।

१३१ विषय :–सुबुद्धि-कुबुद्धिनी परीक्षा

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः–संवत् १९१९ ना आसो सुद २ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री पींपळी मध्ये व्यास शीवराम अंबारामने घेर उगमणें बार ओरडानी ओशरीमां हिंडोळाखाट उपर विराजमान थया हता. सर्वे कसुंबल सोनेरी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पुष्पना आभूषणो सर्वे अंगमां शोभी रह्यां हतां. ककुंनो चांदलो कर्यो हता अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनिमंडळ तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

पछी महाराजनी संध्या आरती थइ पछी ते समे आरती धून करीने हरिभक्त सर्वे बेठा. पछी महाराज बोल्या जे "आज अमे वात करीशुं तेमां जेवी जेनी बुद्धि हशे तेवी तेने साक्षात्कार जाण्यामां आवशे ते वात कहीए ते सांभळो. जे आ सर्वे घणाक प्रकारना मनुष्य छे तेमां जे जे बुद्धिवाळा हशे तेनो तो एवो ठराव हशे जे 'आपणे महाराजना तथा महाराजना संतना दर्शन करीने तेमने नख-शीख नीरखीने अंतरमां धारी राखवा छे. अने महाराज अने संत जे जे वचन बोलशे ते वचनने आपणां मोक्षने अर्थे जतन करीने धारी राखीशुं.'

एम समजीने जे बुद्धिवाळा होय ते वातमां सुरत राखीने एम विचार करे जे 'आज महाराजे आटली वात करी अने तेमां आटलो सार कहेवाणो. अने काल आ वात थइ हती अने परम दहाडे आ वात थइ हती. अने तेमां आटलुं तो आपणे जरूर करवानुं छे. अने एटलुं करीशुं तो ज आपणां उपर भगवान अने संत प्रसन्न थशे अने आपणां आत्मानो मोक्ष थशे, पण ते विना जीवनो मोक्ष न थाय.' एम विचारीने धर्म संबंधी जे जे वात थइ होय तेने सांभळीने जेवी रीते वर्तवानुं कह्युं होय ते प्रमाणे वर्तवानो मनमां दृढ ठराव करे.

–अने देह-आत्माना विवेकनी वात करी होय ते प्रमाणे समजीने

देहना भावथी जुदो पोताना आत्माने जाणीने आत्मारूपे वर्तवा लागे. अने चार प्रकारना प्रलयनी वात सांभळीने प्रकृतिनां कार्य जे जे पिंड, ब्रह्मांडादिक सर्व पदार्थ तेने विषे वैराग पामे. अने भगवान अने भगवानना संत तेनो महिमा कह्यो होय तेने सांभळीने तेने विषे नवधा भक्तिए करीने अतिशय प्रीति करे. अने पोताना मनमां निर्वासनिक थवानी इच्छा करे. एवी रीतनी समजण जेने होय तेने बुद्धिवाळा जाणवा.

—अने एवी समजण जेने होय ते ज ज्ञान सांभळीने तत्त्व ग्रहण करे छे. केमके परमेश्वरे तो जीवना मोक्ष सारु सर्वने बुद्धि सर्जी आपी छे, पण तेमां जे सुकृति-जीव छे ते तो बुद्धिए करीने सार-असारनो विवेक करीने तेमां जे असार होय तेनो त्याग करीने सारनुं ग्रहण करीने पोताना आत्मानुं काम सुधारी ले छे.

—अने जे कुबुद्धिवाळा होय ते तो अहीं अमारी पासे आवीने पण इन्द्रियोनी वृत्तियोने नियममां राखता नथी. अने कुबुद्धिवाळा पुरुष छे ते स्त्रीयोना मोढां जुए अने कुबुद्धिवाळी स्त्रीयो होय ते पुरुषना मोढां जुए अने मनमां भूंडा भूंडा संकल्प करे. पछी ते पापे करीने तेना आत्मानुं अतिशय भूंडुं थाय छे. अने अमे जे ज्ञानवार्ता करीए तेनी पण ते कुबुद्धिवाळाने भान रहे नहीं जे 'शी वात करी.'

माटे एवी रीते सौसौना मनमां तपास करीने जोशो तो साक्षात्कार खबर पडशे जे 'आपणामां ते सुबुद्धिना गुण छे के कुबुद्धिना गुण छे,' एम विचारीने सुबुद्धिनां गुण जो पोतामां होय तो तेने दृढ करीने राखवा अने वळी सत्संग करीने ते गुणने वृद्धि पमाडवा. अने कुबुद्धिना गुण पोतामां जणाय तो तेने पापरूप जाणीने तेनो त्याग करवो. ए तमारा सर्वेनी हीतवार्ता छे, तेने नित्य प्रत्ये संभारी राखजो.'

इति श्रीमुख सिद्धांत १३१ समात ।

१३२ विषय-बे प्रकारना सत्पुरुषनी समज

श्रीहरिकृष्णाय नमो नमः-संवत १९१९ ना आसो सुद ३ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गामथी पींपळी मध्ये भक्त वीरजी खीमाने घेर उगमणें बार ओरडानी ओशरीमां गादीतकिया बिछावेला ढोलिया उपर विराजमान थया हता. सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने कंठमां हार अने पागमां तोरा धारण कर्या हता. कंकुनो चांदलो कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणांक हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी महाराज बोल्या जे "आज अमे जे वात करीशुं तेने ज्ञानी हशे ते समजशे अने तेना अंतरमां घणो प्रकाश थशे अने तेना संशय मात्र टळी जशे. अने जे अज्ञानी हशे तेने मोह थशे. ते वात कहीए तेने सांभळो जे पूर्वे जे जे सत्पुरुष थइ गया छे ते बे प्रकारना सत्पुरुष थया छे; तेमां एक तो भगवान सत्पुरुष कहेवाय छे अने एक भगवानना भक्त एकांतिक संत ते पण सत्पुरुष छे. तेमां नारदादिक जे भगवानना भक्त साधु ते तो धर्म, ज्ञान, वैराग अने महात्म्ये सहित भगवाननी भक्ति तेने युक्त एवा जे साधुना चोसठ लक्षण तेने सहित होय अने निर्वासनिकपणें अखंड वर्ते तो ते सत्पुरुष कहेवाय. अने ते जो लगारे पण भगवाननी आज्ञा लोपे तो ते भ्रष्ट थइ जाय अने ते सत्पुरुष कहेवाय नहीं. माटे तेने तो भगवाननी आज्ञामां दृढपणें वर्तवुं पडे छे, त्यारे ज ते सत्पुरुष कहेवाय छे. अने ते पोते पण महा मुक्त थाय छे अने तेनो जे जे आशरो करे तेने पण ब्रह्मरूप करी मूके.

अने बीजा जे भगवान सत्पुरुष छे. ते भगवाननुं बे प्रकारनुं स्वरूप छे, तेमां एक तो दिव्य-स्वरूप छे अने एक भगवाननुं मनुष्य-स्वरूप

छे. तेमां दिव्यरूपे तो इन्द्रियो, अंतःकरण थकी अगोचर थका सदाय अक्षरधाममां विराजमान छे अने ते स्वरूपने वेद पण 'नेति नेति' कहे छे. अने ते स्वरूपने कोइ जोवाने समर्थ नथी, केमके ते स्वरूप तो माया पर छे अने जीवमात्र तो मायामां विटायेला छे. माटे मायिक इन्द्रियोए करीने ते दिव्यरूप भगवाननुं जोयामां आवे नहीं. अने ते स्वरूपना रोम रोम प्रत्ये कोटी सूर्यना प्रकाशने झांखो करे तेवो तेनो प्रकाश छे अने ते सर्वना कर्ता छे, सर्वना आधार छे अने सर्वना पालक छे. अनंत ऐश्वर्य अने अनंत पार्षद अने अनंद दिव्यगुण तेने युक्त थका अक्षरधाममां पोताना एकांतिक भक्तने अखंड सुख आपे छे.

—एवा जे परमात्मा परब्रह्म पुरुषोत्तम दिव्यमूर्ति भगवान ते जीवो उपर कृपा करीने पोतानुं स्वरूप जणाववा सारु पोतानो जे दिव्यभाव तेने छुपावी राखीने ते ज पोते मनुष्याकृतिनुं धारण करे छे अने मनुष्यना जेवी ज क्रिया करे छे. केमके सजाति थया विना जीवने स्नेह थाय नहीं अने स्नेह थया विना जीवने ज्ञान थाय नहीं अने ज्ञान विना जीवनो मोक्ष थाय नहीं. माटे भगवान पण जीवोने ज्ञान आपवा सारु मनुष्यनी पेठे ज भूख, तरस, टाढ, तडको, पोतानुं, पारकु ए आदिक मनुष्यना स्वभाव ते जीवोना कल्याणने अर्थे पोताने विषे जणावे छे पण पोतानुं अलौकिक ऐश्वर्य तेने नथी जणावता.

—अने जो अलौकिक ऐश्वर्यने जणावे तो जीवोने ठीक पडे नहीं अने तेनुं कल्याण पण थाय नहीं. केमके विजातिभाव थाय, ते विजातिभावमां जीवने सुख थाय नहीं. ते श्रीकृष्ण भगवाने अर्जुनने विश्वरूप देखाडयुं तो तेने जोइने अर्जुन आकुळव्याकुळ थइ गयो अने ते रूप जोवाने समर्थ न थयो. पछी अर्जुने कह्युं जे "हे महाराज ! तमारुं मूळ

रूप जे मनुष्याकृति ते मने देखाडो तो सुख थाय." माटे ते सारु भगवान ज्यारे ज्यारे अवतार धारण करे छे त्यारे मनुष्यना जेवी ज चेष्टा करे छे, पण दिव्यभाव जणावता नथी.

त्यारे कोइ एम कहे जे "कृष्णावतारमां गोवर्धन तोळ्यो, कुबजानां वांक टाळ्या अने रामावतारमां समुद्रमां पाग बांधी, एवा एवा दिव्य-भाव जणाव्या तेनुं केम समजवुं ? तो एनुं तो एम छे जे भगवान तो मनुष्यनी पेठे ज वर्त्या छे. अने देहनी क्रिया पण सर्वे मनुष्यना जेटली ज करता. अने एने विषे सर्वे मनुष्य करतां विशेष भाव तो एक ज्ञान हतुं. ते एवुं भगवानना जेवुं ज्ञान कोइ मनुष्य तथा देव, ब्रह्मादिक पासे पण नथी. माटे जाडी बुद्धिवाळा जे जीव तेने सूक्ष्म ज्ञानमां गम पडे नहीं ते सारु शास्त्रमां भगवाननो जे दिव्यभाव अने मनुष्यभाव तेनुं अभेदपणें वर्णन करीने भगवाननो महिमा देखाडीने ते मनुष्य-मूर्ति भगवानने विषे जाडी बुद्धिवाळा मनुष्यने प्रीति थाय ते सारु मोटा पुरुषोए शास्त्रमां मर्म लख्या छे. पण भगवाननुं तो दिव्य स्वरूप अने मनुष्य स्वरूप ते बेय एक ज छे, पण ते दिव्य अने मनुष्य स्वरूप तेमां एक रोमनोय फेर नथी.

जेम कोइक राजा होय ते कोइ कार्यने अर्थे फकीरनो वेष लइने एकलो परदेशमां जाय त्यारे ते देशना मनुष्य कोइ पण न जाणे जे आ राजा छे. ते तो एम जाणे जे जगतमां बीजा फकीर फरता फरे छे तेवो ज आ फकीर पण हशे. पण ते राजाना देशनो जाणीतो मनुष्य आवे ते एम जाणे जे आ फकीरने वेषे जणाय छे ते तो मुलकनो बाद-शाह छे, पण ते फकीरने अने बादशाहने जुदा न समजे. अने जुदा छे पण नहीं. तेम राजाने ठेकाणे तो दिव्य स्वरूप भगवाननुं छे, अने

फकीरने ठेकाणे मनुष्य स्वरूप भगवाननुं छे, पण ते बेय एक छे. तेने ते भगवानना देशी जे भगवानना एकांतिक ब्रह्मरूप मुक्त साधु ते भगवाननुं दिव्य स्वरूप अने मनुष्य स्वरूप तेने अभेद जाणे छे. माटे शास्त्रमां वे स्वरूपने एक करीने भगवाननुं वर्णन कह्युं होय. ते सारु सत्पुरुष थकी ज शास्त्रना मर्म समजाय छे पण ते विना पोतानी मेळे शास्त्रने भणे-सांभळे समजाय नहीं. ते पण शास्त्रमां व्यासजीए कह्युं छे जे—

अहं वेद्मि शुको वेत्ति संजयो वेत्ति वा न वा ।
भक्त्या भागवतं शास्त्रं न च बुध्यान च टिकया॥

माटे शास्त्रना मर्मने न जाणता एवा अने पंचविपयनी वासनाए करीने दग्ध थइ गयां छे अंतःकरण जेना एवा जे देहाभिमानी अने मिथ्या मानना धरावनावाळा एवा जे अज्ञानी मनुष्य तेने तो प्रत्यक्ष भगवाननुं स्वरूप कोइ काळे ओळखातुं नथी अने पूर्वे पण जेणे जेणे प्रत्यक्ष भगवान ओळखाया छे ते पण गोपी, गोवाळादिके निर्मानीपणें आशरो कर्यो छे तेने ज ओळखाया छे, पण मानी एवा जे ऋषि तथा मानी एवा जे राजा तेने प्रगट भगवानने ओळख्या नथी.

माटे मनुष्याकृति भगवान धारण करे छे त्यारे मनुष्यना जेवी ज चेष्टा करे छे. पछी जे जीव निर्मानी थइने प्रत्यक्ष भगवानने शरणे आवे छे तेने भगवान ज्ञान आपीने तेने निवारण दृष्टि करावीने पोतानो अलौकिक प्रताप तेने ज्ञाने करीने देखाडे छे त्यारे ते जीवने मनुष्यमूर्ति भगवान तेने विषे सर्वोपरि पुरुषोत्तमपणांनो निश्चय थाय छे. पछी तेना आत्माने विषे प्रकाश थाय छे, त्यारे ते भक्त प्रत्यक्ष एवा जे मनुष्याकृति भगवान तेनो अपरिमित महिमा अने अनंत ऐश्वर्य तेने देखे छे. अने ते भक्तने मायानुं आवरण टळी जाय छे. अने जेने निश्चय थयो

नथी ते तो भगवानने बीजा मनुष्य जेवा ज देखे छे पण तेने कोइ दहाडो दिव्यभाव देखातो नथी. माटे प्रत्यक्ष भगवाननुं स्वरूप ज्ञाने करीने ओळखाय छे पण बीजी कोइ रीते प्रत्यक्ष भगवान ओळखाता नथी.

–ते सारु जेने पोताना जीवनुं कल्याण इच्छवुं होय तेने तो निर्मानी थइने जेने प्रत्यक्ष भगवानना स्वरूपनो निश्चय होय तेनो विश्वास राखीने समागम करवो, तो तेने प्रत्यक्ष भगवानना स्वरूपनो निश्चय थाय अने तेनुं कल्याण थाय. पण ते विना मानी थइने भगवानना निश्चय वाळा जे भगवानना भक्त तेनी साथे पितराई-दावो राखे तेने कोइ दहाडे निश्चय थाय नहीं अने तेनुं कल्याण पण थाय नहीं.

केमके भगवान सत्पुरुष छे ते तो स्वतंत्रपणें वर्ते छे, पण तेने मांथे कोइनी आज्ञा नथी. माटे जे अज्ञानी होय तेने प्रत्यक्ष भगवाननी क्रियाने विषे दोष भासे छे, तेने करीने तेनुं कल्याण थाय नहीं. ते सारु सत्संग करीने ज्ञाने करीने प्रत्यक्ष भगवानना स्वरूपनो निश्चय करवो एज सर्वे जीवनी हीतवार्ता छे."

इति श्रीमुख सिद्धांत १३२ समाप्त ।

---

१३३ विषयः–आपरूपी मोटुं बंधन टाळवानो उपाय.

श्री हरिकृष्णाय नमो नमः–संवत १९१९ना आसो सुद ८ ने दिवस महाराज श्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्री पीपळी मध्ये भक्त वीरजी खीमाने घेर उगमणा बारना ओरडानी ओसरीमां गादीतकिये युक्त ढोलिया उपर विराजमान थया हता. सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने कुमकुमनो चांदलो कर्यो हतो अने पाताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणांक हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी महाराजनी आरती धून करीने सर्वे हरिजन वेठा पछी महाराज कृपा करीने बोल्या जे "पंचविषयनुं वंधन जीवने छे, पण तेमां कयो विषय जीवने टाळवो अतिशय कठण छे ? ए प्रश्न साधुने पूछीए छीए ते कहो." पछी धर्मानंद स्वामीए कह्युं जे "सर्वे विषय करतां आवरूनुं वंधन टाळवुं ते जीवने अतिशय कठण छे."

पछी महाराज बोल्या जे "ए उत्तर खरो छे. केम के बीजा विषय छे ते तो निर्बीज–सांख्य अने निर्बीज–योग तेने करीने टळे छे पण आवरू टळवी घणी कठण छे. अने ते लौकिक आवरू तो क्यारे टळे? तो प्रत्यक्ष भगवानना स्वरूपनो उत्तम निर्विकल्प निश्चय थाय त्यारे ज तेने लोकनी आवरू दृष्टिमां नथी आवती अने निश्चयमां जेने लगारे पण कसर होय त्यां सुधी लोकनी आवरू तथा मत–पंथनी जे आवरू ते नथी टळती.

ते पूर्वे पण मोटा मोटाने लोकनी आवरू मूकवी ते कठण पडी छे ते कृष्णावतारमां भीष्मपिता महा ज्ञानी हता तो पण लोकनी लाजे अने आवरूए करीने कौरवना पक्षमां रह्या अने श्रीकृष्ण सामुं युद्ध कर्युं, अने श्रीकृष्णने भगवान जाणता हता पण उत्तम निर्विकल्प निश्चय न हतो तेने करीने आवरू मूकाणी नहीं. अने शंकराचार्यना शिष्य हता ते रामानुजने सत्पुरुष जाणता हता तो पण मतपंथनी लाजे करीने तेनो द्रोह कर्यो. अने वैष्णववाळा केटलाक सहजानंद स्वामीने एम जाणता जे 'ए मोटा पुरुष तो छे.' तो पण केटलाके लाजे करीने तेनो द्रोह कर्यो.

–अने आज पण केटलाक सहजानंद स्वामीना शिष्य छे ते अमने एम जाणे छे जे 'आ भगवान छे अने आ कल्याण करे एवा छे' तो पण मतपंथनी लाज तथा आवरू तेणे करीने वंधाइ रह्या छे अने ते

छानुं छानुं अमारुं भजन करे छे अने अम थकी कल्याण इच्छे छे, तो पण आवरूरूपी आवरणे करीने अमारी पासे अवातुं नथी.

माटे काम, लोभ, स्वाद, स्नेह, मान अने आवरू ते जीवने मूकवा अति कठण छे. तेमां प्रथम कामनुं जीवने आवरण छे. ते कामनो त्याग करे तो पण तेने लोभ मूकवो अति कठण छे, केम के केटलाक लोभ सारु घर अने स्त्रीनो त्याग करीने परदेशमां कमावा जाय छे. अने लोभ करतां स्वादनुं बंधन कठण छे, केम के काम, लोभनो त्याग करीने त्यागी थयो होय तो पण तेने स्वाद मूकातो नथी. ते केटलाक भेखधारी छे ते स्त्री, द्रव्यथी छेटे रहे छे पण ते स्वाद सारु हेरान थाय छे. अने काम, लोभ अने स्वाद करतां पण स्नेहनुं बंधन भारे छे, केम के लोभे करीने परदेशमां जाय अने त्यां कोइनी चाकरी करीने हेरान थइने रूपिया कमाय अने स्नेहे करीने सारी वस्तुए न खाय अने ते रूपिया स्त्री, छोकरांने सारु घेर मोकले छे. अने स्नेह करतां माननुं आवरण घणुं बळवान छे. अने मान करतां जे लोकनी आवरू छे ते तो जीवने अतिशय दुःखनी देनारी छे.

—ते पोताना अंतरमां जाणता होय जे "आपणां मतमां ते हवे धर्म नथी अने पंचविषयनी वासना पण दिवसे दिवसे वधती जाय छे. माटे आपणां आत्मानुं कल्याण नहीं थाय. अने कल्याण तो माया पर एवा जे प्रत्यक्ष भगवान अने तेना एकांतिक पंचविषयना त्यागी संत तेना संग थकी थाय." एम जाणे तो पण आवरूने बंधने करीने समागम करवा अवातुं नथी.

अने गृहस्थ हरिभक्त छे तेने काम, लोभ, स्वाद, स्नेह अने मान मुकावीए तो तेने कठण पडे नहीं, पण तेने एम कहीए जे 'लुगडां भगवां

करीने साधु भेगा रहो.' तो जेने उत्तम निर्विकल्प निश्चयमां कसर होय तेने कठण पडे अने जेने उत्तम निर्विकल्प निश्चय होय ते तो अतिशय राजी थइने जेम कहीए तेम करे अने एम समजे जे 'मारी उपर कृपा करीने मने मायाना फंद थकी मुकाव्यो.'

माटे प्रत्यक्ष भगवानना महात्म्ये सहित उत्तम निर्विकल्प निश्चय थाय त्यारे ज लोकनी आवरूरूपी महा वज्र पासलो ते टळे, पण ते विना बीजां कोटी साधन करे तो पण ते आवरूरूपी पासलो टळे नहीं. ते सारु संतनो समागम करीने उत्तम निर्विकल्प निश्चय करवो."

इति श्रीमुख सिद्धांत १३३ समाप्त ।



१३४ विषयः-आत्मानी महत्ता अने तेने पामवानी रीत,

श्रीहरिक्रिष्णाय नमो नमः-संवत १९१९ ना आसो सुद ९ ने दिवस महाराज श्रीहरिक्रिष्ण भगवान गाम श्री पींपळी मध्ये भक्त वीरजी खीमाने घेर उगमणें बार ओरडानी ओशरीमां ढोलिया उपर विराजमान थया हता. श्वेत सुरवाल अने रेशमी डगली धारण कर्यां हतां अने मस्तक उपर मलमलनो सोनेरी कोर छेडानो फेंटो बांध्यो हतो. गुढो रेटो अने कसुंबल शेलुं केडे धारण कर्यो हता अने पुष्पना हार, तोरा अने गुच्छ धारण कर्या हता. कंकुनो चांदलो कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणांक हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी महाराजनी आरती, धून थया केडे महाराज बोल्या जे "सर्वे सांभळो एक वात करवी छे. अने आ वात करीशुं ते छे तो थोडिक पण तेमां चमत्कार घणो छे. अने ते वात समजाय तो अंतरमां अपार सुख थाय. ते वातने कहीए छीए जे एक एक जीवने विषे कोटानकोटी

ब्रह्मांडनी समृद्धि भरी छे. जेम एक वडना एक बीजमां अनंत कोटी वड रह्या छे, ते एक बीजने वावीए तो तेनो एक मोटो वड थाय अने ते वडने पेपा थाय छे अने तेमांथी घणांक अपार बीज थाय छे अने ते बीजमांथी वडनो पार रहे ज नहीं. तेम एक एक जीवने विषे जे कारण मायारूप बीज छे ते थकी अनंत कोटी ब्रह्मांड उपजे छे.

जेम चिंतामणिने पृथ्वीमां उंडी दाटी होय अने ते उपर पारसमणियो नाखीने ते उपर हीरा, मोतीनी पूरणी पूरी होय अने ते उपर सोना महोरोनो धावो दइने रूपियानी पूरणी पूरी होय अने ते उपर त्रांबानो धावो दइने लोढानी पाटो नाखीने ते उपर धूळ वाळी होय. पछी ते चिंतामणिने काढवी होय त्यारे प्रथम धूळ नीसरे अने ते धूळने काढी नाखे त्यारे लोढुं नीसरे. ते लोढाने काढी नाखे त्यारे त्रांबु नीसरे अने ते त्रांबाने काढी नाखे त्यारे रूपिया नीसरे. ते रूपियाने काढी नाखे त्यारे सोनामहोरो नीसरे अने ते सोनामहोरोने काढी नाखे त्यारे मोती, हीरा नीसरे. ते मोती, हीराने काढी नाखे त्यारे पारसमणियो नीसरे अने ते पारसमणियोने काढी नाखे त्यारे चिंतामणि हाथमां आवे, पण ते विना वगर दाखडे चिंतामणि पृथ्वीमां होय पण हाथ आवे नहीं.

तेम जीवने विषे चिंतामणि रूप परमात्मा भगवान रह्या छे पण जीवनी उपर हीरा, मोती, सोनामहोरो, त्रांबा लोढादिक रूप मायाना पड चड्या छे. ते मायानो त्याग करे त्यारे जीव परमात्माने साक्षात्कार पामे अने महा सुखियो थाय. तेमां जीवने पहेलुं मायानुं पड आलोकना सुख छे. ते सुख धूळने ठेकाणे छे. माटे आलोकना सुखनो जीव त्याग करे त्यारे जीवने देवलोकना सुख प्राप्त थाय. ते देवलोकना सुख लोढाने ठेकाणे छे. अने ते देवलोकना सुखनी वासनानो जीव त्याग करे त्यारे तेने ब्रह्माना लोकना सुखनी प्राप्ति थाय. ते ब्रह्माना लोकना सुख त्रांबाने ठेकाणे

છે. અને સત્સંગ કરીને જીવ જે તે બ્રહ્માના લોકના સુખની વાસનાનો ત્યાગ કરે ત્યારે તેને વૈરાજના સુખની પ્રાપ્તિ થાય. તે સુખ રૂપિયાને ઠેકાણે છે. અને તે વૈરાજપુરુષના સુખનો સમજીને ત્યાગ કરે ત્યારે તે થકી કોટી ઘણાં પ્રધાનપુરુષના લોકના સુખની જીવને પ્રાપ્તિ થાય છે. તે સુખ સોનામહોરને ઠેકાણે છે. અને તે સુખની વાસનાનો ત્યાગ કરે કહેતાં મનમાંથી પંચવિષયની વાસનાનો જીવ ત્યાગ કરે ત્યારે તેને તે થકી અનંતકોટી ઘણાં પ્રકૃતિપુરુષના સુખની પ્રાપ્તિ થાય છે. તે સુખ હીરા, મોતીને ઠેકાણે છે.

–અને તે સુખની વાસનાનો ત્યાગ કરે કહેતાં સાંખ્યવિચાર કરીને પિંડ, બ્રહ્માંડાદિક માયિક આકારમાત્રનું નિરાકરણપણું કરીને બુદ્ધિમાંથી પંચવિષયની વાસનાનો ત્યાગ કરે ત્યારે તેને અક્ષરબ્રહ્મનું સુખ પ્રાપ્ત થાય, કહેતાં પોતે જીવ જે તે બ્રહ્મરૂપ થાય. તે સુખ પારસમણિને ઠેકાણે છે. અને તે કેવળ બ્રહ્મમાં તૃપ્તિ ન પામે ત્યારે તેને આત્માના આત્મા એવા જે પરમાત્મા પ્રત્યક્ષ ભગવાન તેના સુખની પ્રાપ્તિ થાય છે. અને તે સર્વોપરિ સુખ ચિંતામણિને ઠેકાણે છે.

તે જેમ બીજા સર્વ દ્રવ્યનું પ્રમાણ થાય પણ પારસમણિનું પ્રમાણ થાય નહીં અને અમૂલ્ય એવી જે પારસમણિયો તે એક ચિંતામણિમાં અનંત લીન થઇ જાય. તેમ પૂર્વે કહ્યાં જે મનુષ્ય, દેવ, બ્રહ્મા અને પ્રકૃતિપુરુષ સુધી સર્વે લોકના સુખ તે સર્વેનું પ્રમાણ થાય પણ અક્ષરબ્રહ્મના સુખનું પ્રમાણ થાય નહીં. અને તે અક્ષરનું સુખ પણ પરમાત્મા પરબ્રહ્મ પુરુષોત્તમના સુખના લેશમાં લીન થઇ જાય, એવા જે પરબ્રહ્મ પુરુષોત્તમ ભગવાન તેના સુખને ક્યારે પમાય ? તો પૂર્વે કહ્યા જે સર્વે રાજા, દેવ, બ્રહ્મા, અને પ્રકૃતિપુરુષ સુધીના સુખ તેની વાસનાનો ત્યાગ કરે અને કેવળ અક્ષરબ્રહ્મના સુખમાં તૃપ્તિ ન પામતાં આત્માના આત્મા પરમાત્મા પરબ્રહ્મ

पुरुषोत्तमना सुखने अधिक जाणे त्यारे भगवानना सुखने जीव पामे. पण ते विना भगवानना सुखने पमाय नहीं.

जेम खाणमां चिंतामणि होय तेने काढवी होय त्यारे ते उपर दाबा जे धूळ, लोढुं, त्रांबादिक सर्वेने काढी नांखे त्यारे चिंतामणी मळे, तेम चिंतामणिरूप परमात्मा आत्माने विषे रह्या छे. तेने क्यारे पमाय? तो आत्मानी उपर दाबारूप, जे काम, लोभ, स्वाद, स्नेह, मान तथा शब्द, स्पर्श, रूप, रस अने गंध तेनो त्याग करे त्यारे परमात्माने पमाय. अने त्याग कर्या विना तो कोइ सुखने पमातुं नथी.

जेम खेडूत छे ते जो घरमांथी एक गांसडी दाणा खेतरमां वावी आवे छे तो तेमांथी गाडा भरी आवे अने ए गांसडीमांथी हजार गांसडी मळे. अने जो एक गांसडी दाणानो लोभ करे कहेतां वावे नहीं तो ते गांसडी दाणा पांच दहाडा पूगे अने पछी भूखे मरे. तेम जेम जेम विषयनो त्याग करतो जाय छे तेम तेम जीव जे ते उर्ध्वगतिने पामतो जाय छे, कहेतां मोटपने पामे छे. ते जेटलो जीव विषयनो त्याग करे छे तेथी कोटी घणी मोटप पामे छे. अने जे कामादिक दोष तथा शब्दादिक विषय तेनो त्याग करीने आत्मरूप थाय छे त्यारे तेने आत्माने विषे रह्या एवा जे परमात्मा ते प्रगट थइने साक्षात्कार प्राप्त थाय अने ते अविनाशी सुखने पामे.

–अने जे जे विषयनो त्याग नथी करता ते दिवसे दिवसे नीची गतिने पामता जाय छे अने ते जीव महा कष्टने पामे छे. माटे विषयनो त्याग करवो ए ज जीवने सुख थवानो उपाय छे. अने विषयनुं ग्रहण करवुं ए ज जीवने दुःख थवानो उपाय छे अने सर्वे विषयनो त्याग करवो ते अति सुख थवानो उपाय छे अने सर्वे विषयनुं ग्रहण करवुं ते अति

दुःख थवानो उपाय छे, माटे पिंड, ब्रह्मांडादिक सर्वे विषयना सुखनो त्याग करवो ए ज सर्व जीवनी हीतवार्ता छे.

—पण सर्वनो एक सामटो त्याग करवो ते जीवने बहु कठण पडे छे ते सारु महात्मा पुरुष ते जे ते जीवने सुखनो लोभ देखाडीने धीरे धीरे त्याग करावे छे. ते सारु वेदमां कह्युं छे जे "आवां कर्म करे त्यारे तेने आवुं सुख मळे अने एक घणुं दान करे तो तेने हजारघणुं फळ मळे. अने जे यज्ञ करे ते देवलोकमां जाय. अने तीर्थमां जइने सुपात्रने दान करे, ब्रह्मभोजन करे अथवा कोइ परवणीनो दिवस होय अने ते दिवसे सुपात्र जोइने दान, पुन्य के ब्रह्मभोजन करे तो तेने बहु ज फळ थाय अने तेने बीजे अवतारे आजनां करतां घणुं सुख मळे." पछी जीव जे ते सुखनो तो लोभीयो छे माटे ते लोभे करीने दान, पुन्य, व्रत, तप, तीर्थ, यज्ञ करे. पछी एम करतां करतां त्याग करवानो हेवायो थाय छे.

पछी जे सकामी जीव छे ते धर्म, अर्थ अने कामने पामे छे अने जे निष्कामी भक्त छे ते जे ते मोक्षने पामे छे. तेमां ज्यां सुधी जीवने सकामपणुं होय त्यां सुधी जे जे सुख प्राप्त थाय छे ते सुख दुःखे युक्त प्राप्त थाय छे. केम के दान पुन्ये करीने भोगववानी इच्छा रहे छे त्यां सुधी जन्म-मरण टळतुं नथी. अने जे जे सुख मळे छे ते सुख देहे करीने भोगवाय छे, ते देह रहे त्यां सुधी ते सुख भोगवे अने देह नाश पामे त्यारे जे जे देह संबंधी सुख होय ते सर्वे नाश पामी जाय छे.

—अने जे *निष्काम* भक्त छे ते तो दान, पुन्यादिक करे छे पण तेना फळने नथी इच्छतो, तो ते भक्त जे ते अविनाशी एवुं जे भगवाननुं धाम तेने पामे छे. माटे जेने सुखिया थवुं होय तेने तो पोतानुं जे सर्व तन, मन, धन तेनो त्याग करी देवो. अने जे मायिक सुख छे

ते तो भगवानना धाम आगळ नरक जेवुं छे, माटे नरक तो त्याग करवा योग्य छे. पण ज्यां सुधी जीवने अज्ञान छे त्यां सुधी तेमां माल मान्यो छे.

जेम वाळक होय ते नरकने सुखरूप जाणीने चूंथे छे अने तेना मावितर ते नरकने मुकावे छे त्यारे ते वाळक रुए छे. तेने घुघरादिक बीजां पदार्थ आपीने नरकनो त्याग करावे छे. अने ज्यारे पोते मोटो अने समजु थाय त्यारे ते नरकने तो अडे ज नहीं अने देखीने ग्लानी पामे. अने ते तो घुघरादिक रमकडां तेनो पण त्याग करे. तेम वाळक जेवा जे अज्ञानी जीव ते नरकरूप जे आलोकनां पंचविषयना सुख तेने भोगवे छे. अने तेने सत्पुरुष त्याग करावे छे तो ते अज्ञानी जीवने माथुं वाढ्या जेवुं लागे छे. पछी तेने घुघरादिक देवादिकना सुखनो लोभ देखाडीने आलोकनां सुखनो त्याग करावे छे. अने पछी तेने आत्मा, परमात्मानां स्वरूपनुं ज्ञान करावीने देवादिकना सुख चार प्रकारना प्रलये करीने नाशवंत देखाडीने तेनी वासनानो त्याग करावे छे अने जीवने ब्रह्मरूप करीने अक्षरधामने पमाडे छे, त्यारे जीव महासुखियो थाय छे. माटे जेने महासुखिया थवुं होय तेने तो जरूर संसारना सुखनो त्याग करवो."

इति श्रीमुख सिद्धांत १३४ समाप्त ।

---

१३५. विषयः—भगवानना कार्य अने कारण अवतार

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः—संवत् १९१९ ना आसो वद १ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री पींपळी मध्ये भक्त वीरजी खीमाने घेर उगमणें वार ओरडानी ओशरीमां गादी तकिये युक्त ढोलिया

उपर विराजमान थया हता. सर्वे सोनेरी कसुंबल वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पुष्पना आभूषण सर्वे अंगमां शोभी रह्यां हतां. ललाटने विषे कंकुंनो चांदलो कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ संतमंडळ तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी महाराज बोल्या जे "आलोकमां एक सत्य मार्ग छे अने एक असत्य मार्ग छे. तेमां सत्य मार्गना प्रवर्तावनारा सत्पुरुष छे अने असत्य मार्गना प्रवर्तावनारा असत्पुरुष छे. तेमां जो जीवने असत्पुरुषनो संग थइ जाय तो काम, लोभ, स्वाद, स्नेह अने मान तेमां अने दारू, माटी, गांजो, तमाकु, अफीणादिक अधर्मने विषे जोडावीने भ्रष्ट करे छे. अने ते जीव नरकमां जाय छे. अने जो जीवने सत्पुरुषनो संग थइ जाय तो धर्म, ज्ञान, वैराग, शील, संतोषादिक जे रूडां गुण ते वृद्धि पामे अने ते जीव महा पवित्र थइने भगवानना धामने पामे.

अने ते सत्पुरुषना अवतार पण बे प्रकारना थाय छे. तेमां एक तो कारण अवतार थाय छे अने एक कार्य अवतार थाय छे. जेम कोइक मोटो शाहुकार होय तेना वकील परदेशमां माल लइने जाय त्यारे त्यांना मनुष्य एम कहे जे 'शेठ आव्या छे,' पण ते पंडे शेठ नथी अने ए तो शेठनुं कार्य स्वरूप कहेतां आज्ञांकित छे, माटे ते शेठ पण कहेवाय. अने ते वकीलनां पण घणांक भेद छे. ते कोइक वकील बे रूपियाना महिनावाळो होय, कोइक पांच रूपियाना महिनावाळो होय, कोइक वीस रूपियाना महिनावाळो होय अने कोइक सो रूपियाना महिनावाळो होयं. तेमां जेवुं ज्यां काम होय तेने तेवा काममां प्रेरे छे. ते वीस रूपियानो माल वहोरवो होय के वेचवो होय के वीस रूपियानी उघराणी होय तो ते काममां बे रूपियावाळाने मोकले. अने सो रूपियानुं काम

होय त्यां पांच रूपियावाळाने मोकले. अने हजार रूपियानुं काम होय त्यां वीस रूपियावाळाने मोकले अने लाख रूपियानुं काम होय त्यां सो रूपियावाळा वकीलने मोकले अने करोडनुं काम पडे त्यारे तो पोते पंडे शेठ जाय. अने ते सर्वे वकील छे ते तो शेठे जेने जेटली आज्ञा करी होय तेटलुं ते काम करे, पण तेथी वधारे काम थाय नहीं. अने जे पंडे शेठ होय ते तो इच्छामां आवे तेम करे.

ते तो दृष्टांत अने तेनुं सिद्धांत ए छे जे शेठने ठेकाणे तो सर्व कारणरूप एवा जे परमात्मा पुरुषोत्तम भगवान ते छे. अने तेना वकील-ने ठेकाणे देव, ब्रह्मा अने प्रकृतिपुरुष सुधीना छे. तेमां बे रूपियाना वकीलने ठेकाणे तो ब्रह्मा, विष्णु अने शीव छे, पांचवाळाने ठेकाणे तो वैराजपुरुष छे, वीस रूपियावाळा वकीलने ठेकाणे प्रधानपुरुष छे अने सो रूपियावाळाने ठेकाणे मूळ प्रकृतिपुरुष छे. अने जेम शेठनो दीकरो होय तेने ठेकाणे तो भगवानना एकांतिक संत अक्षररूप मुक्त ते छे. अने जेम शेठने लइने सर्वे वकील शेठ कहेवाय पण शेठ कोइ नथी अने शेठ तो एक ज छे. तेम भगवान पुरुषोत्तमने लइने सर्वे भगवान कहेवाय पण भगवान बीजो कोइ नथी अने भगवान तो एक ज छे. अने बीजा सर्वे तो ए भगवानना भक्त छे. अने तेने तो भगवाने जेटली आज्ञा करी होय तेटलुं काम ते थकी थाय, पण वधारे थाय नहीं. अने सर्व-कारणरूप एवा जे भगवान ते तो च्हाय तेम करवाने समर्थ छे.

जेम कोइने मांथे शाहुकारनुं लाख रूपियानुं देवुं होय अने तेने वाळी नाखवुं होय तो बीजा कोइ वकीलथी वळे नहीं अने पंडे शाहुकार वाळे तो तत्काळ तेने मांथेथी देवुं वळी जाय. तेम जीवने जन्म-मरण रूपी करज छे. तेने वाळवुं कहेतां जन्म-मरण टाळवुं होय अने जीवने

आत्यंतिक मोक्ष आपवो होय ते तो परमात्मा एवा जे सर्व कारणरूप प्रत्यक्ष भगवान ते थकी ज अपाय छे, पण बीजा कोइथी जीवने आत्यंतिक मोक्ष अपाय नहीं. अने भगवान विना जीवने बीजा तो जेवा जेवा मळे तेटले तेने पुगाडे अने जेने जे मळे ते पोताने विषे जोडावीने पोत पोताना लोकमां लइ जाय. अने जेमां जोडाय छे त्यां ते जीवनो निवास थाय छे.

जेम भरतजी मृगलीना बच्चामां जोडाणा तो पोते मृग थया. तेम जो ब्रह्माए अवतार धर्यो होय अने तेमां जे जीव जोडाय तो ते जीव ब्रह्माना लोकने पामे. एवी रीते वैराज, महत्तत्व, प्रधानपुरुष अने प्रकृतिपुरुष सुधीना मांथी जेनो अवतार थयो होय अने तेमां जीव जोडाय तो तेना तेना लोकने जीव पामे. अने सर्व कारण एवा जे प्रत्यक्ष भगवान तेणे पृथ्वी उपर मनुष्याकृतिनुं धारण कर्युं होय अने तेमां जीव जे जे जोडाय अथवा भगवानना निर्वासनिक संतमां जोडाय तो ते जीव माया पर एवुं जे अक्षरधाम तेने पामे. माटे बीजा सर्वेमांथी प्रीति तोडीने एक भगवान अने भगवानना संतमां जोडावुं. अने जे भगवान अने संतमां जोडाय अने ते कांइ न समजतो होय तो पण ते जीव अक्षरधामने पामे.

जेम गोपी-गवाळ कांइ समजता न हता अने कांइ भणेला पण न हता, तो पण जो सर्व कारण एवा जे श्रीकृष्ण भगवान तेमां जोडाणा तो ते तेना धामने पाम्या. अने वांदरा रामचंद्रजीने विषे जोडाणा तो ते पण तेना धामने पाम्या. अने ऋषि पत्नीयो जो श्रीकृष्णमां जोडाणी तो ते पण भगवानना धामने पामी गई. अने ऋषि घणां डाह्या अने भणेला हता पण जो श्रीकृष्णमां न जोडाणा तो ते दुर्भागीया कहेवाया. माटे प्रगट भगवान अने भगवानना संतना स्वरूपमां मन, कर्म, वचने

जोडावुं एज कल्याणनुं मुख्य अचळ साधन छे. माटे जे ते प्रकारे भगवान अने संतमां जोडावुं.

अने ते भगवान अने संतमां क्यारे जोडावाय छे ? तो भगवान अने पंचविषयना त्यागी एवा भगवानना संत तेनो देह करीने अखंड संबंध राखे तो ते थकी भगवान अने संतमां जोडावाय छे. केमके अखंड संबंधे करीने जीवने भगवान अने भगवानना संत तेने विषे प्रीति थाय छे. अने प्रीतिए करीने भगवान अने संतमां सहु जे जीवने जोडाई जवाय छे. जेम संसारमां जीवमात्र जोडाया छे ते संसारने नित्य अखंड संबंधे करीने जोडाया छे. तेम जो भगवान अने भगवानना संतनो जीव अखंड संबंध राखे तो जीव जरूर भगवान अने संतने विषे जोडाय छे. अने ते जीवनी मुक्ति थाय छे. अने ज्यारे जीव भगवान अने भगवानना संतना स्वरूपमां जोडाय छे त्यारे तेने पंचविषयनी वासना टळी जाय छे अने तेने संसारना सुखमात्रने विषे अरुची थइ जाय छे.

केमके भगवानना जेवो कोइनो शब्द नथी अने भगवानना जेवो कोइनो स्पर्श नथी, भगवानना जेवुं कोइनुं रूप नथी अने भगवानना जेवो कोइनो रस नथी, अने भगवानना जेवो कोइनो गंध नथी. अने भगवान विना बीजां जे मायिक पंचविषयना सुख छे ते तो पृथक-पृथक छे अने नाशवंत छे अने अनंत दुःखे युक्त छे. अने ते मायिक सुखनी केडे अपार दुःख रह्यां छे. अने ते संसारना सुख भोगव्या पछी पण स्वप्नवत् थइ जाय छे, कहेतां भोगव्या पछी बीजो दिवस थाय त्यारे जाणे जे कोइ दिवस सुख भोगव्युं ज नथी.

–अने भगवाननुं सुख छे ते तो अखंड, पूर्ण अने अविनाशी छे. अने भगवानना एक शब्दमां पांचे विषयनुं भेगुं सुख आवे छे अने

जीव पूरणकाम थइ जाय छे अने फरीने कोइ मायिक सुख पामवानी इच्छा रहेती नथी. ते गोपीयोए भगवानने कह्युं छे जे 'हे महाराज! जे दिवसथी तमारा चरणारविंदनो स्पर्श थयो छे ते दिवसथी संसारनां सुख अमने खारा झेर जेवा थइ गयां छे. तेम जे जे जीव प्रत्यक्ष भगवान अने संतने विषे जोडाय छे तेने मायानुं कार्य सर्वे तुच्छ थइ जाय छे. अने ते दिव्य एवी जे भागवती-तनु तेने पामे छे. अने ते भक्त देहने मूकीने भगवानना अक्षरधामने पामे छे. अने देहमां छे तो पण जे भक्त प्रगट भगवान अने भगवानना संतना स्वरूपमां मन, कर्म, वचने जोडाणा छे ते तो स्त्री अथवा पुरुष ते सर्वे भगवानना धाममां जाय छे."

इति श्रीमुख सिद्धांत १२५ समाप्त ।

---

१२६ विषय–निर्विकल्प निश्चय थवानी रीत अने मनमां सारा खोटा संकल्प कोण करावे छे?

श्री हरिकृष्णाय नमो नमः–संवत् १९१९ना आसोवद ३ ने दिवस महाराज श्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्री पींपळीमध्ये भक्त काळा खीमाने घेर उगमणें वार ओरडानी ओसरीमां ढोलिया उपर गादी तकिया बिछावीने विराजमान थया हता. श्वेत खेस अने अंगरखुं धारण कर्यां हतां अने मस्तक उपर गुलाबी रंगनो फेंटो बांध्यो हतो. धोळी चादर अने चकमो भेगा करीने ओढ्या हता अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

प्रश्नः–पछी महाराज बोल्या जे "आज तमे हरिभक्तो मांहोमांहे प्रश्न–उत्तर करो." पछी ठाकोर करसनसंगे शाह काळा भक्तने प्रश्न पूछ्युं जे "एक तो भगवानना स्वरूपनो निश्चय केम थाय ? अने बीजुं भगवानना मार्ग थकी कोइ दिवस केम पाछुं पडाय नहीं? ते कहो."

पछी काळो भक्त घडीएक विचारी रह्या अने पछी कह्युं जे "भगवानना स्वरूपनो निश्चय तो बुद्धिए करीने थाय छे. ते जेने बुद्धि होय ते प्रगट भगवान अने संतना मुख थकी वात सांभळीने एम निश्चय करे जे 'आवुं माया पर ज्ञान कोइ पासे नथी.' अने ते ज्ञान सांभळीने पोताने पंचविषयनी वासना ओछी थती जाय अने पोताना अंतरमां दिवसे दिवसे शांति थती जाय, त्यारे एम जाणीए जे भगवान छे. केम के भगवान विना बीजा कोइना ज्ञाने करीने वासना टळे नहीं अने अंतरमां शांति पण थाय नहीं. माटे एम बुद्धिए करीने निश्चय थाय छे.

अने भगवानना मार्ग थकी केम पडाय नहीं ? तो शास्त्रे करीने भगवानने जाण्या होय जे ते भगवान गमे तेवा चरित्र करे अने प्रगट भगवान समर्थपणें वर्ते अथवा असमर्थपणें वर्ते तो पण तेने जोइने भगवानना मार्ग थकी पडे नहीं, केम के भगवानना सर्वे चरित्र शास्त्रमां लख्यां छे. माटे शास्त्रे करीने भगवानने जेणे जाण्या होय ते भगवानना मार्ग थकी कोई रीते पडे नहीं, एम जणाय छे."

पछी करसनसंगजीए कह्युं जे "उत्तर तो थयो खरो पण थोडो फेर रह्यो छे. अने आवी रीते समजे तो भगवाननो निश्चय थाय अने भगवानना मार्ग थकी पडाय नहीं जे 'एक तो धर्ममां दृढ रहेवुं अने पोताने आत्मारूप मानवुं अने वैराग पण दृढ राखवो अने देह अने देहना संबंधीमां प्रीति राखवी नहीं. अने प्रत्यक्ष भगवान अने भगवानना साधुमां अतिशय प्रीति राखवी अने भगवाननो महिमा बहु समजवो अने भगवाननी आज्ञा लेश मात्र लोपवी नहीं.' एटला गुण जेमां होय तेने भगवानना स्वरूपनो निश्चय थाय अने ते भगवानना मार्ग थकी पडे नहीं."

पछी महाराज बोल्या जे "बे जणना उत्तर तो दिशा उपर छे. पण हवे अमे तेना उत्तर करीए ते सांभळो जे भगवानना स्वरूपनो निश्चय तो भगवान वते ज थाय छे. जेम हीरो तो हीराए करीने ज विंधाय छे अने मणिए करीने मणि विंधाय छे. तेम भगवानना स्वरूपनो निश्चय तो भगवान वते ज थाय छे. केम के प्रगट भगवान होय त्यारे ज निश्चय थाय छे, पण प्रगट न होय त्यारे कोनो निश्चय करवो?

जेम केरीनो स्वाद लेवो होय त्यारे केरी होय तो ज केरीनो स्वाद लेवाय, पण ते विना केरीनो स्वाद आवे नहीं. तेम प्रगट भगवान पृथ्वी उपर होय त्यारे ज तेना स्वरूपनो निश्चय थाय छे तथा ते प्रगट भगवानना निश्चयवाळा एवा जे भगवानना एकांतिक साधु तेना समागमे करीने पण भगवाननो निश्चय थाय छे. ते पूर्वे पण गोपी, गोवाळ, वांदरादिक जेने जेने प्रगट भगवान मळ्या छे तेने ज निश्चय थयो छे. माटे भगवान थकी ज भगवाननो निश्चय थाय छे.

अने भगवानना मार्ग थकी पडाय नहीं तेनो ए उपाय छे जे भगवानना नानां मोटां वचन तेने कोइ दिवस लोपे नहीं अने निरंतर भगवानना वचन उपर खटक रहे. अने लेश मात्र वचन लोपाय तो अंतरमां अतिशय परिताप थाय अने तेनुं तत्काळ प्रायश्चित करे त्यारे निरांत थाय, एवुं जेने वर्तातुं होय ते तेने भगवानना मार्ग थकी कोइ दिवस पडाय नहीं. ए तमारा प्रश्नना उत्तर छे."

प्रश्नः—पछी गाम धोलेराइने वेणी देवशंकरे महाराजने प्रश्न पूछ्युं जे "मनमां एक एवो संकल्प थाय जे पाप करीए. अने वळी बीजो एवो संकल्प थाय जे पाप तो न करवुं अने परमेश्वर भजवा. माटे ते पाप करवुं कहे छे ते कोण हशे? अने पाप न करवुं एम कहे छे ते कोण हशे? ते कहो."

पछी महाराज बोल्या जे "एक दैवी माया छे अने एक आसुरी माया छे, ते बे प्रकारनी माया अनादिनी छे. तेमां धर्म, ज्ञान, वैराग, भक्ति, शीळ, संतोष, दया, क्षमा, तथा निष्काम, निर्लोभ, निःस्वाद, निःस्नेह अने निर्मान ए आदिक जे रूडा गुण ते दैवी संपत्तिना गुण छे. अने काम, लोभ, स्वाद, स्नेह, मान, दंभकपट, हिंसा, क्रोध, आदिक जे दुष्ट गुण ते आसुरी संपत्तिना गुण छे. तेमां धर्म, ज्ञान वैरागादिक गुण जेने विषे वर्तता होय ते दैवी जीव कहेवाय छे अने काम, लोभादिक दोष जेने विषे वर्तता होय ते आसुरी जीव कहेवाय छे.

अने बे प्रकारनी माया कारणपणें बीजरूपे तो सर्वे जीवोने विषे रही छे पण बहारथी जो काम लोभादिकने विषे वर्तनारा एवा जे आसुरी जीव तेनो संग थइ जाय तो मनमां पाप करवाना संकल्प वृद्धि पामे छे. अने बहारथी धर्म, ज्ञानादिकने विषे वर्तता एवा जे दैवी भगवानना संत तेनो संग थाय त्यारे पाप थकी पाछा वळीने परमेश्वर भजवामां श्रद्धा थाय छे. अने आ जीवे जगतमां केटलाक आसुरीना शब्द सांभळ्या छे अने केटलाक दैवीना शब्द सांभळ्या छे. ते बेना शब्दरूपी बीज अंतःकरणमां भराणां छे. अने ज्यारे बहारथी आसुरीनो संग थाय छे त्यारे अंतःकरणमां आसुरीना शब्दरूपी बीज ते वृद्धि पामे छे अने त्यारे अधर्मने विषे प्रवर्ताय छे. अने बहारथी दैवीनो संग थाय छे त्यारे पापथकी भय पमाय छे अने परमेश्वर भजवामां प्रीति थाय छे.

माटे जेने पोताना आत्मानुं रूडुं करवानी इच्छा होय तेणे अधर्मी एवा जे आसुरी जीव तेनो संग कोइ दिवस करवो नहीं, अने धर्मवाळा अने भगवानना भक्त एवा जे दैवी जीव तेनो नित्य प्रत्ये संग करवो अने एवी रीते आसुरीना संगनो त्याग करीने दैवीनो संग करे छे तेने

धर्म, ज्ञानादिक गुण वृद्धि पामे छे अने काम,लोभादिक दोप तेना वीज नाश पामी जाय छे. अने तेने अंतःकरणमां प्रकाश थाय. पछी तेने साचा सत्पुरुष ओळखाय त्यारे ते थकी आत्यंतिक ज्ञानने पामीने ते भगवानना अविनाशी धामने पामे छे."

इति श्रीमुख सिद्धांत १३६ समाप्त ।

---

१३७ विषय :–अहिंसा-धर्मनुं साचुं रूप अने भक्तनी अने असुरनी मुक्तिमां भेद

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः–संवत् १९१९ ना आसो वद ४ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री पींपळी मध्ये भक्त काळा खीमाने घेर उगमणें वार ओरडानी ओशरीमां गादी तकिया नखावीने विराजमान थया हता. सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने कंठमां पुष्पना हार धारण कर्या हता. पाघमां वे कोरे तोरा लटकता हता अने वे कान उपर पुष्पना गुच्छ खोस्या हता. ललाटने विषे कंकुंनो चांदलो कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणांक हरिभक्तनी सभा भराइने वेठी हती.

प्रश्न :–पछी महाराजनी संध्या आरती, धून, स्तुति करीने हरिजन सर्वे वेठा. पछी महाराज वोल्या जे "आज तो एक प्रश्न अमे साधुने पूछीए छीए जे जगतने विषे केटलाक पाप करे छे अने केटलाक पुन्य करे छे, ते ए पाप अने पुन्य ते नाश पामे के न नाश पामे ? ते कहो." पछी धर्मानंद स्वामीए कह्युं के "नाश पामे छे." पछी महाराज वोल्या जे "ए उत्तर खरो पण ते पापने तत्काळ नाश करे एवुं कयुं पुन्य हशे ? अने जीवे अनंत पुन्य कर्यां होय ते पुन्यने तत्काळ नाश करे एवुं कयुं पाप हशे ? अने वळी एक एवुं पुन्य छे जे ते पुन्य पाछुं नाश पामतुं

नथी अने एक एवुं कर्युं पाप छे जे ते पाप पाछुं नाश पामतुं नथी, तेनो उत्तर जेने जेम आवडे तेम कहो."

पछी अक्षरमुक्तानंद स्वामीए कह्युं जे "जीवे बीजां अनंत पाप कर्यां होय तो पण तेने प्रत्यक्ष भगवान अने तेना संत तेनो गुण आवे तो तेना सर्वे पाप तत्काळ नाश पामी जाय अने ते जीव परम पवित्र थइने भगवानना धामनो अधिकारी थाय छे, अने ते पुन्य पाछुं कोइ काळे नाश पामतुं नथी. अने जीवे बीजां अनंत पुन्य कर्यां होय अने तेने जो प्रत्यक्ष भगवान अने तेना संत तेनो अवगुण आवे तो तेनुं पुन्य सर्वे बळीने भस्म थइ जाय अने एना अवगुणनुं एवुं पाप लागे जे ते पाप कोइ काळे नाश पामे नहीं."

पछी महाराज बोल्या जे "एनो एज उत्तर छे. पण हवे हुं ते ज वातनी पुष्टि करुं छुं जे कोइ एम कहेशे जे भगवानना गुण लीधामां एवडुं शुं पुन्य थतुं हशे ? अने अवगुण लीधामां एवडुं वधुं शुं पाप लागतुं हशे ? जे सर्वे पाप अने पुन्य तत्काळ नाश पामी जाय ? तो तेनुं एम छे जे जेने प्रत्यक्ष भगवानना गुण आवे छे ते तो एम समजे छे जे 'भगवानना जन्म अने कर्म अने भगवानना जे जे चरित्र ते दिव्य छे अने अलौकिक छे.' एम जाणीने ते प्रत्यक्ष भगवान अने तेना संत तेने विषे प्रीतिए करीने जोडाई जाय छे. पछी ते भगवान अने संत तेने विषे जोडाय छे त्यारे तेमना गुण तेमां आवे छे.

जेम जे अग्निमां जोडाय छे तो तेनुं शीतळपणुं मटीने तपवा लागे छे. अने जे जळमां जोडाय छे तो तेनुं तपतपणुं मटीने शीतळ थाय छे. तेम जे भगवान अने संत तेना गुण अने चरित्र तेने दिव्य जाणीने भगवान अने संतमां जोडाय छे तो ते पण दिव्यरूप थइ जाय छे अने

तेने विषेथी माया टळी जाय छे. पछी तेने विषे उत्कृष्ट एवी जे भक्ति ते उदय थाय छे.

अने जे प्रत्यक्ष भगवान अने भगवानना संत तेनी जे भक्ति छे ते तो अनंत पापने नाश करे एवी छे. ते जेने प्रत्यक्ष भगवान अने संतनो गुण आवे छे तेनुं एज लक्षण छे जे जेने गुण आवे तेना इन्द्रियो, अंतःकरण अने जीव ते भगवान अने भगवानना संतनी सेवामां जोडाय छे. अने प्रत्यक्ष भगवान अने संतनी सेवा छे ते तो अक्षरधाममां जवानो धक् धोरंधर मार्ग छे. ते सारु भगवान पण पोतानी सेवा करावदा सारु मनुष्य जेवा सजाति थाय छे अने सजाति थइने भक्तजन पासे सेवा करावे छे. अने ते सेवाए करीने जीवना अनंत जन्मना जे पाप ते नाश पामी जाय छे अने ते जीव भगवानना धामने पामे छे.

–माटे प्रत्यक्ष भगवान अने भगवानना संतनो गुण लेवो एज सर्वे पापने तत्काळ नाश करवानो उपाय छे. अने प्रत्यक्ष भगवान अने संतनो गुण लेवाय तेनुं एवुं पुन्य थाय छे जे ते पुन्य कोइ काळे पाछुं नाश पामे ज नहीं. केमके प्रत्यक्ष भगवान अने संतनो गुण लीधा थकी तो भगवानना अक्षरधाममां जवा रूपी पुन्य थाय छे. ते अक्षरधाममां जे गयो ते पाछो आ पृथ्वी उपर आवतो नथी अने ते तो अविनाशी सुखने पामे छे. ते पण गीतामां कह्युं छे जे 'भगवानना अक्षरधाममां गयो ते पाछो आवतो नथी.'

–अने वीजां अनंत पुन्य कर्यां होय अने तेने देवलोकमां जवानुं होय अथवा प्रकृतिपुरुषना लोक सुधी जवानुं होय अथवा परोक्षपणें भगवाननी सूझे एटली भक्ति करी होय के वैराग पामीने संसारनो त्याग करीने भेख लीधो होय अने अनंत जप, तप, तीर्थ, व्रत, दान,

यज्ञादिक घणांक शुभ कर्म कर्यां होय पण जो तेने प्रत्यक्ष भगवान अने संतनो अवगुण आवे तो तेना सर्वे शुभ कर्म करवा रूप जे पुन्य ते तत्काळ नाश पामी जाय छे.

—केमके भगवान प्रगट थाय छे ते तो पोतानी सेवा करावीने अनंत जीवोना पाप नाश करवा सारु अने अनंत जीवोए पोताना कल्याणने अर्थे शुभ कर्म कर्यां होय तेने पण पोतानी सेवा करावीने अक्षरधाममां लइ जवा सारु भगवान प्रगट थाय छे, ते सेवा तो न करी अने ऊलटो अवगुण लीधो माटे तेने एवुं पाप लागे छे जे ते पाप कोइ काळे नाश पामतुं नथी. अने ते पापे करीने तेना शुभ-कर्म करवा रूप जे सर्वे पुन्य मात्र ते तत्काळ नाश पामी जाय छे.

जेम कोइक मोटो राजा होय अने ते महेरबानी करीने पोताना मुलकमां जाय जे 'मारा राज्यमां जे मारी वस्ती छे तेने मोज आपुं अने सर्वेने सुखिया करुं,' एम जाणीने वस्ती दुःख न पामे ते सारु बे चार माणस भेगा लइने पोताना गामोमां चोरो होय त्यां जइने उतरे अने पछी सर्वे वस्तीने तेडावीने कहे जे 'अमे तमारा राजा छीए माटे तमने सर्वेने सुखिया करवा आव्या छीए, ते जेने जे जोइए ते मागो; तेने हुं कागळमां लेख करी आपुं, ते मारे घेर जइने मोकलावीश. अने जे गुनेगार बंदीखाने होय तेने अमारी पासे लावो अने तेने बंदीखानेथी मुकावीए अने तेने सौना बराबर सुखिया करीए.' एम राजाए कह्युं त्यारे जे डाह्या अने विवेकी हता तेणे तो एम जाण्युं जे 'आपणने सुख आपवा आव्या छे माटे आपणे जेजे इच्छामां आवे ते मागो.' एम समजीने जेने जे इच्छा हती ते माग्युं अने ते राजानी हेते करीने सेवा करी. अने जे मूर्ख अने अखतर डाह्या हता तेणे तो कांइ माग्युं नहीं अने राजानुं सन्मान पण

आपशे के नहीं आपे?' पछी जेने राजाना गुणनी खबर छे ते कहे जे 'राजा तो बहु मोजी छे. ते पोताना द्वेषी हता तेने पण बेठा बेठा वस्त्र अने रोटला आपे छे तो तुं चाकरी करीश तो तने केम नहीं आपे? जरूर आपशे ज.' तेम पामर एवा जे अज्ञानी जीव जेने भगवानना माहात्म्यनी खबर नथी तेने विश्वास अणाववा सारु शास्त्रमां पोपण वचन छे जे 'भगवान तो अधम उद्धारण अने पतित-पावन छे जे रावण, हिरण्यकशिपु अने शिशुपाल आदिक असुरे भगवाननो द्रोह कर्यो तो पण भगवाने तेने मुक्ति आपी, तो जे प्रीतिए करीने भगवाननी सेवा करशे तेने भगवान केम मुक्ति नहीं आपे? आपशे ज.' एम कहीने जीवोने भगवाननी भक्ति करावीने अखंड सुख पमाडवा कह्युं छे.

—पण भक्तनी मुक्तिमां अने असुरनी मुक्तिमां घणो भेद छे. जेम एक राजाना ढोलियानो चाकर अने एक राजानो द्वेषी केदमां पड्यो होय ते बेयना सुखमां केटलो भेद छे? तेम भगवानना भक्तना सुखमां अने असुरना सुखमां भेद छे. अने ए असुरना करतां तो जन्म-मरणने पामतो एवो जे जीव ते तो कोइक दहाडे रखडतां रखडतां प्रगट भगवान के भगवानना संत तेनो जोग थशे त्यारे तेनी भक्ति करीने भगवानना धामने पामशे. पण जे असुर छे तेने तो प्रगट सत्पुरुषना द्रोहना पापनुं फळ जे 'ब्रह्म-सुषुप्तिमां लीन थवुं' तेनो कोइ दिवस छूटको थतो नथी. माटे प्रगट भगवान अने संतनो गुण लेवो ते जेवुं बीजुं कोइ मोटुं पुन्य नथी अने प्रगट भगवान अने संतनो अवगुण लेवो ते जेवुं बीजुं कोइ मोटुं पाप नथी.

—ते सारु सहजानंद स्वामीए पण शीक्षा—पत्रिमां लख्युं छे जे "अहिंसा-धर्म छे ते सौथी मोटो धर्म छे." ते अहिंसा धर्म ते शुं? तो

मन, कर्म, वचने करीने कोइ जीवने दुभाववो नहीं. त्यारे कोइ जीवने दुभाववो नहीं तो कोइ मोटा पुरुष कहेवाता होय तेने तो दूभवाय ज केम ? न ज दूभवाय. अने वळी सहजानंद स्वामीए वचनामृतमां कह्युं छे जे ते पोते श्रीकृष्ण भगवाननी पूजा करीने नित्ये पांच दंडवत करता हता अने एक दिवस छ दंडवत कर्या त्यारे शुकमुनिए कह्युं जे 'नीत्ये तमे पांच दंडवत करता, आज छ दंडवत केम कर्या ?' त्यारे सहजानंद स्वामीए कह्युं छे जे 'अमे नित्ये तो भगवानने एम कहेता जे अमारा कामादिक शत्रु नाश करजो. अने आज तो अमने एम विचार थयो जे जाणे अथवा अजाणे भगवानना संतनो मने, वचने के देहे करीने द्रोह थइ गयो होय तो ते अपराधने माफ करवा सारु एक दंड-वत वधारे कर्यो छे. केमके बीजां पापनो कोइ काळे छूटको थाय पण भगवान के भगवानना संत तेना अपराधना पापनो कोइ काळे छूटको थतो नथी.'

–अने वळी जैनमतना शास्त्रमां पण लख्युं छे जे 'जीवमात्र पासे नित्य क्षमा मागवी जे जाणे-अजाणे कोइ जीवनो द्रोह थइ गयो होय तो ते अपराधने माफ करजो.'

माटे एवी रीते सर्वे जीवोनो गुण लेवानो स्वभाव होय तो कोइ मोटा पुरुष--भगवान के भगवानना संत होय तेनो पण गुण लेवाय अने तेनो गुण लेवा थकी आत्मानुं कल्याण थाय. अने जो अवगुण लेवानो स्वभाव होय तो तेने प्रत्यक्ष भगवान अने भगवानना संत तेनो पण अवगुण लेवाय अने ते प्रत्यक्ष भगवान अने तेना संतना द्रोहे करीने तो आत्मानुं आतिशश भूंडु थाय छे. माटे जेने पोताना आत्मानुं रूडुं करवानी इच्छा होय तेणे तो कोइनो अवगुण न लेवो अने सर्वेनो गुण

ज लेवा, तो तेने कोइक दिवस प्रगट भगवान अने भगवानना संत मळशे त्यारे ते जीवनुं कल्याण थशे. ते सारु प्रत्यक्ष सत्पुरुषनो अवगुण कोइ काळे लेवो ज नहीं. अने जे ते प्रत्यक्ष भगवान अने संतनो अवगुण ले छे ते जेवो कोइ पापी नथी अने ते जेवो कोइ नीच अने दुष्ट नथी. माटे प्रत्यक्ष भगवान अने भगवानना संतनो अवगुण ले छे ते जेवो कोइ पापी नथी. अने प्रगट भगवान अने संतनो गुण ले छे ते जेवो कोइ पुन्यवान नथी.

–अने जे प्रगट भगवान अने संतनो गुण ले छे तेने ज अहिंसा–धर्म संपूर्ण पाळ्यो छे. अने जे प्रगटनो अवगुण ले छे अने तेणे बीजा अनंत अहिंसा–धर्म पाळ्या होय ते सर्वे धर्म तेना मिथ्या छे, केमके जेना सारु अहिंसा–धर्म पाळता हता तेनी ज हिंसा करी माटे तेना अहिंसा–धर्म ते सर्वे मिथ्या छे."

इति श्रीमुख सिद्धांत १३७ समाप्त ।

---

१३८ विषयः–सुखदुःखनुं कारण

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः–संवत् १९१९ ना आसो वद ६ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री पींपळी मध्ये ठाकोर करसनसंगजीना दरबारमां उगमणे बार ओरडानी ओशरीमां हिंडोळाखाट उपर विराजमान थया हता. सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्या हता अने कंठमां पुष्पना हार घणाक शोभी रह्या हता. पाघमां बे कोरे पुष्पना तोरा लटकता हता अने बे कान उपर पुष्पना गुच्छ धारण कर्या हता. ललाटने विषे कंकुनो चांदलो कर्यो हतो अने संध्या आरती थया पछी पोताना

मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी महाराज बोल्या जे "सर्वे सांभळो एक वार्ता करवी छे जे आ जगतमां केटलाक जीव सुख माने छे अने केटलाक दुःख माने छे. ते सुख शुं छे ? अने दुःख शुं छे ? तो जीव जे ते मनने गमतुं भोगवे तेने सुख माने छे अने मनने अणगमतुं भोगववुं पडे तेने दुःख माने छे. हवे ते दुःख अने सुख साथी थाय छे? तो बुद्धिने विषे सद्‌गुण आववे करीने सुख थाय छे अने बुद्धिने विषे दुर्गुण आववे करीने दुःख थाय छे.

जेम आ लोकमां विशाळ बुद्धिवाळा होय छे ते बेठा बेठा वगर दाखडे कोइक राजानी चाकरी करीने हुकम चलावता थका कोइक सो रूपियानो महिनो खाय छे. अने कोइक पांचसो रूपियानो महिनो लेछे अने कोइक हजार रूपियानो महिनो खाय छे. अने जेनी मंद बुद्धि होय ते घणोक दाखडो करे त्यारे मांड मांड पेट भराय. अने कोइक खेडुमां चाकर रहीने रात दहाडो टाढ–तडकानुं सहन करीने वरस दहाडा सुधी दाखडो करे त्यारे वीस के पचीस रूपिया पामे अने महा हेरान थाय छे. तेम परलोकमां पण जेनी सद्‌गुणे भरेली बुद्धि होय ते सुखने पामे छे. अने जेनी दुर्गुणे भरेली बुद्धि होय ते दुःखने पामे छे.

–ते बुद्धिमां दुर्गुण अने सद्‌गुण साथी आवे छे ? तो पंचविषयना रागीने देहाभिमानी एवा जे असत्पुरुष तेने संगे करीने बुद्धिमां दुर्गुण आवे छे. अने पंचविषयना त्यागीने निर्वासनिक अने जेने कोइ जातनो अहं–ममत्व न होय एवा जे भगवानना एकांतिक संत अथवा प्रत्यक्ष परमात्मा भगवान तेना संग थकी बुद्धिने विषे सद्‌गुण आवे छे. अने जेने बुद्धिमां सद्‌गुण आव्या होय तेने अंतःकरणमां प्रकाश थाय छे. पछी ते सत्य अने असत्यने साक्षात्कार देखे जे माया ते असत्य छे

अने आत्मा ते अविनाशी छे. अने भगवान आत्माना आधार छे. ते एम ज्ञाने करीने ए सर्वेना स्वरूपने साक्षात्कार देखे.

जेम अंधारा घरमां दीवो करे त्यारे सर्वे वस्तु देखाय छे. पछी जे वस्तु सत्य अने सुखदायी होय तेनुं ग्रहण कराय छे. अने जे वस्तु दुःखदायी होय तेनो त्याग कराय छे. तेम जेने ज्ञान थाय ए एम जाणे जे माया छे ते दुःखनी आपनारी छे अने कोटी कल्प थया जीवने जन्म मृत्युने पमाडनारी छे. अने वळी स्वप्नवत् छे. जेम स्वप्नमां अनंत पदार्थ देखाय तो पण ते मिथ्या छे. तेम मूआ पछी एके पदार्थ साथे आवतुं नथी. जेम झांझवाना जळ देखाय तो पण जळ वस्तु गते नथी तेम मायाना पदार्थ अज्ञाने करीने देखाय छे पण माया मिथ्या छे. एम जाणीने तेनी वासनानो त्याग करे छे. अने पोताने देहथी नोखो आत्मा माने छे.

ते आत्मा केवो छे ? तो सुखरूप छे, अविनाशी छे, चैतन्य छे, ज्ञानरूप छे, प्रकाशवान छे अने व्यापक छे. एवो जे आत्मा तेने पोतानुं स्वरूप मानीने ए आत्माना आधार एवा जे प्रत्यक्ष परमात्मा भगवान तेने विषे प्रीति करे छे. ते परमात्मा केवा छे ? तो आ पचास करोड योजन पृथ्वी छे ते एक लोक कहेवाय,अने एवा एवा चौद लोकनुं एक ब्रह्मांड कहेवाय. अने एवां एवां अनंत कोटी ब्रह्मांड अणुंनी पेठे उठे छे जेना एक रोमना खाडाने विषे एवा जे सर्वात्मा—ब्रह्म अक्षर छे अने ते अक्षरना आधार परमात्मा छे. अने एवा परमात्माने भजी भजीने अनंतकोटी मुक्त ते ज्ञानने पामीने सर्वात्मा एवा जे अक्षरब्रह्म ते जेवा थाय छे. अने परब्रह्मनी सेवामां अखंड रहे छे.

एवा जे परब्रह्म पुरुषोत्तम भगवान ते जे कृपा करीने अनंत जीवोने ज्ञान आपवा सारु मनुष्याकृतिनुं धारण करे छे. 'ते ज भगवान आज

मने साक्षात्कार मळ्या छे' एम जाणीने ते भगवाननी भक्ति करीने अभयपद्ने पामे छे. अने जे जीव असत्पुरुषनो संग करे छे ते जीव आलोकमां महादुःखने पामे छे अने मरीने परलोकमां अपार कष्टने भोगवे छे. माटे जेने सुखिया थवुं होय तेणे असत्पुरुष एवा जे कामी, लोभी, स्वादी, मानी, क्रोधी, तेना संगनो त्याग करीने सद्‌गुरु एवा जे निष्कामी निर्लोभी, निःस्वादी, निर्मानी संत तेनो संग करवो.

ते एवा सद्‌गुरु क्यां होय? तो ज्यां आत्यंतिक ज्ञानना आपनारा एवा जे परमात्मा भगवान ते प्रत्यक्ष होय त्यां ज एवा सद्‌गुरु होय पण प्रत्यक्ष भगवानना ज्ञान विना पंचविषयना त्यागी संत होय ज नहीं. जेम आंबा विना केरी थाय ज नहीं तेम प्रत्यक्ष भगवानना ज्ञान विना पंचविषयना त्यागी संत होय ज नहीं. माटे पंचविषयना त्यागी अने निर्वासनिक एवा जे सद्‌गुरु तेने ओळखीने तेनो संग करवो. अने जे एवा सद्‌गुरुनो संग करे छे ते जीव महा अलौकिक सुखने पामशे."

इति श्रीमुख सिद्धांत १३८ समाप्त।

---

१३९ विषय :–प्रत्यक्ष भगवानने जाणवानी रीत

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः–संवत् १९१९ ना आसो वद ७ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री पींपळी मध्ये ठाकोर करसनसंगजीना दरबारमां उगमणा बारना ओरडानी ओशरीमां हिंडोळाखाट उपर विराजमान थया हता. सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने मस्तक उपर गुलाबी रंगनो फेंटो बांध्यो हतो. धोळी चादर अने लाल चकमो ओढ्या हता अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनिमंडळ तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

प्रश्नः—पछी गाम पछमना गढवी अलुए प्रश्न पूछ्युं जे "हे महाराज तमने केटलाक मनुष्य छे ते तो साक्षात्कार भगवान जाणे छे अने केटलाक मनुष्य तो तमने बीजा मनुष्य जेवा देखे छे तेनुं केम हशे ? ते कृपा करीने कहो." पछी महाराज बोल्या जे "सांभळो एनो उत्तर करीए जे बे प्रकारनी जीवनी दृष्टि छे, तेमां एक अंतरदृष्टि छे अने एक बहारदृष्टि छे. तेमां जे अंतरदृष्टिवाळा छे ते अमने भगवान जाणे छे अने जे बहारदृष्टिवाळा छे ते बीजा मनुष्य जेवा अमने पण देखे छे. केमके बीजा मनुष्यने जेम बे हाथ छे तेम अमारे पण बे हाथ छे. अने बीजा मनुष्यने जेम भूख तरस लागे छे. तेम अमने पण भूख तरस लागे छे. एवी रीते देहना भाव तो बीजा सर्वे मनुष्यना जेवा ज देखाय छे. पण कांइ बीजा माणसने बे हाथ छे अने अमारे चार हाथ छे एम तो नथी? के बीजा मनुष्य खाय छे अने अमे खाता नथी एम पण नथी. माटे बहारदृष्टिवाळा होय ते तो अमने बीजा माणस जेवा ज देखे छे. अने जे अंतरदृष्टिवाळा छे ते तो ज्ञाने करीने जुए छे माटे अमने भगवान जाणे छे.

जेम राजानी कचेरी बेठी होय तेने उपरथी मनुष्यपक्षे जुए तो सर्वे मनुष्य सरखा देखाय, पण कोइ नानो मोटो देखाय नहीं. अने अंतरमां विचारीने बुद्धिए करीने जोइए त्यारे तो एम जणाय जे गादी उपर बेठा छे ते राजा छे, अने तेनी पासे बेठा छे ते राजाना ढोलियाना चाकर छे, अने तेनी पासे बेठा छे ते राजाना कारभारी छे; अने तेथी नजीक बेठा छे ते गामडाना पटेल छे. एवी रीते बुद्धिए करीने जुए त्यारे तो सर्वे सरखा न देखाय अने घणो भेद जणाय तेम जे बहारदृष्टिवाळा छे ते तो अमने बीजा माणस जेवा देखे छे अने अंतरदृष्टिवाळा छे ते तो अमने ज्ञाने करीने जुए छे ते पोते एम विचार करे जे ' आवुं ज्ञान मारी पासे तो नथी, त्यारे मारा करतां तो मोटा छे.' पछी बीजा मनुष्यना

ज्ञाने करीने जुए छे तो एम जाणे जे 'महाराजना जेवुं ज्ञान बीजा कोइ पासे नथी' एवी रीते बुद्धिए करीने जुए अने अमारुं ज्ञान सांभळे छे त्यारे तेने तो एम जणाय छे जे 'बीजा माणस जेवा तो नहीं. माणस करतां तो मोटा खरा' एम तेने जणाय छे. माटे एवी रीते ज्ञान दृष्टिए करीने जुए तो तेने अमारा स्वरूपनो निश्चय थाय छे; पण बहारदृष्टिवाळाने अमे ओळख्यामां आवता नथी. माटे जगतना सर्वे जीवोनी तो बहारदृष्टि छे.

पण जे जीवने अमारो संबंध थाय छे. अने ते दैवी जीव होय तेने अमे वातो करीने अमारी पासे जे अक्कल छे ते तेना अंतरमां उतारीए छीए त्यारे ते अमारी अक्कले करीने अमने जुए छे त्यारे तेने अमे जेवा छीए तेवा ओळखाइए छीए, माटे अमारा थकी ज अमे ओळखाइए छीए; केमके जेटलो जेटलो ज्ञाने करीने हुं तेना अंतरमां उतरुं छुं तेटलो ते मने ओळखे छे.

अने जे आसुरी जीव होय अने ते अमारुं ज्ञान तो अंतरमां उतारे नहीं तेने तो अमे कोइ काळे ओळखाता नथी. माटे बहारदृष्टिवाळा जे आसुरी जीव छे ते अमने बीजा माणस जेवा देखे छे अने तेनुं कल्याण पण कोइ काळे थतुं नथी. अने अंतरदृष्टिवाळा एवा जे दैवी जीव छे ते मने भगवान जाणे छे. अने जीवने आसुरी अने दैवी थयानुं कारण पण एज छे जे बहारदृष्टिवाळा एवा जे कामी, लोभी, स्वादी असत्पुरुष तेने संगे करीने आसुरी थवाय छे अने अंतरदृष्टिवाळा एवा जे निष्कामी, निर्लोभी, निःस्वादी, निर्मानी, संत तेने संगे करीने दैवी थवाय छे. माटे बहारदृष्टिवाळा एवा जे आसुरी पुरुष तेना संगी छे ते अमने बीजा माणस जेवा देखे छे अने अंतरदृष्टिवाळा एवा जे संत

तेना संगी छे ते अमने भगवान जाणे छे. ए तमारा प्रश्ननो उत्तर छे." एम कहीने पछी थाळ थयो ते महाराज जमवा पधार्या.

इति श्रीमुख सिद्धांत १३९ समाप्त ।

१४० विषयः—हरखेयुक्त अने शोकेयुक्त संस्कार

श्रीहरिकृष्णाय नमो नमः—संवत १९१९ ना आसो सुद ८ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री पींपळी मध्ये चुडासामा केशाभाई कलाभाईना दरबारमां आथमणां बारना ओरडानी ओशरीमां ढोलिया उपर विराजमान थया हता. किनखावनो सुरवाल अने डगली धारण कर्यां हतां अने शुढो रेटो अने कसुंबल शेलुं केडे धारण कर्या हता. मस्तके कसुंबल सोनेरी पाघ बांधी हती अने कसुंबल शेलुं एक खभे नाख्युं हतुं. ललाटने विषे कंकुनो चांदलो कर्यो हतो अने कंठमां पीळा पुष्पना हार धारण कर्या हता. फुलना तोरा पाघमां बेकोर लटकता हता अने बे कान उपर पुष्पना गुच्छ धारण कर्या हता. जमणा हस्तकमळने विषे रूमाल शोभी रह्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणांक हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी महाराजनी आरती धून थया पछी महाराज पोतानी मेळे बोल्या जे "जेने घणांक जन्मना शुभ संस्कार होय तेने ज प्रत्यक्ष भगवानना स्वरूपनो निश्चय थाय छे अने तेनुं कल्याण थाय छे, एम सर्वे शास्त्रमां कह्युं छे ते सत्य छे. पण ते संस्कारना बे भेद छे. ते भेद कया ? तो एक हरखेयुक्त संस्कार छे अने एक शोकेयुक्त संस्कार छे. ते संस्कारना भेद शाने करीने पड्या छे ? तो पूर्व जन्मने विषे अथवा आ जन्मने विषे भगवान तथा भगवानना निर्वासनिक एवा एकांतिक संत

तेना संबंधमां प्रथम जे जे जीव आवे छे, तेमां जे जीव निष्कामभावे निष्कटपणें आवे छे तेने हरखेयुक्त संस्कार बंधाय छे. अने जेने, हरखे-युक्त संस्कार बंधाय छे तेने साधुनी पेठे भगवानने विषे अखंड सेवानो संबंध रहे छे. अने जे सकामभाव राखीने भगवानना संबंधमां आवे छे तेने शोकेयुक्त संस्कार बंधाय छे. अने जेने शोकेयुक्त संस्कार बंधाय तेने भगवानजी अखंड सेवानो संबंध रहेतो नथी. ते एने भगवान सेवामां राखे तो पण तेने सकामभाव होय तेथी सेवामां रहेवाय नहीं. पछी तेने बीजो जन्म आवे त्यारे भगवाननी सेवामां रहेवुं होय तो पण रहेवाय नहीं एवे ठेकाणे तेने भगवान जन्म धरावे छे.

—ते जेम कुंडलावाळी बाइने अमारी सेवामां अखंड रहेवुं हतुं पण तेने पूर्व-जन्मनो शोकेयुक्त संस्कार हतो तो सेवानो जोग बन्यो नहीं. अने बीजी पण केटलीक डोशीयोने अमारी सेवामां रहेवानुं मन होय तो पण रहेवाय नहीं. पछी तेने सेवामां न रहेवाय ते वातनो घणोक परिताप थाय, तेणे करीने तेनो सकामभाव ते टळी जाय छे. पछी त्रीजे जन्मे तेने भगवाननी सेवामां अखंड रहेवाय अने तेनो आत्यंतिक मोक्ष थाय छे. अने जेने हरखेयुक्त संस्कार बंधाय छे तेने तो ए ने ए जन्मे ज आत्यंतिक मोक्ष थाय छे.

—माटे जेने प्रत्यक्ष भगवाननो संबंध थयो होय तेने तो निष्काम-भाव राखीने पोताना आत्माना कल्याणने अर्थे प्रत्यक्ष भगवाननी अखंड सेवा करवी, पण तेने सकामभाव राखवो नहीं. अने जे सकामभाव राखीने प्रत्यक्ष भगवाननी सेवा करे छे तेने अंतरमां दुःख रह्या करे छे. अने जे निष्कामभाव राखीने प्रत्यक्ष भगवाननी सेवा करे छे तेने अंतरमां अखंड सुख रह्या करे छे. अने जे जे प्रत्यक्ष भगवान अने भगवानना

संतनी सेवा करे छे तेनो एवो संस्कार बंधाय छे जे ते जीव नरकचोराशीमां तो जाय ज नहीं. अने ज्यां सुधी आत्यंतिक ज्ञानने पामीने निर्वासनिक न थाय त्यां सुधी तेने देवमां अने मनुष्यमां भगवान जन्म धरावे छे. अने ते ज्यां ज्यां जन्म धरे छे त्यां त्यां धर्ममां रहीने भगवाननी भक्ति ज करे छे. पछी ज्यारे निर्वासनिक थाय छे त्यारे भगवानना अक्षरधामने पामे छे.

–माटे जेने पोताना आत्मानुं कल्याण इच्छवुं होय तेने तो वर्णाश्रमना धर्ममां रहीने पंचविषयनो त्याग करता-करावता होय एवा जे भगवानना संत तेनी सेवा अने भगवाननी सेवा मन, कर्म, वचने करवी; तेनी सेवाए करीने शुभ संस्कार बंधाय छे अने ते संस्कारे करीने आत्मानुं कल्याण थाय छे. माटे जेने भगवान अने भगवानना संतनी सेवा मळी छे तेना भाग्यनो पार नथी."

इति श्रीमुख सिद्धांत १४० समाप्त ।



१४१ विषय :–बे प्रकारनो कुसंग अने बे प्रकारनो सत्संग

श्री हरिकृष्णाय नमो नमः–संवत १९१९ ना जेठ वद ९ ने दिवस महाराज श्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्री पींपळी मध्ये पोताना मंदिरमां आथमणां वारनी मेडीनी ओसरीमां हिंडोळाखाट उपर विराजमान थया हता. अने सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां. कंठमां गुलाबना पुष्पना हार धारण कर्या हता अने कान उपर पुष्पना गुच्छ शोभी रह्या हता. पाघमां डाबी कोरे पुष्पनो तोरो लटकतो हतो अने ललाटने विषे ककुंनो चांदलो कर्यो हतो अने संध्या आरती थया पछी पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणांक हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी महाराज कृपा करीने बोल्या जे "जीवने बे प्रकारनो कुसंग छे; ते कुसंगनो संग करे तो जीवनुं भुंडुं थाय छे. अने बे प्रकारनो सत्संग छे; ते सत्संगनो संग करे तो जीवनुं रूडुं थाय छे. तेमां बे प्रकारनो कुसंग कयो ? तो एक प्रत्यक्ष कुसंग छे अने एक परोक्ष कुसंग छे; परोक्ष एटले जीवथी छेटे अने प्रत्यक्ष एटले भेगा. तेमां परोक्ष कुसंग ते शुं ? तो भगवानने भजतां जे जे अंतराय करे ते वहारनो कुसंग छे. ते मा-बाप, सगां-संबंधी, नात, जात, गुरु, गोर, मतपंथादिक जे जे वहारना मनुष्य भगवान भज्यामां अने विषयनो त्याग करवामां रोके अने अंतराय करे ते सर्वे वहारनो परोक्ष कुसंग छे.

अने प्रत्यक्ष कुसंग ते कयो ? तो जीवने भेगा रहेनारा एवां जे इन्द्रियो अंतःकरण ते कुसंगी छे अने भगवानना मार्गमांथी जीवने पाडनारा छे. केमके जीव ज्यारे भगवानने मार्गे चाले छे त्यारे इन्द्रियो अंतःकरणना विषय बंध थाय छे. ते सारु जीवने भगवानने मार्गे चालवा देता नथी. माटे जेने पोताना आत्मानुं रूडुं करवुं होय तेने इन्द्रियो अंतःकरण आदिक मांहेलो कुसंग अने सगां, संबंधी आदिक वहारनो कुसंग ए बेयनो विश्वास करवो नहीं अने तेनाथी छेटे रहेवुं. अने जे भोळप राखीने कुसंगीनो संग करशे तेनो सत्संग रहेवानो नथी.

अने केटलाक एम कहे छे जे 'अमने तो कुसंगनो संग न लागे.' ते वात खोटी छे. केमके कुसंगनो संग तो लाग्या विना रहे ज नहीं. ए तो एक भगवानने कुसंग न लागे. जेम कपिलदेवे माता देवहूती प्रत्ये कह्युं छे जे 'कुसंगमां रहीने निर्लेप रहेवाने तो एक हरि समर्थ छे.' अने धर्मानंद स्वामी जेवा त्यागी होय पण जो कुसंगनो संग करे तो भ्रष्ट थइ जाय, तो बीजा जीवोने तो जरूर कुसंग लागे. जेम हडकायुं

कूतरुं जेने करडे तेने हडकवा हाले. तेम जे कुसंग करे तेनो सत्संग रहेवानो नथी.

अने कुसंगनो करनारो सत्संगमां आवतो हशे तो पण तेने सत्संगी न जाणवो. केमके तेने ज्यारे कोइक देशकाळ आवशे अथवा भगवानना मनुष्यचरित्रने देखशे–सांभळशे त्यारे तेने मोह थशे अने भगवानना मार्ग थकी पडी जशे. जेम हडकाया कूतराना करडवावाळाने वायु, अग्नि, जळादिकनो जोग थाय त्यारे तेने रगे रगे हडकवा चडी जाय छे अने तेना प्राण जाय छे. तेम जे कुसंग करतो होय तेने ज्यारे देशकाळ आवे त्यारे तेने कुसंगीना शब्दरूपी लाळ रगे रगे प्रवर्ती जाय छे अने ते भगवानना मार्ग थकी पडी जाय छे. माटे जेने पोताना आत्मानुं रूडुं करवुं होय तेने बे प्रकारना कुसंगनो त्याग करवो.

त्यारे कोइ कहेशे जे 'बहारना कुसंगथी तो कदापि छेटे रहेवाय खरुं, पण मांहेना कुसंगी जे इन्द्रियो, अंतःकरण तेथी छेटे केम रहेवाय?' तो तेथी छेटे नियमे करीने रहेवाय छे. ते नियम शुं? तो काने करीने अशुभ शब्द सांभळवानो त्याग करवो अने भगवान अने भगवानना भक्तना शब्द सांभळवा, त्वचाए करीने अशुभ स्पर्शनो त्याग करीने भगवानना चरणनो स्पर्श करवो; नेत्रे करीने मायिक रूप जोवानो त्याग करीने भगवाननी मूर्तिना दर्शन करवां. एवी रीते इन्द्रियो, अंतःकरणना जे मायिक अशुभ विषयना आहार तेनो त्याग करीने भगवानना स्वरूपमां राखवा. अने ज्यारे अशुभ विषयनो त्याग करीने भगवानना स्वरूपमां जोडाय छे त्यारे तेना इन्द्रियो, अंतःकरण शुद्धभावने पामे छे. अने तेने मांहेनो कुसंग नाश थइ जाय छे. अने तेने प्रत्यक्ष सत्संग शुद्धि पामे छे. अने ते जीव भगवानना मार्ग थकी कोइ काळे कोइनो पाड्यो पडे नहीं.

हवे परोक्ष अने प्रत्यक्ष सत्संग ते शुं ? तो भगवान अने भगवानना भक्त संत वहारथी ज्ञान आपे ते परोक्ष सत्संग छे. अने ते भगवान अने भगवानना संत तेनी करेली ज्ञान–वार्ता तेने शुद्ध भावे करीने इन्द्रियो, अंतःकरण ग्रहण करे अने ते प्रमाणे सावधान थइने वर्ते ते प्रत्यक्ष सत्संग छे. अने एवी रीते परोक्ष अने प्रत्यक्ष ए बेय प्रकारना सत्संगनो जोग होय त्यारे जीवनुं कल्याण थाय छे. केमके वहारथी भगवान अने भगवानना संत ज्ञान आपता होय, पण जो मांहेना इन्द्रियो, अंतःकरण ते ज्ञाननुं ग्रहण न करे तो ते ज्ञान तेने लागतुं नथी. अने इन्द्रियो, अंतःकरण ज्ञाननुं ग्रहण करे एवां होय पण जो ज्ञानना आपनारा एवा जे भगवान के भगवानना जन ते न होय तो तेने ज्ञान थाय नहीं.

–माटे वहारथी भगवान अने भगवानना जन ज्ञान आपनारा होय अने ते ज्ञानने पोताना आत्माना कल्याणने अर्थे शुद्ध भावेथी उत्तम श्रद्धा राखीने ग्रहण करवुं अने ते ज्ञानमां देहे करीने वर्तवानुं कह्युं होय ते प्रमाणे दृढपणें वर्तवानो ठराव करवो. अने अंतःकरणमां समजवानुं कह्युं होय ते प्रमाणे समजवानो ठराव करवो. अने देहे करीने वर्तवानो अने अंतःकरणे करीने समजवानो ठराव कर्यो होय तेने श्रवण, मनन, निदध्यास करीने जीवमां साक्षात्कार करवुं; तो ते जीव ब्रह्मरूप थइने भगवानना धामने पामे छे. अने ते भक्त कोइनो पाड्यो भगवानना मार्ग थकी पडतो नथी.

–अने जेने समजवामां अने वर्तवामां कसर रहे छे तेने उत्तम, मध्यम अने कनिष्ठ एवा भेद रहे छे. तेमां जे जीव भगवान अने भगवानना संतनी ज्ञान–वार्तो काने करीने सांभळता होय पण ते वार्तानुं मनन मनमां न करे तो तेने कनिष्ठ श्रद्धा रहे छे. अने जे ज्ञान सांभळीने मनमां मनन करे छे, पण ज्यां सुधी जीवमां निदध्यास करीने

साक्षात्कार थयुं न होय त्यां सुधी तेने मध्यम श्रद्धा रहे छे. अने जे श्रवण, मनन अने निद्ध्यास करीने जीवमां साक्षात्कार करे छे, तेने उत्तम श्रद्धा उपजे छे. अने जेने उत्तम श्रद्धा उपजे छे ते जीव आत्यंतिक मोक्षने पामे छे. माटे उत्तम श्रद्धा पामवानो समो आव्यो छे, ते सावधान थइने पोताना आत्मानुं काम सुधारी लेवुं."

इति श्रीमुख सिद्धांत १४१ समाप्त ।

---

१४२ विषयः-भगवान अजन्मा अने अखंडमूर्ति केवी रीते?

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः-संवत् १९२० ना जेठ वद १० ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री पींपळी मध्ये व्यास अंबाराम वालजीने घेर उगमणें बार ओरडानी ओशरीमां हिंडोळाखाट उपर विराजमान थया हता. सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां. अने कंकुनो चांदलो कर्यो हतो. गुलाबना पुष्पना हार धारण कर्या हता अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणां हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

प्रश्नः-पछी विरजी भक्ते महाराजने प्रश्न पूछ्युं जे "हे महाराज! भगवाननुं स्वरूप छे तेने विषे तो देह, देही एवो भेद नथी. अने भगवान तो दिव्य साकार मूर्ति, अखंड, अविनाशी अने मायापर छे. अने ए भगवान बीजा जीवनी पेठे देह धरता नथी, अने बीजा जीवनी पेठे देह मूकता पण नथी, एवा प्रत्यक्ष मूर्ति रामकृष्णादिक भगवान छे. एम सर्वे शास्त्र अने सर्वे महात्मा पुरुष कहे छे. अने मनुष्यना जोयामां तो एम आवे छे जे 'श्रीकृष्ण भगवाने वसुदेव-देवकीने घेर जन्म धर्यो अने वळी तेणे पाछो देह मूक्यो.' एवी रीते सर्वे भगवानना अवतार थइ गया तेना देहनो वहेवार तो बीजा जीवना जेवो दीठामां

आवे छे. माटे भगवान देह धरता नथी अने देह मूकता नथी तेनुं प्रमाण शुं, जे जेणे करीने जीवने द्दढ़ा पडे जे 'वात खरी जे भगवान तो देह धरता नथी अने देह मूकता नथी ?' ते कृपा करीने कहो."

पछी महाराज बोल्या जे "ज्यां सुधी जीवनी मायिक-दृष्टि छे त्यां सुधी जीवने भगवाननुं स्वरूप यथार्थ जाण्यामां आवतुं नथी. अने ज्यारे जीवने महात्मापुरुषने विषे प्रीति थाय छे त्यारे ते जीवने तेनुं ज्ञान अंतरमां उतरे छे. पछी तेनी दृष्टिमांथी माया टळी जाय छे अने ते जीव ब्रह्मरूप मुक्त थाय छे. पछी एवो मुक्त थयो ते पोताने विषे मायाने देखे नहीं तो ब्रह्मथी पर एवा जे परब्रह्म परमात्मा तेने विषे तो मायाने देखेज केम ?

अने वळी ते ज्ञानी एम जाणे जे 'जेने ज्ञाने करीने हुं मायापर अने जन्म-मरण रहित थयो तो ते ज्ञानदाता एवा जे प्रत्यक्ष भगवान तेने विषे तो माया अने जन्म-मरण होय ज केम ? न ज होय, अने ए तो सदाय मायापर अने जन्म-मरण रहित छे. ते मायापर अने जन्म-मरण रहित तो एक परमात्मा छे, पण बीजो तो कोइ प्रकृतिना कार्य मांहेनो माया पर अने जन्म-मरण रहित नथी. अने जे मायापर न होय ते माया परनुं ज्ञान आपी केम शके ? न ज आपी शके, अने ते प्रत्यक्ष परमात्मा थकी ज्ञानने पामीने एकवार माया पर थाय छे ते पाछो पृथ्वी उपर जन्म धारण करतो नथी. ते गीतामां कह्युं छे–

> न तद् भासयते सूर्यो न शशांको न पावकः ।
> यद्गत्वा न निवर्तन्ते तद् धाम परमं मम ॥

अर्थ :–'जे भगवानना धामने पाम्यो ते फरीने पृथ्वी उपर जन्म धारण करतो नथी.' माटे परमात्मा ज एक स्वतंत्र छे; ते ज्हाय तेम

करवाने समर्थ छे. ते सारु जीवोना कल्याण करवाने अर्थे वारंवार पोतानी इच्छाए करीने पृथ्वी उपर प्रगट थइने मनुष्यने जोयामां आवे एवा मनुष्य स्वरूपनुं धारण करीने ज्ञान आपे छे. एम ज्ञानी जाणे छे.

अने वळी प्रत्यक्ष भगवानने ओळखवानुं एक बीजुं एंधाण छे. जेम कोइ मनुष्य एक गामथी बीजे गाम रहेवा जाय त्यारे तेना गुण, विद्या, समृद्धि ते तेना भेगुं एमने एम रहे छे. अने ते मनुष्य जो मरी जाय अने बीजे ठेकाणे जन्म धरे तो तेने पूर्वना गुण, स्वभाव, धनमाल विद्या ते कांइ भेगुं आवे नहीं. अने फरीने दाखडो करीने मेळवे तो मळे. केमके तेने देह बदलो थाय छे. अने जे एक गाममांथी बीजे गाम रहेवा जाय तेने देह तो तेनो ते रहे छे. तो तेने सर्व समृद्धि तेना भेगी रहे छे.

तेम सर्वे देव, मनुष्य, ब्रह्मादिकने जन्म-मरण थाय छे, तो तेने पूर्वनुं ज्ञान रहेतुं नथी. माटे तेने बीजा गुरु करवा पडे छे. अने जे परमात्मा पृथ्वी उपर प्रगट थाय छे तेने जन्म-मरण नथी; माटे तेनी पासे वगर शीखव्युं अनादिनुं अखंड ज्ञान रह्युं छे. अने ते प्रगट भगवानने कोइनी पासेथी ज्ञान शीखवुं पडतुं नथी. केमके भगवानने देह बदलो थतो नथी. एम प्रत्यक्ष प्रमाण भगवानने ओळखवानुं एंधाण छे. अने जेने देह बदलो थाय छे तेनी पासे वगर शीखव्युं ज्ञान होय नहीं. अने जे भगवान होय तेनी पासे तो वगर शीखव्युं सर्वमत-सिद्धांत ज्ञान होय छे. केमके भगवानने देह बदलो थतो नथी. एम भगवान अजन्मा अने अखंडमूर्ति छे. एवी रीते ज्ञाने करीने प्रगट भगवानना स्वरूपनो निश्चय थाय छे."

इति श्रीमुख सिद्धांत १४२ समाप्त ।

१४३ विषय-निर्विकल्प स्थितिवाळाना लक्षण अने अवतार अने अवतारी अवतारमां भेद.

श्रीहरिकृष्णाय नमो नमः-संवत १९२० ना जेठ वद ११ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गामश्री पींपळी मध्ये भक्त विरजी खीमाने घेर उगमणे बार ओरडानी ओशरीमां गादीतकिये शुक ढोलिया उपर विराजमान थया हता. श्वेत खेस पहेर्यो हतो अने श्वेत अंगरखुं अने गुलाबी फेंटो धारण कर्या हता. अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

प्रश्न:-पछी महाराज बोल्या जे "जेने निर्विकल्प स्थिति थइ होय तेनां शा लक्षण छे जे 'जेणे करीने एम जाणीए जे एने निर्विकल्प स्थिति थइ खरी?' ए प्रश्न संतमंडळने पूछीए छीए ते कहो?" पछी अक्षरमुक्तानंद स्वामीए कह्युं जे "जेने प्रत्यक्ष भगवानना स्वरूपनो उत्तम निर्विकल्प निश्चय थाय अने ते प्रत्यक्षना चरित्रने विषे कोइ दिवस लेशमात्र संशय थाय नहीं त्यारे एम जाणीए जे एने निर्विकल्प स्थिति थइ छे, एम जणाय छे."

पछी महाराज घडिकवार विचार करीने बोल्या जे "निर्विकल्प स्थिति थइ होय तेनां तो ए लक्षण छे जे प्रत्यक्ष भगवाननी आज्ञा प्रमाणे दृढपणे वर्ते अने भगवान जे जे आज्ञा करे तेने विषे रंच मात्र मननां संशय करे नहीं. अने भगवाने जेम कह्युं होय तेम राजी थको करे पण तेमां वार लगाडे नहीं. एम जेने वर्तवुं होय तेने निर्विकल्प स्थिति थइ जाणवी. अने जेने एवी निर्विकल्प स्थिति थाय छे. तेनी उपर भगवाननी कृपा अखंड रहे छे. अने तेने अंतरमां पण सदाय सुख वर्त्या करे छे. अने जेने तेमां जेटली कसर होय तेने तेटलुं दुःख रहे छे."

प्रश्न:-पछी अक्षरमुक्तानंद स्वामीए प्रश्न पूछ्युं जे "हे महाराज!

मननां तो एम होय जे 'जेम महाराज कहेशे तेम करवुं छे.' ते तमे एम आज्ञा करो जे 'आज तो उपवास करजो.' त्यारे तेने राजी थको उपवास करे. अने पोताने जाणे उपवास करवा मांड्यो होय अने ते उपासनी तमे ना पाडो त्यारे मनमां एम विचार थाय जे 'महाराज तो छो ना पाडे पण आपणे तो उपवास करवो. केमके तप, त्याग कराव्यामां तो महाराजनो राजीयो छे.' एम जाणीने ते वचन न पाळे अने ना पाडी होय तो पण उपवास करे; तेनुं केम समजवुं? ते कृपा करीने कहो?"

पछी महाराज बोल्या जे "उपवास करवानुं कहे तेमां कठण पडे अने उपवासनी ना पाडे त्यारे राजी थाय अने वाट जुए जे उपवासनी ना पाडे तो ठीक.' एवा संकल्पनो त्याग करीने जेम आज्ञा करे ते प्रमाणे राजी थका करवुं. अने ते आज्ञाने विपे योग्य–अयोग्य के ठीक-अठीक एवो कांइ कुतर्क करवो नहीं. अने जे जे आज्ञा करे तेने तत्काळ राजी थका करवुं. एवी रीते वर्ते तेना उपर अमारो बहु राजीपो थाय छे. अने तेने ज अमारो अखंड संबंध रहे छे. अने एवो खरेखरो आज्ञा प्रमाणे वर्तनारो जे भक्त होय तेने तो जेटलुं जरूर करावबानुं होय तेटली ज तेने अमे आज्ञा करीए छीए. अने जेने आज्ञामां फेर पडे छे अने आज्ञाने विपे ठीक–अठीक समजे छे तेने अमे पण यथार्थ आज्ञा करता नथी. केमके यथार्थ आज्ञा पाळवानो अधिकारी थयो नथी.

माटे अमारो खरेखरो राजीपो थवानो अने अमारी खरेखरी कृपा थवानो तो एज उपाय छे जे 'अमे जे जे आज्ञा करीए ते प्रमाणे निःसंशयपणें तत्काळ श्रद्धाए सहित करवुं. अने ते आज्ञाने विपे पोतानुं मोटुं भाग्य मानवुं.' एवी रीते जे आज्ञा पाळे छे तेना उपर अमारो बहु राजीपो थाय छे. अने तेना उपर ज कृपा थाय छे. अने तेने माथेथी

जन्म-मरणनां दुःख टळी जाय छे. अने एवा भक्तथो तो अ मणमां मात्र पण वेगळा रहेता नथी, अने ते भक्त तो छते देहे अक्षरधामक्ष वेठो छे."

प्रश्नः-एटली वार्ता करीने पछी वळी महाराजे साधुने एक प्रश्न पुछ्युं जे "भगवानना रामकृष्णादिक अवतार थइ गया ते सर्वे सरखा हशे के कांइ भेद हशे ? ते कहो." पछी साधुए उत्तर करवा मांड्यो पण थयो नहीं. पछी महाराज बोल्या जे "सांभळो अमे तेनो उत्तर करीए जे भगवानना अवतार वे प्रकारना थाय छे. तेमां एक तो भगवानना अवतार कहेवाय छे. अने एक तो सर्वे अवतारना अवतारी अक्षरातीत पुरुषोत्तम प्रगट थाय छे. तेमां जेटला अक्षरातीत अवतारी प्रगट थया छे तेने विषे तो लगारे पण भेद नथी. अने ते अवतारी अवतार जेटला थाय छे ते तो सर्वे एक ज छे, पण तेमां रंचमात्र भेद नथी. अने तेमां जे भेद समजे छे ते तो अज्ञानी छे. अने तेने सत्पुरुषनो सिद्धांत समजायो ज नथी. माटे जेटला अवतारी अवतार थया छे ते तो सर्वे एक ज छे.

जेम भवायो एक होय ते वेश अनंत काढे छे. तेम परमात्मा अक्षरातीत एक छे. ते जीवोने आत्यंतिक ज्ञान आपवा सारु अनंत वार प्रगट थाय छे. माटे तेमां भेद नथी. अने ते अवतारी अवतारनुं आत्यंतिक ज्ञान जेना अंतरमां उतर्युं एवा जे प्रत्यक्ष भगवानना भक्त ते सर्वे भगवानना अवतार कहेवाय छे. अने ते अवतारने विषे भेद छे खरा, केम के ज्ञानना त्रण भेद छे. ते त्रण भेद कया ? तो उत्तम, मध्यम अने कनिष्ठ, ए त्रण प्रकारना भेद छे. अने ते सर्वे भगवानना अवतार कहेवाय छे; अने ए सर्वेने आत्यंतिक ज्ञानना आपनारा एवा जे परमात्मा ते सर्वे अवतारना अवतारी छे. अने ते प्रत्यक्ष परमात्मा थकी जे भक्त उत्तम निर्विकल्प

ज्ञानने पाम्यो होय ते तो ते ने ते देहे ब्रह्मरूप थइने अक्षरधामने पामे छे. अने तेने फरीने जन्म धरवो पडतो नथी.

–अने जेने निर्विकल्प ज्ञानमां थोडी घणी कसर रही होय तेने पाछो फरीने जन्म धरवो पडे छे. अने ते भक्त भगवाननो अवतार कहेवाय छे अने ते अवतार धर्म, ज्ञान, वैराग अने भक्तिनुं प्रतिपादन करे छे. अने केटलाक जीवोने मोक्षने मार्गे चडावे छे, अने जे मध्यम ज्ञानवाळा भक्तनो अवतार थयो होय तो ते अवतार विशेषे ज्ञाननी प्रवृत्ति करे छे. अने कनिष्ठ ज्ञानवाळा भक्तनो अवतार थयो होय तो ते थोडी ज्ञाननी प्रवृत्ति करे छे. अने ते सर्वे भगवानना अवतार कहेवाय छे. अने ते अवतारने विषे भेद छे खरो, पण अवतारी अवतारने विषे भेद नथी. अने जेने अवतारी अवतार मळे छे ते ज आत्यंतिक मोक्ष जे अक्षरधाम तेने पामे छे. पण ते विना अक्षरधामने पमाय नहीं.

तेमां रामकृष्ण ते अवतारी मूर्तिओ छे. अने तेना संबंधमां जे जे भक्त आव्या अने ते मूर्तिओने विषे मन, कर्म, वचने जोडाया ते सर्वे अक्षरधामने पामी गया छे. माटे आ समे जेने मनुष्यदेह आव्यो छे अने जेने आ सत्संगनो संबंध थाय छे तेना बहु ज मोटां भाग्य छे. केम के पोताने मनुष्यनो देह अने अवतारी अवतारनो संबंध ए तो घणांक जन्मनां जेने सुकृत होय तेने जोग मळे छे. माटे ते समो आज तमारे सर्वने आव्यो छे."

॥ इति श्रीमुखसिद्धांत १४३ समाप्त ॥

---

१४४ विषय:—त्रेवीस प्रश्नोना उत्तर

श्री हरिकृष्णाय नमो नमः–संवत् १९२० ना प्रथम श्रावण सुद ८ ने दिवस महाराज श्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्री पीपळी मध्ये पोताना मंदिरमां हिंडोळाखाटे विराजमान थया हता. सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

प्रश्न:–ते समे व्यास भाईशंकर श्री खंभातथी आव्या तेणे महाराजने पगे लागीने कह्युं के "खंभातमां एक ब्राह्मण छे तेणे त्रेवीस प्रश्ननुं एक कीर्तन लखीने तमने मोकल्युं छे. ते ब्राह्मणने कल्याणनो घणो खप छे अने तेणे घणांक मतपंथमां जइने कल्याण सारु ज्ञान सांभळ्युं पण तेने कांइ शांति थती नथी. अने शास्त्र मात्र तेणे सांभळ्यां अने जोया अने संसारमांथी पण उदास थइने बेठो छे. तो पण अंतरमां कोई वाते शांति थती नथी. पछी में तेने तमारी वात करी त्यारे ते ब्राह्मण वात सांभळीने घणो राजी थयो अने तेणे एम कह्युं जे 'हुं तो एवा कल्याणदाताने ज खोळुं छुं. अने ते सारु तो स्वामीपंथीमां जइने बधाय साधुने जोया अने समागम कर्यो तथा गोसाईजी आदिक सर्वे धर्म जोया पण मारा अंतरना संशय कोइए टाळ्या नहीं. माटे आ कीर्तनमां त्रेवीस प्रश्न छे तेना उत्तर महाराज करीने मने मोकले अने मारा अंतरमां शांति थाय तो पछी हुं महाराजने शरणे आवुं, एम कह्युं छे' एवी रीते भाईशंकरे महाराजने कह्युं अने कीर्तननो खरडो महाराजना हस्तकमळमां आप्यो.

पछी ते कीर्तन महाराजे वांचीने कह्युं जे "ल्यो एना उत्तर अमे करीए छीए. (१) हवे पहेलुं प्रश्न ए छे जे 'अनादिनो जीव छे के अनादि शीव छे?' हवे तेनो उत्तर जे जो शीव अनादि कहीए तो शीव ते जीव केम थाय? अने जो अनादि जीव कहीए तो जीव

जीवने मेळे शीव थइ शके नहीं. माटे एनो उत्तर एम छे जे जीव, शीव अने परमशीव एवा अनादि त्रण भेद छे. हवे तेमां जीव ते शुं ? तो जेने पंचविषयनी वासना छे अने ते वासनाए करीने जन्म-मृत्युने पामे छे; तेनुं नाम जीव कहीए. ते एवा जीव अनंत अपार छे. अने जे परमशीव छे ते तो एक छे अने ते अनादि माया पर छे. अने जीव-शीवना आधार छे. अने तेने परमात्मा कहे छे, परब्रह्म कहे छे, पुरुषोत्तम कहे छे, नारायण कहे छे, भगवान कहे छे, प्रभु कहे छे. एवा जे माया पर परमशीव ते अनादि एक छे. अने ते जेवो बीजो कोइ थवाने समर्थ नथी. एवा परमशीव रूप परमात्मा ते जे ते जीवोना उपर दया करीने पोते माया पर रह्या थका मनुष्याकृतिनुं धारण करे छे त्यारे ते परमात्मानो जे जीवने संबंध थाय छे अने जे जीव तेनो आश्रय करे छे ते जीव मटीने शीवरूप थाय छे. केमके परमशीवरूप एवा जे परमात्मा तेनुं जे ज्ञान ते शीवरूप छे. ते ज्ञान परमात्मा पासे अनादिनुं छे. अने ते ज्ञानने जे जे जीव पामे छे ते जीव मटीने शीव थाय छे; पण परमशीव कोइ थतो ज नथी. अने ते जीव शीवरूप थयो ते परमशीव एवा जे परमात्मा तेनो दृढ दास थाय छे. माटे जीव, शीव अने परमशीव ए त्रणेय अनादिना छे. ए प्रश्ननो एज उत्तर छे.

(२) हवे बीजुं प्रश्न जे 'जळ अने पृथ्वीमां पहेलुं शुं ? तेमां पृथ्वी पहेली संभवती नथी अने जळ पात्र विना शामां रहे ?' हवे तेनो उत्तर जे जेम बीजमां वृक्ष रह्युं छे तेम आकाशमां चार भूत रह्यां छे. ते जेम वडनुं बीज नानुं होय पण तेमां मोटो वड रह्यो छे, तेम पृथ्वी, जळ, तेज अने वायु ते आकाशमां रह्या छे. अने ते आकाश थकी उपजे छे. अने ते चारेय भूतने कारणपणे आकाशनो ज आधार छे. तेमां प्रथम उत्पत्ति समे आकाश थकी वायु थाय छे, वायु थकी अग्नि थाय छे अने ते अग्नि वायुने आधारे रह्यो छे, अग्नि थकी जळ थाय छे अने जळ

थकी पृथ्वी थाय छे. एवी रीते आकाश थकी चार भूत उपजे छे ते तो सर्वे शास्त्रमां पण प्रसिद्ध कहेलुं छे.

—पण तेमां तमने एटली आशंका थाय छे जे 'पात्र विना जळ केम रहे ?' तो ए आशंका तो अतिशय ज स्थूळदृष्टिवाळानी छे, पण सूक्ष्मदृष्टिवाळानी ए आशंका होय नहीं. केमके ए तो प्रसिद्ध देखाय छे जे जळनुं कारण अग्नि छे. ते अग्निनुं स्वरूप सूर्य छे अने ते सूर्यना किरणोने विषे जळ अपार भर्युं छे. अने तेमांथी चोमासुं आवे त्यारे परमेश्वरनी इच्छा प्रमाणे घटे तेटलुं जळ वरसे छे अने बाकी किरणोमां तो अपार जळ भर्युं छे, पण पृथ्वीने आधारे जळ नथी रह्युं. अने वळी पात्रमां जळ रहे छे ते पण जे पात्रने अग्निनो संयोग थाय छे त्यारे पात्र जळने राखी शके छे. पण जो अग्निए पकव्या विना काचा-पृथ्वीना घडामां जळ भरे तो तेमां जळ रहेतुं नथी. अने तळाव कूवामां जे जळ रहे छे ते पण जे पृथ्वीमां जेवुं अग्निनुं जोर होय ते प्रमाणे तेमां जळ रहे छे. अने जे पृथ्वीमां अग्नि थोडो होय तेमां जळ रहेतुं नथी. ते मारवाड देशनी पृथ्वीमां अग्नि थोडो छे माटे ते देशमां जळ घणां ऊंडा छे. माटे जळ ते अग्निने आधारे रह्युं छे अने जळ पछी पृथ्वी थाय छे ए सिद्धांत छे. ए प्रश्ननो एज उत्तर छे.

(३) हवे त्रीजुं प्रश्न जे 'पहेलुं बीज के पहेलुं वृक्ष ?' तेनो उत्तर जे बीज अने वृक्ष ए बेय कार्य छे अने तेना कारणरूप तो पहेली पृथ्वी छे. ते पृथ्वी गंधवती छे, माटे तेने विषे सर्वे औषधिना बीज रह्यां छे. ते पृथ्वीमांथी पहेली सर्वे औषधिओ उत्पन्न थाय छे. अने पछी 'बीजमांथी वृक्ष अने वृक्षमांथी बीज' एवी रीते उत्पत्ति थाय छे. पण पहेलुं बीज के पहेलुं वृक्ष एम कहेवाय नहीं. अने ए सर्वेनुं कारण बीजरूप पृथ्वी

ते पहेली छे. केमके खरसाणी, थोर तथां हाडसांकळी तथा अमरवेल तेने मुद्दल बीज ज नथी. माटे तेनुं बीज पृथ्वी छे.

—अने तेम ज सर्वे आकार मात्रनुं पहेलुं बीज पृथ्वी छे. अने पृथ्वीनुं कारण जळ छे, जळनुं कारण अग्नि छे, अग्निनुं कारण वायु छे, वायुनुं कारण आकाश छे, आकाशनुं कारण अहंकार छे, अहंकारनुं कारण महत्तत्त्व छे, महत्तत्त्वनुं कारण प्रधानपुरुष छे, प्रधानपुरुषनुं कारण प्रकृतिपुरुष छे, प्रकृतिपुरुषनुं कारण अक्षरब्रह्म छे अने अक्षरब्रह्मना आधार अने कारण परब्रह्म परमात्मा छे. अने जे परमात्मा भगवान छे ते सत्यसंकल्पी छे माटे च्हाय तेम करवाने समर्थ छे. अने ते परमात्माथी पर कोइ नथी. अने. परमात्मा सर्वेना बीजरूप छे. माटे पहेलुं जे जे थयुं ते परमात्मा थकी थयुं छे. अने त्यार पछी बीजमांथी वृक्ष अने वृक्षमांथी बीज एवी रीते परंपरा चाल्युं जाय छे. ए प्रश्नो एज उत्तर छे.

(४) हवे चोथुं प्रश्न जे 'पहेलो दिवस के पहेली रात्री?' तेनो उत्तर जे एक ज्ञान छे अने एक अज्ञान छे. तेमां ज्ञाननुं स्वरूप प्रकाश छे अने अज्ञाननुं स्वरूप अंधकार छे. अने ते ज्ञान परमात्माने विषे अनादिनुं रह्युं छे. अने अज्ञान जीवने विषे अनादिनुं रह्युं छे. ते जीव सदाय घोर सुषुप्तिने विषे महाप्रलयमां लीन थया हता तेने ज्ञान आपवा सारु परमात्माए उत्पत्ति करीने तेने विषे ज्ञान-अज्ञानना रूप देखाडवा सारु दिवस अने रात्री परमेश्वरे कर्या छे. माटे दिवस अने रात्री बेय हारे थयां छे; पण कोई मोर के वांसे थयुं नथी. अने तेमां कार्य उत्तर ए छे जे जे जीवनो दिवसे जन्म थयो होय तेने पहेलो दिवस छे. अने जेने रात्रीने विषे जन्म थयो होय तेने पहेली रात छे. अने कारणपणें तो रात-दिवस कहेतां ज्ञान-अज्ञान बेय अनादिनुं छे. ए प्रश्नो एज उत्तर छे.

(५) हवे पांचमुं प्रश्न जे 'पहेली स्त्री के पहेलो पुरुष ?' तेनो उत्तर जे स्त्री अने पुरुष बेय अनादिना छे. केमके एकला पुरुष थकी पण उत्पत्ति थाय नहीं अने एकली स्त्री थकी पण उत्पत्ति थाय नहीं, माटे जीव अने माया बेय अनादिना छे. ते जीवने विषे माया रही छे अने मायाने विषे जीव रह्यो छे. अने जे परमेश्वर छे ते तो माया पर छे अने जीव अने माया बेयना आधार छे. ते परमेश्वरे जे ते उत्पत्ति समे पोतानो अनादि सेवक जे अक्षरब्रह्म ते द्वाराए मायाने विषे लीन हतो जे पुरुष तेने जागृत करे छे. पछी ते पुरुष जागतां वेंत पोताने विषे जे प्रकृति रही छे तेने जगाडे छे. माटे प्रकृति अने पुरुष बेय सर्व जगतना कारण छे. एवी रीते स्त्री अने पुरुष बेय अनादिना छे. ए प्रश्ननो एज उत्तर छे.

(६) हवे छट्ठुं प्रश्न जे 'गुण पहेलो के अवगुण पहेलो ?' तेनो उत्तर जे जीवमात्रने विषे पहेलां तो अवगुण ज भरेला छे. अने जे परमशीव रूप एवा जे परमात्मा छे तेने विषे सदाय गुण ज भरेला छे. ते परमात्मानो जीवने संबंध थाय त्यारे ते परमात्मा जे ते जीवने ज्ञान आपीने तेना दोष मुकावीने धर्म, ज्ञान, वैरागादिक गुण आपे छे त्यारे जीवने विषे गुण आवे छे अने दोष टळी जाय छे. ए प्रश्ननो एज उत्तर छे.

(७) हवे सातमुं प्रश्न जे 'पहेलुं शरीर के पहेली छाया ?' तेनो उत्तर जे शरीर अने छाया बेय भेगा ज थया छे. केमके आकार उत्पन्न थयो ते भेगी छाया पण थाय छे. जेम वृक्ष नानुं होय त्यारे तेनी छाया पण नानी होय छे. अने वृक्ष जेम मोटुं थतुं जाय छे तेम तेम तेनी छाया पण मोटी थती जाय छे. तेम शरीर अने छाया ते एक हारे ज उत्पन्न थाय छे. ए प्रश्ननो एज उत्तर छे.

(८) हवे आठमुं प्रश्न जे 'धर्मनो त्याग करीने कुकर्म आचरे छे,

ते एवी मति शाथी थती हशे ? केमके अधर्म थकी तो जीवने दुःख थाय छे; ते कोइ जीव पोताने दुःख थवाने तो च्हातो नथी. अने प्रभु कोइने दुःख देता नथी. माटे जीवने दुःख शाथी थाय छे ?' तेनो उत्तर जे ते वात गीतामां कही छे जे 'जीव पाप कर्मने विषे जोडाय छे. ते कोण जोडतुं हशे ?' एम अर्जुने पूछयुं त्यारे श्रीकृष्ण भगवाने कह्युं के 'काम, क्रोध, लोभादिक जे अंतरशत्रु छे ते जीवने बळात्कारे अधर्मने विषे जोडावे छे ?' अने वळी जेने कामादिक दोष अतिशय वृद्धि पाम्या होय एवा जे आसुरी जीव तेनो जे संग ते थकी पण अधर्मने विषे जोडाय छे. अने पछी जीव जेवां जेवां कर्म करे छे तेवुं फळ तेने परमेश्वर आपे छे. अने ते कर्म प्रमाणे जीव जे ते क्रियाने विषे जोडाय छे.' ए प्रश्ननो ए ज उत्तर छे.

(९) हवे नवमुं प्रश्न जे 'नाद–बुंदमां प्राण प्रगटे छे ते क्यांथी आवे छे अने क्यां जाय छे ? अने ते शूर छे के कायर छे ? अने तेनुं स्वरूप जड छे के चैतन्य छे ?' तेनो उत्तर जे पंचकोशात्मक आत्माना त्रण शरीर छे. ते पांच कोश कया ? तो एक अन्नमय कोश, बीजो प्राणमय कोश, त्रीजो मनोमय कोश, चोथो विज्ञानमय कोश अने पांचमो आनंदमय कोश; ए पांच कोश. तेमां प्रथम जीव जे ते आत्यंतिक प्रलयने विषे महाकारणरूप जे आनंदमय कोश तेने विषे लीन हतो; ते जीवने परमेश्वर उत्पत्ति समे बुद्धि, इन्द्रियो, मन अने प्राण ते सर्जी आपे छे. ते भागवतमां पण कह्युं छे जे—

बुद्धीन्द्रिय मनः प्राणान् जनानामसृजत् प्रभुः ।
मात्रार्थं च भवार्थं च आत्मने कल्पनाय च ॥

एवी रीते भगवान जे ते जीवने आनंदमय कोशमांथी जगाडीने

પ્રથમ બુદ્ધિ સર્જી આપે છે, પછી મન સર્જી આપે છે, પછી પ્રાણ સર્જી આપે છે અને પછી અન્નમય કોશ જે સ્થૂળ શરીર તથા ઇન્દ્રિયો તે સર્જી આપે છે તેમાં જીવ જે તે પહેલો આનંદમય કોશમાં રહ્યો થકો વિજ્ઞાનમય કોશરૂપ જે બુદ્ધિ તેમાં પ્રવેશ કરે છે, પછી આનંદમય અને વિજ્ઞાનમય કોશ સહિત મનરૂપ જે મનોમય કોશ તેમાં પ્રવેશ કરે છે, પછી ત્રણે કોશે સહિત જીવ જે તે પ્રાણમય કોશમાં પ્રવેશ કરે છે અને પછી એ ચારે કોશે સહિત અન્નમય કોશ જે સ્થૂળ શરીર તેમાં પ્રવેશ કરે છે.

તેમાં દશ ઇન્દ્રિયો અને પાંચ ભૂત તેનું નામ સ્થૂળ દેહ કહેવાય છે. અને પ્રાણમય, મનોમય અને વિજ્ઞાનમય એ ત્રણે કોશ મળીને સૂક્ષ્મ શરીર કહેવાય છે. અને આનંદમય કોશરૂપી જે સુષુપ્તિ તેનું નામ કારણ શરીર કહેવાય છે તેમાં પ્રાણે સહિત જીવ જે તે સ્થૂળ દેહમાં આવે છે. અને તે સ્થૂળ દેહની અવરદા આવી રહે ત્યારે પ્રાણે સહિત જીવ જે તે સૂક્ષ્મ દેહમાં પ્રવેશ કરે છે. અને જીવે સ્થૂળ દેહે કરીને જેવાં જેવાં કર્મ કર્યાં હોય તેવી તેવી ગતિને જીવ પામે છે. તે વેદમાં કહ્યું છે જે—
'મરણે યા મતિઃ સા ગતિઃ ભવેત્ ઇતિ શ્રુતિઃ ।'

અર્થઃ—જે 'જેવી સ્થૂળદેહ મૂકતી વખતે જીવની મતિ હોય છે તેવી ગતિ તેની થાય છે.' કહેતાં જેને પંચવિષયની વાસના હોય છે તે જીવને જ્યાં અધિક પ્રીતિ હોય ત્યાં પાછો સ્થૂળદેહ ધરીને પ્રાણે સહિત જીવ જે તે પ્રવેશ કરે છે. એવી રીતે સ્થૂળ દેહને વિષે પ્રાણ આવે છે અને જાય છે પણ પ્રાણનો જીવ ક્યારેય ત્યાગ કરતો નથી. અને પ્રાણ તો જીવની ભેગાને ભેગા એમને એમ સદાય રહે છે.

—અને તે જીવને જ્યારે પ્રગટ ભગવાન મળે છે અને તે ભગવાન થકી જીવ આત્યંતિક જ્ઞાનને પામે છે ત્યારે તે જીવ જે તે અન્નમય,

(१२) हवे बारमुं प्रश्न जे 'अग्नि न बाळी शके एवुं कयुं पदार्थ छे ?' तेनो उत्तर जे अग्नि बाळी शके नहीं एवो तो एक आत्मा छे. ते पण गीतामां कह्युं छे जे 'न दहति पावक ।' माटे आत्मा एक अग्नि थकी बळे नहीं एवो छे. अने आत्मा विना बीजां पिंड, ब्रह्मांडादिक सर्वे पदार्थ तेने महाप्रलयनो अग्नि छे ते बाळीने भस्म करी नाखे छे. ए प्रश्ननो एज उत्तर छे.

(१३) हवे तेरमुं प्रश्न जे 'शब्द बोलाय छे ते आत्मा बोले छे के जीभ बोले छे ?' तेनो उत्तर जे बोलवुं छे ते तो जीभनो धर्म छे पण आत्मानी सत्ताए करीने बोले छे. अने आत्मानी सत्ता विना तो जीभ एकली बोलवाने समर्थ नथी अने जीभ तो जड छे. जेम सारंगी, सरोदो अने शरणाई तेने कोइक पुरुष बोलावे छे त्यारे बोले छे अने पुरुष न बोलावे तो एनी मेळे बोले नहीं. अने बोलावनारो पुरुष होय पण ते वाजुं न होय तो पण बोले नहीं. तेम देहमां जीवात्मा होय अने जीभ पण सारी होय तो बोलाय छे. अने देहमां जीव होय पण जो जीभ न होय अने जीभ होय अने जीव देहमांथी नीसरी जाय तो पण बोलाय नहीं.' ए प्रश्ननो एज उत्तर छे.

(१४) हवे चौदमुं प्रश्न जे 'माया जेने विषे नथी एवो कोण पुरुष छे जे मायाने देखतो नथी ?' तेनो उत्तर जे मायाथी पर तो सदाय अनादि एक परमात्मा छे. अने ते परमात्मा जेने प्रगट मळे छे अने ते जीव परमात्मानो दृढ आशरो करे छे अने ते जीव जे ते परमात्मा थकी निर्बीजसांख्य अने निर्बीजयोग तेने सिद्ध करे अने पछी सबीजसांख्य अने सबीजयोग ए चार प्रकारना ज्ञानने सिद्ध करे छे ते पुरुष पण माया पर थाय छे अने तेनी दृष्टिमां माया आवती नथी.

हवे ते निर्बीज सांख्यनुं रूप ए छे जे देह-आत्मानो विवेक करीने देहने मिथ्या नाशवंत जाणीने आत्माने पोतानुं स्वरूप जाणवुं; तेनुं नाम निर्बीजसांख्य कहेवाय छे. अने निर्बीजयोगनुं रूप ए छे जे कोटी कोटी ब्रह्मांडनी उत्पत्ति, स्थिति अने प्रलय थाय छे जेना कोइक देशने विषे एवुं जे अक्षरब्रह्म तेने विषे पोताना आत्माने एकत्वपणुं करीने ते अक्षरने पोतानुं स्वरूप मानवुं; कहेतां 'हुं अक्षरब्रह्म छुं' एम समजवुं; तेनुं नाम निर्बीजयोग जाणवो. अने सबीजसांख्यनुं रूप ए छे जे एवा एवा अनंत कोटी अक्षररूप मुक्त ते अक्षरधामने विषे रह्या छे ते मुक्तना स्वामी एवा जे परब्रह्म परमात्मा भगवान ते जे ते सर्वेना प्रकाशक छे, सर्वेने सुखना दाता अने कर्म फळना आपनारा छे अने माया पर छे, अने अनंत ऐश्वर्य, सामर्थ्य,, बळ, गुण, तेज, प्रताप तेना धामरूप एवा भगवान ते दिव्यमूर्ति थका अखंड अक्षरमां रह्या छे, एम समजवुं तेनुं नाम सबीजसांख्य छे. अने सबीजयोगनुं रूप ए छे जे एवा अपार महिमावाळा जे परब्रह्म पुरुषोत्तम भगवान ते पोतानी स्व-इच्छाए करीने अनंत जीवोनो उद्धार करवाने अर्थे रामकृष्णादिकरूपे अवतार धारण करीने प्रगट थाय छे. ते प्रगट भगवानना स्वरूपनो उत्तम निर्विकल्प निश्चय करीने पोते आत्मा ब्रह्मरूप थइने ते भगवाननी मूर्तिने विषे ध्याने करीने जोडाई जवुं तेनुं नाम सबीजयोग कहेवाय छे. अने एवी रीते चार साधनने सिद्ध करीने प्रत्यक्ष भगवानना स्वरूपमां जे पुरुष जोडाणो छे ते पुरुष पण माया पर छे. अने ते पुरुष मायाने देखतो पण नथी. ए प्रश्ननो एज उत्तर छे.

(१५) हवे पंदरमुं प्रश्न जे 'शब्दादिक पंचविषय छे ते ज्ञानीनेपण विकळ करी नाखे छे, माटे ए ते विषय वखाणवा योग्य छे के आत्मा वखाणवा योग्य छे, कहेतां विषय बळवान छे के आत्मा बळवान छे?'

(२१) हवे एकवीसमुं प्रश्न जे 'तेज शाथी थयुं ?' तेनो उत्तर जे तेज वायु थकी थयुं छे. ते पण पूर्वे उत्पत्तिमां कहेलुं छे. एनो ए ज उत्तर छे. (२२) हवे बावीसमुं प्रश्न जे 'चंद्रमा शाथी थयो ?' तेनो उत्तर जे जळना सत्त्व अंश थकी चंद्रमा थयो छे. एनो ए ज उत्तर छे. (२३) हवे त्रेवीसमुं प्रश्न जे सूर्य शाथी थयो ?' तेनो उत्तर जे सूर्य तो अग्निना सत्त्व अंश थकी थयो छे."

एवी रीते सर्वे प्रश्नना उत्तर करीने महाराजे अक्षरमुक्तानंद स्वामीने आज्ञा करी जे "आ प्रश्नना उत्तर तमे लखजो. अने तेमां एटलुं लखजो के विस्तारना भयथी संक्षेप मात्र उत्तर लख्या छे. अने बाकी तो तमे अने अमे भेगा थयेथी तमारा अंतरना संशय मात्र हशे तेटला टळी जशे. पण खरो कल्याणनो खप हशे तो ज सर्वे वातनी सिद्धि थशे." पछी अक्षरमुक्तानंद स्वामीए कह्युं के "सारु महाराज ! हुं ए लखीश."

इति श्रीमुख सिद्धांत १४४ समाप्त ।

---

१४५ विषयः–दैवी अने आसुरी जीव केम थया हशे ?

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः–संवत् १९२१ ना मागसर सुद ७ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री भडीयाद मध्ये भक्त पटेल गणेश लखमणने घेर आथमणे बार ओरडानी ओशरीमां विराजमान थया हता. सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने मस्तके गुलाबी रंगनो फेंटो बांध्यो हतो. अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणांक हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

प्रश्नः–पछी धर्मानंदस्वामीए प्रश्न पूछ्युं जे "आ जगतमां बे प्रकारना जीव छे; ते केटलाक दैवी छे अने केटलाक आसुरी छे. ते दैवी अने आसुरी केम थया हशे ?"

पछी महाराज बोल्या जे "एक तो अनादिना आसुरी जीव छे, ते तो कोइ काळे दैवी थाय ज नहीं. जेम लींमडो अने मरचां ते कोइ काळे मींठा थाय नहीं; केमके तेनुं बीज ज एवुं कडवुं अने तीखुं छे. तेम जे अनादिना आसुरी जीव छे तेनां तो मरचां अने लींमडानी पेठे बीज ज भूंडा छे. जेम लींमडाने अने मरचांने साकरनुं पाणी पाइए तो पण ते कडवां अने तीखां मटे नहीं, तेम अनादिना जे आसुरी जीव छे तेने गमे तेटलुं सत्पुरुष ज्ञान आपे तो पण ते असुरभाव मूके ज नहीं. अने वळी जेने काम, लोभ, स्वाद, स्नेह अने मान तेने विषे जेटली जेटली प्रीति हशे तेटलो तेटलो तेने विषे असुरभाव छे.

–अने जे दैवी जीव छे ते तो प्रत्यक्ष भगवान तथा भगवानना एकांतिक संत तेनो आशरो करीने वासना टाळीने मोक्षने पामे छे. अने जे आसुरी जीव छे तेने तो सत्पुरुषनो समागम गमे ज नहीं. जेम चोरने पूनमनो चन्द्रमा गमतो नथी अने जे शाहुकार होय तेने तो चन्द्रमा अतिशय गमे छे, तेम आसुरी जीवने तो सत्पुरुषनो समागम दुःखरूप लागे छे. केमके आसुरी जीवने तो चोरी, छीनाळी, दारू, माटी, आदिक भूंडा पापकर्म करवां होय, माटे आसुरीने सत्पुरुषनो समागम केम गमे ? तेने तो सत्पुरुष उलटा काळरूप भासे.

–अने जे दैवी जीव होय तेने ज सत्पुरुषनो समागम सारो लागे छे. अने ते तो एम समजे जे 'अमारां अतिशय मोटां भाग्य जे अमने प्रत्यक्ष भगवान अने भगवानना संत मळ्या अने महादुःख थकी मूकाव्या. अने जो भगवान अने भगवानना संत न मळ्या होत तो गर्भवासना तथा चोराशीनां महादुःख भोगववां पडत.' एम समजीने अतिशय कृतार्थ मानीने अधर्मनो सर्ग जे काम, लोभ, स्वाद, स्नेह अने

मान तेनो त्याग करीने धर्म, ज्ञान, वैराग अने भक्ति तेने सत्संगे करीने सिद्ध करीने पोताना आत्मानुं रूडुं करीले छे, तेने दैवी जीव जाणवा अने अधर्मनो त्याग नथी करता अने उलटो सत्पुरुषनो द्रोह करे छे तेने आसुरी जीव जाणवा."

प्रश्न :—पछी वळी धर्मानंद स्वामीए प्रश्न पूछ्युं जे "हे महाराज! आसुरी जीव होय ते दैवी थाय के न थाय?" पछी महाराज बोल्या जे "जे अनादिना आसुरी जीव छे ते तो कोइ काळे दैवी थाय ज नहीं. अने जे असुरने संगे करीने असुरभावने पाम्यो होय ते तो सत्पुरुषनो समागम करे तो दैवी थाय छे."

प्रश्न :—पछी वळी धर्मानंद स्वामीए कह्युं जे "हे महाराज! तमे एवा आसुरी जीव केम कर्या?" पछी महाराज बोल्या जे "आ विश्व छे तेमां अनंत प्रकारनी सृष्टि छे अने तेमां सौ सौना गुण जुदा-जुदा छे. अने तेमां केटलुंक सारु कहेवाय छे अने केटलुंक नरसुं कहेवाय छे. अने जो सर्वे सारुं सारुं ज होय अने नरसुं न होय तो सारुं केम कहेवाय? जेम लींमडो कडवो छे तो साकर मीठी कहेवाय छे, तेम जो आसुरी जीव छे तो दैवी कहेवाय छे. अने तेना वखांण थाय छे. अने तेनी कीर्ति शास्त्रमां लखाय छे. माटे दैवी अने आसुरी वेय भेगा उपजाव्या छे. जेम कडवुं चीभडुं अने मीठुं चीभडुं एक खेतरमां भेगां थाय छे तेम दैवी अने आसुरी वेय भेगा थया छे."

प्रश्न :—पछी अखंडानंद स्वामीए प्रश्न पूछ्युं जे "हे महाराज! भगवानना भक्तने विषे अनंत गुण रह्या छे पण तेमां कयो गुण एक एवो श्रेष्ठ छे जे एक गुण सर्वे गुणने शोभाडे?" पछी महाराज बोल्या जे "दया, मित्र अने विनय ए गुण सर्वेमां श्रेष्ठ छे. अने सर्वे गुणने शोभाडे एवो अने सर्वेने सुख उपजावे एवो ए गुण छे.

—तेमां दया ते शुं? तो पोताथी नानो होय तेना उपर दया राखीने तेना दोष मुकावीने तेने रूडा गुण शीखववा. अने बीजा सर्वे जीव, प्राणी मात्र तेना उपर यथा योग्य जेम घटे तेम दया राखवी. अने मित्राई जे पोताना बरोबरीया होय तेनी साथे मित्रभाव राखीने पोतानुं अने मित्रनुं जेम सारु थाय तेवी क्रिया करवी अने तेवा मार्गे चालवुं; पण पोतानुं के बरोबरीयानुं भूंडुं थाय एम न करवुं. अने जे पोताथी मोटा होय एवा जे सद्‌गुरु, धर्मवाळा संत तेनो विनय करवो. अने तेनी माहात्म्ये सहित सेवा करवी. अने तेनी पासेथी पोताना आत्मानुं रूडुं थाय एवा गुण शीखवा.

—एवी रीते दया, मित्र अने विनयरूप जे गुण छे ते सर्वे गुण करतां श्रेष्ठ छे अने सर्वे गुणने शोभाडे एवो गुण छे. अने ए गुण न होय अने बीजा सूझे एटला गुण होय तो पण एके गुण शोभे नहीं. अने दया, मित्र अने विनय जेने न होय तेना उपर सत्पुरुषनी कृपा पण थती नथी. अने सत्पुरुषनी कृपा विना जीवनुं कल्याण पण थाय नहीं. ते सारु भगवानना भक्ते ए गुण जरूर शीखवो.

इति श्रीमुख सिद्धांत १४५ समाप्त।



१४६ विषय :—जीवात्मा निराकार के साकार? अने देहमां जीव अने जीवमां परमात्मा

श्री हरिकृष्णाय नमोनमः—संवत १९२१ना मागशर सुद ८ने दिवस महाराज श्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्री भडीयाद मध्ये भक्त पटेल गणेश लखमणने घेर आथमणें बार ओरडानी ओसरीमां ढोलिया उपर विराजमान थया हता. सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां. अने मस्तके कसुंबल

ताराळो फेंटो बांध्यो हतो. ककुंनो चांदलो कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

प्रश्नः–पछी महाराजे अक्षरमुक्तानंद स्वामीने प्रश्न पूछ्युं जे "जीव साकार छे के निराकार छे ?" पछी अक्षरमुक्तानंद स्वामीए कह्युं जे "जीव तो साकार छे." पछी महाराजे पूछ्युं जे "जीवनो केवो आकार छे ?" पछी अक्षरमुक्तानंद स्वामीए कह्युं जे "जीवनो दिव्य आकार छे; ते मायिक दृष्टिए करीने जोवामां नथी आवतो." पछी महाराजे धर्मानंद स्वामीने पूछ्युं के "तमे शुं कहो छो, जीव साकार छे के निराकार छे?" पछी धर्मानंद स्वामीए कह्युं जे "जीव वस्तुगते तो निराकार छे. अने जीवने वासनाए करीने मायिक देह बंधाणो छे. पछी जीवने प्रत्यक्ष तमारो संबंध थाय त्यारे मायिक देहनो नाश थइने दिव्य आकारने जीव पामे छे."

पछी महाराजे कह्युं के "तमारा बेयनो उत्तर साचो छे, केम के अक्षरमुक्तानंद स्वामीए जीवने साकार कह्यो ते मुक्त दशानी स्थितिमां बोल्या छे. अने जीवने ज्यां सुधी मायानो संबंध छे त्यां सुधी जीव वस्तुगते निराकार छे, अने परमेश्वर एने मायिक इन्द्रियो, अंतःकरण सर्जी आपे छे त्यारे जीव काने करीने सांभळी शके, त्वचाए स्पर्श करी शके. नेत्रे करीने रूप जोइ शके इत्यादिक इन्द्रियो अंतःकरणे करीने क्रिया करवाने समर्थ थाय छे, पण ते विना जीव कांइ करवाने समर्थ नथी; केम के जो आंखो फुटी जाय अने देहमां जीव होय तो पण रूप जोवाने समर्थ थाय नहीं, तेमज आंखनुं काम काने करीने थाय नहीं. अने कान फूटी जाय तो आंखे करीने संभळाय नहीं. एवी रीते जीव पराधिन छे पण जीव पोतानी मेळे स्वतंत्र नथी.

—माटे जीव निराकार छे अने वस्तुगते चैतन्य छे. अने ज्यारे जीवने परमेश्वरना स्वरूपनुं ज्ञान थाय छे त्यारे ते जीवने मायानो आकार टळीने दिव्यस्वरूपने पामे छे. अने परमेश्वरना स्वरूपनुं ज्ञान तो परमेश्वर पोते जीवनी उपर कृपा करीने पोताना स्वरूपनुं ज्ञान करावे त्यारे थाय छे. अने पोताने संबंधे करीने इन्द्रियो अंतःकरणमांथी जीवने मायानो भाव टळी जाय छे. अने ज्यारे मायिक भाव टळी जाय छे त्यारे मायिक शब्द सांभळवामां तेने आसक्ति रहेती नथी. अने भगवानना स्वरूपने जीव जाणे छे त्यारे मायिक रूप जोवानी जीवने इच्छा रहेती नथी एवी रीते दश इन्द्रियो अने चार अंतःकरण ते जे ते भगवानना संबंधने पामीने भगवानरूप थइ जाय छे. माटे भगवान थकी ज भगवाननुं ज्ञान थाय छे. अने ज्यारे भगवाननुं ज्ञान थाय छे त्यारे ते जीव पूर्णकाम थाय छे अने तेनी वासना बळी जाय छे अने ब्रह्मरूप थाय छे. अने भगवानने ध्याने करीने जीवनुं पण दिव्य स्वरूप बंधाय छे."

प्रश्नः—पछी गाम पींपळीना काळा भक्ते प्रश्न पूछ्युं जे "आ देहने विषे कइ रीते जीव रह्यो छे, अने जीवने विषे भगवान केवी रीते रह्या छे ?" पछी महाराज बोल्या जे "देहमां चोविस तत्त्व छे अने पचीसमो मांहे जीवात्मा रह्यो छे. ते तत्त्व जड छे अने तेने विषे जीव जे ते 'अहं ममताए' करीने रह्यो छे, अने जीवनी सत्ताए करीने देह जे ते चाले हाले छे. अने ए जीवने विषे भगवान साक्षीरूपे रह्या छे. ते जीव जेवां जेवां कर्म करे तेवां तेवां कर्मना फळ भगवान पमाडे छे. ते जीव ज्यारे सत्त्वगुणी कर्म करे छे तेनुं फळ देवलोकमां भोगवावे छे. अने रजोगुणी कर्म करे छे तेनुं फळ मृत्युलोकमां भोगवावे छे. अने तमोगुणी कर्म करे छे तेनुं फळ अधोगति जे नरक तेमां भोगवावे छे. एवी रीते जीवमां

भगवान साक्षीरूपे रह्या छे."

प्रश्नः—पछी वळी काळा भक्ते पूछयुं जे "जीव नरकमां जाय छे त्यारे परमेश्वर जीवमां छे के नथी." पछी महाराजे कह्युं के "जीवमां भगवान छे." पछी काळा भक्ते पूछयुं जे "जीवने तो नरक खावुं पडे छे त्यारे परमेश्वरनुं केम समजवुं ?" पछी महाराजे कह्युं जे "खावुं छे ते तो प्राणवायुनो धर्म छे पण आत्मा तो कांइ खातो, पीतो नथी अने ए तो सदाय सुखरूप छे अने असंगी छे. अने परमात्मा तेथी पर छे अने सदाय अक्षरधाममांज रह्या छे. अने अक्षरमां रह्या थका जीव जीव प्रत्ये साक्षीरूपे रह्या छे.

जेम सूर्य छे ते मूर्तिमान तो पोताना मंडळने विषे रह्यो छे अने प्रकाशरूपे सर्वे जीवना नेत्र नेत्र प्रत्ये रह्यो छे. ते नेत्रने दुःखे करीने सूर्यने दुःख नथी थतुं अने नेत्रने नाशे सूर्यनो नाश नथी थतो. तेम सूर्यनी पेठे भगवान अक्षरधामने विषे रह्या थका सर्वे जीव प्राणीमात्रमां साक्षीरूपे रह्या छे. ते जीवने दुःखे करीने परमेश्वरने दुःख नथी. अने जीवने जन्ममरणे करीने परमेश्वरने जन्ममरण नथी थतुं. अने परमेश्वर तो सदाय मायापर छे अने सदाय अक्षरधाममां ज रह्या छे. जेम सूर्यनो प्रकाश सूर्य भेगो ज छे, तेम परमेश्वर मूर्तिमान थका सदाय अक्षरधाममां छे अने अन्वयपणें करीने सर्वे विश्वमां छे. अने अन्वय, व्यतिरेक एक ज रूप छे.

इति श्रीमुख सिद्धांत १४६ समाप्त ।

१४७ विषयः–'यद्गत्वा न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम ।'

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः–संवत् १९१९ ना मागसर सुद ९ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री भडीयाद मध्ये पटेल मेघा दुदाने घेर उगमणें बार ओरडानी ओशरीमां ढोलिया उपर विराजमान थया हता. सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्या हता अने कंठमां पुष्पना हार धारण कर्या हता. ललाटने विषे कंकुनो चांदलो कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणांक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

प्रश्नः–पछी विरजी भक्ते प्रश्न पूछ्युं जे "हे महाराज ! भगवानना धामने पाम्या जे मुक्त ते फरीने जन्म धरे छे के नथी धरता ?" पछी महाराज बोल्या जे "धर्म, ज्ञान, वैराग्य अने माहात्म्ये सहित प्रत्यक्ष भगवाननी भक्ति सिद्ध करीने आत्यंतिक ज्ञान पामीने ब्रह्मरूप थइने अक्षरधामने पाम्या जे मुक्त ते तो कोइ काळे जन्म धरता नथी. ते गीतामां श्रीकृष्ण भगवाने कह्युं छे जे–

न तद् भासयते सूर्यो न शशांको न पावकः ।
यद्गत्वा न निवर्तन्ते तद् धाम परमं मम ॥

ए श्लोकमां एम कह्युं छे जे 'जे मारा धामने सूर्य, चंद्र अने अग्नि ते प्रकाश करी शकता नथी कहेतां स्वप्रकाश छे एवुं जे अक्षरधाम तेने जे मुक्त पामे छे ते फेर पाछो जन्मने नथी धरतो."

प्रश्नः–पछी वळी विरजी भक्ते पूछ्युं जे "हे महाराज ! एम कहे छे जे आ मुक्तने तो भगवान भेगा तेडी आव्या छे,' तेनुं केम हशे ?" पछी महाराज बोल्या जे ज्यारे ज्यारे भगवान जीवोना कल्याणने अर्थे कृपा करीने पृथ्वी उपर मनुष्यदेहनुं धारण करे छे त्यारे पोताने शरणे

आव्या जे जीव तेने ज्ञान आपे छे. तेमां चार प्रकारना जीव छे; मुक्त मुमुक्षु, विषयी अने पामर. तेमां जे मुक्त अने मुमुक्षु छे ते तो प्रत्यक्ष भगवान थकी धर्म, ज्ञान, वैराग अने भक्ति सिद्ध करीने निर्वासनिक थइने आत्यंतिक मोक्षने पामे छे. अने ते तो कोइ काळे पृथ्वी उपर जन्म धरता नथी. अने जे विषयी अने पामर छे ते प्रत्यक्ष भगवानने शरणे आव्या होय तो पण तेने तत्काळ आत्यंतिक ज्ञान थतुं नथी, अने आत्यंतिक ज्ञान विना निर्वासनिक थाय नहीं. पछी भगवानने भजतां भजतां जे ए ने ए देहे करीने निर्वासनिक थाय ते तो अक्षरधामने पामे छे. अने जेने वासना टाळतां टाळतां थोडी घणी वासना रही जाय अने तेनो देह पडे तो ते अक्षरधामने न पामे अने ते विनाना बीजां भगवानना धाम जे बद्रिकाश्रम, श्वेतद्विप तथा वैकुंठादिक घणां छे तेने पामे छे. अने ते पण सर्वे मुक्त कहेवाय छे. पछी ते मुक्तने ज्यारे भगवान फरीने पृथ्वी पर पधारे छे त्यारे तेने भगवान जन्म धरावे छे. अने 'ते मुक्तने भगवान भेगा लाव्या' एम कहेवाय छे."

प्रश्नः—पछी वळी भक्त विरजीए प्रश्न पूछ्युं जे "हे महाराज! भगवान पृथ्वी उपर ज्यारे पधारे छे त्यारे अक्षरधाममां रहे छे के नथी रहेता ?" पछी महाराज बोल्या जे "भगवान तो सदाय अखंड अक्षरधाममां ज रहे छे पण क्यारेय अक्षरधामनो त्याग नथी करता. अने भगवान छे ते तो सत्य–संकल्पी छे ते अक्षरधाममां रह्या थका एम संकल्प करे छे जे पृथ्वीने विषे मनुष्य स्वरूपे देखाउं,' तो ते भगवान अक्षरधाममां रह्या थका पृथ्वी उपर मनुष्य जेवा देखाय छे.

—ते ज्यारे ज्यारे पृथ्वी उपर एकांतिक धर्मनो लोप थाय छे त्यारे ते धर्मना स्थापनने अर्थे अने अनंत जन्म थयां भगवाननी भक्ति करता

होय एवा जे मुक्त तेने आत्यंतिक मुक्ति आपवा सारु वारंवार प्रगट थाय छे. अने ते भगवान पोतानी इच्छाए करीने अक्षरधाममां अखंड रह्या थका पृथ्वी उपर मनुष्यना जेवा पोताना देहना भाव जणावे छे. ते जेम मनुष्य स्त्री थकी देह धरे छे अने बाळक जेम रूए छे, अने जेम बाळक खाय, पीये अने रमे तेम भगवान पण बाळकनी पेठे पोताने विषे भाव देखाडे छे. अने जेम मनुष्य जवान थाय छे अने तेने जेम राग, द्वेष, पक्षपात, पारकुं, पोतानुं, हरख, शोक, इत्यादिक जेम मनुष्यमां होय तेम भगवान पण राग, द्वेष, पक्षपात, पारकुं, पोतानुं, हरख, शोकादिक भाव पोताने विषे जणावे छे. अने जेम मनुष्य देह मूके छे तेम भगवान पण देहनो त्याग करे छे.

एवी रीतनी जे भगवाननी लीला तेने भगवानना एकांतिक निर्वासनिक साधु छे ते जाणे छे जे 'भगवान तो जन्म्या ज नथी. अने भगवान बाळक, जुवान, वृद्ध थया नथी. अने भगवानने पारकुं, पोतानुं, हरख, शोक, ते छे ज नहीं. अने भगवान तो सदाय अक्षरधाममां अखंड विराजे छे. अने अहीं पृथ्वी उपर देखाय छे ते तो जीवोनी उपर कृपा करीने पोताना सत्य-संकल्पे करीने दर्शन आपे छे.' एम एकांतिक संत जाणे छे.

–अने वळी ब्रह्मरूप एवा जे साधु ते पण देहने जन्मे करीने जन्म नथी मानता अने देहने मरवे करीने मरवुं नथी मानता. एवी रीते जेने भजने करीने ब्रह्मरूप थया एवा जे साधु तेने आववुं-जवुं रहेतुं नथी तो तेना स्वामी एवा जे परमात्मा परब्रह्म तेने विषे आववुं-जवुं केम होय ? ए तो अक्षरधाममां रह्या थका अहीं देखाय छे. अने जे मायिक दृष्टिवाळा छे ते भगवानने आव्या-गया देखे छे.

–अने आज पण जेना जेवा जेवा भाव हशे ते ते रूपे अमने देखता हशे. अने जे एकांतिक भक्त छे ते अमने दिव्यरूपे देखे छे. अने जे आसुरी जीव छे ते तो अमने शत्रु अने काळरूप देखे छे. अने जे लोभीया छे ते अमने लोभी देखे छे, जे कामी छे ते अमने कामी देखे छे, जे स्वादीया छे ते अमने स्वादीया देखे छे अने जे मानी छे ते अमने मानी देखे छे. एवी रीते जेनो जेवो अंतरनो भाव ते ते भावे अमने देखे छे.

जेम चिंतामणी होय तेने विषे जे जे भावे संकल्प करे ते ते पदार्थने देखे, तेम भगवान चिंतामणीरूप छे, ते तेने विषे जे जीव जेवो जेवो भाव राखे तेवा तेवा भगवान तेने देखाय छे. अने भगवान तो अक्षरधाममां दिव्य सिंहासन उपर अनंत कोटी मुक्ते विंटाणां थका विराजमान छे."

इति श्रीमुख सिद्धांत १४७ समाप्त ।

१४८ विषय :–'साहेब सबीका बाप है, बेटा कीसीका नहीं'

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः–संवत् १९२१ना मागशर सुद १०ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री भडीयाद मध्ये पटेल खोडाने घेर उगमणां बारना ओरडानी ओशरीमां सांजने समे ढोलिया उपर विराजमान थया हता. सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने कंठमां पुष्पना हार शोभी रह्या हता. कंकुनो चांदलो कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनिमंडळ तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

प्रश्नः–पछी गाम धोलेराना शाह गोवरभूते महाराजने प्रश्न पूछ्युं जे 'हे महाराज ! अमे तो तमने भगवान जाणीए छीए अने रामकृष्णादिक

अवतार थइ गया छे तेने पण साक्षात्कार भगवान जाणीए छीए, पण आ एक साखी छे तेनुं केम समजवुं?

साहेब सबीका बाप है, बेटा कीसीका नहीं;
बेटा हो कर अवतरे, सो वो साहेब नहीं."

पछी महाराज बोल्या जे "भगवान छे ते तो सर्वेना बाप छे अने कोइना दीकरा थता ज नथी. अने ए तो बे प्रकारना जीवनी दृष्टि छे, तेमां एक दैवी जीवनी दृष्टि छे अने एक आसुरी जीवनी दृष्टि छे. ते आसुरी दृष्टिवाळा जीव छे ते जे ते भगवानने जन्म्या एम देखे छे. अने वळी कोइना दीकरा थया अने बाळ, जोबन, वृद्ध, दुबळा, जाडा, काळा, धोळा, साजा, मांदा, ब्राह्मण, क्षत्रिय, इत्यादिक भेदे युक्त असुरदृष्टिना जीव छे ते भगवानना अवतारने देखे छे. केम के तेनी दृष्टिमां मायानुं आवरण छे.

जेम जेनी आंखमां कमळो होय ते धोळाने पण पीळुं देखे अने पीळाने पण पीळुं देखे, तेम जेनी दृष्टिमां कमळारूप मायानुं आवरण छे ते पीळा वस्त्ररूप जगतना जीव ते तो मायामां छे तेने मायामां देखे छे अने धोळा वस्त्ररूप भगवानना अवतार माया पर छे तेने पण कमळारूप मायिक दृष्टिए करीने मायामां देखे छे. अने जे दैवीदृष्टिना जीव छे तेनी तो निरावरण दृष्टि छे ते तो भगवानने सदाय माया पर अने सर्वना आधार अने अजन्म्या एम देखे छे, पण भगवान जन्म्या के कोइना दीकरा थया एम नथी देखता. अने मायिक-दृष्टिवाळाने भगवान आव्या, गया, जन्म्या, बाल जोबन, वृद्ध जणाय छे ते तो नटनी रमतनी पेठे छे.

जेम नट होय ते पींछनुं पारेवुं मनुष्यने देखाडे छे, पण ते पारेवुं पींछनुं थाय नहीं केम के जो पींछनुं पारेवुं थतुं होय तो ते नट पोताना

माणसोने शीद् मरवा दे. केम के जेम पींछमांथी पारेवुं करे तेम मनुष्यना कोइ एक अंगमांथी मनुष्य करे, पण ते तो थतुं नथी. अने पींछनुं पारेवुं पण खोटुं खोटुं देखाडे छे, पण ते नटनी रमत कोइना जाणवामां आवती नथी. तो माया पर एवा जे परमात्मा भगवान तेनी योगमायाने कोण जाणी शके ? माटे भगवान तो सदाय अक्षरधाममां रह्या थका दैवी सृष्टिवाळा एवा जे मुक्त अने मुमुक्षु जीव तेने आत्यंतिक ज्ञान आपीने निरावरण दृष्टि कराववा सारु पोतानी स्वइच्छाए करीने आ पृथ्वी उपर प्रगट थाय छे. पछी मुमुक्षु अने मुक्त एवा जे दैवीसृष्टिना जीव ते भगवानने शरणे आवे छे, तेने भगवान सांख्ये अने योगे करीने आत्यंतिक ज्ञान करावे छे.

हवे तेमां प्रथम सांख्यनुं ज्ञान कहीए छीए जे भगवान केवा छे ? तो माया पर छे, निर्गुण छे, अकर्ता छे, निराकार छे, अद्वैत छे, व्यापक छे अने ते भगवान जे ते मायिक एवा जे इन्द्रियो, अंतःकरण तेने करीने जाण्यामां आवे एवा नथी. अने अनुभवे करीने जणाय एवा भगवान छे. अने योगमां एम कह्युं छे जे एवा परात्पर भगवान जे ते आत्यंतिक प्रलयने अंते उत्पत्ति समे पोते एक हता ते अक्षरमां रह्या थका अक्षरमां प्रवेश करीने अक्षरद्वारे अनंत कोटि प्रकृतिपुरुषमां प्रवेश करीने तेने जाग्रत करे छे. अने एक एक पुरुष जे ते अनंतकोटी प्रधानपुरुषमां प्रवेश करीने तेने उत्पन्न करे छे. अने प्रधानपुरुष थकी महत्तत्त्व थाय छे अने महत्तत्त्व थकी त्रण प्रकारनो अहंकार छे, अने त्रण प्रकारना अहंकारथकी चोवीस तत्त्व थाय छे अने चोविस तत्त्व थकी वैराटरूप ब्रह्मांड थाय छे अने ब्रह्मांड थकी देव, दैत्य, मनुष्य, पशु, पक्षि आदिकना शरीर थाय छे. एवी रीते माया पर एवा जे भगवान ते जे ते

अक्षररूपे करीने अनंतकोटी ब्रह्मांडमां प्रवेश करीने सर्वेना आधार प्रेरक अने साक्षीरूपे अंतर्यामी सर्वेना विषे रह्या छे.

अने जेम उत्पत्ति थइ तेम पाछो प्रलय थाय छे त्यारे एक भगवान रहे छे. ते भगवान थकी ज प्रलय थाय छे. अने एवा सर्वेना कारण जे भगवान ते जे ते पोताने शरणे आव्या एवा जे दैवीसृष्टिना जीव तेने ज्ञाने करीने प्रलय करावे छे जे जीवना देहमां पृथ्वी, जळ, तेज, वायु, आकाश एवा जे अल्प पंचभूत ते जे ते वैराटरूप ब्रह्मांड तेमां महत् पंचभूत छे ते थकी उपज्या छे. ते अल्प पंचभूतने महत् पंचभूतमां लय करीने पोताना आत्माने तेथी जुदो समजीने दृष्टारूप थइने एक वैराटनी दृष्टिने पामवुं, कहेतां सर्वत्र एक वैराट छे पण वैराट विना बीजुं कांइ नथी. अने एवी रीते वैराट जे ते थकी जीवनो अहंकार उपज्यो छे तेने वैराटमां लय करीने वैराटने महत्तत्त्वमां लय करवो. अने जीवनुं चित्त जे ते महत्तत्त्व थकी थयुं छे तेने तेमां लय करवुं अने महत्तत्त्वने प्रधान-पुरुषमां लय करवुं. अने जीवनुं मन छे ते प्रधानपुरुष थकी थयुं छे तेने प्रधानपुरुषने विषे लय करवुं. अने प्रधानपुरुष छे ते मूळ प्रकृतिपुरुष थकी थया छे तेने तेमां लय करवा. अने जीवनी बुद्धि छे ते मूळ-मायामांथी थइ छे तेने तेमां लय करीने मूळ प्रकृतिपुरुष छे ते अक्षरना कोक देशमांथी थयेला छे तेने तेमां लय करवा अने पोताना आत्माने अने मूळपुरुषना आत्माने एक करीने सर्वे मायाना भावने ज्ञानप्रलय करीने दृष्टारूप थइने सर्वव्यापक अने सर्वाधार एवुं जे अक्षरब्रह्म तेनी दृष्टिने पामवुं.

—अने अक्षरनी दृष्टिने जे पामे छे ते तो एकलुं चैतन्यमय देखे छे अने तेने मायानुं आवरण टळी जाय छे अने तेनी दृष्टिमां माया आवती नथी.

अने जे चैतन्यनी दृष्टिने पामे छे ते तो सर्वना आत्माने चैतन्यरूप देखे छे. अने एवी रीते जेणे ज्ञानप्रलय करावीने चैतन्यदृष्टि करावी एवा जे सद्गुरुरूप ज्ञानदाता तेज परमात्मा परब्रह्म भगवान छे. अने सर्वव्यापक एवुं जे अक्षरब्रह्म तेना आधार छे अने तेना स्वरूपनुं पोताना चैतन्यरूप आत्माने विषे ध्यान करे छे तेने प्रत्यक्ष भगवान अखंड आत्माने विषे तेजोमय अक्षरधामने विषे देखाया करे छे.

माटे जेने भजने करीने तथा जेने ज्ञाने करीने मायानुं आवरण टळी जाय छे एवा जे परमात्मा परमेश्वर तेणे जन्म धर्यो एम केम कल्पाय? अने जन्म, कर्मादिक मनुष्यभाव जणाय छे ते तो नटनी रमतनी पेठे छे. ते जे अणसमजु बाळक होय ते नटनी रमतमां मोह पामे पण जे समजु मनुष्य होय ते तो नटनी सर्वे रमतने खोटी जाणे छे. तेम भगवानना जन्म अने कर्म ते तो नटनी मायानी पेठे देखाय छे पण भगवान मनुष्य जेवा जणाय छे तो पण दिव्यमूर्ति ज छे. अने भगवान कोइना दीकरा नथी थता तथा भगवानने सगुं-संबंधी, नात-जात कोइ नथी अने भगवान तो सदाय अजन्म्या छे. अने एवा जे भगवान तेने दर्शन मात्रे करीने मायानुं आवरण टळी जाय छे. अने जन्म-मरणना फेरा मटी जाय छे. अने ब्रह्मरूप थइने अक्षरधामने पामे छे अने फरीने तेने जन्म धरवो पडतो नथी. अने एवा ब्रह्मरूप मुक्त तेना स्वामी जे परब्रह्म परमात्मा भगवान तेना जन्म अने चरित्र ते तो सर्वे दिव्य छे अने अनंत जीवोना कल्याणने अर्थे छे."

इति श्रीमुख सिद्धांत १४८ समाप्त ।

---

१४९ विषय :—भगवाननी मूर्ति अखंड सांभर्या करे तेनो उपाय.

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः—संवत् १९२१ ना मागशर सुद १२ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री भडीयाद मध्ये पटेल लाधाने घेर ढोलिया उपर विराजमान थया हता. सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां. अने कंठमां पुष्पना हार धारण कर्या हता. पाघमां फूलना तोरा लटकता हता अने बे कान उपर गुच्छ खोस्या हता. बे हाथने विषे पुष्पना बाजुबंध अने गजरा धारण कर्या हता अने ककुंनो चांदलो कर्यो हतो. अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणांक हरि-भक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

प्रश्नः—पछी गाम चुडाना हरिभक्त भट्ट नाराणजीए महाराजने हाथ जोडीने कह्युं जे "तमारी मूर्ति अंतरमांथी विसरे नहीं अने अखंड सांभर्या करे तेनो शो उपाय छे ?"

पछी महाराज बोल्या जे " संतने समागमे करीने भगवाननो महिमा समजे तेने अंतरमांथी मूर्ति विसरे नहीं. केमके धन, दोलत, स्त्री, छोकरां राजपाट, आदिक जे चौद लोकनुं सुख छे तेने भगवानना धामना सुख आगळ कागविष्टा तुल्य कह्युं छे. माटे भगवाननो महिमा जो समजाय तो ते भगवानने विषे सहेजे ज वगर राखी वृत्ति रह्या करे. जेम कोइक लोभीयो होय अने तेणे द्रव्यने पृथ्वीमां दाट्युं होय तो तेनी वृत्ति ते द्रव्यमां अखंड रह्या करे, तेम भगवानने विषे माहात्म्ये सहित प्रीति थाय तो तेने भगवान विना बीजुं कांइ सांभरे नहीं अने तेनी अखंड-वृत्ति भगवानमां रह्या करे. अने भगवान विना बीजे वृत्ति जाय छे तो तेनी समजणमां कचाश छे. ते कचाशने टाळवा सारु मन, कर्म, वचने करीने संतनो समागम करे तो तेनी कचाश सर्वे मटी जाय छे अने भगवाननी मूर्ति तेना अंतरमां निवास करीने रहे छे.

जेम तमारा गामना केशवजीए जो मन, कर्म, वचने सत्संग कर्यो तो तेने माहात्म्य ज्ञाने सहित प्रत्यक्ष भगवानना स्वरूपनो निश्चय थयो. अने तेने हवे भगवान विना बीजुं कांइ सांभरतुं नथी अने वगर राखी भगवानमां अखंडवृत्ति रह्या करे छे अने महा ब्रह्मदशाने पामी गया छे. तेम जे जे पोताना आत्माना मोक्षनो खप राखीने सत्संग करे तेने पण भगवानना स्वरूपनो माहात्म्ये सहित निश्चय थाय अने तेने भगवाननी मूर्ति अंतरमांथी विसरे नहीं."

इति श्रीमुख सिद्धांत १४९ समाप्त ।

---

१५० विषयः—जगतनो फंद छूटवानो उपाय

श्रीहरिकृष्णाय नमो नमः—संवत १९२१ ना मागशर सुद १३ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री पींपळी मध्ये व्यास दल्लुने घेर आथमणें वार ओरडानी ओशरीमां गादी तकिया नखावीने ढोलिया उपर विराजमान थया हता. सर्वे कसुंबल वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

प्रश्न :—पछी गाम वळदाणाना पितांबर सामाए प्रश्न पूछ्युं जे "हे महाराज ! आ जगतनो फंद जीवने वळग्यो छे ते केम छूटे ? ते कहो." पछी महाराज बोल्या जे "ए फंद थकी जेने मुकावानी इच्छा होय तेने एम विचार करवो जे 'आ मनुष्य देहरूपी मूडी परमेश्वरे आपी छे ते मारा उपर अतिशे कृपा करीने आपी छे, केमके जीवने माथे जन्म, मरण, गर्भवास अने चोराशी फरवी ते रूपी महा कष्ट छे. ते कष्टने टाळवा सारु जो मनुष्य देहरूपी मूडीए करीने सत्पुरुषनो संग करे अने

ते थकी ज्ञान पामीने काम, लोभ, स्वाद, स्नेह अने मान तेनो त्याग करे तो ते जीवनुं कल्याण थाय अने तेने मांथेथी कष्ट मात्र टळी जाय अने महासुखियो जीव थाय. अने भगवाननी एकांतिक भक्ति करीने निर्वासनिक थइने भगवानना अक्षरधामने पामे.

—अने जो ते मनुष्य देहरूपी मूडीए करीने सत्पुरुषनो समागम तो न करे अने काम, लोभादिकमां प्रवर्ते तो ते देहनी आवरदारूपी मूडी खूटे त्यारे मरीने लख चोराशीमां जइने कूतरा, गधेडादिक एवा घणांक भूंडा भूंडा अवतार पामीने महाकष्टने भोगवे. जेम कोइक रांक वाणियो होय अने तेने कोइक भारे शाहुकार महेरबानी करीने दश, वीस हजार रूपियानी मूडी आपीने तेने कहे जे तेमांथी हजार बे हजार तारा छोकरांने आपजे अने बाकी मूडी लइने परदेशमां वेपार करवा जजे. पछी ते वाणियो परदेशमां जइने वेपार करे तो कमाणी करीने पोते लखेशरी थाय अने दारिद्रपणुं मटीने शाहुकार कहेवाय अने सुखने पामे. अने जो ते मूडीने कुफेलमां खरचे अने सारां सारां खावाना पदार्थ करावीने पोते खाय अने कोइक रांड राखीने तेने खवडावे अने तेने अर्थे घर, खोरडां, वस्त्र, घरेणां करे अने ते कुफेले करीने मूडी तेमां वावरी नाखे तो पछी जे रांड राखी होय ते पण तेनो त्याग करे अने तेने अन्न पण खावा मळे नहीं अने घणो दुःखने पामे.

तेम ए तो दृष्टांत, अने तेनुं सिद्धांत ए छे जे रांक वाणिया जीवो तो जीव छे अने शाहुकारने ठेकाणे भगवान छे. ते भगवाने जीव उपर कृपा करीने मनुष्य देहरूपी मूडी आपी छे अने एम आज्ञा करी छे जे 'ते देहनी आयुष्यरूपी मूडीमांथी अवश्य जेटलुं घटे तेटलुं देह निर्वाहने अर्थे वावरवुं कहेतां देह-निर्वाह थाय एटलो संसार वहेवारनो

जेम झाडने उपरथी कापी नाखे तो पाछुं मूळमांथी कोंटा फुटीने मोटुं झाड थाय. अने ज्यारे मूळमांथी खोदी नाखे अने मूळना खाडामां अग्नि भरीने बाळी मूके तो पाछुं फरीने झाड उगे नहीं. ए तो दृष्टांत अने एनुं सिद्धांत ए छे जे दुःखनुं झाड तो देह छे. अने वळी घोर नरक कहेवाय छे, ते पण देह ज घोर नरक छे. ते पण मणिरत्नमाळामां कह्युं छे जे—

को वास्ति घोरो नरकः स्वदेहः ।

एमां एम कह्युं छे जे 'पायखानादिक तो नरक कहेवाय अने तेमां जे जीव पड्यो होय ते नरकमां पड्यो कहेवाय. अने जे देह छे ते तो घोर नरक छे, अने तेमां जे जीव प्रीतिए करीने रह्यो छे ते तो घोर नरकमां पड्यो छे.' माटे घोर नरकमां, ते कोइ काळे सुख होय ज नहीं. अने वळी नरकनो ढगलो होय तेने कोइक मोटा माणसने कहीए जे 'ते नरकने गंधाय नहीं एवुं करो अने तेमां जीवडा पडवा देशो नहीं, एवी दया करो.' पण ते विष्टानो ढगलो कोइ काळे गंधातो आळसे नहीं अने जीवडा पण पड्या विना रहे नहीं. केमके ए वात बने ज नहीं, ए तो गंधाय ज. अने वळी जीवडा पण जरूर पडे ज. अने वळी एवुं नकारुं काम पण मोटा माणसने चिंधाय ? न ज चिंधाय.

तेम देह जे ते नरकनो ढगलो छे, अने तेमां अनंत रोगरूपी गंध उड्या करे छे, अने तेमां कोइ काळे सुख होय ज नहीं. अने ए देहथी नोखो जे आत्मा ते पोतानुं स्वरूप छे. ते आत्मा सुखरूप छे अने देह दुःखरूप छे, अने आत्मा अविनाशी छे अने देह नाशवंत छे, अने आत्मा चैतन्य छे अने देह जड छे अने आत्मा आनंदरूप छे अने देह क्लेशरूप छे. अने आत्मा तो देह थकी सर्वे प्रकारे असंगी छे पण जीवने

अज्ञानरूप भ्रांतिए करीने पोतानुं स्वरूप भूलीने 'देह हुं छुं' एम मनाई गयुं छे. अने आत्मा देहथी नोखो छे तो पण देहमां देखाय छे.

जेम कूवाने कांठे झाड होय ते कूवाना जळमां देखाय छे पण ते कूवामां झाड नथी अने झाड तो बहार कांठे छे अने तेनो पडछांयो कूवामां देखाय छे. तेम आत्मा देहथी अत्यंत विलक्षण छे अने आत्मा तो आकाशनी पेठे निर्लेप छे. जेम घडामां आकाश आव्यो छे ते घडाने फुटवे करीने आकाशनो नाश थतो नथी, तेम देहरूप घडामां आत्मा रह्यो छे तो पण देहने नाशे आत्मानो नाश थतो नथी. अने देहमां जीवने वासना छे तेने करीने महादुःखने पामे छे. माटे देह ज दुःखनुं मूळ छे अने तेमां पंचविषयनी वासनाए करीने बंधाई रह्यो छे तेने करीने दुःख भोगवे छे.

—अने देहना दुःखने टाळवाना उपाय करे छे ते तो जेम झाडवाना टाळखा कापे ते पाछां बमणां डाळखां पालवे अने जो मूळमांथी झाडने खोदी काढे त्यारे झाड पाछुं उगे नहीं. तेम देहना दुःखने टाळवानुं करे छे ते तो झाडनां डाळखां कापवा जेवुं छे. ते देहमांथी एक दुःख मटे तो बीजां वळी अनंत दुःख उत्पन्न थाय छे. अने ज्यारे देहमांथी वासना तोडीने निर्वासनिक थइने पोताना आत्माने ब्रह्मरूप मानीने परब्रह्म एवा जे प्रत्यक्ष ज्ञानदाता भगवान तेनी एकांतिक भक्ति करे त्यारे महा नीरोगी थाय अने पाछुं कोइ काळे दुःख आवे ज नहीं. माटे खरेखरा नीरोगी अने सुखिया थवानो तो ए उपाय छे जे सत्पुरुष प्रगट भगवान कां ते भगवानना मळेला एवा एकांतिक निर्वासनिक अने पंचविषयना त्यागी साधु तेनो दृढ आशरो करीने अधर्मनो त्याग करवो अने इन्द्रियो अंतःकरणने नियममां करवा अने शब्द, स्पर्श, रूप,

रस अने गंध तेनुं प्रमाण करवुं जे "कोटी युग थया जीव पंचविषयने भोगवे छे तो पण हजी रंचमात्र जीव धराणो छे ? नथी धराणो. माटे पंचविषयनुं सुख ते मिथ्या छे अने स्वप्नवत् छे, माटे स्वप्नने सुखडे कोइ धराय नहीं.' एम जाणीने पंचविषयनी वासना मूकी देवी.

—अने 'जे देह छे ते तो जीवे कोटानकोटी धर्या छे. अने ज्यां ज्यां देह धर्या छे त्यां त्यां कोटानकोटी सगां, संबंधी, मा-बाप कर्यां छे, ते सर्वे देह अने देहना संबंधी नाश पामी गया छे, तेम आ देह अने देहना संबंधी ते पण जरूर नाश थइ जशे. अने जे आत्मा छे ते कोइ काळे नाश थाय एवो नथी. अने ते आत्मा पोतानुं स्वरूप छे' एम जाणीने आत्मारूप थइने देह अने देहना संबंधीमांथी प्रीति टाळीने प्रत्यक्ष भगवाननुं भजन हालतां चालतां, खातां-पीतां, उठतां बेसतां, नातां-धोतां, अखंड कर्या करवुं. अने एवी रीते जे प्रत्यक्ष भगवाननुं भजन करे तेनां दुःखमात्र टळी जाय छे अने ते जीव भगवानना धामने पामे छे अने महा सुखियो थाय छे. माटे भगवान भजीने संतनो समागम करवो एज दुःख टाळवानो उपाय छे, पण ते विना बीजो उपाय नथी."

इति श्रीमुख सिद्धांत १५१ समाप्त ।

१५२ विषय :—जन्म-मरणरूपी महा रोग टाळवानी रीत,

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः—संवत् १९२१ ना मागसर सुद १५ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री पींपळी मध्ये भक्त विरजी खीमाने घेर फळीमां ढोलिया उपर गादी तकिया नखावीने विराजमान थया हता. सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पुष्पना हार धारण

ायाँ हता. अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणांक हरि-
भक्तनी सभा भराइने बेठी हती.

पछी महाराज कृपा करीने बोल्या जे 'पंचविषय छे ते हळाहळ
वेष छे अने पंचविषय भोगववे करीने जीवने जन्ममरणरूपी महारोग
थयो छे. ते रोग कोइ काळे टळतो नथी अने जीव महा पीडा पाम्या
करे छे. माटे ते रोग क्यारे टळे तो ए रोगने टाळे एवा तो एक परमा-
त्मा भगवान छे अने कां ते भगवानना एकांतिक संत छे. ते भगवान
अने संत जीवोनी उपर कृपा करीने मनुष्यदेहनुं धारण करे छे. अने
ते समे जे जे जीव ते भगवान अने संत तेनो आशरो करे छे ते ते
जीवनो रोग टळे छे.

—ते भगवान केवी रीते रोगने टाळे छे? तो पंचविषयरूपी रोग छे
तेने विषयरूपी औषधि आपीने टाळे छे. जेम वस्त्रमां मेलरूपी धूळ
भराई होय तेमां खारारूपी धूळ नाखीने जळमां धोवे तो वस्त्रमांथी मेळ
नीसरी जाय छे. तेम जीवने मायिक पंचविषयमां आसक्तिरूप रोग छे
तेने भगवान पोताना संबंधरूपी पंचविषय आपीने मायिक विषयनो
त्याग करावे छे. पछी भगवानना शब्द सांभळवा, भगवाननो स्पर्श करवो,
भगवाननुं रूप जोवुं, भगवाननी प्रसादीनो रस लेवो, भगवानने चड्या
जे चंदन-पुष्प तेनो गंध लेवो, मने करीने भगवानना शब्द सांभळ्या
तेनुं मनन करवुं, चित्ते करीने भगवाननी मूर्तिनुं चिंतवन करवुं, बुद्धिए
करीने भगवाननो निश्चय करवो अने अहंकार करीने 'हुं भगवाननो
दास छुं' एवुं अभिमान धरवुं. एवी रीते भगवान संबंधी विषयने भोगवे
छे तेने जगत संबंधी जे मायिक पंचविषय तेना मूळ उखडी जाय छे
अने जन्ममृत्युरूपी महारोग ते टळी जाय छे.

अने गर्भवासना महा दुःख भोगववां पडे छे. अने वळी एम समजवुं जे 'आ सर्वे खावुं, पीवुं, वस्त्र घरेणां तथा सगां संबंधीनो जे वहेवार छे ते तो देहनो छे. अने हुं तो आत्मा छुं ते तो देह थकी नोखो असंगी छुं अने ब्रह्मरूप छुं. अने हुं आव्यो त्यारे कांइ लाव्यो नथी अने जइश त्यारे कांइ भेगुं आवशे नहीं.' एम विचारीने लोभनी वासनानो त्याग करवो.

अने तेम ज स्वादरूपी वछनागने आज्ञारूपी औषधिमां मारीने भोगवावीने वासनारूपी रोगने सत्पुरुष टाळे छे. ते केवी रीते आज्ञारूपी औषधिमां वछनागरूपी स्वादने भोगवावे छे? तो 'जेने रसास्वादने विषे अत्यंत प्रीति होय तेने पोताना प्रारब्धे करीने प्राप्त थयो जे घी, गोळ, खांड, साकर, दूध, दहीं आदिक रस तेने जमवा पण अभक्ष वस्तु जे दारू, माटी, अफीण, गांजो, लीलागर, ताडी, माजम, तमाकु, होको इत्यादिक जे केफ तेनो त्याग करवो. अने घी, गोळ आदिक रसने भोगवता थका पण तेमां जे दोष छे तेने जोवा जे 'रसमां एक तो अनंत रोग रह्या छे. अने ते रसने भेगा करवा पडे तेमां पण अनंत क्लेश रह्या छे. अने तेमां प्रीति रहे तो विष्टामां कीडो थवुं पडे छे. अने रस जम्या पछी पण नरक थइ जाय छे. अने जिह्वा इन्द्रिय उपर घडिक रहे त्यां सुधी सारुं लागे छे अने गळा हेठुं उतर्या पछी तो कांइ सारुं–नरसुं जणातुं नथी. अने जीह्वा इन्द्रिय तो कोइ काळे तृप्त थाय एवी नथी. अने आत्मा छे ते तो इन्द्रियो, अंतःकरण थकी जुदो छे अने आत्माने खावुं, पीवुं जोइतुं नथी. अने खावुं, पीवुं तो प्राणवायुनो धर्म छे.' एम विचारीने रसनी जे वासना तेनो त्याग करवो.

अने तेम ज स्नेहरूपी सींगडीयो वछनाग प्राणने काढे एवो छे पण

तेने सत्पुरुष आज्ञारूपी औषधिमां मारीने स्नेहरूपी वछनागने भोगवावे छे तेने करीने देह अने देह-संबंधी पदार्थ तेमां स्नेहनी वासनारूपी रोग ते टळी जाय छे. ते केवी रीते नियम आपे छे? तो देहना सगां-संबंधी तथा देह-संबंधी पदार्थ तेमां जेने अतिशय वासना होय त्यां सुधी ते भेगुं रहेवुं पण तेनो नाश थाय तो शोक न करवो अने ते प्राप्त थाय तो तेनो हरख न करवो. अने एवी रीते हरख-शोकनो त्याग करीने एम विचार करवो जे 'हुं आत्मा छुं, ते आत्मानुं सगुं कोण छे?' एम तपासीने जोइए तो परमेश्वर विना आत्मानुं सगुं कोइ नथी; एक भगवान अने भगवानना संत आत्माना सगा छे. अने बीजां जे सगां-संबंधी छे ते तो सर्वे देहना सगां छे अने आत्माना साचा सगा तो भगवान अने भगवानना संत छे. माटे भगवान अने भगवानना संतने विषे दृढ प्रीति करवी. अने जो भगवान विना बीजे प्रीति थशे तो जन्म-मरणनां दुःख भोगववां पडशे. जेम भरतजीने मृगलामां स्नेह थयो तो मृगलुं थवुं पडयुं. ते वेदनी श्रुतिमां पण कह्युं छे जे 'या मतिः सा गतिर्भवेत्।' एमां एम कह्युं छे जे 'जीवने ज्यां प्रीति जे स्नेह रहे छे त्यां तेनो निवास थाय छे, कहेतां त्यां जन्म धरवो पडे छे.' एम समजीने भगवान अने भगवानना निर्वासनिक संत विना बीजे क्यांय प्रीति न राखवी. अने भगवान अने भगवानना एकांतिक पंचविषयना त्यागी अने निर्वासनिक साधु तेमां स्नेह करवो. अने एवी रीतनो विचार सत्पुरुष थकी समजीने दृढ करे तेने देह अने देह संबंधी पदार्थ तेमां स्नेहरूपी रोग ते टळी जाय छे अने जीव महासुखियो थाय छे.

अने तेवी ज रीते मानरूपी वछनाग पण प्राणने काढे एवो छे तेने वैदरूपी सत्पुरुष छे ते मारीने खवडावे तो मानरूपी रोगने टाळी नाखे छे. ते मानने केवी रीते मारे छे? तो एम विचार करवो जे 'आत्मा छे

--अने ज्यां सुधी जीवने पंचविषयनी वासना होय त्यां सुधी जीवने शांति थती नथी अने भगवाननुं सुख पण तेने आवे नहीं. अने ज्यां सुधी वासना होय त्यां सुधी तेने भगवाननुं स्वरूप पण ओळख्यामां यथार्थ आवतुं नथी. माटे जे दैवी अने मुमुक्षु जीव होय तेने तो अतिशय खटको राखीने प्रत्यक्ष परमेश्वर अने तेना संतनो आशरो करीने अधर्म अनीतिनो त्याग करीने भगवान भजवा अने देह छते ज पंचविषयनी वासना टाळी नाखवी. केम के मनुष्यदेहे करीने ज इन्द्रियो नियममां थाय छे अने भगवाननुं स्वरूप पण मनुष्यदेहेज ओळखाय छे अने जीवनो मोक्ष थाय छे, पण पशु, पक्षी, कुतरा, विलाडा तेना जन्ममां जीवनो मोक्ष थतो नथी. माटे मनुष्यजन्म ते अतिशय दुर्लभ छे. ते भागवतमां जनकराजाए कह्युं छे जे—

दुर्लभो मानुषो देहो देहिनां क्षण भंगुरः ।
तत्रापि दुलर्भं मन्ये वैकुंठप्रियदर्शनं ॥

—ए श्लोकमां एम कह्युं छे जे 'मनुष्यनो देह दुर्लभ छे, पण क्षणमात्रमां नाश थइ जाय एवो छे. तो पण ते मनुष्यदेहे करीने भगवान के भगवानना एकांतिक पंचविषयना त्यागी संत तेनुं दर्शन थाय ए अतिशय दुर्लभ छे. जे जेने करीने आत्मानुं कल्याण थाय.' माटे पोताने मनुष्यनो देह अने प्रत्यक्ष भगवान के भगवानना संतनो साक्षात्कार संबंध ते तो जेने अनंत जन्मना सुकृत होय तेनेज थाय छे. अने जगतमां पण कहेवत छे जे 'जे मळे टाणें ते न मळे खरचे नाणें.'

—माटे आज जेने मनुष्यदेह आव्यो छे तेने टाणुं आव्युं छे. अने वळी जेना सारु मोटा मुनि जप, तप, कर्या करे छे तो पण तेने स्वप्नमां जेना दर्शन थता नथी ते स्वरूपने तमे साक्षात्कार देखो छे, माटे तमारा

भाग्य कह्यामां आवे एम नथी. केमके जेने प्रत्यक्ष भगवाननो संबंध थाय छे तेनो महिमा तो मोटा ब्रह्मादिक गाय छे. ते पूर्वे व्रजनी गोपीयो भरवाडणो हती पण तेने प्रत्यक्ष भगवान श्रीकृष्णनो संबंध थयो हतो तो ते वेदनी श्रुतियो कहेवाणी अने ब्रह्मा पण तेना चरणनी रजने इच्छया. माटे प्रत्यक्ष भगवाननो संबंध घणो दुर्लभ छे.

—अने एवो जे लाभ ते मळ्या पछी नाशवंत सुखनी इच्छा राखवी घटे नहीं. अने पोतानुं अतिशय मोटुं भाग्य मानीने ते प्रत्यक्ष भगवान अने तेना साधु तेनो समागम करीने धर्म, ज्ञान, वैराग अने माहात्म्ये सहित भगवाननी भक्ति दृढ करीने ब्रह्मरूप थइने परमपद एवुं जे भगवाननुं अक्षरधाम तेने पामवुं अने महा सुखिया थवुं. माटे मनुष्य-देहे करीने भगवान भजवा एज एक सुख थवानो उपाय छे. अने ते विनाना जे जे उपाय जीव करे छे ते दुःखना उपाय छे, पण तेमां सुख नथी."

इति श्रीमुख सिद्धांत १५४ समाप्त ।



थाय नहीं, माटे संतनो संग करीने सूझे तो हमणां तत्काळ वासना टाळो ने सूझे तो गमे ते दिवसे टाळो पण वासना टाळशो त्यारे ज आत्यन्तिक कल्याण त्यागीनी बरोबर थशे पण ते विना थाय नहीं. अने आ वार्ता वाइओ हरिभक्त होय तेणे पण एवी रीते विषयमां दोष ने दुःख देखीने निर्वासनिक थवुं."

॥ इति श्री मुखसिद्धांत ३६ समाप्त ॥

३७ विषय :—जगतनी उत्पत्ति

श्री हरिकृष्णाय नमोनमः—संवत् १९१६ ना कारतकवद १२ ने दिवस महाराज श्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्री बोटाद मध्ये पटेल प्रेमजी कळथीयाने घेर उत्तरादे वार ओरडामां ढोलीया उपर विराजमान थया हता. सर्वे श्वेतवस्त्र धारण कर्यां हतां अने गुलाबी रंगनो फेंटो बांध्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा हरिभक्तोनी सभा भराईने बेठी हती.

प्रश्न :—पछी मोरारजी व्यासे प्रश्न पूछ्युं जे—"हे महाराज ! जीव छे ते ज्यारे भगवानना अवतार थाय छे त्यारे तेनुं भजन करीने निर्वासनिक थइने अक्षरधाममां जाय छे ते तो पाछा आवता नथी. ते केटलाक अवतार थइ गया तेमां घणाक जीव धाममां गया छे अने हजु केटलाक भगवानना अवतार थशे त्यारे पण तेनुं भजन करीने भगवानना धामने पामशे. एवी रीते जीव ओछा थता जणाय छे. अने जीव नवा थता नथी. अने अनादिना छे अने अविनाशी छे अने अजन्म्या छे. ते एवी रीते ओछा थता थता ते जीव संसारमांथी खूटी रहेशे के नहीं खूटी रहे ? ते कहो"

पछी महाराज बोल्या जे "लो एनो उत्तर करीए. जे भगवान छे तेनी जड अने चैतन्य बे शक्तिओ छे ते बे शक्तिओ वडे करीने जगत नी उत्पत्ति स्थिति अने प्रलय करे छे. अने तेमां चैतन्यशक्ति जे जीव-शक्ति तेने विषे जडशक्ति जे माया ते कारणपणे रही छे अने मायाने विषे जीव अनादिना रह्या छे. ते अनंत रह्या छे. जेम पृथ्वीमां बीज रह्युं छे तेम कारण मायाने विषे सुषुप्ति अवस्थामां शून्यभावे अनादिना जीव रह्या छे. ते तो उत्पत्तिमां आव्या ज नथी. अने आत्यंतिक प्रलय मां अनादिना छे; पण उदय थया ज नथी, कहेतां सृष्टिमां आव्या ज नथी. अने ए तो सदाय मायामांने मायामां छे. अने ज्यारे भगवानने उत्पत्ति करवानी इच्छा थाय त्यारे अक्षर सामी दृष्टि करे छे कहेतां प्रत्यक्ष मनुष्यस्वरूप एवा जे भगवान ते जे ते मनुष्य देहने धारण करी रह्यो एवो जे पोतानो एकांतिक भक्त, अक्षररूप, तेने आत्यंतिक ज्ञान आपे छे. पछी ते अक्षरमुक्त जे ते मूळपुरुषने जगाडे छे. कहेतां वासनावाळा जीव छे तेने ज्ञान आपीने तेने अनादिनुं जे अज्ञान ते थकी जगाडे छे. पछी ते पुरुषने विषे अनादिनी जे कारण माया रही छे ते जाग्रत थाय छे. ते मायाने विषे अनंत जीव रह्या छे ते सर्वे पुरुषने संबंधे करीने उत्पन्न थाय छे. कहेतां अनादि काळना सुषुप्तिरूप कारण मायाने विषे जीव हता तेने जाग्रत कर्या कहेतां इन्द्रियो अंतःकरण सर्जी आप्यां. ते शा सारु सर्जी आप्यां ? तो धर्म, अर्थ, काम अने मोक्षने अर्थे सर्जी आपे छे. हवे ते प्रकृतिपुरुष थकी अनंत कोटि प्रधान पुरुष थाय छे कहेतां पुरुषरूप एवो जे वासनिक भगवाननो भक्त तेनो जेने संबंध थाय छे ते सर्वे जीव जाग्रतने पामे छे कहेतां अज्ञानरूपी तमः जे अंधकाररूप माया थकी जागीने भगवानने भजे छे. अने ते प्रधानपुरुष रूप जे भगवानना भक्त तेने विषे जे कारण माया छे ते मायामां

अनंतकोटी जीव रह्या छे. ते सर्वे जाग्रतिने पामे छे. एवी रीते एक जीव भगवान सन्मुख थाय तो तेने जे वासनारूप कारण माया तेमां जे अनंतकोटि जीव रह्या छे ते उत्पन्न थाय छे. माटे जीव तो छे एट-लाने एटला ज छे पण जे जीव मुक्त थाय छे तो तेनी वासना पण मुक्त थाय छे, त्यारे ते वासनारूप जे कारण माया तेने विषे जे अनंतकोटि जीव रह्या होय ते सर्वे उत्पन्न थाय छे.

जेम वडनुं बीज होय तेने पृथ्वी अने जळनो संबंध थाय त्यारे एक बीज थकी तेना फोतरांरूप जे कारण माया तेमांथी वृक्ष थइने अनंत नवां बीज थाय छे अने ते बीज मुक्त थाय छे कहेतां ते बीज फरीने उगतुं नथी. तेम एक जीव मुक्त थाय छे त्यारे तेनी कारण मायामांथी अनंत जीव रह्या हता ते उदय थाय छे माटे अनंतकोटि मुक्त थइ गया अने अनंतकोटि भगवानने भजीने मुक्त थशे पण जीव कोइ दिवस खुटी रहे एम नथी. अने एम ओछा थता होय तो आज खुटी पण रह्या होत, माटे अनंत मुक्त थशे पण जीव कोइ दहाडे खुटी रहे एम नथी. ए तमारा प्रश्ननो उत्तर छे."

प्रश्न :–पछी अक्षर मुक्तानंद स्वामीए प्रश्न पूछ्युं जे–" हे महाराज तमे प्रथम जे उत्पत्ति कही तेने सारी पेठे समजाणी नहीं, ते फरीने कहो."

उत्तर :–पछी महाराज बोल्या जे " प्रत्यक्ष प्रमाण एवा जे मनुष्या-कृति भगवान तेज सर्वना कारण छे अने सर्वना आधार छे अने सर्वेना स्वामी छे अने ते भगवाननो जेने इन्द्रियो अंतःकरण अने अनुभवे करीने साक्षात्कार संबंध थाय छे ते जीव अक्षरब्रह्मरूप मुक्त थाय छे अने एवो जे अक्षर मुक्त ते अखंड भगवाननी सेवामां रहे छे. अने भग-वान पण तेना उरमां अखंड निवास करीने रहे छे एवो जे अक्षरमुक्त ते भगवाननी इच्छा ने जाणे छे.

–ते भगवाननी शी इच्छा छे? तो सर्वे जीवोनो मोक्ष करवो एम इच्छा छे. एम जाणीने पुरुषरूप जे वासनावाळा जीव तेने अज्ञान थकी जगाडे छे ने ज्ञान आपे छे. पछी ते पुरुषरूप जे भक्त ते पोतानी वासनारूप जे मूळप्रकृति ते वडे करीने ते अक्षरमुक्त रूपसाधु तेनी सेवा करे छे. ते सेवाए करीने वासनारूप मायाने विषे अनंतकोटि जीव रह्या छे ते सर्वे उत्पन्न थाय छे. अने ते मूळ माया थकी उत्पन्न थया एवा जे अनंत कोटि जीव तेनुं नाम प्रधानपुरुष कहेवाय छे. एवी रीते उत्पत्ति थाय छे. ने जेने प्रत्यक्ष भगवाननो साक्षात्कार संबंध थाय कहेतां आत्यंतिक ज्ञानने पामे ते सर्वे अक्षरधाममां जाय छे. अने ते अक्षरने पाम्यो एवो जे मुक्त तेनी वासनारूप जे माया ते नाश पामी त्यारे तेने विषे हता जे अनंत कोटि जीव ते सर्वे प्रकृति पुरुषना लोकने पामे छे ने ते मुक्त आ लोकमां होय त्यां सुधी जे जे जीवने संबंध थाय तथा अन्नादिक देहरक्षण सारु जमे तथा नदी तळावमां न्हाय ने ते जळमां माछलां आदिक जीव होय तथा ते जळने जे जे पशु, पक्षी, मनुष्य आदिक पीए, एवी रीते जे जे जीवने संबंध थाय ते सर्वे जीव मोक्षने मार्गे चाले छे. एवी रीते प्रत्यक्ष भगवानना संबंधमां जे जे जीव आवी जाय ते सर्वे मुमुक्षु थाय छे अने पुरुषरूप जे वासनावाळा भगवानना भक्त छे तेना संबंधमां जे जे जीव आवे छे ते सर्वे प्रधानपुरुषना लोकने पामे छे. एवी रीते जगतनी उत्पत्ति थाय छे.

अने प्रत्यक्ष भगवान ने भगवानना एकान्तिक अक्षररुप साधु तेना संबंधमां जे जे जीव आवे छे ते सर्वे जीव मोक्षने मार्गे चाले छे. तेमां मनुष्य छे अने तेने भगवानना निर्वासनिक संतनो संबंध थाय अने ते मनकर्म वचने करीने भगवान अने भगवानना संतनी सेवा करे तो ते ज्ञानने पामीने वासना टाळीने अक्षरधामने पामे छे. अने पशु जे घोडा,

वळद, हाथी ते भगवान अने भगवानना संतनी सेवामां आवे तथा गाय भेंसनुं दुध जमाय तथा नदी तळावमां न्हाय अने तेमां जे जीव होय तथा ते जळने जे जे पीए ते सर्वे बीजे जन्मे मनुष्यनो अवतार धरीने भगवान भजीने मोक्षने पामे छे. अने जे प्रत्यक्ष भगवानना सकाम भक्त छे ने तेना संबंधमां जेजे जीव आवे छे अने ते भक्तनो जेवो जेवो संकल्प ते ते लोकमां कर्ममार्गे जीव चाले छे अने ते भक्तने देवलोकनी वासना होय तो पोते इन्द्र थाय छे. ने पोतानी जे कारण माया तेने विषे अनंत जीव रह्या छे ते सर्वे उत्पन्न थइने देवलोक वधुं भराइ जाय छे. अने जेने ब्रह्माना लोकनी वासना होय ते तेवी रीते ब्रह्मा थइने ब्रह्मलोक वसावे छे. अने जेने वैराटना लोकनी वासना होय ते वैराटनो लोक वसावे छे. अने प्रधान पुरुषना लोकनी वासना होय ते प्रधानपुरुष पोते थइने ते लोक वसावे छे अने जेने प्रकृति पुरुषनालोकनी वासना होय ते प्रकृतिपुरुषनो लोक वसावे छे. अने ए सर्वे सौ सौनी आवरदा खूटे त्यारे पाछा प्रलयमां जाय छे.

तेमां नित्यप्रलयमां देव, दैत्य, मनुष्यना देहनो जे क्षण क्षण प्रत्ये नाश थाय तथा सुषुप्तिमां जाय ते पण नित्यप्रलय छे. ने निमित्त प्रलयमां ब्रह्मानी रात्रि पडे छे त्यारे अगीयार लोकनो नाश थाय छे. ने प्राकृत प्रलयमां वैराट नाश पामी अने प्रकृतिनुं कार्य प्रकृतिने विषे लय पामे छे. अने आत्यंतिक प्रलय जे ज्ञानप्रलय थाय छे त्यारे प्रकृतिपुरुषनो लोक नाश पामे छे अने ते पुरुष अक्षरने पामे छे कहेता प्रत्यक्ष भगवानने मळीने जे जीव ते भगवान थकी ज्ञानने पामीने मूळ प्रकृति रुप जे वासना तेने टाळी तेनो आत्यंतिक प्रलय थयो अने ते भक्त अक्षरधामने पामे छे अने तेनी मायामां हता जे जीव ते सर्वे मुमुक्षु थाय छे. अने

ते जीव एक, बे, त्रण, चार, जन्मे पण प्रत्यक्ष भगवानने मळीने ज्ञानने पामीने अक्षरधामने पामे छे.

—माटे एक भक्त निर्वासनिक थइने अक्षरधामने पामे छे तो तेनी वांसे अनंतकोटि जीव निर्वासनिक थइने अक्षरधामने पामे छे. माटे भगवाननो संकल्प जे "घणाक जीवोनो उद्धार करवो" ते ए भक्त थकी घणाकं जीवनो उद्धार थयो. ते सारु निर्वासनिक भक्त उपर भगवान घणा घणा प्रसन्न थाय छे. अने एवा निर्वासनिक भक्त तो भगवानने पण प्राण जेवा वहाला छे. अने पूर्वे कह्या जे सकाम भक्त ते तो पोते त्रण प्रकारना प्रलयमां कोटि कोटि फेरा उपजे छे अने कोटि कोटि फेरा नाश पामे छे अने महाक्लेशने पामे छे. अने पोतपोतानी मायामांथी उत्पन्न थया जे जीव ते पण तेने संबंधे करीने सर्वे विषयी थाय छे अने ते भेगा सर्वे जीव उत्पत्ति, स्थिति, अने प्रलयमां कोटि कोटि फेरा आवे छे अने महाकष्टने पामे छे. माटे एक भक्त प्रगट भगवानना संबंधने पामीने सकाम रह्यो तथा वासना न टळी तो तेनी वासनारूप जे मूळ माया ते थकी अनंतकोटि ब्रह्मांड उपज्यां ते सर्वे जीव विषयी थइ गया. ते वारंवार उत्पत्ति, स्थिति अने प्रलयमां आव्या करे छे माटे एक भक्त सकामी थयो तो अनंतकोटि जीवोने सकामी कर्या तेने करीने भगवान तेना उपर अत्यंत कुराजी थाय छे. केम के भगवानने प्रगट थवानुं कारण शुं छे ? तो जीवोने निर्वासनिक करीने अक्षरधाममां लइ जवा ते सारु भगवान प्रगट थाय छे. ते तो ते भक्ते उलटा अनंत जीवोने सकामी करीने भगवानथी छेटुं पाड्युं ते सारु भगवान तेना उपर अत्यंत कुराजी थइने मूळ प्रकृतिपुरुष करे छे ते कोटि-कोटि युग वही जाय तो पण त्यांथी छुटको थाय नहीं. ते सारु प्रत्यक्ष भगवानने पामीने ते थकी ज्ञान

सिद्ध करीने वासना टाळीने अने ब्रह्मरूप थइ अने अखंड भगवाननी सेवामां रहेवुं अने आ जे वार्ता ते अवश्य जरूर समजवानी छे. अने ए वार्ता अमारा अंतरनो गलित अर्थ छे. ते आज तमने कह्यो छे तेने सत्संगमां प्रवर्तावजो."

॥ इति श्री मुखसिद्धांत ३७ समाप्त ॥

३८ विषयः—कामरू देश विषे

श्री हरिकृष्णाय नमोनमः—संवत १९१६ ना कारतक वद १२ ने दिवस महाराज श्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्री बोटादमध्ये पटेल प्रेमजी कळथीयाने घेर उत्तरादे वार ओरडानी ओसरीमां ढोलीया उपर विराजमान थया हता. श्वेत सुरवाल अने अंगरखुं पहेर्यां हतां, गुढो रेंटो अने सोनेरी पाघ धारण करी हती. एक कसुंबल शेलु केडे अने एक खभे धारण कर्युं हतुं. सर्व अंगने विषे पुष्पनां आभूषणो धारण कर्यां हतां. कंकुनो चांदलो कर्यो हतो, अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देशदेशना हरिभक्तोनी सभा भराइने बेठी हती.

प्रश्नः—पछी महाराज बोल्या जे "आज तो कामरु देशनी वात कहेवी छे जे कामरू देशमां एम कहे छे जे ते देशमां स्त्रीओनुं राज्य छे ते पुरुषने दिवसे बळद करे छे अने रात्री पडे छे त्यारे धणी करे छे. ते कामरू देश ते क्यो ?"

तो काम रुपी कामरू देश छे, ते काम स्त्रीने विषे छे, अने कामने वश एवा जे कामी पुरुष ते कामने वश थयो थको स्त्रीने आधिन थइने दिवसे बळदनी पेठे ते स्त्री सारु रात दिवस कमाया करे छे, अने रात्रीने विषे स्त्री छे ते पण कामने वश थइने पुरुषने धणी करे छे, अने बळदने तो कोइक जुदो हांकनारो खेडुत जोइए छीए, ते तेने रासोदो करीने,

धोंसरामां जोडीने, जोतर वाळीने, परोणो लइने हांके छे त्यारे चाले छे; ते पण पहोर बे पहोरनुं निमित्त होय त्यां सुधी हांकीने छोडी मुके छे, अने कामने वश एवा जे कामी पुरुष ते तो कामनाए करीने स्त्रीने आधीन थइने वगर परोणे अने वगर रासे अने वगर हांके एनी मेळे रातने दिवस वह्या करे छे, ते राजा, रंक, शेठ, शाहुकार, पंडित, पुराणी, तथा भारे भारे बुद्धिवाळा तथा योगी, यति, तपस्वी, सन्यासी, आदिक सर्वे विषयनी वासना रूपी कामनाए करीने जे जे स्त्रीने आधिन थया छे ते सर्वे कामरू देशमां छे, तथा देवलोकमां तथा ब्रह्माना लोकमां तथा वैराटना लोकमां तथा प्रधानपुरुषना लोकमां तथा मूळ प्रकृति पुरुषना लोक सुधी सर्वे कामरू देशमां छे, अने ए कह्या जे लोक अने ते ते लोकमां पुरुषने स्त्रीनी कामना छे तो ते कामरू देशमां ज छे, अने स्त्रीने ज्यां सुधी पुरुषनी कामना छे त्यांसुधी ते स्त्री कामरू देशमां छे अने स्त्रीओ कामवश थइने पुरुषनी दासीओ थइ छे अने पुरुष कामने वश थइने स्त्रीओना दास थया छे, माटे कामनाए करीने स्त्रीने वश पुरुष अने पुरुषने वश स्त्री तेज कामरू देशमां छे, पण ते विना बीजो कामरू देश नथी, अने स्त्री अने पुरुष एवो जे आकार बंधाणो छे, ते पण कामनाए करीने बंधाणो छे अने जे आत्मा छे ते तो स्त्रीए नथी अने पुरुष नथी, अने कामना रूपी जे महामाया तेथी पर एवुं जे अक्षरब्रह्म त्यां कामरू देश नथी, अने त्यां स्त्री पुरुष एवो आकार पण नथी, अने अक्षरधामने विषे तो ब्रह्ममय तनुवाळा अनंत कोटि मुक्त रह्या छे, अने ए सर्वेना आधार अने सर्वेना स्वामी अने उपासना करवा योग्य एवा जे परमात्मा पुरुषोत्तम भगवान तेने सुखे करीने सर्वे मुक्त महासुखीया छे, अने ते सुख अविनाशी छे, अने अखंड छे, अने ते सुख माया पर छे, अने एवा जे परमात्मा तेज कृपा करीने मनुष्याकृतिनुं धारण करीने पृथ्वी

उपर पधारे छे त्यारे ते भगवान जे ते स्त्री पुरुषने मळे अने तेने सुखे करीने सर्व मुक्त महा सुखीया छे, अने ते सुख अविनाशी छे, अने अखंड छे अने ते सुख माया पर छे. एवा जे परमात्मा तेज कृपा करीने मनुष्याकृतिनुं धारण करीने पृथ्वी उपर पधारे छे त्यारे ते भगवान जे ते स्त्री पुरुषने मळे अने तेने ज्ञाने करीने भगवान पोताना स्वरूपनो निश्चय करावे छे त्यारे तेनीज कामरू देश रूपी वासना टळे छे अने तेज कामरू देशनो त्याग करे छे, अने ते भक्त अक्षर ब्रह्मरूप महामुक्त थाय छे, माटे पूर्वे कह्या जे देव ब्रह्मा अने प्रकृतिपुरुष सुधी सर्वने प्रत्यक्ष भगवाननो साक्षात्कार संबंध थशे अने ते भगवानना स्वरूपनो ज्ञाने करीने निश्चय थशे त्यारे ते सर्वेनी कामनारूपी वासना टळशे. ते कामरू देशनो त्याग करे छे तथा ते प्रत्यक्ष भगवान थकी ज्ञानने पामीने सिद्धदशाने पाम्या एवा जे भगवानना एकान्तिक साधु ते पण जेने ज्ञान आपीने भगवानना स्वरूपनो निश्चय करावे छे तो तेनी कामना रूपी वासना टळे छे, अने ते कामरू देशनो त्याग करे छे, अने ब्रह्म रूप थइने अक्षरधामने पामे छे, माटे कामने वश थइने पुरुष स्त्रीने वश अने स्त्री पुरुषने वश, तेज कामरू देश छे, अने कामरूपी वासना जेनी टळे ते कामरू देशमां नथी, पण एम कोइ कहेजे क्यांक बीजा मुलकमां कामरू देश छे ते वात खोटी छे, अने कोइ एम कहे जे "हुं जोइ आव्यो छुं" एम कहेनारो दंभी छे अने धुत्तो छे. पण बीजे क्यांय कामरू देश नथी, अने कोइक मोटे पुरुषे कामरू देश कह्यो हशे ते पण "आ अमे कह्यो जे कामरूपी कामरू देश तेज कह्यो छे." पण बीजे क्यांय कामरू देश नथी. माटे ते महत्पुरुषनो आश्रय करीने ज्ञान पामीने कामरूपी वासना टाळे तेज कामरू देशने तजे छे, अने जे कामने वश छे ते कामरू देशमां छे अने ते जन्म मरणना दुःखने पामे छे.

माटे आज कामरू देशनो त्याग करवानो समो आव्यो छे ते साव-धान थइने प्रत्यक्ष अमारो दृढ आशरो करीने, धर्ममां रहीने, देहथी जुदो पोताना आत्माने मानीने, प्रकृतिनुं कार्य सर्वेने नाशवंत जाणीने, पंच-विषयनी वासनारूपी कामरू देशनो त्याग करीने, भगवान भजीने अक्षरधामने पामवुं."

इति श्रीमुख सिद्धांत ३८ समाप्त।

३९ विषयः—जीवने सारुं शुं छे अने ते केम थाय ?

श्री हरिकृष्णाय नमोनमः—संवत १९१६ ना कारतक वद १४ ने दिवस महाराज श्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्री बोटाद मध्ये पटेल वाइ सोनबाने घेर जमवा पधार्या हता अने उगमणे बार ओरडानी ओसरीमां सांजने समे ढोलीया उपर विराजमान थया हता. सर्वे सोनेरी वस्त्र धारण कर्यां हतां, अने पुष्पना आभूषणो सर्वे अंगमां शोभी रह्यां हतां. पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा हरिभक्तनी सभा भराइने बेठी हती, पछी महाराजनी आरती धुन्य करीने सर्वे सभा बेठी.

प्रश्नः—पछी हरखचंद अने मोती, बे भाइ बोल्या जे—"हे महाराज जीवनुं अतिशय सारुं केम थाय" ते कृपा करीने कहो ?

पछी महाराज बोल्या जे "जीवने सारुं ते शुं छे? तो सुख थाय ते सारु छे अने दुःख थाय ते भूंडुं छे, माटे दुःख शुं छे ? तो जीव पंच विषयनी वासनाए करीने जन्म मृत्युने पामे छे तेज महा दुःख छे. जेम कोइक मनुष्यने आ लोकमां लाखो रुपीयानुं करज थइ गयुं होय अने ते जेम करजमां बंधाइ जाय ने ते महादुःखने पामे छे अने तेने लाख रुपीयानुं करज छे अने सो रुपीयानुं घरमां खरच छे अने पचास

रुपीयानो कमाउ छे ते कोइ दिवस करज वहार थाय ज नहीं, माटे एने करज वहार थवानो एक उपाय छे ते जे करजनो मागनारो जे शाहुकार छे ते जो कोइक रीते राजी थइने ते एम कहे जे "तुं अमारा भेगो रहे अने अमारुं कामकाज कहीए ते प्रमाणे कर. तारे माथे करज छे ते वाळी नाखीशुं अने अन्न वस्त्र पण आपीशुं." माटे पछी एवी रीते नकरजो थइने सुखीयो थाय, पण ते विना सुखीयो थाय नहीं.

ते दृष्टांतनुं सिद्धांत ए छे जे जीवे अज्ञाने करीने विषयनी वासना वडे अनंत पाप कर्यां छे ते पापरूपी जे करज तेमां जीव गुंचाणो छे अने ते पापे करीने जीवनी बुद्धि अतिशय मलीन थइ गइ छे तेने करीने ते सुकृत करवाने समर्थ थतो नथी, अने उलटो जीव दिवसे दिवसे पापकर्म करीने वधारे वधारे वंधातो जाय छे, अने तेने करीने जन्ममृत्युरूप महाकष्टने पामे छे, ते कष्टरूपी करज थकी पोतानी मेळे कोइ जीव मुकावाने समर्थ नथी, ते तो सर्वे कारण एवा जे कर्तुम-कर्तुमन्यथा कर्तुम् समर्थ जे हरि ते जीवनी उपर कृपा करीने तेना पाप रूपी कर्मने ज्ञाने करीने वाळे त्यारे ज ते जीव वासनारूपी महाकरज थकी मुकाय छे अने जीवनुं अतिशय सारुं थाय छे अने महा सुखीयो थाय छे.

माटे पंच विषयनी वासना टळे तेज जीवनुं अतिशय सारुं छे, अने विषयनी वासना छे एज जीवनुं अतिशय भूंडुं छे, ते केवी रीते वासना थकी जीवने मुकावे छे? तो पोताने शरणे आव्यो जे जीव तेनी अधर्मे करीने इन्द्रियो भ्रष्ट थइ गइ छे. तेने ज्ञानदाता छे ते नियमे करीने धर्ममां रखावे छे. तेने करीने इन्द्रियोनां पाप वळे छे, अने अज्ञाने करीने आत्माना स्वरूपने भूलीने देहने विषे "अहम् बुद्धि" अने देह संबंधी पदार्थने विषे "ममत्व बुद्धि" तथा देहना सगा संबंधीमां अज्ञाने

करीने जीव एक रस थइ गयो छे तेने सांख्यशास्त्रने ज्ञाने करीने आत्माने विषे स्थिति करावे छे, अने देहादिक सर्वेथी जीवने जुदो पाडे छे, तेने करीने अंतःकरणनां पाप बळे छे, अने जीवने अनादिनी कारण वासना छे तेने भगवाननो अलौकिक महिमा तथा भगवानना धामनुं जे अलौकिक सुख तेनुं ज्ञान करावीने पछी भगवानना स्वरूपनो इन्द्रियो, अंतःकरण, अनुभव अने साक्षात्कार प्रत्यक्ष ज्ञान करावीने कारण वासना टळावे छे तेने करीने जीवनां सर्वे पाप बळी जाय छे, अने एवो जे निर्वासनिक भक्त थयो ते भगवानना स्वरूपमां महात्मज्ञाने सहित जोडाय छे, अने ते भक्त ब्रह्मरूप थइने भगवानना साधर्मपणाने पामे छे अने अपार सुखीयो थाय छे. माटे भगवान भजीने वासना टाळीने भगवानना एकांतिक भक्त थवुं एज जीवनुं अतिशय सारुं छे."

इति श्रीमुख सिद्धांत ३९ समाप्त ।

४० विषय :—मुक्तनां लक्षण अने शुद्ध विचारनी उत्पत्ति

श्री हरिकृष्णाय नमोनमः—संवत् १९१६ ना कारतक वद ३० ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्णभगवान गाम श्री बोटाद मध्ये पटेल स्त्री वा पुतळीने घेर उत्तरादे द्वार ओरडानी ओसरीमां ढोलिया उपर विराजमान थया हता. श्वेत सुरवाल अने अंगरखुं धारण कर्यां हतां. गुढो रेंटो पहेरीने उपर कसुंबल शेलुं बांध्युं हतुं अने एक खभे नाख्युं हतुं. सोनेरी पाघ बांधी हती अने तेमां फुलना तोरा लटकता हता. कंकुनो चांदलो कर्यो हतो अने कंठमां घणाक पुष्पना हार धारण कर्या हता. बे कान उपर पुष्पना गुच्छ धारण कर्या हता अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तोनी सभा भराइने बेठी हती.

प्रश्न :-पछी झाला जसाभाईए प्रश्न पूछ्युं जे-" हे महाराज ! भगवान प्रगट थाय त्यारे ते भेगा मुक्त पण केटलाक जन्म धरता हशे ते शा लक्षणे करीने ओळखवा-'जे आ मुक्त छे'? ते कहो "

पछी महाराज बोल्या जे-" जे मुक्ते देह धर्यो होय तेने यथार्थ तो भगवान एक जाणे छे पण बीजो यथार्थ न जाणे अने ते मुक्तने पण खबर न पडे जे " हुं मुक्त छुं." केम के भगवाने एनुं ऐश्वर्य छुपावी राख्युं छे. माटे जे दैवी अने मुमुक्षु जीव होय ते उपला आचरणे करीने ओळखाय छे. ते उपला केवा लक्षण होय ? तो जे मुक्त होय ते संसारमां उदास रहेतो होय, देह अने देहना संबंधीमां बहु हेत न होय अने पंचविषयमां पण लोलुप न होय अने भगवाननी कथा वार्ता सांभळवामां तेने हेत होय अने देवमंदिरे दर्शने जवुं तथा साधुनी परीक्षा करीने धर्मवाळा होय तेनो समागम करीने ज्ञान पामवानो आशक होय अने तीर्थ व्रतादिक कर्यामां श्रद्धा होय अने सर्व इन्द्रियो तेने नियममां होय अने मनुष्याकृति एवा जे राम कृष्णादिक भगवानना अवतार तेने विषे तेने आतिशय आस्था होय अने पूर्वे रामकृष्णादिक प्रगट भगवानने पाम्या जे भक्त तेनो पण महिमा बहु समजे अने पोताने प्रगट भगवान मेळववानी आतिशय मनमां आतुरता होय अने ते भगवान प्रगट थया एवुं काने संभळाय तो तत्काळ संसारनो त्याग करीने प्रत्यक्ष भगवान पासे जाय. अने तेने विषे हेते करीने आतिशय चोंटी जाय पण कोइ मतपंथनो रोक्यो रोकाय नहीं तथा मा-बापनो रोक्यो रोकाय नहीं, एवां जेनां लक्षण होय तेने एम जाणवो जे आ पूर्वनो मुक्त छे ते " आ धर्मानंद स्वामी तथा अक्षरमुक्तानंद स्वामीने विषे एवा मुक्तना गुण सर्वे छे. माटे ए बे साधु पूर्वना मुक्त छे अने ए बे साधुने विषे कोइ काळे माया प्रवेश करी शके एम नथी. माटे

ए वे साधुने विपे जेने प्रीति थशे ते जीव मायाथी मुकाइ ने महामुक्त थइने मारा अविनाशी धामने पामशे."

एम उत्तर करीने पछी वळी महाराज बोल्या जे "चिदाकाश छे तेने विपे पुरुष रह्यो छे, ते पुरुषना संकल्पे करीने अनंत ब्रह्मांडनी उत्पत्ति थाय छे. जेम आकाशने विपे वायु रह्यो छे ते एक एवो वायु वाय ते आकाशमां अनंत वादळ उपजे छे अने वळी एक एवो वायु वाय ते सर्वे वादळ नाश थइ जाय. अने ज्यारे वादळ थाय छे त्यारे आकाश भराइ जाय छे अने सूर्य पण ढंकाइ जाय छे. अने सूर्यनो प्रकाश तो घणो छे तो पण वादळां वडे करीने देखातो नथी. तेम सूर्यने ठेकाणे जीवात्मा छे, अने वासनारूपी वायु छे, ते वासनारूपी वायुए करीने वादळांरूपी देह उत्पन्न थाय छे. ते देह देखाय छे पण आत्मा नथी देखातो. अने ज्यारे शुद्ध विचार जे ज्ञान ते रूपी वायु वाय तो वादळां रूपी जे देह तेनो अहंकार टळी जाय छे त्यारे सूर्यरूप जे आत्मा ते साक्षात्कार देखाय छे. अने ते आत्मा ब्रह्मरूप थाय छे. अने परब्रह्म जे भगवान ते साक्षात्कार देखाय छे. अने ते भगवानना स्वरूपमां हेते करीने जोडाइ जाय छे.

माटे शुद्ध विचाररूपी वायुए करीने वादळारूपी वासना थकी उपन्यो जे देह तेनो अहंकार टळी जाय छे. ते शुद्ध विचाररूपी वायु तो माया पर जे चिदाकाश कहेतां अक्षरब्रह्म तेमां रह्यो छे. जेम वायु आकाशमां रह्यो छे, तेम शुद्ध विचार अक्षरथकी आवे छे पण ते विना शुद्ध विचार आवे नहीं अने अक्षर छे ते तो भगवान पुरुषोत्तमना अंगनो प्रकाश छे कहेतां प्रत्यक्ष भगवाननो जे प्रकाश जे आत्यंतिक ज्ञान ते जेना आत्मामां साक्षात्कार थयुं एवा जे संत तेने विपे शुद्ध विचार

रह्यो छे अने ते संतने अने भगवानने अखंड संबंध छे. माटे भगवान पासेज शुद्ध विचार छे. ते भगवान ज्यारे कृपा करीने अनंत कोटि जीवोनो उद्धार करवा सारु पोताना संत सहित मनुष्याकृतिनुं धारण करे छे त्यारे भगवान अने भगवानना संतने शरणे जे जीव आवे छे तेने शुद्ध विचार आपीने अधर्म थकी मुकावीने त्रण देह अने त्रण अवस्था अने त्रण गुण अने ते गुण थकी थयां जे चोविस तत्व ते सर्वे वादळांरुपी माया छे. अने ते सांख्य विचाररूपी वायुए करीने नाश करावीने सूर्यरूपी जे आत्मा तेने शुद्ध करीने पोताना स्वरूपनो उत्तम निर्विकल्प निश्चय करावे छे त्यारे ते जीव मायाने तरीने ब्रह्मरूप थइने अक्षरधामने पामे छे. माटे कुविचार अने दुराचरण तेनो त्याग करीने सदाचरण अने शुद्ध विचार राखीने भगवान भजवा ए ज जीवनी अति हित वार्ता छे."

इति श्रीमुख सिद्धांत ४० समाप्त ।



४१ विषय :—भगवानना धाममां जवानो उपाय

श्री हरिकृष्णाय नमो नमः--संवत् १९१८ना मागशरसुद १ ने दिवस महाराज श्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्री बोटादमध्ये भक्त खेताजीनी स्त्री जामबाने घेर जमवा पधार्या हता अने त्यां उगमणे बार ओरडानी ओसरीमां ढोलिया उपर विराजमान थया हता. सर्वे जरीयानी वस्त्रो धारण कर्यां हतां. अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देश देशना हरिभक्तोनी सभा भराइने बेठी हती. पछी भक्त खेतोजी भाथी महाराजने पगे लागीने एक जाइना पुष्पनो गुच्छ करेणनी कांबमां गुंथेलो ते महाराजना हस्तकमळमां आपीने सभामां बेठा.

प्रश्नः—पछी तेणे हाथ जोडीने प्रश्न पूछ्युं जे "हे महाराज! शास्त्रमां

एम कहे छे जे " भगवानना धाममां अहींथी पाधरूं नथी जवातुं पण प्रथम देवलोकमां जवुं पडे छे. पछी वैराटना लोकमां जवाय छे, अने पछी प्रधानपुरुपना लोकमां जवुं पडे छे अने पछी प्रकृति पुरुपना लोकमां जवाय छे अने पछी अक्षरधाममां जवाय छे. माटे तमे अक्षर-धामना अधिपति मळ्या छो अने त्यां जवुं पडे त्यारे तो हेरान थवाय ते केम हशे ? ते कहो."

पछी महाराज बोल्या जे "जेम अहींथी भावनगर जवुं होय त्यारे वचमां जे जे गाम आवे त्यां थइने ज जवाय पण ते विना पाधरा जवाय नहीं. तेम भगवानना धाम आडां जीवने नव आवरण छे. ते आवरण भेदीने भगवानना धाममां जवाय छे, ते नव आवरण कयां? तो पृथ्वी, जळ, तेज, वायु, आकाश, अहंकार, महत्तत्त्व, प्रधानपुरुप अने प्रकृतिपुरुप, एवी रीते नव आवरण छे.

हवे ते आवरण कहीए छीए. जे जेम ब्रह्मांडमां आवरण कह्यां ने तेथी पर भगवाननुं धाम छे अने तेमां भगवान रह्या छे. तेम आ पिंडमां पण नव आवरण छे अने तेथी पर जीवात्मा छे. अने ते जीवात्माने विषे भगवान रह्या छे. अने ते भगवान अक्षरधामने विषे रह्या थका अनंत कोटि ब्रह्मांडमां सर्वे जीवो प्रत्ये अंतर्यामीपणे रह्या छे. पण जीवने ज्यां सुधी मायानुं आवरण छे त्यां सुधी जीव भगवानने जाणतो नथी. अने पंच-विषयनी वासनाए करीने जन्म–मरणना कष्टने पामे छे. ते कष्टने भगवान जाणे छे. ते भगवान महा दयाळु छे. ते कृपा करीने अनंतकोटि जीवोना कष्ट टाळवा सारु पृथ्वी उपर मनुष्याकृतिनुं धारण करे छे त्यारे ते भगवानने शरणे जे जीव आवे छे तेने पोताना स्वरूपनो निश्चय करावीने मायाना आवरण भेदावे छे.

तेमां प्रथम इन्द्रियोमां निश्चय करावे छे अने पछी अंतःकरणमां निश्चय करावे छे. अने पछी जीवमां निश्चय करावे छे.

(१) तेमां जेने इन्द्रियोमां भगवानना स्वरूपनो निश्चय थयो होय तेनी इन्द्रियो सर्वे नियममां होय, पण भगवाननी आज्ञा कोइ रीते लोपे नहीं, कहेतां मायिक उत्तम पंचविषयनुं ग्रहण इन्द्रियो करे नहीं. त्यारे तेने देवलोकनुं आवरण टळ्युं जाणवुं. अने प्रगट भगवानने शरणे आव्यो होय अने भजन करतो होय पण जो इन्द्रियो नियममां न होय कहेतां मायिक उत्तम पंचविषयनो त्याग कर्यो न होय तो ते देव-लोकमां जाय छे.

(२) अने वैराटनुं आवरण टळ्युं केम जाणवुं? तो आ देहनो अहं-कार टळे तथा नातजातनो तथा वर्णाश्रमनो तथा गाम, गरास, मोटप, मान, लाज आवरूनो तथा मत पंथादिक सर्वेनो अहंकार मेलीने प्रत्यक्ष भगवाननो दास थइने तेनी आज्ञा प्रमाणे वर्ते छे तेने वैराटनुं आवरण टळ्युं जाणवुं. (३) अने अंतःकरणमां पोताने मळ्या जे भगवान तेनुं चिंतवन थया करे अने पंचविषयने दुःखरूप अने नाशवंत जाणीने तेनुं चिंतवन करे नहीं तेने महत्तत्वनुं आवरण टळ्युं जाणवुं. (४) अने प्रत्यक्ष भगवान गमे तेवां मनुष्य चरित्र करे तथा कुसंगीनां गमे तेवा निंदानां वचन सांभळे तो पण कोइ दिवस मनमां संशय थाय नहीं. आवो अडग शिर साटे प्रत्यक्ष भगवानना स्वरूपनो निश्चय होय अने कोइ काळे पंचविषयमां लेवाय नहीं तेने प्रधानपुरुषनुं आवरण टळ्युं जाणवुं. (५) अने त्रण देह अने त्रण अवस्था तेथी जुदो एवो जे शुद्ध चैतन्य आत्मा तेने पोतानुं स्वरूप जाणीने पछी अनंतकोटि ब्रह्मांडनी उत्पत्ति, स्थिति अने प्रलय थाय छे जेने विषे एवुं जे अक्षरब्रह्म तेने

पोतानुं स्वरूप मानवुं कहेतां " हुं अक्षर छुं" एम समजीने "ते अक्षरना अधिपति एवा जे परमात्मा पुरुषोत्तम भगवान तेज आ प्रत्यक्ष मने मळ्या छे." एम जाणीने ते भगवाननी माहात्म्ये सहित भक्ति करे छे तेने सर्व आवरण टळी गयां जाणवां. अने ते छते देहे ब्रह्मरूप मुक्त थइ रह्यो छे. अने ते देह मूकीने अक्षरधामने पामशे पण तेने क्यांय बीजा लोकमां नहीं जवुं पडे. केमके एने ज्ञानदाता महात्मा पुरुष तेणे अहीं ज ज्ञाने करीने सर्वे लोकने देखाडीने तेनो त्याग कराव्यो छे.

ते केवी रीते लोक देखाडे छे? तो जे इन्द्रियोना विषय छे ते देवलोक छे. तेमां बे प्रकारना भक्त छे, एक निष्काम भक्त छे अने एक सकाम भक्त छे. तेमां जे सकाम भक्त छे ते तो इन्द्रियोना विषयमां लोलुप वर्ते छे. पण नियममां रहीने ते विषय भोगववा उपर प्रीति होय ते देवलोकने पामे छे. अने देवलोकनी आवरदा पूरी थाय त्यारे पाछो वैराटना लोकमां जाय छे एवी रीते सकाम भक्तने तो ते ते लोकमां जवुं पडे छे अने ते सकाम भक्त तो अक्षरधामने पामतो ज नथी. ए तो ज्यारे प्रत्यक्ष भगवानना चरणने पामीने तेनी निष्काम भक्ति करशे त्यारे ज अक्षरधामने पामशे. माटे जे निष्काम भक्त छे ते इन्द्रियोना विषयमां नथी लेवाता त्यारे तेणे देवलोकनो त्याग कर्यो कहेवाय अने कोइ प्रकारना अहंकारे करीने भगवानना मार्ग थकी मोळो न पडे तेणे वैराटना लोकनो त्याग कर्यो जाणवो. अने चित्तमां भगवाननुं जेने चिंतवन थया करे पण विषयनुं चिंतवन न थाय तेणे महत्तत्त्वनो त्याग कर्यो जाणवो. अने मनमां कोइ दिवस प्रत्यक्ष भगवानना स्वरूपमां संशय थाय नहीं तेणे प्रधान पुरुषनो त्याग कर्यो जाणवो. अने कोटि कोटि ब्रह्मांड रह्यां छे जेना कोइक देशने विषे एवा जे अक्षर ब्रह्म ते रूप पोते थइने ते अक्षरने विषे एवा अनंत कोटि अक्षर मुक्त रह्या छे

ते सर्वे मुक्तना स्वामी जे पुरुषोत्तम भगवान तेज भगवान "आ प्रत्यक्ष मळ्या छे" एम जाणीने आश्रय कर्यो छे तेणे प्रकृतिपुरुषनो लोक त्याग कर्यो छे अने एवा भक्तने क्यांय जवुं पडतुं नथी अने तेनां सर्वे साधन पुरा थइ रह्यां छे. अने जे बीजा लोकमां जवुं पडे छे एम कह्युं छे ते तो जेम कोइक बे पुरुष काशीए चाल्या तेमां एक तो तीर्थ करवा गयो अने एक तो रुपिया कमावा गयो. तेमां जे तीर्थ करवा गयो ते तो रस्तामां क्यांय रोकाय नहीं अने ठेठ काशीए पुगी रहे अने क्यांय मांदो पडे अने पांचादिवस रहेवुं पडे तो पण उदास थको रहे अने साजो थाय के तरत चालीने काशीए जाय. अने जे रुपीया कमावा चाल्यो छे तेने तो ज्यां ज्यां कमाणी मळे छे त्यां त्यां रही जाय पण काशीए पुगे ज नही. तेम जे सकाम भक्त छे ते तो पंचविषयने भोगववा सारु भगवानने भजे छे. ते देवादिकमां जाय छे अने जे निष्काम भक्त छे तेने तो एम होय जे पंचविषयनी वासना टाळीने भगवानना धाममां जवुं छे. तो ते आने आ देहे ब्रह्मरूप थइने अक्षरधामने पामे छे. अने कोइक भक्त अमारे शरणे निष्काम भावे आव्यो होय अने तेनो देह तरत पड्यो अथवा कोइक देश काळे करीने वासना टाळतां टाळतां थोडीक वासना रही गइ अने तेनो देह पड्यो तो ते भक्त योगभ्रष्ट कहेवाय छे. तेने भगवान बीजो तत्काळ देह धरावे छे ते जे ब्रह्मांडमां भगवान प्रगट होय त्यां जन्म धरावे छे. पछी भरतजीनी पेठे तत्काळ ज्ञानने पामीने ब्रह्मरूप थइने अक्षरधामने पामे छे.

–माटे भगवानतो आश्रय करवो ते निष्कामभावे पोताना जीवना कल्याणने अर्थे करवो अने पंचविषयनी वासना टाळवी एम इच्छा राखीने जे अमारे आशरे आव्या छे तेने तो क्यांय नहीं जवुं पडे अने तेने तो कांइ करवुं रह्युं नथी. अने अनंत जन्मनो जेने शुभ संस्कार

होय तेने ज अमारो जोग बने छे. माटे पंचविषयमांथी प्रीति टाळीने अमारुं भजन करवुं ते ज तमारा हितनी वार्ता छे." एवी रीते महाराजे तो घणीक वार्ता करी छे पण तेमांथी आ तो लेशमात्र लखी छे.

इति श्रीमुख सिद्धांत ४१ समाप्त ।

---

४२ विषय :—भगवानना धामनुं सुख अने प्रगट भगवानने ओळखवानी रीत

श्री हरिकृष्णाय नमोनमः—संवत् १९१६ना मागसर सुद २ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री बोटादमध्ये शाह कानजी पीतांबर ने घेर उगमणे बार मेडीनी ओसरीमां ढोलिया उपर गादी तकिया बिछावीने बिराजमान थया हता. सर्वे जरीयानी वस्त्र धारण कर्यां हतां. पुष्पनां आभूषणो सर्वे अंगमां शोभी रह्यां हतां. कंकुनो चांदलो कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तोनी सभा भराइने बेठी हती.

प्रश्न :—पछी शाह वेलसी पीतांबरे महाराजने प्रश्न पूछ्युं जे "भगवानना धामने पाम्या जे मुक्त तेने त्यां वधारे सुख हशे के ते भगवान प्रगट पृथ्वी उपर पधार्या होय अने ते भेगा भक्त होय तेने वधारे सुख हशे ? ते कहो"

पछी महाराज बोल्या जे—"एनो उत्तर एम छे जे भगवानना धामने पाम्या जे मुक्त ते तो धर्म, ज्ञान, वैराग्य अने महात्म्ये सहित प्रगट भगवाननी भक्ति सिद्ध करीने, निर्वासनिक थइने, ब्रह्मस्थितिने पामीने भगवानना धाममां गया. तेनुं सुख तो अपरिमित छे, अने अविनाशी छे अने ते सुखने कोइ उपमा देवाय एम नथी.

जेम बीजा द्रव्य जे रुपिया, सोनामहोर, मोती, हीरा, मणिओ

ते सर्वेनुं प्रमाण थाय जे आटलानो माल छे. पण चिंतामणिनुं प्रमाण थाय नहीं. तेम मनुष्य, देव, ब्रह्मा अने प्रकृतिपुरुषना लोक सुधी सर्वे लोकना सुखनुं प्रमाण थाय पण एक भगवानना अक्षरधामना सुखनुं प्रमाण थाय नहीं. माटे अक्षरधामने पाम्या जे मुक्त तेनुं सुख तो सर्वोपरि छे. पण ते सुखनी बरोबर कोइ सुख थाय नहीं. अने एवुं अक्षरधाम तेना राजाधिराज एवा जे परमात्मा भगवान ते पोते अनंत जीवोनो उद्धार करवाने अर्थे त्यां रह्या थका पोताना सत्यसंकल्पे करीने पृथ्वी उपर मनुष्यस्वरूपे प्रगट थाय छे. पछी ते भगवानने शरणे आव्या जे भक्तजन ते कामलोभादिक दोषने टाळीने, धर्म, ज्ञान. वैराग्य अने माहात्म्ये सहित भगवाननी भक्ति सिद्ध करीने निर्वासनिक थइने प्रत्यक्ष भगवानने विषे जोडाणो होय तेने तो जेवुं अक्षरधामना मुक्तने सुख छे तेवुं ज सुख अहीं प्रगट भगवानने विषे भक्तने छती देहे सुख आवे छे. केम के अक्षरधाममां ने अहीं ए बे ठेकाणे भगवान तो एक ज छे पण भगवान बे नथी. अने "अहीं अने त्यां" एम जे कहेवाय छे ते तो जेने मायानुं आवरण छे तेनी दृष्टिने भेदे करीने कहेवाय छे पण जेनी ज्ञाने करीने निरावरण दृष्टि थइ होय तेने "अहीं अने त्यां" एवो भेद रहे तो नथी. माटे जेनी ज्ञाने करीने निरावरण दृष्टि थइ छे, एवा जे प्रगट भगवानना भक्त संत तेने तो जेवुं अक्षरधामना मुक्तने अक्षरधाममां सुख छे एवुं तेने पण आवे छे. अने बीजा साधन दशा-वाळा प्रगट भगवानना भक्त छे तेने तो जेने जेटलो भगवानना स्वरूपनो निश्चय अने जेटला जेने कामादिक दोष टळ्या होय तेटलुं तेने सुख आवे छे केम के भगवान छे ते समदृष्टि वाळा छे ते जेटलो जेने वैराग्य अने जेटली जेनी श्रद्धा अने जेटली जेनी सेवा तेटलुं ते भक्तने भग-वान सुख आपे छे. ए उपर तुलसीदासनी साखी छेः—

राम झरूखे बैठके सबका मुजरा लेत।
जाकी जैसी चाकरी ताकू तैसा देत॥

ए तमारा प्रश्ननो उत्तर छे."

प्रश्नः—पछी वळी शाह कानजीए प्रश्न पुछ्यो जे—"हे महाराज अमारे तो तमारा स्वरूपनो निश्चय जे तमे साक्षात्कार अक्षरधामना राजाधिराज परमात्मा छो पण बीजा माणसने केम भगवानपणानो तमारा स्वरूपनो निश्चय थाय अने शा लक्षणे करीने भगवान ओळखाय? ते कृपा करीने कहो"

पछी महाराज बोल्या जे—"ज्ञाने करीने भगवान ओळखाय छे. पण जेने ज्ञान न होय तेने भगवान कोइ काळे ओळखाता नथी. जेम सूर्य उदय थाय त्यारे जगतमां प्रकाश थाय छे पण ते प्रकाश घुवडने तथा आंधळी चाकोरने तथा चामाचीडीया आदि जे दिवसअंधा जीव तेने सूर्य देखातो नथी. अने जे देखतां प्राणी होय तेने सूर्य तथा सूर्यनो प्रकाश देखाय छे. तेम सूर्यनी पेठे भगवान पृथ्वी उपर प्रगट थाय छे त्यारे दिवसअंधा जेवा जे आसुरी जीव तेने तो कोइ काळे प्रगट भगवान ओळखता नथी. जेम घुवड आदिकने सूर्यनो प्रकाश देखातो नथी तेम आसुरजीवने भगवाननो अलौकिक एवो जे ज्ञान प्रकाश ते जाण्यामां आवतो नथी. ते कृष्णावतारमां पण ऋषिने विषे विद्या अने कुळना अभिमानरूपी आसुरभाव हतो तो तेणे श्रीकृष्णभगवानने ओळख्या नहीं अने जरासंधने पण राज्य अने परोक्ष भगवाननी भक्ति अने सदाव्रत आपतो अने सत्यवादीपणुं तेना मानरूपी जे आसुरभाव तेणे करीने प्रगट श्रीकृष्ण भगवानने ओळख्या नहीं अने उलटो घणोक द्रोह कर्यो. तेम आज पण जेने मत पंथनुं मान तथा परोक्ष भगवाननी

भक्तिनुं, राज्यनुं, द्रव्यनुं, विद्यानुं इत्यादिनुं मान जेने हशे तेने प्रगट भगवान नहीं ओळखाय. अने जे दैवी जीव हशे तेने भगवान ओळखाशे. अने दैवी जीव होय तेने ज प्रगट भगवाननो ज्ञान प्रकाशरूपी अलौकिक प्रताप जाण्यामां आवे छे.

–ते केवी रीते जाणे छे ? तो प्रगट भगवान पासे सर्वोपरि ज्ञान होय तथा सर्वदेशी ज्ञान होय अने ते सर्वेना मतना सिद्धांतने जाणता होय अने जेनी पासे सर्व शास्त्रनुं संपूर्ण ज्ञान होय अने वळी अपार ज्ञान होय अने ते ज्ञानने जे जे मन, कर्म अने वचने सांभळे तो ते सांभळनाराना अंतरना संशय मात्र टळी जाय अने तेना अंतरमां परमशान्ति थाय अने तेने पंचविषय पामवानी जे तृष्णा ते टळी जाय छे. तेने करीने जे दैवी अने मुमुक्षु जीव होय तेने प्रगट भगवानना स्वरूपनो निश्चय थाय छे अने ज्यारे भगवान प्रगट थाय छे त्यारे केटलाक मुक्त देह धरे छे. ते मुक्त जे ते कामलोभादिक अंतरशत्रुनो त्याग करीने प्रगट भगवानने शरणे आवीने भगवान थकी आत्यंतिक ज्ञान सिद्ध करीने अक्षर–ब्रह्मरूप थइने भगवाननी सेवामां अखंड रहे छे अने एवा ब्रह्मरूप मुक्त तो ज्यां प्रगट भगवान होय त्यां ज होय छे. पण भगवान विना बीजे ठेकाणे एवा पंचविषयना त्यागी अने आत्यंतिक ज्ञानने पामीने सिद्धदशाने पामेला संत ते प्रगट भगवान विना होय नहीं.

जेम मानसरोवर होय त्यां हंस होय अने ज्यां हंस होय त्यां जरूर मानसरोवर होय. तेम ज्यां प्रगट भगवान होय त्यां ज एवा हंसरूप पंचविषयना त्यागी अने ब्रह्मरूप साधु होय. अने ज्यां एवा साधु होय त्यां जरूर भगवान होय.

एवी रीते ज्ञाने करीने प्रगट भगवान ओळखाय छे. अने ते ज्ञान-विषे अनंत प्रताप अने अनंत ऐश्वर्य अने अनंत शक्तिओ अने अनंत सिद्धिओ रही छे. अने पूर्वे जे जे भगवानना अवतार थइ गया तेणे पण पोताना भक्तोने ज्ञान ज आप्युं छे. ते श्रीकृष्णे उद्धवजीने तथा अर्जुनने ज्ञान आप्युं छे. ने ज्ञाने करीने पोताना स्वरूपनो निश्चय कराव्यो छे. अने कपिलदेव भगवाने देवहूतिने पण ज्ञाने करीने निश्चय कराव्यो छे. अने रामचंद्रजी भगवाने पण लक्ष्मणने तथा भरतजीने ज्ञान आपीने पोताना स्वरुपनो निश्चय कराव्यो छे. अने ऋषभदेव भगवाने पण पोताना पुत्रोने ज्ञान आप्युं छे. अने वेदमां पण भगवानना स्वरूपने जाणवाने अर्थे ज्ञान ज कह्युं छे. अने शास्त्रमां पण परमात्माने जाणवाने अर्थे ज्ञान ज कह्युं छे. माटे ज्ञाने करीने ज प्रगट भगवान ओळखाय छे.

अने जेणे ज्ञाने करीने भगवानने ओळख्या तेणे ज नक्की ओळख्या छे, अने तेनी ज मुक्ति थाय छे. ते वेदमां पण कह्युं छे जे "ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः" ए श्रुतिनो एम अर्थ छे जे "परमात्माना स्वरूपना ज्ञान विना मुक्ति थाय नहीं." माटे ज्ञाने करीने भगवानने जाणवा एज सर्वे शास्त्रनो तथा चार वेदनो सिद्धांत छे, अने ते ज्ञान विना जे परचा मागे छे ते तो मुरख छे अने ज्ञानहीन छे. केम के परचा छे ते तो मायानो खोटो प्रपंच छे, ते ढोंगी जगतने धूतनारा होय छे ते करे छे, पण खरा सत्-पुरुष एवा ढोंग करे नहीं, अने पूर्वे जे जे सत्पुरुष थइ गया छे तेणे ज्ञान सिवाय बीजो परचा आपवानो ढोंग कर्यो ज नथी. माटे ज्ञाने करीने ज प्रगट भगवान ओळखाय छे, पण बीजे कोइ प्रकारे भगवान ओळखाता नथी.

त्यारे तेमां कोइने एम शंका थाय जे भगवान विना बीजा कोइ